

احسن الحديث احسن القصص أمر الله آيات بينات حبل الله حق اليقين حكم عربي
نور نور مبين صراط مستقيم العروة الوثقى القرآن الحكيم القصص الحق ذكر
خير ذكر مبارك صحف مطهرة صحف مكرمة كتاب منير هدى
نذير تذكرة بشرى مرفوعة مطهرة مصدق امانة

روح

بشير

تنزيل

رحمة

مبارك

بصائر

تفصيل

موعظة

منادى

فرقان

عربي

زبور

كريم

مجيد

مبين

بيان

قول

على

حق

كلام الله

قرآن عجب القرآن ذى الذكر قرآن عربي قول فصل نبأ عظيم لسان عربي مبين

اضواء البيان في ترجمة القرآن

HINDI TARJUMA

حضرت مولانا يوسف متالا حفظه الله تعالى

صحف حكيم صدق كتاب حكم

قرآن عظيم قرآن كريم قرآن مبين قرآن مجيد

الكتاب الحكيم الكتاب المبين كتاب عزيز كتاب متشابه لسان عربي

قيم كلام الله قرآن عجب القرآن ذى الذكر قرآن عربي قول فصل نبأ عظيم لسان عربي مبين

شفاء

تبيان

وحى

عجب

حكمة

متشابه

تصديق

مكرمة

مهيمن

مثانى

عزيز

فصل

قرآن

بلاغ

عدل

منير

بينه

علم

قيم

अदवाउल बयान

फी

तरजमतिल कुरआन

हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा दा० ब०



नोट: इस तरजमे की इशाअत की तहरीरी इजाज़त इदारा अज़हर अकेड़मी लन्दन के कानूनी शौबे से ले कर आप भी तिजारत के लिए या लिक्वहिद्दलाह इशाअत कर सकते हैं।

नाम : अदवाउल बयान फी तरजमतिल कुरआन
मुतरजिम : हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा दा० ब०
सफहात : 872
सिन् इशाअत : 1435 हि० - 2014 ई०
नाशिर : अज़हर अकेड़मी, लन्दन, बरतानिया

मिलने के पते:

हिन्दुस्तान:

कुतुबखाना यहयवी, नज़्द मदरसा मज़ाहिर उलूम, सहारनपुर, यू०पी०
जामिअतुज्ज़हरा, मुल्ला मोहल्ला, नानी नरोली, सूरत, गुजरात - 394110

पाकिस्तान:

दाख़ल इशाअत, उर्दू बाज़ार, एम. ए. जिन्नाह रोड, कराची - 1

जुनूबी अफ्रीका:

Jamiatul Ulama South Africa

P. O. Box 42863, Fordsburg, 2033, Johannesburg

JUT Publishing

32 Dolly Rathebe Road, Fordsburg, 2033, Johannesburg

Tel: (+27) 11373 8000 | E: tasheel@islamsa.org.za

बरतानिया:

Azhar Academy Ltd.

54-68 Little Ilford Lane, Manor Park

London E12 5QA | UK

Tel: (+44) 208 911 9797 | Fax: (+44) 208 911 8999

E: sales@azharacademy.com | W: www.azharacademy.com

अर्जे नाशिर

- हमारे मुशफिक शेख और उस्ताज़े मुहतरम हज़रत अक़दस शैख़ुल हदीस मौलाना यूसुफ मोतारा साहब दामत फ़यूज़ुहुम दाख़ल उलूम, होलकम्ब, बरी, में दाख़ल उलूम के इब्तिदाई सालों से ले कर अब तक तरजमा कुरआन शरीफ पढ़ाते रहे। शुरू में कई साल तलबा अपनी तरजमा की कापियाँ लाहिकीन को मुन्तक़िल करते रहे। फिर कापियों की जगह कैसेट्स (बैजजमे), फिर सीडीज़ (बै) मुन्तक़िल होती रहीं। यहाँ तक के पन्द्रह बीस वरस से जब ये सीडीज़ वेब साईट पर रख दी गईं, तो दाख़ल उलूम के मुतअल्लिकीन के लिए मज़ीद आसानी हो गई थी।
- अब आखिरी मरहला तबाअत का रेह गया था। अगर्चे तलबा ने अपने तौर पर टाईप कर के, मालूम नहीं कुल्ली या जुर्ई तौर पर, ये मरहला भी तै कर लिया था। लेकिन हमारी ख्वाहिश थी के बाक़ाइदा साहिबे तरजमा की इजाज़त से हम इस तरजमे को अज़हर अकेड़मी की तरफ से तबअ कराएं। मगर हमारी दरख्वास्त के बाद शुरू में तो इन्कार होता रहा। बाद में इस शर्त के साथ इजाज़त मिली के कोई माहिर इस तरजमे को बनज़रे तस्हीह व इस्लाह मुकम्मल तौर पर देख ले।
- चुनांचे हम ने मुशफिक दोस्त जनाब खलील अशरफ साहब उस्मानी जीद मजदुहुम के तवस्सुत से हज़रत मुफती मुहम्मद तक़ी उस्मानी साहब दाम ज़िल्लुहुम से इस पर नज़रे सानी की दरखवास्त की, तो उन्होंने ने अपने दाख़ल उलूम कराची के शौबए तखस्सुस फिद्दावत के डाइरेक्टर, हज़रत मौलाना डा० साजिदुर्रहमान साहब कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैहि के सुपुर्द ये काम फरमा दिया।
- डा० साजिदुर्रहमान साहब के वालिदे मुहतरम मुहद्दिसे कबीर शारिहे सुनने तिर्मिजी हज़रत मौलाना अशफाकुर्रहमान साहब कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू हैं। चुनांचे आप ने चन्द माह में किबरे सिन्नी और इल्मी मशाग़िल और दाख़ल उलूम कराची की खिदमात के साथ तरजमे की इस्लाह व तस्हीह का काम मुकम्मल फरमा लिया। अल्लाह तबारक व तआला उन्हें बेहद जज़ाए खैर अता फरमाए और उन की खिदमाते जलीला को क़बूल फरमा कर उन के दरजात बुलन्द फरमाए। आमीन!
- अखीर में दुआ है के कलामे इलाही के इस तरजमे के सिलसिले में जो कोताही, कमी वाकेअ हुई हो, अल्लाह तआला उसे मुआफ़ फरमाए और अब तक जिन हज़रात ने उस में जांफिशानी की है या आइन्दा जो करेंगे, उन सब को अल्लाह तआला क़बूल फरमाए और सब के लिए उखरवी नजात का ज़रिया बनाए। आमीन!

असातिज़ाए दारुल उलूम देवबन्द की ताईदी तहरीर

5

कुरआने करीम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ से नाज़िलकरदा सब से आखिरी किताबे रुश्द व हिदायत है और तमाम उलूम व फुनून का सरचश्मा और बेहरे नापैदाकिनार है, जिस के हक्काइक़ और निकात बयान करने के लिए कुरूने ऊला से ही उलमाए किराम ने अर्क़रेज़ी और जांफशानी की है और मुखतलिफ़ ज़बानों में तर्जमे व तफासीर लिखे हैं।

चुनांचे उर्दू ज़बान जो अपनी वुसअत व मक्कबूलियत के ऐतेबार से दुन्या की चंद बड़ी ज़बानों में शुमार होती है, इस ज़बान में भी उलमाए किराम ने बड़ी अर्क़रेज़ी के साथ तर्जमे किए हैं, जिन में शैखुल हिन्द हज़रत मौलाना महमूद हसन देवबन्दी नव्वरल्लाहु मरक़दहू, हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी रहिमहुल्लाह और हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक्की उस्मानी हफ़िज़हुल्लाह के तर्जमे बेहद मक्कबूल हुए, और ये मुबारक सिलसिला ता हुनूज़ जारी है।

ये तर्जमाए कुरआने करीम जो आप के सामने है, हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब दा० ब० का है। हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा हफ़िज़हुल्लाह, शैखुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करीया मुहाजिर मदनी नव्वरल्लाहु मरक़दहू के मौतमिदे खास और अजल खुलफा में से हैं और हज़रत शैखुल हदीस रहिमहुल्लाह के ईमा पर दयारे यूरोप के मुल्के बरतानिया में दिने इस्लाम की इशाअत व तबलीगा के लिए ख़ैमाज़न हो गए और वहां दारुल उलूम बरी के नाम से इदारा क़ाइम कर के आज तक शब व रोज़ दीन की खिदमत और तअलीम व तअल्लुम के लिए वक्फ़ हैं, और इस वक्त्र इंग्लैंड, कनाडा और अमरीका के मुख्तलिफ़ शेहरों में आप के इदारे के फ़ारिगुत्तहसील उलमाए किराम खिदमते दीन के लिए फैले हुए हैं, जो आप ही के मरहूने मिन्नत हैं।

ज़मानाए तदरीस में हज़रत वाला से कुरआने करीम का तर्जमा पढ़ने वाले तलबा तर्जमाए कुरआने करीम नोट करते रहे और कैसेटों और सी डी में तर्जमे के दर्स को महफूज़ करते रहे। इसी महफूज़ तर्जमे को हज़रत ने दक्कीक़ नज़रे सानी और ज़रूरी इस्लाह के बाद तय्यार किया है जो अल्हम्दुलिल्लाह काबिले क़दर और लाइके तहसीन है।

हज़रत वाला ने अपने बिरादरे कबीर हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब मोतारा दा० ब० के दस्तगिरिफ़्ता हज़रत मौलाना मुहम्मद सालिम साहब क़ासमी, बानी व मुहतमिम जामिआ

क्रासिमीया दारुल उलूम ज़करीया, ट्रांसपोर्ट नगर, मुरादाबाद, की मारिफ़त ये तर्जमा नज़रे सानी के लिए हम असातिज़ाए दारुल उलूम देवबन्द के पास इरसाल फरमाया, जिस को हम लोगों ने तक्ररीबन चार माह की मुद्दत में बड़ी गेहराई और गीराई और ख़ुलूस व महब्बत के साथ देखा, पढ़ा और जहाँ ज़रूरत महसूस हुई मशवरे दिए, जिस से ये तर्जमा मुस्तनद, क़ाबिले ऐतेमाद, नाफ़िअ और मुफ़ीद हो गया है।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ साहब मोतारा हफिज़हुल्लाह का ये तर्जमाए कुरआन उम्दा किताबत और आला तबाअत से आरास्ता हो कर क़ारिईन के हाथों में है। दुआ है के रब्बे रहीम व करीम मौलाना मोतारा साहब को शायाने शान जज़ाए खैर अता फरमाए और हम सब के लिए ज़ख़ीरए आख़िरत बनाए। आमीन।

मौलाना मुहम्मद नसीम अहमद साहब बाराबंकवी, मौलाना मुहम्मद अय्यूब साहब मुज़फ़्फ़रनगरी, मौलाना मुनीर अहमद साहब, मौलाना मुफ़्ती राशिद साहब, मौलाना मुफ़्ती अब्दुल्लाह साहब मारुफी, मौलाना खिज़र अहमद साहब, मौलाना मुहम्मद अफ़ज़ल साहब, मौलाना मुहम्मद साजिद साहब व मौलाना मुहम्मद आरिफ जमील साहब

Handwritten signatures and dates in Urdu/Arabic script, including names like محمد رفیع صبحی, افضل حسین, and dates like ۱۳۳۲/۱۶/۱۱.

हज़रत मौलाना मुख्तार असअद साहब की राए गिरामी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

نحمده ونصلى على رسوله الكريم - اما بعد -

दर्स व तदरीस या किसी वाकिआती इल्मी शाहकार की बड़ी खूबी ये होती है के वो किसी तअब और उल्झन के बगैर समझ में आ जाए, सामिईन व नाज़िरीन के कुलूब को अपनी तरफ खींचे और अगर उस को तवज्जुह से सुना जाए तो ज़हननशीन होने में भी देर न लगे।

हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा साहब दामत बरकातुहुम का ये तर्जमा मज़कूरा तमाम खुबियों का मजमूआ है: आसान भी है, जाज़िबे कुलूब भी है, और तवज्जुह के साथ पढ़ा जाए तो जल्द ज़हननशीन भी हो जाता है। मज़ीद बरआँ अकरब इला अल्फाज़िल कुरआन भी है, जिस से कलामुल्लाह शरीफ का मफहूम व मकसूद उजागर होने के साथ ये वज़ाहत भी हो जाती है के अल्फाज़ के अस्ल और लुगवी मआनी क्या हैं।

खुलासा ये के ये बाबरकत तर्जमा एक इन्तिहाई मुफीद इल्मी काविश और उलूमे कुरआनी पर हज़रत मौलाना मद्दज़िल्लुहुल आली की नज़रे अमीक और महारते ताम्मा का अक्से जमील है।

हिन्द व पाक के मुतअद्दद उलमाए किराम ने नज़रे सानी के बाद उस की तसवीब व तहसीन फरमाई है। अल्लाह रब्बुल इज्ज़त का करम है के राकिम को भी इस पर नज़रे सानी की सआदत हासिल हुई और इस ज़ैल में जो कुछ बन्दे ने लिखा, साहिबे तर्जमा ज़ीद मजदुहुम ने शरफे कबूल से नवाज़ा और दुआएं दीं। फलिल्लाहिल हम्द।

अल्लाह तआला तिश्नगाने उलूम को ज़्यादा से ज़्यादा इस चश्मए शीरी से सैराब करे, अवाम व खवास के लिए इस को नाफेअ बनाए और दारैन में कबूलियते आम्मा व ताम्मा अता फरमाए। ई दुआ अज़ मन व अज़ जुम्ला जहाँ आमीन बाद।

(हज़रत मौलाना) मुख्तार असअद सहारनपूरी (उफिय अन्हु)

19 मार्च 2012 ई०

अज़हर अकेड़मी, लन्दन

مختار اسد سہارنپوری

आह! हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब मोतारा

रहमतुल्लाहि अलैह

दरअस्ल ये तर्जमा “अदवाउल बयान” कारिईन के हाथों में न पहुँच पाता, अगर मौलाना अब्दुर रहीम साहब रहमतुल्लाहि अलैह की दुआएं और तवज्जुहात और उन की तहरीज़ व तशजीअ उन के बिरादरे खुर्द हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा पर न होतीं, बल्के ये केहना ज़्यादा मुनासिब है के हज़रत मरहूम के पैहम इसरार और वाज़ेह हुक्म के बाद ही ये तर्जमा पेहली मर्तबा मन्ज़रे आम पर आया था, इस लिए मुनासिब मालूम होता है के हज़रत मौलाना मरहूम के मुस्तसर हालात और उन की खुसूसियात यहां शामिले इशाअत कर दी जाएं। अल्लाह तआला मरहूम को जज़ाए खैर दे और ये तर्जमा उन के हसनात में इज़ाफ़े का सबब हो।

हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब मोतारा अल्लाह के एक बातौफ़ीक़ बन्दे, खामोश तबीअत दाआ, सरज़मीने कुफ़्रिस्तान पर एक शमए फ़रोज़ाँ, मीनाराए नूर, मम्बए इल्मे दीन और नाशिरे रुशद व हिदायत थे। उन्होंने ने बचपन ही से तालीम व तरबियत की तरफ तवज्जुह दी, और ज़ाहिरी उलूम की तकमील के बाद बातिनी उलूम की तहक़ीक़ व तहसील के लिए वक़्त की मशहूर शख़्सीयत कुत्बे आलम शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करीया साहब कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैह की खिदमते बाबरकत में हाज़िरी दी, जिन से पेहले इल्मे हदीस की दौलत हासिल की, जो गोया के बातिनी उलूम की तहसील और तकमील के लिए तमहीद थी। इस तरह हज़रत शैख़ के यहाँ एक आम शागिर्द से ख़ास शागिर्द और एक आम कातिब से ख़ास कातिब और खादिमे खास का मक़ाम हासिल कर लिया। फिर सुलूक व तरीक़त का रास्ता भी बहुस्र व खूबी तय कर लिया, यहाँ तक को हज़रत शैख़ को आप से राहत महसूस होने लगी, जिस का इज़हार हज़रत शैख़ ने इस तरह फरमाया के: “अब्दुर रहीम! तुझ से रूहानी राहत मिलती है।”

फिर इरशाद फरमाया के ज़ाम्बिया के लक़ व दक़ वीराने में जा कर दीन की शमअ रौशन करो और दीने मुबीन की दअवत दो और तालीम व तरबियत का इन्तिज़ाम करो, और जहालत व तारीकी के मुल्क में इल्म की रौशनी के दीप जलाओ। चुनांचे हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब ने ज़ाम्बिया के एक ग़ैर तरक़्कीयाफ़्ता दूरउफ़्तादा इलाक़ा चीपाटा में पहुँच कर एक दीनी इदारे की बुन्याद रख दी, और मअहदुर रशीद अलइस्लामी उस का नाम रखा। इस तरह हज़रत शैख़ ने

हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब को अफ्रीका की सरज़मीने ज़ाम्बिया के लिए मुन्तख़ब फ़रमाया, और आप के छोटे भाई हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब को बरतानिया की सरज़मीन पर इल्म की शमअ रौशन करने के लिए मुक्क़रर फ़रमाया। और दोनों को एक ख़ास रक़म भी इनायत फ़रमाई, और दोनों के इदारों को अपने कुदूमे मयमनत से भी मुशरफ़ फ़रमाया।

हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब ने अपनी इल्मी क़ाबिलीयत व सलाहियत के बावजूद हज़रत शैख़ के हुक्म पर ऐसे बयाबान जंगल में जाने को पसन्द किया, और अपनी आला इल्मी सलाहियत को वहां के झाड़ झंकार को साफ़ करने में ख़त्म कर दिया, और ऐसा शजरए तय्यिबा लगाया के *أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ* का मन्ज़र महसूस होने लगा। मौलाना ने जिस दौर में वहाँ जा कर काम शुरूअ किया, वो इन्तिहाई पुरखार था, बल्के एक चटयल मैदान था, जहां पर हर तरफ़ सियाही, तारीकी और जहालत के बादल मंडला रहे थे, और पढ़े लिखे आदमी का जी लगना बहोत दुश्वार था, मगर उस हिम्मत के जियाले ने ये सब अल्लाह की खुशनूदी और अपने शैख़ के हुक्म की तामील में बर्दाश्त किया, और अखीर ज़िन्दगी तक शैख़ के हुक्म को निभा दिया, और वहीं की ख़ाक में आसूदा हो गए। इस तरह बफ़ज़्ले खुदा वहां जो तालीमी काम शुरूअ किया था, उस का फैज़ अफ्रीका के बहोत से मुल्कों, ख़ास तौर से ज़ाम्बिया और उस के आस पास के मुल्कों में ख़ूब फैला हुवा है। मौलाना ने सियाहफ़ाम नस्ल के तलबा को जहां दीन और इल्मे दीन सिखाया, कुरआने करीम और दीनियात की तालीम दी, वहीं उन को उर्दू ज़बान भी सिखाई, जो इस वक़्त बरें सगीर हिन्द व पाक ही की नहीं, बल्के दुन्या में अरबी, अंग्रेज़ी के साथ ज़्यादा बोली जाने वाली ज़बान है, और अरबी के बाद जिस में दीन का सब से ज़्यादा सरमाया मौजूद है।

हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब की पैदाइश यकुम जुमादस्सानिया सन १३६३ हिजरी, मुताबिक़ २४ मई सन १९४४ बरोज़े बुध मौज़अ वरेठी में हुई। आप के आबाई वतन और खानदान और इब्तिदाई हालात से मुतअल्लिक़ आप के छोटे भाई हज़रत मौलाना यूसुफ़ मोतारा साहब तहरीर फ़रमाते हैं के: हमारा खानदान वरेठी ज़िला सूरत में सदियों से मुक्कीम है, और ज़िराअत पेशा है। मगर हमारे दादा मुहतरम और वालिद साहब ने ज़मीन बटाई पर दे कर तिजारत का पेशा इख़तियार किया। और दादा मरहूम ने जुनूबी अफ्रीका का सफ़र किया, कई साल वहां मुक्कीम रहे और अरसाए दराज़ के बाद वतन वापस लौटे और चन्द रोज़ बाद ही वरेठी में इन्तिकाल फ़रमाया। दादा साहब ने इकलौते बेटे को औलाद में पीछे छोड़ा। वालिद साहब ने अपनी वालिदा की आग़ोशे तरबियत में यतीमी की हालत में परवरिश पाई, और जवानी को पहोंच कर तिजारत शुरूअ कर दी। और हथुरण के एक मुख़्यर खानदान में पेहला निकाह हुवा और

अल्लाह ने एक लड़का अता फरमाया, नाम मुहम्मद अली तजवीज़ फरमाया। और पेहली एहलिया का चन्द साल ही में इन्तिक़ाल हो गया, तब दूसरा निकाह हमारी वालिदा आमिना बिनते मुहम्मद बिन इस्माईल देसाई से हुवा। हमारे नाना के आबा व अजदाद दरयाए ताप्ती के किनारे पर खुलवड़ नामी क़स्बे में आबाद थे। वहाँ इस खानदान की ज़मीन पर बनाई हुवी किनारे वाली मस्जिद अब तक मौजूद है। किसी वजह से ये खानदान नानी नरोली मुन्तक़िल हो गया, जो उस ज़माने में तक्ररीबन जंगल ही था। यहां ज़िराअत का पेशा इख़तियार किया और दीनी ऐतेबार से न सिर्फ़ गाउँ में, बल्के अतराफ़ में ये खानदान बिलखुसूस हमारे नाना जान दीनी हल्के में मशहूर थे। इस लिए आप ही का दौलतकदा यहां आने वाले उलमा व मशाइख के लिए मेहमानखाना होता था।

वालिदा मुहतरमा से निकाह के बाद वालिदा की दीनदारी का असर वालिद साहब पर भी आहिस्ता आहिस्ता पड़ना शुरूअ हुवा, यहाँ तक के वालिद साहब मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर बंगाली मुहाजिरे मक्की (जो हज़रत अल्लामा मौलाना अनवर शाह साहब कश्मीरी रहमतुल्लाहि अलैह के खलीफा मुजाज़ थे) से बैअत हो गए और ज़िक्र व शग़ल शुरूअ कर दिया। इधर निकाह के बाद पांच छे साल तक कोई औलाद नहीं हुई। इसी अस्ना में हज़रत मूसा सुहाग के सिलसिले के एक बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए। वालिद साहब ने औलाद के लिए दुआ की दरख्वास्त की। आप ने वालिदा के लिए अंगूठी दे कर एक लड़के की बशारत दी और होने वाले लड़के के लिए इल्म व सलाह वग़ैरा औसाफ़ से मुत्तसिफ़ होने की बशारत दी। साल भर के बाद वो बुज़ुर्ग दोबारा तशरीफ़ लाए, तो उस से पेहले मौलाना अब्दुर रहीम साहब का तवल्लुद हो चुका था। उन्हें देख कर मसरूर हुए, दुआएं दीं और दूसरी अंगूठी दे कर एक दुसरे लड़के की इसी तरह बशारत दी।

वालिद साहब ने जब से ज़िक्र व शग़ल शुरूअ किया था, आहिस्ता आहिस्ता उन की तबीअत पर ज़िक्र का असर बढ़ता चला गया। यहां तक के वालिद साहब पर ज़ब्बी कैफ़ियत का ग़लबा होने लगा। और उसी कैफ़ियत में वालिदा साहिबा से फरमाते के: “मैं ने तर्के दुन्या का इरादा कर लिया है, आप अपने घर चली जाओ!” खानदान के बड़ों ने हर तरह समझाने की कोशिश की, बिलआख़िर उन्होंने ने तलाक़ नामे पर दस्तखत करवा लिए के कहीं ये हालत जुनून में तब्दील हो गई तो बीवी उमर भर के लिए मुअल्लक़ रेह जाएगी। और तलाक़ की इद्दत वज़ाए हमल थी। चुनांचे तलाक़ के चन्द रोज़ बाद ही नन्हियाल नानी नरोली में हमारे नाना के यहां मेरी यकुम मुहर्रमुल हराम सन १३६६ हिजरी पीर की शब में विलादत हुई। जब उमर तक्ररीबन आठ साल हुई, तो जुनूबी अफ़्रीका में हमारी खाला ग्यारा बच्चों को छोड़ कर हालते ज़चगी में इन्तिक़ाल कर गई। उन की जगह खालू ने वालिदा से निकाह किया और वालिदा अफ़्रीका चली गई। और

नाना नानी ने (भाई साहब की और) मेरी परवरिश की। चन्द साल बाद उन दोनों का साया भी सर से उठ गया। उन के बाद खाला ने परवरिश की और परवरिश का हक़ अदा कर दिया।

हर बुजुर्ग की अलग अलग सिफ़ात होती हैं, मगर हज़रत मौलाना की बहोत सी सिफ़ात में से एक सिफ़त ये थी के वो एहले तअल्लुक़ का बहोत लिहाज़ करते थे और जो एहले मदारिस वहां पहोंचते थे उन को हक़ीर नहीं समझते थे। नहीं तो आज कल, बाज़ एहले इल्म और मशाइख़ ही नहीं, बल्के बाज़ मर्तबा तो बाज़ एहले मदारिस भी जब उन को मालूम हो जाए के आने वाला चन्दे वाला है या मदरसा वाला है, तो उस को हक़ीर समझते हैं, और हक़ीर न भी समझें मगर ज़्यादा खातिर में नहीं लाते, उस की तरफ़ तवज्जुह और उस का तआवुन करना तो दूर की बात है। इस सिफ़त में मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी नव्वरल्लाहु मरक़दहु बहोत मुमताज़ थे। वो हर आने वाले की क़दर करते थे, ख़ास तौर से दीनी कामों की निस्बत पर जो भी आते थे। इसी तरह हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब मोतारा भी इस सिलसिले में मुमताज़ थे, जो एहले मदारिस हा ख़ास ख़याल फ़रमाते थे और उन का हर मुमकिन तआवुन करते थे। हैरत होती है के वो शैख़ होने के बावजूद लेने वाले हज़रत ही नहीं, देने वाले हज़रत थे। वो हिन्दुस्तान में बाज़ मशाइख़ को खुसूसी रक़में भेजते थे। एक सिफ़त हज़रत मौलाना में ये थी के वो मुस्तग़नी थे, गोया के उन को लोगों से मिल कर वहशत होती थी। वो अपने मामूलात के पाबन्द थे, मामूलात में ज़र्रा बराबर भी फ़र्क़ नहीं आता था। नवाफ़िल और तिलावते कुरआने करीम में अक्सर मशगूल रहेते थे।

बात साफ़ करते थे, और साफ़ सीधी बात ही को पसन्द करते थे। किसी सवाल के जवाब में बात के तक़रार और हेराफेरी को नापसन्द फ़रमाते थे और उस पर फ़ौरन नकीर करते थे। उन्होंने ने अपने मअहद को चलाने में एक चीज़ का ख़ास तौर से एहतेमाम किया है के अपने मदरसे में ज़कात की मद उन्होंने ने नहीं ली, सिर्फ़ लिल्लाह अतिय्ये की मद में उन्होंने ने अपने इदारे की तामीरात भी कीं, और सालाना खर्च जो अच्छा खासा है, वो हमेशा लिल्लाह से चलाया है। वरना आज कल तो तुज्जार का भी ज़्यादातर मिज़ाज ज़कात देने का है, मगर हज़रत की करामत ही कहिए के ऐसे आजमाइश के पुराशोब दौर में उन्होंने ने अपने मअहद को लिल्लाह के ज़रिए से चलाया। कुरआने करीम की ये आयत وَيَرْزُقُهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ऐसे ही लोगों के लिए है।

बहर हाल, हज़रत की किन किन सिफ़ात को बयान किया जाए? वो तो अल्लाह के एक

वली और अल्लाह की निशानियों में से एक थे और गोया के सरज़मीने अफ़्रीका के लिए चाहे उन को इमाम कहा जाए या मुस्लिह कहा जाए या मुजद्दिद कहा जाए, हर एक लक़ब उन के लिए मौज़ून है। वो बेज़रर और मुख़्लिस इन्सान थे। अल्लाह तआला ने उन को हज़रत शैख की दुआ की बरकत से हज़ और उमरे की भी बार बार तौफ़ीक़ दी और उन्होंने ने भी इस नेअमते उज़्मा से ख़ूब फ़ाइदा उठाया। अल्लाह तआला उन को ग़रीक़े रहमत करे।

हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब ने अपनी पूरी ज़िन्दगी अफ़्रीका की सरज़मीन पर दिनी तालीम की नशर व इशाअत में तमाम कर दी और जब आख़िरत के सफ़र का वक़्त आया तो बाक्रियाते सालिहात छोड़ कर चले गए। हदीस में आता है के जब इन्सान मर जाता है तो तीन चीज़ों का सवाब उस के लिए जारी रेहता है। एक तो सदक़ए ज़ारिया मसलन कोई रिफ़ाही काम अन्जाम दिया या कोई मस्जिद व मक़तब और मदरसा बना दिया या आम पब्लिक के फ़ाइदे की खातिर कोई काम किया, या कोई इल्मी कुतुबखाना क़ाइम किया, या इल्मी किताबें और तसनीफ़ात छोड़ी हों और शागिर्दों का एक सिलसिला हो, इसी तरह नेक सालिह औलाद छोड़ी हो जो सआदतमन्द हो और वालिदैन् के लिए दुआ करती हो। माशाअल्लाह, अल्लाह तआला ने हज़रत मौलाना को तीनों निअमतों में से वाफ़िर हिस्सा अता फ़रमाया के “सिराजुल क़ारी”, “महब्बतनामे”, और “हक़ीक़ते शुक्र” वग़ैरा किताबें और हज़ारों शागिर्द छोड़े, एक दिनी तालीमी इदारा छोड़ा, और फिर उस के तहत कितने ही मकातिब छोड़े और नेक सालिह औलाद छोड़ी।

अब हज़रत मौलाना की ज़िन्दगी की शाम हो चुकी थी, इस लिए वो अपने आमाल व खिदमात की उजरत के लिए लिक्काए रब के मुन्तज़िर थे, जो बग़ैर मौत के मुमकिन नहीं। इस लिए हज़रत मौलाना ने भी यही राह इख़तियार की और २५ मुहर्रमुल हराम सन १४३४ हिजरी मुताबिक़ ९ दिसंबर २०१२ की सुब्ह की नमाज़ के बाद तमाम मामूलात से फ़ारिग़ हो कर अपने रब के हुज़ूर हाज़िर हो गए। इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊन। और शाम को साढ़े तीन बजे नमाज़े जनाज़ा हुई और चीपाटा के आम क़ब्रस्तान में हमेशा हमेश के लिए आसूदाए ख़ाक़ हो गए।

غفر الله له ورفع درجاته في جنات النعيم

इदारा अज़हर अकैडमी, लन्दन

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

तर्जमा कुरआन हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा दाम ज़िल्लुहुम

(साहिबे मुकद्दमा हाज़ा, हज़रत मौलाना साजिदुर्रहमान साहब सिद्दीकी, 4 सफर 1433 हि०, मुताबिक 30 दिसम्बर 2011 ई०, बरोज़ जुमा इस दारे फानी से रिहलत फरमा गए। नमाज़े जनाज़ा हज़रत मौलाना मुफ्ती मुहम्मद रफीअ उस्मानी साहब दाम ज़िल्लुहुम ने पढ़ाई। अल्लाह तबारक व तआला मौलाना मरहूम को अपने जिवारे रेहमत में बुलन्द दरजात से नवाज़े। आमीन!)

الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا من يهدهم الله فلا مضل له ومن يضلل الله فلا هادي له ونشهد أن لا اله الا الله وحده لا شريك له ونشهد أن سيدنا ومولانا محمداً عبده ورسوله صلى الله عليه وعلى آله وصحبه وسلم

सय्यिदी व मुरशिदी हज़रत शैखुल इस्लाम मुफ्ती मुहम्मद तकी उस्मानी मुद्द ज़िल्लुहुम ने अज राहे कमाले इनायत इरशाद फरमाया के अहक़र हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम (मुहतमिम दाख़ल उलूम बरी, इंग्लैंड) के तर्जमए कुरआने करीम का मुतालआ करे और उस के बारे में अपनी मुतवाज़िआना राए से मौसूफ को मुत्तलेअ कर दे। अहक़र ने हज़रत शैख के ईमा को हुक्म तसव्वुर करते हुए हज़रत मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम के तर्जमए कुरआन को लफज़न लफज़न पढ़ा और जुस्ता जुस्ता अपनी मुतवाज़िआना राए भी तहरीर की। जिस को हज़रत मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम ने अपने अल्ताफे करीमाना से शरफे क़बूल भी अता फरमाया। फलिल्लाहिल हम्दु वलहुशुक्र।

इस अहक़र को अपनी कमइल्मी की बिना पर हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम की गिरांक़द शख़सीयत और उन के हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू से तअल्लुक़ के बारे में आगाही हासिल न थी। हज़रत शैखुल इस्लाम मौलाना मुफ्ती मुहम्मद तकी उस्मानी दामत बरकातुहुम ने इस आजिज़ को ज़रूरी कवाइफ से मुत्तलेअ फरमाया। अगर्चे मैं हरगिज़ इस क़ाबिल न था के हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम की शख़सीयत और उन के तर्जमए कुरआन के बारे में कोई तहरीर सुपुर्दे क़लम करता, मगर बकौले शाइर:

हिकायत अज़ क़दे आँ यार दिलनवाज़ कुनैम

बई बहाना मगर उम्रे खुद दराज़ कुनैम

हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू कमालाते बातिनी और मदारिजे इल्मी की उन बुलन्दियों तक पहुँचे हुए थे के बिला तअम्मुल उन की शख़सीयत को सलफे सालेह की सीरत व किरदार और उन के इल्म व अमल का एक जामेअ तरीन पैकर क़रार दिया जा सकता है। हज़रत शैखुल हदीस का तअल्लुक़ कांधला के उस अज़ीम खानवादे से था जिस का सिलसिलए नसब हज़रत मुफ्ती इलाहीबख़्श साहब रहमतुल्लाहि अलैहि और फिर ऊपर हज़रत अबू

बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु तक पहुँचता है।

हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू 11 रमज़ानुल मुबारक 1315 हि० में पैदा हुए। आप के वालिद का नाम हज़रत मौलाना मुहम्मद यहया कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैहि और आप के जदे अमजद का इस्मे गिरामी हज़रत मौलाना मुहम्मद इस्माईल कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैहि है। हज़रत शैखुल हदीस रहमतुल्लाहि अलैहि ने इल्मे हदीस अव्वलन अपने वालिद मौलाना मुहम्मद यहया कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैहि और उन के बाद अपने मुरब्बी व मुरशिद हज़रत मौलाना खलील अहमद रहमतुल्लाहि अलैहि से हासिल किया और 'बज़लुल मजहूद' की तालीफ में अपने शेख की मुआवनात फरमाई। हदीस और उलूमे हदीस का अस्ल जौक, मौजूअ और मेहनत व तहकीक का मैदान था और उस को वो तर्क़ूब इलल्लाह और तर्क़ूब इलरसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सब से बड़ा ज़रिया समझते थे और उस को उन्होंने ने अपना शिआर व दिसार बना लिया था। यहांतक के शैखुल हदीस उन के नाम के काइम मक़ाम और उस से ज़्यादा मशहूर हो गया था।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम हज़रत शैखुल हदीस के तिलमिज़े खास, उन के मुजाज़े बैअत और उन के मुक़रबीने खास में से हैं।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोताा साहब मुद्द ज़िल्लुहुमुल आली मुहतमिम दाख़ल उलूम बरी इंगलैंड मुहर्रमुल हराम 1366 हि० (25 नवम्बर 1946 ई०) को एक दीनी घराने में पैदा हुए। इब्तिदाई तालीम मदरसा तरगीबुल कुरआन नानी नरोली में हासिल कर के सन् 1961 ई० में रांदेर के मशहूर मदरसा जामिआ हुसैनिया में दाखला लिया और हिदाया अव्वलैन तक यहीं तालीम हासिल की। उस के बाद मज़ाहिर उलूम (सहारनपूर) में दाखला लिया और शैखुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब से मिश्कात पढ़ी और जलालैन मौलाना मुहम्मद आक़िल साहब से और हिदाया सालिस मौलाना मुफ्ती मुहम्मद यहया साहब से पढ़ी। उस के बाद नसई और अबू दाऊद हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब जौनपुरी से, तिरमिज़ी और सहीह मुस्लिम हज़रत मौलाना मुफ्ती मुज़फ्फर हुसैन साहब से और तहावी हज़रत मौलाना असअदुल्लाह साहब से पढ़ी और सहीह बुखारी शरीफ (मुकम्मल) हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू से पढ़ी।

दौराने तालीम ही इस्लाह की फ़िक्र दामनगीर हुई और हज़रत मौलाना अहमद अदा गोधरवी के मश्वरे से हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू से बैअत के लिए उन की खिदमत में अरीज़ा इरसाल किया जिस को हज़रत शैखुल हदीस ने शरफे क़बूलियत बख़्शा और दाखिले सिलसिला फरमा लिया।

तअल्लुके इरादत काइम होने के बाद तालीम के साथ मामूलात का सिलसिला भी जारी रहा। हज़रत शैख से पेहली मुलाक़ात उस वक़्त हुई जब हज़रत शैखुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ रहमतुल्लाहि अलैहि (अमीर तबलीगी जमाअत) सफरे हज के लिए तशरीफ ले जा रहे थे। और देहली से बम्बई आने वाले थे। सूरत के शाइकीने मुलाक़ात हज़ारों की तादाद में रेलवे स्टेशन पर जमा हो गए थे जिन में जामिआ हुसैनिया, मदरसा अशरफीया (रांदेर) और मदरसा

जामिआ इस्लामिया (डाभेल) के तलबा व असातिजा के अलावा हज़ारों अवाम सरापा इशतियाके ज़ियारत बन कर शुरू रात से ही वहाँ पहुँच गए थे। सुबह चार बजे ट्रेन स्टेशन पर पहुँची। ट्रेन के ठेहरने का वक्त सिर्फ़ तीन मिनट था। मगर ट्रेन पंद्रह मिनट ठेहरी रही। और मुशताफ़ाने ज़ियारत ने हज़रत का दीदार किया और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने ट्रेन के दरवाज़े में खड़े हो कर हाज़िरीन से खिताब फरमाया, जो ट्रेन की रवानगी तक जारी रहा।

१३८४ हि० में हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम की हज़रत शैखुल हदीस की खिदमत में अपने बिरादरे मुहतरम मौलाना अब्दुरहीम साहब की मईयत में हाज़िरी हुई। मौलाना अब्दुरहीम साहब दौराए हदीस से फरागत के बाद हज़रत शैखुल हदीस की खिदमत में मुस्तक़िल क़ियाम का इरादा रखते थे। बिरादरे मुहतरम के हमराह सहारनपूर पहुँच गए। और हज़रत शैखुल हदीस रहमतुल्लाहि अलैहि की खिदमत में हाज़िरी का शर्फ़ हासिल हुवा।

“कच्चे घर में क़दम रखते ही चौखट से आगे क़दम बढ़ाना मुशक़िल हो गया। नज़रें चुरा कर देखा तो निगाहें चका चौंध हो गईं। आफ़ताब की तरह पुरजलाल चेहरा जिस में निगाहों को ख़ैरा करने वाली बर्क़बार आँखें, सर खुला हुवा, आस्तीनें चढ़ी हुई, चहारज़ानू जल्वाअफ़रोज़ हैं।”

उसी साल हज़रत शैखुल हदीस रहमतुल्लाहि अलैहि ने पूरे माह के ऐतेकाफ़ का सिलसिला मदरसा क़दीम की दफ़्तर वाली मस्जिद से शुरू किया। मस्जिद मौतकिफीन से भर गई।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम ने सहारनपूर के अपने क़ियाम के दौरान अपने तालीमी मराहिल भी मुक़म्मल किए और हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़क़रीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू से रूहानी फ़ुयूज़ भी हासिल करते रहे।

दौराए हदीस से फरागत के बाद वालिदा ने इंगलिस्तान में मुक़ीम रिश्तेदारों में निकाह तै कर दिया और हज़रत शैखुल हदीस ने हुक्म फरमाया के “जाओ सूरत जा कर वालिदैन की खिदमत करो।” चंद माह बाद वालिदे मुहतरम का इन्तिक़ाल हो गया और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम इंगलिस्तान तशरीफ़ ले गए।

१३८६ हि० में हज़रत शैखुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू रमज़ानुल मुबारक में हरमैन तशरीफ़ लाए और पन्द्रह रोज़ मक्का मुकर्रमा में क़ियाम फरमाया और आखिरी अशरे में ऐतेकाफ़ फरमाया। दौराने ऐतेकाफ़ एक शब तरावीह वग़ैरा से फरागत के बाद हज़रत शैखुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू ने हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम को याद फरमाया और आप को बैअत की इजाज़त मरहमत फरमाई। और अपने दस्ते मुबारक से मिशलह पेहनाया।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम का हज़रत शैखुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू से बहोत गेहरा और मरबूत तअल्लुक़ रहा और ये तअल्लुक़ हज़रत शैखुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू की हयात के आखिरी लमहात तक जारी रहा। हज़रत शैखुल हदीस रहमतुल्लाहि अलैहि के ईमा पर आप ने इंगलिस्तान में दाख़ल उलूम काइम किया और दीनी तालीम व तरबियत का एहतेमाम फरमाया। और हज़रत शैखुल हदीस रहमतुल्लाहि अलैहि ने तहरीर फरमाया के

“इन्शाअल्लाह तुम्हारे मदरसे की ज़रूरियात अल्लाह की ज़ात से क़वी उम्मीद है के जल्द पूरी हो जाएंगी।”

दारुल उलूम के मुतअल्लिक एक दूसरे गिरामीनामे में ये भी तहरीर फरमाया के-

“क़ारी यूसुफ! तुम्हारे मदरसे का फ़िक्र मुझे भी इन्शाअल्लाह तुम से कम न होगा। दिल से दुआएं भी कर रहा हूँ।”

“मगर मेरे प्यारे! इन मशागिले आलिया में लग कर हमारी लाईन को खैरबाद न केह देना। दीनी कामों में कुव्वत रूहानियत से होती है। मामूलात की पाबन्दी और कम से कम आधा घंटा यकसूई का रखना ज़रूरी है।”

“मगर यूसुफ प्यारे!

है यही शर्ते वफादारी के बे चूनो चिरा

वो मुझे चाहे न चाहे मैं उसे चाहा करूँ

मुझे तो तुम्हारे दारुल उलूम ने ऐसा पागल बना रखा है के हर वक़्त उसी का खयाल, और सोच व बिचार उसी का रेहता है। तुम तो माशाअल्लाह

متى ما تلق من تهوى، دع الدنيا وأهملها

के मरतबे पर फाईज़ हो और तुम्हारे खुद्दाम तुम से भी बीस गज़ आगे। ये तो प्यारे! जो अपने बड़ों के साथ जैसा सुलूक करता है छोटे उस के साथ यही करते हैं। मुन्तज़िर रहो।”

आम तौर पर मुसलमानों का इल्मी और दीनी इन्हितात अब इस दरजा गेहरा और मुहीत हो चुका है के आम्मतुल मुस्लिमीन बुजुर्गों की उर्दू तहरीरों के पढ़ने और उन के कमा हक्कहू समझने पर भी क़ादिर नहीं रहे। ये अम्र एक नागुज़ीर ज़रूरत बन कर सामने आ गया है के इल्मे दीन की इशाअत व तबलीग़ के लिए उर्दू ज़बान के सहल और रवां उसलूबे निगारिश को तरजीह दी जाए और इल्मी दक़ाइक़ के बजाए अस्ल हक्कीक़त से रूशनास कराने की फ़िक्र की जाए। खुद ये कुरआने करीम के उर्दू के तराजिम अब आम मुसलमानों के लिए क़ाबिले फहम नहीं रहे इस लिए ये एक नागुज़ीर तकाज़ा था के मौजूदा ज़रूरतों के पेशे नज़र कुरआने करीम का सलीस और रवां क़ाबिले फहम उर्दू में तर्जमा किया जाए। ‘अलहम्दुलिल्लहि वलमिन्नह’ के हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम ने इस ज़रूरत को बहोत अहसन तरीक़े से मुकम्मल फरमा दिया।

ये अल्लाह तआला का फज़ल व करम और उस का एहसाने अज़ीम है के ज़ेरे नज़र तर्जमए कुरआन मुतअद्दद खूबियों और गूनागूँ ज़ाहिरी और मअनवी महासिन का जामेअ बन गया है। बतौरे खास इस तर्जमए कुरआन के चंद नुमायों पेहलू हस्बे ज़ैल हैं।

- ये तर्जमए कुरआन सहाबाए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम और सलफे सालेह के तफसीरी नुकात पर मुशतमिल है।
- तर्जमए कुरआन में आयात के फिक़ही पेहलू बखूबी उजागर हो गए हैं।
- हर आयत का तर्जमा पिछली और बाद वाली आयत से मरबूत होने के साथ साथ अपनी जगह पर मुस्तक़िल है।
- तर्जमा सलीस, रवां और आम फहम है।

➡ इस तर्जमे की मदद से कुरआने करीम के मज़ामीन को समझना और ज़हननशीन करना आसान हो गया है।

जहाँ तक नज़रे सानी का तअल्लुक है, तो ये महज़ तौफीके रब्बानी और बजुर्गों के फुयूज़ व बरकात हैं के अहक़र अपनी इल्मी बेबिज़ाअती के बावजूद इस खिदमत की अन्जाम दही के काबिल हुवा है। अहक़र ने ये तर्जमा दो मर्तबा बिल इस्तीआब हरफन हरफन पढ़ा है और दीगर उर्दू तराजिम से मुवाज़ना किया है। और बतौरे खास सय्यिदी व मुरशिदी हज़रत मौलाना मुफ्ती मुहम्मद तकी उस्मानी दामत बरकातुहुम के आसान तर्जमए कुरआन को पेशे नज़र रखा है। अल्लाह तआला का इस आजिज़ पर इहसाने अज़ीम और लुत्फे अमीम है के तर्जमए कुरआन पर नज़रे सानी का तमाम काम इसी नहज पर मुकम्मल हुवा। फलिल्लाहिल हम्द वशशुक्र।

दस्त बदुआ हूँ के अल्लाह तआला इस कोशिश व काविश को शरफे कबूल से सरफराज़ फरमाए और इस खिदमत को ज़खीरए आखिरत बनाए और इस के ज़रीए मुसलमानों में कुरआन के समझने और उस के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगियों को संवारने का ज़ौक़ व शौक़ पैदा फरमाए। आमीन! वमा ज़ालिक अलल्लाहि बिअज़ीज़!

(हज़रत मौलाना डा०) साजिदुर्रहमान सिद्दीकी (रहमतुल्लाहि अलैहि)

1 मुहर्रमुल हराम 1432 हि०

मेरा अक्कीदा है के...

- ★ कुरआन कलामे इलाही है। मरल्लूक नहीं, बल्के कलामुल्लाह, अल्लाह की सिफत है।
- ★ कुरआन अल्लाह की आखिरी किताब है। इस के बाद कोई किताब अल्लाह ने नाज़िल नहीं फ़रमाई और न नाज़िल होगी।
- ★ कुरआन ख़ातमुल अम्बिया, ख़तमुल मुरसलीन, आखिरी पैग़ामबर, नबीए उम्मी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अल्लाह ने नाज़िल फरमाया जो साबिक़ा तमाम अम्बिया की शराइअ के लिए नासिख़ है। कुरआनी अहकाम और शरीअते मुहम्मदी पर ही क्रियामत तक इन्सानियत को चलना है।
- ★ कुरआन के बाद अब न कोई किताब उतरेगी, न मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी अल्लाह भेजेगा। झूठे मुद्इए नुबुव्वत की अल्लाह के पैग़ामबर ने खबर दी है, वो दज्जाल पैदा होते रहेंगे।
- ★ कुरआने करीम अल्लाह की ऐसी किताब है जो अपने नुज़ूल में मुनफ़रिद हैसियत रखती है, के ये दीगर अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की तरह किताबी शक़ल में नहीं दी गई। जिब्रईले अमीन और दीगर मलाइका को हज़ारों दफ़ा दरे रिसालत पर बारयाबी का शर्फ़ हासिल हुवा। इस तरह ये किताब उम्मत को पढ़ोची।
- ★ ये ऐसी किताब है जो मोअज़िज़ है, के अल्लाह ने तमाम सुन्ने वालों, पढ़ने वालों को उस जैसी एक आयत बनाने का चैलेंज देखा है।
- ★ बशरीय्यत के आलम के अलावा कुरए अर्ज़ी पर बेशुमार दूसरे आलमों का उस में ज़िक्र है। उन सब के निज़ाम पर मलाइका मुक़रर हैं।
- ★ कुरआने करीम सिर्फ़ बशरी कूव्वत, अरबीदानी और अक्ल के ज़रिए नहीं समझा जा सकता, बल्के नबीए उम्मी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बतलाई हुई तफ़सीरे कुरआन, जो सहाबाए किराम के ज़रिए उम्मत को पढ़ोची, वही मोअतबर है।
- ★ मौजूदा कुरआन मुकम्मल है, जो एक सो चौदा (११४) सूरतों और तीस (३०) पारों का मजमूआ, मसाहिफ़ में और उम्मत के हुफ़फ़ाज़ के सीनों में है। उसी को बग़ैर किसी कमी बेशी के

सहाबाए किराम ने उम्मत को पहींचाया है।

★ कुरआन खल्क़त और उलूहीय़त के मा बय़न की हुदूद इन्सान को बताता है। खुदा ही तमाम मख़लूक़ात का ख़ालिफ़ व मालिक है। नफ़ा व ज़रर उसी की कुदरत में है। रिज़क़ की तंगी व वुसअत उसी की तरफ़ से है। शिफ़ा व सिहहत वही देता है। वही अल्लामुल गुयूब है। अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम से ले कर तमाम इन्सानों को हर चीज़ का इल्म उसी ने दिया। हज़रत आदम अलैहि वअला नबीय़िना अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम से ले कर ख़ातमुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक तमाम अम्बिया खुदा की मख़्लूक़ व बशर थे। अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम, मुअजिज़ाते अम्बिया और उन की उम्मतों के अहवाल की खबर कुरआन हमें देता है। मसअलए तक्रदीर को अल्लाह ने जगह जगह बयान फरमाया।

★ सरवरे अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबाए किराम को कुरआने करीम की बहोत सी पेशिनोइयाँ मुख़्तलिफ़ आयात में सुनाई। बहोत सारी पूरी हुई, और जो बाक़ी हैं, क्रियामत से पेहले पूरी होंगी। और भी जो बाक़ी रहेंगी, वो आलमे बरज़ख़, हश्र व नश्र और जन्नत व जहन्नम में पूरी होंगी। कुछ पेशिनोइयाँ कुर्बे क्रियामत की अलामात के तौर पर उस में बयान की गई हैं, जैसे याजूज माजूज का निकलना, दाब्बतुल अर्ज़ और नुज़ूले ईसा अलैहि व अला नबीय़िना अस्सलातु वस्सलाम।

★ आलमे बरज़ख़, हश्र व नश्र और नफ़खे सूर के अहवाल सब से ज़्यादा तफ़सील से कुरआन में बयान किए गए। हश्र में मख़्लूक़ की खुदा के सामने पेशी और हिसाब व किताब और आमाल की जज़ा व सज़ा का ज़िक़्र कुरआने करीम में जगह जगह है।

★ शरीअते मुहम्मदी के अहक़ाम, पंजवक्रता और जुमुआ की नमाज़ें और तहारत, गुस्ल, वुज़ू और तयम्मूम का बयान है। सदक़ा, ज़कात, रोज़ा, ऐतेकाफ़, लैलतुल क़दर, हज और उस के अक़्साम, उमरा और हज के मसाइल कुरआन हमें सिखाता है। निकाह, तलाक़, तलाक़ की अक़्साम, महर, मुतआ, रिज़ाअत, खुल्अ, ज़िहार, इद्दत और नफ़क़ा वग़ैरा को बयान किया गया।

★ ज़िना और तोहमते ज़िना की सज़ा और चोरी डकैती की सज़ाएं बयान की गई हैं। ज़िना वग़ैरा से तहफ़फ़ुज़ के लिए पर्दे के अहक़ाम, किसी के घर में दाख़ले के लिए इजाज़त ले कर दाख़िल होने के आदाब बयान किए गए और रास्ते में निगाहों की हिफाज़त वग़ैरा आदाबे

मुआशरत बयान किए गए।

★ खरीद व फरोख्त और लैन दैन के तरीके और गवाहों की गवाही वगैरा भी बयान किए गए हैं। खरीद व फरोख्त में सूदी लैन दैन से न बचने पर वईदें बयान की गई हैं।

★ दो दर्जन से ज़ाइद हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ज़वात में से सब से मुहतम्म बिश्शान वो हैं जिन को खुसूसियत के साथ कुरआन ने बयान किया। बदरे कुबरा, बदरे सुगरा, उहुद, अहज़ाब, बनू कुरैज़ा, सुल्हे हुदैबिया, फत्हे मक्का, ग़ज़वए हुनैन और ग़ज़वए तबूक के सिलसिले में मुस्तक़िल आयात नाज़िल हुई हैं। इन ग़ज़वात के शुरका को सहाबाए किराम में एक मुमताज़ नुमायां हैसियत दी गई।

★ उम्मत मुहम्मदीया में, बल्के अम्बिया अलैहुमस्सलातु वस्सलाम को छोड़ कर तमाम अम्बिया की उम्मतों में सब से अफ़ज़ल तरीन सय्यिदुना अमीरुल मुअमिनीन अबू बक्र अस्सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हु, सय्यिदुना अमीरुल मुअमिनीन उमर इब्नुल खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु, सय्यिदुना अमीरुल मुअमिनीन उस्मान इब्ने अफ़फ़ान रदियल्लाहु अन्हु, सय्यिदुना अमीरुल मुअमिनीन अली इब्ने अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु अलत्तरतीब सब से अफ़ज़ल करार पाए। ख़ुलफ़ाए अरबआ के दीगर कारनामों के साथ अज़ीम कारनामा कुरआने करीम की तजमीअ, तहफ़फ़ुज़ और उसे उम्मत तक पहुँचाना है। रदियल्लाहु अन्हुम व अरज़ाहुम।

यूसुफ मोतारा

दारुल उलूम होलकम्ब, बरी

१७ जुमादा अलउखरा १४३५

मुताबिक १७ अप्रैल २०१४

اللَّهُ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ

اللَّهُ

اللَّهُ

اللَّهُ

اللَّهُ

اللَّهُ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ



اَيَاتُهَا ٢ (١) سُورَةُ الْفَاتِحَةِ (٥) رُكُوعُهَا ١
इस में ७ आयतें हैं सूरह फातिहा मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ الرَّحْمَنِ
तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है। जो बड़ा महरबान,

الرَّحِيمِ مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ
निहायत रहम वाला है। जो हिसाब के दिन का मालिक है।

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ
ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद तलब करते हैं।

اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ صِرَاطَ
तू हमें सीधे रास्ते की हिदायत दे। उन लोगों

الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ
के रास्ते की जिन पर तू ने इन्आम फरमाया, न

الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ
उन के रास्ते की जिन पर ग़ज़ब किया गया और न गुमराहों के रास्ते की।

اللَّهُ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ

اللَّهُ

اللَّهُ

اللَّهُ

اللَّهُ

اللَّهُ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ



رُكُوعَاتُهَا

(۲) سُورَةُ الْبَقَرَةِ مَرَّةً (۸۷)

آيَاتُهَا ۲۸۱

और ४० रूकूअ हैं सूरह बकरह मदीना में नाज़िल हुई उस में २८६ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الْمَّ ذَٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ ۚ فِيهِ ۚ

अलिफ लाम मीम। ये ऐसी किताब है के जिस में शक नहीं।

هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ

जो मुत्तकियों को हिदायत देने वाली है। उन मुत्तकियों को जो ईमान रखते हैं

بِالْغَيْبِ وَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَ مِمَّا

गैब पर और नमाज़ काइम करते हैं और उन चीजों में से

سَرَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝ وَ الَّذِينَ

जो हम ने उन को दी खर्च करते हैं। और जो

يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ

ईमान रखते हैं उस किताब पर जो आप की तरफ उतारी गई और उन किताबों

مِّن قَبْلِكَ ۚ وَ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝

पर जो आप से पेहले उतारी गई। और आखिरत पर भी वो यकीन रखते हैं।

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥﴾

यही लोग अपने रब की तरफ से हिदायत पर हैं। और यही लोग फलाह पाने वाले हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ

यकीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया उन के लिए बराबर है चाहे आप उन्हें डराएं या

لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾ خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ

उन्हें न डराएं, वो ईमान नहीं लाएंगे। अल्लाह ने मुहर लगा दी है उन के दिलों पर

وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ

और उन के कानों पर और उन की आँखों पर परदा है। और उन के लिए भारी

عَظِيمٌ ﴿٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ

अज़ाब है। और बाज़ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं के हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर

وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُمْ بِبُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾ يُخَدِّعُونَ اللَّهَ

और आखिरी दिन पर हालांके वो ईमान नहीं लाए। वो अल्लाह को धोका दे रहे हैं

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يُخَدِّعُونَ إِلَّا أَنفُسُهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾

और उन को भी जो ईमान लाए हैं। और वो धोका नहीं देते मगर अपने आप को और उन्हें एहसास भी नहीं।

فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ ۖ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ

उन के दिलों में बीमारी है, फिर अल्लाह ने उन की बीमारी और बढ़ा दी। और उन के लिए दर्दनाक

أَلِيمٌ ۖ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿١٠﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ

अज़ाब है इस वजह से के वो झूठ बोलते हैं। और जब उन से कहा जाता है

لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ ۖ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ﴿١١﴾

तुम ज़मीन में फसाद मत फैलाओ, तो कहते हैं के हम तो सिर्फ इस्लाह करने वाले हैं।

إِلَّا أَنَّهُمْ هُمُ الْفَاسِدُونَ وَلَكِنْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢﴾

सुनो! यकीनन यही लोग फसाद फैलाने वाले हैं, लेकिन उन्हें एहसास नहीं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ

और जब उन से कहा जाता है के तुम ईमान लाओ ऐसा जैसा के ये लोग (यानी सहाबा) ईमान लाए हैं तो कहते हैं

كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ ۖ إِنْهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِنْ

के क्या हम ईमान लाएं जैसा के ये बेवकूफ लोग ईमान लाए हैं? सुनो! यकीनन यही लोग बेवकूफ हैं, लेकिन

ع

وَقَدْ لَازَمَ

لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾ وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا	وہ جاننے نہیں۔ اور جب وہ ملتے ہیں ایمان والوں سے تو کہتے ہیں کہ ہم مومنین ہیں۔
وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شُيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ ۖ إِنَّمَا نَحْنُ	اور جب وہ تنہائی میں ہوتے ہیں اپنے شیطانیوں کے پاس، تو کہتے ہیں کہ ہم تمہارے ساتھ ہیں۔ ہم تو صرف
مُسْتَهْزِءُونَ ﴿١٤﴾ اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ	مزاح کر رہے تھے۔ اलّٰہ ان کے ساتھ مزاح کرتا ہے اور انہیں ڈیل دیتا ہے کہ اپنی سرکشی میں
يَعْمَهُونَ ﴿١٥﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ	ہیران فیرے۔ یہی لوگ ہیں جنہوں نے گمراہی کو خریدی ہدایت کے بدلے میں۔
فَمَا رِبِحَتْ تِجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٦﴾	فیر ان کی تجارت نفاہخش نہیں ہوئی اور وہ ہدایت یافتہ نہیں ہیں۔
مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۖ فَلَمَّا أَضَاءَتْ	ان کا حال ایسا ہے جیسا اس شخص کا حال جس نے آگ جلائی۔ فیر جب آگ نے روشن کر دیا
مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمٍ	اس کے اتراف کو تو االّٰہ نے ان کے نور کو سلب کر لیا اور ان کو چوڑ دیا تاریکیوں میں کہ وہ
لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٧﴾ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْىٰ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾	دیکھ نہیں پاتے۔ وہ بہرے ہیں، گونے ہیں، انبھے ہیں، اس لیے وہ (کفر سے) راجو نہیں کریں گے۔
أَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ ۗ	یا ان کا حال آسمان سے برسنے والی بارش کی ترہ ہے کہ جس میں تاریکیاں ہوں اور گرج ہو اور بیجلی ہو۔
يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ	وہ اپنی انگلیاں ڈال رہے ہیں اپنے کانوں میں گرج کی وجہ سے، موت کے
الْمَوْتِ ۗ وَاللَّهُ مُحِيطٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ	خوف سے۔ اور االّٰہ کافروں کا ڈھاتا کیے ہے۔ کریب ہے کہ بیجلی
يَخْطِفُ أَبْصَارَهُمْ ۖ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيهِ ۖ	ان کی بینائیوں کو اچک لے۔ جب کبھی بیجلی ان کے لیے روشنی کر دیتی ہے تو اس میں چلنے لگتے ہیں۔
وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ	اور جب ان پر تاریکی چاڑی ہے تو خڈے رے جاتے ہیں اور اگر االّٰہ چاہتا تو سلب کر لےتا ان کے کان

وَ أَبْصَارِهِمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يٰٓأَيُّهَا

और उन की आँखों को। यकीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। ऐ इंसानो!

النَّاسِ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَ الَّذِينَ

इबादत करो अपने उस रब की जिस ने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को भी पैदा किया

مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ

जो तुम से पेहले थे ताके तुम मुत्तकी बनो। वो अल्लाह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को

فِرَاشًا وَ السَّمَاءَ بِنَاءً ۖ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ

बिछौना बनाया और आसमान को छत बनाया। और जिस ने आसमान से पानी उतारा, फिर उस

بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا

पानी के ज़रिए फलों को निकाला तुम्हारे खाने के लिए। इस लिए तुम अल्लाह के शरीक मत बनाओ

وَ أَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا

हालाँके तुम जानते हो। और अगर तुम शक में हो उस कुरआन की तरफ से जो हम ने उतारा

عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ ۖ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ

अपने बन्दे पर तो तुम उसी जैसी एक सूरत ले आओ। और तुम बुलाओ अपने मददगारों को

مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا

अल्लाह के अलावा अगर तुम सच्चे हो। फिर अगर तुम ऐसा न कर सको

وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ

और हरगिज़ तुम ऐसा नहीं कर सकोगे, तो तुम डरो उस आग से जिस का ईंधन इंसान

وَ الْحِجَارَةُ ۚ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ۝ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا

और पथ्थर (बुत) हैं, जो तय्यार की गई है काफिरों के लिए। और आप बशारत सुना दीजिए उन लोगों को जो ईमान लाए

وَ عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا

और नेक अमल करते रहे, (इस बात की बशारत) के उन के लिए जन्नतें हैं के जिन के नीचे से नेहरें बेहती

الْأَنْهَارُ كُلًّا زُرِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۖ قَالُوا

होंगी। जब कभी वहाँ से कोई फल उन्हें खाने को दिया जाएगा, तो वो कहेंगे के ये तो वही फल है जो

هَذَا الَّذِي زُرِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۖ وَأْتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ

हमें खाने को दिया गया इस से पेहले, और उन्हें एक दूसरे के मुशाबेह फल दिए जाएंगे। और उन के लिए

	فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۖ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٥﴾ إِنَّ اللَّهَ उन में पाक साफ बीवियाँ होंगी और वो उन में हमेशा रहेंगे। यकीनन अल्लाह
	لَا يَسْتَنْجِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةٌ فَمَا فَوْقَهَا ۚ हया नहीं करता इस से के वो कोई मिसाल बयान करे किसी मच्छर की हो या उस से भी बड़ कर।
	فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ फिर अलबत्ता वो लोग जो ईमान लाए, तो वो यकीन रखते हैं के ये हक है, उन के रब की तरफ से है।
وقل لا اله	وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۚ और अलबत्ता जो काफिर हैं वो केहते हैं के उस के ज़रिए मिसाल बयान कर के अल्लाह ने किस चीज़ का इरादा किया?
	يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا ۖ وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِ अल्लाह उस के ज़रिए बहोत सों को गुमराह करते हैं और बहोत सों को उस के ज़रिए हिदायत देते हैं। और उस के ज़रिए अल्लाह गुमराह
	إِلَّا الْفَاسِقِينَ ﴿١٦﴾ الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ नहीं करते मगर नाफरमान लोगों को। उन लोगों को जो अल्लाह का अहद तोड़ते हैं उस के पुखता
	مِيثَاقِهِ ۚ وَ يَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ करने के बाद, और जो तोड़ते हैं उन तअल्लुफ़ात को जिन के जोड़े जाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है
	وَ يَفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٧﴾ और वो ज़मीन में फसाद फैलाते हैं। यही लोग खसारा उठाने वाले हैं।
	كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ कैसे तुम कुफ़ करते हो अल्लाह के साथ हालांके तुम बेजान थे, फिर अल्लाह ने तुम्हें ज़िन्दा किया। फिर वो तुम्हें मौत देगा, फिर
	ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٨﴾ هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ वो तुम्हें ज़िन्दा करेगा, फिर उस की तरफ तुम लौटाए जाओगे। वही अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिए पैदा कीं
	مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ वो तमाम चीज़ें जो ज़मीन में हैं। फिर वो आसमान की तरफ मुतवज्जेह हुवा, फिर उस ने उन को
سبع	سَبْعَ سَمَوَاتٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٩﴾ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ सात आसमान बनाया। और वो हर चीज़ को खूब जानने वाला है। और जब के आप के रब ने फरिश्तों से
	لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوا أَتَجْعَلُ फरमाया के मैं ज़मीन में खलीफा मुकरर करने वाला हूँ। फरिश्तों ने कहा क्या आप ज़मीन में

فِيهَا مَنْ يَفْسِدُ فِيهَا وَ يَسْفِكُ الدِّمَاءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ

मुकरर करते हैं उस को जो ज़मीन में फसाद फैलाए और खूरेज़ी करे? हालांकि हम तसबीह करते हैं

بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۖ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

आप की हम्द के साथ और हम आप की पाकी बयान करते हैं। अल्लाह ने फरमाया मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

وَ عَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ ۖ

और अल्लाह ने आदम (अलैहिस्सलाम) को तमाम नाम सिखला दिए, फिर उन को पेश किया फरिश्तों पर।

فَقَالَ أَنْبِئُونِي بِأَسْمَاءِ هَؤُلَاءِ ۖ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣١﴾

उस के बाद फरमाया के तुम मुझे खबर दो उन चीज़ों के नामों की अगर तुम सच्चे हो।

قَالُوا سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ

फरिश्तों ने कहा आप पाक हैं, हमें इल्म नहीं मगर उतना ही जो आप ने हमें सिखलाया। यकीनन आप ही इल्म

الْحَكِيمُ ﴿٣٢﴾ قَالَ يَا آدَمُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ ۚ فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ

वाले, हिकमत वाले हैं। अल्लाह ने फरमाया ऐ आदम! आप उन को बतलाइए उन चीज़ों के नाम। फिर जब आदम (अलैहिस्सलाम)

بِأَسْمَائِهِمْ ۖ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمُوتِ

ने उन को उन चीज़ों के नाम बतला दिए, तो अल्लाह ने फरमाया के क्या मैं ने तुम से कहा नहीं था के मैं जानता हूँ

وَالْأَرْضِ ۖ وَاعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَ مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٣٣﴾

आसमानों और ज़मीन की छुपी हुई चीज़ों। और मैं जानता हूँ वो जो तुम ज़ाहिर करते हो और वो जो तुम छुपाते हो।

وَ إِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ أَبَىٰ

और जब के हम ने फरिश्तों से कहा के तुम सजदा करो आदम को, तो उन तमाम ने सजदा किया सिवाए इबलीस के। के उस ने इन्कार किया

وَاسْتَكْبَرَ ۖ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٤﴾ وَ قُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ

और उस ने बड़ा बनना चाहा। और वो काफिरों में से हो गया। और हम ने कहा के ऐ आदम! तुम

أَنْتَ وَ زَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا

और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो। और तुम दोनों जन्नत से खाओ कुशादगी के साथ जहाँ तुम चाहो।

وَ لَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣٥﴾ فَازْلَمَهُمَا

लेकिन तुम करीब मत जाना इस दरख्त के, वरना तुम कुसूरवारों में से बन जाओगे। फिर उन दोनों को शैतान

الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ ۖ وَقُلْنَا اهْبِطُوا

ने वहाँ से फुसला दिया, फिर उन को निकाल दिया उन नेअमलों में से जिन में वो थे। और हम ने कहा के तुम नीचे उतर जाओ

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ

तुम में से एक दूसरे के दुश्मन बन कर रहोगे। और तुम्हारे लिए ज़मीन में आरज़ी ठिकाना है और फाइदा उठाना है एक वक्त

إِلَىٰ حِينٍ ۖ فَتَلَقَىٰ آدَمُ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۖ

तक। फिर आदम (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब से चन्द कलिमात हासिल किए, फिर अल्लाह ने आदम (अलैहिस्सलाम) की तौबा कबूल फरमाई।

إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا

यकीनन वो तौबा कबूल करने वाला, निहायत रहम वाला है। हम ने कहा के तुम सब यहाँ से नीचे उतर जाओ।

فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ

फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत आए, तो जो मेरी हिदायत के पीछे चलेगा, तो उन पर न खौफ

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يُحْزَنُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا

होगा और न वो ग़मगीन होंगे। और वो लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया और हमारी आयतों

بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

को झुठलाया, तो ये लोग दोज़खी हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे।

يٰٓيَبْنَٰى إِسْرَءِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ

ऐ याकूब (अलैहिस्सलाम) की औलाद! तुम याद करो मेरी उस नेअमत को जो मैं ने तुम पर की

وَ اَوْفُوا بِعَهْدِي أُوفِ بِعَهْدِكُمْ ۖ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونَ ۝

और तुम मेरा अहद पूरा करो, मैं तुम्हारा अहद पूरा करूंगा। और तुम मुझ ही से डरो।

وَ اٰمِنُوْا بِمَا اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْا اَوَّلَ

और ईमान लाओ उस पर जिस को मैं ने उतारा, जो सच्चा बतलाने वाला है उस को जो तुम्हारे पास है और तुम उस के

كَافِرٍ بِهٖ ۖ وَلَا تَشْتَرُوْا بِآيٰتِيْ شَيْئًا قَلِيْلًا ۚ وَاِيَّايَ

सब से पेहले इन्कार करने वाले मत बनो। और तुम मेरी आयतों के बदले में थोड़ी सी कीमत मत लो। और तुम मुझ ही

فَاتَّقُوْنَ ۝ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَ تَكْتُمُوا

से डरो। और हक़ को बातिल के साथ मत मिलाओ और हक़ को मत

الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا

छुपाओ इस हाल में के तुम जानते हो। और नमाज़ काइम करो और ज़कात

الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝ اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ

दो और रूकूअ करने वालों के साथ रूकूअ करो। क्या तुम दूसरों को नेकी का

بِالْبِرِّ وَ تَسْؤُونَ أَنْفُسَكُمْ وَ أَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ ۖ	हुक़्म देते हो और अपने आप को भूल जाते हो, इस हाल में के तुम किताब की तिलावत भी करते हो?
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٣٣﴾ وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۖ وَإِنَّهَا	क्या तुम अक़ल नहीं रखते? और सब्र और नमाज़ से मदद तलब करो। और यकीनन ये नमाज़
لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَشَعِينَ ﴿٣٤﴾ الَّذِينَ يَطْمَنُونَ	भारी चीज़ है मगर उन खुशूअ करने वालों पर, जो यकीन रखते हैं
أَنْهُمْ مُلْقُوا رَبِّهِمْ وَ أَنْهُمْ إِلَيْهِ رُجْعُونَ ﴿٣٥﴾ يَبْنِي	के वो अपने रब से मिलने वाले हैं और ये के वो अल्लाह की तरफ लौट कर जाने वाले हैं। ऐ याक़ूब
إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَ أَنِّي	(अलैहिस्सलाम) की औलाद! तुम याद करो मेरी उस नेअमत को जो मैं ने तुम पर की और ये के
فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٦﴾ وَ اتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ	मैं ने तुम को फज़ीलत दी (तमाम जहान वालों) पर। और डरो उस दिन से जिस दिन कोई शख्स
عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ	किसी शख्स के कुछ भी काम नहीं आएगा और किसी की तरफ से सिफ़ारिश कबूल नहीं की जाएगी और किसी की तरफ
مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٣٧﴾ وَإِذْ بَخَيْنَكُمْ	से फिदया नहीं लिया जाएगा और न उन की नुसरत की जाएगी। और जब हम ने तुम्हें नजात दी
مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ يُدَبِّحُونَ	आले फिरऔन से जो तुम्हें बदतरीन सज़ा के ज़रिए तकलीफ देते थे, वो ज़बह करते थे
أَبْنَاءَكُمْ وَ يَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۖ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ	तुम्हारे बेटों को और ज़िन्दा छोड़ते थे तुम्हारी औरतों को। और उस में तुम्हारे रब की तरफ से
مِّنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٣٨﴾ وَإِذْ قَرَفْنَا بِكُمْ الْبَحْرَ فَأُجْبَيْنَكُمْ	भारी इस्तिहान था। और जब हम ने तुम्हारे लिए समन्दर को फाड़ा, फिर हम ने तुम्हें नजात दी
وَ أَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٣٩﴾ وَإِذْ وَعَدْنَا	और आले फिरऔन को ग़र्क किया और तुम देख भी रहे थे। और जब हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से
مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعَجَلَ مِنْ بَعْدِهِ	चालीस रात का वादा किया, फिर तुम ने उन के जाने के बाद बछड़े को माबूद बनाया

وَ أَنْتُمْ ظَلِمُونَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ

इस हाल में के तुम जुल्म कर रहे थे। फिर हम ने तुम से मुआफ किया इस के बाद

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٢﴾ وَ إِذْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ

ताके तुम शुक्र अदा करो। और जब के हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी

وَ الْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿٥٣﴾ وَ إِذْ قَالَ مُوسَى

और हक व बातिल के दरमियान फैसला करने वाली किताब दी ताके तुम हिदायतयाफता बनो। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम)

لِقَوْمِهِ يَقَوْمِ إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ

ने अपनी कौम से फरमाया के ऐ मेरी कौम! यकीनन तुम ने अपनी जानों पर जुल्म किया है तुम्हारे बछड़े को माबूद

الْعِجْلِ فَتُوبُوا إِلَىٰ بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ذَلِكُمْ

बनाने की वजह से तो तुम तौबा करो अपने पैदा करने वाले की तरफ, फिर बाज़ आदमी बाज़ को कत्ल करो। ये तुम्हारे

خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ

लिए बेहतर है तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक, फिर उस ने तुमहारी तौबा कबूल की। यकीनन वो तौबा कबूल करने

الرَّحِيمِ ﴿٥٤﴾ وَ إِذْ قُلْتُمْ يٰمُوسَىٰ لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَىٰ

वाला, निहायत रहम वाला है। और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम हरगिज़ आप पर ईमान नहीं लाएंगे जब तक के हम अल्लाह को

اللَّهُ جَهْرَةً فَأَخَذَتْكُمُ الصَّعِقَةُ وَ أَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٥﴾

आमने सामने न देख लें, फिर तुम्हें बिजली की एक ज़ोरदार आवाज़ ने पकड़ लिया इस हाल में के तुम (आँखों से) देख

ثُمَّ بَعَثْنَاكَ مِّنْ بَعْدِ مَوْتِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٦﴾

रहे थे। फिर हम ने तुम्हें (ज़िन्दा कर के) उठाया तुम्हारे मर जाने के बाद ताके तुम शुक्रगुज़ार बनो।

وَ ظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّٰنَ وَالسَّلَٰوٰىٰ

और हम ने तुम पर बादलों का साया किया और हम ने तुम पर मन्न और सल्वा उतारा। के तुम

كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلٰكِنْ كَانُوا

खाओ उन पाकीज़ा चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दी। और उन्होंने ने हम पर जुल्म नहीं किया लेकिन

أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٥٧﴾ وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ

वो अपनी जानों पर जुल्म करते थे। और जब हम ने कहा के तुम दाखिल हो जाओ इस बसती में,

فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا

फिर उस में से खाओ जहाँ तुम चाहो कुशादगी के साथ और तुम दरवाज़े से दाखिल हो जाओ सजदा करते हुए

وَقُولُوا حِطَّةٌ تَغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ ۖ وَ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٨﴾

और तुम यूँ कहो तौबा (तौबा), तो हम तुम्हारे लिए तुम्हारी खताएं बर्खा देंगे। और हम नेकी करने वालों को मज़ीद देंगे।

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا

फिर उन ज़ालिमों ने बदल दिया बात को उस के अलावा से जो उन से कही गई थी, फिर हम ने

عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رَجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا

उन ज़ालिमों पर उतारा आसमान से अज़ाब इस वजह से के वो

يَفْسُقُونَ ﴿٥٩﴾ وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِبْ

नाफरमान थे। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने पानी तलब किया अपनी कौम के लिए तो हम ने कहा

بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ

अपना असा पथर पर मारिए। फिर उस से बारा चश्मे फूट पड़े।

قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ كُلُوا وَاشْرَبُوا

तमाम लोगों ने अपने पीने की जगह मालूम कर ली। खाओ और पियो

مِن رِّزْقِ اللَّهِ ۖ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٦٠﴾ وَإِذْ قُلْتُمْ

अल्लाह की रोज़ी में से और ज़मीन में फसाद फैलाते हुए मत फिरो। और जब तुम ने कहा

يُوسَىٰ لَنْ نُّصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ

ऐ मूसा! हम हरगिज़ सब्र नहीं करेंगे एक खाने पर, इस लिए आप हमारे लिए दुआ कीजिए अपने रब से

يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْبِتُ الْأَرْضُ مِنْ بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا

के वो हमारे लिए निकाले उन चीज़ों में से जिसे ज़मीन उगाती है यानी उस की सबज़ी और ककड़ी

وَفُؤْمِهَا وَ عَدَسِهَا وَ بَصِلِهَا ۖ قَالَ اتَّسَبِدُونِ

और लहसन और मसूर और प्याज़। अल्लाह ने फरमाया क्या तुम बदले में मांगते हो

الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۖ إِهْبِطُوا مِصْرًا

उस चीज़ को जो अदना है उस के बदले में जो उस से बेहतर है? तुम शहर में उतर जाओ

فَإِنَّ لَكُمْ مَّا سَأَلْتُمْ ۖ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ۖ

तो यकीनन तुम्हारे लिए वो चीज़ें होंगी जिन का तुम ने सवाल किया। और उन के ऊपर ज़िल्लत और फ़क्क़र मार दिया गया,

وَبَاءُؤُ يُغْضَبُ مِّنَ اللَّهِ ۖ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ

और वो अल्लाह का ग़ज़ब ले कर लौटे। ये इस वजह से के वो अल्लाह की

ع

بَايَتَ اللّٰهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيْنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ذٰلِكَ	आयात का इन्कार करते थे और अम्बिया को नाहक कत्ल करते थे। ये
بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿١٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا	इस वजह से के उन्होंने ने नाफरमानी की और वो हद से आगे बढ़ते थे। यकीनन वो लोग जो ईमान लाए
وَالَّذِيْنَ هَادُوا وَالنَّصْرٰى وَالصَّبِيَّيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ	और जो यहूदी हैं और नसारा हैं और साबी हैं, जो भी ईमान लाएंगे अल्लाह पर
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صٰلِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ	और आखिरी दिन पर और नेक काम करते रहेंगे तो उन के लिए उन का अज़्र होगा उन के
رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٤﴾	रब के पास। और न उन पर खौफ होगा और न वो ग़मगीन होंगे।
وَإِذْ اَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمْ الطُّورَ خُذُوا	और जब हम ने तुम से पुख्ता अहद लिया और हम ने तुम्हारे ऊपर कोहे तूर को उठाया। (कहा के) पकड़ो
مَا اٰتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥﴾	मज़बूती से उस तौरात को जो हम ने तुम्हें दी और याद करो उस को जो उस में है ताके तुम मुत्तकी बनो।
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ	फिर तुम ने उस के बाद पैराज़ किया। फिर अगर अल्लाह का फज़ल और उस की महरबानी
وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمْ	तुम पर न होती तो तुम नुकसान उठाने वालों में से बन जाते। यकीनन तुम्हें मालूम हैं वो लोग
الَّذِيْنَ اَعْتَدُوا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا	जिन्होंने ने तुम में से ज़्यादती की सनीचर के बारे में, फिर हम ने उन से कहा के तुम ज़लील
قِرَدَةً خٰسِيْنَ ﴿١٧﴾ فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا	बन्दर बन जाओ। फिर हम ने उन्हें उन के आगे वालों के लिए और उन से पीछे वालों के लिए इबरत बनाया
وَمَا خَلَفَهَا وَ مَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٨﴾ وَاِذْ قَالَ مُوسٰى	और मुत्तकियों के लिए नसीहत बनाया। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया
لِقَوْمِهِ اِنَّ اللّٰهَ يٰمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوا بَقْرَةً ۖ قَالُوْا	अपनी कौम से अल्लाह तुम्हें हुक्म देते हैं के तुम कोई गाय ज़बह करो। तो उन्होंने ने कहा के

اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۚ قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ

क्या आप हम से मज़ाक करते हैं? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अल्लाह की पनाह इस से के मैं जाहिलों में

مِّنَ الْجَاهِلِيْنَ ۚ قَالُوا اَدْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۚ قَالَ

से हो जाऊँ। यहूदियों ने कहा के आप हमारे लिए अपने रब से दुआ कीजिए के वो हमारे लिए साफ बयान करे के वो

اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ ۙ لَا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ ۚ عَوَانُ

गाय क्या है? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के अल्लाह फरमाते हैं के वो गाय ऐसी है जो न बहोत बूढ़ी हो और न बिल्कुल

بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ فَاَفْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ۚ قَالُوا اَدْعُ لَنَا

जवान हो, उस के दरमियान में अर्धे उग्र वाली हो। और तुम कर गुज़रो जिस का तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है। उन्होंने ने कहा

رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا

के आप हमारे लिए अपने रब से दुआ कीजिए के वो हमारे लिए साफ बयान करे के उस का रंग कैसा हो। मूसा

بَقَرَةٌ ۙ صَفْرَاءُ ۙ فَاقْعُ لَوْنَهَا ۚ تَسْرُ النَّظْرَيْنِ ۚ قَالُوا

(अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के अल्लाह फरमाते हैं वो गाय पीली हो, उस का रंग खुला हुवा हो, जो देखने वालों को मसरूर करती हो।

اَدْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشَبَهَ عَلَيْنَا ۚ

उन्होंने ने कहा के आप हमारे लिए अपने रब से दुआ कीजिए के वो हमारे लिए बयान करे के वो गाय क्या है? इस लिए के

وَاِنَّا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ۚ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا

गाय हम पर मुश्तबह हो गई। और यकीनन अगर अल्लाह ने चाहा हम राह पा लेंगे। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के अल्लाह फरमाते हैं

بَقَرَةٌ ۙ لَا ذَلُوْلٌ تُشِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ

के वो गाय ऐसी हो जो खेती के लिए जोती न गई हो जो ज़मीन को फाड़े, और न खेती को सैराब करती हो।

مُسْلَمَةً ۙ لَا شِيْءَ فِيْهَا ۚ قَالُوا الْكُنْ جِدْتَ بِالْحَقِّ ۚ

और सहीह सालिम हो, उस में कोई धब्बा न हो। उन्होंने ने कहा अब आप हक बात ले आए।

فَذَبْحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ۚ وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا

फिर उन्होंने ने उस को ज़बह किया और वो उस के करीब भी नहीं थे। और जब तुम ने एक शख्स को क़त्ल किया,

فَاَدْرَأْتُمْ فِيْهَا ۚ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ۚ

फिर तुम ने उस के बारे में झगड़ा किया। और अल्लाह निकालने वाला था उस को जो तुम छुपा रहे थे।

فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ۚ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۚ

फिर हम ने कहा के तुम गाय के किसी टुकड़े को मकतूल पर मारो। इसी तरह अल्लाह मुरदों को भी ज़िन्दा करेंगे।

وَاُیْرِیْکُمْ اٰیٰتِهٖ لَعَلَّکُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۴۷﴾ ثُمَّ قَسَتْ

और अल्लाह तुम्हें अपनी आयतें दिखाते हैं ताके तुम अक्ल वाले बन जाओ। फिर तुम्हारे दिल

قُلُوْبُکُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِکَ فَهِيَ کَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ

उस के बाद सख्त हो गए, फिर वो पथ्थर की तरह हो गए या उस से भी ज्यादा

قَسُوَةً ۚ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهَارُ ۚ

सख्त। और यकीनन पथ्थरों में से तो कुछ ऐसे होते हैं के अलबत्ता उन से नेहरें फूटती हैं।

وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْهَآءُ ۚ وَاِنَّ مِنْهَا

और उन में से कुछ फट जाते हैं जिन से पानी निकलता है। और उन में से कुछ

لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشِیَةِ اللّٰهِ ۚ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

अल्लाह के खौफ से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह बेखबर नहीं है उन

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۸﴾ اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ یُّؤْمِنُوْا لَکُمْ وَقَدْ کَانَ

कामों से जो तुम करते हो। क्या फिर तुम इस की उम्मीद रखते हो के ये (यहूदी) तुम्हारे केहने से ईमान ले आएंगे

فَرِیْقٌ مِّنْهُمْ یَسْمَعُوْنَ کَلِمَ اللّٰهِ ثُمَّ یُحَرِّفُوْنَہٗ

हालांके उन में से एक जमाअत अल्लाह के कलाम को सुनती है, फिर उस में तहरीफ करती है

مِّنْۢ بَعْدِ مَا عَقِلُوْهُ وَهُمْ یَعْلَمُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِیْنَ

इस के बाद के वो उस को समझती है, हालांके वो इल्म भी रखती है। और जब वो ईमान वालों से मिलते हैं

اٰمَنُوْا قَالُوْا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَ بَعْضُهُمْ اِلٰی بَعْضٍ قَالُوْا

तो केहते हैं के 'हम मोमिन हैं'। और जब उन में से एक दूसरे के साथ तन्हाई में होते हैं तो केहते हैं के

اَتَحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَیْکُمْ لِیَحْآجُّوْکُمْ

क्या तुम उन मुसलमानों से बयान कर देते हो वो जो अल्लाह ने तुम पर खोला है ताके वो तुम से उस के ज़रिए हुज्जतबाज़ी

بِهٖ عِنْدَ رَبِّکُمْ ۚ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۵۰﴾ اَوَلَا یَعْلَمُوْنَ

करें तुम्हारे रब के पास? क्या तुम्हें अक्ल नहीं? क्या वो ये नहीं जानते के

اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا یُسْرُوْنَ وَمَا یُعْلِنُوْنَ ﴿۵۱﴾ وَمِنْهُمْ

अल्लाह जानता है उस को भी जिस को वो छुपाते हैं और जिस को वो ज़ाहिर करते हैं। और उन में से बाज़

اٰمِیُّوْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ الْکِتٰبَ اِلَّا اٰمَانِیً وَاِنَّ هُمْ اِلَّا

अनपढ़ हैं जो किताब को नहीं जानते सिवाए तमन्नाओं के। और वो सिर्फ

يُظَنُّونَ ﴿٤٨﴾ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ

गुमान करते हैं। फिर हलाकत है उन लोगों के लिए जो किताब को अपने हाथों से लिखते हैं,

ثُمَّ يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا

फिर केहते हैं के ये अल्लाह की तरफ से है ताके उस के बदले में थोड़ी सी कीमत

قَلِيلًا ۖ فَوَيْلٌ لَهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَهُمْ

ले लें। फिर हलाकत है उन के लिए उस से जो उन के हाथों ने लिखा है और हलाकत है उन के लिए

مِمَّا يَكْسِبُونَ ﴿٤٩﴾ وَقَالُوا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَةً ۖ

उस माल से जो वो कमा रहे हैं। और उन्होंने ने कहा के आग हमें हरगिज़ नहीं छुएगी मगर चन्द गिने चुने दिन।

قُلْ اتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَ

आप फरमा दीजिए क्या तुम ने अल्लाह के पास कोई अहद ले रखा है के फिर अल्लाह हरगिज़ अपने अहद के खिलाफ नहीं करेगा

أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٠﴾ بَلَىٰ مَنْ كَسَبَ

या तुम अल्लाह पर केहते हो वो जो तुम जानते नहीं हो? क्यूं नहीं! जो भी बुरा काम

سَيِّئَةً وَآحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ

करेगा और उस को उस की खताओं ने घेर लिया तो यही लोग दोज़खी हैं।

هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٥١﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

वो उस में हमेशा रहेंगे। और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٥٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا

तो ये लोग जन्नती हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे। और जब के हम ने बनी इस्राईल

مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ

से पुख्ता अहद लिया के तुम इबादत न करो मगर अल्लाह की। और वालिदैन् के साथ

إِحْسَانًا وَذَى الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينِ وَقُولُوا

हुस्ने सुलूक करो और रिश्तेदारों के साथ और यतीमों और मिसकीनों के साथ और लोगों

لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۖ

से अच्छी बात कहो और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात दो।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْكُمْ وَأَنْتُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٥٣﴾

फिर तुम ने रूगरदानी की मगर तुम में से थोड़े लोगों ने इस हाल में के तुम मुँह फेर रहे थे।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُونَ	और जब के हम ने तुम से पुख्ता अहद लिया के तुम आपस में खून मत बहाओ और एक दूसरे को
أَنْفُسَكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿۸۶﴾	अपने घरों से मत निकालो। फिर तुम ने इक़रार किया इस हाल में के तुम गवाही देते हो।
ثُمَّ أَنْتُمْ هَؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا	फिर तुम वो लोग हो के तुम एक दूसरे को क़त्ल करते थे और तुम अपने में से एक जमाअत को
مِّنْكُمْ مِنْ دِيَارِهِمْ ۚ تَظْهَرُونَ عَلَيْهِمْ بِالْإِثْمِ	निकालते थे उन के घरों से। तुम उन के खिलाफ गुनाह और जुल्म में
وَالْعُدْوَانِ ۗ وَإِنْ يَأْتُوكُمْ أُسْرَىٰ تَفْدُوهُمْ وَهُوَ	मदद करते थे। और अगर वो तुमहारे पास कैदी बन कर आएँ तो तुम उन का फिदया देते थे इस हाल में के
مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ ۖ أَفْتَوْمُنُونِ بِبَعْضِ الْكِتَابِ	तुम पर उन का निकालना हराम था। क्या फिर तुम तौरात के बाज़ हिस्से पर ईमान रखते हो, और बाज़ के
وَ تَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَاءُ مَنْ يَفْعَلُ ذَلِكَ	साथ कुफ़र करते हो? फिर उस शख्स की सज़ा क्या होगी जो तुम में से उस को करे
مِّنْكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ	सिवाए दुन्यवी ज़िन्दगी में रुसवाई के? और क़ियामत के दिन
يُرَدُّونَ إِلَىٰ أَشَدِّ الْعَذَابِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ	उन को सख़्ततरिन अज़ाब की तरफ लौटाया जाएगा। और अल्लाह बेखबर नहीं है
عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿۸۷﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْحَيَاةَ	उन कामों से जो तुम करते हो। यही लोग हैं जिन्होंने ने दुन्यवी ज़िन्दगी को आखिरत के
الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۚ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ	मुक़ाबले में ख़रीदा। फिर उन का अज़ाब हलका नहीं किया जाएगा
وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿۸۸﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ	और उन की नुसरत नहीं की जाएगी। यकीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी
وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ ۚ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ	और उन के बाद लगातार रसूल भेजे। और हम ने ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम)

مَرِيَمَ الْبَيْتِ وَ آيَدُنْهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۖ أَفَكُلَّمَا

को रोशन मोअजिज़ात दिए और हम ने उन की ताईद की रूहुल कुदुस के ज़रिए। क्या फिर जब कभी

جَاءَكُمْ رَسُولٌ ۖ يَمْلَأُ تَهْوَى أَنْفُسَكُمْ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ

तुम्हारे पास कोई पैगम्बर आया ऐसी चीजें ले कर जिन को तुम्हारे नफ्स चाहते नहीं थे तो तुम ने बड़ा बनना चाहा।

فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ ۖ وَ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ ﴿٨٤﴾ وَ قَالُوا

फिर एक जमाअत को तुम ने झुठलाया और एक जमाअत को तुम क़त्ल करते थे। और उन्होंने ने कहा के

قُلُوبُنَا غُلْفٌ ۖ بَلْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا

हमारे दिल बन्द हैं। बल्के अल्लाह ने उन पर लानत फरमाई उन के कुफ़ की वजह से, फिर बहोत कम

مَا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٥﴾ وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ

ये ईमान लाएंगे। और जब उन के पास किताब आई अल्लाह की तरफ से जो

مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۖ وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ

सच्चा बतलाने वाली है उस को जो उन के पास है, और वो उस से पेहले काफ़िरो के खिलाफ फतह

عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ ۚ

तलब करते थे। फिर जब उन के पास आ गया वो जिस को वो पेहचानते भी थे तो उन्होंने ने उस के साथ कुफ़ किया।

فَلَعَنَهُ اللَّهُ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾ بِسْمَا اشْتَرَوْا بِهِ

फिर अल्लाह की लानत है काफ़िरो पर। बुरा है जिस के बदले में उन्होंने ने

أَنْفُسَهُمْ أَنْ يَكْفُرُوا ۖ يَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ بَغْيًا أَنْ يَنْزِلَ

अपनी जानों को बेचा, ये के वो कुफ़ करते हैं उस के साथ जिस को अल्लाह ने उतारा हसद की वजह से, इस

اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ فَبَاءُ

वजह से के अल्लाह उतारते हैं अपना फज़ल जिस पर चाहते हैं अपने बन्दों में से। फिर वो

بِغَضَبٍ عَلَى غَضَبٍ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿٨٧﴾

ग़ज़ब पर ग़ज़ब को ले कर लौटे। और काफ़िरो के लिए ख़स्वा करने वाला अज़ाब है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا نُوْمِنُ

और जब उन से कहा जाता है के ईमान लाओ उस पर जो अल्लाह ने उतारा है तो वो केहते हैं के हम ईमान लाएंगे

بِمَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ ۚ وَهُوَ الْحَقُّ

उस पर जो हम पर उतारा गया है और वो उस के अलावा के साथ कुफ़ करते हैं। हालांके वो हक़ है

مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۖ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنْبِيَاءَ اللَّهِ

सच्चा बतलाने वाला है उस को जो उन के पास है। आप फरमा दीजिए तुम क्यों कत्ल करते थे अल्लाह के नबियों को

مِنْ قَبْلُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَىٰ

इस से पेहले अगर तुम मोमिन हो। और यकीनन तुम्हारे पास मूसा (अलौहिस्सलाम)

بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ

रोशन मोअजिज़ात ले कर आए, फिर तुम ने बछड़े को माबूद बनाया उन के बाद इस हाल में के तुम

ظَالِمُونَ ۝ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمْ

जुल्म कर रहे थे। और जब हम ने तुम से पुख्ता अहद लिया और हम ने तुम्हारे ऊपर कोहे तूर को

الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَكُمْ بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا ۖ قَالُوا

उठाया। (कहा) के मज़बूती से पकड़ो उस को जो हम ने तुम्हें दिया और गौर से सुनो। उन्होंने ने कहा के हम ने

سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ۖ وَأَشْرَبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۖ

सुना, लेकिन हम नाफरमानी करते हैं। और उन के दिलों में बछड़े की महबूत पिला दी गई उन के कुफ्र की वजह से।

قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهِ إِبْرَانُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

आप फरमा दीजिए बुरा है वो जिस का तुम्हारा ईमान तुम्हें हुक्म दे रहा है अगर तुम मोमिन हो।

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمْ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً

आप फरमा दीजिए के अगर सिर्फ तुम्हारे लिए है आखिरत वाला घर अल्लाह के पास,

مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوْا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

और इन्सानों को छोड़ कर, तो मौत की तमन्ना करो अगर तुम सच्चे हो।

وَلَنْ يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا ۖ بِمَا قَدَّمْتُمْ إِلَيْهِمْ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ

और वो हरगिज़ मौत की तमन्ना नहीं करेंगे कभी भी उन आमाल की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे हैं। और अल्लाह

بِالظَّالِمِينَ ۝ وَلِتَجِدَ فِيهِمْ أَحْرَصَ النَّاسِ

इन ज़ालिमों को खूब जानते हैं। और ज़रूर आप उन्हें तमाम इन्सानों से ज़्यादा हरीस पाएंगे

عَلَىٰ حَيَوٰةٍ ۖ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۖ يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَٰمَرُ

ज़िन्दा रहने पर और मुशरिकीन से भी। उन में से एक एक शख्स तमन्ना करता है के काश उसे एक हज़ार साल

أَلْفَ سَنَةٍ ۖ وَمَا هُوَ بِمُرْحَزِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ

की ज़िन्दगी दी जाए, हालांकि एक हज़ार साल की ज़िन्दगी दिया जाना उसे अज़ाब से बचाने वाला

يُعَمَّرُ ۖ وَاللّٰهُ بَصِيرٌۢ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾ قُلْ مَنْ كَانَ

नहीं है। और उन के आमाल को अल्लाह देख रहा है। आप फरमा दीजिए के जो

عَدُوًّا لِّجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللّٰهِ

जिबरील का दुश्मन है तो यकीनन जिबरील ने इस कुरआन को आप के क़ल्ब पर उतारा है अल्लाह के हुक्म से,

مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَ بُشْرَىٰ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٩٨﴾

जो सच्चा बतलाने वाला है उन किताबों को जो उस से पेहले थीं, और हिदायत और बशारत है ईमान वालों के लिए।

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلّٰهِ وَ مَلَائِكَتِهِ وَ رُسُلِهِ وَ جِبْرِيلَ

जो अल्लाह का और उस के फरिश्तों और उस के पैगम्बरों का और जिबरील

وَ مِيكَالَ فَإِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكَافِرِينَ ﴿٩٩﴾ وَلَقَدْ

और मीकाईल का दुश्मन है तो यकीनन अल्लाह भी दुश्मन है काफिरों का। यकीनन

أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۖ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا

हम ने आप की तरफ रोशन आयतें उतारीं। और इन आयतों के साथ कुफ्र नहीं करते

إِلَّا الْفَاسِقُونَ ﴿١٠٠﴾ أَوْ كَلَّمَا عَاهَدُوا عَهْدًا نَّبَذَهُ فَرِيقٌ

मगर नाफरमान लोग। क्या फिर जब कभी उन्होंने ने कोई अहद किया तो उन में से एक जमाअत ने उस को

مِّنْهُمْ ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠١﴾ وَلَمَّا جَاءَهُمْ

फैंक (नहीं) दिया? बल्के उन में से अकसर ईमान ही नहीं लाते। और जब उन के पास रसूल

رَسُولٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ

आया अल्लाह की तरफ से जो सच्चा बतलाने वाला है उस को जो उन के पास है, तो

فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ ۖ كَتَبَ اللّٰهُ وَرَاءَ

एहले किताब की एक जमाअत ने फैंक दिया अल्लाह की किताब को अपनी पीठ

ظُهُورِهِمْ كَانَتْهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾ وَ اتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا

पीछे गोया के वो जानते ही नहीं। और वो पीछे पड़े उन चीजों के जिन की शयातीन तिलावत

الشَّيْطَانِ عَلَىٰ مَلِكٍ سُلَيْمٍ ۖ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٌ

करते थे सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के दौरे हुक्मत में। और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने कुफ्र नहीं किया

وَلَكِنَّ الشَّيْطَانِ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ وَمَا

लेकिन शयातीन कुफ्र करते थे के वो इन्सानों को जादू सिखाते थे। और वो चीज़

أُنزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَ مُارُوتَ ط सिखाते थे जो दो फरिश्तों पर उतारी गई बाबुल में, हास्त और मास्त पर।
وَمَا يُعَلِّمَنَّ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ और वो किसी को सिखलाते नहीं थे जब तक के ये नहीं कहते थे के हम तो सिर्फ आजमाइश हैं,
فَلَا تَكْفُرْ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ इस लिए तू काफिर मत बन। फिर भी वो उन दोनों फरिश्तों से सीखते थे वो जादू जिस के ज़रिए वो जुदाई
الْبَرِّ وَ الزَّوْجِ ط وَمَا هُمْ بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ डालते थे शौहर और बीवी के दरमियान। और वो उस के ज़रिए किसी को ज़रर नहीं पहुँचा सकते
إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ط وَ يَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ط मगर अल्लाह के हुक्म से। और वो सीखते थे वो जादू जो उन को नुकसान देता था और उन को नफा नहीं देता था।
وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ और यकीनन उन्हें मालूम है के अलबत्ता वो आदमी जिस ने उस को खरीदा उस के लिए आखिरत में
مِنْ خَلْقٍ ط وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ ط لَوْ كَانُوا कोई हिस्सा नहीं। और अलबत्ता बुरा है जिस के बदले में उन्होंने ने अपनी जानों को बेचा। काश के वो
يَعْلَمُونَ ﴿۱۰۲﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَ اتَّقَوْا لَكُنْثَىٰ जानते। और अगर वो ईमान लाते और मुत्तकी बनते तो अल्लाह के पास से
مَنْ عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ ط لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿۱۰३﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ जो सवाब है वो बेहतर होता। काश के वो जानते। ऐ ईमान वालो!
آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انْظُرْنَا وَاسْجَعُوا ط तुम 'रा' मत कहो बल्के 'अन' कहो और ग़ौर से सुनो।
وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿۱०४﴾ مَا يَوَدُّ الَّذِينَ और काफिरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। एहले किताब में से जो
كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنَزَّلَ काफिर हैं वो, और मुशरिकीन ये नहीं चाहते के तुम पर कोई खैर
عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِّنْ رَبِّكُمْ ط وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ उतारी जाए तुम्हारे रब की तरफ से। और अल्लाह अपनी रहमत के साथ खास करता है

مَنْ يَشَاءُ ۖ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿١٥﴾ مَا نُنْخِ	जिसे चाहता है। और अल्लाह बड़े फज़ल वाला है। हम जो आयत मन्सूख
مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِنْهَا أَوْ مِثْلَهَا ۚ	करते या हम उस को भुला देते हैं तो हम उस से बेहतर या उसी जैसी ले आते हैं।
أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦﴾ أَلَمْ تَعْلَمْ	क्या आप को मालूम नहीं के अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। क्या आप को मालूम नहीं के
أَنَّ اللّٰهَ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ وَمَا لَكُمْ	अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की सलतनत है। और तुम्हारे लिए
مِّنْ دُونِ اللّٰهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٧﴾ أَمْ تَرِيدُونَ	अल्लाह के अलावा कोई मददगार और हिमायती नहीं। क्या तुम ये चाहते हो के
أَن تَسْأَلُوْا رَسُولَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ	तुम अपने रसूल से सवाल करो जिस तरह से मूसा (अलैहिस्सलाम) से इस से पेहले सवाल किया गया। और जो
يَتَّبِعِلِ الْكُفْرَ بِٱلْإِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيلِ ﴿١٨﴾	कुफ़ को ईमान के बदले में लेगा तो यकीनन वो सीधे रास्ते से भटक गया।
وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّونَكُمْ مِّنْ بَعْدِ	एहले किताब में से बहोत से चाहते हैं के काश के वो तुम्हें तुम्हारे ईमान लाने के
إِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ مِّنْ بَعْدِ	बाद काफिर बना दें अपनी तरफ के हसद से इस के बाद के
مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللّٰهُ	उन के लिए हक़ वाज़ेह हो गया। इस लिए तुम मुआफ़ करो और दरगुज़र करो यहाँ तक के अल्लाह अपना हुक्म
بِأَمْرِهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٩﴾ وَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ	ले आए। यकीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। और नमाज़ काइम करो
وَآتُوا الزَّكٰوةَ ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ يَّجْدُوْهُ	और ज़कात दो। और जो भलाई तुम अपनी जानों के लिए आगे भेजोगे तो उसे
عِنْدَ اللّٰهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٠﴾ وَقَالُوا	अल्लाह के पास पाओगे। यकीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं। और ये केहते हैं के

لَنْ يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ كَانَ هُودًا أَوْ نَصْرِيًّا हरगिज़ जन्नत में दाखिल नहीं होंगे मगर वही जो यहूदी हैं या नसरानी हैं।
تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۖ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِن كُنْتُمْ ये उन की झूठी तमन्नाएं हैं। आप फरमा दीजिए तुम अपनी दलील लाओ अगर तुम
صٰدِقِيْنَ ۝ بَلٰی ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلّٰهِ وَهُوَ सच्चे हो। क्यूं नहीं! जिस ने अपना चेहरा अल्लाह के ताबेअ किया इस हाल में के वो
مُحْسِنٌ فَلَهُ اَجْرٌ عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ नेकी करने वाला है, तो उस के लिए अपने रब के पास उस का अज़्र है। और उन पर न खौफ होगा
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصْرٰی और न वो ग़मगीन होंगे। और यहूद ने कहा के नसारा किसी चीज़
عَلٰی شَیْءٍ ۚ وَقَالَتِ النَّصْرٰی لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلٰی شَیْءٍ ۚ पर नहीं। और नसारा ने कहा के यहूद किसी चीज़ पर नहीं।
وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتٰبَ ۚ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُونَ हालांके वो किताब की तिलावत करते हैं। इसी तरह उन्ही जैसा कौल उन्हों ने भी कहा जो कुछ
مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاَللّٰهُ یَحْكُمُ بَیْنَهُمْ یَوْمَ الْقِیَمَةِ जानते नहीं। फिर अल्लाह उन के दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा
فِیْمَا كَانُوْا فِیْهِ یُخْتَلِفُوْنَ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسْجِدَ उस में जिस में वो इखतिलाफ कर रहे हैं। और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की मस्जिदों से
اللّٰهِ اَنْ یُّذْكَرَ فِیْهَا اسْمُهُ وَسَعٰی فِیْ خَرَابِهَا ۚ اُولٰٓئِكَ रोके, (इस से रोके) के उन में अल्लाह का नाम लिया जाए और उन को वीरान करने की कोशिश करे। ये लोग
مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ یَّدْخُلُوْهَا ۚ اِلَّا خَافِیْنَهُ ۚ لَهُمْ हैं के उन के लाइक नहीं है के वो उन में दाखिल हों मगर डरते डरते। उन के लिए
فِی الدُّنْیَا خِزْیٌ وَلَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ۝ दुनिया में रुस्वाई होगी और उन के लिए आखिरत में भारी अज़ाब होगा।
وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَاَیْنَمَا تُوَلُّوْا فَتَمَّ وَجْهُ और अल्लाह की मिल्क है मशिरक भी और मगरिब भी। तो जिधर तुम मुंह फेरोगे तो उधर अल्लाह का

اللّٰهُ ۚ اِنَّ اللّٰهَ وَاَسِعُ عَلِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾ وَ قَالُوا اتَّخَذَ

चेहरा है। यकीनन अल्लाह वुसअत वाले, इल्म वाले हैं। और उन्होंने ने कहा के अल्लाह

اللّٰهُ وَلَدًا ۚ سُبْحٰنَهُ ۚ بَلْ لَّهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

औलाद रखता है। अल्लाह औलाद से पाक है, बल्के अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीजें जो आसमानों

وَ الْاَرْضِ ۚ كُلُّ لَّهٗ قَنِيْنٌ ﴿۱۱۶﴾ بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ

और ज़मीन में हैं। सब उस के सामने आजिज़ी करने वाले हैं। वो आसमानों और ज़मीन को बग़ैर नमूने

وَ الْاَرْضِ ۚ وَ اِذَا قَضٰى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ

के पैदा करने वाला है। और जब वो किसी चीज़ का फैसला करता है तो उस से केहता है के हो जा,

فَيَكُوْنُ ﴿۱۱۷﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا

तो वो हो जाती है। और उन लोगों ने कहा जो जानते नहीं के अल्लाह हम से कलाम क्यूं नहीं करता

اللّٰهُ اَوْ تَاتِيْنَا اٰيَةً ۚ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

या हमारे पास कोई मोअजिज़ा क्यूं नहीं आता? इस तरह उन्ही जैसा कौल उन लोगों ने भी कहा जो उन से

مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ۚ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ

पेहले थे। उन के दिल एक दूसरे के मुशाबेह हैं। यकीनन हम ने आयात को साफ साफ बयान किया

لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ اِنَّا اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا

ऐसी कौम के लिए जो यकीन रखती है। यकीनन हम ने आप को हक़ दे कर भेजा बशारत देने वाला

وَ نَذِيْرًا ۚ وَلَا تَسْأَلْ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿۱۱۹﴾

और डराने वाला बना कर के। और आप से दोज़खियों के मुतअल्लिक़ सवाल नहीं किया जाएगा।

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصٰرَىٰ حَتّٰى تَتَّبِعَ

और यहूद व नसारा हरगिज़ आप से राज़ी नहीं होंगे यहाँ तक के आप उन के मज़हब की

مِلَّتَهُمْ ۚ قُلْ اِنَّ هُدٰى اللّٰهُ هُوَ الْهُدٰى ۚ

पैरवी कर लें। आप फरमा दीजिए के यकीनन अल्लाह की हिदायत वही हिदायत है।

وَلٰكِنْ اتَّبَعْتَ اَهْوَاءَهُمْۢ بَعْدَ الَّذِىْ جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۚ

और अगर आप उन की ख्वाहिशात के पीछे चलेंगे इस के बाद के आप के पास इल्म आ गया

مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلٍيٍّ ۚ وَلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۲۰﴾ الَّذِيْنَ

तो आप के लिए अल्लाह से कोई (बचाने वाला) मददगार और हिमायती नहीं होगा। वो लोग

وَلَا

اتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَتِهِ ۖ أُولَٰئِكَ
जिन को हम ने किताब दी वो उस की तिलावत करते हैं जैसा के उस की तिलावत का हक है। ये
يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَ مَنْ يَكْفُرْ بِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ
उस पर ईमान रखते हैं। और जो उस का इन्कार करेगा तो वही
الْخٰسِرُونَ ﴿١٢﴾ يٰبَنِي إِسْرَءِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي
खसारा उठाने वाले हैं। ऐ बनी इस्राईल! तुम याद करो मेरी उस नेअमत को जिस का
أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٣﴾
मैं ने तुम पर इन्आम किया और ये के मैं ने तुम्हें तमाम जहानों (जहान वालों) पर फज़ीलत दी।
وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا
और डरो उस दिन से जिस दिन कोई शख्स किसी शख्स के कुछ भी काम नहीं आएगा
وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَلَا هُمْ
और किसी की तरफ से फिदया कबूल नहीं किया जाएगा और उस को सिफारिश नफा नहीं देगी और उन की
يُنصَرُونَ ﴿١٤﴾ وَإِذِ ابْتَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ رَبُّهُ بِكَلِمَاتٍ
नुसरत नहीं की जाएगी। और जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का इम्तिहान लिया उन के रब ने चन्द कलिमात के ज़रिए तो इब्राहीम
فَاتَمَّهِنَّ ۖ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا ۖ قَالَ
(अलैहिस्सलाम) ने उन को पूरे तौर पर अदा किया। अल्लाह ने फरमाया के मैं तुम्हें इन्सानों का पेशवा बनाने वाला हूँ। इब्राहीम
وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۖ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظَّالِمِينَ ﴿١٥﴾ وَإِذْ جَعَلْنَا
(अलैहिस्सलाम) ने कहा के और मेरी औलाद में से भी। अल्लाह ने फरमाया के मेरा अहद ज़ालिमों को नहीं पहुँचेगा। और जब के हम ने
الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا ۖ وَاتَّخِذُوا
बैतुल्लाह को बनाया इन्सानों के बार बार आने की जगह और अमन की जगह। और (हम ने हुक्म दिया के) तुम
مِّن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى ۖ وَعَهِدْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ
मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ पढ़ने की जगह बनाओ। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और
وَإِسْمَاعِيلَ أَنَّ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ
इस्माईल (अलैहिस्सलाम) को ताकीदी हुक्म दिया के तवाफ करने वालों और ऐतेकाफ करने वालों और रुकूअ सजदा
وَ الرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿١٦﴾ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ
करने वालों के लिए मेरे घर को पाक करो। और जब के इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे

هَذَا بَلَدًا آمِنًا وَارْزُقْ أَهْلَهُ مِنَ الثَّمَرَاتِ مَنْ رُبَّ	रब! उस को अमन वाला शहर बनाइए और यहाँ वालों को फलों की रोज़ी दीजिए, उन को
أَمِنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ	जो उन में से ईमान रखते हों अल्लाह पर और आखिरी दिन पर। अल्लाह ने फरमाया के और जो कुफ़ करेगा
فَأَمَّتْهُ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُ إِلَىٰ عَذَابِ النَّارِ	तो मैं उसे थोड़ा नफ़ा पहुँचाऊँगा, फिर उस को खींच कर आग के अज़ाब की तरफ ले जाऊँगा।
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝۱۳۷ وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ	और वो बुरी जगह है। और जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) बैतुल्लाह की बुनियादों को ऊपर उठा रहे थे
مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۖ إِنَّكَ	और इस्माईल (अलैहिस्सलाम) भी, (तो दुआ कर रहे थे के) ऐ हमारे रब! तू हमारी तरफ से कबूल फरमा। यकीनन तू
أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝۱۳۸ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ	सुनने वाला, इल्म वाला है। ऐ हमारे रब! तू हमें अपनी ताबेदारी करने वाला बना
لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۖ وَإِنَّا مَنَاسِكُنَا	और हमारी औलाद में से भी अपनी ताबेदार उम्मत बना। और हम को हमारे हज के अहकाम सिखला
وَتُبَّ عَلَيْنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝۱۳۹ رَبَّنَا وَابْعَثْ	और हमारी तौबा क़बूल फरमा। यकीनन तू तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम करने वाला है। ऐ हमारे रब! और तू
فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ	उन में उन्ही में से एक रसूल भेज जो उन पर तेरी आयतें तिलावत करे, और उन्हें किताब
الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ ۖ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ	व हिकमत की तालीम दे, और उन को पाक करे। यकीनन तू ज़बर्दस्त है,
الْحَكِيمُ ۝۱۴۰ وَمَنْ يَّرْغَبْ عَن مِّلَّةِ إِبْرَاهِيمَ	हिकमत वाला है। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत से ऐराज़ नहीं करता
إِلَّا مَن سَفِهَ نَفْسَهُ ۖ وَلَقَدْ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا ۖ	मगर वो जिस ने अपने आप को बेवकूफ बनाया। और यकीनन हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को दुनिया में मुन्तख़ब किया था।
وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝۱۴۱ إِذْ قَالَ لَهُ	और यकीनन वो आखिरत में नेक लोगों में से होंगे। जब के उन से उन के

رَبُّهُ أَسْلَمَ ۚ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَوَصَّى

रब ने फरमाया के ताबेदार बन जाओ। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने कहा के मैं रब्बुल आलमीन का ताबेदार बन गया। और इसी की

بِهَآ اِبْرَاهِمُ بَنِيهِ وَ يَعْقُوبُ ۖ يَبْنِي اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰ

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने वसीयत की अपने बेटों को और याकूब (अलैहिस्सलाम) ने भी। (फरमाया) ऐ मेरे बेटों! यकीनन

لَكُمْ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ۝

अल्लाह ने तुम्हारे लिए इस दीन को मुन्तखब कर लिया है, अब तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में के तुम मुसलमान हो।

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتُ ۚ اِذْ قَالَ

क्या तुम मौजूद थे जब याकूब (अलैहिस्सलाम) करीबुल मौत हुए? जब के आप ने अपने बेटों से फरमाया

لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِنْۢ بَعْدِيۙ قَالُوا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ

के मेरे बाद तुम किस चीज़ की इबादत करोगे? तो उन्होंने ने कहा के हम इबादत करेंगे आप के माबूद की

وَاللّٰهُ اَبَايَكَ اِبْرَاهِمَ وَ اِسْمٰعِيلَ وَ اِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۥ

और आप के बाप दादा इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक (अलैहिमुस्सलाम) के माबूद की, एक ही माबूद की।

وَ نَحْنُ لَهٗ مُّسْلِمُونَ ۝ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا

और हम उसी की ताबेदारी करने वाले हैं। ये उम्मत गुज़र गई। उस के लिए

مَا كَسَبَتْ وَّلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تَسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا

वो है जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए वो है जो तुम ने कमाया। और तुम से सवाल नहीं किया जाएगा उन कामों

يَعْمَلُونَ ۝ وَ قَالُوا كُونُوا هُودًا اَوْ نَصْرٰى تَهْتَدُوا ۚ

के मुतअल्लिक जो वो करते थे। और उन्होंने ने कहा के तुम यहूदी या नसरानी बन जाओ, तो तुम हिदायतयाफ़ता केहलाओगे।

قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرَاهِمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ

आप फरमा दीजिए बल्के इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत (का इत्तिबा कर लो) जो सिर्फ एक अल्लाह के हो कर रहेने वाले थे

مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ قُولُوا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَا اُنْزِلَ اِلَيْنَا

और मुशरिकीन में से नहीं थे। कहो के हम ईमान लाए अल्लाह पर और उन किताबों पर जो हमारी तरफ उतारी

وَمَا اُنْزِلَ اِلَى اِبْرَاهِمَ وَ اِسْمٰعِيلَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوبَ

गई और उन किताबों पर जो इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब (अलैहिमुस्सलाम)

وَالْاَسْبَاطِ وَمَا اُوْتِيَ مُوسٰى وَ عِيسٰى وَمَا اُوْتِيَ

और याकूब (अलैहिस्सलाम) के बेटों पर उतारी गई और उन किताबों पर जो मूसा और ईसा (अलैहिमुस्सलाम) को दी गई और उन

التَّيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ لَا نَفَرَقَ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ ۖ

किताबों पर जो दूसरे अम्बिया को दी गई उन के रब की तरफ से। हम उन में से किसी के दरमियान तफरीक नहीं करते।

وَ نَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٧﴾ فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنُكُمْ بِهِ

और हम अल्लाह के ताबेदार हैं। फिर अगर ये कुफ़ार ईमान ले आएँ उस के मानिन्द जैसा के तुम सहाबा ईमान लाए हो

فَقَدْ اهْتَدَوْا ۚ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ ۚ

तब ये कुफ़ार हिदायतयाफ़्ता केहलाएंगे। और अगर वो ऐराज़ करें तो वो सिर्फ (आप की) मुखालफ़त में हैं।

فَسِيكَفِيكَهُمْ اللَّهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣٨﴾ صِبْغَةً

फिर अनकरीब अल्लाह तुम्हारी तरफ से उन के लिए काफी हो जाएगा। और वो सुनने वाला, इल्म वाला है। (हम ने) अल्लाह

اللَّهِ ۚ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً ۚ وَ نَحْنُ لَهُ

का रंग (इख्तियार कर लिया है)। और अल्लाह से बेहतर किस का रंग हो सकता है? और हम उसी की इबादत करने

عِبْدُونَ ﴿١٣٩﴾ قُلْ أَتَحَاجُّونَنَا فِي اللَّهِ وَ هُوَ رَبُّنَا

वाले हैं। आप फरमा दीजिए क्या तुम हम से हुज्जतबाज़ी करते हो अल्लाह के बारे में हालांकि वो हमारा और

وَ رَبُّكُمْ ۚ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۚ وَ نَحْنُ لَهُ

तुम्हारा रब है। और हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं। और हम उसी के

مُخْلِصُونَ ﴿١٤٠﴾ أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَ إِسْمَاعِيلَ

लिए इख़्लास करने वाले हैं। क्या तुम यूँ केहते हो के इब्राहीम और इस्माईल और

وَ إِسْحَاقَ وَ يَعْقُوبَ وَ الْأَسْبَاطَ كَانُوا هُودًا

इस्हाक और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) और याकूब (अलैहिस्सलाम) के बेटे वो यहूदी या

أَوْ نَصَارَى ۚ قُلْ ءَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللَّهُ ۚ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ

नसरानी थे? आप फरमा दीजिए क्या तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह ज़्यादा जानते हैं? और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा

كُتِمَ شَهَادَةٌ عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ

जो वो गवाही छुपाए जो अल्लाह की तरफ से उस के पास है। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बेखबर

عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾ تِلْكَ أُمَمٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ لَكُمْ

नहीं है। ये उम्मत गुज़र चुकी। उस के लिए वो अमल हैं जो उस ने कमाए और तुम्हारे लिए

مَا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تَسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٢﴾

वो अमल हैं जो तुम ने कमाए। और तुम से सवाल नहीं किया जाएगा उन आमाल के मुतअल्लिक जो वो करते थे।

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّهُمْ

अनकरीब बेवकूफ लोग कहेंगे के किस चीज़ ने उन को फेर दिया

عَنْ قِبَلَتِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا ۚ قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ

उन के उस क़िबले से जिस पर वो थे। आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही के लिए मशरिफ़

وَالْمَغْرِبُ ۚ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿۱۳۲﴾

और मगरिब है। अल्लाह सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं।

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ

और इसी तरह हम ने तुम्हें दरमियानी उम्मत बनाया ताके तुम इन्सानों पर

عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۚ

गवाह रहो और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम पर गवाह रहें।

وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ

और हम ने नहीं बनाया उस क़िबले को जिस पर आप थे मगर इस लिए ताके हम मालूम करें के कौन

يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَى عَقْبَيْهِ ۚ

रसूल के पीछे चलता है (और कौन) उन में से अपनी एड़ियों के बल पलट जाते हैं।

وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۚ وَمَا كَانَ

और यकीनन ये क़िबला बड़ी भारी चीज़ थी मगर उन पर जिन को अल्लाह ने हिदायत दी। और अल्लाह

اللَّهُ لِيُضَيِّعَ أَيْمَانَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿۱۳۳﴾

ऐसा नहीं के तुम्हारी नमाज़ को ज़ायेअ करे। यकीनन अल्लाह इन्सानों पर शफ़क़त वाले, निहायत रहम वाले हैं।

قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ

यकीनन आप के चेहरे के बार बार आसमान की तरफ उठने को हम देख रहे हैं। फिर हम ज़रूर आप को

قِبْلَةً تَرْضَاهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ

फेर देंगे उस क़िबले की तरफ जिस को आप पसन्द करते हैं। इस लिए आप अपना रुख मस्जिदे हराम की तरफ कर लीजिए।

وَ حَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۚ

और जहां भी तुम हो तो तुम अपना रुख मस्जिदे हराम की तरफ फेर लो।

وَأَنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ

और यकीनन वो लोग जिन को किताब दी गई वो यकीन रखते हैं के ये हक़ है उन के

رَبِّهِمْ ۖ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ﴿۱۳۳﴾ وَلَئِنْ أَتَيْتَ

रब की तरफ से। और अल्लाह बेखबर नहीं है उन आमाल से जो वो कर रहे हैं। और अगर आप ले आएं

الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَّا تَبِعُوا قِبْلَتَكَ ۚ

उन के पास जिन को किताब दी गई तमाम मोअजिजात भी, तब भी वो आप के क़िबले का इत्तिबा नहीं करेंगे

وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ

और न आप उन के क़िबले का इत्तिबा करने वाले हैं। और न उन में से एक दूसरे के क़िबले का इत्तिबा

بَعْضٍ ۖ وَلَئِنْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ

करने वाला है। और अगर आप उन की ख्वाहिशात के पीछे चले इस के बाद के आप के पास

مِّنَ الْعِلْمِ إِنَّكَ إِذَا لَبِيتَ الظَّالِمِينَ ﴿۱۳۴﴾ الَّذِينَ اتَّبَعْتَهُمْ

इल्म आ गया तो यकीनन आप कुसूरवारों में से हो जाएंगे। वो लोग जिन को हम ने

الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۖ

किताब दी वो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पेहचानते हैं जैसा के अपने बेटों को पेहचानते हैं।

وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿۱۳۵﴾

और यकीनन उन में से एक जमाअत हक़ को छुपाती है इस हाल में के वो जानती भी है।

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿۱۳۶﴾

ये हक़ है आप के रब की तरफ से, इस लिए आप शक करने वालों में से न हों।

وَ لِكُلِّ وُجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيُّهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ

और हर एक के लिए एक जिहत है जिस की तरफ वो मुंह करने वाला है, इस लिए तुम खैर के कामों में सबक़्त करो।

إِنَّ مَا تَكُونُوا يَأْتِي بِكُمْ اللَّهُ جَمِيعًا ۖ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ

तुम जहां भी होंगे, अल्लाह तुम्हें इकट्ठा ले आएगा। यकीनन अल्लाह हर चीज़ पर

شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿۱۳۷﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ

कुदरत वाले हैं। और जहां से भी तुम निकलो तो मस्जिदे हराम की

شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَ إِنَّهُ لَلْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ ۖ

तरफ अपना रख कर लो। और यकीनन ये हक़ है आप के रब की तरफ से।

وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿۱۳۸﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ

और अल्लाह बेखबर नहीं है उन कामों से जो तुम करते हो। और जहां से भी आप निकलें

وَقَفَّ لَا تَزِدْ

وَقَفَّ مَثَلُ

وَقَفَّ

وَقَفَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ

तो अपना रुख मस्जिदे हराम की तरफ फेर लीजिए। और तुम जहां भी हो

فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۚ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ

तो अपना रुख मस्जिदे हराम की तरफ कर लिया करो, ताके उन लोगों के लिए तुम पर

عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۚ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ ۚ فَلَا تَخْشَوْهُمْ

कोई हुज्जत बाकी न रहे मगर वो लोग जो उन में से ज़ालिम हैं। तो आप उन से न डरें,

وَاحْشَوْنِي ۚ وَارْتَمِ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ

बल्के मुझ से डरें। और इस लिए ताके मैं तुम पर अपनी नेअमत पूरी कर दूँ और ताके तुम

تَهْتَدُونَ ﴿١٥٠﴾ كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِّنْكُمْ يَتْلُوا

हिदायत याफता बन जाओ। जैसा के हम ने तुम में एक रसूल भेजा तुम ही में से जो तुम पर तिलावत

عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ

करते हैं हमारी आयतें और तुम्हारा तज़किया करते हैं और तुम्हें किताब व हिकमत की तालीम

وَ الْحِكْمَةَ ۚ وَيُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿١٥١﴾

देते हैं और तुम्हें सिखाते हैं वो जो तुम जानते नहीं थे।

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ﴿١٥٢﴾

इस लिए तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद करूंगा और तुम मेरा शुक्र अदा करो और तुम मेरी नाशुक्री मत करो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ

ऐ ईमान वालो! तुम मदद तलब करो सब्र और नमाज़ के ज़रिए।

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٣﴾ وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ

यकीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ हैं। और तुम उन लोगों के मुतअल्लिक जो अल्लाह के रास्ते में क़त्ल

فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ ۖ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَكِنْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿١٥٤﴾

किए जाएं, उन्हें मुर्दे मत कहो, बल्के वो ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम्हें उस का एहसास नहीं।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَ نَقْصٍ

और हम ज़रूर तुम्हें आजमाएंगे किसी क़द्र खौफ और भूक और मालों और

مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَ الثَّمَرَاتِ ۖ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٥﴾

जानों और फलों की कमी के ज़रिए। और आप बशारत सुना दीजिए उन सब्र करने वालों को।

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ

के जब उन्हें मुसीबत पहुँचती है, तो केहते हैं (हम भी अल्लाह के ममलूक हैं

رَجِعُونَ ﴿٥٦﴾ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ

और हम उसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं)। उन पर उन के रब की तरफ से रहमतें हैं

وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿٥٧﴾ إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ

और खुसूसी रहमत है। और यही लोग हिदायतयाफता हैं। यकीनन सफा और मरवा

مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوْ اعْتَمَرَ

अल्लाह के (दीन की) यादगारों में से हैं। फिर जो शख्स बैतुल्लाह का हज करे या उमरा करे तो

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۚ

उस पर कोई गुनाह नहीं के वो उन दोनों का तवाफ करे। और जो किसी भलाई को खुशी से करे तो यकीनन

فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿٥٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ

अल्लाह कदरदान, जानने वाले हैं। यकीनन जो लोग छुपाते हैं उन

مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ

वाज़ेह आयात को और हिदायत को जिस को हम ने उतारा इस के बाद के हम ने उस को साफ साफ बयान किया

لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۚ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ

किताब में इन्सानों के लिए, तो उन पर अल्लाह की लानत है और उन पर लानत करने वाले भी लानत

اللَّعُونُونَ ﴿٥٩﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَاصْلَحُوا وَبَيَّنُّوا

करते हैं। मगर वो लोग जिन्होंने ने तौबा की और इस्लाह की और साफ साफ

فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٦٠﴾

बयान किया, उन की तौबा मैं कबूल करूंगा। और मैं तौबा कबूल करने वाला, निहायत रहम वाला हूँ।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ ۖ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ

यकीनन वो लोग जिन्होंने ने कुफ्र किया और वो मर गए इस हाल में के वो काफिर थे, तो उन पर

لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿٦١﴾ خُلِدِينَ

अल्लाह की लानत और फरिश्तों और तमाम इन्सानों की लानत है। वो उस में हमेशा

فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٦٢﴾

रहेंगे। उन से अज़ाब हल्का नहीं किया जाएगा और उन को मोहलत नहीं दी जाएगी।

وَالْهُكْمُ لِلَّهِ وَاحِدٌ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ

और तुम्हारा माबूद यकता माबूद है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। वो बड़ा महरबान,

الرَّحِيمُ ۚ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

निहायत रहम वाला है। यकीनन आसमानों और ज़मीन के पैदा करने

وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي

और रात और दिन के आने जाने में और उस कश्ती में जो चलती है

فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ

समन्दर में उन चीज़ों को ले कर जो इन्सानों को नफा देती है और उस पानी में जिस को अल्लाह ने

مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَاحْيَا بِهِ الْأَرْضُ بَعْدَ مَوْتِهَا

आसमान से उतारा, फिर उस के ज़रिए ज़मीन को उस के खुश्क हो जाने के बाद ज़िन्दा किया

وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ۚ وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ

और हर किस्म के जानवर उस में फैला दिए, और हवाओं के उलट फेर में

وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لِآيَاتٍ

और उस बादल में जो मुअल्लक है आसमान और ज़मीन के दरमियान, अलबत्ता निशानियाँ हैं

لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۚ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ

ऐसी कौम के लिए जो अक़ल रखती है। और कुछ लोग वो हैं जो अल्लाह को छोड़ कर

مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا

कई माबूद बनाते हैं, उन से वो महब्बत करते हैं अल्लाह की महब्बत की तरह। और जो ईमान वाले हैं

أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ ۚ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرُونَ

वो अल्लाह से ज़्यादा महब्बत रखने वाले हैं। और काश के ये ज़ालिम सोचते जब वो अज़ाब

الْعَذَابِ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ

देखेंगे के कुव्वत सारी की सारी अल्लाह ही के लिए है। और ये के अल्लाह सख्त अज़ाब

الْعَذَابِ ۚ إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا

देने वाले हैं। जब बराअत करेंगे वो लोग जिन का इत्तिबा किया गया उन से जिन्होंने ने इत्तिबा किया

وَرَأَوْا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ۚ وَقَالَ

और वो अज़ाब देखेंगे और उन से असबाब मुनक़तेअ हो जाएंगे। और वो लोग कहेंगे

الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ

जो मुत्तबिअ थे के अगर हमारे लिए (ज़मीन में) दोबारा लौट कर जाना हो, तो हम उन से बराअत करेंगे जैसा

كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا ۚ كَذَلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ

के उन्होंने ने हम से बराअत की। इस तरह अल्लाह उन के आमाल उन पर हसरत बना कर

عَلَيْهِمْ ۚ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ ۚ يَأَيُّهَا النَّاسُ

दिखाएंगे। और वो दोज़ख से निकलने वाले नहीं हैं। ऐ इन्सानो!

كُلُوا مِنَّمَا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا

तुम खाओ उन चीज़ों में से जो ज़मीन में हैं हलाल पाकीज़ा को। और तुम शैतान के

خُطُوتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿١٣٨﴾

क़दम ब क़दम मत चलो। यकीनन वो तुम्हारा खुला दुश्मन है।

إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنْ تَقُولُوا

वो तो सिर्फ तुम्हें बुराई और बेहयाई का हुक्म देता है और इस का के तुम अल्लाह पर

عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٣٩﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا

कहो वो जो तुम जानते नहीं हो। और जब उन से कहा जाता है के तुम उस के पीछे चलो

مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ

जिस को अल्लाह ने उतारा तो वो केहते हैं बल्के हम तो उस के पीछे चलेंगे जिस पर हम ने अपने

آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا

बाप दादा को पाया। क्या अगरचे उन के बाप दादा कुछ भी अक्ल नहीं रखते थे

وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٤٠﴾ وَمِثْلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمِثْلِ الذِّئ

और हिदायतयाफ़्ता नहीं थे? और काफ़िरों का हाल उस शख्स के हाल की तरह है जो

يَنْعِقُ بِهَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً ۚ صُمٌّ

आवाज़ देता है ऐसी चीज़ को जो सुन नहीं सकती सिवाए बुलाने और पुकारने के। वो बेहरे हैं,

بُكْمٌ عُمَىٰ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٤١﴾ يَأَيُّهَا الَّذِينَ

गूंगे हैं, अन्धे हैं, फिर वो अक्ल भी नहीं रखते। ऐ ईमान

أَمَنُوا كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا

वालो! तुम खाओ उन उम्दा चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें दी हैं और तुम अल्लाह के

لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿۱۴۱﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ

शुक्रगुज़ार रहो अगर तुम उसी की इबादत करते हो। अल्लाह ने तो तुम पर हराम किया है

الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا اُهِلَّ بِهِ لِغَيْرِ

मृदा और खून और खिन्जीर का गोشت और वो जानवर जिस पर गैरुल्लाह का नाम लिया

اللّٰهِ ۚ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا اِثْمَ

गया हो। फिर जो शख्स मजबूर हो जाए इस हाल में के वो लज़त को तलब करने वाला न हो और जान बचाने की मिक्दर से

عَلَيْهِ ۖ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۲﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ

ज़्यादा खाने वाला न हो, तो उस पर कोई गुनाह नहीं है। यकीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। यकीनन जो लोग

مَا اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَ يَشْتَرُوْنَ بِهِ ثَمَنًا

छुपाते हैं उस किताब को जो अल्लाह ने उतारी और उस के बदले में थोड़ी सी कीमत

قَلِيْلًا ۚ اُولٰٓئِكَ مَا يَأْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ

लेते हैं, तो ये लोग अपने पेट में आग के सिवा नहीं भर रहे हैं

وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۚ

और अल्लाह उन से कलाम नहीं करेगा क़यामत के दिन और उन का तज़किया नहीं करेगा।

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۴۳﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوْا الضَّلٰةَ

और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा। यही लोग हैं जिन्होंने ने हिदायत के बदले ज़लालत

بِالْهُدٰى وَالْعَذَابِ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَا اَصْبَرَهُمْ

खरीदी और मग़फिरत के बदले अज़ाब खरीदा। फिर वो लोग आग पर कितना सब्र

عَلَى النَّارِ ﴿۱۴۴﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ۖ

करने वाले हैं? ये इस वजह से के अल्लाह ने किताब हक़ के साथ उतारी। और यकीनन

وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِي الْكِتٰبِ لَفِيْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ﴿۱۴۵﴾

जो लोग किताब में इख़्तिلاف कर रहे हैं, अलबत्ता वो दूर की मुखालफ़त (लम्बे झगड़े) में हैं।

لَيْسَ الْبِرُّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ

नेकी सिर्फ़ ये नहीं है के तुम अपना रुख फेर लो मशरिक् की तरफ

وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

और मगरिब की तरफ, लेकिन नेक वो शख्स है जो ईमान रखे अल्लाह पर और आखिरी दिन

وَالْمَالِکَةِ وَالْکِتَابِ وَالنَّبِیِّۃِ ۚ وَآتَى الْمَالَ	और फरिश्तों और किताबों और अम्बिया पर। और माल दे
عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِی الْقُرْبَىٰ وَالْیَتَمٰی وَالْمَسْکِیۡنَ وَابْنَ	माल की महबूबत के बावजूद रिश्तेदारों को और यतीमों और मिसकीनों और
السَّبِیْلِ ۚ وَالسَّالِیۡنَ وَفِی الرِّقَابِ ۚ وَأَقَامَ الصَّلٰوةَ	मुसाफिरों को और सवाल करने वालों को और गर्दनों के छुड़ाने में, और नमाज़ काइम करे
وَآتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عٰهَدُوا ۚ	और ज़कात दे, और जो अपना अहद पूरा करने वाले हैं जब वो अहद करें,
وَالصَّٰبِرِیۡنَ فِی الْبَاسِ ۚ وَالْبَاسَ ۚ وَالصَّرَآءَ ۚ وَحِیۡنَ الْبَاسِ ۚ	और जो सब्र करने वाले हैं सख्ती और तकलीफ में और लड़ाई के वक़्त।
أُولَٰئِكَ الَّذِیۡنَ صَدَقُوا ۗ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿۱۴۴﴾	यही लोग सच्चे हैं। और यही लोग मुत्तक़ी हैं।
يَاۤیُّهَا الَّذِیۡنَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَیْكُمْ الْقِصَاصُ	ऐ ईमान वालो! तुम पर किसास फर्ज किया गया मक़तलीन के बारे
فِی الْقَتْلِ ۚ الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ ۚ وَالْأُنثٰی	में के आज़ाद क़त्ल किया जाए आज़ाद के बदले और गुलाम क़त्ल किया जाए गुलाम के बदले और औरत क़त्ल
بِالْأُنثٰی ۚ فَمَنۢ غُفِیَ لَهُ مِنۢ أَخِیۡهِ شَیْءٌ فَاتَّبَاعُ ۚ	की जाए औरत के बदले। फिर जिस शख्स को उस के भाई की तरफ से मुआफी हो जाए, तो माकूल तरीक़े पर
بِالْمَعْرُوفِ ۚ وَأَدَآءٌ إِلَیْهِ بِإِحْسَانٍ ۚ ذَٰلِكَ تَخْفِیۡفٌ	मुतालबा करना है और उस की तरफ भलाई के साथ अदा कर देना है। ये तुम्हारे रब की तरफ से
مِّنۢ رَبِّکُمْ ۚ وَرَحْمَةٌ ۚ فَمَنۢ اَعْتَدٰی بِعَدَدِ ذَٰلِكَ	आसानी है और रहमत है। लेकिन उस के बाद जो ज़्यादती करेगा
فَلَهُ عَذَابٌ أَلِیۡمٌ ﴿۱۴۵﴾ وَلَکُمۡ فِی الْقِصَاصِ حَیۡوَةٌ	तो उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है। और तुम्हारे लिए ऐ अक़ल वालो! किसास में
یَأۡوِی الْاَلْبَابَ لَعَلَّکُمۡ تَتَّقُونَ ﴿۱۴۶﴾ کُتِبَ عَلَیْکُمۡ اِذَا	ज़िन्दगी है ताके तुम (क़त्ल करने से) परहेज़ करो। तुम पर फर्ज किया गया जब

حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖ الْوَصِيَّةُ

तुम में से किसी एक की मौत का वक़्त करीब आ जाए अगर उस ने माल छोड़ा हो, (तो फर्ज़ किया गया)

لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ ۚ حَقًّا

वसीयत करना वालिदैन और रिश्तेदारों के लिए माकूल तरीके पर। ये मुत्तकियों पर

عَلَى الْمُتَّقِينَ ۖ فَمَنْ أَبَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا

लाज़िम है। फिर उस को जो बदल देगा उस को सुनने के बाद तो

إِثْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

उस का गुनाह सिर्फ़ उन लोगों पर है जो उस को बदलेंगे। यकीनन अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं।

فَمَنْ خَافَ مِنْ مَوْصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ

फिर जो वसीयत करने वाले की तरफ से खौफ करे एक तरफ माइल होने का या गुनाह का, फिर वो उन के

بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

दरमियान सुलह करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं है। यकीनन अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ

ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फर्ज़ किए गए

كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝

जैसा के उन लोगों पर फर्ज़ किए गए जो तुम से पेहले थे, ताके तुम मुत्तकी बनो।

أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا

चन्द गिने चुने दिनों के (रोज़े फर्ज़ किए गए)। फिर तुम में से जो बीमार हो

أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ

या सफर पर हो तो दूसरे दिनों से तादाद को पूरा करना है। और उन लोगों पर जो रोज़े

يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ۚ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا

की ताक़त रखते हैं, एक मिसकीन का खाना फिदया देना है (ये हुक्म मन्सूख है)। फिर जो खुशी से नेकी करे

فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ ۚ وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ

तो वो उस के लिए बेहतर है। और ये के तुम रोज़ा रखो ये तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम

تَعْلَمُونَ ۝ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ

जानते हो। रमज़ान का महीना वो महीना है जिस में कुरआन उतारा गया, जो इन्सानों के लिए

هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَ الْفُرْقَانِ ؕ

हिदायत है और हिदायत की साफ साफ आयात और हक व बातिल के दरमियान फैसला करने वाली साफ साफ आयतें हैं।

فَمَن شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَن كَانَ

फिर तुम में से जो ये महीना पाए तो उस को चाहिए के उस के रोज़े रखे। और जो बीमार

مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ

हो या सफर पर हो तो दूसरे दिनों से तादाद को पूरा करना है। अल्लाह तुम्हारे

اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۖ وَلِتُكْمِلُوا

साथ आसानी का इरादा फरमाते हैं और अल्लाह तुम्हारे साथ तंगी का इरादा नहीं फरमाते। और इस लिए

الْعِدَّةَ ۖ وَلِتُكْمِلُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَكُمْ ۖ وَلَعَلَّكُمْ

ताके तुम तादाद को पूरा करो और ताके तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो इस पर के अल्लाह ने तुम्हें हिदायत दी और

تَشْكُرُونَ ﴿١٨٥﴾ وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ

ताके तुम शुक्रगुज़ार बनो। और जब आप से मेरे बन्दे सवाल करें मेरे मुतअल्लिक, तो मैं करीब ही हूँ।

أَجِيبْ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي

मैं पुकारने वाले की पुकार कबूल करता हूँ जब वो मुझे पुकारता है। इस लिए उन्हें चाहिए के वो मेरे हुक्म

وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾ أَجَلٌ لَّكُمْ

को कबूल करें और मुझ पर ही ईमान लाएं ताके वो राह पाएं। तुम्हारे लिए अपनी

لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَائِكُمْ ۚ هُنَّ لِبَاسٌ

बीवियों से जिमाअ रोज़ों की रात में हलाल किया गया। वो तुम्हारा लिबास

لَكُمْ وَ أَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۚ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ

हैं और तुम उन का लिबास हो। अल्लाह जानते हैं के तुम अपने नपसों से

تَخْتَانُونَ أَنْفُسَكُمْ ۚ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ

खयानत करते थे, इस लिए अल्लाह ते तुम्हारी तौबा कबूल फरमाई और तुम्हें मुआफ कर दिया।

فَالَّذِينَ بَاشَرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۖ

इस लिए अब तुम उन से मुबाशरत करो और तुम तलब करो वो (औलाद) जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है।

وَ كُلُوا وَ اشْرَبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ

और तुम खाओ और पियो यहां तक के तुम्हारे लिए सफेद धागा

مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۖ ثُمَّ أَتُوا الصَّيَامَ

सियाह धागे से सुबह (सादिक) अलग नज़र आ जाए। फिर रात तक रोज़ों को

إِلَى اللَّيْلِ ۚ وَلَا تَبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ عَاكِفُونَ ۚ

पूरा करो। और तुम उन से जिमाअ मत करो इस हाल में के तुम मस्जिदों में

فِي الْمَسْجِدِ ۚ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۖ فَلَا تَقْرُبُوهَا ۚ كَذَلِكَ

मोअतकिफ हों। ये अल्लाह की हुदूद हैं। तुम उन के करीब भी मत जाओ। इसी तरह

يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿۱۸۸﴾ وَلَا تَأْكُلُوا

अल्लाह अपनी आयतें खोल खोल कर बयान करते हैं लोगों के लिए ताके वो मुत्तकी बनें। और अपने माल

أَمْوَالِكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ ۖ وَتُدْءُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ

आपस में बातिल तरीके से मत खाओ और तुम उन को हुक्काम तक मत ले जाओ

لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ

ताके तुम लोगों के मालों का एक हिस्सा गुनाह के ज़रिए खा जाओ, इस हाल में के तुम

تَعْلَمُونَ ﴿۱۸۹﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْإِهْلَةِ ۖ قُلْ هِيَ

जानते हो। ये लोग आप से चाँदों के मुतअल्लिक सवाल करते हैं। आप फरमा दीजिए के चाँद

مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ۖ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا

इन्सानों के लिए औकात मालूम करने और हज का वक़्त मालूम करने का ज़रिया है। और नेकी ये नहीं है के

الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَى ۚ وَأْتُوا

तुम घरों में आओ उन की पुश्त की जानिब से, लेकिन नेक वो शख्स है जो अल्लाह से डरे। और

الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿۱۹०﴾

घरों में उन के दरवाज़ों से आओ। और अल्लाह से डरो ताके तुम फलाह पाओ।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ

और अल्लाह के रास्ते में क़िताल करो उन लोगों से जो तुम से क़िताल करें

وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿۱९१﴾ وَاقْتُلُوهُمْ

और तुम ज़्यादती मत करो। यकीनन अल्लाह ज़्यादती करने वालों से महब्वत नहीं करते। और उन को क़त्ल करो

حَيْثُ تَقْتُلُوهُمْ ۚ وَ أَخْرِجُوهُمْ مِّنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُم

जहाँ उन को पाओ और उन को निकालो जहाँ से उन्होंने ने तुम्हें निकाला

وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ

और फितना ये क़त्ल से भी ज़्यादा सख्त चीज़ है। और उन से क़िताल मत करो

عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّى يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ ۚ فَإِنْ قَاتَلُوكُمْ

मस्जिदे हराम के पास जब तक के वो तुम से मस्जिदे हराम में क़िताल न करें। फिर अगर वो तुम से क़िताल करें

فَاقْتُلُوهُمْ ۚ كَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ۖ فَإِنْ انْتَهَوْا

तो तुम उन को क़त्ल कर दो। इसी तरह काफ़िरों की सज़ा है। फिर अगर वो बाज़ आ जाएं

فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۖ وَ قَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ

तो यकीनन अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और उन से क़िताल करो यहां तक के फितना बाकी

فِتْنَةٌ ۚ وَ يَكُونَنَّ الدِّينُ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ انْتَهَوْا

न रहे और दीन अल्लाह ही का हो जाए। फिर अगर वो बाज़ आ जाएं

فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ ۖ الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ

तो सिवाए ज़ालिमों के किसी पर ज़्यादती नहीं है। ये हुरमत वाला महीना उस हुरमत वाले

الْحَرَامِ وَالْحُرْمَتُ قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ اعْتَدَى عَلَيْكُمْ

महीने के बदले में है और दूसरी मोहतरम चीज़ों का भी बदला है। फिर जो तुम पर ज़्यादती करे

فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدَى عَلَيْكُمْ ۖ

तो तुम उस पर ज़्यादती करो उसी जैसी जो उस ने तुम पर ज़्यादती की है।

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۖ

और अल्लाह से डरो और जान लो के अल्लाह मुत्तकियों के साथ है।

وَ أَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ

और अल्लाह के रास्ते में खर्च करो और खुद अपने को हलाकत में

إِلَى التَّهْلُكَةِ ۚ وَ أَحْسِنُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْحَسَنِينَ ۖ

मत डालो। और तुम नेकी करो। यकीनन अल्लाह नेकी करने वालों से महबबत फरमाते हैं।

وَ اتَّبِعُوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ

और हज और उमरा अल्लाह के लिए पूरा करो। फिर अगर तुम्हें घेर लिया जाए

فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّىٰ

तो जो हदी मुयस्सर हो (वो दो)। और अपने सरो को मत मुंडाओ यहां तक के

مَعَ
عِنْدَ التَّقْدِيرِ ۚ

يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحَلَّهُ ۖ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا

हदी अपने हलाल होने की जगह पहुँच जाए। फिर जो तुम में से बीमार हो

أَوْ بِهِ أَذًى مِّن رَّأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِّن صِيَامٍ

या उस के सर में तकलीफ हो तो रोज़ों से या सड़के से या जानवर ज़बह कर के

أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ ۚ فَإِذَا أَمِنْتُمْ ۖ فَمَنْ تَتَعَ بِالْعُمْرَةِ

फिदया देना है। फिर जब तुम मामून हो जाओ, तो फिर जो शख्स हज के साथ उमरा

إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ

को मिला कर फायदा उठाए, तो जो हदी मुयस्सर हो (वो दे)। फिर जो शख्स

لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ۚ فِي الْحَجِّ وَ سَبْعَةٍ

हदी न पाए तो तीन दिन के रोज़े रखने हैं हज में और सात रोज़े रखने हैं

إِذَا رَجَعْتُمْ ۖ تِلْكَ عَشْرَةٌ كَامِلَةٌ ۚ ذَلِكُمْ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ

जब तुम वापस लौटो (जब तुम फारिग हो जाओ)। ये पूरे दस दिन हैं। ये उस शख्स के लिए है

أَهْلُهُ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ

जिस के घर वाले मस्जिदे हराम के पास मौजूद न हों। और अल्लाह से डरो

وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ الْحَجُّ أَشْهُرٌ

और जान लो के यकीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं। हज के महीने

مَعْلُومَةٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ

मालूम हैं। फिर जो उन में हज फर्ज कर ले तो फिर न जिमाअ पर उभारने वाली गुफ्तगू और न

وَلَا فَسُوقَ ۚ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۚ وَمَا تَفَعَّلُوا

गुनाह की बात करनी है और न हज में झगड़ा करना है। और जो भलाई तुम

مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللَّهُ ۚ وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَىٰ

करो तो अल्लाह उसे जानते हैं। और तोशा तय्यार कर लो, फिर बेशक बेहतरीन तोशा तक्वा है।

وَاتَّقُوا يَا أُولِيَ الْأَلْبَابِ ۖ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ

और मुझ से डरो, ऐ अक्ल वालो! तुम पर कोई गुनाह नहीं है

أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ ۚ فَإِذَا أَفْضُتُمْ

के तुम अपने रब का फज़ल तलब करो। फिर जब अरफात

مَنْ عَرَفْتِ فَادْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ

से वापस लौटो तो अल्लाह को मशअरे हराम के पास (मुजदलिफा में) याद करो।

وَادْكُرُوهُ كَمَا هَدَكُمُ ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلِهِ

और अल्लाह को याद करो जैसा के उस ने तुम्हें हिदायत दी। और यकीनन तुम उस से पेहले

لِينَ الصَّالِينَ ۝ ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ

अलबत्ता गुमराहों में से थे। फिर तुम लौटो जहां से सब लोग वापस लौटते हैं

وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

और अल्लाह से मग़फिरत तलब करो। यकीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

فَإِذَا قُضِيَتْ مَنَاسِكُكُمْ فَادْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ

फिर जब तुम अपने हज के अरकान पूरे कर चुको, तो अल्लाह को याद करो अपने याद करने की तरह

أَبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۚ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ

अपने बाप दादा को या उस से भी ज़्यादा याद करो। फिर कुछ लोग वो हैं जो

يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ

यूँ कहते हैं के ऐ हमारे रब! तू हमें दुनिया ही में दे दे और उन के लिए आखिरत में

مِنْ خَلْقٍ ۝ وَ مِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا

कोई हिस्सा नहीं है। और उन में से कुछ लोग वो हैं जो यूँ कहते हैं के ऐ हमारे रब! तू हमें

فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ

दुनिया में भी भलाई अता फरमा और आखिरत में भी भलाई अता फरमा और तू हमें दोज़ख के अज़ाब से

النَّارِ ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۚ

बचा ले। यही लोग हैं जिन के लिए उन के किए का हिस्सा है।

وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ وَادْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ

और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाले हैं। और अल्लाह को चन्द गिने चुने दिनों में

مَعْدُودَاتٍ ۚ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ

याद करो। फिर जो दो दिन में जल्दी (मक्का) वापस आ जाए तो उस पर कोई गुनाह

عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ اتَّقَىٰ

नहीं है। और जो उस के बाद भी रहे तो उस पर भी कोई गुनाह नहीं है, ये उन के लिए है जो मुत्तकी हैं।

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿۲۳﴾

और अल्लाह से डरो और जान लो के तुम उस की तरफ इकट्ठे किए जाओगे।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ

और लोगों में ऐसा शख्स भी है के जिस का कलाम आप को अच्छा लगता है दुन्यवी ज़िन्दगी के

الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ اللَّهُ عَلَى مَا فِي قَلْبِهِ ۖ وَهُوَ أَلَدُّ

बारे में और वो अल्लाह को गवाह बनाता है उस पर जो उस के दिल में है। हालांके वो सख्त

الْخَصَامِ ﴿۲۴﴾ وَإِذَا تَوَلَّى سَعَىٰ فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ

झगड़ालू है। और जब वो वापस लौटता है तो ज़मीन में कोशिश करता है ताके उस में फसाद

فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ

फेलाए और वो खेती और जानवरों को बरबाद करता है। और अल्लाह को फसाद पसन्द

الْفُسَادَ ﴿۲۵﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ

नहीं। और जब उस से कहा जाता है के अल्लाह से डर, तो उसे बड़ाई

بِالْإِثْمِ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ ۖ وَلَبِئْسَ الْبِهَادُ ﴿۲۶﴾

गुनाह पर उभारती है, फिर उस के लिए जहन्नम काफी है। और वो बुरा ठिकाना है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ ۗ

और कुछ लोग वो हैं जो अल्लाह की रज़ा की तलब में अपनी जान दे देते हैं।

وَاللَّهُ رَءُوفٌ ۖ بِالْعِبَادِ ﴿۲۷﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا

और अल्लाह बन्दों पर महरबान है। ऐ ईमान वालो! तुम इस्लाम

فِي السَّلَامِ كَافَّةً ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۗ

में पूरे पूरे दाखिल हो जाओ। और तुम शैतान के क़दम ब क़दम मत चलो।

إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿۲۸﴾ فَإِنْ زَلَلْتُمْ مِنْ بَعْدِ

यकीनन वो तुम्हारा खुला दुश्मन है। फिर अगर तुम फिसल जाओ इस के बाद के

مَا جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَاَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿۲۹﴾

तुम्हारे पास वाज़ेह आयतें आ चुकीं तो जान लो के अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ مِّنَ

वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर इस बात के के उन के पास अल्लाह आ जाए बादलों के सायबानों

الْغَمَامِ وَالْمَلَائِكَةِ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَإِلَى اللَّهِ

में और फरिश्ते आ जाएं और मुआमला खत्म कर दिया जाए। और अल्लाह ही की तरफ

تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۚ سَلَّ بَنِي إِسْرَءِيلَ كَمْ آتَيْنَهُمْ

तमाम उमूर लौटाए जाएंगे। आप बनी इस्राईल से सवाल कीजिए के हम ने उन्हें कितनी

مِنْ آيَةٍ بَيِّنَةٍ ۚ وَمَنْ يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ

रोशन निशानियाँ अता कीं। और जो अल्लाह की नेअमत को बदलेगा इस

مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

के बाद के वो उस के पास आई तो यकीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं।

زَيْنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ

काफिरों के लिए दुन्यवी ज़िन्दगी मुज़य्यन की गई और वो ईमान

مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ

वालों से मज़ाक़ करते हैं। और जो मुत्तकी हैं वो क़यामत के दिन उन के ऊपर

الْقِيَمَةِ ۚ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

रहेगें। और अल्लाह बेहिसाब रोज़ी देते हैं जिसे चाहते हैं।

كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِيِّنَ

तमाम इन्सान एक ही उम्मत थे। फिर अल्लाह ने अम्बिया भेजे

مُبَشِّرِينَ وَ مُنْذِرِينَ ۖ وَأَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتَابَ

बशारत देने वाले और डराने वाले। और उन के साथ किताब उतारी

بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِي مَا اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ

हक़ के साथ ताके वो इन्सानों के दरमियान फैसला करे जिस में वो इख़तिلاف कर रहे हैं।

وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ مِنْ بَعْدِ

और उस में इख़तिلاف नहीं किया मगर उन लोगों ने जिन को किताब दी गई थी इस के बाद के

مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا ۚ بَيْنَهُمْ ۖ فَهَدَى اللَّهُ

उन के पास रोशन मोअजिज़ात आए, आपस की ज़िद की वजह से। फिर अल्लाह ने

الَّذِينَ آمَنُوا لِمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِآذِنِهِ ۚ

अपने हुक्म से हिदायत दी ईमान वालों को उस हक़ की जिस में वो इख़तिلاف कर रहे थे।

और अल्लाह	सीधे रास्ते की तरफ	हिदायत देते हैं	जिसे चाहते हैं।
क्या तुम ने ये गुमान कर रखा है	के तुम जन्नत में दाखिल हो जाओगे	हालांके तुम पर अब तक उन लोगों जैसे	
हालात नहीं आए	जो तुम से	पेहले गुज़र चुके।	जिन को सख्ती और
तकलीफ पहोंची और	वो हिला दिए गए	यहां तक के केह उठे	रसूल और वो लोग जो उन के साथ
ईमान लाए थे	के अल्लाह की नुसरत	कब आएगी? सुनो!	यकीनन अल्लाह की नुसरत करीब है।
वो सवाल करते हैं	के क्या खर्च करें?	आप फरमा दीजिए	के जो माल तुम खर्च करो
वो	वालिदैन्,	और रिश्तेदारों,	और यतीमों और मिसकीनों
और मुसाफिर के लिए	होना चाहिए।	और जो भलाई तुम करोगे	तो यकीनन अल्लाह
उसे जानते हैं।	तुम पर क़िताल फर्ज़ किया गया	हालांके ये तुम्हें	नापसन्द है।
और शायद किसी चीज़ को	तुम नापसन्द करो,	हालांके वो तुम्हारे लिए	बेहतर हो।
और शायद तुम किसी चीज़ से	महब्बत करो,	हालांके वो तुम्हारे लिए	बुरी हो। और अल्लाह
जानते हैं और तुम जानते नहीं हो।	ये आप से सवाल करते हैं	हुरमत वाले महीने	
के मुतअल्लिक, उस में क़िताल के	मुतअल्लिक। आप फरमा दीजिए	के उस में क़िताल करना	बहोत बड़ा गुनाह है। लेकिन

عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَ كُفْرُ بِهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

अल्लाह के रास्ते से रोकना और अल्लाह के साथ कुफ्र करना और मस्जिदे हराम से रोकना

وَ إِخْرَاجِ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ ۖ وَالْفِتْنَةُ

और वहाँ वालों को वहाँ से निकालना, ये अल्लाह के नज़दीक उस से भी बड़ा गुनाह है। और फितना

أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۖ وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ

क़त्ल से भी बड़ा गुनाह है। और वो लोग तुम से बराबर क़िताल करते रहेंगे

حَتَّى يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا ۖ وَمَنْ

यहां तक के तुम्हें तुम्हारे दीन से मुर्तद बना दें अगर वो उस की ताक़त रखें। और जो

يَرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ

तुम में से अपने दीन से मुर्तद हो जाएगा, फिर वो मरेगा इस हाल में के वो काफिर है

فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ

तो उन के आमाल ज़ायेअ हो जाएंगे दुनिया और आखिरत में।

وَ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢١٣﴾

और ये दोज़खी होंगे। वो उस में हमेशा रहेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَ جَاهَدُوا

यकीनन वो लोग जो ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और जिहाद किया

فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ

अल्लाह के रास्ते में, ये अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हैं। और अल्लाह

غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢١٤﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۖ قُلْ

बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। ये आप से सवाल करते हैं शराब और जुए के मुतअल्लिक। आप फरमा

فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۚ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ

दीजिए के इन दोनों में बड़ा गुनाह है, और लोगों के लिए कुछ मनाफेअ भी हैं। और उन का गुनाह उन के नफे से

مِنْ تَفْعِهِمَا ۖ وَ يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ ۖ قُلْ

ज़्यादा बड़ा है। और ये आप से सवाल करते हैं के क्या खर्च करें? आप फरमा दीजिए

الْعَفْوُ ۖ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ

के ज़ाइद को खर्च करो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें साफ साफ बयान करते हैं ताके तुम

تَتَفَكَّرُونَ ﴿۲۱﴾ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَ يَسْأَلُونَكَ

दुनिया और आखिरत में सोचो। और ये आप से सवाल करते हैं

عَنِ الْيَتَامَىٰ ۖ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۚ وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ

यतीमों के मुतअल्लिक। आप फरमा दीजिए के उन की इस्लाह करना बेहतर है। और अगर उन का खर्च अपने साथ तुम मिला लो

فَإِخْوَانُكُمْ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۚ

तो वो तुम्हारे भाई हैं। और अल्लाह जानता है माल बरबाद करने वाले को इस्लाह करने वाले से।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَاعْتَنَتَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿۲۲﴾

और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें मशक्कत में डालता। यकीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكَةَ حَتَّىٰ يُوْمِنَ ۖ وَلَا مَآءَةً مُّؤْمِنَةً ۚ

और मुशरिक औरतों से तुम निकाह मत करो जब तक के वो ईमान न ले आएँ। और अलबत्ता ईमान वाली बाँदी

خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ ۖ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تَنْكِحُوا

मुशरिक औरत से बेहतर है, अगर वो तुम्हें अच्छी लगे। और मुशरिक मर्दों से निकाह

الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُوْمِنُوا ۖ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ

मत करो जब तक के वो ईमान न ले आएँ। और अलबत्ता मोमिन गुलाम बेहतर है

مِّنْ مُّشْرِكٍ ۖ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۚ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ ۚ

मुशरिक मर्द से अगर वो तुम्हें अच्छा लगे। ये लोग दोज़ख की तरफ दावत देते हैं।

وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ ۚ

और अल्लाह दावत देते हैं जन्नत की तरफ और अपने हुक्म से मग़फिरत की तरफ।

وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿۲۳﴾

और अल्लाह अपनी आयतें इन्सानों के लिए साफ साफ बयान करते हैं ताके वो नसीहत हासिल करें।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ ۚ قُلْ هُوَ أَذًى ۖ فَاعْتَزِلُوا

और वो आप से सवाल करते हैं हैज़ के मुतअल्लिक। आप फरमा दीजिए के ये गन्दी चीज़ है, इस लिए औरतों से हैज़

النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ ۚ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهَرْنَ ۚ

की हालत में अलग रहो। और उन के करीब मत जाओ यहां तक के वो पाक हो जाएँ।

فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ ۚ

फिर जब वो पाक हो जाएँ तो उन औरतों के पास आओ उस जगह से जहां से अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है।

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَ يُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ﴿٢٢٧﴾

यकीनन अल्लाह तौबा करने वालों से महबबत फरमाते हैं और पाक रहने वालों से महबबत फरमाते हैं।

نَسَاؤُكُمْ حَرْتُ لَكُمْ فَأَتُوا حَرَّتْكُمْ أَلَى شَيْئُمْ

तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं। तो अपनी खेती में आओ जिस तरीके से तुम चाहो।

وَقَدْ مَوَّاهُ لِنَفْسِكُمْ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ

और अपने लिए आगे की तदबीर करो। और अल्लाह से डरो और जान लो के अल्लाह से

مُلَقَّوهُ ۖ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٢٨﴾ وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً

मिलने वाले हो। और आप ईमान वालों को बशारत सुना दीजिए। और अल्लाह को अपनी कस्मों का निशाना

لَا يُبَايِنُكُمْ أَنْ تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ

मत बनाओ के तुम नेकी नहीं करोगे और परहेज़गारी नहीं करोगे और लोगों के दरमियान सुलह

النَّاسِ ۖ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٩﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمْ اللَّهُ

न कराओगे। और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। अल्लाह मुआख़ज़ा नहीं करेंगे

بِالْغَوِّ فِيْ أَيْبَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ

तुम्हारी कस्मों में से लग्न कसम पर। लेकिन अल्लाह तुम्हारा मुआख़ज़ा करेंगे उस पर जिस का तुम्हारे दिलों ने पुख्ता

قُلُوبُكُمْ ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٢٣٠﴾ لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ

इरादा किया हो। और अल्लाह बख्शने वाले, हिल्म वाले हैं। उन लोगों के लिए जो कसम खा लेते हैं

مِنْ نِّسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ فَإِنْ فَاءُوا

अपनी बीवियों के पास जाने से चार महीने इन्तिज़ार करना है। फिर अगर वो रूजूअ कर लें

فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٣١﴾ وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ

तो यकीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और अगर वो तलाक़ का पुख्ता इरादा कर लें

فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٣٢﴾ وَالْمُطَلَّقَتُ يَتَرَبَّصْنَ

तो यकीनन अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। और तलाक़ दी हुई औरतें अपनी ज़ात के बारे में

بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ ۖ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ

तीन हैज़ तक इन्तिज़ार करें। और उन औरतों के लिए हलाल नहीं है

أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِيْ أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ

के वो छुपाएं उस को जो अल्लाह ने उन के रहम में पैदा किया अगर वो

يُؤْمِنَنَّ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ

अल्लाह पर और आखिरी दिन पर ईमान रखती हों। और उन के शौहर हकदार हैं

بِرَدِّهِنَّ فِي ذَٰلِكَ ۚ إِنَّ أَرَادُوا إِصْلَاحًا وَلَهُنَّ

उन के लौटाने के उस मुद्दत में अगर वो इस्लाह का इरादा करें। और उन औरतों के लिए

مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ

भी हक है उसी जैसा जो उन औरतों के ज़िम्मे हक है उर्फ के मुताबिक। लेकिन मर्दों के लिए उन औरतों

دَرَجَةٌ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿۲۳﴾ الطَّلَاقُ مَرَّتَيْنِ ۖ

पर एक दर्जा (ज़्यादा हक) है। और अल्लाह ज़बर्दस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। तलाक़ दो मर्तबा (दी जा सकती)

فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ ۗ وَلَا يَحِلُّ

है। उस के बाद या तो काइदे के मुताबिक़ रोक लेना है या फिर अच्छी तरह छोड़ देना है। और तुम्हारे

لَكُمْ أَنْ تَأْخُذُوا مِمَّا آتَيْتُمُوهُنَّ شَيْئًا إِلَّا

लिए हलाल नहीं है के कुछ भी ले लो उस महर में से जो तुम ने उन को दिया हो, मगर

أَنْ يَخَافَا إِلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۚ فَإِنْ خِفْتُمْ

ये के वो दोनों डरें इस से के वो अल्लाह की हुदूद को काइम नहीं रख सकेंगे। फिर अगर तुम डरो

إِلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۚ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا

के वो दोनों अल्लाह की हुदूद को काइम नहीं रख सकेंगे तो उन दोनों पर कोई गुनाह नहीं है

فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ ۚ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا ۚ

इस में के औरत फिदया दे कर सुलह कर ले। ये अल्लाह की हुदूद हैं, तो उन से आगे मत बढ़ो।

وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿۲۴﴾

और जो अल्लाह की हुदूद से आगे बढ़ेगा तो यही लोग ज़ालिम हैं।

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّى تَنْكِحَ

फिर अगर मर्द बीवी को (तीसरी) तलाक़ दे दे, तो फिर वो औरत मर्द के लिए हलाल नहीं है उस के बाद यहां तक के वो औरत

زَوْجًا غَيْرَهُ ۚ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا

उस के अलावा किसी दूसरे शौहर से निकाह कर ले। फिर अगर वो दूसरा शौहर भी उसे तलाक़ दे दे, तो फिर उन दोनों पर कोई गुनाह

أَنْ يَتَرَاجَعَا ۚ إِنَّ ظَنًّا أَنْ يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۚ وَتِلْكَ

नहीं है इस में के वो आपस में दोबारा निकाह कर लें अगर वो गुमान रखते हों के वो दोनों अल्लाह की हुदूद को काइम रख सकेंगे।

حُدُّودُ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٢٢٠﴾ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ

और ये अल्लाह की हुदूद हैं, जिन को अल्लाह बयान करते हैं ऐसी कौम के लिए जो जानती है। और जब तुम औरतों को

النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ

तलाक दो, फिर वो अपनी इद्दत की इन्तिहा (के करीब) पहुँच जाएं तो उन्हें रोक लो उर्फ के मुताबिक

أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۖ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضَرَارًا

या उन्हें छोड़ दो उर्फ के मुताबिक। और उन को मत रोके रखो ज़रूर पहुँचाने के लिए

لَتَعْتَدُوا ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ

ताके तुम ज़्यादती करो। और जो ऐसा करेगा तो यकीनन उस ने अपनी जान पर जुल्म किया।

وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا ۚ وَادْكُرُوا نِعْمَتَ

और अल्लाह की आयतों को मज़ाक मत बनाओ। और याद करो अल्लाह की उस नेअमत को

اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ

जो तुम पर है और उस किताब और हिक्मत को जो उस

وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا

ने तुम पर उतारी, इस की अल्लाह तुम्हें नसीहत करते हैं। और अल्लाह से डरो और जान लो

أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٢١﴾ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ

के अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं। और जब तुम औरतों को तलाक दो,

فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ

फिर वो अपनी इद्दत की इन्तिहा को पहुँच जाएं तो उन को मत रोको इस से के वो अपने शौहरों से

أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ۚ ذَلِكَ

निकाह करें जब वो आपस में राज़ी हों उर्फ के मुताबिक। इसी की

يُوعِظُ بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ

नसीहत की जाती है उस शख्स को जो तुम में से अल्लाह पर और आखिरी दिन पर ईमान रखता

الْآخِرِ ۚ ذَلِكَمْ أَرْكَى لَكُمْ وَأَطْهَرُ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ

है। ये तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़गी वाला है और ज़्यादा साफ सुथरा है। और अल्लाह जानता है और तुम

لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٢٢﴾ وَالْوَالِدَتُ يُرْضَعْنَ أَوْلَادَهُنَّ

नहीं जानते। और माएं अपनी औलाद को दूध पिलाएं

النِّسَاءِ

حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۖ

पूरे दो साल, उस के लिए जो रज़ाअत की मुदत पूरी करना चाहे।

وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۖ

और बाप (शौहर) के ज़िम्मे दूध पिलाने वाली औरतों को खाना और कपड़ा देना है उर्फ के मुताबिक।

لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَارُّ وَالِدَةُ

किसी शख्स को तकलीफ नहीं दी जाएगी, मगर उस की वुसअत के मुताबिक। किसी माँ को ज़रर नहीं पहुँचाया जाएगा

بَوْلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَهُ بِوَلَدِهَا ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ

उस के बच्चे की वजह से और किसी बाप को ज़रर नहीं पहुँचाया जाएगा उस के बच्चे की वजह से। और वारिस के ज़िम्मे

مِثْلُ ذَلِكَ ۚ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا

भी उसी के मानिन्द है। फिर अगर माँ बाप दोनों इरादा करें दूध छुड़ाने का आपस की रज़ामन्दी से

وَتَشَاوِرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۖ وَإِنْ أَرَدْتُمْ

और आपस के मशवरे से तो उन पर कोई गुनाह नहीं है। और अगर चाहो

أَنْ تَسْرِضَعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُمْ

के तुम दूध पिलवाओ अपने बच्चों को, तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है जब तुम दो

مَا أَتَيْتُمُ بِالْمَعْرُوفِ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا

वो माल जो तुम देते हो उर्फ के मुताबिक। और अल्लाह से डरो और जान लो

أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ

के अल्लाह तुम्हारे आमाल को देख रहे हैं। और जो तुम में से वफात

مِنْكُمْ وَ يَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ

पा जाएं और बीवियां छोड़ जाएं तो वो अपने बारे में इन्तिज़ार करें

أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ۚ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ

चार महीने और दस दिन। फिर जब वो अपनी इदत की इन्तिहा को पहुँच जाएं

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ

तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है उस में जो वो अपने बारे में करें

بِالْمَعْرُوفِ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ وَلَا

उर्फ के मुताबिक। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है। और

جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ خُطْبَةِ النِّسَاءِ

तुम पर कोई गुनाह नहीं है उस में जिस को तुम इशारे से बयान करो औरतों की मंगनी के मुतअल्लिक

أَوْ أَكْنَنْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ ۖ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ

या तुम अपने दिलों में छुपाओ। अल्लाह जानता है के तुम उन औरतों का तज़क़िरा करोगे

وَلَكِنْ لَا تَوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا

लेकिन तुम उन से चुपके चुपके वादा मत कर लो, मगर ये के कोई अच्छी बात

مَعْرُوفًا ۚ وَلَا تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّى يَبْلُغَ

कहो। और निकाह का बन्धन मज़बूत मत बांध लो यहां तक के लिखी हुई मुद्दत

الكِتَابِ أَجَلَهُ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ

अपनी इन्तिहा को पहोंच जाए। और जान लो के अल्लाह जानता है उस को जो तुम्हारे दिलों में है,

فَاحْذَرُوهُ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٢﴾

तो तुम उस से डरो। और जान लो के अल्लाह बख्शने वाले, हिल्म वाले हैं।

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمْ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمْسُوهُنَّ

तुम पर कोई गुनाह नहीं है के अगर तुम ने औरतों को तलाक़ दी हो जब तुम ने उन को छुवा न हो,

أَوْ تَفَرَّضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً ۚ وَمَتَّعُوهُنَّ عَلَى الْمَوْسِعِ

और तुम ने उन के लिए महर मुकर्रर न किया हो। और उन को एक जोड़ा दो, वुसअत वाले के ज़िम्मे उस की

قَدْرَهُ وَ عَلَى الْمَقْتَرِ قَدْرَهُ ۚ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ ۚ

इस्तिताअत के बक़दर है और तंगदस्त के ज़िम्मे उस की इस्तिताअत के बक़दर है। ये जोड़ा देना है उर्फ के मुताबिक़।

حَقًّا عَلَى الْبُحْسَيْنِ ﴿١٣﴾ وَإِنْ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ

ये लाज़िम है नेकी करने वालों पर। और अगर तुम औरतों को तलाक़ दो इस से पेहले के

قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ

तुम उन को छुओ इस हाल में के तुम ने उन के लिए महर मुकर्रर

فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوا

किया हो, तो उस महर का आधा देना है जो तुम ने मुकर्रर किया है, मगर ये के वो औरतें मुआफ़ कर दें या वो शख्स (वली)

الَّذِي بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَأَنْ تَعْفُوا

मुआफ़ कर दे जिस के हाथ में निकाह का बन्धन है। और ये के तुम मुआफ़ कर दो

أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَنسُوا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۖ

ये तक़्वा के ज़्यादा करीब है। और तुम आपस में एहसान करना मत भूलो।

إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٢﴾ حِفْظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ

यकीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं। तमाम नमाज़ों की हिफाज़त करो,

وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ ۖ وَ قَوْمُوا لِلَّهِ قَدَتَيْنِ ﴿٢٣﴾

खास तौर पर दरमियानी नमाज़ की। और अल्लाह के सामने खुशूअ के साथ खड़े हो जाओ।

فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ۖ فَإِذَا أَمْنْتُمْ

फिर अगर तुम खौफ की हालत में हो तो (फिर नमाज़ पढ़ो) खड़े खड़े या सवारी पर। फिर जब तुम मामून हो जाओ

فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿٢٤﴾

तो अल्लाह को याद करो जैसा के उस ने तुम्हें इल्म दिया उस चीज़ का जो तुम जानते नहीं थे।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا ۖ

और वो लोग जो तुम में से वफात पा जाएं और बीवियां छोड़ जाएं,

وَصِيَّةٌ لِّأَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرِ

तो अपनी बीवियों के लिए वसीय्यत करना है खर्च देने की एक साल तक इस हाल में के (उन को मकान से)

إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي

निकाला न जाए। फिर अगर वो खुद ही शौहर के मकान से निकल जाएं, तो तुम पर कोई गुनाह नहीं उस में

مَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوفٍ ۖ وَاللَّهُ عَزِيزٌ

जो वो अपनी ज़ात के बारे में करें उर्फ में से। और अल्लाह ज़बर्दस्त हैं,

حَكِيمٌ ﴿٢٥﴾ وَلِلْمُطَلَّقَاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا

हिक्मत वाले हैं। और तलाक़ दी हुई औरतों के लिए फाइदा पहुँचाना है उर्फ के मुताबिक। ये

عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿٢٦﴾ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ

मुत्तकियों पर लाज़िम है। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें साफ साफ बयान करते हैं

لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٧﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا

ताके तुम अक़लमन्द बन जाओ। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जो अपने

مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أَلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۖ

घरों से निकले इस हाल में के वो हज़ारों थे, (वो निकले) मौत के डर से।

فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ۖ ثُمَّ أَحْيَاهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ

फिर अल्लाह ने उन से फरमाया के तुम सब मर जाओ। फिर अल्लाह ने उन सब को ज़िन्दा फरमा दिया। यकीनन अल्लाह

لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ

इत्सानों पर एहसान वाले हैं, लेकिन अकसर लोग

لَا يَشْكُرُونَ ۖ وَ قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاعْلَمُوا

शुक्र अदा नहीं करते। और क़िताल करो अल्लाह के रास्ते में और जान लो

أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۖ مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ

के अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। कौन है जो अल्लाह को कर्ज़ दे

قَرْضًا حَسَنًا فَيُضِعَّهُ لَهُ ۖ أَضْعَافًا كَثِيرَةً ۚ

अच्छा कर्ज़, फिर अल्लाह उस के लिए उस को कई गुना बढ़ाए।

وَاللَّهُ يَقْضِي وَ يَبْضِطُ ۖ وَ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۖ

और अल्लाह तंगी करते हैं और वुस्अत करते हैं। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الْهَلَاءِ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ مِنْ بَعْدِ

क्या आप ने देखा नहीं बनी इस्राईल की जमाअत की तरफ मूसा (अलैहिस्सलाम) के बाद

مُوسَى ۖ إِذْ قَالُوا لِنَبِيِّ لَهُمْ ابْعَثْ لَنَا مَلَكًا نُقَاتِلْ

जब के उन्होंने ने कहा अपने नबी से के आप हमारे लिए किसी को बादशाह बना कर हमारे साथ भेजिए ताके हम अल्लाह

فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ

के रास्ते में क़िताल करें। तो नबी ने फरमाया अगर तुम पर क़िताल फर्ज़ किया जाए

عَلَيْكُمْ الْقِتَالُ أَلَا تُقَاتِلُونَ ۖ قَالُوا وَمَا لَنَا

तो ये हो सकता है के तुम क़िताल न करो? तो उन्होंने ने कहा के हमें क्या हुआ के हम

أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أَخْرَجْنَا مِنْ دِيَارِنَا

क़िताल न करें अल्लाह के रास्ते में हालांके हमें अपने घरों से और अपने बेटों से

وَأَبْنَاءَنَا ۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا

निकाल दिया गया है। फिर जब उन पर क़िताल फर्ज़ किया गया तो मुकर गए

إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۖ

मगर उन में से थोड़े। और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानते हैं।

النَّبَقَّة

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ

और उन लोगों से उन के नबी ने फरमाया के यकीनन अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह बना कर भेजा है।

مَلِكًا قَالُوا أَنَّى يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ

उन्होंने ने कहा के उस के लिए हम पर बादशाहत कैसे हो सकती है, हालांकि हम उस की

أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِنَ الْمَالِ ۚ

बनिस्बत बादशाहत के ज्यादा हकदार हैं और उस को तो माल की वुस्तत भी नहीं दी गई।

قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً

नबी ने फरमाया के यकीनन अल्लाह ने उस को तुम पर मुत्तखब फरमाया है और उस के लिए इल्म और

فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۚ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَنْ

जसामत में ज्यादा वुस्तत दी है। और अल्लाह अपनी सलतनत देते हैं जिसे

يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿۱۷﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ

चाहते हैं। और अल्लाह वुस्तत वाले, इल्म वाले हैं। और उन से उन के नबी ने फरमाया

إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ

के यकीनन उस के बादशाह होने की निशानी ये है के तुम्हारे पास वो सन्दूक आ जाएगा जिस में

سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ

तुम्हारे रब की तरफ से तसकीन की चीज़ है और उन तबरुकात का बकीय्या है जिस को आले मूसा

وَالْهَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ

और आले हारून ने छोड़ा, उस को फरिश्ते उठा कर लाएंगे। यकीनन उस में

لَايَةً لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿۱۸﴾ فَلَمَّا فَصَلَ

निशानी है तुम्हारे लिए अगर तुम ईमान लाते हो। फिर जब तालूत लशकरो को

طَالُوتُ بِالْجُنُودِ ۖ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُمْ

ले कर चले तो तालूत ने कहा के यकीनन अल्लाह तुम्हारा एक नहर के ज़रिए इस्तिहान लेने

بِنَهَرٍ ۖ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي ۚ وَمَنْ

वाले हैं। फिर जो उस नहर में से पिएगा, तो वो मुझ से नहीं है। और जो

لَمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً ۚ

उस को चखेगा भी नहीं तो यकीनन वो मुझ से है, मगर वो जो अपने हाथ से चुल्लू

بَيِّدَهُ ۖ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۖ

उठा ले। फिर उन सब ने पिया नहर में से मगर उन में से थोड़े लोगों ने।

فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ ۖ قَالُوا لَا طَاقَةَ

फिर जब उस नहर को पार कर लिया तालूत ने और उन लोगों ने जो आप के साथ ईमान लाए थे, तो वो केहने लगे के आज

لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ ۖ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ

हमें जालूत और उस के लश्कर से लड़ने की ताकत नहीं है। तो उन लोगों ने कहा जो यकीन रखते थे के

أَنَّهُمْ مُّلِقُوا اللَّهَ ۖ كَم مِّن فِتْنَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ

हमें अल्लाह से मिलना है के बहोत सी छोटी जमाअतें बड़ी

فِتْنَةً كَثِيرَةً ۚ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٢٣٩﴾

जमाअत पर अल्लाह के हुक्म से ग़ालिब आ गई हैं। और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ हैं।

وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ

और जब वो जालूत और उस के लश्कर के मुक़बले के लिए निकले तो दुआ करने लगे के ऐ हमारे रब! तू हम पर सब्र

عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا

उडेल दे और हमारे क़दम जमा दे और तू हमारी नुस्तर फरमा

عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٤٠﴾ فَهَرَمَوْهُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ

काफिर कौम के खिलाफ। फिर उन्होंने ने उन को अल्लाह के हुक्म से शिकस्त दी।

وَقَتَلَ دَاوُدُ جَالُوتَ وَآتَاهُ اللَّهُ الْبُلْكَ

और दावूद (अलैहिस्सलाम) ने जालूत को क़त्ल किया और अल्लाह ने दावूद (अलैहिस्सलाम) को सलतनत और हिकमत

وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُ مِمَّا يَشَاءُ ۖ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ

दी और उन्हें इल्म दिया उन चीज़ों का जो अल्लाह ने चाहा। और अगर अल्लाह का इन्सानों में से एक को

النَّاسَ بَعْضُهُمْ بِبَعْضٍ ۖ لَّفَسَدَتِ الْأَرْضُ

दूसरे के ज़रिए दफ़ा करना न होता तो ज़मीन खराब हो जाती,

وَلَكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٢٤١﴾ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ

लेकिन अल्लाह तमाम जहान वालों पर फज़ल वाले हैं। ये अल्लाह की आयतें हैं जिन को

تَنْزِيلُهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۖ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٤٢﴾

हम आप पर हक़ के साथ तिलावत करते हैं। और यकीनन आप भेजे हुए पैगम्बरों में से हैं।

(۱۳)
وَقَدْ لَزُمَ
الْحَجَرُ الثَّالِثُ

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ م

ये ऐसे पैगम्बर हैं के उन में से बाज़ को हम ने बाज़ पर फज़ीलत दी।

مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللَّهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ وَآتَيْنَا

उन में से बाज़ वो हैं जिन से अल्लाह ने कलाम फरमाया और उन में से बाज़ के दरजात बुलन्द फरमाए। और हम ने

عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ

ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) को रोशन मोअजिज़ात दिए और हम ने उन की रूहुल कुदुस के ज़रिए ताईद की।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ

और अगर अल्लाह चाहता तो वो लोग बाहम क़िताल न करते जो उन के बाद हुए

مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ وَلَكِنْ اخْتَلَفُوا

इस के बाद के उन के पास मोअजिज़ात आए, लेकिन उन्होंने ने इखतिलाफ किया।

فَمِنْهُمْ مَّنْ آمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ

फिर उन में से कुछ वो हैं जो ईमान लाए और उन में से कुछ वो हैं जिन्होंने ने कुफ्र किया। और अगर अल्लाह चाहता

مَا اقْتَتَلُوا وَلَكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿۱۴﴾

तो वो आपस में क़िताल न करते। लेकिन अल्लाह करते हैं वही जो वो चाहते हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ مِّنْ قَبْلِ

ऐ ईमान वालो! खर्च करो उन चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दी इस से पेहले

أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ

के वो दिन आ जाए जिस में न खरीद व फरोख्त होगी और न दोस्ती और न सिफारिश।

وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿۱۵﴾ اللَّهُ لَا إِلَهَ

और काफिर लोग वही ज़ालिम हैं। अल्लाह के सिवा कोई

إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ

माबूद नहीं। वो ज़िन्दा है, सब को थामने वाला है। उस को न ऊँघ आती है और न नींद।

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَن ذَا الَّذِي

उस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। कौन है जो

يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيَّنَّ

सिफारिश कर सके उस के पास मगर उस के हुक्म से। अल्लाह खूब जानता है उन चीज़ों को

أَيَّدِيهِمْ وَمَا خَلَقَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ

जो उन के आगे और उन के पीछे हैं। और वो अल्लाह के इल्म में से किसी एक चीज़ का भी इहाता

مِّنْ عَلَيْهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۖ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ

नहीं कर सकते मगर जितना अल्लाह चाहे। अल्लाह की कुर्सी आसमानों और ज़मीन पर वसीअ

وَالْاَرْضَ ۖ وَلَا يَـُٔودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ

है। और आसमान और ज़मीन की हिफाज़त करना अल्लाह को थकाता नहीं है। और वो बरतर है,

الْعَظِيمُ ۝ لَا اِكْرَاهَ فِي الدِّينِ ۚ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ

अज़मत वाला है। दीन में ज़बर्दस्ती नहीं। यकीनन हिदायत गुमराही

مِّنَ الْغَيِّ ۚ فَمَن يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ

से अलग हो चुकी। फिर जो शैतान के साथ कुफ़ करेगा और अल्लाह पर ईमान लाएगा

فَقَدْ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۚ لَا انْفِصَامَ لَهَا

तो यकीनन उस ने बड़े मज़बूत हलके को मज़बूती से थाम लिया, जिस के लिए टूटना नहीं है।

وَاللّٰهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ اللّٰهُ وَلِىُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। अल्लाह ईमान वालों का कारसाज़ है।

يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

अल्लाह उन्हें तारीकियों से नूर की तरफ निकालते हैं। और जो काफिर हैं

اَوَّلٰىهُمْ الطَّاغُوتُ ۚ يُخْرِجُوْنَهُم مِّنَ النُّوْرِ

उन के दोस्त शैतान हैं। वो उन्हें नूर से जुलमतों की तरफ

اِلَى الظُّلُمٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا

निकालते हैं। वही लोग दोज़खी हैं। वो उस में

خٰلِدُوْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْ حٰجَّ اِبْرٰهِيْمَ

हमेशा रहेंगे। क्या आप ने देखा नहीं उस शख्स की तरफ जिस ने हुज्जतबाज़ी की इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से

فِى رَبِّهٖ اَنْ اَتٰهُ اللّٰهُ الْمَلَكُ ۚ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّىْ

अपने रब के बारे में इस वजह से के अल्लाह ने उसे सलतनत दी थी। जब के इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के

الَّذِيْ يُحْيِىْ وَيُمِيتُ ۚ قَالَ اَنَا اَحْيِىْ وَاُمِيتُ

मेरा रब वो है जो ज़िन्दगी देता है और मौत देता है। तो उस ने कहा के मैं भी ज़िन्दगी देता हूँ और मैं भी मौत देता

قَالَ إِبْرَاهِيمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ

हूँ। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यकीनन अल्लाह सूरज को मशरिफ़ से लाता है,

فَأْتِي بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ

तो तू उस को मगरिब की तरफ से ले आ, फिर वो काफिर मबहूत रह गया।

وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿۱۵۱﴾ أَوْ كَالَّذِي مَرَّ

और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देते। या उस शख्स (उज़ैर अलैहिस्सलाम) की तरह जो एक बस्ती पर गुज़रे इस

عَلَى قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّى

हाल में के वो अपनी छतों पर गिरी हुई थी। उस (उज़ैर अलैहिस्सलाम) ने कहा के कैसे इस बस्ती को उस के वीरान हो

يُحْيِي هَذِهِ اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةً

जाने के बाद अल्लाह ज़िन्दा करेंगे? फिर अल्लाह ने उस शख्स (उज़ैर अलैहिस्सलाम) को मौत दे दी

عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۖ قَالَ كَمْ لَبِثْتُ ۖ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا

सौ साल तक, फिर उन्हें ज़िन्दा कर के उठाया। अल्लाह ने पूछा के आप कितनी मुद्दत तक इस हाल में रहे? वो (उज़ैर अलैहिस्सलाम)

أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَلْ لَبِثْتُ مِائَةً عَامٍ فَانْظُرْ

केहने लगे के मैं एक दिन या एक दिन से भी कम रहा। अल्लाह ने फरमाया बल्के तुम रहे पूरे सौ साल, इस

إِلَى طَعَامِكَ وَ شَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۖ وَانْظُرْ

लिए आप अपने खाने की चीज़ों को और पीने की चीज़ों को देखिए के वो सड़ी भी नहीं। और आप देखिए अपने

إِلَى حِمَارِكَ ۖ وَلَنَجْعَلَ آيَةً لِلنَّاسِ وَانْظُرْ

दराज़गोश की तरफ। और इस लिए ताके हम आप को इन्सानों के लिए निशानी बनाएं। और आप देखिए

إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِرُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا

हड्डियों की तरफ के हम उन्हें कैसे जोड़ते हैं, फिर उन पर गोشت पेहनाते हैं।

فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ ۖ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

फिर जब उस (उज़ैर अलैहिस्सलाम) के सामने ये वाज़ेह हो गया तो वो केहने लगे के मैं ये यकीन रखता हूँ के अल्लाह

قَدِيرٌ ﴿۱۵۲﴾ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ ارْنِي كَيْفَ تُحْيِي

हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। और जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया ऐ मेरे रब! आप मुझे दिखाइए

الْمَوْتِ ۖ قَالَ أَوْلَمْ تُؤْمِنُ ۖ قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن

के आप कैसे मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे? तो अल्लाह ने पूछा क्या आप ईमान नहीं रखते? इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने

لَيَطْمِينَ قَلْبِي ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ

अर्ज किया क्यूं नहीं? लेकिन इस लिए ताके मेरा दिल मुतमइन हो जाए। तो अल्लाह ने फरमाया के फिर आप परिन्दों में से चार

فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ

परिन्दे लीजिए, फिर उन को अपनी तरफ मानूस कर लीजिए, फिर हर पहाड़ पर उन का एक एक हिस्सा

جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ

रख दीजिए, फिर आप उन को बुलाइए, तो वो आप के पास तेज़ चलते हुए आएं। और जान लो के

أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ

यकीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। उन लोगों का हाल जो अपने माल अल्लाह के

أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَتَتْ سَبْعَ

रास्ते में खर्च करते हैं एक दाने की तरह है जिस ने सात खोशे

سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ مِّائَةٌ حَبَّةٌ ۚ وَاللَّهُ يُضْعِفُ

उगाए, हर एक खोशे में सौ दाने हैं। और अल्लाह कई गुना करते हैं

لِمَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤﴾ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ

जिस के लिए चाहते हैं। और अल्लाह वुस्अत वाले, इल्म वाले हैं। जो लोग अपने माल को

أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يَتَّبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا

अल्लाह के रास्ते में खर्च करते हैं, फिर अपने खर्च करने के पीछे वो नहीं लाते

مَّمَّا وَلَا أَذَى ۚ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ

एहसान जतलाने को और न ईज़ा पहुँचाने को, तो उन के लिए उन का अज़्र है उन के रब के पास।

وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٥﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ

और न उन पर खौफ होगा और न वो गमगीन होंगे। भली बात केहना

وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا أَذَى ۚ

और मुआफ कर देना बेहतर है ऐसे सद्के से जिस के पीछे ईज़ा पहुँचाना हो।

وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ ﴿٢٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا

और अल्लाह बेनियाज़ है, हिल्म वाला है। ऐ ईमान वालो! तुम अपने सद्कात एहसान

صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَى ۚ كَالَّذِي يُنْفِقُ

जतला कर के और ईज़ा पहुँचा कर बातिल मत करो, उस शख्स की तरह जो अपना माल

۲ (अनु०)

مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ

खर्च करता है लोगों के दिखावे के लिए और जो ईमान नहीं रखता अल्लाह पर और आखिरी दिन पर।

فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ

फिर उस शख्स का हाल उस चटान की तरह है जिस पर मिट्टी हो, फिर उसे तेज़

وَأَيْلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا ۖ لَا يَقْدِرُونَ عَلَى شَيْءٍ

बारिश पहुँचे, फिर उसे साफ कर छोड़े। वो अपनी कमाई में से किसी चीज़ पर क़ादिर

مِمَّا كَسَبُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿۲۴۲﴾

नहीं होंगे। और अल्लाह काफिर लोगों को हिदायत नहीं देते।

وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتٍ

और उन लोगों का हाल जो अपने मालों को खर्च करते हैं अल्लाह की रज़ा तलब

اللَّهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ أَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ

करने के लिए और अपनी तरफ से अमली सुबूत पेश करते हुए उस बाग़ की तरह है जो टीले पर हो,

أَصَابَهَا وَابِلٌ فَاتَتْ أَكْلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَإِن

जिस को ज़ोर की बारिश पहुँची हो, फिर वो अपने फल दुगने पैदा करता हो। फिर अगर

لَمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطُلُ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿۲۴۳﴾

उसे ज़्यादा बारिश न पहुँचे, तो फिर थोड़ी बारिश भी काफी हो जाए। और अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं।

أَيُّودٌ أَحَدُكُمْ أَن تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّنْ نَّحِيلِ

क्या तुम में से कोई एक चाहेगा ये के उस के लिए खजूर और अंगूर का एक

وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ لَهُ فِيهَا

बाग़ हो, जिस के नीचे से नेहरें बेहती हों, उस के लिए उस बाग़ में

مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّتٌ

तमाम फल हों और उसे बुढ़ापा पहुँच चुका हो और उस की कमज़ोर

ضُعْفَاءٌ ۖ فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ۖ

औलाद हो। फिर उस बाग़ पर एक बगौला आए जिस में आग हो, फिर वो बाग़ जल जाए।

كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿۲۴۴﴾

इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें बयान करते हैं ताके तुम गौर व फ़िक्र करो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفَقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ

ऐ ईमान वालो! तुम खर्च करो उन उम्दा चीजों में से जो तुम ने कमाई हैं

وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَلَا تَيَمَّمُوا

और उन चीजों में से जो हम ने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाली हैं। और तुम उस में से

الْحَبِثَ مِنْهُ تَنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِأَخِيذِهِ إِلَّا

बुरी चीज़ का क़स्द मत करो खर्च करने के लिए और खुद तुम भी उस को नहीं लोगे मगर

أَنْ تَغْمِضُوا فِيهِ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝

ये के तुम उस में चश्मपोशी करो। और जान लो के अल्लाह बेनियाज़ है, काबिले तारीफ है।

الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِالْفَحْشَاءِ ۚ

शैतान तुम्हें फ़क़र से डराता है और तुम्हें बेहयाई का हुक्म देता है।

وَاللَّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِنْهُ وَفَضْلًا ۗ وَاللَّهُ

और अल्लाह अपनी तरफ से मग़फ़िरत और फज़ल का तुम से वादा करता है। और अल्लाह

وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ

वुस्अत वाले, इल्म वाले हैं। अल्लाह हिकमत देते हैं जिसे चाहते हैं। और जिसे

يُؤْتِ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ

हिकमत दी गई, उसे बड़ी भलाई दी गई।

وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُوا الْأَلْبَابِ ۚ وَمَا أَنْفَقْتُمْ

और नसीहत हासिल नहीं करते मगर अक्ल वाले। और जो खर्च

مِنْ تَفَقَةٍ أَوْ نَذْرَةٍ مِنْ نَذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ

तुम करो या जो नज़र तुम मानो तो यकीनन अल्लाह

يَعْلَمُهُ ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝ إِنَّ تَبَدُّوا

उसे जानते हैं। और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं होगा। अगर तुम सद्क़ात

الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَإِنْ تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا

अलानिया दो तो ये अच्छी बात है। और अगर तुम उन को छुपा कर फुकरा को

الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِنْ

दो तो ये तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है। और अल्लाह तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर

سَيِّئَاتِكُمْ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١٤٥﴾ لَيْسَ कर देगा। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है। आप के
عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۖ ज़िम्मे नहीं है उन को हिदायत देना, लेकिन अल्लाह हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं।
وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَا نَنْفُسُكُمْ ۖ وَمَا تُنْفِقُونَ और जो माल तुम खर्च करो तो वो तुम्हारे अपने ही लिए है। और तुम खर्च नहीं करते हो
إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ ۖ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ मगर अल्लाह की रज़ा तलब करने के लिए। और जो माल खर्च करोगे
يُؤَفِّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿١٤٦﴾ لِلْفُقَرَاءِ तो वो तुम्हें पूरा पूरा दिया जाएगा और तुम से कमी नहीं की जाएगी। (सदक़ात) उन फ़ुकरा के लिए हैं
الَّذِينَ أُحْصِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ जो अल्लाह के रास्ते में घिरे रहते हैं, जो ज़मीन में सफर करने की
ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ يُحْسِبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ ताक़त नहीं रखते, नावाक़िफ़ आदमी उन को न मांगने की वजह से मालदार
مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيمَاهُمْ ۚ لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ समझता है। आप उन के चेहरे से उन को पहचान लोगे। वो लोगों से इसरार से सवाल
إِحْقَافًا ۖ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿١٤٧﴾ नहीं करते। और जो माल तुम खर्च करोगे तो यकीनन अल्लाह उसे जानते हैं।
الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا जो लोग अपने मालों को खर्च करते हैं रात में और दिन में चुपके
وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ وَلَا خَوْفٌ और अलानिया तो उन के लिए उन के रब के पास उन का अज़्र है। और उन पर न खौफ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٤٨﴾ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ होगा और न वो ग़मगीन होंगे। वो लोग जो सूद
الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ खाते हैं वो (क़ब्रों से) नहीं उठेंगे मगर ऐसा जैसा के उठता है वो शख्स जिसे शैतान

الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ ۖ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا

ने छू कर के खबती बना दिया हो। ये इस वजह से के उन्होंने ने कहा के

إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا ۚ وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا ۚ

बैअ तो सूद ही की तरह है। हालांके अल्लाह ने बैअ को हलाल किया है और सूद को हराम करार दिया है।

فَمَنْ جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَانْتَهَى فَلَهُ

फिर जिस शख्स के पास उस के रब की तरफ से नसीहत आए, फिर वो रुक जाए तो उस के लिए वो है

مَا سَلَفَ ۚ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ

जो पेहले हो चुका है। और उस का मुआमला अल्लाह के सुपुर्द है। और जो दोबारा ऐसा करेगा तो ये

أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٢٥﴾ يَحْقِ اللَّهُ الرِّبَا

लोग दोज़खी हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे। अल्लाह सूद को मिटाते हैं

وَيُزِي الصَّدَقَاتِ ۖ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ﴿١٢٦﴾

और सद्कात को बढ़ाते हैं। और अल्लाह किसी गुनहगार काफिर से महब्बत नहीं करते।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ

यकीनन वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और नमाज़ काइम की

وَاتُوا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ وَلَا خَوْفٌ

और ज़कात दी, उन के लिए उन का अज़्र है उन के रब के पास। और न उन पर खौफ

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٢٧﴾ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

होगा और न वो ग़मगीन होंगे। ऐ ईमान वालो!

اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُّوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنْتُمْ

अल्लाह से डरो और छोड़ दो उस सूद को जो बाकी रह गया है अगर तुम

مُؤْمِنِينَ ﴿١٢٨﴾ فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ

ईमान वाले हो। फिर अगर ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हें अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से

مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَإِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوسُ أَمْوَالِكُمْ ۖ

ऐलाने जंग है। और अगर तुम तौबा करो तो तुम्हारे लिए तुम्हारे अस्ल माल हैं।

لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ ﴿١٢٩﴾ وَإِنْ كَانَ ذُو

न तुम जुल्म करोगे और न तुम पर जुल्म किया जाएगा। और अगर वो कर्ज़ लेने वाला

عُسْرَةً فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۖ وَأَنْ تَصَدَّقُوا خَيْرٌ

तंगदस्त हो तो उसे वुस्अत हासिल होने तक मोहलत दी जाए। और ये के मुआफ कर दो तो ये तुम्हारे लिए

لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿۸﴾ وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ

ज़्यादा बेहतर है अगर तुम जानते हो। और तुम डरो उस दिन से जिस दिन में तुम

فِيهِ إِلَى اللَّهِ ۚ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ

अल्लाह की तरफ लौटाए जाओगे। फिर हर शख्स को पूरा पूरा बदला दिया जाएगा उन आमाल का जो उस ने किए,

وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿۹﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा। ऐ ईमान वालो!

اِذَا تَدٰۤاَيْنْتُمْ بِدِيْنٍ اِلَىٰ اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ۚ

जब तुम आपस में कर्ज़ का लेन देन करो किसी वक़्ते मुक़रर तक के लिए, तो उस को लिख लिया करो।

وَلْيَكْتُبْ بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ ۚ وَلَا يَأْبَ

और चाहिए के तुम्हारे दरमियान लिखने वाला इन्साफ से लिखे। और लिखने वाला इन्कार

كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُلْلِلِ

न करे लिखने से जैसा के अल्लाह ने उस को इल्म दिया है, तो उसे चाहिए के लिखे। और लिखवाए वो शख्स

الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلِيَتَّقِ اللّٰهُ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسَ

जिस के ज़िम्मे हक़ है और चाहिए के वो अल्लाह से डरे जो उस का रब है और वो उस में से कुछ भी कम

مِّنْهُ شَيْئًا ۚ فَاِنْ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا

न करे। फिर अगर वो शख्स जिस के ज़िम्मे हक़ है वो बेवकूफ हो

اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّبْلِلَ هُوَ فَلْيُكْلِلْ

या कमज़ोर हो या लिखवा न सकता हो तो लिखवाए

وَلِيْهِ بِالْعَدْلِ ۚ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيدَيْنِ

उस का वली इन्साफ से। और तुम अपने मर्दों में से दो गवाह

مِّنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّاِمْرَاَتَيْنِ

बना लो। फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें होनी

مِّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدَاهُمَا

चाहिं उन गवाहों में से जिन को तुम पसन्द करते हो, इस वजह से के उन दो औरतों में से एक भूल

فَتَذَكَّرَ أَحَدُهَا الْأُخْرَىٰ ۖ وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَاءُ

जाए तो उन में से एक दूसरी को याद दिलाए। और गवाह इन्कार न करें

إِذَا مَا دُعُوا ۖ وَلَا تَسْمَعُوا أَنْ تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا

जब उन्हें बुलाया जाए। और न उकताओ इस से के तुम उस को लिखो, चाहे छोटी रकम हो या बड़ी,

إِلَىٰ أَجَلِهِ ۖ ذَلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ

उस की मुक़ररा मुद्दत तक के लिए। ये ज़्यादा इन्साफ वाला है अल्लाह के नज़दीक और गवाही को ज़्यादा सीधा रखने वाला है

وَ أَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً

और इस के ज़्यादा करीब है के तुम शक न करो, मगर ये के वो मौजूद (नक़द, कैश)

حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ

तिजारत हो जिस का तुम आपस में लेन देन करते हो, तो तुम पर कोई गुनाह

جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا ۖ وَأَشْهِدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ ۝

नहीं है के तुम उस को न लिखो। और तुम गवाह बना लो जब तुम आपस में खरीद व फरोख्त करो।

وَلَا يُضَارَّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ وَإِنْ تَفْعَلُوا

और लिखने वाले को और गवाह को ज़रर न पहुँचाया जाए। और अगर तुम ऐसा करोगे

فَإِنَّهُ فَسُوقٌ بِكُمْ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَيَعْلَمُ اللَّهُ

तो ये तुम्हारे वास्ते गुनाह है। और अल्लाह से डरो। और अल्लाह तुम्हें तालीम देते हैं।

وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ

और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं। और अगर तुम सफर पर हो

وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهْنِ مَقْبُوضَةً ۖ فَإِنْ أَمِنَ

और किसी लिखने वाले को न पाओ, तो फिर रहन है जिस पर कब्ज़ा कर लिया जाए। फिर अगर तुम में से एक दूसरे का

بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي أُؤْتِمِنَ أَمَانَتَهُ

ऐतेबार करे, तो चाहिए के अमानत अदा कर दे वो शख्स जिस के पास अमानत रखी गई

وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ ۖ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۖ وَمَنْ يَكْتُمْهَا

और चाहिए के वो अल्लाह से डरे जो उस का रब है। और तुम गवाही को मत छुपाओ। और जो उस को छुपाएगा

فَإِنَّهُ إِثْمٌ قَلْبُهُ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝

तो यकीनन उस का दिल गुनहगार है। और अल्लाह तुम्हारे आमाल खूब जानते हैं।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَاِنْ تُبْدُوْا

अल्लाह की ममलूक हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं। और अगर ज़ाहिर करो

مَا فِيْ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تَخْفَوْهُ يَحْسِبْكُمْ بِهٖ اللّٰهُ ۚ

उन बातों को जो तुम्हारे दिलों में हैं या तुम उन को छुपाओ तब भी अल्लाह तुम से उन का मुहासबा करेगा।

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاءُ ۚ وَاللّٰهُ

फिर बख्श देगा जिस के लिए चाहेगा और अज़ाब देगा जिसे चाहेगा। और अल्लाह

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝۱۸۷ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَا اُنْزِلَ

हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। रसूल ईमान ले आए उस पर जो उन की तरफ उतारा गया

اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهِ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۚ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ

उन के रब की तरफ से और ईमान ले आए ईमान वाले भी। सब के सब ईमान ले आए अल्लाह पर

وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۚ لَا نَفَرَقَ بَيْنَ اَحَدٍ

और उस के फरिश्तों और उस की किताबों और उस के पैगम्बरों पर। (वो केहते हैं के) उस के पैगम्बरों में से किसी

مِّنْ رُّسُلِهٖ ۚ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۚ غُفْرٰنَكَ

के दरमियान हम तफरीक नहीं करते। और वो केहते हैं के हम ने सुना और हम ने खुशी से मान लिया।

رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝۱۸۸ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا

ऐ हमारे रब! तू हमारी मग़फ़िरत कर दे और तेरी ही तरफ लौटना है। अल्लाह किसी शख्स को मुकल्लफ नहीं बनाते मगर

اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ عَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۚ

उस की वुसत के मुताबिक। उस के लिए वो आमाल हैं जो उस ने किए और उस के ज़िम्मे वो गुनाह पड़ेंगे जो उस ने

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَسِيْنَا اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا

कमाए। ऐ हमारे रब! तू हमारा मुआखज़ा मत कर अगर हम भूल जाएं या हम चूक जाएं। ऐ हमारे रब!

وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلٰى الَّذِيْنَ

और तू हम पर न लाद बोझ जैसा के तू ने उस को लादा उन लोगों पर जो

مِّنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْنَا مَا لَا طٰقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ

हम से पेहले थे। ऐ हमारे रब! और तू हम पर न लाद उस को जिस की हम में ताक़त नहीं।

وَاعْفُ عَنَّا ۚ وَارْحَمْنَا ۚ اَنْتَ مَوْلٰنَا

और तू हमें मुआफ़ कर दे। और हमें बख्श दे। और हम पर रहम फरमा। तू हमारा मौला है,

فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿۸۸﴾

तू काफिर कौम के खिलाफ हमारी नुसरत फरमा।

رُكُوعًا ۲۰

(۳) سُورَةُ الْعَمْرَانِ كَثِيرًا (۸۹)

آيَاتُهَا ۲۰۰

और २० रूकूअ हैं

सूरह आले इमरान मदीना में नाज़िल हुई

उस में २०० आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الَمْ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ﴿۸۹﴾ نَزَّلَ

अलिफ लाम मीम। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वो ज़िन्दा है, सब को थामने वाला है। उस ने आप पर

عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ

ये बरहक़ किताब उतारी जो सच्चा बतलाने वाली है उन किताबों को जो इस से पेहले थीं,

وَأَنْزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ﴿۹۰﴾ مِنْ قَبْلُ هُدًى

और उस ने तौरात और इन्जील इन्सानों की हिदायत के लिए इस से पेहले उतारी। और उसी ने हक़ और बातिल

لِّلنَّاسِ وَأَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ﴿۹۱﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ

के दरमियान फैसला करने वाली किताब (कुरआन) नाज़िल की। यकीनन वो लोग जिन्होंने ने कुफ़्र किया अल्लाह की

اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ﴿۹۲﴾

आयात के साथ, उन के लिए सख्त अज़ाब है। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, इन्तिकाम लेने वाला है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا

यकीनन अल्लाह पर कोई चीज़ मखफ़ी नहीं है, न ज़मीन में और न

فِي السَّمَاءِ ۚ هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ

आसमान में। वही तुम्हारी सूरतें बनाता है बच्चेदानियों में जिस तरह

يَشَاءُ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿۹۳﴾ هُوَ

वो चाहता है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वो ज़बर्दस्त है, हिकमत वाला है। उसी ने

الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ

आप पर ये किताब उतारी, इस में से कुछ आयतें मुहकम (इश्तिबाहे मुराद से महफूज़) हैं,

مِنْ أَمْرِ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَبِهَاتٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ

वही अस्ल किताब हैं, और दूसरी आयतें मुतशाबिहात हैं। फिर अलबत्ता वो लोग

وَالَّذِينَ كَفَرُوا
وَالَّذِينَ كَفَرُوا

فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءً

जिन के दिलों में कजी है वो उस में से मुतशाबिहात के पीछे पड़ते हैं फितनातलबी

الْفِتْنَةَ وَابْتِغَاءً تَأْوِيلَهُ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ

की गर्ज से और उन का मतलब मालूम करने के लिए। हालांकि उन का मतलब सिवाए अल्लाह के कोई

وَالَّذِينَ كَفَرُوا
وَالَّذِينَ كَفَرُوا

إِلَّا اللَّهُ ۚ وَالرَّسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ 'إِنَّمَا بِهِ ۚ كُلٌّ

नहीं जानता। और जो इल्म (दीन) में मज़बूत हैं वो केहते हैं के हम सब पर ईमान ले आए, ये सब की सब

مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

आयतें हमारे रब की तरफ से हैं। और नसीहत हासिल नहीं करते मगर अक्ल वाले।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ

ऐ हमारे रब! तू हमारे दिलों को टेढ़ा मत कर इस के बाद के तू ने हमें हिदायत दी और तू

لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝

हमारे लिए अपनी तरफ से रहमत अता फरमा। यकीनन तू बहोत अता करने वाला है।

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ

ऐ हमारे रब! यकीनन तू इन्सानों को जमा करने वाला है ऐसे दिन में जिस में कोई शक नहीं।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا
وَالَّذِينَ كَفَرُوا

إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْوَعْدَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا

यकीनन अल्लाह वादे के खिलाफ नहीं करेंगे। यकीनन वो लोग जिन्होंने ने कुफ्र किया

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ

बिलकुल उन के काम नहीं आएंगे न उन के माल और न उन की औलाद अल्लाह के मुकाबले में

شَيْئًا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ۚ كَذَّابٍ ۝

ज़रा भी। और यही लोग आग का ईंधन हैं। उन का हाल आले फिरऔन के

فِرْعَوْنَ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا

हाल की तरह है और उन लोगों के हाल की तरह है जो उन से पेहले थे, जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया।

فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

फिर अल्लाह ने उन को उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया। और अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं।

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ وَ تُحْشَرُونَ إِلَىٰ

आप काफिरों से फरमा दीजिए के अन्करीब तुम मगलूब किए जाओगे और जहन्नम की तरफ तुम इकट्ठे

جَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ الْبِهَادُ ﴿۱۱﴾ قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ

किए जाओगे। और वो बुरा ठिकाना है। यकीनन तुम्हारे लिए दो लश्करों में

فِي فِئَتَيْنِ التَّقَاتِ ۚ فِئَةٌ تَقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

बहोत बड़ा मोअजिज़ा था जो बाहम मुक़ाबिल हुए थे। एक लश्कर तो क़िताल कर रहा था अल्लाह के रास्ते में

وَ أُخْرَىٰ كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُمْ مِّثْلِهِمْ رَأَى الْعَيْنُ ۚ

और दूसरा लश्कर काफ़िर था। ये काफ़िर लश्कर उन मुसलमानों को अपने से दुगना देख रहा था खुली आँखों से।

وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصَرِهِ مَن يَشَاءُ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً

और अल्लाह अपनी नुसरत से मदद करते हैं जिस की चाहते हैं। यकीनन इस में इब्रत है

لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿۱۲﴾ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ

आँखों वालों के लिए। इन्सानों के लिए मुज़य्यन की गई मरगूब चीज़ों की महब्वत

مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ

यानी औरतें और बेटे और लगाए हुए

مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ

सौने और चाँदी और निशान लगाए हुए घोड़े

وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۚ ذَلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ

और चौपाए और खेती। ये दुन्यवी ज़िन्दगी का सामान है।

وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْمَبَإِ ﴿۱۳﴾ قُلْ أَوْفَيْتُكُمْ

और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। आप फरमा दीजिए क्या मैं तुम्हें

بِخَيْرٍ مِّنْ ذَلِكَ ۚ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ

ख़बर दूँ इस से बेहतर चीज़ की? उन लोगों के लिए जो मुत्तकी हैं (उन के लिए) अपने रब के पास

جَنَّتْ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا

जन्नतें होंगी जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, वो उन में हमेशा रहेंगे,

وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ

और साफ सुथरी बीवियाँ होंगी और अल्लाह की तरफ से खुशनूदी मिलेगी। और अल्लाह

بَصِيرٌ ۖ بِالْعِبَادِ ﴿۱۴﴾ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّا أَمَّا

बन्दों को देख रहे हैं। वो लोग जो कहते हैं के ऐ हमारे रब! यकीनन हम ईमान ले आए

فَاعْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ الصَّبِرِينَ

तो हमारे लिए हमारे गुनाहों की मग़फ़िरत कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा ले। जो सब्र करने वाले

وَالصّٰدِقِينَ وَالْقٰنِتِينَ وَالْمُنْفِقِينَ وَالْمُسْتَغْفِرِينَ

और सच बोलने वाले और फरमांबरदारी करने वाले और खर्च करने वाले और सहर के वक़्त मग़फ़िरत तलब

بِالْأَسْحَارِ ۝ شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۙ

करने वाले हैं। अल्लाह गवाही देते हैं इस बात की के उस के सिवा कोई माबूद नहीं

وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَأُولُو الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ ۚ لَا إِلَهَ

और फरिश्ते भी गवाही देते हैं और इल्म वाले भी गवाही देते हैं, (इस हाल में के) अल्लाह इन्साफ के

إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۚ

۱६

साथ काइम हैं। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। यकीनन दीन तो अल्लाह के नज़दीक

وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ إِلَّا مِنْۢ بَعْدِ

सिर्फ इस्लाम ही है। और इख़तिलाफ नहीं किया उन लोगों ने जिन को किताब दी गई मगर इस के बाद के

مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَعْيًا ۚ بَيْنَهُمْ ۖ وَ مِنْ يَّكْفُرُ

उन के पास इल्म आया आपस की ज़िद की वजह से। और जो भी अल्लाह की आयतों

بِآيٰتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

के साथ कुफ़्र करेगा तो यकीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाले हैं।

فَإِنْ حَآجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۖ

फिर अगर वो आप से हुज़तबाज़ी करें तो आप फरमा दीजिए के मैं ने तो अपना चेहरा अल्लाह के ताबेअ कर लिया है और उन्होंने ने भी जिन्होंने ने

وَقُلْ لِلَّذِينَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْأُمِّيِّنَ ؕ أَسْلَمْتُ

मेरा इत्तिबा किया। और आप एहले किताब से और अनपढ़ लोगों (मुशरिकीने अरब) से फरमा दीजिए के क्या तुम इस्लाम लाते हो?

فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا

फिर अगर वो इस्लाम ले आएंग तो वो हिदायतयाफ़ता होंगे। और अगर वो मुंह मोड़ें तो आप के ज़िम्मे

عَلَيْكَ الْبَلْغُ ۖ وَاللَّهُ بِأَعْيُنِنَا ۖ وَالْعَبَادِ ۝ إِنَّ

۱७

सिर्फ पहोंचा देना है। और अल्लाह बन्दों को देख रहे हैं। यकीनन

الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيٰتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيْنَ

वो लोग जो कुफ़्र करते हैं अल्लाह की आयात के साथ और अम्बिया को नाहक

بَغَيْرِ حَقٍّ ۖ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ

कल्ल करते हैं और उन को भी कल्ल करते हैं जो लोगों में से इन्साफ

مِنَ النَّاسِ ۖ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿١١﴾ أُولَٰئِكَ

का हुक्म करते हैं, तो आप उन को दर्दनाक अज़ाब की खुशखबरी सुना दीजिए। ये वो लोग हैं

الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ

जिन के आमाल ज़ायेअ हो गए दुन्या और आखिरत में

وَمَا لَهُمْ مِّنْ نَّاصِرِينَ ﴿١٢﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا

और उन के लिए कोई मददगार नहीं होगा। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जिन को

مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَى كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ

किताब का एक हिस्सा दिया गया, उन को बुलाया जाता है अल्लाह की किताब की तरफ ताके उन के दरमियान वो फैसला करे,

ثُمَّ يَتَوَلَّى فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿١٣﴾

फिर उन में से एक जमाअत ऐराज़ करते हुए ख़गरदानी करती है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا

ये इस वजह से के उन्होंने ने कहा के हमें आग हरगिज़ नहीं छुएगी मगर चन्द गिने

مَّعْدُودَاتٍ ۖ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِمْ مَا كَانُوا

चुने दिन। और उन को धोके में डाल रखा है उन के दीन के बारे में उन चीज़ों ने

يَفْتَرُونَ ﴿١٤﴾ فَكَيْفَ إِذَا جُمِعْتُمْ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ

जिन को वो खुद घड़ते हैं। फिर क्या हाल होगा जब हम उन को जमा करेंगे ऐसे दिन में जिस में

فِيهِ ۖ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا

शक नहीं। और हर शख्स को पूरा पूरा बदला दिया जाएगा उस अमल का जो उस ने किया और उन पर जुल्म

يُظْلَمُونَ ﴿١٥﴾ قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ

नहीं किया जाएगा। आप फरमा दीजिए के ऐ अल्लाह! सलतनत के मालिक! तू सलतनत देता है

مَّن تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّن تَشَاءُ ۚ وَتُعِزُّ

जिसे चाहता है और सलतनत छीनता है जिस से चाहता है। और तू इज़्ज़त देता है

مَّن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَّن تَشَاءُ ۖ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۚ إِنَّكَ

जिसे चाहता है और तू ज़िल्लत देता है जिसे चाहता है। तेरे ही हाथ में भलाई है। यकीनन तू

	عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٧﴾ تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ हर चीज़ पर कुदरत वाला है। तू रात को दिन में दाखिल करता है
	و تُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَ تُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ और दिन को रात में दाखिल करता है। और ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है
	و تُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۚ وَ تَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ और मुर्दे को ज़िन्दा से निकालता है। और तू जिसे चाहता है, बेहिसाब
	بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٨﴾ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ रोज़ी देता है। ईमान वाले काफ़िरो को दोस्त
	أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ न बनाएं ईमान वालों को छोड़ कर। और जो ऐसा करेगा,
	فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ उस का अल्लाह से किसी भी चीज़ का तअल्लुक नहीं है मगर ये के तुम कुफ़ार से किसी तरह
	تُقَهَّ ۖ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۖ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٢٩﴾ बचना चाहो। और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से डराते हैं। और अल्लाह ही की तरफ लौटना है।
	قُلْ إِنْ تَحْفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يَعْلَمُهُ आप फरमा दीजिए अगर तुम छुपाओ उन चीज़ों को जो तुम्हारे सीनों में हैं या तुम उन को ज़ाहिर करो, तब भी अल्लाह
	اللَّهُ ۖ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ उन्हें जानते हैं। और अल्लाह जानते हैं उन तमाम चीज़ों को जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।
	وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٠﴾ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। जिस दिन हर शख्स उन आमाल को
	نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُحْضَرًا ۖ وَمَا عَمِلَتْ जो उस ने खैर में से किए हाज़िर पाएगा और अपने किए हुए बुरे आमाल को भी
	مِنْ سُوءٍ ۖ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَ بَيْنَهُ أَمَدًا بَعِيدًا ۖ हाज़िर पाएगा, तो वो चाहेगा के काश के उस के दरमियान और उस दिन के दरमियान बड़ी दूर की मसाफत होती।
	وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۖ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٣١﴾ और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से डराते हैं। और अल्लाह बन्दों पर बहोत महरबान हैं।

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ

आप फरमा दीजिए अगर तुम अल्लाह से महबूब रखते हो, तो मेरा इत्तिबा करो, तो अल्लाह तुम्हें महबूब बना लेगा

وَيَغْفِرَ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣﴾

और तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह बख्श देगा। और अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ

आप फरमा दीजिए तुम अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर वो मुंह फेर लें तो यकीनन अल्लाह

لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٤﴾ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ

काफिरों से महबूब नहीं करते। यकीनन अल्लाह ने मुन्तखब किया आदम (अलैहिस्सलाम) को

وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٥﴾

और नूह (अलैहिस्सलाम) और आले इब्राहीम और आले इमरान को तमाम जहानों (जहान वालों) पर।

ذُرِّيَّتَهُ ۖ بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٦﴾

जो एक दूसरे की औलाद हैं। और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं।

إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ

जब के इमरान की बीवी ने कहा ऐ मेरे रब! मैं ने आप की नज़र कर दिया

مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ

आज़ाद बना कर इस बच्चे को जो मेरे पेट में है, तो आप इसे मेरी तरफ से कबूल कर लीजिए। यकीनन आप

السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٧﴾ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ

सुनने वाले, इल्म वाले हैं। फिर जब इमरान की बीवी ने उस को जना तो केहने लगी ऐ मेरे रब!

إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعْتَ وَلَئِنْ

मैं ने तो इस को लड़की जना। हालांके अल्लाह खूब जानता है उस को जो उस ने जना। और

الدَّكْرُ كَانَ أَثْنَىٰ ۖ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ

लड़का इस लड़की के बराबर नहीं हो सकता। और मैं ने उस का नाम मरयम रखा

وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتُهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٨﴾

और मैं उसे और उस की औलाद को शैतान मरदूद से तेरी पनाह में देती हूँ।

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ ۖ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا

फिर उन के रब ने उन को कबूल किया अच्छा कबूल करना और मरयम को बढ़ाया अच्छी तरह

حَسَنًا ۚ وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۖ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا

बढ़ाना। और मरयम (अलैहस्सलाम) की कफालत की ज़करीया (अलैहस्सलाम) ने। जब कभी मरयम (अलैहस्सलाम) के पास दाखिल

الْبُحْرَابِ ۖ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يَمْرِئُمِ اِنِّی

होते ज़करीया (अलैहस्सलाम) मेहराब में, तो मरयम (अलैहस्सलाम) के पास खाने की चीज़ें पाते। पूछते ऐ मरयम!

لَكَ هَذَا ۖ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ اِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ

कहां से तेरे पास ये चीज़ें आई? तो मरयम (अलैहस्सलाम) केहती के ये अल्लाह की तरफ से है। यकीनन अल्लाह बेहिसाब

مَنْ يَشَاءُ ۖ يَغْيِرْ حِسَابِ ۖ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا

रोज़ी देते हैं जिसे चाहते हैं। वहीं पर ज़करीया (अलैहस्सलाम) ने अपने रब से

رَبِّهِ ۖ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً

दुआ की। केहने लगे ऐ मेरे रब! तू मुझे अपनी तरफ से पाकीज़ा औलाद अता

طَيِّبَةً ۖ اِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۖ فَادَّعَاهُ الْمَلَكُ

फरमा। यकीनन तू दुआ को सुनने वाला है। तो उन को फरिश्तों ने आवाज़ दी

وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْبُحْرَابِ ۖ اَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ

जब के वो खड़े हुए मेहराब में नमाज़ पढ़ रहे थे के अल्लाह आप को बशारत देते हैं

بِخَيْرٍ مُّصَدِّقًا ۚ بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللَّهِ ۚ وَسَيِّدًا ۚ وَحَصُورًا

यहया की जो तसदीक करने वाले होंगे अल्लाह के कलिमे की और सय्यद होंगे और औरतों से बेरग़बत पाकदामन

وَنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۖ قَالَ رَبِّ اِنِّیْ یَكُوْنُ

होंगे और नबी होंगे, नेक लोगों में से होंगे। ज़करीया (अलैहस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब!

لِيْ عِلْمٌ ۚ وَقَدْ بَلَغَنِی الْكِبَرُ ۚ وَاُمْرَاتِیْ عَاقِرٌ ۖ

मेरे लिए लड़का कहां से होगा? हालांके मुझे बुढ़ापा पहोंच चुका है और मेरी बीवी बांझ है।

قَالَ كَذٰلِكَ اَللّٰهُ یَفْعَلُ ۚ مَا یَشَاءُ ۖ قَالَ رَبِّ

अल्लाह ने फरमाया इसी तरह अल्लाह करते हैं जो चाहते हैं। ज़करीया (अलैहस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब!

اَجْعَلْ لِّیْ اٰیَةً ۖ قَالَ اٰیَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

मेरे लिए कोई निशानी मुक़रर कर दीजिए। अल्लाह ने फरमाया के तुम्हारी निशानी ये है के तुम इन्सानों से कलाम नहीं

ثَلَاثَةَ اَیَّامٍ اِلَّا رَمَزًا ۚ وَاذْكُرْ رَبَّكَ كَثِیْرًا ۚ وَ

करोगे तीन दिन तक मगर इशारे से। और आप अपने रब को बहोत ज़्यादा याद कीजिए और

سَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۝ وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ

सुबह व शाम तस्बीह कीजिए। और जब के फरिश्तों ने कहा

يَمْرَيْمُ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفَاكِ

ऐ मरयम! यकीनन अल्लाह ने तुझ को मुन्तखब किया है और तुझ को पाकबाज़ बनाया है और तुझ को

عَلَى نِسَاءِ الْعَالَمِينَ ۝ يَمْرَيْمُ اقْنِطِي لِرَبِّكِ

तमाम जहान की औरतों पर मुन्तखब किया है। ऐ मरयम! तू अपने रब की इबादत कर

وَاسْجُدِي وَارْكَعِي مَعَ الرَّاكِعِينَ ۝ ذَلِكَ

और सजदा कर और रूकूअ करने वालों के साथ रूकूअ करा। ये

مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۖ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ

गैब की खबरों में से है, हम इस को आप की तरफ वही करते हैं। और आप उन के पास मौजूद नहीं थे

إِذْ يُنْفُونَ أَقْلَامَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۖ

जब वो अपने कलम (नेहर में) डाल रहे थे के कौन मरयम की कफालत करेगा?

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۝ إِذْ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ

और आप उन के पास नहीं थे जब वो झगड़ रहे थे। जब फरिश्तों ने कहा

يَمْرَيْمُ إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِنْهُ ۖ فَ

ऐ मरयम! यकीनन अल्लाह तुम को बशारत देते हैं अपनी तरफ से कलिमे की

اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا

जिस का नाम मसीह ईसा इब्ने मरयम होगा, जो वजाहत वाले होंगे

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝ وَيُكَلِّمُ

दुन्या और आखिरत में और मुक़र्रबीन में से होंगे। और वो इन्सानों से

النَّاسِ فِي الْمَهْدِ وَ كَهْلًا ۖ وَمِنَ الصَّالِحِينَ ۝

कलाम करेंगे गेहवारे में और बड़े हो कर के और सुलहा में से होंगे।

قَالَتْ رَبِّ ائْنِي يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ

मरयम (अलैहस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे औलाद कहां से होगी, हालांकि मुझे किसी इन्सान ने छुवा नहीं है।

قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۖ إِذَا قَضَىٰ

तो अल्लाह ने फरमाया इसी तरह अल्लाह पैदा करते हैं जो चाहते हैं। जब वो किसी काम

أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿۷۷﴾ وَيُعَلِّمُهُ

का फैसला करते हैं तो उस से कहते हैं के “कुन” हो जा, तो वो हो जाता है। और उस को अल्लाह

الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ﴿۷۸﴾ وَرَسُولًا

किताब व हिकमत और तौरात और इन्जील की तालीम देंगे। और बनी इस्राईल की तरफ

إِلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُمْ بِآيَةٍ

रसूल बना कर भेजेंगे। (वो कहेंगे के) यकीनन मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से मोअजिज़ा

مِّن رَّبِّكُمْ ۚ أَنِّي أَخْلُقُ لَكُمْ مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ

ले कर आया हूँ। ये के मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिन्दे की शक्ल की तरह बनाता

الطَّيْرِ فَانْفُخْ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَأُبْرِئُ

हूँ, फिर मैं उस में फूंक मारता हूँ, तो वो अल्लाह के हुक्म से (जानदार) परिन्दा बन जाता है। और

الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِي الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ

मैं अच्छा करता हूँ अन्धे को और बर्स वाले को और मैं मुर्दों को ज़िन्दा करता हूँ अल्लाह के हुक्म से।

وَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدْخِرُونَ ۚ

और मैं तुम्हें बतला देता हूँ वो चीज़ें जो तुम खा कर आते हो और वो चीज़ें जो तुम अपने घरों में

فِي بُيُوتِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُمْ

ज़खीरा कर के आते हो। यकीनन इस में निशानी है तुम्हारे लिए अगर तुम

مُؤْمِنِينَ ﴿۷۹﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ

ईमान लाते हो। और मैं तसदीक करने वाला हूँ उस तौरात की जो मुझ से

مِّن التَّوْرَةِ وَإِجْلًا لَّكُمْ بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ

पेहले थी और ताके मैं तुम्हारे लिए हलाल कर दूँ उन बाज़ चीज़ों को जो तुम पर हराम की गई

وَجِئْتُكُمْ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ

और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से मोअजिज़ा ले कर आया हूँ। फिर अल्लाह से डरो

وَاطِيعُونَ ﴿۸۰﴾ إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ

और मेरा केहना मानो। यकीनन अल्लाह मेरा और तुम्हारा रब है, तो तुम उसी की इबादत करो।

هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿۸۱﴾ فَلَبَّأَ أَحْسَ عَيْسَىٰ مِنْهُمْ

ये सीधा रास्ता है। फिर जब ईसा (अलैहिस्सलाम) ने उन की तरफ से कुफ़

الْكَفَرُ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ

महसूस किया तो फरमाया कौन मेरे मददगार हैं अल्लाह की तरफ? हवारीयिन केहने लगे

نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ أَمَّا بِاللَّهِ وَاشْهَدْ بِأَنَا مُسْلِمُونَ ﴿٥٦﴾

हम अल्लाह के (दीन के) मददगार हैं। हम अल्लाह पर ईमान लाए हैं। और आप गवाह रहिए के यकीनन हम मुसलमान हैं।

رَبَّنَا أَمَّا بِمَا أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا

ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए हैं उस पर जो आप ने उतारा और हम ने रसूल का इत्तिबा किया, तो आप

مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٧﴾ وَمَكْرُؤًا وَمَكَرَ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرٌ

हमें गवाही देने वालों के साथ लिख लीजिए। और उन कुफ़ार ने तदबीर की और अल्लाह ने भी तदबीर की। और अल्लाह

الْمُكْرِمِينَ ﴿٥٨﴾ إِذْ قَالَ اللَّهُ يُعِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ

बेहतरीन तदबीर करने वाले हैं। जब के अल्लाह ने फरमाया के ऐ ईसा! मैं आप को पूरा पूरा लेने वाला हूँ (जिस्म

وَرَأْفَعُكَ إِلَى وَ مَطَهَّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا

व रूह समेत उठाने वाला हूँ) और आप को उठाने वाला हूँ अपने पास और आप को पाक करने वाला हूँ उन

وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا

लोगों से जिन्होंने ने कुफ़ किया और क़यामत के दिन तक आप के मुत्तबिईन को काफ़िरों के

إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ ثُمَّ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأَحْكُمُ

ऊपर रखूंगा। फिर मेरी तरफ तुम्हें लौट कर आना है, फिर मैं तुम्हारे दरमियान

بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٥٩﴾

फेसला करूंगा उस में जिस में तुम इखतिलाफ कर रहे थे।

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَاعَذِّبْهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا

फिर अलबत्ता वो लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया, मैं उन्हें सख्त अज़ाब दूंगा

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَّاصِرِينَ ﴿٦٠﴾

दुनिया और आखिरत में। और उन के लिए कोई मददगार नहीं होगा।

وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ

और अलबत्ता वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे तो अल्लाह उन को उन का पूरा पूरा सवाब देंगे।

وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٦١﴾ ذَلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ

और अल्लाह ज़ालिमों से महबबत नहीं करते। ये हम आप के सामने आयात की

الْقُرْآنِ

مِنَ الْأَيِّتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ۝ إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ

और मुहकम ज़िक्र की तिलावत करते हैं। यकीनन ईसा (अलैहिस्सलाम) का हाल

عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ

अल्लाह के नज़दीक आदम (अलैहिस्सलाम) के हाल की तरह है। जिन को अल्लाह ने मिट्टी से पैदा किया, फिर उन से

لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنْ

फरमाया के हो जा, तो वो हो गए। ये हक़ है आप के रब की तरफ से इस लिए आप शक करने वालों में

مِّنَ الْمُهْتَرِينَ ۝ فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ

से न हों। फिर जो भी आप से हुज्जतबाज़ी करे ईसा (अलैहिस्सलाम) के बारे में इस के बाद के आप

مِّنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَكُمُ

के पास इल्म आया, तो आप केह दीजिए के तुम आओ, हम बुलाते हैं हमारे बेटों को और तुम्हारे बेटों को और हमारी

وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمُ وَانْفُسَنَا وَانْفُسَكُمُ ۖ

औरतों को और तुम्हारी औरतों को और अपनी जानों को और तुम्हारी जानों को।

ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعَنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ ۝

फिर हम मुबाहला करें, फिर हम झूठों पर अल्लाह की लानत करें।

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ إِلَهِ

यकीनन ये सच्चा बयान है। और अल्लाह के सिवा कोई माबूद

إِلَّا اللَّهُ ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

नहीं। और यकीनन अल्लाह वही ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ۝ قُلْ يَٰٓأَهْلَ

फिर भी अगर वो मुंह मोड़ें तो यकीनन अल्लाह फसाद फैलाने वालों को खूब जानते हैं। आप फरमा दीजिए ऐ एहले किताब!

الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ

तुम आओ ऐसे कलिमे की तरफ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान बराबर है,

إِلَّا نَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ

ये के हम इबादत न करें मगर अल्लाह की और हम उस के साथ किसी चीज़ को शरीक न ठेहराएं और हम में से

بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا

एक दूसरे को अल्लाह को छोड़ कर के रब न बनाएं। फिर अगर वो ख़गरदानी करें

فَقُولُوا أَشْهَدُوا بِآثَا مُسْلِمُونَ ﴿١٧﴾ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ

तो केह दो के तुम गवाह रहो के हम मुसलमान हैं। ऐ एहले किताब!

لَمْ تَحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتِ التَّوْرَةُ

तुम क्यूं हुज्जतबाजी करते हो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के बारे में हालांके तौरात

وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٨﴾ هَآأَنْتُمْ

और इन्जील नहीं उतारी गई मगर उन के बाद। क्या तुम अक्ल नहीं रखते? सुनो! तुम तो

هَؤُلَاءِ حَآجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ

वो लोग हो के तुम ने हुज्जतबाजी की ऐसी चीज़ में जिस का तुम्हें इल्म है,

فَلِمَ تَحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ

फिर तुम क्यूं हुज्जतबाजी करते हो ऐसी चीज़ में जिस का तुम्हें कोई इल्म नहीं है। और अल्लाह जानता है

وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾ مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا

और तुम जानते नहीं हो। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) न यहूदी थे,

وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا ۚ

न नसरानी थे, लेकिन सिर्फ एक अल्लाह के हो कर रहने वाले थे, मुसलमान थे।

وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٢٠﴾ إِنَّ أَوَّلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ

और मुशरिकीन में से नहीं थे। यकीनन तमाम इन्सानों में सब से ज़्यादा करीब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के अलबत्ता वो लोग हैं

لِلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا

जिन्होंने ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का इत्तिबा किया और ये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं और वह लोग हैं जो ईमान लाए हैं।

وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١﴾ وَذَتْ طَآئِفَةٌ

और अल्लाह ईमान वालों का कारसाज़ है। एहले किताब की एक जमाअत तो

مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُضِلُّوكُمْ ۚ وَمَا يُضِلُّونَ

चाहती है के काश के वो तुम्हें गुमराह कर दें। और वो गुमराह नहीं करते

إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٢﴾ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ

मगर अपने आप को और उन्हें पता नहीं। ऐ एहले किताब!

لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿٢٣﴾ يَا أَهْلَ

तुम क्यूं कुफ़ करते हो अल्लाह की आयात के साथ इस हाल में के तुम गवाही देते हो? ऐ एहले

الْكِتَابِ لِمَ تَلْبِسُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَ تَكْتُمُونَ

किताब! तुम क्यों हक को बातिल के साथ मिलाते हो और हक

الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾ وَ قَالَتْ طَافَّةٌ مِّنْ أَهْلِ

छुपाते हो हालांकि तुम जानते हो? और एहले किताब की एक जमाअत ने

الْكِتَابِ آمَنُوا بِالَّذِي أُنْزِلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَجْهَ

कहा के तुम ईमान लाओ उस कुरआन पर जो ईमान वालों पर उतारा गया दिन के

النَّهَارِ وَالْكُفْرَ وَآخِرَهُ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٢﴾

शुरू हिस्से में और तुम काफिर बन जाओ दिन के आखिरी हिस्से में, ताके ये भी मुर्तद हो जाएं।

وَلَا تُؤْمِنُوا إِلَّا لِمَن تَبِعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدَىٰ هُدَىٰ

और तुम अमीन मत समझना मगर उसी को जो तुम्हारे दीन पर चलता हो। आप केह दीजिए यकीनन हिदायत अल्लाह की हिदायत

اللَّهِ ۖ أَنْ يُؤْتِيَ أَحَدٌ مِّثْلَ مَا أُوتِيتُمْ أَوْ يُجَازِيَكُمْ

है। (ऐसा इस वजह से करते हो) के किसी को दिया जाए उसी जैसा जो तुम्हें दिया गया या वो तुम से तुम्हारे रब

عِنْدَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ ۖ يُؤْتِيهِ مَن

के पास हुज्जतबाजी करें। आप केह दीजिए यकीनन फ़ज़ल अल्लाह के हाथ में है। वो उसे देता है जिसे

يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٤٣﴾ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن

चाहता है। और अल्लाह वुस्अत वाले, इल्म वाले हैं। वो अपनी रहमत के साथ खास करता है जिसे

يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٤٤﴾ وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ

चाहता है। और अल्लाह भारी फ़ज़ल वाले हैं। और एहले किताब में से कुछ लोग ऐसे हैं के

مَنْ إِنْ تَأْمَنَهُ بَقِطَارٍ يُؤَدِّيهِ إِلَيْكَ ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ

अगर आप उसे अमीन बनाएं ढेरों माल पर तो भी उस को आप की तरफ अदा कर दे। और उन में कुछ लोग

إِنْ تَأْمَنَهُ بِدِينَارٍ لَا يُؤَدِّيهِ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ

ऐसे हैं के अगर आप उसे अमीन बनाएं एक दीनार पर भी, तो भी उस को आप की तरफ अदा न करे, मगर जब तक

عَلَيْهِ قَائِمًا ۖ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا

आप उस पर (निगरां बन कर) खड़े रहें। ये इस वजह से के उन्होंने ने कहा के इन उम्मीयों के लिए हम पर

فِي الْأُمَمِينَ سَبِيلٌ ۖ وَ يَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ

कोई रास्ता नहीं। और ये अल्लाह पर झूठ केह रहे हैं और वो

يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾ بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ

जानते भी हैं। क्यूं नहीं! जो अपना अहद पूरा करे और डरे तो यकीनन अल्लाह

يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٥٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ

डरने वालों से महबूत रखते हैं। यकीनन वो लोग जो अल्लाह के अहद के बदले में

وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ

और अपनी कसमों के बदले में थोड़ी कीमत लेते हैं, उन के लिए कोई हिस्सा नहीं है आखिरत

فِي الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ

में और अल्लाह उन से कलाम नहीं करेगा और उन की तरफ कयामत के दिन निगाह नहीं

الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٥٧﴾

करेगा और उन का तजकिया नहीं करेगा। और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा।

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوَنَ أَلْسِنَتَهُم بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُوهُ

और यकीनन उन में से एक जमाअत है जो अपनी ज़बानों को मोड़ती है किताब (के पढ़ने) में ताके तुम उसे

مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ وَ يَقُولُونَ هُوَ

किताब में से समझो, हालांके वो किताब में से नहीं है। और वो केहते हैं के ये

مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَ يَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ

अल्लाह की तरफ से है, हालांके वो अल्लाह की तरफ से नहीं है। और वो अल्लाह पर झूठ केहते हैं

الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٥٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ

इस हाल में के वो जानते भी हैं। किसी इन्सान की ताक़त नहीं है के अल्लाह उसे

اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ

किताब और शरीअत और नुबूवत दे, फिर वो इन्सानों से कहे के

كُونُوا عِبَادًا لِّيَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا رَبَّيْنَ

तुम अल्लाह को छोड़ कर मेरी इबादत करने वाले बन जाओ, लेकिन (वो तो कहेगा के) तुम रब्बानी बन जाओ

بِمَا كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ الْكِتَابَ وَ بِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ ﴿٥٩﴾

इस वजह से के तुम किताब की तालीम देते हो और इस वजह से के तुम खुद पढ़ते हो।

وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا

और वो तुम्हें इस बात का हुक्म नहीं देगा के तुम फरिश्तों और नबीयों को रब बना लो।

﴿۸۲﴾

أَيَا مُرْكُم بِالْكَفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿۸۲﴾

क्या तुम्हें वो कफ़ का हुक्म देगा इस के बाद के तुम मुसलमान हो?

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّنَ لَمَا آتَيْتُكُم مِّنْ كِتَابٍ

और जब के अल्लाह ने अम्बिया (अलैहिमुस्सलात वस्सलाम) से पुख्ता अहद लिया के जब मैं तुम्हें किताब

وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ

और हिक्मत दूं, फिर तुम्हारे पास रसूल आए जो सच्चा बतलाने वाला हो उस को जो तुम्हारे पास है

لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ ۚ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ

तो तुम उस रसूल पर ईमान लाओगे और उन की नुसरत करोगे। अल्लाह ने फरमाया क्या तुम ने इक़रार किया और इस

عَلَىٰ ذَلِكُمْ إِصْرِي ۚ قَالُوا أَقْرَرْنَا ۚ قَالَ فَاشْهَدُوا

पर मेरा अहद तुम ने कबूल किया? अम्बिया ने कहा के हम ने इक़रार किया। अल्लाह ने फरमाया फिर तुम गवाह रहो,

وَأَنَا مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿۸۳﴾ فَمَنْ تَوَلَّىٰ بَعْدَ

मैं भी तुम्हारे साथ गवाही देने वालों में से हूँ। फिर उस के बाद जो ख़गरदानी

ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿۸۴﴾ أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ

करे तो वही लोग नाफरमान हैं। क्या फिर अल्लाह के दीन के अलावा को ये लोग

يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

चाहते हैं? हालांकि अल्लाह के सामने सर झुकाए हुए हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं

طَوْعًا وَكَرْهًا ۚ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿۸۵﴾ قُلْ أَمَّا بِاللَّهِ

खुशी से और ज़बर्दस्ती से, और उसी की तरफ वो लौटाए जाएंगे। आप फरमा दीजिए के हम ईमान लाए अल्लाह पर

وَمَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَ إِسْمَاعِيلَ

और उस पर जो हम पर उतारा गया और उस पर जो इब्राहीम, और इस्माईल,

وَإِسْحَاقَ وَ يَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ

और इसहाक़, और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) और याकूब (अलैहिस्सलाम) के बेटों पर उतारा गया, और उस पर जो मूसा

وَ عِيسَىٰ وَ التَّيْيُونِ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ

(अलैहिस्सलाम) को दिया गया और ईसा (अलैहिस्सलाम) और दूसरे अम्बिया को दिया गया उन के रब की तरफ से। हम उन में

أَحَدٍ مِّنْهُمْ ۚ وَ نَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿۸۶﴾ وَمَنْ يَبْتَغِ

से किसी के दरमियान तफरीक नहीं करते। और हम अल्लाह ही के ताबेदार हैं। और जो इस्लाम के अलावा को

غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ ۖ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ

दीन के तौर पर तलब करेगा, तो उस की तरफ से हरगिज़ क़बूल नहीं किया जाएगा। और वो आखिरत में

مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا

खसारा उठाने वालों में से होगा। अल्लाह कैसे हिदायत देगा उस कौम को जिन्होंने ने क़ुफ़्र किया

بَعْدَ إِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمْ

अपने ईमान लाने के बाद और शहादत देने के बाद के ये रसूल हक़ है, और उन के पास

الْبَيِّنَاتُ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٨٦﴾ أُولَٰئِكَ

रोशन मोअजिज़ात भी आ गए। और अल्लाह ज़ालिम कौम को हिदायत नहीं देंगे। उन की सज़ा

جَزَاءُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ

ये है के उन पर अल्लाह की लानत और फरिश्तों

وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿٨٧﴾ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ

और तमाम इन्सानों की लानत है। वो उस में हमेशा रहेंगे। उन से अज़ाब हलका नहीं

الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٨٨﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا

किया जाएगा और उन को मोहलत नहीं मिलेगी। मगर वो लोग जिन्होंने ने तौबा की

مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٨٩﴾

उस के बाद और इस्लाह की, तो यकीनन अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازدَادُوا كُفْرًا

यकीनन वो लोग जो काफिर हो गए अपने ईमान लाने के बाद, फिर वो क़ुफ़्र में बढ़ गए,

لَنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الصَّاغُونَ ﴿٩٠﴾

तो हरगिज़ उन की तौबा क़बूल नहीं की जाएगी। और वही लोग गुमराह हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُقْبَلَ

यकीनन वो लोग जिन्होंने ने क़ुफ़्र किया और मर गए इस हाल में के वो काफिर थे, तो हरगिज़ क़बूल नहीं किया जाएगा

مِنْ أَحَدِهِمْ مِلَّةُ الْأَمْرِضِ ذَهَبًا وَلَوْ افْتَدَى بِهِ ۚ

उन में से किसी एक की तरफ से ज़मीन भर सौना, अगर्चे वो उस को फिदये के तौर पर दे दे।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَّاصِرِينَ ﴿٩١﴾

उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा, और उन के लिए कोई मददगार नहीं होगा।

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ ۚ

कामिल नेकी को तुम हरगिज़ नहीं पहुँच सकते जब तक के अपनी महबूब चीज़ में से खर्च न करो।

وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۚ

और जो चीज़ भी खर्च करो, तो यकीनन अल्लाह उसे जानते हैं। तमाम

الطَّعَامِ كَانَ حِلاًّ لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ

खाने की चीज़ें बनी इस्राईल के लिए हलाल थीं मगर जो हज़रत याकूब (अलैहिस्सलाम) ने

إِسْرَءِيلَ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرَةُ ۚ

अपने आप पर हराम कर ली थी इस से पेहले के तौरात उतारी जाए।

قُلْ فَاتَّبِعُوا بِالَّتَّوْرَةِ فَاتَّبُوهَا إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ

आप फरमा दीजिए के फिर तौरात लाओ और उस की तिलावत करो अगर तुम सच्चे हो।

فَمَنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ

फिर जो अल्लाह पर झूठ गढ़े इस के बाद

فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۚ

तो वही लोग ज़ालिम हैं। आप फरमा दीजिए के अल्लाह ने सच फरमाया। फिर तुम इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत

مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ

का इत्तिबा करो जो एक अल्लाह के हो कर रहेने वाले थे। और मुशरिकीन में से नहीं थे।

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ

यकीनन सब से पेहला घर जो इन्सानों के लिए बनाया गया, अलबत्ता वो घर है जो मक्का में है,

مُبْرَكًا وَهَدَىٰ لِلْعَالَمِينَ ۚ

बरकत वाला है और तमाम जहान वालों के लिए हिदायत है। उस में रोशन निशानियाँ हैं,

مَقَامُ إِبْرَاهِيمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا ۚ

मक़ामे इब्राहीम है। और जो उस में दाखिल हो गया वो अमन वाला हो गया। और अल्लाह के लिए

عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ

इन्सानों पर फर्ज़ है बैतुल्लाह का हज करना उस शख्स के लिए जो बैतुल्लाह तक रास्ता क़तअ करने की ताक़त रखता हो।

وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ۚ

और जो काफिर होगा तो यकीनन अल्लाह बेनियाज़ है तमाम जहान वालों से।

قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَٰتِ ٱللَّهِ ۚ

आप फरमा दीजिए ऐ एहले किताब! अल्लाह की आयात के साथ क्यूं कुफ्र करते हो?

وَٱللَّهُ شَهِيدٌۢ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ ﴿٨٨﴾ قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ

और अल्लाह देख रहा है उन आमाल को जो तुम करते हो। आप फरमा दीजिए ऐ एहले किताब!

لِمَ تَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ مَنۢ ءَامَنَ تَبْغُوتَهَا

क्यूं रोकते हो अल्लाह के रास्ते से उस शख्स को जो ईमान लाए, तुम उस में कजी

عَوَجًا ۚ وَٱنتُمۡ شَٰهَدَآءٌۭ ۖ وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍۭ

तलाश करते हो इस हाल में के तुम जानते हो। और अल्लाह बेखबर नहीं है उन कामों से जो तुम

عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٨٩﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ إِن تَطِيعُوا۟

करते हो। ऐ ईमान वालो! अगर तुम केहना मान लोगे

فَرِيقًا مِّنَ ٱلَّذِينَ أَوْتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ يَرُدُّوكُم

एहले किताब के एक गिरोह का तो वो तुम्हारे ईमान लाने के बाद

بَعْدَ إِيمَٰنِكُمْ كَافِرِينَ ﴿٩٠﴾ وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنتُمْ

दोबारा तुम्हें काफिर बना देंगे। और कैसे कुफ्र करोगे, हालांके तुम पर

تُنَزَّلُ عَلَيْكُمْ ءَايَٰتُ ٱللَّهِ وَفِيكُمْ رَسُولُهُ ۚ وَمَن

अल्लाह की आयतें तिलावत की जाती हैं और तुम में अल्लाह के रसूल हैं। और जो

يَعْتَصِمۡ بِٱللَّهِ فَقَدْ هُدِيَ إِلَىٰ صِرَٰطٍۭ مُّسْتَقِيمٍۭ ﴿٩١﴾

अल्लाह की रस्सी मज़बूत पकड़ेगा, तो यकीनन उसे सीधे रास्ते की तरफ हिदायत दी जाती है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ اتَّقُوا۟ ٱللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِۦ

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो जैसा के उस से डरने का हक है

وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُمۡ مُّسْلِمُونَ ﴿٩٢﴾ وَاعْتَصِمُوا۟

और तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में के तुम मुसलमान हो। और अल्लाह की रस्सी को

بِحَبْلِ ٱللَّهِ جَمِيعًا ۖ وَلَا تَفَرَّقُوا۟ ۚ وَٱذْكُرُوا۟ نِعْمَتَ

इकट्ठे हो कर मज़बूत पकड़ो और अलग अलग मत हो। और याद करो अल्लाह की

ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَآءَ ٱلْأَلْفِ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ

उस नेअमत को जो तुम पर है जब के तुम दुश्मन थे, फिर अल्लाह ने तुम्हारे दिल जोड़ दिए,

فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا ۖ وَكُنْتُمْ عَلَى شَفَا حُفْرَةٍ

फिर तुम अल्लाह की नेअमत की वजह से भाई भाई बन गए। और तुम आग के गढ़े के

مِّنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ مِنْهَا ۖ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ

किनारे पर थे, फिर अल्लाह ने तुम्हें वहां से बचा लिया। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें

آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠٠﴾ وَلَتَكُنَّ مِنْكُمْ أُمَّةٌ

बयान करते हैं ताके तुम हिदायतयाफता हो जाओ। और चाहिए के तुम में से एक जमाअत हो

يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ

जो खैर की तरफ बुलाती हो और अम्र बिल मारुफ करती हो और नही

عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠١﴾ وَلَا تَكُونُوا

अनिल मुनकर करती हो। और यही लोग फलाह पाने वाले हैं। और उन लोगों की तरह

كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمْ

मत बनो जो अलग अलग फिरके हो गए और जिन्होंने ने इखतिलाफ किया इस के बाद के उन के पास रोशन

الْبَيِّنَاتُ ۖ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٢﴾ يَوْمَ

मोअजिज़ात आए। और उन के लिए भारी अज़ाब होगा। उस दिन जिस दिन

تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ

कुछ चेहरे सफेद होंगे और कुछ चेहरे सियाह होंगे। फिर अलबत्ता वो लोग जिन के

أَسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ ۚ أَكْفَرْتُمْ بَعْدَ إِيْمَانِكُمْ

चेहरे सियाह होंगे, (उन से कहा जाएगा) क्या तुम ने अपने ईमान लाने के बाद कुफ्र किया?

فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿١٠٣﴾

फिर अज़ाब चखो इस वजह से के तुम कुफ्र करते थे।

وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ ۖ

और अलबत्ता वो लोग जिन के चेहरे सफेद होंगे वो अल्लाह की रहमत में होंगे।

هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٠٤﴾ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ تَتْلُوهَا

वो उस में हमेशा रहेंगे। ये अल्लाह की आयतें हैं जिन को हम आप के सामने हक के साथ

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۖ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٠٥﴾

तिलावत करते हैं। और अल्लाह जहान वालों पर जुल्म का इरादा भी नहीं करते।

وَاللَّهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ

और अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

وَالِلَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۚ كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ

और अल्लाह ही की तरफ तमाम उमूर लौटाए जाएंगे। तुम बेहतरीन उम्मत हो जो इन्सानों के लिए

لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

निकाली गई है, अम्र बिल मारुफ करते हो और नही अनिल मुनकर करते हो

وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۚ وَلَوْ آمَنَ أَهْلُ الْكِتَابِ لَكَانَ

और अल्लाह पर ईमान रखते हो। और अगर एहले किताब ईमान ले आते तो ये

خَيْرًا لَّهُمْ ۚ مِنْهُمْ الْمُؤْمِنُونَ وَ أَكْثَرُهُمُ الْفَاسِقُونَ ۚ

उन के लिए बेहतर होता। उन में से कुछ लोग मोमिन हैं और उन में से अकसर नाफरमान हैं।

لَنْ يَضُرُّوكُمْ إِلَّا أَذًى ۚ وَإِنْ يُقَاتِلُوكُمْ يُؤْتُواكُمُ

वो तुम्हें हरगिज़ ज़रर नहीं पहुँचा सकते मगर थोड़ा सा ईज़ा पहुँचाना। और अगर वो तुम से क़िताल करेंगे तो वो तुम से पुश्त

الْأَذْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ۚ ضَرَبْتَ عَلَيْهِمُ الدِّيلَةَ

फेर कर भागेंगे। फिर उन की नुसरत नहीं की जाएगी। उन पर ज़िल्लत मार दी गई

أَيْنَ مَا تَقِفُوا إِلَّا بِحَبْلٍ مِنَ اللَّهِ وَ حَبْلٍ

जहाँ वो पाए जाएं, मगर ऐसे ज़रिए से जो अल्लाह की तरफ से हो और ऐसे ज़रिए से

مِّنَ النَّاسِ وَبَاءُ وَ يُغْضِبُ مِّنَ اللَّهِ وَ ضَرَبْتَ

जो इन्सानों की तरफ से हो और वो अल्लाह का ग़ज़ब ले कर लौटे और उन पर

عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ

पस्ती जमा दी गई। ये इस वजह से के वो कुफ़र करते थे

بِآيَاتِ اللَّهِ وَ يَقْتُلُونَ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ ذَلِكَ

अल्लाह की आयात के साथ और अम्बिया को नाहक क़त्ल करते थे। ये

بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۚ لَيْسُوا سَوَاءً ۚ

इस वजह से के वो नाफरमान हैं और हद से आगे बढ़ते थे। ये सारे के सारे बराबर नहीं हैं।

مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ قَائِمَةٌ يَتْلُونَ آيَاتِ اللَّهِ آنَاءَ

एहले किताब में से एक जमाअत है जो हक़ पर काइम है, अल्लाह की आयतों की रात की घड़ियों में तिलावत

الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُونَ ﴿١١٣﴾ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ

करते हैं और वो नमाज़ भी पढ़ते हैं। वो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आखिरी

الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ

दिन पर और अम्र बिल मारुफ करते हैं और नही अनिल मुनकर करते

عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ ۚ وَأُولَٰئِكَ

हैं और नेकी के कामों में तेज़ी करते हैं। और ये

مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١١٤﴾ وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوهُ ۚ

अच्छे लोगों में से हैं। और जो भलाई भी वो करेंगे तो हरगिज़ उस की नाकदरी नहीं की जाएगी।

وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ﴿١١٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا

और अल्लाह मुत्तकियों को खूब जानते हैं। यकीनन वो लोग जिन्होंने ने कुफ्र किया,

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ

हरगिज़ उन के कुछ काम नहीं आएंगे न उन के माल और न उन की औलाद अल्लाह से

شَيْئًا ۚ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١٦﴾

ज़रा भी। और यही लोग दोज़खी हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे।

مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

उन चीज़ों का हाल जिन को वो इस दुन्यवी ज़िन्दगी में खर्च करते हैं

كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا

उस तूफानी हवा की तरह है जिस में सख्त सरदी हो, जो ऐसी कौम की खेती को पहोंची हो जिन्होंने ने

أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ

अपनी जान पर जुल्म किया, फिर वो उस को बरबाद कर दे। और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया

وَلَكِنْ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا

लेकिन वो अपनी जानों पर जुल्म करते थे। ऐ ईमान वालो! अपने अलावा किसी को

بِطَانَةً مِّنْ دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا ۖ وَدُّوا

राज़दां मत बनाओ, वो तुम से फसाद करने में कोताही नहीं करते। वो तो चाहते हैं

مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۚ

वो चीज़ जिस से तुम मशक्कत में पड़ो। यकीनन बुज़ ज़ाहिर हो चुका है उन के मुंह से।

وَمَا تُخَفِّي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ

और जो उन के सीने छुपाए हुए हैं वो उस से भी बड़ी है। यकीनन हम ने तुम्हारे लिए

الْآيَاتِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾ هَآأَنْتُمْ أَوْلَآءِ

आयतों को खोल खोल कर बयान किया अगर तुम अक्ल रखते हो। सुनो! तुम तो वो लोग हो के

تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ

तुम उन से महबबत करते हो और ये तुम से महबबत नहीं करते और तुम तमाम किताबों पर ईमान

كُلِّهِ ؕ وَإِذَا لَقُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا ؕ وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا

रखते हो। और जब ये तुम से मिलते हैं तो 'अम्ना' (के हम ईमान लाए हैं) केहते हैं। और जब तन्हाई में

عَلَيْكُمْ الْآنَامِلَ مِنَ الْغِظِ قُلْ مُوتُوا بِغِظِكُمْ

होते हैं, तो तुम पर गुस्से की वजह से उंगलियों के पोरे काटते है। आप केह दीजिए के अपने गुस्से से मर जाओ।

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١١٩﴾ إِنْ تَسْأَلُكُمْ

यकीनन अल्लाह दिलों के हाल को खूब जानते हैं। अगर तुम्हें भलाई

حَسَنَةً تَسْأَلُهُمْ وَإِنْ تُصِيبَكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا

पहोंचे तो उन्हें बुरी लगती है। और अगर तुम्हें मुसीबत पहोंचे तो उस से वो खुश हो जाते

بِهَا ؕ وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرَّكُمْ كَيْدُهُمْ

हैं। और अगर सब्र करोगे और मुत्तकी बनोगे तो उन का मक्र तुम्हें कुछ भी ज़रर नहीं पहोंचा

شَيْئًا ؕ إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾ وَإِذْ غَدَوْتَ

सकेगा। यकीनन अल्लाह उन के आमाल का इहाता किए हुए है। और जब आप अपने एहल से

مِنْ أَهْلِكَ تَبَوَّئِ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ

सुबह के वक्त निकले, आप ईमान वालों को लड़ने की जगहों पर मुतअय्यन कर रहे थे।

وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٢١﴾ إِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٌ مِنْكُمْ

और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। जब तुम में से दो जमाअतों ने इरादा किया के

أَنْ تَفْشَلَا ۚ وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

वो हिम्मत हार बैठें, हालांके अल्लाह उन का कारसाज़ है। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल

الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٢٢﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَ

करना चाहिए। और यकीनन अल्लाह ने तुम्हारी नुसरत फरमाई बदर में इस हाल

أَنْتُمْ أَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢٦﴾

मैं के तुम कमज़ोर थे। फिर तुम अल्लाह से डरो ताके तुम शुक्र अदा करो।

إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ يُبَدِّكُمْ

जब के आप ईमान वालों से फरमा रहे थे के क्या तुम्हें काफी नहीं है के तुम्हारा रब

رَبُّكُمْ بِثَلَاثَةِ أَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُنْزَلِينَ ﴿١٢٧﴾

तुम्हारी इमदाद करे तीन हज़ार फरिश्तों के ज़रिए जो उतारे जाएंगे।

بَلَىٰ ۚ إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَ يَأْتُوكُمْ مِنْ فُورِهِمْ

क्यूं नहीं! अगर तुम सब्र करोगे और मुत्तकी बनोगे तो वो तुम्हारे पास फौरन आ जाएंगे,

هَذَا يُبَدِّدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ أَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ

ये वो है के तुम्हारा रब पाँच हज़ार निशानज़दा फरिश्तों के ज़रिए तुम्हारी इमदाद

مُسَوِّمِينَ ﴿١٢٨﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ

करेगा। और अल्लाह ने उस को नहीं बनाया मगर तुम्हारे लिए बशारत

وَلِتَطْبِئْنَ قُلُوبُكُمْ بِهِ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا

और इस लिए ताके तुम्हारे दिल उस से मुतमइन हों। और नुसरत तो सिर्फ ज़बर्दस्त, हिक्मत वाले

مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١٢٩﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا

अल्लाह ही की तरफ से आती है। ताके वो काफिरों के एक गिरोह को

مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوا خَآبِينَ ﴿١٣٠﴾

काट कर रख दे या उन्हें (कैदी बना कर) ज़लील करे, के वो नाकाम वापस चले जाएं।

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ

आप का इस मुआमले में कोई इखतियार नहीं है, चाहे अल्लाह उन की तौबा कबूल करे

أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٣١﴾ وَبِاللَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ

या उन्हें अज़ाब दे, क्यूंके वही लोग ज़ालिम हैं। और अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं

وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَ يُعَذِّبُ

और जो ज़मीन में हैं। अल्लाह मग़फ़िरत करते हैं जिस की चाहते हैं और अज़ाब

مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٣٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

देते हैं जिसे चाहते हैं। और अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। ऐ ईमान

امَنُوا لَا تَاْكُلُوا الرِّبَا اَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً ۝	ख़ाओ। मत सूद के कर गुना कई कई वालो!
وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَاتَّقُوا النَّارَ	से आग से और डरो ताके तुम फलाह पाओ। और डरो
الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ۝ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ	जो काफ़िरो के लिए तय्यार की गई है। और अल्लाह और रसूल का केहना मानो
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَسَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ	ताके तुम पर रहम किया जाए। और अपने रब की मग़फ़िरत की तरफ
مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ ۝	दौड़ो और ऐसी जन्नत की तरफ जिस की चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है,
أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ	जो मुत्तकियों के लिए तय्यार की गई है। उन के लिए जो खर्च करते हैं आसानी और
وَالضَّرَّاءِ وَالْكُظَّيْنِ الْغِيْظِ وَالْعَافِيْنَ	तकलीफ में और जो गुस्से को पी जाने वाले हैं और लोगों को
عَنِ النَّاسِ ۝ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ	मुआफ़ करने वाले हैं। और अल्लाह एहसान करने वालों से महबबत फरमाते हैं। और वो लोग हैं
إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا	के जब वो कोई बुरा काम कर बैठते हैं या अपनी जान पर जुल्म कर लेते हैं, तो अल्लाह को याद करने
اللَّهِ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ ۝ وَمَنْ يَغْفِرَ	लग जाते हैं, फिर अपने गुनाहों की मुआफी तलब करते हैं। और सिवाए अल्लाह के
الذُّنُوبِ إِلَّا اللَّهُ ۝ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا	कौन गुनाह मुआफ़ कर सकता है? और वो अपने किए पर इसरार नहीं करते
وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ	इस हाल में के वो जानते हों। उन का बदला उन के रब की तरफ से मग़फ़िरत है
مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّتْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ	और जन्नतें हैं जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी

خَلِيدِينَ فِيهَا ۖ وَ نِعَمَ أَجْرُ الْعَمَلِينَ ۝ قَدْ

जिन में वो हमेशा रहेंगे। और ये काम करने वालों का कितना अच्छा बदला है। यकीनन

خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ

तुम से पेहले तरीके गुजर चुके, तो ज़मीन में चलो फिरो

فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝ هَذَا

फिर देखो के झुठलाने वालों का अन्जाम कैसा हुवा? ये

بَيَانٌ لِلنَّاسِ وَ هُدًى وَ مَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ۝

इन्सानों के लिए बयान है और हिदायत और मुत्तकियों के लिए नसीहत है।

وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ

और हिम्मत न हारो और ग़म न करो और तुम ही बुलन्द रहोगे अगर

مُؤْمِنِينَ ۝ إِنْ يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ

तुम ईमान वाले हो। अगर तुम्हें ज़ख्म पहुँचा है तो उसी जैसा ज़ख्म उस कौम को

قَرْحٌ مِّثْلُهُ ۖ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ

भी पहुँच चुका है। और ये जंगें हैं जिन को हम इन्सानों के दरमियान अदलते बदलते रहा करते हैं।

وَ لِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ ۚ

और ताके अल्लाह जान ले उन को जो ईमान वाले हैं और तुम में से शुहदा बनाए।

وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝ وَلِيَحْصَ اللَّهُ الَّذِينَ

और अल्लाह ज़ालिमों से महब्वत नहीं करते। और इस लिए ताके अल्लाह खालिस करे उन को

آمَنُوا وَ يَحَقِّقَ الْكَافِرِينَ ۝ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا

जो ईमान लाए और काफिरों को मिटाए। क्या तुम ने ये समझ रखा है के जन्नत में दाखिल

الْجَنَّةَ وَلَبَّآ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ

हो जाओगे हालांके अब तक अल्लाह ने मालूम नहीं किया उन को जो तुम में से मुजाहिद हैं

وَ يَعْلَمَ الصَّابِرِينَ ۝ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ

और अब तक सब्र करने वालों को मालूम नहीं किया। और यकीनन तुम मौत की तमन्ना करते थे

مِنْ قَبْلِ أَنْ تُلْقَوْهُ ۖ فَقَدْ رَآيْتُمْوهُ وَأَنْتُمْ

इस से पेहले के उस से मिलो। तो यकीनन तुम ने उस को अपनी आँखों

تَنْظُرُونَ ﴿۱۴۲﴾ وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ ۖ قَدْ خَلَتْ

से देख लिया। और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम) नहीं हैं मगर भेजे हुए पैगम्बर। यकीनन आप से पेहले

مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۖ أَفَأَيْنَ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ

बहोत से पैगम्बर गुज़र चुके। क्या फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम) मर जाएं या क़त्ल किए जाएं तो तुम अपनी एड़ियों

عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ ۖ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَىٰ عَقْبَيْهِ

के बल पलट जाओगे। और जो भी अपनी एड़ियों के बल पलट जाएगा

فَلَنْ يَضُرَّ اللَّهَ شَيْئًا ۖ وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ﴿۱۴۳﴾

तो वो अल्लाह को हरगिज़ ज़रा भी ज़रर नहीं पहुँचा सकेगा। और अनकरीब अल्लाह शुक्र करने वालों को बदला देंगे।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ كِتَابًا

और किसी जानदार की ये ताक़त नहीं है के वो मर सके मगर अल्लाह के हुक्म से लिखी हुई (मुकरर की हुई)

مُؤَجَّلًا ۖ وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا ۖ

मुद्दत पर। और जो दुनिया के सवाब का इरादा करेगा तो हम उस को उस में से कुछ दे देंगे।

وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الْآخِرَةِ نُؤْتِهِ مِنْهَا ۖ وَسَيَجْزِي

और जो आखिरत के सवाब का इरादा करेगा तो हम उस को उस में से कुछ दे देंगे। और अनकरीब हम

الشَّاكِرِينَ ﴿۱۴۴﴾ وَكَأَيِّنْ مِنْ نَبِيٍّ قُتِلَ ۖ مَعَهُ

शुक्र अदा करने वालों को बदला देंगे। और बहोत से नबी थे के उन के साथ बहोत से

رَبِّيُونَ كَثِيرٌ ۖ فَمَا وَهَنُوا لِمَا أَصَابَهُمْ

अल्लाह वालों ने किताल किया। फिर उन मुसीबतों की वजह से जो उन्हें पहुँची अल्लाह के रास्ते में उन्होंने

فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَا ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَانُوا ۚ وَاللَّهُ

ने न हिम्मत हारी और न कमज़ोरी दिखाई और न दबे। और अल्लाह

يُحِبُّ الصَّابِرِينَ ﴿۱۴۵﴾ وَمَا كَانَ قَوْلُهُمْ إِلَّا

सब्र करने वालों से महबबत फरमाते हैं। और उन की दुआ सिर्फ ये थी

أَنْ قَالُوا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَ إِسْرَافَنَا

के केहने लगे ऐ हमारे रब! तू हमारे लिए हमारे गुनाह बख्श दे और इस काम में हमारी ज़्यादती

فِي أَمْرِنَا وَثَبَّتْ أقدامَنَا وَ انْصَرْنَا عَلَى الْقَوْمِ

मुआफ़ कर दे और हमारे क़दम जमा दे और काफ़िर कौम के खिलाफ हमारी नुसरत

۱۳۶	الْكَافِرِينَ ۖ فَآتَاهُمُ اللَّهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فرमा। तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया का सवाब भी दिया
۱۳۷	وَحُسْنَ ثَوَابِ الْآخِرَةِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ और आखिरत का बेहतर सवाब भी दिया। और अल्लाह नेकी करने वालों से महबबत फरमाते हैं।
۱۳۸	يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَطِيعُوا الَّذِينَ كَفَرُوا ऐ ईमान वालो! अगर तुम काफिरों का केहना मान लोगे
۱۳۹	يَرُدُّوكُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خَاسِرِينَ तो वो तुम्हें तुम्हारी एड़ियों के बल पलटा कर मुर्तद बना देंगे, फिर तुम नुकसान उठाने वाले बन जाओगे।
۱۴۰	بَلِ اللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ خَيْرُ النَّاصِرِينَ ۚ سَنُلْقِي बल्के अल्लाह तुम्हारा मौला है। और वो बेहतरीन नुसरत करने वाला है। अनकरीब हम काफिरों
۱۴۱	فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ ۚ بِمَا أَشْرَكُوا بِاللَّهِ के दिलों में रौब डाल देंगे, इस वजह से के वो शरीक ठेहराते हैं अल्लाह के साथ
۱۴۲	مَا لَمْ يُزَلَّ بِهِ سُلْطَانٌ ۖ وَمَا لَهُمُ النَّارُ وَبُئْسَ ऐसी चीजें जिन पर अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी। और उन का ठिकाना दोज़ख है। और वो
۱۴۳	مَثْوَى الظَّالِمِينَ ۚ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ وَعْدَهُ ज़ालिमों का बुरा ठिकाना है। और यकीनन अल्लाह ने तुम से अपना वादा सच कर दिखाया
۱۴۴	إِذْ تَحْسَبُونَهُم بِأَذْنِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا فَشِلْتُمْ जब तुम उन कुफ़ार को अल्लाह के हुक्म से क़त्ल कर रहे थे। यहां तक के जब तुम हिम्मत हार बैठे
۱۴۵	وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَ عَصَيْتُمْ مِّنْهُ ۖ بَعْدَ और तुम ने इस मुआमले में आपस में झगड़ा किया और तुम ने नाफरमानी की इस के बाद के
۱۴۶	مَا أَرَاكُمْ مَا تُحِبُّونَ ۖ مِنْكُمْ مَّن يُرِيدُ الدُّنْيَا अल्लाह ने दिखाई वो (फत्ह) जो तुम पसन्द करते थे। तुम में से कुछ वो हैं जो दुनिया चाहते हैं
۱۴۷	وَمِنْكُمْ مَّن يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۖ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ और तुम में से कुछ वो हैं जो आखिरत चाहते हैं। फिर अल्लाह ने तुम्हें उन से फेर दिया ताके अल्लाह तुम्हें
۱४८	لِيَبْتَلِيَكُمْ ۖ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۖ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ आज़माए। और यकीनन अल्लाह ने तुम्हें मुआफ़ कर दिया। और अल्लाह ईमान वालों पर

عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٦﴾ إِذْ تَصْعَدُونَ وَلَا تَلُونَ

फज़ल वाले हैं। जब तुम पहाड़ पर चढ़े चले जा रहे थे और पीछे मुड़ कर किसी को

عَلَى أَحَدٍ وَ الرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أُخْرَاكُمْ فَأَثَابَكُمْ

देखते भी नहीं थे हालांकि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हें पुकार रहे थे तुम्हारे पीछे, फिर अल्लाह ने

غَمًّا بِغَمِّ لَكِيْلًا تَخَزْنُوا عَلَى مَا فَاتَكُمْ وَلَا

तुम्हें ग़म के बदले ग़म दिया ताके तुम ग़म न करो उस फतह पर जो तुम से फौत हो गई ओर न उस शिकस्त पर

مَا أَصَابَكُمْ ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٧﴾

जो तुम्हें पहोंची। और अल्लाह बाखबर है उन कामों से जो तुम करते हो।

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمْنَةً نُّعَاسًا يَغْشَى

फिर अल्लाह ने तुम पर ग़म के बाद इतमिनान वाली ऊँघ उतारी जो तुम में से एक जमाअत

طَائِفَةٌ مِّنْكُمْ ۚ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ

पर तारी थी और एक जमाअत को अपनी जानों का फिक्र था,

يُظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۚ

वो अल्लाह के साथ हक के अलावा का जाहिलीयत का गुमान करते थे।

يَقُولُونَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۚ قُلْ

वो केहते थे के हमारे लिए इस मुआमले में कोई इखतियार नहीं है। आप फरमा दीजिए

إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ ۚ يُخْفُونَ فِي أَنفُسِهِمْ

के तमाम उमूर अल्लाह के कब्जे में हैं। वो अपने दिलों में छुपाते हैं वो जिस को

مَا لَا يُبْدُونَ لَكَ ۚ يَقُولُونَ لَوْ كَان لَنَا مِنَ الْأَمْرِ

आप के सामने ज़ाहिर नहीं करते थे। वो मुनाफिक़ीन केहते थे के अगर हमारा इस मुआमले में कोई भी इखतियार

شَيْءٌ مَا قُتِلْنَا هُنَا ۚ قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ

होता तो हम यहां क़त्ल न किए जाते। आप फरमा दीजिए के अगर तुम अपने घरों में भी रहेते

لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَى مَضَاجِعِهِمْ ۚ

तो भी यक़्ीनन मुबारिज़ बन कर निकलते वो जिन पर क़त्ल होना लिख दिया गया था, (वो निकलते) अपने क़त्ल होने की जगहों की तरफ।

وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحَّصَ مَا

और अल्लाह ने ऐसा इस लिए किया ताके अल्लाह इम्तिहान ले उस का जो तुम्हारे सीनों में है और ताके साफ करे उस को जो

فِي قُلُوبِكُمْ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٥٠﴾

तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह दिलों के हाल को खूब जानते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ ۚ

यकीनन वो लोग जो तुम में से मैदान छोड़ कर चले गए उस दिन जिस दिन दोनों लश्कर बाहम मुक़ाबिल हुए,

إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُواۥ

तो उन को तो सिर्फ शैतान ने फुसलाया उन बाज़ हरकतों की वजह से जो उन्होंने ने की।

وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٥٥﴾

यकीनन अल्लाह ने उन्हें मुआफ कर दिया। यकीनन अल्लाह बख्शने वाले, हिल्म वाले हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا

ऐ ईमान वालो! तुम उन की तरह मत बनो जिन्हों ने कुफ़ किया

وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ

और जिन्हों ने अपने भाइयों से कहा जब वो जमीन में सफर करते हैं

أَوْ كَانُوا غُرَىٰ لِّوُكَّانٍ عِنْدَنَا مَا مَاتُوا

या ग़ाज़ी बन कर जाते हैं के अगर वो हमारे पास रहे तो न मरते

وَمَا قَتَلُوا^ج لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَٰلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ^ط

और कत्ल न किए जाते। ताके अल्लाह उस को उन के दिलों में हसरत बनाए।

وَاللَّهُ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٥٦﴾

और अल्लाह ही जिन्दगी देते हैं और मौत देते हैं। और अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं।

وَلَكِنْ قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتِمَّ لَكُمْ غَفَرَةٌ

और अगर तुम अल्लाह के रास्ते में कत्ल किए जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की तरफ से मग़फ़िरत

مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةً خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٤﴾ وَلَئِنْ مُّتِمَّ

और रहमत बेहतर है उस दौलत से जिसे वो जमा कर रहे हैं। और अगर मर जाओ

أَوْ قَتَلْتُمْ لَا إِلَى اللَّهِ تَحْشَرُونَ ﴿١٥٨﴾ فَبِمَا رَحْمَةٍ

या तुम कत्ल किए जाओ तो यकीनन अल्लाह ही की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे। फिर अल्लाह की रहमत की

مِّنَ اللَّهِ إِنَّكَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًا غَلِيظَ الْقَلْبِ

वजह से ही उन के लिए आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम) नर्म हो गए हैं। और अगर आप सख्त या सख्त दिल वाले होते

لَا تَقْضُوا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ

तो यकीनन सहाबाए किराम आप के आस पास से मुन्तशिर हो जाते। इस लिए आप उन्हें मुआफ कीजिए और उन के लिए मग़फिरत

لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ ۖ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ

तलब कीजिए और कामों में उन से मशवरा लेते रहिए। फिर जब आप पुख्ता इरादा कर लें तो अल्लाह ही पर

عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ﴿٥٥﴾ إِنَّ يَنْصُرَكُمْ

तवक्कुल कीजिए। यकीनन अल्लाह तवक्कुल करने वालों से महब्बत फरमाते हैं। अगर अल्लाह तुम्हारी नुसरत करे

اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَإِنْ يَخْذُلْكُمْ فَمَنْ

तो तुम पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता। और अगर वो तुम्हारी नुसरत छोड़ दे तो अल्लाह

ذَا الَّذِي يَنْصُرُكُمْ مِنْ بَعْدِهِ ۚ وَ عَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

के बाद कौन है जो तुम्हारी नुसरत करे? और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल

الْمُؤْمِنُونَ ﴿٥٦﴾ وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ ۚ وَمَنْ

करना चाहिए। और किसी नबी की ये शान नहीं है के वो खयानत करे। और जो

يَغْلُ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفَّى

खयानत करेगा तो ले कर आएगा क़यामत के दिन वो चीज़ जिस में खयानत की है। फिर हर शख्स को

كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٥٧﴾ أَفَمَنْ

अपने किए का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा, और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा। क्या फिर

اتَّبَعَ رِضْوَانُ اللَّهِ كَمَنْ بَاءَ بِسَخَطٍ مِنَ اللَّهِ

वो शख्स जिस ने अल्लाह की खुशनूदी का इत्तिबा किया उस शख्स की तरह हो सकता है जो अल्लाह का ग़ज़ब ले कर लौटा

وَمَا لَهُ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٥٨﴾ هُمْ دَرَجَتٌ

और उस का ठिकाना जहन्नम है? और वो बुरी जगह है। वो अल्लाह के पास मुख्तलिफ़ दरजात

عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ بِصِيرٍ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٥٩﴾ لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ

में होंगे। और अल्लाह देख रहे हैं उन कामों को जो वो कर रहे हैं। यकीनन अल्लाह ने एहसान फरमाया

عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْ أَنْفُسِهِمْ

ईमान वालों पर जब के उन में रसूल भेजा उन्ही में से

يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَ يُزَكِّيهِمْ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ

जो उन पर अल्लाह की आयतें तिलावत करते हैं और उन का तज़किया करते हैं और उन्हें किताब और हिक्मत की

وَالْحِكْمَةِ ۙ

وَالْحِكْمَةِ ۙ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١١٣﴾

तालीम देते हैं। और यकीनन वो उस से पेहले अलबत्ता खुली गुमराही में थे।

أَوَلَمْ يَأْتِكُمْ مَصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُمْ مِثْلَيْهَا ۚ

क्या तुम्हें जो एक मुसीबत पहुँची तो उस की दुगनी तुम उन काफिरों को नहीं पहुँचा चुके?

قُلْتُمْ أَنِّي هَذَا ۖ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِكُمْ ۚ

तुम कहते हो के ये मुसीबत कहां से आ गई? आप फरमा दीजिए के ये तुम्हारी ही तरफ से आई।

إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١١٤﴾ وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ

यकीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। और जो मुसीबत तुम्हें पहुँची उस दिन जिस दिन

الْتَقَى الْجَمْعَيْنِ فَيَاذَنْ لِلَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٥﴾

दोनों लश्कर बाहम मुक़ाबिल हुए वो अल्लाह के हुक्म से (पहुँची) और इस लिए ताके अल्लाह ईमान वालों को मालूम करें।

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا ۖ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالُوا

और ताके अल्लाह मुनाफ़िक्कीन को मालूम करें। हालांके उन से कहा गया के आओ,

قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ ادْفَعُوا ۚ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ

अल्लाह के रास्ते में क़िताल करो, या कम अज़ कम दिफ़ाअ तो करो। तो वो केहते हैं के अगर हम ढंग की लड़ाई

قِتَالًا لَا اتَّبَعْنَاكُمْ ۚ هُمْ لِلْكَفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ

जानते तो हम ज़रूर तुम्हारे पीछे चलते। वो उस दिन ईमान की बनिस्बत कुफ़ के ज़्यादा

مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ ۚ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِمْ مَا لَيْسَ

करीब थे। वो अपने मुँह से ऐसी बात केहते थे जो उन के

فِي قُلُوبِهِمْ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ﴿١١٦﴾ الَّذِينَ

दिलों में नहीं थी। और अल्लाह ख़ूब जानते हैं जो वो छुपा रहे हैं। वो लोग जो

قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُوا ۚ

अपने भाइयों से केहते हैं, और खुद बैठ गए हैं, के अगर ये हमारा केहना मानते तो वो क़त्ल न किए जाते।

قُلْ فَادْرَأُوا عَنْ أَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ

आप फरमा दीजिए के फिर तुम अपने आप से मौत को दफ़ा करो अगर

صَادِقِينَ ﴿١١٧﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ

सच्चे हो। और आप उन लोगों को जो अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किए जाएं

اللَّهُ أَمْوَآتَا ۖ بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ۝

मुर्दे गुमान न करें। बल्के वो अपने रब के पास ज़िन्दा हैं, उन्हें रोज़ी दी जाती है।

فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۖ وَ يَسْتَبْشِرُونَ

वो खुश हैं उस पर जो अल्लाह ने अपने फज़ल से उन को दिया है और वो खुशखबरी पढ़ोचाना चाहते हैं

بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ ۖ إِلَّا خَوْفٌ

उन लोगों को जो उन से नहीं मिले उन के पीछे वालों में से इस बात की के उन पर न खौफ

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ

है और न वो ग़मगीन हैं। वो खुशखबरी पढ़ोचाना चाहते हैं अल्लाह की

مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ

नेअमत की और अल्लाह के फज़ल की और इस बात की के अल्लाह ईमान वालों का अज़्र ज़ायेअ नहीं

الْمُؤْمِنِينَ ۝ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ

करेंगे। वो लोग जिन्हों ने अल्लाह और रसूल का हुक्म माना

مِّنْ بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا

इस के बाद के उन को ज़ख्म पढ़ोचा, उन लोगों के लिए जो उन में से नेक हैं

مِنْهُمْ وَاتَّقُوا أَجْرَ عَظِيمٍ ۝ الَّذِينَ قَالَ لَهُمْ

और मुत्तकी हैं, उन के लिए भारी अज़्र है। वो लोग जिन से लोगों ने

النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ

कहा के यकीनन ये लोग तुम्हारे लिए जमा हो गए हैं, तो तुम उन से डरो

فَزَادَهُمْ إِيمَانًا ۖ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ۝

तो उस चीज़ ने उन के ईमान को और बढ़ा दिया। और उन्होंने ने कहा के अल्लाह हमें काफी है और बेहतरीन कारसाज़ है।

فَانْقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ

फिर वो अल्लाह की नेअमत और अल्लाह के फज़ल को ले कर लौटे, उन को किसी तकलीफ ने

سُوْءٌ ۖ وَاتَّبَعُوا رِضْوَانَ اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ۝

छुवा तक नहीं और उन्होंने ने अल्लाह की खुशनूदी का इत्तिबा किया। और अल्लाह भारी फज़ल वाले हैं।

إِنَّمَا ذَلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ ۖ فَلَا تَخَافُوهُمْ

ये तो सिर्फ़ शैतान अपने दोस्तों से डराता है। तो तुम उन से मत डरो

فَرِحِينَ

الْمُؤْمِنِينَ

مِنْ بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۚ

وَخَافُونَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٤٥﴾ وَلَا يَحْزُنُكَ

और मुझ से डरो अगर ईमान वाले हो। और आप को ग़मगीन न करें

الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَنْ يَضُرُّوا

वो लोग जो कुफ़्र में तेज़ी कर रहे हैं। यकीनन वो अल्लाह को ज़रा भी ज़रर नहीं

اللَّهُ شَيْءًا يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حِطًّا

पहोंचा सकेंगे। अल्लाह ये चाहते हैं के उन के लिए आखिरत में कोई हिस्सा

فِي الْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٤٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرُوا

न रखें। और उन के लिए भारी अज़ाब होगा। यकीनन वो लोग जिन्होंने ने कुफ़्र को

الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْءًا وَلَهُمْ

ईमान के बदले में खरीदा, वो अल्लाह को ज़रा भी ज़रर हरगिज़ नहीं पहोंचा सकेंगे। और उन के लिए

عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٧﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ

दर्दनाक अज़ाब होगा। और वो लोग जिन्होंने ने कुफ़्र किया वो ये न समझें के जो

نُحِلُّ لَهُمْ خَيْرٌ لِّأَنفُسِهِمْ إِنَّمَا نَحْنُ لَهُمْ

हम उन को ढील दे रहे हैं, ये उन के लिए बेहतर है। हम तो सिर्फ़ उन को ढील दे रहे हैं

لِيُزِدَادُوا إِثْمًا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٤٨﴾ مَا كَانَ

इस लिए ताके वो गुनाह में और बढ़ें। और उन के लिए ख़ुस्वा करने वाला अज़ाब होगा। अल्लाह ऐसा नहीं है

اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ

के ईमान वालों को छोड़ दे उस पर जिस पर तुम हो जब तक के अच्छे

الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ

से बुरे को अलग न कर दे। और अल्लाह ऐसा नहीं है के तुम्हें ग़ैब

عَلَى الْغَيْبِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِيٰ مِنْ رُّسُلِهِ مَنْ

पर मुत्तलेअ करे लेकिन अल्लाह मुन्तखब करते हैं अपने पैगम्बरों में से जिसे

يَشَاءُ ۚ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ وَإِنْ تَوَمَّنُوا

चाहते हैं। तो अल्लाह पर और उस के पैगम्बर पर ईमान ले आओ। और अगर तुम ईमान लाओगे

وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٤٩﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ

और मुत्तकी बनोगे तो तुम्हारे लिए भारी अज़ाब होगा। और वो लोग जो बुख़ल करते हैं

يَجْلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرٌ لَّهُمْ ۚ

उन चीजों में जो अल्लाह ने उन को अपने फ़ज़ल से दी हैं, वो ये न समझें के ये बुख़ल उन के लिए बेहतर है।

بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۚ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا بِهِ يَوْمَ

बल्के ये उन के लिए बुरा है। क़यामत के दिन अनक़रीब तौक बना कर पेहनाए जाएंगे उन को वो जिस के

الْقِيَمَةِ ۚ وَبِاللَّهِ مِيرَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ

साथ उन्होंने ने बुख़ल किया। और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की मीरास है।

وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۖ لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ

और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है। यकीनन अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन

الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ ۚ

ली जिन्होंने ने कहा के यकीनन अल्लाह फ़कीर है और हम ग़नी हैं।

سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْآنِبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ

अनक़रीब हम लिख रहे हैं उस को जो उन्होंने ने कहा और उन के अम्बिया को नाहक क़त्ल करने को (हम लिख रहे हैं)।

وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۖ ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ

और हम कहेंगे के आग का अज़ाब चखो। ये अज़ाब उन आमाल के बदले में है जिन को तुम्हारे

أَيْدِيكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۖ

हाथों ने आगे भेजा और ये के अल्लाह बन्दों पर ज़रा भी जुल्म करने वाला नहीं है।

الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَا إِلَّا نُوْمِنَ

वो लोग जिन्होंने ने कहा के यकीनन अल्लाह ने हमें ताकीदी हुक्म दिया है ये के हम ईमान न लाएं

لِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ ۚ قُلْ

किसी पैग़म्बर पर जब तक के वो हमारे पास ऐसी कुरबानी न लाए जिस को आग खा जाए। आप फरमा दीजिए के

قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّن قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالَّذِي

यकीनन तुम्हारे पास मुझ से पेहले पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए और उस चीज़ को भी ले कर आए

قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ

जो तुम ने कही। फिर तुम ने उन को क्यूं क़त्ल किया अगर सच्चे हो।

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ رَسُولٌ مِّن قَبْلِكَ ۚ جَاءُوا

फिर अगर वो आप को झुठलाएं तो यकीनन आप से पेहले पैग़म्बर झुठलाए गए जो

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۚ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿١٨٦﴾ كُلُّ نَفْسٍ

रोशन मोअजिज़ात और लिखी हुई किताबें और रोशन किताब ले कर आए। हर शख्स

ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۚ وَإِنَّمَا تُوَفَّقُونَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ

मौत का मज़ा चखने वाला है। और तुम्हें तुम्हारे सवाब क़यामत के दिन पूरे पूरे दिए जाएंगे।

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ ۖ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۚ

फिर जिस शख्स को आग से दूर रख गया और जन्नत में दाखिल किया गया तो यकीनन वो कामयाब हो गया।

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ﴿١٨٧﴾ لَسَبُلُونَ

और दुन्यवी ज़िन्दगी नहीं है मगर धोके का सामान। तुम्हें तुम्हारे

فِي أَمْوَالِكُمْ ۖ وَأَنْفُسِكُمْ ۖ وَلَسَمِعَنَّ مِنَ الَّذِينَ

मालों में और तुम्हारे नफ्सों में ज़रूर आजमाया जाएगा। और उन लोगों की तरफ से जिन को तुम से पेहले

أَوْتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ ۖ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا

किताब दी गई और मुशरिकीन की तरफ से बहोत सी ईज़ा पहोचाने वाली चीज़ें

أَذَى كَثِيرًا ۚ وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَلِكَ

ज़रूर सुनोगे। और अगर सब्र करोगे और मुत्तकी रहोगे, तो यकीनन ये

مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٨٨﴾ وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ

ताकीदी उमूर से है। और जब के अल्लाह ने उन लोगों से पुख्ता अहद लिया

الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ

जिन को किताब दी गई के तुम उस को लोगों के सामने ज़रूर बयान करोगे

وَلَا تَكْتُمُونَهُ ۚ فَنَبَذُوهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا

और तुम उस को छुपाओगे नहीं। फिर उन्होंने ने उस अहद को अपनी पीठ पीछे फेंक दिया और उस के बदले में

بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَبُئْسَ مَا يَشْتَرُونَ ﴿١٨٩﴾ لَا تَحْسَبَنَّ

थोड़ी कीमत ले ली। फिर बुरा है वो जिस को वो खरीद रहे हैं। आप गुमान न कीजिए

الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا أَتَوْا وَيُحِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا

वो लोग जो खुश होते हैं उन हरकतों पर जो वो कर रहे हैं और वो चाहते हैं के उन की तारीफ की जाए

بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِنَ الْعَذَابِ ۖ

ऐसे कामों में जो उन्होंने ने नहीं किए तो आप उन को अज़ाब से नजात में गुमान न कीजिए।

وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿۸۸﴾ وَبِاللّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की सलतनत है।

وَاللّٰهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿۸۹﴾ اِنَّ فِيْ خَلْقِ

और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। यकीनन आसमानों और

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاٰخْتِلَافِ الْيَلِّ وَالنَّهَارِ

ज़मीन के पैदा करने और रात और दिन के आने जाने में

لَاٰتٍ لَّاۤوِلٰى الْاَلْبَابِ ﴿۹۰﴾ الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ

अक़ल वालों के लिए निशानियां है। उन के लिए जो अल्लाह को याद करते हैं

قِيَمًا وَّوَقْعُوْدًا وَّ عَلَىٰ جُنُوْبِهِمْ وَّ يَتَفَكَّرُوْنَ

खड़े और बैठे और अपने पेहलू पर लेट कर और वो गौर व फिक्र करते हैं

فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ

आसमानों और ज़मीन के पैदा करने में। ऐ हमारे रब! तू ने इस को बेकार

هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۹۱﴾ رَبَّنَا

पैदा नहीं किया। तू पाक है, तो तू हमें आग के अज़ाब से बचा ले। ऐ हमारे रब!

اِنَّكَ مَنْ تَدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اٰخَرْتَهُ ط

यकीनन जिस को तू आग में दाखिल करेगा तो यकीनन तू ने उस को रूस्वा कर दिया।

وَمَا لِلظَّالِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۹۲﴾ رَبَّنَا اِنَّا سَمِعْنَا مُنَادِيًا

और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं होगा। ऐ हमारे रब! यकीनन हम ने एक मुनादी को सुना

يُنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ط رَبَّنَا

जो ईमान की आवाज़ लगा रहा था के ईमान ले आओ अपने रब पर, फिर हम ईमान ले आए। ऐ हमारे रब!

فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكْفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَقَّنَا

फिर तू हमारे गुनाह बख़्श दे और हम से हमारी बुराइयाँ दूर कर दे और तू हमें नेक लोगों के साथ वफ़ात

مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿۹۳﴾ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ

दे। ऐ हमारे रब! और तू हमें वो चीज़ अता फरमा जिस का तू ने हम से वादा किया तेरे पैग़म्बरों की ज़बानी

وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ط اِنَّكَ لَا تَخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۹۴﴾

और तू हमें क़यामत के दिन रूस्वा न कर। यकीनन तू वादे के खिलाफ नहीं करेगा।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ

फिर उन के रब ने उन की दुआ कबूल कर ली के मैं तुम में से किसी अमल करने वाले के अमल को ज़ायेअ नहीं

مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ ۖ بَعْضُكُمْ

कसंगा, वो मर्दों में से हो या औरतों में से। तुम में से एक

مِّنْ بَعْضٍ ۖ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ

दूसरे से हो। फिर वो लोग जिन्होंने हिजरत की और जो निकाल दिए गए अपने घरों से

وَأُودُوا فِي سَبِيلِي وَقَتَلُوا وَقَتِلُوا لَكُمُ

और जिन को ईजा दी गई मेरे रास्ते में और जिन्होंने क़िताल किया और वो क़त्ल किए गए तो मैं उन से उन की

عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَدْخَلْنَاهُمْ جَنَّتِ تَجْرِي

बुराइयाँ ज़ख़र दूर कर दूंगा और मैं उन्हें ज़ख़र दाखिल करूंगा ऐसी जन्नतों में जिन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ عِنْدَهُ

नेहरें बेहती होंगी। अल्लाह की तरफ से सवाब के तौर पर। और अल्लाह के पास

حُسْنُ الثَّوَابِ ۝ لَا يَغْرَتُكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ

बेहतरीन सवाब है। आप को धोके में न डाले उन काफ़िरों का

كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ۝ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ۖ ثُمَّ مَا لَهُمْ

मुल्कों में आना जाना। ये थोड़ा नफ़ा उठाना है, फिर उन का ठिकाना

جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْبِهَادُ ۝ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ

जहन्नम है। और वो बुरा बिछौना है। लेकिन वो लोग जो अपने रब से डरते हैं

لَهُمْ جَنَّتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ

उन के लिए बागात (जन्नतें) होंगे जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी जिन में वो हमेशा

فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ

रहेंगे, अल्लाह की तरफ से ज़ियाफ़त के तौर पर। और जो अल्लाह के पास है वो नेक लोगों के लिए

لِّلْأَبْرَارِ ۝ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ

बेहतर है। और यकीनन एहले किताब में से अलबत्ता वो भी हैं जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर

وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خَشَعَيْنَ لِلَّهِ ۖ

और उस किताब पर जो तुम्हारी तरफ उतारी गई और उस किताब पर जो उन की तरफ उतारी गई जो अल्लाह के लिए खुशूअ करने वाले हैं,

لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ

वो अल्लाह की आयात के बदले में थोड़ी कीमत नहीं लेते। उन के लिए

أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٩٩﴾

उन के रब के पास उन का अज्र है। यकीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाले हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا ۚ

ऐ ईमान वालो! सब्र करो और एक दूसरे को मज़बूत करो और पेहले से तय्यारी रखो।

وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

और अल्लाह से डरो ताके फलाह पाओ।

۲۰
ع
۱۱

رُؤُوسُهَا ۲۳

(۲) سُورَةُ النَّسَاءِ مَدَنِيَّةٌ (۹۲)

آيَاتُهَا ۱۷۶

और २४ रूकूअ हैं सूरह निसा मदीना में नाज़िल हुई इस में १७६ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ

ऐ इन्सानो! अपने उस रब से डरो जिस ने तुम्हें पैदा किया

مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا

एक जान से और उन्ही से उन की बीवी को पैदा किया और उन दोनों से

رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ

बहोत से मर्दों और बहोत सी औरतों को फैलाया। और डरो उस अल्लाह से जिस के वासते से तुम एक दूसरे

بِهِ وَالْأَرْحَامَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ۝

से सवाल करते हो और रिश्तेदारी तोड़ने से डरो। यकीनन अल्लाह तुम पर निगरां है।

وَأْتُوا الْيَتَىٰ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيثَ

और यतीमों को उन का माल दो और हलाल के बदले में हराम को (पाकीज़ा के बदले में गन्दे को)

بِالطَّيِّبِ ۚ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ ۚ

मत लो। और उन के मालों को अपने मालों के साथ मिला कर के मत खाओ।

إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ۝ وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا

यकीनन ये बड़ा गुनाह है। और अगर डरो इस से के तुम इन्साफ नहीं कर सकोगे

فِي الْيَتَمَىٰ فَاُنْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مِثْلِي

यतीमों के बारे में तो तुम निकाह करो उन औरतों से जो तुम्हें अच्छी लगें, दो दो से

وَتِلْكَ وَرُبْعٌ ۚ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةً

और तीन तीन से और चार चार से। फिर अगर डरो इस से के तुम अदल नहीं कर सकोगे तो फिर एक ही से निकाह करो

أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ ذَلِكَ آدْنَىٰ أَلَّا تَعُولُوا ۝

या अपनी बांदियों से। ये इस के ज़्यादा करीब है के बिल्कुल एक की तरफ तुम माइल न हो जाओ।

وَأْتُوا النِّسَاءَ صَدُقَتِهِنَّ نِحْلَةً ۚ فَإِنْ طِبْنَ لَكُمْ

और औरतों को उन के महर (खुशी से) दो। फिर अगर वो तुम्हें खुशदिली से उस में से

عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَّرِيئًا ۝ وَلَا تُؤْتُوا

कोई चीज़ दें तो तुम उस को खाओ, खुशगवार और आसानी से हलक़ से उतरने वाला होने की हालत में। और

السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَمًا

बेवकूफों को अपना वो माल मत दो जिन पर अल्लाह ने तुम्हें निगरां बनाया है

وَأَرْزُقُوهُمْ فِيهَا وَاكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا

और उस में से उन को खाना दो और उन को कपड़ा दो और उन से अच्छी

مَعْرُوفًا ۝ وَابْتَلُوا الْيَتَمَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ

बात कहो। और यतीमों का इम्तिहान लो यहां तक के जब वो निकाह की उम्र को पहुँच जाएं।

فَإِنْ اُنْسَمُ مِنْهُمْ رَشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ ۚ

फिर अगर तुम उन की तरफ से अक्लमन्दी को महसूस करो तो उन को उन के माल दे दो।

وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۚ وَمَنْ كَانَ

और उन को इस्राफ़ करते हुए मत खा जाओ और जल्दी करते हुए के कहीं वो बड़े हो जाएंगे। और जो

عَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ

मालदार हो उसे चाहिए के अफीफ़ रहे। और जो फकीर हो तो वो खा सकता है

بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ

उर्फ़ के मुताबिक़। फिर जब उन को उन के माल दो

فَاشْهَدُوا عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۝ لِلرِّجَالِ

तो तुम उन पर गवाह बना लो। और अल्लाह हिसाब लेने वाला काफी है। मर्दों के लिए

نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ

हिस्सा है उस माल में से जो वालिदैन् और रिश्तेदारों ने छोड़ा। और औरतों के लिए

نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ

हिस्सा है उस माल में से जो वालिदैन् और रिश्तेदारों ने छोड़ा, कलील माल में से

مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۖ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ۚ وَإِذَا حَضَرَ

या कसीर माल में से। मुकरर किए हुए हिस्से के तौर पर। और जब तकसीम

الْقِسْمَةَ أُولُوا الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينُ

के वक्त रिश्तेदार और यतीम और मिसकीन हाज़िर हों

فَارْزُقُوهُمْ مِنْهُ ۖ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝

तो उस में से उन को खाना दो और उन से अच्छी बात कहो।

وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكَوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعْفًا

और उन लोगों को भी डरना चाहिए के अगर वो अपने पीछे कमज़ोर औलाद छोड़ जाते

خَافُوا عَلَيْهِمْ ۚ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝

तो उन पर वो डरते। तो उन्हें चाहिए के वो अल्लाह से डरें और सीधी बात कहें।

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا

यकीनन वो लोग जो यतीमों के माल खाते हैं जुल्म से वो सिर्फ

يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ۝

अपने पेटों में आग भर रहे हैं। और अनकरीब वो आग में दाखिल होंगे।

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ

अल्लाह तुम्हें ताकीदी हुक्म देते हैं तुम्हारी औलाद के बारे में के मर्द के लिए दो औरतों के हिस्से के

الْأُنثَيَيْنِ ۚ فَإِنْ كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ

बराबर है। फिर अगर वो औरतें दो से ज़्यादा हों तो उन के लिए उस माल का

ثُلُثًا مَّا تَرَكَ ۚ وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ

दो तिहाई हिस्सा है जो मरने वाले ने छोड़ा। और अगर वो औरत एक हो तो उस को आधा हिस्सा मिलेगा।

وَلِلْبَوْنِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ

और मरने वाले के वालिदैन् में से हर एक के लिए छठा हिस्सा है उस माल में से जो मरने वाले ने छोड़ा

إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَةُ

अगर उस की औलाद हो। फिर अगर उस की औलाद न हो और उस के वालिदैन्

أَبَوُهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ

उस के वारिस हों तो उस की माँ को तिहाई मिलेगा। फिर अगर उस मरने वाले के भाई हों तो उस की माँ को

السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٌ ط

छठा हिस्सा मिलेगा वसीयत के बाद जिस की वसीयत मरने वाला करे और कर्ज अदा करने के बाद।

أَبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ

तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे, तुम नहीं जानते के नफे के एतेबार से उन में तुम से ज़्यादा करीब

نَفْعًا ۖ فَرِيضَةٌ مِّنَ اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا

कौन है। ये मुकर्रर किए हुए हिस्से के तौर पर है अल्लाह की तरफ से। यकीनन अल्लाह इल्म वाले,

حَكِيمًا ۝ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ

हिक्मत वाले हैं। और तुम्हारे लिए उस माल का आधा हिस्सा है जो तुम्हारी बीवियों ने छोड़ा अगर

لَمْ يَكُنْ لَهُنَّ وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمْ

उन की औलाद न हो। फिर अगर उन की औलाद हो तो तुम्हारे लिए

الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِيَنَّ بِهَا

चौथाई हिस्सा है उस माल में से जो बीवियाँ छोड़ें वसीयत के बाद जिस की वो वसीयत करें

أَوْ دَيْنٌ ط وَلَهُنَّ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ

और कर्ज अदा करने के बाद। और उन औरतों के लिए चौथाई हिस्सा है उस माल में से जो तुम शौहर छोड़ो अगर

لَكُمْ وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّنُونُ

तुम्हारी औलाद न हो। फिर अगर तुम्हारी औलाद हो तो उन्हें आठवां हिस्सा मिलेगा

مِمَّا تَرَكْتُمْ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٌ ط

उस माल में से जो तुम शौहरों ने छोड़ा वसीयत के बाद जिस की तुम वसीयत करो और कर्ज अदा करने के बाद।

وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَالَةً أَوْ امْرَأَةٌ وَلَهُ أَخٌ

और अगर कोई मर्द ऐसा हो के जिस का वारिस बना जा रहा हो कलाला होने की हालत में या कोई औरत हो इस हाल में

أَوْ أُخْتُ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ فَإِنْ كَانُوا

के उस का कोई भाई हो या कोई बहिन हो, तो उन में से हर एक को छठा हिस्सा मिलेगा। फिर अगर वो

أَكْثَرُ مِنْ ذَلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ

उस से ज्यादा हों तो वो सब तिहाई में शरीक होंगे वसीयत के बाद

وَصِيَّةٍ يُؤْطَى بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۚ غَيْرَ مُضَارٍّ ۖ وَصِيَّةً

जिस की वसीयत की जाए और कर्ज अदा करने के बाद, इस हाल में के किसी को ज़रूर नहीं पहुँचाया जाएगा। ये

مِّنَ اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ

अल्लाह की तरफ से ताकीदी हुक्म है। और अल्लाह इल्म वाले, हिल्म वाले हैं। ये अल्लाह की हुदूद हैं।

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرَى

और जो अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करेगा तो अल्लाह उसे जन्नतों में दाखिल करेंगे जिन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

नेहरे बहेती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। और ये भारी कामयाबी है।

وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ

और जो अल्लाह और उस के रसूल की नाफरमानी करेगा और उस की हुदूद से तजावुज़ करेगा, तो अल्लाह उसे आग में

نَارًا خَالِدًا فِيهَا ۚ وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ وَالَّتِي

दाखिल करेंगे, उस में वो हमेशा रहेगा। और उस के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब होगा। और जो

يَأْتِيَنَّ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا

औरतें तुम्हारी औरतों में से बेहयाई (यानी जिना) का इर्तिक़ाब करें तो तुम उन के

عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةٌ مِّنْكُمْ ۚ فَإِنْ شَهِدُوا فَاْمْسِكُوهُنَّ

खिलाफ तुम में से चार को गवाह बना लो। फिर अगर वो गवाह गवाही दें तो उन औरतों को रोक लो घरों में

فِي الْبُيُوتِ حَتَّى يَتَوَقَّهِنَّ الْبُيُوتُ أَوْ يُجْعَلَ اللَّهُ

यहां तक के उन को मौत आ जाए या अल्लाह उन के लिए

لَهُنَّ سَبِيلًا ۝ وَالَّذِينَ يَأْتِيْنَهَا مِنْكُمْ فَادُّوهُمْ

कोई दूसरा रास्ता पैदा कर दे। और तुम में से जो मर्द इस बेहयाई को करें (लवातत) तो उन दोनों को ईज़ा दो।

فَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا ۚ إِنَّ اللَّهَ

फिर अगर वो तौबा करें और इस्लाह करें तो उन से ऐराज़ कर लो। यकीनन अल्लाह

كَانَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ۝ إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ

तौबा कबूल करने वाला, निहायत रहम वाला है। सिर्फ उन लोगों की तौबा कबूल करना अल्लाह के ज़िम्मे है

يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ

जो बुरे काम करते हैं नावाक़िफ़ीयत से, फिर करीब ही में तौबा कर

مِنْ قَرِيبٍ فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ

लेते हैं, तो अल्लाह उन की तौबा क़बूल करेंगे। और अल्लाह

عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ

इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और उन लोगों की तौबा क़बूल नहीं है जो बुराइयाँ करते

السَّيِّئَاتِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ

रेहते हैं। यहां तक के जब उन में से किसी एक की मौत का वक़्त करीब आ जाता है, तब वो केहता है के

إِنِّي تُوبْتُ الْإِنِّ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ

मैं अब तौबा करता हूँ और न उन लोगों की तौबा क़बूल की जाती है जो मरते हैं इस हाल में के वो काफ़िर होते हैं।

أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ يَأَيُّهَا

हम ने उन के लिए दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर रखा है। ऐ

الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ

ईमान वालो! तुम्हारे लिए हलाल नहीं है के औरतों के ज़बर्दस्ती वारिस

كُرْهًا ۚ وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ

बन जाओ। और उन औरतों को मत रोको ताके तुम ले लो उस माल का कुछ हिस्सा

مَا أَتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ

जो तुम ने उन औरतों को दिया है, मगर ये के वो खुली बेहयाई करें।

وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ

और उन के साथ ज़िन्दगी गुज़ारो भलाई के मुताबिक। फिर अगर उन्हें नापसन्द करो

فَعَسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا

तो शायद के तुम किसी चीज़ को नापसन्द करो और अल्लाह ने उस में बहोत सारी भलाई

كَثِيرًا ۝ وَإِنْ أَرَدْتُمْ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ

रखी हो। और अगर तुम एक बीवी की जगह दूसरी बीवी बदलने का इरादा

زَوْجٍ ۚ وَآتَيْتُمْ أَحَدَهُنَّ قِطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ

करो, इस हाल में के तुम ने उन में से किसी एक को ढेरों माल दिया हो, तब भी उस में से कुछ

شَيْئًا ۖ اتَّخَذُوْنَهُ بُهْتَانًا ۚ وَإِنَّهَا مُبِينٌ ۚ وَ كَيْفَ

मत लो। क्या तुम उस को लेते हो बोहतान होने की हालत में और खुला हुवा गुनाह होने की हालत में? और तुम कैसे

تَأْخُذُوْنَهُ وَقَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ

उस को लेते हो हालांकि तुम में से एक दूसरे तक पहुँच चुका है

وَأَخَذَنَ مِنْكُمْ مِّيثَاقًا غَلِيظًا ۚ وَلَا تَنْكِحُوا

और उन औरतों ने तुम से भारी अहद लिया है? और निकाह मत करो

مَا نَكَحَ آبَاؤُكُمْ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ

उन औरतों से जिन से तुम्हारे बाप दादा ने निकाह किया हो मगर वो जो पेहले हो चुका।

إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً ۚ وَمَقْتًا ۚ وَسَاءَ سَبِيلًا ۚ

यकीनन ये बेहयाई है और अल्लाह की नफरत का मूजिब है और बुरा रास्ता है।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَتُكُمْ

तुम पर हराम की गई तुम्हारी माएं और तुम्हारी बेटियाँ और तुम्हारी बेहनें

وَعَمَّتُكُمْ وَخَلَّتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ وَبَنَاتُ الْأُخْتِ

और तुम्हारी फूफियाँ और तुम्हारी खालाएं और भाई की बेटियाँ और बेहेन की बेटियाँ

وَأُمَّهَاتُ النِّسَاءِ الَّتِي أَزْجَعْنَكُمْ وَأَخَوَتُكُمْ مِنَ الرِّضَاعَةِ

और तुम्हारी वो माएं जिन्होंने ने तुम्हें दूध पिलाया और तुम्हारी रज़ाई बेहनें

وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ وَرَبَائِبُكُمُ الَّتِي فِي حُجُورِكُمْ

और तुम्हारी बीवियों की माएं और तुम्हारी रबीबा औलाद, जो तुम्हारी परवरिश में हैं

مِّنْ نِّسَائِكُمُ الَّتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۖ فَإِنْ لَّمْ تَكُونُوا

तुम्हारी बीवियों की तरफ से, (उन बीवियों की तरफ से) जिन से तुम ने दुखूल किया (सोहबत की)। फिर अगर तुम

دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۖ وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ

ने उन से दुखूल न किया हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है। और हराम की गई तुम्हारे उन बेटों की बहुरां

الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ ۖ وَأَنْ تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ

जो तुम्हारी पुशतों से हैं। और हराम किया गया ये के तुम जमा करो दो बेहनों को

إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۚ

मगर वो जो पेहले हो चुका। यकीनन अल्लाह बख्शाने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ

और हराम की गई औरतों में से शौहर वाली औरतें मगर तुम्हारी बांदियाँ।

كُتِبَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ ۚ وَاحِلَ لَكُمْ مَا وَرَاءَ ذَلِكَ

ये तुम पर अल्लाह की तरफ से लिखा हुआ (फर्ज किया हुआ) है। और तुम्हारे लिए उस के अलावा (औरतें) हलाल हैं

أَنْ تَبْتَغُوا بِأَمْوَالِكُمْ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسْفِحِينَ ۚ

इस तरह के तलब करो अपने माल के ज़रिए इस हाल में के तुम निकाह करने वाले हो, ज़िना करने वाले न हो।

فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهِ مِنْهُنَّ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ

फिर उन में से जिन से तुम ने (सोहबत से) फाइदा उठाया तो उन को उन का महर दे दो जो

فَرِيضَةً ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا تَرْضَيْتُمْ بِهِ

मुकर्रर किया था। और तुम पर कोई गुनाह नहीं है उस में जिस पर आपस में तुम राज़ी हो जाओ

مِنْ بَعْدِ الْفَرِيضَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

मुकर्रर कर लेने के बाद। यकीनन अल्लाह इल्म वाले, हिकमत वाले हैं।

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَنْكِحَ الْمُحْصَنَاتِ

और तुम में से जो ताकत न रखे इस की के वो पाकदामन ईमान वाली औरतों से

الْمُؤْمِنَاتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيَاتِكُمْ

निकाह करे, तो फिर तुम्हारी लौंडियाँ (सही), तुम्हारी मोमिन बांदियों

الْمُؤْمِنَاتِ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِكُمْ ۚ بَعْضُكُمْ

में से। और अल्लाह खूब जानता है तुम्हारे ईमान को। तुम में से एक

مِّنْ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوهُنَّ بِإِذْنِ أَهْلِهِنَّ وَآتُوهُنَّ

दूसरे से हो। तो उन से निकाह करो उन के मालिकों की इजाज़त से और उन को

أُجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مُسْفِحَاتٍ

उन का महर दो उर्फ के मुताबिक, इस हाल में के वो पाकदामनी इखतियार करने वाली हों और ज़िना करने वाली न हों

وَلَا مُتَّخَذَاتٍ أَخْدَانٍ ۚ فَإِذَا أَحْصَيْنَ فَإِنْ أَتَيْنَ

और चुपके चुपके दोस्त बनाने वाली न हों। फिर जब वो बांदियाँ, शादी शुदा होने के बाद, फिर अगर वो

بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ ۚ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ ۚ

ज़िना का इर्तिकाब करें तो उन बांदियों पर उस सज़ा का आधा हिस्सा है जो आज़ाद पाकदामन औरतों

الْعَذَابُ ۖ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۚ

पर है। ये उस के लिए है जो तुम में से जिना की मशक्कत में पड़ने से डरता हो।

وَأَنْ تَصْبِرُوا خَيْرٌ لَّكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٥﴾ يُرِيدُ

और ये के सब्र करो ये तुम्हारे लिए बेहतर है। और अल्लाह बख्शाने वाले, निहायत रहम वाले हैं। अल्लाह चाहते

اللَّهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِينَ

हैं के तुम्हारे लिए साफ साफ बयान करें और तुम्हें हिदायत दें उन लोगों के रास्ते की

مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٦﴾ وَاللَّهُ

जो तुम से पेहले थे और तुम्हारी तौबा कबूल करें। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और अल्लाह

يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْكُمْ ۚ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ

चाहते हैं के तुम्हारी तौबा कबूल करें। और वो लोग जो ख्वाहिशात का इत्तिबा

الشَّهَوَاتِ أَنْ تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا ﴿١٧﴾ يُرِيدُ اللَّهُ

करते हैं वो ये चाहते हैं के तुम बहोत ज़्यादा माइल हो जाओ। अल्लाह ये चाहते हैं

أَنْ يُخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْإِنْسَانُ ضَعِيفًا ﴿١٨﴾

के तुम से तखफीफ करें। और इन्सान कमजोर पैदा किया गया है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ

ऐ ईमान वालो! अपने माल आपस में बातिल तरीके से

بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۚ

मत खाओ, मगर ये के वो तुम्हारी आपस की रज़ामन्दी से तिजारत हो।

وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿١٩﴾

और अपने आप को क़त्ल मत करो। यकीनन अल्लाह तुम पर मेहरबान है।

وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ عُدُوًّا وَ طُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيهِ

और जो उस को करेगा ज़्यादती और जुल्म से तो हम उसे आग में दाखिल

نَارًا ۖ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿٢٠﴾ إِنَّ تَجْتَنِبُوا

करेंगे। और ये अल्लाह पर आसान है। अगर तुम बचोगे

كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ

उन बड़े गुनाहों से जिन से तुम्हें मना किया जा रहा है तो हम तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देंगे और तुम्हें

مُدْخَلًا كَرِيْمًا ۝ وَلَا تَتَمَوَّا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ

इज्जत की जगह में दाखिल करेंगे। और उस की तमन्ना मत करो जिस के ज़रिए तुम में से एक को

بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ ط لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوا ط

दूसरे पर अल्लाह ने फज़ीलत दी है। मर्दों के लिए हिस्सा है उल माल में से जो वो कमाएं।

وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ط وَسَأَلُوا اللَّهَ

और औरतों के लिए हिस्सा है उस माल में से जो वो कमाएं। और अल्लाह से उस के

مِنْ فَضْلِهِ ط إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝

फज़ल का सवाल करो। यकीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं।

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِي مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ ط

और हर एक के लिए हम ने वारिस मुक़रर कर दिए हैं उस माल के जो वालिदैन और रिश्तेदारों ने छोड़ा।

وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ فَآتُوهُمْ نَصِيبَهُمْ ط

और उन्होंने ने छोड़ा जिन से तुम ने अक़द (अहद) किया है, तो तुम उन को उन का हिस्सा दो।

إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝ الرِّجَالُ

यकीनन अल्लाह हर चीज़ को देख रहे हैं। मर्द

قَوْمُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ

निगरां हैं औरतों पर इस वजह से के अल्लाह ने उन में से बाज़ को बाज़ पर

عَلَى بَعْضٍ وَبِمَا أَنْفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ ط فَالْصَّالِحَاتُ

फज़ीलत दी है और इस वजह से के वो अपने अमवाल में से खर्च करते हैं। तो नेक औरतें वो हैं जो

قَتَلَتْ حَفِظَتْ لِلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ ط وَالَّتِي

खुशूअ करने वाली हों और ग़ैबत में हिफ़ाज़त करने वाली हों उस में जिस पर अल्लाह ने मुहाफिज़ बनाया है। और जिन

تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ

औरतों की नाफरमानी का तुम्हें अन्देशा हो, तो उन को नसीहत करो और उन को अलग छोड़ दो

فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوهُنَّ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوا

बिस्तरों में और तुम उन को मारो (अय्यूब अलैहिस्सलाम की तरह)। फिर अगर वो तुम्हारा केहना मान लें तो तुम उन के

عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا ط إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيْمًا كَبِيْرًا ۝

खिलाफ हुज्जत तलाश मत किया करो। यकीनन अल्लाह बरतर है, बड़ा है।

وَأِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا

और अगर तुम्हें अन्देशा हो आपस में उन दोनों के झगड़े का तो एक हकम भेजो शौहर के

مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا ۚ إِنْ يَرِيدَا إِصْلَاحًا

कुम्बे की तरफ से और एक हकम भेजो बीवी के कुम्बे की तरफ से। अगर वो दोनों हकम सुल्ह कराने का इरादा करेंगे

يُوفِّقَ اللَّهُ بَيْنَهُمَا ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا ﴿٣٥﴾

तो अल्लाह उन के दरमियान मुवाफकत डाल देंगे। यकीनन अल्लाह इल्म वाले, बाखबर हैं।

وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تَشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا ۚ وَبِالْوَالِدَيْنِ

और अल्लाह की इबादत करो और उस के साथ किसी चीज़ को शरीक मत ठेहराओ और वालिदैन् के साथ

إِحْسَانًا ۚ وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ

हुस्ने सुलूक करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मिसकीनों के साथ

وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ

और रिश्तेदार पड़ोसी और अजनबी पड़ोसी के साथ और पेहलू वाले साथी

بِالْجُنُبِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ

के साथ और रास्ता चलते मुसाफिर के साथ और अपने गुलाम बांदियों के साथ।

إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ مُخْتَلًا ۚ فَخُورًا ﴿٣٦﴾

यकीनन अल्लाह उस शख्स से महब्बत नहीं करते जो अकड़ने वाला, फखर करने वाला है।

الَّذِينَ يَبْخُلُونَ ۚ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ

वो लोग जो बुखल करते हैं और इन्सानों को बुखल का हुक्म देते हैं

وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَأَعْتَدْنَا

और छुपाते हैं उस को जो अल्लाह ने अपने फज़ल से उन को दिया है। और हम ने काफिरों के लिए

لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٣٧﴾ وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ

खुस्वा करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है। और जो अपने माल

أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ

खर्च करते हैं लोगों के दिखावे के लिए और अल्लाह पर ईमान नहीं रखते

وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَمَنْ يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا

और आखिरी दिन पर ईमान नहीं रखते। और शैतान जिस का साथी बन गया

فَسَاءَ قَرِينًا ﴿٣٨﴾ وَمَا ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ

तो वो बुरा साथी है। और उन पर क्या बोझ होता अगर वो अल्लाह पर ईमान लाते

وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ ۖ وَكَانَ

और आखिरी दिन पर ईमान लाते और खर्च करते उस माल में से जो अल्लाह ने उन को रोज़ी के तौर पर दिया। और

اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا ﴿٣٩﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۖ

अल्लाह उन को खूब जानने वाले हैं। यकीनन अल्लाह ज़री भर जुल्म नहीं करते।

وَإِنْ تَكُ حَسَنَةً يُضْعِفُهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَدُنْهُ

और अगर कोई एक नेकी होगी तो अल्लाह उसे कई गुना करेंगे और अपनी तरफ से भारी अज़्र

أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٤٠﴾ فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ

देंगे। फिर क्या हाल होगा जब के हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएंगे

وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلَاءِ شَهِيدًا ﴿٤١﴾ يَوْمَذِ يَوْمُ الَّذِينَ

और हम आप को उन के खिलाफ गवाह बना कर लाएंगे। उस दिन तमन्ना करेंगे वो लोग

كَفَرُوا وَعَصُوا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّى بِهِمُ الْأَرْضُ ۖ

जो काफिर हैं और जिन्होंने ने रसूल की नाफरमानी की के काश के उन पर ज़मीन बराबर कर दी जाती।

وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ حَدِيثًا ﴿٤٢﴾ يُأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

और अल्लाह से वो किसी बात को छुपा नहीं सकेंगे। ऐ ईमान वालो!

لَا تَقْرُبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَرَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا

नमाज़ के करीब मत जाओ इस हाल में के तुम नशे में हो यहां तक के तुम समझने लगे

مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ

उस को जो बोल रहे हो और न जनाबत की हालत में (नमाज़ के करीब जाओ) मगर रास्ता उबूर करते हुए

حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ

जब तक के गुस्ल न कर लो। और अगर बीमार हो या सफर पर हो या तुम में से

أَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَايَةِ أَوْ لِمَسْتَمِ النَّسَاءِ

कोई कज़ाए हाजत से आया हो या तुम ने औरतों से मुक़ारबत की हो

فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا

फिर पानी न पाओ तो पाक मिट्टी पर तयम्मूम कर लो, फिर अपने चेहरों

وَقَفَّ الْيَوْمَ عَلَىٰ اللَّهِ عَلَيْهِ وَالْأَهْلُ وَسَلَّمَ

وَقَفَّ

يُجْزَوْهُكُمْ وَأَيِّدِيكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٣٣﴾

और हाथों पर फेर लो। यकीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा मुआफ करने वाला, बहोत ज़्यादा बख्शने वाला है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ

क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जिन को किताब का एक हिस्सा दिया गया

يَشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ وَيُرِيدُونَ أَن تَضِلُّوا السَّبِيلَ ﴿٣٤﴾

जो गुमराही को खरीदते हैं और ये चाहते हैं के तुम रास्ते से भटक जाओ।

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ ۖ وَكَفَى بِاللَّهِ وَلِيًّا ۚ وَكَفَى

और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को खूब जानते हैं। और अल्लाह काफी कारसाज़ हैं। और अल्लाह

بِاللَّهِ نَصِيرًا ﴿٣٥﴾ مِنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ

काफी मददगार हैं। उन लोगों में से जो यहूदी हैं वो कलिमात को अपने मआनी

عَنْ مَوَاضِعِهِ وَ يَقُولُونَ سَمِعْنَا وَ عَصَيْنَا

से फेरते हैं और कहते हैं

وَاسْمِعْ غَيْرَ مُسْمِعٍ وَ رَاعِنَا لِيَّا بِالسِّنْتِهِمْ وَطَعْنَا

और (रा'यिना) और दीन में (रा'यिना) कहते हैं अपनी ज़बानों को मरोड़ते हुए (यानी) और (रा'यिना) कहते हैं और (रा'यिना) कहते हैं

فِي الدِّينِ ۖ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا

समि'ना और (रा'यिना) कहते हैं अपनी ज़बानों को मरोड़ते हुए (यानी) और (रा'यिना) कहते हैं

وَاسْمِعْ وَانْظُرْنَا لَكَ خَيْرًا لَهُمْ وَأَقْوَمًا

और (रा'यिना) कहते हैं अपनी ज़बानों को मरोड़ते हुए (यानी) और (रा'यिना) कहते हैं

وَلَكِن لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٣٦﴾

लेकिन अल्लाह ने उन के कुफ्र की वजह से उन पर लानत फरमाई, फिर वो ईमान नहीं लाएंगे मगर थोड़े।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ آمِنُوا بِمَا نَزَّلْنَا

ऐ एहले किताब! ईमान ले आओ उस कुरआन पर जिस को हम ने उतारा,

مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّن قَبْلِ ۚ إِنَّ نَظِيرَ

जो सच्चा बतलाने वाला है उस तौरात को जो तुम्हारे साथ है इस से पेहले के हम चेहरों को

وُجُوهًا فَزَرَدَهَا عَلَىٰ أَدْبَارِهَا أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا

मिटा दें, के हम उन चेहरों को उस के पीछे की तरफ कर दें या हम उन पर लानत करें जैसा

لَعَنَّا أَصْحَابَ السَّبْتِ ۖ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿٣٤﴾

के हम ने सनीचर वालों पर लानत की। और अल्लाह का हुक्म पूरा हो कर रहा।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَ يَغْفِرُ مَا دُونَ

यकीनन अल्लाह मग़फ़िरत नहीं करेंगे इस की के उस के साथ शरीक ठेहराया जाए और मग़फ़िरत कर देंगे उस के

ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ افْتَرَىٰ

अलावा जिस के लिए चाहेंगे। और जो अल्लाह के साथ शरीक ठेहराएगा तो यकीनन उस ने भारी गुनाह का

إِثْمًا عَظِيمًا ﴿٣٥﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنْفُسَهُمْ ۖ

इत्तिफाब किया। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जो अपने आप को मुज़क्का (पाक व साफ) बता रहे हैं?

بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٣٦﴾

बल्के अल्लाह मुक़द्दस बनाते हैं जिसे चाहते हैं और तागे के बराबर भी उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा।

أَنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۖ وَكَفَىٰ

आप देखिए के कैसे वो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं। और यही

بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا ﴿٣٧﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا

सरीह गुनाह के लिए काफी है। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों को जिन को किताब का

مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ

एक हिस्सा दिया गया वो ईमान रखते हैं बुत पर और शैतान पर

وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هَؤُلَاءِ أَهْدَىٰ

और केहते हैं काफ़िरो के मुतअल्लिक के ये ईमान वालों की

مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا سَبِيلًا ﴿٣٨﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ

बनिस्बत ज़्यादा सीधी राह पर हैं। ये वो लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत

اللَّهُ ۖ وَمَنْ يَلْعَنِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ نَصِيرًا ﴿٣٩﴾

फरमाई। और जिस पर अल्लाह लानत फरमाए तो आप उस के लिए कोई मददगार हरगिज़ नहीं पाओगे।

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَإِذَا لَا يُؤْتُونَ

क्या उन के पास सलतनत का कोई हिस्सा है? फिर तब तो वो लोगों को खजूर की गुठली के सूराख के बराबर

النَّاسَ نَقِيرًا ﴿٤٠﴾ أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَىٰ

भी नहीं देंगे। क्या उन्हें लोगों से हसद है उस पर

مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۖ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ

जो अल्लाह ने अपने फज़ल से उन को दिया है। यकीनन हम ने आले इब्राहीम

إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَهُمْ مُلْكًا

को किताब और हिक्मत दी और हम ने उन्हें मुल्के अज़ीम दिया।

عَظِيمًا ۝ فَمِنْهُمْ مَّنْ آمَنَ بِهِ وَ مِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ

फिर उन में से कुछ लोग उस पर ईमान ले आए और उन में से कुछ उस से दूर

عَنْهُ ۖ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا

भागे। और जहन्नम जलाने के लिए काफी है। यकीनन वो लोग जिन्होंने हमारी आयात के साथ

بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا ۖ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ

कुफ़ किया, अनक़रीब हम उन्हें आग में दाखिल करेंगे। जब कभी उन की खालें जल जाएंगी,

بَدَّلْنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۖ

तो हम उस के अलावा और खाल से बदल देंगे ताके वो अज़ाब चखते रहें।

إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا

यकीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। और वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल

الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا

करते रहे, अनक़रीब हम उन्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल करेंगे जिन के नीचे से

الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ

नेहरे बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। उन के लिए उन में पाक साफ बीवियाँ

مُطَهَّرَةٌ ۖ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا ۝ إِنَّ اللَّهَ

होगी। और हम उन्हें घने साए में दाखिल करेंगे। यकीनन अल्लाह

يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَوَدُّوا الْأَمْنَتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا ۖ

तुम्हें हुक्म देते हैं इस का के अमानत वालों की अमानतें अदा कर दो।

وَإِذَا حَكُمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ۖ

और जब तुम लोगों के दरमियान फैसला करो तो इन्साफ के साथ फैसला करो।

إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا

यकीनन अल्लाह तुम्हें कितनी अच्छी चीज़ की नसीहत करते हैं। यकीनन अल्लाह सुनने वाले,

بَصِيرًا ﴿٥٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ देखने वाले हैं। ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअत करो
وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِيَ الْأَمْرِ مِنْكُمْ और रसूल की इताअत करो और तुम में से उलुल अम्र की इताअत करो।
فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ फिर अगर तुम किसी चीज़ में आपस में झगड़ो तो उस को पेश करो अल्लाह और रसूल की तरफ
إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ अगर ईमान रखते हो अल्लाह पर और आखिरी दिन पर। ये
خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٥٩﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ बेहतर है और अच्छे अन्जाम वाला है। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों को
يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ जो दावा करते हैं के वो ईमान रखते हैं उस कुरआन पर जो आप की तरफ उतारा गया और उन किताबों पर जो आप
مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ से पेहले उतारी गई, वो ये चाहते हैं के वो फैसला ले जाएं शैतान के पास
وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ ۖ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ हालांके उन्हें हुक्म दिया गया है के वो उस के साथ कुफ्र करें। और शैतान तो ये चाहता है
أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٦٠﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا के वो उन्हें दूर की गुमराही में गुमराह कर दे। और जब उन से कहा जाता है के आओ
إِلَى مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنْفِقِينَ उस की तरफ जो अल्लाह ने उतारा और रसूल की तरफ आओ, तो आप मुनाफिकीन को देखोगे
يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا ﴿٦١﴾ فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُمْ के वो आप से ऐराज़ करते हैं। फिर क्या हाल होगा जब उन को मुसीबत
مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ شُمْ جَاءُوكَ पहोंचेगी उन आमाल की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे, फिर वो आप के पास आते हैं
يَحْلِفُونَ ۖ بِاللَّهِ إِنَّ أَرْدُنَا إِلَّا إِحْسَانًا अल्लाह की कस्में खाते हुए के हम ने तो इरादा नहीं किया मगर नेकी का

وَتَوْفِيقًا ﴿١٢﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا

और आपस में मुवाफकत का। यही लोग हैं के अल्लाह खूब जानते हैं उसे जो

فِي قُلُوبِهِمْ ۚ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ

उन के दिलों में है। इस लिए आप उन की तरफ से पैराज़ कीजिए और उन्हें नसीहत कीजिए और उन के

فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ﴿١٣﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ

सामने उन के बारे में कौले बलीग (दिल में उतरने वाली बात) कहिए। और हम ने कोई रसूल नहीं भेजे

إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ

मगर इस लिए ताके उन की इताअत की जाए अल्लाह के हुक्म से। और जब उन्होंने ने अपनी जानों पर जुल्म कर लिया था

جَاءُوكَ فَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۖ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ الرَّسُولُ

तो अगर वो आप के पास आते, फिर अल्लाह से इस्तिगफार करते ओर उन के लिए रसूल भी इस्तिगफार करते

لَوْجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ﴿١٤﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ

तो अलबत्ता वो अल्लाह को बहोत ज़्यादा तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम करने वाला पाते। फिर आप के रब की क़सम! बिल्कुल ये लोग

حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا

मोमिन नहीं हो सकते जब तक के वो आप को हकम न बनाएं उन के आपस के झगड़ों में, फिर वो अपने दिलों

فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿١٥﴾

में कोई तंगी भी न पाएं आप के फैसले से और दिल से मान लें।

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنْ اقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ أَوِ اخْرُجُوا

और अगर हम उन पर ये फर्ज़ कर देते के अपने आप को हलाक कर दो या अपने

مِنْ دِيَارِكُمْ مَا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِّنْهُمْ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ

घरों से निकल जाओ तो उस को न करते मगर उन में से थोड़े लोग। और अगर वो

فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَأَشَدَّ

करेंगे वो जिस की उन्हें नसीहत की जा रही है तो उन के लिए बेहतर होगा और ज़्यादा साबित क़दम

تَثْبِيثًا ﴿١٦﴾ وَإِذَا لَاتَيْنَهُمْ مِنْ لَدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٧﴾

रखने वाला होगा। और तब तो हम उन्हें अपनी तरफ से अज़े अज़ीम देंगे।

وَلَهَدَيْنَهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿١٨﴾ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ

और हम उन्हें सिराते मुस्तक़ीम की रहनुमाई करेंगे। और जो अल्लाह और रसूल की

وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ

इताअत करेगा तो ये लोग उन के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इन्आम फरमाया

مِّنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ ۚ

अम्बिया, और सिद्दीकीन, और शुहदा और सालिहीन में से।

وَحَسَنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ ۝

और रिफाकत के लिए ये लोग अच्छे हैं। ये अल्लाह की तरफ से फज़ल है।

ع ۹

وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عَلِيمًا ۚ يَٰ أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا

और अल्लाह काफी जानने वाला है। ऐ ईमान वालो! अपने बचाव

حُذْرَكُمْ فَانْفِرُوا ثُبَاتٍ أَوْ الْفِرُوا جَمِيعًا ۝

के हथ्यार ले लो, फिर छोटी छोटी जमाअतें बन कर निकलो या तुम इकट्ठे निकलो।

وَإِنَّ مِنْكُمْ لَمَنٌ لَّيَبِطُ ۚ فَإِنْ أَصَابَتْكُمْ مُّصِيبَةٌ قَالِ

और यकीनन तुम में से कुछ लोग वो हैं जो देर लगाते हैं। फिर अगर तुम्हें मुसीबत पहोंचे तो वो केहते हैं

قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيَّ إِذْ لَمْ أَكُنْ مَعَهُمْ شَهِيدًا ۝

के अल्लाह ने मेरे ऊपर इन्आम फरमाया के मैं उन के साथ मौजूद नहीं था।

وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللَّهِ لَيَقُولَنَّ كَأَن

और अगर तुम्हें अल्लाह का फज़ल पहोंचे तो वो ज़रूर केहेगा, गोया

لَمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يَّلِيَّتَنِي كُنْتُ مَعَهُمْ

तुम्हारे और उस के दरमियान दोस्ती थी ही नहीं, (वो केहेगा के) काश के मैं उन के साथ होता,

فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝ فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

फिर मैं भी भारी कामयाबी से कामयाब हो जाता। फिर चाहिए के अल्लाह के रास्ते में क़िताल करें

الَّذِينَ يَشْرُونَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۚ وَمَنْ

वो लोग जो आखिरत के मुक़ाबले में दुन्यवी ज़िन्दगी को बेच देते हैं। और जो भी

يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ

अल्लाह के रास्ते में क़िताल करे, फिर वो क़त्ल हो जाए या ग़ालिब आए तो हम

نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي

अनक़रीब उसे भारी अज़्र देंगे। और तुम्हें क्या हुवा के तुम अल्लाह के रास्ते में क़िताल

سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ	नहीं करते हालांके मर्द और औरतें और बच्चे जिन्हें कमजोर कर के
وَالْوِلْدَانَ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَذِهِ	रखा गया है जो केहते हैं के ए हमारे रब! हमें इस बस्ती से निकाल जिस के बसने
الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا ۖ وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ	वाले ज़ालिम हैं। और हमारे लिए अपनी तरफ से हिमायती मुतअय्यन
وَلِيًّا ۖ وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا ۝	फरमा। और हमारे लिए अपनी तरफ से नुसरत करने वाला मुतअय्यन फरमा।
الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ	वो लोग जो ईमान लाए वो अल्लाह के रास्ते में क़िताल करते हैं। और जो
كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا	काफिर हैं वो शैतान के रास्ते में क़िताल करते हैं, तो तुम शैतान के
أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ۝	दोस्तों से क़िताल करो। यकीनन शैतान का मक्र कमजोर है।
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ	क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों को जिन से कहा गया था के तुम अपने हाथ रोके रहो
وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمْ	और नमाज़ काइम करो और ज़कात दो। फिर जब उन पर क़िताल फर्ज़
الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ	किया गया तो अचानक उन में से एक जमाअत इत्सानों से डरने लगी अल्लाह से डरने की
اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۖ وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ	तरह या उस से भी ज़्यादा। और वो केहते हैं के ऐ हमारे रब! तू ने हम पर क़िताल
عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۖ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ قُلْ	क्यूं फर्ज़ किया? तू ने हमें करीबी मुद्दत तक (जीने की) क्यूं मोहलत नहीं दी? आप फरमा दीजिए के
مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ ۖ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقَىٰ ۝	दुनिया का फाइदा थोड़ा है। और आखिरत बेहतर है उस शख्स के लिए जो मुत्तकी है।

وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٤٨﴾ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَدْرِكَكُمُ

और तुम पर एक तागे के बराबर भी जुल्म नहीं किया जाएगा। तुम जहां कहीं भी होगे तो मौत तुम्हें

الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ مُّشِيدَةٍ ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ

पकड़ लेगी अगरचें तुम ऊँचे ऊँचे किल्लों में हो। और अगर उन्हें कोई

حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ

भलाई पहुँचती है तो केहते हैं के ये अल्लाह की तरफ से है। और अगर उन्हें कोई मुसीबत

سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِكَ ۖ قُلْ كُلُّ مِّنْ

पहुँचती है तो केहते हैं के ये आप की तरफ से है। आप फरमा दीजिए के सब कुछ

عِنْدِ اللَّهِ ۖ فَمَالِ هَؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ

अल्लाह की तरफ से है। फिर इस कौम को क्या हुवा के वो बात समझने के करीब भी नहीं

حَدِيثًا ﴿٤٩﴾ مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۖ

होते। (ऐ मुखातब!) तुझे जो भलाई पहुँचे वो अल्लाह की तरफ से है।

وَمَا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنَ نَفْسِكَ ۖ وَأَرْسَلْنَاكَ

और तुझे जो मुसीबत पहुँचे वो तेरी अपनी तरफ से है। और हम ने आप को

لِلنَّاسِ رَسُولًا ۖ وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿٥٠﴾ مَنْ يُطِيعِ

तमाम इन्सानों के लिए रसूल बना कर भेजा है। और अल्लाह काफी गवाह है। जो रसूल की इताअत

الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ ۖ وَمَنْ تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ

करेगा तो यकीनन उस ने अल्लाह की इताअत की। और जो मुंह मोड़ेगा तो फिर हम ने आप को उन पर निगरां बना कर

عَلَيْهِمْ حَفِظًا ﴿٥١﴾ وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ ۖ فَإِذَا بَرَزُوا

नहीं भेजा। और ये केहते हैं के हमारा काम तो खुशी से बात को मानना है। लेकिन जब वो आप के पास से बाहर निकलते

مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ ۖ وَاللَّهُ

हैं तो उन में से एक जमाअत रात को चुपके चुपके बातें करती है उस के अलावा जो वो पेहले केह रही थी। और अल्लाह लिख

يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ ۖ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ

रहे हैं उस को जो वो रात को चुपके चुपके बातें करते हैं। फिर आप उन से पैराज़ कीजिए और अल्लाह पर तवक्कुल

عَلَى اللَّهِ ۖ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٥٢﴾ أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ

कीजिए। और अल्लाह काफी कारसाज़ है। क्या फिर वो कुरआन में तदब्बुर

الْقُرْآنُ ۖ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ नहीं करते? और अगर ये (कुरआन) अल्लाह के अलावा की तरफ से होता तो वो ज़रूर उस में
اِخْتِلَافًا كَثِيرًا ﴿١٢﴾ وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِنَ الْأَمْنِ बहोत सा इखतिलाफ पाते। और जब अमन या खौफ की कोई बात
أَوْ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ ۖ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ आती है, तो वो उस को फैला देते हैं। और अगर वो उस को पेश करते रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तरफ
وَأِلَى أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنْبِطُونَهُ और सहाबा में से उलुल अम्र की तरफ तो ज़रूर उस को जानते वो लोग जो उन में से उस से इस्तिम्बात कर
مِنْهُمْ ۖ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ सकते हैं। और अगर तुम पर अल्लाह का फज़ल और उस की मेहरबानी न होती तो तुम भी शैतान के
الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٣﴾ فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ पीछे पड़ जाते मगर थोड़े। इस लिए आप अल्लाह के रास्ते में क़िताल कीजिए।
لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضَ الْمُؤْمِنِينَ عَسَى اللَّهُ आप को मुकल्लफ नहीं बनाया जाता मगर आप की ज़ात का और आप ईमान वालों को उभारिए। हो सकता है के अल्लाह
أَنْ يَكْفَ بِأَسِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ وَاللَّهُ أَشَدُّ بِأَسًا وَأَشَدُّ काफिरों के ज़ोर को रोक दे। और अल्लाह ज़्यादा सख्त लड़ाई वाला और ज़्यादा सख्त इबरत
تَنْكِيلًا ﴿١٤﴾ مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ दिलाने वाला है। जो नेक काम में सिफारिश करे तो उस के लिए उस
نَصِيبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ में से हिस्सा होगा। और जो बुरे काम की सिफारिश करे तो उस के लिए
لَهُ كِفْلٌ مِّنْهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْبِلًا ﴿١٥﴾ उस में से हिस्सा होगा। और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है।
وَإِذَا حُيِّيتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوها और जब तुम्हें सलाम किया जाए तो तुम उस से बेहतर सलाम के साथ जवाब दो या उसी को दोहरा दो।
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ﴿١٦﴾ اللَّهُ لَا إِلَهَ यकीनन अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद

۱۱
۸

إِلَّا هُوَ لِيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ

नहीं। वो तुम्हें ज़रूर जमा करेगा क़यामत के दिन में जिस में कोई शक नहीं।

وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ۚ فَمَا لَكُمْ

और अल्लाह से ज़्यादा सच्ची बात किस की हो सकती है? फिर तुम्हें क्या हुवा के

فِي الْمُنَافِقِينَ فَتَتَيْنِ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوا ۚ

मुनाफिक़ीन के बारे में दो जमाअतें बन रहे हो, हालांकि अल्लाह ने उन के आमाल की वजह से उन को औंधा कर दिया है।

أَتُرِيدُونَ أَنْ تَهْدُوا مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ ۚ وَمَنْ يُضِلِلْ

क्या ये चाहते हो के तुम उन को हिदायत दो जिन को अल्लाह ने गुमराह किया? और जिस को अल्लाह

اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ۚ وَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ

गुमराह कर दे तो आप उस के लिए कोई रास्ता हरगिज़ नहीं पाओगे। वो चाहते हैं के काश के तुम भी काफिर बन जाओ

كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً ۚ فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ

जैसा के वो काफिर बन गए हैं के फिर तुम और वो बराबर हो जाओ, तो तुम उन में से किसी को दोस्त

أَوْلِيَاءَ حَتَّى يُهَاجِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا

मत बनाओ जब तक के वो अल्लाह के रास्ते में हिजरत न करें। फिर अगर वो ऐराज़ करें

فَخُذُوهُمْ ۚ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ ۚ

तो तुम उन को पकड़ो और उन को क़त्ल करो जहाँ तुम उन को पाओ।

وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۚ إِلَّا الَّذِينَ

और तुम उन में से किसी को मददगार और दोस्त मत बनाओ। मगर वो लोग जो

يَصِلُونَ إِلَى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ أَوْ جَاءُوكُمْ

ऐसी क़ौम से तअल्लुक़ रखते हैं के तुम्हारे और उन के दरमियान में मुआहदा है या वो तुम्हारे पास आएँ

حَصَرَتْ صُدُورُهُمْ أَنْ يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا

इस हाल में के उन के सीने तंग हैं इस से के वो तुम से क़िताल करें या अपनी क़ौम से

قَوْمَهُمْ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتِلُوكُمْ ۚ

क़िताल करें। और अगर अल्लाह चाहता तो उन को तुम पर मुसल्लत करता, फिर वो तुम से क़िताल करते।

فَإِنْ اعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوكُمْ وَأَلْقَوْا إِلَيْكُمُ

फिर अगर ये लोग तुम से अलग रहें, फिर तुम से क़िताल न करें और तुम्हारी तरफ सुल्ह को

السَّلَامَ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ۝

डालें, तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए उन पर कोई रास्ता नहीं बनाया।

سَتَجِدُونَ آخَرِينَ يُرِيدُونَ أَنْ يَأْمَنُوا كُمْ

अनकरीब तुम दूसरों को पाओगे जो चाहते हैं के वो तुम से अमन में रहें

وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ ۖ كُلًّا رُدُّوْا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوا

और अपनी कौम से भी अमन में रहें। जब कभी वो फितने के लिए बुलाए जाते हैं तो उस में औंधे

فِيهَا ۚ فَإِنْ لَّمْ يَعْزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمْ السَّلَامَ

गिरते हैं। फिर अगर वो तुम से अलग न रहें और तुम्हारी तरफ सुल्ह को न डालें

وَيَكْفُوا أَيْدِيَهُمْ فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ

और अपने हाथ न रोकें तो उन को पकड़ो और उन को क़त्ल करो जहाँ

ثَقِفْتُمُوهُمْ ۖ وَأُولَئِكَ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا

उन को पाओ। और यही हैं के उन पर हम ने तुम्हारे लिए वाज़ेह दलील मुकर्रर

مُبِينًا ۝ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا

कर दी है। और किसी मोमिन के लिए जाइज़ नहीं है के किसी मोमिन को क़त्ल करे मगर ग़लती

إِلَّا خَطَا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَاً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ

से। और जो किसी मोमिन को ग़लती से भी क़त्ल करेगा तो उसे एक मोमिन गर्दन (गुलाम या बांदी) को आज़ाद

مُؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَى أَهْلِهِ إِلَّا

करना है और दियत है जो सुपुर्द की जाएगी मकतूल के वुरसा को मगर

أَنْ يَّصَدَّقُوا ۚ فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ

ये के वो मुआफ कर दें। फिर अगर वो मकतूल तुम्हारे दुश्मन की कौम में से हो और वो

مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ وَإِنْ كَانَ

मोमिन भी हो तो फिर एक मोमिन गर्दन को आज़ाद करना है। और अगर वो

مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيثَاقٌ فَدِيَةٌ

ऐसी कौम में से हो के तुम्हारे और उन के दरमियान में मुआहदा हो तो दियत है

مُّسَلَّمَةٌ إِلَى أَهْلِهِ ۚ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ

जो सुपुर्द की जाएगी मकतूल के वुरसा को और एक मोमिन गर्दन को आज़ाद करना है।

فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۖ تَوْبَةً

फिर जो उस को न पाए तो दो महीने के लगातार रोजे रखने हैं। अल्लाह की तरफ से

مَنْ اللَّهِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

तौबा के तौर पर। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और जो

يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا ۖ فَجَزَاءُ ۖ جَهَنَّمَ خُلِدًا

किसी मोमिन को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस की सज़ा जहन्नम है, जिस में वो हमेशा

فِيهَا ۖ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ ۖ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا

रहेगा और अल्लाह का उस पर ग़ज़ब है और उस पर लानत है और अल्लाह ने उस के लिए भारी अज़ाब

عَظِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ

तय्यार कर रखा है। ऐ ईमान वाले! जब तुम अल्लाह के रास्ते में

فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْفَىٰ

सफर करो तो अच्छी तरह तहकीक़ कर लो और उस शख्स के मुतअल्लिक़ जो तुम्हें सलाम करे

إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۖ تَبْتَغُونَ عَرَضَ

उस को यूँ मत कहो के तू मोमिन नहीं है। क्या तुम दुन्यवी ज़िन्दगी का

الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ فَعِنْدَ اللَّهِ مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ ۖ كَذَلِكَ

सामान चाहते हो? फिर अल्लाह के पास बहोत सी ग़नीमतें हैं। इसी तरह

كُنْتُمْ مِّن قَبْلُ ۖ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا ۖ

इस से पेहले तुम भी थे, फिर अल्लाह ने तुम पर एहसान फरमाया तो अच्छी तरह तहकीक़ कर लिया करो।

إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ لَا يَسْتَوِي

यकीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर हैं। ईमान वालों में से

الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ

जिहाद से बैठने वाले जो माजूरीन के अलावा हों,

وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ

वो और अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और जानों के ज़रिए जिहाद करने वाले दोनों बराबर नहीं हो सकते।

فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ

अल्लाह ने अपने मालों और जानों के ज़रिए जिहाद करने वालों को फज़ीलत दी है

عَلَى الْقُعْدَيْنِ دَرَجَةً ۖ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ

जिहाद से बैठने वालों पर एक दरजे के ऐतेबार से। और हर एक से अल्लाह ने अच्छे बदले का

الْحُسْنَى ۖ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقُعْدَيْنِ

वादा किया है। और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को जिहाद से बैठने वालों पर फज़ीलत दी है

أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٥٥﴾ دَرَجَاتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۖ

भारी अज़्र से। जो अल्लाह की तरफ से दरजात होंगे और मग़फ़िरत और रहमत होगी।

وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّيْتُمُ

और अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। यकीनन वो लोग जो अपनी जानों पर

الْمَلِكَةَ ظَالِمًا لِّنَفْسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنْتُمْ

जुल्म करने वाले हैं, उन की फरिश्ते जान निकालते हैं तो फरिश्ते पूछते हैं के तुम किस जगह में थे?

قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ ۖ قَالُوا

तो वो केहते हैं के हम उस मुल्क में कमज़ोर कर के रखे गए थे। तो वो केहते हैं के

أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا ۖ

क्या अल्लाह की ज़मीन वसीअ नहीं थी के तुम उस में हिजरत कर जाते?

فَأُولَٰئِكَ مَأْوَهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿٥٧﴾

फिर उन का ठिकाना जहन्नम है। और वो बुरी जगह है।

إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ

मगर वो जो कमज़ोर कर के रखे गए हों मर्दों और औरतों

وَالْوِلْدَانَ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ

और बच्चों में से, जो किसी हीले की ताक़त नहीं रखते और वो न कोई रास्ता

سَبِيلًا ﴿٥٨﴾ فَأُولَٰئِكَ عَسَىٰ اللَّهُ أَنْ يَغْفُو عَنْهُمْ ۖ

जानते हैं। तो उम्मीद है के अल्लाह उन्हें मुआफ़ कर दें।

وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥٩﴾ وَمَنْ يُهَاجِرْ

और अल्लाह बहोत ज़्यादा मुआफ़ करने वाले, बहोत ज़्यादा बख़्शने वाले हैं। और जो हिजरत करेगा

فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرْعًا كَثِيرًا

अल्लाह के रास्ते में तो वो ज़मीन में बहोत सी कशाइश

وَسَعَةً ۖ وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا और वुसअत पाएगा। और जो अपने घर से निकले मुहाजिर बन कर
إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكُهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ अल्लाह और उस के रसूल की तरफ, फिर उस को मौत पा ले तो उस
أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝ का अज़्र अल्लाह के ज़िम्मे वाजिब हो गया। और अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।
وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ और जब तुम ज़मीन में सफर करो, फिर तुम पर कोई गुनाह नहीं है
أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ ۖ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمْ के नमाज़ को कसर पढ़ो, अगर तुम्हें डर हो के काफिर
الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا तुम्हें सताएंगे। यकीनन काफिर लोग तुम्हारे खुले दुश्मन
مُبِينًا ۝ وَإِذَا كُنْتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ हैं। और जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उन में हों, फिर आप उन के लिए नमाज़ काइम करें
فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ ۚ तो चाहिए के उन में से एक जमाअत आप के साथ खड़ी हो जाए और उन्हें चाहिए के वो अपना अस्लहा लिए रहें।
فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِنْ وَرَائِكُمْ ۚ وَلْتَأْتِ फिर जब वो सजदा करें तो वो तुम्हारे पीछे हो जाएं, और दूसरी
طَائِفَةٌ أُخْرَى لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ जमाअत आ जाए जिस ने नमाज़ नहीं पढ़ी, फिर चाहिए के वो आप के साथ नमाज़ पढ़ें
وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ ۚ وَاسْلِحَتَهُمْ ۚ وَذَ الَّذِينَ और वो भी अपनी हिफाज़त का सामान और अपना अस्लहा लिए रहें। काफिर लोग चाहते हैं
كَفَرُوا لَوْ تَعَفُّونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَامْتِعَتِكُمْ के काश के तुम अपने अस्लहे और अपने सामान से ग़ाफिल हो जाओ,
فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُمْ مَيْلَةً وَاحِدَةً ۖ وَلَا جُنَاحَ फिर वो अचानक तुम्हारे ऊपर हमला कर दें। और अगर तुम्हें बारिश की

عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى مِنْ مَّطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ

वजह से तकलीफ हो या तुम बीमार हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है

مَرْضَى أَنْ تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ ۖ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ

इस में के अपने हथियार रख दो। और अपने बचाव के सामान को लिए रहो।

إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ۝

यकीनन अल्लाह ने काफिरों के लिए ख़स्वा करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है।

فَإِذَا قُضِيَتُ الصَّلَاةُ فَادْكُرُوا اللَّهَ قِيَمًا وَقُعودًا

फिर जब नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे

وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ ۖ فَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ ۚ

और अपने पेहलू पर लेट कर। फिर जब तुम मुतमइन हो तो नमाज़ काइम करो।

إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْقُوتًا ۝

यकीनन नमाज़ ईमान वालों पर मुक़रर औकात में फर्ज़ की गई है।

وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ ۚ إِنْ تَكُونُوا تَأْلَمُونَ

और उस कौम का पीछा करने में हिम्मत न हारो। अगर तुम्हें अलम (तकलीफ) पहोंचा है

فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ ۚ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ

तो उन्हें भी अलम पहोंचा है जैसा के तुम्हें अलम पहोंचा है। और तुम अल्लाह से उम्मीद रखते हो

مَا لَا يَرْجُونَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

उन चीज़ों की जो वो उम्मीद नहीं रखते। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं।

إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ

यकीनन हम ने आप की तरफ ये किताब उतारी हक़ के साथ ताके आप फैसला करें इन्सानों के दरमियान

بِمَا أَرْسَلَ اللَّهُ ۚ وَلَا تَكُنْ لِلْخَائِنِينَ خَصِيمًا ۝

उस के मुताबिक़ जो अल्लाह आप को दिखाए। और आप खयानत करने वालों की तरफ से झगड़ा करने वाले न बनें।

وَأَسْتَغْفِرِ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

और आप अल्लाह से इस्तिग़फ़ार कीजिए। यकीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنْفُسَهُمْ ۚ إِنَّ

और आप उन की तरफ से न झगड़ें जो अपनी जानों से खयानत करते हैं। यकीनन

اللَّهُ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا أَثِيمًا ۝ يَسْتَخْفُونَ

अल्लाह उस शख्स से महबबत नहीं रखता जो खयानत करने वाला, गुनहगार है। वो लोगों

مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ

से छुपना चाहते हैं और अल्लाह से छुप नहीं सकते इस हाल में के वो उन के साथ होता है

إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَىٰ مِنَ الْقَوْلِ ۖ وَكَانَ

जब वो रात के वक्त सरगोशी कर रहे होते हैं ऐसी बातों की जो अल्लाह को पसन्द नहीं हैं। और

اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ۝ هَآنَتْكُمْ هَؤُلَاءِ جَادَلْتُمْ

अल्लाह उन के आमाल का इहाता किए हुए है। सुनो! तुम तो वो लोग हो के तुम ने

عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَنْ يُجَادِلُ اللَّهَ

उन की तरफ से दुन्यवी ज़िन्दगी में झगड़ा कर लिया। फिर कौन अल्लाह से झगड़ेगा

عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَمْ مَنْ يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝

उन की तरफ से क़यामत के दिन या कौन उन का वकील बनेगा?

وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرْ

और जो कोई बुरा काम कर ले या अपनी जान पर जुल्म कर ले, फिर वो अल्लाह से इसतिगफार

اللَّهُ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ وَمَنْ يَكْسِبْ

कर ले तो वो अल्लाह को बहोत ज़्यादा बख्शाने वाला, निहायत रहम करने वाला पाएगा। और जो

إِثْمًا فَإِنَّهُ يَكْسِبُهُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ

गुनाह कमाता है तो वो सिर्फ अपनी जान ही के खिलाफ गुनाह कमा रहा है। और अल्लाह

عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَمَنْ يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا

इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और जो कोई ग़लती कर ले या कोई गुनाह कर ले,

ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا فَقَدْ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ۝

फिर उस के ज़रिए किसी बेगुनाह को मुत्तहम करे, तो यकीनन उस ने बोहतान और खुले गुनाह का बोझ उठाया।

وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّتْ

और अगर आप पर अल्लाह का फज़ल और उस की मेहरबानी न होती तो उन में

طَائِفَةٌ مِنْهُمْ أَنْ يُضِلُّوكَ ۖ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا

से एक जमाअत ने इरादा कर लिया था इस बात का के वो आप को गुमराह कर दें। और वो गुमराह नहीं करते मगर

أَنفُسَهُمْ وَمَا يَصُرُّونَكَ مِنْ شَيْءٍ ۖ وَ أَنْزَلَ اللَّهُ

अपने आप को और वो आप को ज़रा भी ज़रर नहीं पहुँचा सकते। और अल्लाह ने आप पर

عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ

किताब और हिक्मत उतारी और आप को इल्म दिया ऐसी चीज़ों का जो आप जानते

تَعْلَمُ ۖ وَ كَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ﴿١١٢﴾ لَا خَيْرَ

नहीं थे। और अल्लाह का फज़ल आप पर बहोत ज़्यादा है। उन की

فِي كَثِيرٍ مِّنْ نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ

सरगोशियों में से बहोत सी सरगोशी में कोई भलाई नहीं, मगर वो शख्स जो सदके का हुक्म करे

أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ۖ وَمَنْ يَفْعَلْ

या नेकी का हुक्म दे या इन्सानों के दरमियान सुल्ह का हुक्म दे। और जो ऐसा

ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا

करेगा अल्लाह की रज़ा तलब करने के लिए तो अनक़रीब हम उसे भारी अज़्र

عَظِيمًا ﴿١١٣﴾ وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ

देगे। और जो रसूल की मुखालफ़त करेगा इस के बाद के

مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ

उस के लिए हिदायत वाज़ेह हो गई और वो ईमान वालों के रास्ते के अलावा पर चलेगा,

نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَ نُصَلِّهِ جَهَنَّمَ ۖ وَ سَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٤﴾

तो हम उस के लिए महबूब बना देंगे जिसे उस ने पसन्द किया है और हम उसे जहन्नम में दाखिल करेंगे। और वो बुरी जगह है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَ يَغْفِرُ مَا دُونَ

यकीनन अल्लाह मग़फ़िरत नहीं करेंगे इस की के उस के साथ किसी को शरीक ठेहराया जाए और वो उस के अलावा की

ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۖ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ

मग़फ़िरत कर देंगे जिस के लिए वो चाहेंगे। और जो अल्लाह के साथ शरीक ठेहराए, तो यकीनन वो दूर की

ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١١٥﴾ إِنْ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا إِنشَاءً

गुमराही में गुमराह हो गया। वो अल्लाह को छोड़ कर इबादत नहीं करते मगर मुअन्नस की।

وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَّرِيدًا ﴿١١٦﴾ لَّعَنَهُ اللَّهُ

और वो नहीं पुकारते मगर सरकश शैतान को। जिस पर अल्लाह ने लानत की है।

وَقَالَ لَا تَخْذَنْ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ۝

और जिस ने कहा है के मैं तेरे बन्दों में से एक मुकर्रर किया हुआ हिस्सा ज़रूर बनाऊँगा।

وَلَا ضَلَالَتُهُمْ وَلَا مَنِيَّتُهُمْ وَلَا مَرْتَهُمْ فَلْيَبْتَكَنْ

और मैं उन्हें गुमराह किया करूँगा और मैं उन्हें तमन्नाएं दिलाऊँगा और मैं उन्हें हुक्म करूँगा, फिर वो चौपाओं

أَذَانِ الْأَنْعَامِ وَلَا مَرْتَهُمْ فَلْيَغَيِّرَنَّ خَلْقَ اللَّهِ ۝

के कान चीरेंगे और मैं उन्हें हुक्म दूँगा फिर वो अल्लाह के बनाए हुए जिस्म को बदलेंगे।

وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِّنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ

और जो शैतान को दोस्त बनाएगा अल्लाह को छोड़ कर के तो

خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِينًا ۝ يَعِدُهُمْ وَيُمْنِيهِمْ ۝

उस ने खुला खसारा उठाया। शैतान उन्हें वादा दिलाता है और उन्हें तमन्नाएं दिलाता है।

وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ۝ أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ

और शैतान उन से वादा नहीं करता मगर धोके का। यही हैं जिन का ठिकाना

جَهَنَّمَ ۚ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا ۝ وَالَّذِينَ

जहन्नम है। और वो उस से भागने की कोई जगह नहीं पाएँगे। और जो लोग

آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي

ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, तो अनकरीब हम उन्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल करेंगे जिन के

مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ وَعَدَ اللَّهُ

नीचे से नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। अल्लाह की तरफ से सच्चे

حَقًّا ۖ وَ مَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ۝ لَيْسَ

वादे के तौर पर। और अल्लाह से ज़्यादा सच्ची बात किस की हो सकती है? न तुम्हारी

بِمَا نَبِّئُكُمْ وَلَا أَمَانِي أَهْلِ الْكِتَابِ ۖ مَنْ يَعْمَلْ

तमन्नाओं पर मदार है और न एहले किताब की तमन्नाओं पर मदार है। जो कोई बुरा काम

سُوءًا يُجْزَ بِهِ ۖ وَلَا يَجِدُ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا

करेगा तो उस की सज़ा पाएगा और वो अपने लिए अल्लाह के अलावा कोई मददगार और कोई कारसाज़

وَلَا نَصِيرًا ۝ وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ

नहीं पाएगा। और जो नेक आमाल करेगा, वो मर्दों में से हो

أَوْ أَنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ

या औरतों में से हो, बशर्तेके वो मोमिन हो तो वही लोग जन्नत में दाखिल होंगे

وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا ﴿١٢٥﴾ وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِّمَّنْ

और उन पर खजूर की गुठली के सूराख के बराबर भी जुल्म नहीं किया जाएगा। और उस शख्स से बेहतर दीन किस का हो सकता

أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ

है जिस ने अपना चेहरा अल्लाह के ताबेअ कर दिया और वो नेकी करने वाला है और जो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की

إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا ﴿١٢٥﴾

मिल्लत पर चला जो एक अल्लाह ही के हो कर रहने वाले थे। और अल्लाह ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को खलील बनाया था।

وَاللَّهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَكَانَ

और अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीजें जो आसमानों में हैं ओर जो ज़मीन में हैं। और अल्लाह

اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطًا ﴿١٢٦﴾ وَ يَسْتَفْتُونَكَ

हर चीज़ का इहाता किए हुए है। और ये आप से सवाल करते हैं

فِي النِّسَاءِ ۚ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ ۚ وَمَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ

औरतों के बारे में। आप फरमा दीजिए के अल्लाह तुम्हें इजाज़त देते हैं उन औरतों के बारे में।

فِي الْكِتَابِ فِي يَتِمِّي النِّسَاءِ الَّتِي لَا تُوْتُوْنَهُنَّ

और वो जो तुम को सुनाया जाता है कुरआन में यतीम लड़कियों के बारे में जिन को तुम नहीं देते

مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَ تَرْغَبُونَ ۚ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ

वो जो उन के लिए मुकरर किया गया है और तुम ऐराज़ करते हो इस से के तुम उन से निकाह करो

وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۚ وَأَنْ تَقُومُوا لِلْيَتَامَىٰ

और कमज़ोर बच्चों के मुतअल्लिक और इस बात का के तुम यतीमों के लिए इन्साफ को ले कर खड़े

بِالْقِسْطِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ

हो जाओ। और जो भलाई भी तुम करोगे तो यकीनन अल्लाह उसे

بِهِ عَلِيمًا ﴿١٢٧﴾ وَإِنْ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا

खूब जानते हैं। और अगर किसी औरत को अन्देशा हो अपने शौहर की तरफ से

نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا

हकतल्फी या बेऐतेनाई का तो उन दोनों पर कोई गुनाह नहीं है के वो आपस

بَيْنَهُمَا صُلْحًا وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۖ وَأُحْضِرَتِ الْأَنفُسُ

में सुल्ह कर लें। और सुल्ह बेहतर है। और बुखल सब ही तबायेअ में

الشُّحَّ ۖ وَإِنْ تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ

रखा गया है। और अगर तुम नेकी करोगे और मुत्तकी बनोगे तो यकीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल

بِمَا تَعْمَلُونَ خَيْرًا ۖ وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ

से बाखबर है। और तुम इस की ताकत हरगिज़ नहीं रखते के इन्साफ करो

النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمِيلِ فَتَدْرُواهَا

बीवियों के दरमियान अगर्वे तुम कितनी हिर्स करो, इस लिए पूरे तौर पर एक तरफ माइल न हो जाओ के तुम उसे

كَالْمُعَلَّقَةِ ۖ وَإِنْ تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ

अध्दर लटकी हुई की तरह छोड़ दो। और अगर तुम इस्लाह करो और मुत्तकी बनो तो यकीनन अल्लाह

كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۖ وَإِنْ يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كُلًّا

बहोत ज़्यादा बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और अगर वो दोनों अलग हो जाएंगे तो अल्लाह अपनी वुस्अत

مِّن سَعَتِهِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا ۖ وَ لِلَّهِ

से सब को गनी कर देंगे। और अल्लाह वुस्अत वाले, हिक्मत वाले हैं। और अल्लाह की मिल्क हैं

مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ

वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और यकीनन हम ने ताकीदी हुक्म दिया उन को

أَوْتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنْ اتَّقُوا اللَّهَ ۖ

जिन्हें किताब दी गई तुम से पेहले और तुम्हें भी ये के अल्लाह से डरो।

وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ

और अगर तुम कुफ़्र करोगे तो यकीनन अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَمِيدًا ۖ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ

और अल्लाह बेनियाज़ है, काबिले तारीफ़ है। और अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं

وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۖ إِنَّ يَشَاءُ

और जो ज़मीन में हैं। और अल्लाह काफी कारसाज़ है। अगर अल्लाह चाहे

يُذْهِبْكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِآخَرِينَ ۖ وَكَانَ

तो तुम्हें हलाक कर दे ऐ इन्सानो! और दूसरों को ले आए। और अल्लाह

اللَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ قَدِيرٌ ﴿١٣٢﴾ مَنْ كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ	इस पर कुदरत वाला है। जो दुनिया का सवाब चाहेगा
الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَكَانَ	तो अल्लाह के पास दुनिया और आखिरत का सवाब है। और अल्लाह
اللَّهُ سَمِيعًا ۖ بَصِيرًا ﴿١٣٣﴾ يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا	सुनने वाले, देखने वाले हैं। ऐ ईमान वालो! इन्साफ को ले कर
قَوْمِينَ بِالْقِسْطِ ۖ شُهَدَاءَ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ	खड़े होने वाले बन जाओ, अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बन जाओ, अगर्चे अपनी जानों के खिलाफ
أَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ ۚ إِنْ يَكُنْ غَنِيًّا أَوْ فَقِيرًا	वो गवाही क्यों न हो या वालिदैन् और रिश्तेदारों के खिलाफ क्यों न हो। अगर वो मालदार या फकीर है
فَاللَّهُ أَوْلَىٰ بِهِمَّاتٍ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَنْ تَعْدِلُوا ۚ	तो अल्लाह उन से ज्यादा महबूत वाला है। तो ख्वाहिशात के पीछे मत पड़ो के तुम इन्साफ न करो।
وَإِنْ تَلَوْا أَوْ تَعْرَضُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ	और अगर तुम मुंह मोड़ोगे या ऐराज करोगे तो यकीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल से
خَبِيرًا ﴿١٣٤﴾ يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ	बाखबर है। ऐ ईमान वालो! ईमान लाओ अल्लाह पर
وَرَسُولِهِ ۖ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۖ وَالْكِتَابِ	और उस के रसूल पर और उस किताब पर जो उस ने उतारी अपने रसूल पर और उन किताबों पर
الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ	जो इस से पेहले उस ने उतारी हैं। और जो कुफ्र करेगा अल्लाह के साथ और उस के फरिश्तों
وَكُتُبِهِ ۖ وَرُسُلِهِ ۖ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا	और उस की किताबों और उस के पैगम्बरों और आखिरी दिन के साथ तो यकीनन वो दूर की गुमराही में गुमराह
بَعِيدًا ﴿١٣٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ آمَنُوا	हो गया। यकीनन वो लोग जो ईमान लाए, फिर काफिर हो गए, फिर ईमान लाए,
ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ أَزْدَادُوا كُفْرًا ۖ لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرْ لَهُمْ	फिर काफिर हो गए, फिर कुफ्र में वो बढ़ते रहे, तो अल्लाह ऐसा नहीं है के उन की मगफिरत करे

وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا ﴿١٣٢﴾ بَشِّرِ الْمُنَافِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ

और अल्लाह ऐसा नहीं है के उन को रास्ते की हिदायत दे। मुनाफिकों को बशारत सुना दीजिए इस बात की के उन के लिए

عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٣٣﴾ الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ

दर्दनाक अज़ाब है। उन को जो काफिरों को दोस्त बनाते हैं

مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ أَيَبْتَغُونَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ

ईमान वालों को छोड़ कर। क्या वो उन के पास इज़्ज़त चाहते हैं?

فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ﴿١٣٤﴾ وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ

तो यकीनन सारी की सारी इज़्ज़त अल्लाह ही की है। यकीनन उस ने तुम पर किताब में ये बात

فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ يُكْفَرُ بِهَا

उतारी है के जब तुम अल्लाह की आयतों को सुनो के उन के साथ कुफ्र किया जा रहा है

وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَفْعَدُوا مَعَهُمْ حَتَّى يَخُوضُوا

और उन का मज़ाक उड़ाया जा रहा है तो तुम उन के साथ मत बैठो यहां तक के वो उस के अलावा किसी

فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ إِنَّكُمْ إِذَا مَثَلْتُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ

दूसरी बात में लग जाएं। यकीनन तब तो तुम उन्ही जैसे हो जाओगे। यकीनन अल्लाह मुनाफिकों

الْمُنَافِقِينَ وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ﴿١٣٥﴾ الَّذِينَ

और काफिरों को जहन्नम में सब को इकट्ठा करने वाला है। उन को जो

يَتَرَبَّصُّونَ بِكُمْ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللَّهِ قَالُوا

तुम्हारे मुतअल्लिक मुन्तज़िर रहे हैं, फिर अगर अल्लाह की तरफ से तुम्हारे लिए फतह हो तो वो केहते हैं

أَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَإِنْ كَانَ لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ ۖ قَالُوا

के क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे? और अगर काफिरों का हिस्सा हो तो केहते हैं

أَلَمْ نَسْتَحِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعُكُم مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ فَاللَّهُ

क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं आ गए थे और मुसलमानों से बचाया नहीं था? फिर अल्लाह

يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ وَلَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ

तुम्हारे दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा। और अल्लाह ने काफिरों के लिए

عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ﴿١٣٦﴾ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَدِعُونَ

ईमान वालों पर रास्ता हरगिज़ नहीं बनाया। यकीनन मुनाफिक लोग वो अल्लाह को धोका

اللَّهُ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۖ وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا

दे रहे हैं और अल्लाह भी उन के खिलाफ तदबीर कर रहा है। और जब वो नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो

كُسَالَى ۖ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ

सुस्ती से खड़े होते हैं। वो लोगों से दिखलावा करते हैं और वो अल्लाह को याद नहीं करते

إِلَّا قَلِيلًا ۝ مَذَبَيْنِ بَيْنَ ذَلِكَ ۖ لَا إِلَى هَؤُلَاءِ

मगर थोड़ा। वो उस के दरमियान तज़बज़ुब में हैं, न इन की तरफ

وَلَا إِلَى هَؤُلَاءِ ۖ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ

और न उन की तरफ। और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे तो आप उस के लिए कोई रास्ता

سَبِيلًا ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا

हरगिज़ नहीं पाओगे। ऐ ईमान वालो! तुम काफ़िरो को

الْكُفْرَيْنَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ أُرِيدُونَ

दोस्त मत बनाओ ईमान वालों को छोड़ कर। क्या तुम ये चाहते हो के

أَنْ تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُبِينًا ۝

अल्लाह के लिए अपने खिलाफ वाज़ह दलील मुक़रर कर दो?

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرَكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ

यकीनन मुनाफ़िक लोग जहन्नम के सब से निचले वाले तबके में होंगे।

وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا

और आप उन के लिए कोई मददगार हरगिज़ नहीं पाओगे। मगर वो लोग जिन्होंने तौबा की और इस्लाह की

وَأَعْتَصَمُوا بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ

और अल्लाह की रस्सी को मज़बूत पकड़ा और अपने दीन को अल्लाह के लिए खालिस किया तो ये लोग

مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ

ईमान वालों के साथ होंगे। और अनकरीब अल्लाह ईमान वालों को

أَجْرًا عَظِيمًا ۝ مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ

भारी सवाब देगा। अल्लाह तुम्हें अज़ाब दे कर क्या करेगा

إِنْ شَكَرْتُمْ وَآمَنْتُمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ۝

अगर तुम शुक्र अदा करो और ईमान लाओ। और अल्लाह कदरदाँ है, इल्म वाला है।

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالسُّوءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَنْ

बुरे कलाम से आवाज़ बुलन्द करना अल्लाह को पसन्द नहीं मगर जो

ظَلِمَ ۚ وَ كَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ﴿١٣٧﴾ إِنَّ تَبْدُؤًا خَيْرًا

मज़लूम हो। और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। अगर किसी भलाई को ज़ाहिर करो

أَوْ تَخْفُوهُ ۖ أَوْ تَعْفُوا عَنْ سُوءٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُورًا

या उसे तुम छुपाओ या किसी बुराई से मुआफ कर दो तो यकीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा मुआफ करने वाला,

قَدِيرًا ﴿١٣٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَ رُسُلِهِ

कदरदाँ है। यकीनन वो लोग जो कुफ्र करते हैं अल्लाह के साथ और उस के पैगम्बरों के साथ

وَ يُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَ رُسُلِهِ وَ يَقُولُونَ

और जो चाहते हैं के वो अल्लाह और उस के पैगम्बरों के दरमियान फर्क करें और केहते हैं के

نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَ نَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۚ وَ يُرِيدُونَ

हम बाज़ पैगम्बरों पर ईमान रखते हैं और बाज़ के साथ कुफ्र करते हैं। और वो चाहते हैं के

أَنْ يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ﴿١٣٩﴾ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ

वो उस के दरमियान रास्ता बनाएं। यही लोग ये हकीकी काफिर

حَقًّا ۚ وَاعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٤٠﴾ وَالَّذِينَ

हैं। और हम ने काफिरों के लिए रस्वा करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है। और जो लोग

آمَنُوا بِاللَّهِ وَ رُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ

ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उस के पैगम्बरों पर और उन्होंने ने उन में से किसी के दरमियान तफरीक नहीं की

أُولَٰئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أَجُورُهُمْ ۚ وَ كَانَ اللَّهُ

तो यही लोग हैं के जिन्हें अल्लाह अनकरीब उन के सवाब देगा। और अल्लाह बहोत ज़्यादा

عَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٤١﴾ يَسْأَلُكَ أَهْلُ الْكِتَابِ أَنْ تُنَزِّلَ

बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। एहले किताब आप से सवाल करते हैं के आप उन पर

عَلَيْهِمْ كِتَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسَىٰ أَكْبَرَ

आसमान से कोई लिखी हुई किताब उतारें, तो यकीनन उन्होंने ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से इस से भी बड़ी

مِنْ ذَلِكَ فَقَالُوا أَرَنَا اللَّهُ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمْ

चीज़ का सवाल किया था के उन्होंने ने कहा था के आप हमें अल्लाह को खुल्लम खुल्ला दिखाइए, फिर उन को उन के

الصُّعْقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۖ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ

जुल्म की वजह से बिजली ने पकड़ लिया। फिर उन्होंने ने बछड़े को माबूद बनाया इस के

مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذَلِكَ ۖ وَآتَيْنَا

बाद के उन के पास रोशन मोअजिजात आए, फिर हम ने उस से दरगुजर कर दिया। और हम ने

مُوسَىٰ سُلْطَانًا مُّبِينًا ۖ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّورَ

मूसा (अलैहिस्सलाम) को रोशन मोअजिजा दिया। और हम ने बनी इस्राईल पर कोहे तूर को उठाया

بَيِّنَاتِهِمْ ۖ وَقُلْنَا لَهُمْ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُلْنَا

उन से अहद लेने के लिए और हम ने उन से कहा के तुम दरवाजे में दाखिल हो जाओ सजदा करते हुए और हम ने

لَهُمْ لَا تَعْدُوا فِي السَّبْتِ ۖ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا

उन से कहा के सनीचर के बारे में ज्यादाती मत करो और हम ने उन से भारी

غَلِيظًا ۖ فَبِمَا نَقَضْتُمْ مِيثَاقَهُمْ ۖ وَكُفِّرْهُمْ بِآيَاتِ

अहद लिया। फिर उन के अपना अहद तोड़ने की वजह से और उन के कुफ्र करने की वजह से अल्लाह की आयात

اللَّهِ وَقَتْلِهِمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَقَوْلِهِمْ قُلُوبُنَا

के साथ और उन के अम्बिया को नाहक क़त्ल करने की वजह से और उन के ये केहने की वजह से के हमारे दिल

غُلْفٌ ۖ بَلْ طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ

महफूज़ हैं। बल्के अल्लाह ने उन पर मुहर लगा दी है उन के कुफ्र की वजह से, फिर वो ईमान नहीं लाएंगे

إِلَّا قَلِيلًا ۖ وَبِكُفْرِهِمْ ۖ وَقَوْلِهِمْ عَلَىٰ مَرْيَمَ

मगर थोड़े। और उन के कुफ्र की वजह से और उन के मरयम (अलैहस्सलाम) पर भारी

بُهْتَانًا عَظِيمًا ۖ وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ

बोहतान केहने की वजह से। और उन के ये केहने की वजह से के हम ने मसीह ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम)

عِيسَىٰ ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ ۖ وَمَا قَتَلُوهُ

को क़त्ल कर दिया जो अल्लाह के रसूल हैं। हालांके उन्होंने ने उन को क़त्ल नहीं किया

وَمَا صَلَبُوهُ ۖ وَلَكِنْ شَبَّهَ لَهُمْ ۖ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا

और न उन्होंने ने उन को सूली दी, लेकिन उन के सामने (किसी को ईसा अलैहिस्सलाम के) मुशाबेह बना दिया गया। और यक़ीनन वो लोग

فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ ۖ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا

जो उन के बारे में इखतिलाफ कर रहे हैं यक़ीनन उन की तरफ से शक में हैं। उन के पास उस की कोई दलील

اتَّبَعَ الظَّنَّ ۚ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ﴿٥٤﴾ بَلْ رَفَعَهُ اللّٰهُ

नहीं सिवाए गुमान के पीछे चलने के। और यकीनन उन्होंने ने उन को क़त्ल नहीं किया। बल्के अल्लाह ने उन को

إِلَيْهِ ۖ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٥٥﴾ وَإِنْ مِنْ أَهْلِ

अपनी तरफ उठा लिया। और अल्लाह ज़बर्दस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। और सब ही एहले किताब

الْكِتَابِ إِلَّا لِيُؤْمِنُوا بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ ۚ وَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ

उन (ईसा अलैहिस्सलाम) की मौत से पेहले ज़रूर उन पर ईमान लाएंगे। और क़यामत के दिन

يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ﴿٥٦﴾ فَيُظْلَمُ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا

वो उन पर गवाह होंगे। फिर यहूदियों के जुल्म की वजह से

حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَ بَصَدَّاهُمْ

हम ने उन पर हराम की पाकीज़ा चीज़ें जो उन के लिए हलाल की गई थीं और उन के अल्लाह के रास्ते से

عَن سَبِيلِ اللّٰهِ كَثِيرًا ﴿٥٧﴾ وَأَخَذَهُمُ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا

बहुत ज़्यादा रोकने की वजह से। और उन के सूद लेने की वजह से हालांकि उन को उस से मना किया गया था

عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۖ وَأَعْتَدْنَا

और उन के लोगों के मालों को बातिल तरीके से खाने की वजह से। और हम ने उन में से

لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٥٨﴾ لِّكِنِ الرَّسُولُ

काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर रखा है। लेकिन जो उन में से इल्म

فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ

में पुख्तगी वाले हैं और जो मोमिन हैं वो ईमान रखते हैं उस किताब पर जो आप की तरफ

إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ

उतारी गई है और उन किताबों पर जो आप से पेहले उतारी गई और जो नमाज़ काइम करने वाले हैं

وَالْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ

और जो ज़कात देने वाले हैं और जो अल्लाह पर ईमान रखने वाले हैं और आखिरी दिन पर ईमान रखने

الْآخِرِ ۖ أُولَٰئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٥٩﴾ إِنَّا أَوْحَيْنَا

वाले हैं। यही लोग हैं के अनक़रीब हम उन्हें बड़ा अज़्र देंगे। यकीनन हम ने आप की तरफ

إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ وَالتَّبَّيَّنَ مِنْ بَعْدِهِ ۚ

वही की जैसा के हम ने वही की नूह (अलैहिस्सलाम) की तरफ और नूह (अलैहिस्सलाम) के बाद दूसरे अम्बिया की तरफ।

وَ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَ يَعْقُوبَ

और हम ने वही की इब्राहीम, और इस्माईल, और इसहाक और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) की तरफ

وَالْأَسْبَاطِ وَ عِيسَى وَ أَيُّوبَ وَ يُونُسَ وَ هَارُونَ

और याकूब (अलैहिस्सलाम) के बेटों की तरफ और ईसा और अय्यूब और यूनस और हारून और सुलैमान (अलैहिमुस्सलाम)

وَ سُلَيْمَانَ وَ آتَيْنَا دَاوُدَ زُبُورًا ۖ وَ رُسُلًا قَدْ

की तरफ। और हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम) को ज़बूर दी। और हम ने पैग़म्बर (भेजे)

قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَ رُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ

जिन के किस्से हम ने इस से पेहले आप के सामने बयान किए और कुछ पैग़म्बर (भेजे) जिन के किस्से हम ने

عَلَيْكَ ۚ وَ كَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا ۖ رُسُلًا

आप के सामने बयान नहीं किए। और अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से कलाम फरमाया। रसूलों को

مُبَشِّرِينَ وَ مُنْذِرِينَ لِّئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ

भेजा बशारत देने वाले और डराने वाले बना कर ताके इन्सानों के लिए उन पैग़म्बरों के बाद अल्लाह के

حُجَّةٌ ۚ بَعْدَ الرُّسُلِ ۚ وَ كَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۖ

खिलाफ कोई हुज्जत बाकी न रहे। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

لَكِنَّ اللَّهَ يُشْهَدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ ۚ

लेकिन अल्लाह गवाही देते हैं उस पर जो उस ने आप की तरफ कुरआन उतारा के अल्लाह ने कुरआन अपने इल्म से उतारा है।

وَالْمَلِكَةُ يُشْهَدُونَ ۚ وَ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۖ

और फरिश्ते भी गवाही देते हैं। और अल्लाह ही गवाह काफी है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَ صَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ

यकीनन वो लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया और अल्लाह के रास्ते से रोका,

ضَلُّوا ضَلًّا ۖ بَعِيدًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَ ظَلَمُوا

वो दूर की गुमराही में गुमराह हो गए। यकीनन वो लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया और जुल्म किया

لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ۖ

तो अल्लाह ऐसा नहीं है के उन की मग़फ़िरत करे और ऐसा नहीं है के उन्हें रास्ते की हिदायत दे।

إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ وَ كَانَ

मगर जहन्नम के रास्ते की, जिस में वो हमेशा रहेंगे। और

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيرًا ﴿١٤٥﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ

ये अल्लाह पर आसान है। ऐ इन्सानो! यकीनन तुम्हारे पास ये पैगम्बर हक ले कर आए हैं

الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ط

तुम्हारे रब की तरफ से, फिर तुम ईमान ले आओ, (अगर ईमान लाओगे) तो तुम्हारे लिए बेहतर होगा।

وَإِنْ تَكْفُرُوْا فَإِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط

और अगर कुफ्र करोगे तो यकीनन अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीजें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٤٦﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ

और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। ऐ एहले किताब!

لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ

तुम दीन में गुलू मत करो और अल्लाह पर हक के सिवा

إِلَّا الْحَقَّ ط إِنَّهَا الْمَسِيْحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ

मत कहो। मसीह ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) तो सिर्फ अल्लाह के भेजे हुए पैगम्बर हैं

وَكَلِمَتُهُ ۚ اَلْقَاهَا اِلَى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ط فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ

और अल्लाह का कलिमा हैं, जिस को मरयम (अलैहस्सलाम) तक पहुँचाया था और अल्लाह की तरफ से रूह हैं। तो ईमान लाओ

وَرُسُلِهٖ ؕ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ۚ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ اِنَّمَا

अल्लाह पर और उस के पैगम्बरों पर। और यूँ मत कहो के (इलाह) तीन हैं। बाज़ आ जाओ, अगर तुम बाज़ आ जाओगे तो तुम्हारे लिए

اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ سُبْحٰنَهٗ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۚ لَهٗ

बेहतर होगा। अल्लाह तो सिर्फ यकता माबूद है। अल्लाह इस से पाक है के उस के लिए कोई औलाद हो। उस की तो मिल्क हैं

مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ط وَكَفٰ بِاللّٰهِ وَكِيلًا ﴿١٤٧﴾

वो तमाम चीजें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और अल्लाह काफी कारसाज़ है।

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِلّٰهِ

मसीह ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) को आर नहीं है इस से के वो अल्लाह के बन्दे हैं

وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ط وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ

और न मुकर्रब फरिशते इन्कार करते हैं। और जो भी अल्लाह की इबादत से आर

عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرْهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿١٤٨﴾

करेगा और बड़ा बनना चाहेगा तो अल्लाह उन तमाम को अपने पास इकट्ठा करेगा।

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ

फिर जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, तो उन को अल्लाह उन के सवाब

أَجُورَهُمْ وَ يَزِيدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنكَفُوا

पूरे पूरे देगा और उन को अपने फज़ल से मज़ीद भी देगा। और अलबत्ता जो आर करेंगे

وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ وَلَا يَجِدُونَ

और तकबुर करेंगे तो अल्लाह उन्हें दर्दनाक अज़ाब देगा। और वो अपने लिए अल्लाह के

لَهُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٤٣﴾ يَأْتِيهَا

अलावा कोई हिमायती और मददगार नहीं पाएंगे। ऐ

النَّاسُ قَدْ جَاءَكُم بُرْهَانٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَا

इन्सानो! यकीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से बुरहान आ गया और हम ने तुम्हारी

إِلَيْكُمْ نُورًا مُّبِينًا ﴿١٤٤﴾ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا

तरफ रोशन नूर उतारा। फिर जो लोग ईमान लाए अल्लाह पर और उस की रस्सी

بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۖ وَيَهْدِيهِمْ

को मज़बून पकड़ा तो जल्द ही उन को अल्लाह अपनी रहमत में और फज़ल में दाखिल करेगा। और उन्हें अपनी तरफ

إِلَيْهِ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ﴿١٤٥﴾ يَسْتَفْتُونَكَ ۚ قُلِ اللَّهُ

सीधे रास्ते की रहनुमाई करेगा। ये आप से सवाल करते हैं। आप फरमा दीजिए के अल्लाह

يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ ۚ إِنِ امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ لَهُ

तुम्हें कलाला के बारे में हुक्म देते हैं। अगर कोई शख्स ऐसा हो के वो मर गया के जिस की औलाद न हो

وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَا

इस हाल में के उस की बेहेन हो, तो उस के लिए उस माल का आधा हिस्सा है जो मरने वाले ने छोड़ा। और वो उस

إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَهَا وَلَدٌ فَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا

बेहेन का वारिस होगा अगर उस बेहेन की औलाद न हो। फिर अगर वो दो बेहेन हों तो उन दो बेहेनों के लिए

الثُّلُثُ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِنْ كَانُوا إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً

दो सुलूस मिलेगा उस माल में से जो भाई ने छोड़ा। और अगर वो कई भाई और बेहेन हों

فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثِيَيْنِ ۚ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ

तो मर्द के लिए दो औरतों के हिस्से के बराबर है। अल्लाह तुम्हारे लिए साफ साफ बयान कर रहे हैं

۲۵۱

أَنْ تَضِلُّوا ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿۱۲۷﴾

ताके तुम गुमराह न हो जाओ। और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं।

رُكُوعَاتُهَا ۱۶

(۵) سُورَةُ الْمَائِدَةِ مَكِّيَّةٌ (۱۱۲)

آيَاتُهَا ۱۲۰

और १६ रूकूअ हैं

सूरह माइदा मदीना में नाज़िल हुई

उस में १२० आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الْمَائِدَةُ ۲۵۱

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ ۖ أُحِلَّتْ لَكُمْ

ऐ ईमान वालो! अहद व करार पूरे करो। तुम्हारे लिए हलाल किए गए

بِهَيْمَةِ الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُتْلَى عَلَيْكُمْ غَيْرِ مُحِلِّي

चरने वाले चौपाए सिवाए उन के जो तुम पर आइन्दा तिलावत किए जाएंगे इस हाल में के तुम शिकार को हलाल

الصَّيِّدِ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ ۝

समझने वाले न हो मुहरिम होने की हालत में। यकीनन अल्लाह फैसला करता है वही जो वो चाहता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحِلُّوا شَعَائِرَ اللَّهِ

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के शआइर को हलाल मत करो

وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ

और न हुरमत वाले महीने को और न हदी के जानवरों को और न पट्टे वाले जानवरों को

وَلَا أَمْمِينَ الْبَيْتِ الْحَرَامِ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّن رَّبِّهِمْ

और न हुरमत वाले घर का इरादा करने वालों को, जो अपने रब का फज़ल तलब करते हैं

وَرِضْوَانًا ۚ وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ

और उस की खुशनूदी तलब करते हैं। और जब हलाल हो जाओ, तब तुम शिकार करो। और तुम्हें आमादा न करे

شَنَانُ قَوْمٍ أَن صَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

किसी कौम की दुशमनी इस वजह से के उन्होंने ने तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका था

أَن تَعْتَدُوا ۚ وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۚ وَلَا تَعَاوَنُوا

इस बात पर के ज़्यादती करो। बल्के तुम एक दूसरे से नेकी और तक्वे पर तआवुन करो। और तआवुन मत करो

عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ

गुनाह पर और जुल्म पर। और अल्लाह से डरो। यकीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने

۲۵۲

۱

الْعُقَابِ ۝ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالْدَّمُ وَلَحْمُ

वाले हैं। तुम पर हराम किया गया मुर्दार और खून और खिन्जीर का

الْخِنْزِيرِ وَمَا أَهَلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ

گوشت और वो जानवर जिन पर गैरुल्लाह का नाम लिया गया हो और गला घोंटा हुआ

وَالْمَوْقُودَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ

और टकरा कर मरा हुआ और ऊपर से लुढ़क कर मरा हुआ और वो जानवर जिसे किसी जानवर ने सींग मार कर मारा हो और वो जानवर

السَّبُعِ إِلَّا مَا ذَكَيْتُمْ ۖ وَمَا ذُبَحَ عَلَى النُّصَبِ

के जिसे दरिन्दों ने खाया हो मगर वो जिन को तुम ज़बह कर लो। और हराम किया गया वो जो ज़बह किया गया हो बुतों पर

وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَزْلَامِ ۚ ذَلِكُمْ فِسْقٌ ۚ الْيَوْمَ يَيسَ

और ये भी हराम किया गया के तुम तीरों के ज़रिए तकसीम करो। ये नाफरमानी वाली चीज़ है। आज काफिर

الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ فَلَا تَحْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنَ

लोग तुम्हारे दीन से मायूस हो गए, तो तुम उन से मत डरो और मुझ से डरो।

الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتِمَمْتُ عَلَيْكُمْ

आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मुकम्मल किया और मैं ने तुम पर अपनी नेअमत को इतमाम तक

نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا ۚ فَمَنِ اضْطَرَّ

पहोंचाया और मैं ने तुम्हारे लिए इस्लाम को बतौरे दीन के पसन्द किया। फिर जो शख्स मजबूर हो जाए

فِي مَخْصَصَةٍ غَيْرِ مُتَجَانِفٍ لِإِثْمِهِ ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ

भूक की वजह से इस हाल में के वो गुनाह की तरफ माइल होने वाला न हो तो यकीनन अल्लाह बख्शाने वाले,

رَحِيمٌ ۝ يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أَحَلَّ لَهُمْ ۚ قُلْ أَحَلَّ لَكُمْ

निहायत रहम वाले हैं। वो आप से सवाल करते हैं के क्या चीज़ उन के लिए हलाल की गई। आप फरमा दीजिए के

الطَّيِّبَاتُ ۚ وَمَا عَلَّمْتُم مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ

तुम्हारे लिए पाकीज़ा चीज़ें हलाल करार दी गई हैं, और शिकारी जानवर जिन को तुम तालीम दो छोड़ते हुए, उन को

مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ ۚ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكَنَّ عَلَيْكُمْ ۖ وَادْكُرُوا

तालीम देते हो उस में से जो अल्लाह ने तुम्हें इल्म दिया, तो खाओ उस में से जो वो तुम्हारे लिए रोके रहें और तुम

اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ

अल्लाह का नाम उस पर ले लो। और अल्लाह से डरो। यकीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाले हैं।

الْيَوْمَ أَحْلَلْ لَكُمْ الطَّيِّبَ ۖ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا

आज तुम्हारे लिए हलाल की गई पाकीज़ा चीज़ें, और एहले किताब का ज़बीहा तुम्हारे

الْكِتَابِ حِلٌّ لَكُمْ ۖ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَهُمْ ۚ وَالْمُحْصَنَاتُ

लिए हलाल किया गया। और तुम्हारा खाना उन के लिए हलाल है। और हलाल की गई मोमिन

مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا

औरतों में से पाकदामन औरतें और उन की पाकदामन औरतें जिन को तुम से पेहले

الْكِتَابِ مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ مُحْصِنِينَ

किताब दी गई जब के तुम उन को उन के महर दो इस हाल में के तुम पाकदामनी इखतियार करने वाले हो,

غَيْرَ مُسْفِحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ

ज़िना करने वाले न हो और न चुपके चुपके दोस्त बनाने वाले हो। और जो ईमान के साथ

بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ ۖ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ

कुफ़ करेगा तो यकीनन उस का अमल हब्त हो गया। और वो आखिरत में

مِنَ الْخَسِرِينَ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ

खसारा उठाने वालों में से होगा। ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए

إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ

खड़े हो तो अपने चेहरे और कोहनियों तक अपने हाथ धो लो

وَأَمْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۚ

और तुम अपने सरो पर मसह कर लो और अपने पैर टखने तक धो लो।

وَأِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ

और अगर तुम जनाबत की हालत में हो तो अच्छी तरह पाक हो जाओ। और अगर बीमार हो या

عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَسْتُمْ

सफर पर हो या तुम में से कोई कज़ाए हाजत से आया हो या तुम ने औरतों से

النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا

मुक़ारबत की हो, फिर पानी न पाओ तो पाक मिट्टी का क़स्द करो,

فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ مِنْهُ ۚ مَا يُرِيدُ اللَّهُ

फिर उस से अपने हाथों और अपने चेहरों पर मसह कर लो। अल्लाह ये इरादा नहीं करता

لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَلَكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ

के तुम पर तंगी करे, लेकिन वो चाहता है के तुम्हें अच्छी तरह पाक करे

وَلِيَّتُمْ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَادْكُرُوا

और ताके तुम पर अपनी नेअमत को इतमाम तक पहुँचाए ताके तुम शुक्र अदा करो। और तुम याद करो

نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي وَاثَقَكُمْ بِهِ ۚ

अल्लाह की उस नेअमत को जो तुम पर है और उस के उस अहद को जिस का उस ने तुम से अहद लिया है,

إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ

जब के तुम ने कहा के सَمِعْنَا وَأَطَعْنَا और तुम अल्लाह से डरो। यकीनन अल्लाह

عَلِيمٌ ۚ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

दिलों के हाल को खूब जानने वाले हैं। ऐ ईमान वालो!

كُونُوا قَوْمِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ

तुम अल्लाह के लिए खड़े होने वाले बन जाओ, इन्साफ की गवाही देने वाले बन जाओ। और तुम्हें मुजरिम न बनाए

شَنَانُ قَوْمٍ عَلَىٰ آلَا تَعْدِلُونَ ۚ إِعْدِلُوا ۚ هُوَ أَقْرَبُ

किसी कौम की दुशमनी इस बात पर के तुम इन्साफ न करो। बल्के तुम इन्साफ करो। ये तक्वा के ज़्यादा

لِلتَّقْوَىٰ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ ۚ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

करीब है। और तुम अल्लाह से डरो। यकीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है।

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ لَهُمْ

अल्लाह ने वादा किया है उन लोगों से जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे के उन के लिए

مَغْفِرَةٌ ۚ وَاجْرٌ عَظِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا

मग़फिरत है और भारी अज़्र है। और जिन्होंने ने कुफ़ किया और हमारी आयतों

بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

को झुठलाया वही लोग दोज़खी हैं। ऐ ईमान

آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ إِذْ هُمْ قَوْمٌ

वालो! तुम याद करो अल्लाह की उस नेअमत को जो तुम पर है जब के एक कौम ने इरादा किया

أَنْ يَّبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ

के वो तुम्हारी तरफ अपने हाथ फैलाएं, फिर अल्लाह ने उन के हाथ तुम से रोक दिए।

وَقَالَ

وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَ عَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

और तुम अल्लाह से डरो। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल करना चाहिए।

وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ وَ بَعَثْنَا

और यकीनन अल्लाह ने बनी इस्राईल से पुख्ता अहद लिया। और हम ने

مِنْهُمْ اثْنَيْ عَشَرَ نَفِيقًا ۖ وَ قَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ ۖ

उन में से बारा नफीब भेजे। और अल्लाह ने फरमाया के मैं तुम्हारे साथ हूँ।

لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَ آتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَ آمَنْتُمْ

अगर नमाज़ काइम करोगे और ज़कात दोगे और मेरे पैगम्बरों पर

بِرُسُلِي وَ عَزَرْتُمْهُمْ وَ أَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا

ईमान लाओगे और उन की मदद करोगे और तुम अल्लाह को अच्छा कर्ज दोगे

لَا كُفْرَانَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ ۖ وَلَا دُخْلَكُمْ جَنَّتٍ

तो मैं ज़रूर तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर दूंगा और मैं तुम्हें ज़रूर दाखिल करूँगा ऐसी जन्नतों में

تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ

जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी। फिर उस के बाद जो तुम में से कुफ़

مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ ۱۲ ۖ فِيمَا نَقُضُهُمْ

करेगा तो यकीनन वो सीधे रास्ते से भटक गया। फिर उन के अपना अहद

مِيثَاقَهُمْ لَعْنَهُمْ ۖ وَ جَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَسِيَةً ۖ

तोड़ने की वजह से हम ने उन पर लानत की और हम ने उन के दिल सख्त बना दिए।

يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ ۖ وَ نَسُوا حَظًّا

वो कलिमात को बदलते थे अपने मआनी से और उस से फाइदा उठाना भूल गए

مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ۖ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَى خَائِنَةٍ مِنْهُمْ

जो उन को नसीहत की गई थी। और आप बराबर मुत्तलेअ होते रहोगे उन की तरफ से खयानत पर

إِلَّا قَلِيلًا ۖ مِنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَ اصْفَحْ ۖ إِنَّ اللَّهَ

मगर उन में से थोड़े लोग, इस लिए आप उन को मुआफ कीजिए और दरगुज़र कीजिए। यकीनन अल्लाह

يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝ ۱۳ ۖ وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرَىٰ

नेकी करने वालों से महबबत फरमाते हैं। और उन लोगों में से जिन्होंने ने कहा के हम नसारा हैं

أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ۖ فَأَغْرَيْنَا

हम ने उन से पुख्ता अहद लिया, फिर उस से फाइदा उठाना भूल गए जो उन को नसीहत की गई थी। फिर हम ने उन

بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ ۚ وَسَوْفَ

के दरमियान कयामत के दिन तक अदावत और बुग़ज़ डाल दिया। और अनकरीब

يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿۱۴﴾ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ

अल्लाह उन को खबर देगा उन आमांल की जो वो करते थे। ऐ एहले किताब!

قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ

यकीनन तुम्हारे पास हमारे पैग़म्बर आए जो तुम्हारे सामने बयान करते हैं उस में से बहोत सी चीज़ें

تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَ يَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ۚ قَدْ جَاءَكُمْ

जो तुम किताब में से छुपाते थे और बहोत सी चीज़ों से दरगुज़र करते हैं। यकीनन तुम्हारे पास अल्लाह की

مِّنَ اللَّهِ نُورٌ وَ كِتَابٌ مُّبِينٌ ﴿۱۵﴾ يَهْدِي بِهِ اللَّهُ

तरफ से रोशनी और साफ साफ बयान करने वाली किताब आ पहींची। अल्लाह उस के ज़रिए हिदायत देते हैं

مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُمُ

उस को जो अल्लाह की खुशनूदी का इत्तिबा करे, (यानी) सलामती के रास्तों पर चले, और अल्लाह उन्हें निकालते हैं

مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمُ

तारीकियों से नूर की तरफ अपने हुक्म से और अल्लाह उन्हें सीधे रास्ते की

إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿۱۶﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا

रहनुमाई करते हैं। यकीनन काफिर हैं वो लोग जिन्हों ने कहा के

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۖ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ

यकीनन अल्लाह मसीह इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) ही है। आप फरमा दीजिए के फिर कौन मालिक होगा

مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ

अल्लाह की तरफ से किसी भी चीज़ का अगर अल्लाह इरादा करें के वो मसीह इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम)

مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَ مَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۖ وَلِلَّهِ

को और उन की माँ को और उन तमाम को जो ज़मीन में हैं सब को हलाक कर दे। और अल्लाह के लिए

مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ يَخْلُقُ

आसमानों और ज़मीन की सलतनत है और उन चीज़ों की जो उन के दरमियान में हैं। अल्लाह पैदा करता है

مَا يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَقَالَتْ

जिस को चाहता है। और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। और

الْيَهُودُ وَالنَّصَارَىٰ نَحْنُ أَبْنَاؤُ اللَّهِ وَأَحِبَّاؤُهُ ۖ قُلْ

यहूद व नसारा ने कहा के हम अल्लाह के बेटे और उस के महबूब हैं। आप फरमा दीजिए के

فَلِمَ يُعَذِّبُكُم بِذُنُوبِكُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ

फिर अल्लाह तुम्हारे गुनाहों की वजह से तुम्हें क्यों अज़ाब देगा? बल्के तुम अल्लाह की मख्लूक में से एक इन्सान

خَلَقَ ۖ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ ۖ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۖ

हो। अल्लाह मग़फ़िरत करते हैं जिस के लिए चाहते हैं और अज़ाब देते हैं जिसे चाहते हैं।

وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَإِلَيْهِ

और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की सलतनत है और उन चीज़ों की जो उन के दरमियान में हैं। और उसी की

الْمَصِيرُ ۝ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا

तरफ लौटना है। ऐ एहले किताब! यकीनन तुम्हारे पास हमारे पैग़म्बर पैग़म्बरों के फ़तरत के ज़माने में

يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَىٰ فَتْرَةٍ مِّنَ الرَّسُلِ أَن تَقُولُوا

आए जो तुम्हारे सामने (दीन की बातें) बयान करते हैं, इस लिए के कहीं तुम यूँ न कहो के हमारे पास तो

مَا جَاءَنَا مِنْ بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ ۚ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ

कोई बशारत देने वाला और डराने वाला नहीं आया। तो अब यकीनन तुम्हारे पास बशारत देने वाला और डराने

وَنَذِيرٌ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَإِذْ قَالَ

वाला आ चुका। और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। और जब के मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी कौम से फरमाया

مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ

के ऐ मेरी कौम! तुम याद करो अल्लाह की उस नेअमत को जो तुम पर है।

إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنْبِيَاءَ وَجَعَلَكُمْ مُلُوكًا ۖ وَآتَاكُمْ

जब के उस ने तुम में अम्बिया बनाए और तुम्हें बादशाह बनाया। और तुम्हें

مَا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ ۖ يَقَوْمِ ادْخُلُوا

वह नेअमते दीं जो जहान वालों में से किसी को नहीं दीं। ऐ मेरी कौम! तुम मुक़द्दस सरज़मीन

الْأَرْضِ الْبُقَدَسَةِ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا

में दाखिल हो जाओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है और तुम

تَرْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خَاسِرِينَ ﴿١١﴾ قَالُوا

अपनी एड़ियों के बल मत पलटो, वरना तुम नुकसान उठाने वाले बन जाओगे। वो केहने लगे

يُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ ۖ وَإِنَّا لَنَدْخُلُهَا

ऐ मूसा! उस में तो बड़ी ज़ोरआवर कौम है। और हम उस में हरगिज़ दाखिल नहीं होंगे

حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا ۚ فَإِن يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا

जब तक के वो वहां से न निकलें। फिर अगर वो वहां से निकल जाएं तब हम

دِخْلُونَ ﴿١٢﴾ قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ

दाखिल होंगे। दो आदमियों ने कहा उन लोगों में से जो डरते थे, जिन पर अल्लाह ने

اللَّهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۖ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ

इनआम फरमाया था के तुम उन पर दरवाज़े से दाखिल हो जाओ। फिर जब तुम उस में दाखिल हो जाओगे

فَأِنَّكُمْ غَالِبُونَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِن كُنْتُمْ

तुम ही ग़ालिब रहोगे। और अल्लाह ही पर तुम्हें तवक्कुल करना चाहिए अगर तुम

مُؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾ قَالُوا يُوسَىٰ إِنَّا لَنَدْخُلُهَا أَبَدًا

मोमिन हो। तो वो केहने लगे ऐ मूसा! हम उस में हरगिज़ दाखिल नहीं होंगे कभी भी

مَا دَامُوا فِيهَا فَادْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا

जब तक के वो उस में हैं, इस लिए तुम और तुम्हारा रब जाओ और तुम दोनों लड़ो,

إِنَّا هَهُنَا قَاعِدُونَ ﴿١٤﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي

हम तो यहां बैठे हैं। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! मैं सिर्फ अपने आप पर और अपने

وَإِخِي فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿١٥﴾

भाई ही पर इखतियार रखता हूँ, इस लिए आप हमारे दरमियान और नाफरमान कौम के दरमियान जुदाई कर दीजिए।

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۖ

अल्लाह ने फरमाया के यकीनन ये ज़मीन उन पर हराम कर दी गई चालीस साल तक के लिए

يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ ۗ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ

के वो इस ज़मीन में मारे मारे फिरते रहेंगे। इस लिए आप नाफरमान कौम पर अफसोस

الْفَاسِقِينَ ﴿١٦﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَىٰ آدَمَ بِالْحَقِّ ۖ

न कीजिए। और आप उन के सामने तिलावत कीजिए आदम (अलैहिस्सलाम) के दो बेटों का किस्सा हक के मुताबिक।

إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَلْ

जब के दोनों ने कुरबानी पेश की तो उन में से एक की तरफ से कबूल की गई और दूसरे की तरफ से

مِنَ الْآخَرِ ۖ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ ۖ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ

कबूल नहीं की गई। दूसरे ने कहा के मैं तुझे ज़रूर क़त्ल कर दूंगा। पेहले ने कहा के अल्लाह तो सिर्फ

اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٤﴾ لِيَنْ بَسُطَتْ إِلَى يَدِكَ

النَّفْسِ

मुत्तकियों की तरफ से कबूल करते हैं। अगर तू मेरी तरफ अपना हाथ बढ़ाएगा

لَتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ ۚ

ताके तू मुझे क़त्ल करे तब भी मैं अपना हाथ तेरी तरफ बढ़ाने वाला नहीं हूँ ताके मैं तुझे क़त्ल करूँ।

إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٥﴾ إِنِّي أُرِيدُ

इस लिए के मैं अल्लाह रब्बुल आलमीन से डरता हूँ। मैं तो ये चाहता हूँ

أَنْ تَبُوءَ بِرِشْتِي وَإِشْكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ

कि तू मेरे और अपने गुनाह ले कर लौटे, फिर तू दोज़खियों में से बन

النَّارِ ۚ وَ ذَلِكَ جَزَاُ الظَّالِمِينَ ﴿٢٦﴾ فَطَوَّعَتْ لَهُ

जाए। और यही ज़ालिमों की सज़ा है। फिर उस के सामने उस के नफ्स ने अच्छा बना कर

نَفْسُهُ قَتَلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَاصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٧﴾

पेश किया अपने भाई का क़त्ल, चुनांचे उस ने उस को क़त्ल कर दिया, फिर वो नुक़सान उठाने वालों में से बन गया।

فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ

फिर अल्लाह ने एक कव्वा भेजा जो ज़मीन में कुरेद रहा था ताके उस को दिखाए के वो

يُؤَارِي سَوْءَةَ أَخِيهِ ۖ قَالَ يُوَيْلَتِي أَعَجَزْتُ

अपने भाई की लाश कैसे दफन करे। काबील केहने लगा हाए अफसोस! क्या मैं आजिज़ रहा

أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَذَا الْغُرَابِ فَأُؤَارِيَ سَوْءَةَ

इस से के मैं इस कव्वे की तरह होता के अपने भाई की लाश को

أَخِي ۖ فَاصْبَحَ مِنَ النَّادِمِينَ ﴿٢٨﴾ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ ۚ

दफन करता। फिर वो नदामत करने वालों में से बन गया। इसी वजह से

كَتَبْنَا عَلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا

हम ने बनी इस्राईल पर लिख दिया के जो भी किसी एक नफ्स को किसी नफ्स के बग़ैर

بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ	
कत्ल करे या ज़मीन में फसाद फैलाए तो गोया के उस ने तमाम इन्सानों	
النَّاسَ جَمِيعًا ۖ وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا	
को कत्ल किया। और जो उस को ज़िन्दा रहेने दे तो गोया के उस ने तमाम इन्सानों को	
النَّاسَ جَمِيعًا ۖ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ۖ	
ज़िन्दा रहेने दिया। यकीनन उन के पास हमारे भेजे हुए पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए।	
ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ	
फिर उन में से बहोत से उस के बाद भी ज़मीन में हद से आगे	
كُسِرُفُونَ ۚ إِنَّمَا جَزَأُا الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ	
तजावुज़ करते हैं। उन लोगों की सज़ा जो अल्लाह और उस के रसूल से	
وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا	
जंग करते हैं ओर ज़मीन में फसाद फैलाने की कोशिश करते हैं ये है के उन्हें कत्ल किया जाए	
أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ	
या उन्हें सूली दी जाए या उन के हाथ और पैर जानिबे मुखालिफ से काट	
مِّنْ خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ۚ ذَلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ	
दिए जाएं या उन्हें उस जगह से जिलावतन कर दिया जाए। ये उन के लिए दुन्या में	
فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ	
ख़स्वाई है और उन के लिए आखिरत में भारी अज़ाब है।	
إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۚ	
मगर जिन्हों ने तौबा की इस से पेहले के तुम उन के ऊपर क़ादिर हो जाओ।	
فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۚ يَأَيُّهَا	
तो जान लो के अल्लाह बहोत ज़्यादा बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। ऐ	۝
الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ	
ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उस की तरफ वसीला तलब करो	
وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۚ إِنَّ	
और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करो ताके फलाह पाओ। यकीनन	

الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا

वो लोग जो काफिर हैं अगर उन की मिल्क हो जाएं वो तमाम चीजें जो ज़मीन में हैं सारी की सारी और उसी जैसी उस

وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَمَةِ

के साथ और भी हो जाएं ताके वो उस को फिदये में दे दें क़यामत के दिन के अज़ाब से (बचने के लिए)

مَا تُقْبَلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣١﴾ يُرِيدُونَ

तो उन की तरफ से क़बूल नहीं की जाएगी। और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा। वो चाहेंगे

أَنْ يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنْهَا ۚ

के वो दोज़ख से निकलें, हालांके वो उस से निकलने वाले नहीं हैं।

وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٢﴾ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ

और उन के लिए दाइमी अज़ाब होगा। और चोरी करने वाला मर्द और चोरी करने वाली औरत

فَأَقْطَعُوهَا أَيْدِيَهُمَا جِزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا

तो तुम उन दोनों के हाथ काट दो उस की सज़ा के तौर पर जो हरकत उन दोनों ने की अल्लाह की तरफ से

مِّنَ اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٣٣﴾ فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ

इबरत के तौर पर। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। फिर अपने जुल्म के बाद जो तौबा

ظَلِمَهِ وَ أَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ ۖ

करे और इस्लाह कर ले तो यकीनन अल्लाह उस की तौबा क़बूल करेंगे।

إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٤﴾ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ

यकीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा मग़फ़िरत करने वाले, निहायत रहम वाले हैं। क्या आप जानते नहीं के अल्लाह के लिए

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ

आसमानों और ज़मीन की सलतनत है। वो अज़ाब देता है जिसे चाहे और जिस की चाहे मग़फ़िरत करे।

لِمَنْ يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٥﴾ يَأَيُّهَا

और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। ऐ

الرَّسُولُ لَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ

रसूल! आप को ग़मगीन न करें वो लोग जो कुफ़्र में तेज़ी कर रहे हैं

مِنَ الَّذِينَ قَالُوا آمَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ

उन लोगों में से जो अपने मुंह से अमना केहते हैं हालांके उन के दिल

قُلُوبُهُمْ ۖ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۖ سَمْعُونَ

ईमान नहीं लाए। और यहूदियों में से भी कुछ लोग झूठ की तरफ ज़्यादा

لِلْكَذِبِ سَمْعُونَ لِقَوْمٍ آخَرِينَ ۚ لَمْ يَأْتُواكَ

कान लगाने वाले हैं, दूसरी कौम के लिए ग़ौर से सुनते हैं जो आप के पास नहीं आए।

يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهِ ۚ يَقُولُونَ

जो कलिमात को उस के मआनी के मुतअय्यन हो जाने के बाद बदलते हैं। वो केहते हैं के

إِنْ أُوتِيتُمْ هَذَا فَخَذُّوهُ وَإِنْ لَمْ تُؤْتَوْهُ

अगर ये फतवा तुम्हें दिया जाए तो उस को ले लो और अगर तुम्हें ये फतवा न दिया जाए,

فَاَحْذَرُوا ۚ وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَنْ تَمْلِكَ

तो तुम बच कर रेहना। और जिस के गुमराह होने का अल्लाह इरादा करे तो आप अल्लाह के मुकाबले में उस के लिए

لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ

किसी भी चीज़ के हरगिज़ मालिक नहीं हो। यही लोग हैं के अल्लाह ने इरादा ही

اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚ

नहीं किया के उन के दिलों को पाक करे। उन के लिए दुन्या में ख़ुस्वाई है।

وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ سَمْعُونَ

और उन के लिए आखिरत में भारी अज़ाब है। वो झूठ की तरफ ज़्यादा कान

لِلْكَذِبِ أَكْثُونَ لِلْسُّحْرِ ۚ فَإِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُمْ

लगाने वाले हैं, वो हराम बहोत ज़्यादा खाने वाले हैं। फिर अगर वो आप के पास आए तो आप उन

بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ

के दरमियान फैसला कीजिए या उन की तरफ से ऐराज़ कीजिए। और अगर आप उन से ऐराज़ करेंगे

فَلَنْ يَضُرُّوكَ شَيْئًا ۚ وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ

तो वो आप को ज़रा भी ज़रर हरगिज़ नहीं पहुँचा सकेंगे। और अगर आप फैसला करें तो उन के दरमियान इन्साफ के

بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ وَكَيْفَ

साथ फैसला कीजिए। यकीनन अल्लाह इन्साफ करने वालों से महबबत करते हैं। और वो आप को

يُحْكِمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرَةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ

कैसे हकम बनाएंगे हालांकि उन के पास तौरात है जिस में अल्लाह का हुक्म है,

بَعْدُ

ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ ۖ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٣﴾

फिर वो इस के बाद ऐराज करते हैं। और ये ईमान वाले नहीं हैं।

إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّوْرَةَ فِيهَا هُدًى وَ نُورٌ ۖ يَحْكُمُ

यकीनन हम ने तौरात उतारी जिस में हिदायत और नूर है। जिस के मुताबिक़ फैसला

بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ هَادُوا

करते रहे वो अम्बिया जो मुतीअ थे उन लोगों के लिए जो यहूदी थे

وَالرَّبَّنِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا

और फैसला करते रहे अल्लाह वाले और उलमा, इस वजह से के वो अल्लाह की किताब के मुहाफिज़

مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا

बनाए गए थे और वो उस पर गवाह थे। इस लिए तुम इन्सानों से

النَّاسِ وَآخِشُونَ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ

मत डरो और मुझ से डरो और मेरी आयात के बदले में थोड़ी कीमत मत लो।

وَمَنْ لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ

और जो फैसला नहीं करेगा उस के मुताबिक़ जो अल्लाह ने उतारा तो यही लोग

الْكٰفِرُونَ ﴿٣٤﴾ وَكُتِبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ

काफिर हैं। और हम ने उन पर फर्ज कर दिया था तौरात में के नफ्स (को क़त्ल किया जाएगा)

بِالنَّفْسِ ۚ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ

नफ्स के बदले और आँख (फोड़ी जाएगी) आँख के बदले और नाक (काटी जाएगी) नाक के बदले

وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۚ وَالْجُرُوحَ

और कान (काटा जाएगा) कान के बदले और दांत (तोड़ा जाएगा) दांत के बदले और ज़ख्मों का भी

قِصَاصٌ ۖ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُ ۖ

किंसास लिया जाएगा। लेकिन जो उस को मुआफ़ कर दे तो ये उस के लिए कफ़ारा है।

وَمَنْ لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ

और जो फैसला न करे उस के मुताबिक़ जो अल्लाह ने उतारा तो यही लोग

الظَّالِمُونَ ﴿٣٥﴾ وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ

ज़ालिम हैं। और हम ने उन के पीछे ईसा इब्ने

مَرِّمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ ۝

मरयम (अलैहिमस्सलाम) को भेजा जो तसदीक करने वाले थे तौरात की जो उस से पेहले थी।

وَاتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ ۖ وَ مُصَدِّقًا

और हम ने उन को इन्जील दी जिस में हिदायत थी और नूर था। और वो सच्चा बतलाने वाली थी

لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَ هُدًى وَ مُوعِظَةٌ

उस तौरात को जो उस से पेहले थी और मुत्तकियों के लिए हिदायत और

لِّلْمُتَّقِينَ ۝ وَلِيَحْكُمَ أَهْلُ الْإِنجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ

नसीहत थी। और इन्जील वालों को चाहिए के वो फैसला करें उस के मुताबिक जो अल्लाह ने

اللَّهُ فِيهِ ۖ وَمَنْ لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ

इन्जील में उतारा। और जो फैसला नहीं करेगा उस के मुताबिक जो अल्लाह ने उतारा तो यही

هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ وَ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ

लोग नाफरमान हैं। और हम ने आप की तरफ ये किताब हक के साथ उतारी है

مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ

जो सच्चा बतलाने वाली है उन किताबों को जो उस से पेहले थीं

وَ مُهَيِّمًا عَلَيْهِ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ

और उन किताबों की निगरानी करने वाली है, इस लिए आप उन के दरमियान फैसला कीजिए उस के मुताबिक जिस को अल्लाह

وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۚ لِكُلِّ

ने उतारा और उन की ख्वाहिशात का इत्तिबा न कीजिए उस हक को छोड़ कर जो आप के पास आया। तुम में से

جَعَلْنَا مِنْكُمْ شُرْعَةً وَ مِنْهَا جَاءَ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ

हर एक के लिए हम ने एक शरीअत और एक तरीका मुकरर किया है। और अगर अल्लाह चाहता

لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي

तो तुम्हें एक उम्मत बनाता, लेकिन (ऐसा इस लिए नहीं किया) ताके तुम्हें आजमाए उस में जो अल्लाह

مَا أَتاكم فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا

ने तुम्हें दिया, इस लिए तुम खैर के कामों में दौड़ो। अल्लाह ही की तरफ तुम सब को लौटना है,

فِيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۚ وَإِنْ أَحْكَمُ

फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों की जिस में तुम इखतिलाफ करते थे। और ये के आप फैसला कीजिए

بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ

उन के दरमियान उस के मुताबिक जो अल्लाह ने उतारा और उन की खाहिशात का इत्तिबा न कीजिए

وَأَحْذَرُهُمْ أَنْ يَفْتِنُوكَ عَنْ بَعْضِ مَا أَنْزَلَ

और उन से बच कर रहिए के आप की तरफ अल्लाह के नाज़िलकरदा किसी हुक्म से कहीं आप को फितने में

اللَّهُ إِلَيْكَ ۖ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ

डाल न दें। फिर अगर वो मुंह मोड़ें तो आप जान लीजिए के अल्लाह ये चाहते हैं

أَنْ يُصِيبَهُمْ بِبَعْضِ دُنُوبِهِمْ ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا

के उन्हें उन के बाज़ गुनाहों की वजह से मुसीबत पहुँचाए। और यकीनन उन में से अक्सर

مِّنَ النَّاسِ لَفَاسِقُونَ ۝۳۰ أَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۖ

लोग नाफरमान हैं। क्या फिर जाहिलीयत का फेसला वो चाहते हैं?

وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝۳۱

और अल्लाह से बेहतर किस का फैसला हो सकता है ऐसी कौम के लिए जो यकीन रखती है?

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ

ऐ ईमान वालो! तुम यहूद व नसारा को दोस्त मत

أَوْلِيَاءَ ۚ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۖ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ

बनाओ। उन में से एक दूसरे के दोस्त हैं। और जो तुम में से उन से

مِّنْكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ

दोस्ती रखेगा तो वो भी उन्ही में से है। यकीनन अल्लाह ज़ालिम कौम को हिदायत

الظَّالِمِينَ ۝۳۲ فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ

नहीं देते। फिर आप देखेंगे उन लोगों को जिन के दिलों में मर्ज़ है के

يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَى أَنْ تُصِيبَنَا

वो उन के बारे में जल्दी करते हैं, वो केहते हैं के हम डरते हैं के हमें कोई मुसीबत का हादसा

دَآبِرَةٌ ۖ فَعَسَىٰ اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ

न पहुँच जाए। फिर हो सकता है के अल्लाह फतह ले आए या अपनी तरफ से

مِّنْ عِنْدِهِ ۖ فَيُصِيبُوا عَلَىٰ مَا أَسْرَوْا فِي أَنْفُسِهِمْ

कोई हुक्म ले आए, तो फिर वो नादिम होंगे उस पर जो उन्होंने ने अपने दिलों में

۝۳۱

وَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ أَخْرَجَهُمْ مِنَ ظُلُمَاتٍ إِلَىٰ نُورٍ بِإِذْنِهِ ۚ وَكَانَ ظُلُمَاتٍ ۚ

نَذِيرِينَ ۝ وَ يَقُولُ الَّذِينَ اٰمَنُوا اَهٰؤُلَآءِ				
छुपाया	था।	ओर	ईमान	वाले कहेंगे के क्या ये वही
الَّذِينَ اَقْسَمُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ				
लोग हैं जो अल्लाह की कस्में खाते थे अपनी कस्मों को मुअक़द कर के के यकीनन हम				
لَمَعَكُمْ ۖ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوا خٰسِرِينَ ۝				
तुम्हारे साथ हैं। उन के आमाल हब्त हो गए, फिर वो खसारा उठाने वाले बन गए।				
يَآٰيَهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ				
ऐ ईमान वालो! जो तुम में से मुर्तद हो जाएगा अपने दीन से				
فَسَوْفَ يَأْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَ ۙ				
तो फिर अल्लाह ऐसी कौम को ले आएंगे जिन से अल्लाह महबूत करता होगा और वो अल्लाह से महबूत करते होंगे।				
اِذْلَٰٓةٍ عَلٰٓى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعَزَّةٍ عَلٰٓى الْكٰفِرِيْنَ ۚ				
वो ईमान वालों के सामने आजिज़ी करने वाले होंगे, काफ़िरों पर भारी होंगे।				
يُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ				
अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते होंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत से				
لَوْمَةً ۚ لَا يَمُرُّ ذٰلِكَ فِضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۗ				
डरते नहीं होंगे। ये अल्लाह का फज़्ल है, वो उस को देता है जिसे चाहता है।				
وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِنَّمَا وَلِيّكُمْ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهُ				
और अल्लाह वुस्अत वाले, इल्म वाले हैं। तुम्हारा वली तो सिर्फ अल्लाह और उस का रसूल है				
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ				
और वो लोग हैं जो ईमान लाए हैं जो नमाज़ काइम करते हैं				
وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ۝ وَمَنْ				
और ज़कात देते हैं और वो रूकूअ भी करते हैं। और जो				
يَتَوَلَّ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا فَاِنَّ حِزْبَ				
अल्लाह और उस के रसूल से और ईमान वालों से दोस्ती करेगा, तो यकीनन अल्लाह की				
اللّٰهُ هُمْ الْغٰلِبُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا				
जमाअत	ही	ग़ालिब	है।	ऐ ईमान वालो!

لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُؤًا

तुम उन लोगों को दोस्त मत बनाओ जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी

وَلَعِبًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ

और खेल बना रखा है उन लोगों में से जिन को तुम से पहले किताब दी गई

وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَاءَ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ كُنتُم

और काफिरों को दोस्त मत बनाओ। और तुम अल्लाह से डरो अगर तुम

مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِذَا نَادَيْتُم إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا

ईमान वाले हो। और जब तुम नमाज़ के लिए अज़ान देते हो तो वो उस को

هُزُؤًا وَلَعِبًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ۝

हंसी और खेल बनाते हैं। ये इस वजह से के वो ऐसी कौम है जो अक़ल नहीं रखती।

قُلْ يَٰأَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنْقِبُونَ مَنَّا

आप फरमा दीजिए ऐ एहले किताब! तुम्हें हमारी तरफ से बुरी नहीं लगी

إِلَّا أَنْ أَمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ

मगर ये बात के हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उस किताब पर जो हम पर उतारी गई और उन किताबों पर

مِّن قَبْلُ ۚ وَإِنَّ أَكْثَرَكُمْ فَسِقُونَ ۝ قُلْ هَلْ

जो इस से पहले उतारी गई और ये के तुम में से अक्सर नाफरमान हैं। आप फरमा दीजिए क्या

أَنبِئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذَٰلِكَ مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ ۚ

मैं तुम्हें खबर दूँ उस से बुरी चीज़ की अल्लाह के नज़दीक सवाब (यानी सज़ा) के ऐतेबार से?

مَنْ لَّعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمْ

वो शख्स है के जिस पर अल्लाह ने लानत फरमाई और जिस पर उस ने ग़ज़ब किया और जिन में से उस ने

الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتِ ۚ أُولَٰئِكَ

बन्दर और खिन्ज़ीर बनाए और जो अल्लाह से सरकशी करने वाले शैतान की इबादत करता है। यही लोग

شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝

बुरे दर्जे वाले और सीधी राह से ज़्यादा भटके हुए हैं।

وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَ قَدْ دَخَلُوا بِالْكَفْرِ

और जब वो तुम्हारे पास आते हैं तो 'अमन' कहते हैं हालांकि वो कुफ़्र को ले कर दाखिल हुए

وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا

और वो कुफ्र ही को ले कर निकले। और अल्लाह खूब जानता है उस को जो वो छुपा

يَكْتُمُونَ ﴿١١﴾ وَتَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يُسَارِعُونَ فِي الْإِثْمِ

रहे हैं। और उन में से बहोत सों को आप देखोगे के वो गुनाह और ज़्यादती और

وَالْعُدْوَانَ وَ أَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۖ لَبِئْسَ مَا كَانُوا

अपने हराम खाने की तरफ तेज़ दौड़ते हैं। बेशक बुरे हैं वो काम जो वो

يَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾ لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ

कर रहे हैं। उन को क्यूं रोकते नहीं अल्लाह वाले और उलमा

عَنْ قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَ أَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۖ لَبِئْسَ

उन के गुनाह की बात बोलने से और उन के हराम खाने से? यकीनन बुरे हैं वो

مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١٣﴾ وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ

काम जो वो कर रहे हैं। और यहूदियों ने कहा के अल्लाह का हाथ बन्धा हुआ है।

غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا ۖ بَلْ يَدُهُ مَبْسُوتَةٌ

उन के हाथ बन्ध जाएं और उन पर इस केहने की वजह से लानत हो। बल्के अल्लाह के दोनों हाथ खुले हुए हैं।

يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ ۖ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ

वो खर्च करता है जैसे चाहता है। और उन में से बहोत सों को ज़रूर सरकशी और कुफ्र में

مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۖ وَالْقَيْنَا

बढ़ाएगा वो कुरआन जो आप की तरफ आप के रब की तरफ से उतारा गया है। और हम ने उन के

بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ ۖ

दरमियान क़यामत के दिन तक अदावत और बुग़ज़ डाल दिया।

كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا لِلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ ۖ وَيَسْعَوْنَ

जब कभी वो लड़ाई की आग भड़काएंगे तो अल्लाह उसे बुझा देंगे। और वो ज़मीन में

فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۖ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٤﴾

फसाद फैलाने की कोशिश करते हैं। और अल्लाह फसाद फैलाने वालों से महबूबत नहीं करते।

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ

और अगर एहले किताब ईमान लाते और तक्वा इखतियार करते तो हम उन से उन की बुराइयाँ

سَّاتِهِمْ وَ لَا دُخْلَهُمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿١٦٥﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ दूर कर देते और हम उन्हें जन्नाते नईम में दाखिल करते। और अगर वो
أَقَامُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ तौरात और इन्जील को काइम करते और उन किताबों को जो उन की तरफ उन के रब की तरफ से उतारी गई,
مِّن رَّبِّهِمْ لَا كُلُّوا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ ط तो वो अलबत्ता ज़रूर खाते अपने ऊपर से और अपने पैरों के नीचे से।
مِّنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ط وَ كَثِيرٌ مِّنْهُمْ سَاءَ उन में से एक जमाअत ऐतेदाल वाली है। और उन में से अक्सर बुरे हैं वो काम
مَا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٦﴾ يَأَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ जो वो कर रहे हैं। ऐ पैग़म्बर! आप उस को पहुँचा दीजिए जो आप की तरफ आप के रब की तरफ से
مِّن رَّبِّكَ ط وَإِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ ط उतारा गया। और अगर आप ऐसा नहीं करोगे तो फिर आप ने अल्लाह का पैग़ाम नहीं पहुँचाया।
وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ط إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي और अल्लाह आप की इन्सानों से हिफाज़त करेंगे। यकीनन अल्लाह काफिर कौम को
الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿١٦٧﴾ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُمْ हिदायत नहीं देते। आप फरमा दीजिए ऐ एहले किताब! तुम किसी चीज़ पर भी नहीं
عَلَى شَيْءٍ حَتَّى تُقِيمُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ हो जब तक के तुम तौरात और इन्जील को काइम न करो और उन अहकाम को जो तुम्हारे रब की जानिब से तुम्हारी
إِلَيْكُمْ مِّن رَّبِّكُمْ ط وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ مَا أُنْزِلَ तरफ उतारे गए हैं। और उन में से बहोत सों को सरकशी और कुफ़्र में बढ़ाएगा वो
إِلَيْكَ مِّن رَّبِّكَ طُعْيَانًا وَكُفْرًا ؕ فَلَا تَأْسَ कुरआन जो आप की तरफ आप के रब की तरफ से उतारा गया। इस लिए आप
عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿١٦٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا काफिर कौम पर अफसोस न कीजिए। यकीनन वो लोग जो ईमान लाए
وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّبِئُونَ وَالنَّصَارَىٰ مَن آمَنَ और जो यहूदी हैं और जो साबी हैं और जो नसारा हैं उन में से जो भी ईमान लाएगा

بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَ عَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ

अल्लाह पर और आखिरी दिन पर और नेक अमल करता रहेगा तो उन पर न खौफ

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٦﴾ لَقَدْ أَخَذْنَا

होगा और न वो ग़मगीन होंगे। यकीनन हम ने

مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ رُسُلًا ۝

बनी इस्राईल से पुख्ता अहद लिया और हम ने उन की तरफ पैग़म्बर भेजे।

كَلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنفُسُهُمْ ۝

जब कभी उन के पास कोई पैग़म्बर उस को ले कर आता था जिसे उन के नफ्स चाहते नहीं थे

فَرِيقًا كَذَّبُوا وَ فَرِيقًا يَقْتُلُونَ ﴿٦٧﴾ وَحَسِبُوا

तो उन्होंने ने एक जमाअत को झुठलाया और एक जमाअत को वो क़त्ल करते थे। और उन्होंने ने गुमान किया

أَلَّا تَكُونُوا فِتْنَةً فَعَمُوا وَصَمُوا ثُمَّ تَابَ اللَّهُ

के फितना नहीं होगा, फिर वो अन्धे बने और बेहरे हो गए, फिर अल्लाह ने उन की तौबा क़बूल

عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُوا كَثِيرٌ مِنْهُمْ ۝ وَاللَّهُ

फरमाई, फिर वो अन्धे हो गए और बेहरे हो गए उन में से बहोत से। और अल्लाह

بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا

देख रहा है उन कामों को जो वो कर रहे हैं। यकीनन काफिर हैं वो लोग जिन्होंने ने कहा के

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۝ وَقَالَ الْمَسِيحُ

यकीनन अल्लाह मसीह इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) ही है। हालांके मसीह इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) ने कहा के

يَبْنِي إِسْرَءِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّكُمْ ۝

ऐ बनी इस्राईल! तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा रब है।

إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ

यकीनन जो भी अल्लाह के साथ शरीक ठेहराएगा तो यकीनन अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम

الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۝ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٦٩﴾

कर दी है और उस का ठिकाना दोज़ख है। और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं होगा।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَلَاثُ

यकीनन काफिर हैं वो लोग जिन्होंने ने कहा के यकीनन अल्लाह तीन में का

وَقُلْ لِّزَيْنٍ

ثَلَاثَةً وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا إِلَهُ وَاحِدٌ ۝

तीसरा है। हालांकि कोई माबूद नहीं मगर यकता माबूद।

وَإِنْ لَّمْ يَنْتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا

और अगर वो बाज़ नहीं आएंगे उन बातों से जो वो केह रहे हैं तो उन में से काफिरों

مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ أَفَلَا يَتُوبُونَ

को ज़रूर दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा। क्या फिर वो अल्लाह की तरफ तौबा

إِلَى اللَّهِ وَ يَسْتَغْفِرُونَهُ ۝ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

नहीं करते और उस से इस्तिग़फ़ार नहीं करते? और अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ ۚ قَدْ خَلَتْ

मसीह इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) नहीं हैं मगर भेजे हुए पैग़म्बर। यकीनन उन से

مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۝ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ۝ كَانَا

पहले भी बहोत से पैग़म्बर गुज़र चुके हैं। और उन की माँ सिद्दीका थी। वो दोनों

يَأْكُلْنَ الطَّعَامَ ۝ أَنْظِرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ

खाना भी खाते थे। आप देखिए के हम उन के लिए कैसे आयतें बयान करते हैं,

ثُمَّ أَنْظِرْ أَلَى يُؤْفَكُونَ ۝ قُلْ أَتَعْبُدُونَ

फिर आप देखिए के वो कहाँ उल्टे फिरे जा रहे हैं। आप फरमा दीजिए क्या तुम अल्लाह

مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا

के अलावा इबादत करते हो ऐसी चीज़ों की जो तुम्हारे लिए न ज़रूर की मालिक हैं,

وَلَا نَفْعًا ۝ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ قُلْ يَٰأَهْلَ

न नफे की मालिक हैं? और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। आप फरमा दीजिए ऐ एहले

الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ

किताब! तुम अपने दीन में हक़ के अलावा से गुलू मत करो और तुम

وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِنْ قَبْلُ

ऐसी कौम की ख्वाहिशात के पीछे मत चलो जो इस से पेहले गुमराह हो चुके

وَأَصْلُوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝

और उन्होंने ने बहोत सों को गुमराह कर दिया और खुद भी सीधी राह से भटक गए।

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَى لِسَانِ	بनी इस्राईल में से काफिरों पर लानत की गई दावूद (अलैहिस्सलाम) की
دَاوُدَ وَ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا	ज़बानी और ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) की ज़बानी। ये इस वजह से के उन्होंने ने नाफरमानी की और वो हद से
يَعْتَدُونَ ﴿٤٨﴾ كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ	आगे बढ़ते थे। वो एक दूसरे को रोकते नहीं थे ऐसे बुरे कामों से
فَعَلُوهُ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٤٩﴾ تَرَىٰ كَثِيرًا	जिन्हें वो खुद करते थे। यकीनन बुरे थे वो काम जो वो कर रहे थे। आप उन में से बहोत सों
مِنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ	को देखोगे के वो काफिरों से दोस्ती रखते हैं। अलबत्ता बुरे हैं वो आमाल जो खुद उन्होंने ने अपने लिए
لَهُمْ أَنْفُسُهُمْ أَنْ سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ	आगे भेज दिए हैं, इस वजह से के अल्लाह उन पर नाराज़ है और वो अज़ाब में
هُمْ خَالِدُونَ ﴿٥٠﴾ وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللهِ وَالنَّبِيِّ	हमेशा रहेंगे। और अगर वो ईमान लाते अल्लाह पर और इस नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर
وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ أَوْلِيَاءَ	और उस कुरआन पर जो इस नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तरफ उतारा गया तो उन्हें दोस्त न बनाते,
وَلَكِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ فَسِقُونَ ﴿٥١﴾ لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ	लेकिन उन में से अक्सर नाफरमान हैं। आप ज़रूर पाओगे तमाम इन्सानों में से
عَدَاوَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ	सब से ज़्यादा सख्त अदावत रखने वाला ईमान वालों से यहूदियों को और मुशरिकीन को।
وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِلَّذِينَ آمَنُوا	और ज़रूर आप मुसलमानों से सब से ज़्यादा महबबत के एतेबार से करीब पाओगे
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرِي ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ	उन लोगों को जो केहते हैं के हम नसारा हैं। ये इस वजह से के उन में
قَسِيسِينَ وَ رُهَبَانًا وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٥٢﴾	उलमा हैं और राहिब हैं और इस वजह से के वो तकबुर नहीं करते।

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنُهُمْ

और जब वो उस कुरआन को सुनते हैं जो रसूल की तरफ उतारा गया तो आप उन की आँखों को

تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُولُونَ

आंसुओं से बेहती हुई देखेंगे उस हक की वजह से जो उन्होंने ने पेहचाना। वो केहते हैं के

رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَمَا لَنَا

ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, इस लिए आप हमें शहादत देने वालों के साथ लिख दीजिए। और हमें क्या हुआ

لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ ۖ وَنَطْمَعُ

के हम ईमान न लाएं अल्लाह पर और उस हक पर जो हमारे पास आया, हालांकि हम

أَنْ يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ۝ فَاتَّابَهُمْ

उम्मीद रखते हैं के हमारा रब हमें सालेह कौम के साथ शामिल कर दे। फिर अल्लाह ने

اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

उन के इस केहने की वजह से बदले में ऐसी जन्नतें दीं, जिन के नीचे नेहरें बेहती होंगी,

خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ

वो उन में हमेशा रहेंगे। और ये नेकी करने वालों का बदला है। और जिन लोगों ने

كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝

कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वो दोज़खी हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْرِمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ

ऐ ईमान वालो! तुम उन पाकीज़ा चीज़ों को हराम मत करो जो अल्लाह ने तुम्हारे

اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ

लिए हलाल की हैं और तुम हद से आगे मत बढ़ो। यकीनन अल्लाह हद से आगे बढ़ने वालों से

الْمُعْتَدِينَ ۝ وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ

महबूत नहीं करते। और तुम अल्लाह तआला की दी हुई हलाल व पाकीज़ा रोज़ी को खाओ।

وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ

और तुम अल्लाह से डरो, उस अल्लाह से जिस पर तुम ईमान रखते हो। अल्लाह तुम्हारा मुआखज़ा

اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا

नहीं करेंगे तुम्हारी लगव कस्मों में, लेकिन अल्लाह तुम्हारा मुआखज़ा करेंगे

عَقَدْتُمْ الْإِيمَانَ ۖ فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشْرَةِ

तुम्हारी पुख्ता कस्मों में। फिर उस का कफ़ारा दस मस्कीन को खाना

مَسْكِينٍ مِنْ أَوْسَطِ مَا تَطْعَمُونَ أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ

खिलाना है उस दरमियानी खाने में से जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या उन को कपड़ा देना है

أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۖ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ۖ

या एक गुलाम आज़ाद करना है। फिर जो उस को न पाए तो तीन दिन के रोज़े हैं।

ذَلِكَ كَفَّارَةُ إِيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ ۚ وَاحْفَظُوا

ये तुम्हारी कस्मों का कफ़ारा है जब तुम कसम खा बैठो। और तुम अपनी कस्मों

إِيْمَانَكُمْ ۚ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ

की हिफाज़त करो। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें बयान करते हैं ताके तुम

تَشْكُرُونَ ﴿٩٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ

शुक्र अदा करो। ऐ ईमान वालो! शराब

وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ رَجُسٌ مِنْ عَمَلٍ

और जुवा और बुत और जुवे के तीर गन्दगी, शैतान के कामों में

الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٩٩﴾ إِنَّمَا يُرِيدُ

से है, इस लिए तुम उन से बचो ताके तुम फलाह पाओ। शैतान तो सिर्फ ये

الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقَعَ بَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ

चाहता है के शराब और जुवे की वजह से तुम्हारे दरमियान

فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَ يُصَدِّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ

अदावत और बुग़ज़ डाल दे और तुम्हें अल्लाह की याद से

وَعَنِ الصَّلَاةِ ۚ فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ ﴿١٠٠﴾ وَأَطِيعُوا اللَّهَ

और नमाज़ से रोक दे। क्या फिर तुम बाज़ आते हो? और तुम अल्लाह की इताअत करो

وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ

और रसूल की इताअत करो और बचते रहो। फिर अगर तुम मुंह फेर लोगे

فَاعْلَمُوا أَنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلْغُ الْمُبِينُ ﴿١٠١﴾ لَيْسَ

तो जान लो के हमारे पैग़म्बर के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुँचा देना है। उन लोगों

عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ

पर जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन पर कोई गुनाह नहीं है

فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

उस में जो वो पेहले खा चुके जब के वो मुत्तकी रहे और ईमान लाए और नेक अमल करते रहे,

ثُمَّ اتَّقَوْا وَآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوْا وَأَحْسَنُوا ۗ وَاللَّهُ

फिर वो मुत्तकी रहे और ईमान लाए, फिर मुत्तकी रहे और नेकोकार रहे। और अल्लाह

يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَيَبْلُوَنَّكُمْ

नेकी करने वालों से महबबत फरमाते हैं। ऐ ईमान वालो! अल्लाह तुम्हें ज़रूर

اللَّهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالَهُ أَيْدِيكُمْ وَرِمَاحُكُمْ

आज़माएंगे किसी क़दर शिकार के ज़रिए जिन को पहोंचते होंगे तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े,

لَيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَخَافُهُ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ

इस लिए ताके अल्लाह मालूम करे उस शख्स को जो अल्लाह से डरता है बग़ैर देखे। फिर भी उस के बाद जो ज़्यादती

ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا

करेगा तो उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है। ऐ ईमान वालो! तुम शिकार को मत क़त्ल

الصَّيْدَ وَأَنتُمْ حُرُمٌ ۚ وَمَن قَتَلَ مِنْكُم مَّتَعِدًّا

करो इस हाल में के तुम मुहरिम हो। और जो तुम में से उस को क़त्ल करेगा जान बूझ कर

فَجَزَاءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعْمِ يَحْكُمُ بِهِ ذَوَا عَدْلٍ

तो बदला देना है उसी जैसा चौपाया जो उस ने क़त्ल किया, जिस का फैसला करेंगे तुम में से दो आदिल

مِّنكُمْ هَدْيًا بَلِغَ الْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّارَةً طَعَامٍ مِّسْكِينَ

आदमी, जो हदी बन कर काबे को पहोंचने वाली हो, या कफ़ारा देना है मिसकीनों का खाना

أَوْ عَدْلٌ ذَٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهِ ۗ عَفَا

या उस के बराबर रोज़े रखने हैं ताके वो अपने गुनाह के वबाल को चखे। अल्लाह ने

اللَّهُ عَمَّا سَلَفَ ۚ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللَّهُ مِنْهُ ۚ

मुआफ़ कर दिया उस को जो पेहले हो चुका। और जो दोबारा ऐसा करेगा तो अल्लाह उस से इन्तिक़ाम लेंगे।

وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ﴿٤٨﴾ أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ

और अल्लाह ज़बर्दस्त हैं, इन्तिक़ाम लेने वाले हैं। तुम्हारे लिए हलाल किया गया समन्दर का शिकार

وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ

और उस का खाना तुम्हारे फाइदे के लिए और मुसाफिरों के लिए। और तुम पर हराम किया गया

صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي

खुशकी का शिकार जब तक तुम मुहरिम हो। और उस अल्लाह से डरो

إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩١﴾ جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ

जिस की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे। अल्लाह ने काबे को हु्रमत वाला घर

الْحَرَامَ قِيَمًا لِلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ

बनाया, इन्सानों के कियाम का ज़रिया बनाया, और अल्लाह ने हु्रमत वाले महीने और हदी के जानवरों को

وَالْقَلَائِدَ ۚ ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا

और उन के गले में पड़े हुए पट्टों को (अमन का ज़रिया बनाया)। ये इस लिए ताके तुम जान लो के अल्लाह जानता है

فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

उस को जो आसमानों और ज़मीन में है और ये के अल्लाह हर चीज़ को खूब

عَلِيمٌ ﴿٩٢﴾ اَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ

जानने वाले हैं। जान लो के यकीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं और ये के अल्लाह

غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٣﴾ مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۚ وَاللَّهُ

बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। रसूल के ज़िम्मे नहीं है मगर पहुँचा देना। और अल्लाह

يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٩٤﴾ قُلْ لَا يَسْتَوِي

खूब जानता है उसे जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। आप फरमा दीजिए के नापाक और

الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ ۚ فَاتَّقُوا

पाकीज़ा दोनों बराबर नहीं हो सकते अगरचे गन्दी चीज़ की कसरत तुझे अच्छी लगे। तो अल्लाह से

اللَّهُ يَأُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَفْلَحُونَ ﴿٩٥﴾ يَا أَيُّهَا

डरो ऐ अक्ल वालो! ताके फलाह पाओ। ऐ

الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءٍ إِنْ تُبَدَّ لَكُمْ

ईमान वालो! बहोत सी चीज़ों के मुतअल्लिक सवाल मत करो के अगर वो तुम्हारे सामने ज़ाहिर की जाएं

تَسْأَلُكُمْ ۚ وَإِنْ تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْآنُ

तो तुम्हें बुरी लगे। और अगर सवाल करोगे उन चीज़ों के मुतअल्लिक जिस वक़्त कुरआन नाज़िल किया जा रहा है

تُبَدِّلْ لَكُمْ عَفَاَ اللَّهِ عَنْهَا ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١١﴾

तो वो तुम्हारे लिए ज़ाहिर कर दी जाएंगी। साबिक़ा सवालात अल्लाह ने मुआफ़ कर दिए। और अल्लाह बख़्शने वाले, हिल्म वाले हैं।

قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا

तुम से पेहले एक कौम ने उन चीज़ों का सवाल किया, फिर वो उस के साथ

كُفِرِينَ ﴿١٢﴾ مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَحِيرَةٍ وَلَا سَائِبَةٍ

कुफ़र करने वाले बन गए। अल्लाह ने नहीं बनाया बहीरा और न साइबा

وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ ۚ وَلَكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا

और न वसीला और न हाम, लेकिन वो लोग जो काफिर हैं

يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۚ وَكَثُرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٣﴾

वो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं। और उन में से अक्सर अक्ल नहीं रखते।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ

और जब उन से कहा जाता है के तुम आओ उस की तरफ जो अल्लाह ने उतारा

وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۖ

और रसूल की तरफ तो वो केहते हैं के हमारे लिए काफी है वो जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया।

أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٤﴾

क्या अगरचे उन के बाप दादा कुछ भी जानते नहीं थे और हिदायतयाफ़्ता नहीं थे?

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسُكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ

ऐ ईमान वालो! तुम अपनी फ़िक्र करो। तुम्हें ज़रर नहीं दे सकता

مِّنْ ضَلٍّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۖ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا

वो शख्स जो गुमराह हो गया जब तुम हिदायतयाफ़्ता रहोगे। अल्लाह ही की तरफ तुम सब को लौट कर जाना है,

فِيَنبِئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों के मुतअल्लिक़ जो तुम करते थे। ऐ ईमान वालो!

شَهَادَةٌ بَيْنَكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدُكُمُ الْمَوْتُ حِينَ

तुम्हारे दरमियान की गवाही जब तुम में से किसी एक की मौत का वक़्त करीब आ जाए, तो

الْوَصِيَّةِ اثْنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ أَوْ أُخْرَيْنِ مِنْ غَيْرِكُمْ

वसीय्यत के वक़्त तुम में से दो आदिल आदमी हैं या तुम्हारे अलावा में से दो,

إِنْ أَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ	
अगर तुम ज़मीन में सफर करो, फिर तुम्हें मौत की मुसीबत	
الْمَوْتُ تَحْسُونَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمِينَ بِاللَّهِ	
पहोंचे। तो तुम उन दोनों गवाहों को रोक लो नमाज़ के बाद, फिर वो अल्लाह की कसम खाएं	
إِنْ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ	
अगर तुम शक करो, के हम इस कसम को किसी कीमत पर नहीं बेच रहे, अगर्चे करीबी रिश्तेदार ही क्यों न हो,	
وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذَا لَمِنَ الْإِثْمِينَ ۖ فَإِنْ عُثِرَ	
और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाते हैं। यकीनन तब तो हम गुनेहगारों में से बन जाएंगे। फिर अगर इत्तिला	
عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّ إِثْمًا فَآخَرِينَ يَقُومِينَ مَقَامَهُمَا	
मिल जाए इस बात की के वो दोनों (कसम खाने वाले) गुनाह के मुस्तहिक हुए हैं (हक दबा कर के) तो फिर दूसरे दो आदमी	
مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأُولَا فَيُقْسِمِينَ بِاللَّهِ	
मय्यित के करीबी रिश्तेदार उन के काइम मुकाम हों उन में से जिन का हक दबा है, फिर वो दोनों अल्लाह की कसम खाएं	
لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَا ۚ إِنَّا	
के यकीनन हमारी गवाही उन (पेहले वालों) की गवाही से ज़्यादा सच्ची है और हम ने ज़्यादती नहीं की। तब तो	
إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ۖ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ	
हम ही कुसूरवार बन जाएंगे। ये इस के ज़्यादा करीब है के वो गवाही को अदा करें	
عَلَىٰ وَجْهٍ أَوْ يَخَافُونَ أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانُ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ ۚ	
उस के तरीके पर या वो डरें इस से के उन की कस्मों के बाद दूसरी कस्में ली जाएंगी।	
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمِعُوا ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ	
और तुम अल्लाह से डरो और सुनो। और अल्लाह नाफरमान कौम को हिदायत नहीं	
الْفَاسِقِينَ ۖ يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا	١٢
देते। जिस दिन अल्लाह पैगम्बरों को जमा करेंगे, फिर पूछेंगे के तुम्हें क्या	١٢
أَحْبَبْتُمْ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۖ	
जवाब दिया गया? वो कहेंगे के हमें मालूम नहीं। यकीनन तू ही ग़ैब की चीज़ों को जानने वाला है।	
إِذْ قَالَ اللَّهُ يَعْصَىٰ ابْنُ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِي	
जब के अल्लाह ने फरमाया के ऐ ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम)! याद करो मेरी उस नेअमत को	

وَقَالَ

عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَالِدَتِكَ إِذْ أَيَّدْتُكَ بِرُوحِ الْقُدُسِ

जो आप पर हुई और आप की वालिदा पर। जब के मैं ने तुम्हारी ताईद की रूहुल कुदुस के ज़रिए।

تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْهَدْيِ وَكُفْلًا ۖ وَإِذْ عَلَّمْتُكَ

तुम इत्सानों से कलाम करते थे गेहवारे में और बड़ी उम्र में। और जब मैं ने

الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۚ وَإِذْ تَخْلُقُ

तुम्हें किताब और हिक्मत और तौरात और इन्जील की तालीम दी। और जब तुम

مِنَ الطَّيْرِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِي فَتَنْفُخُ فِيهَا

मिट्टी से परिन्दे की शक्ल की तरह बनाते थे मेरे हुक्म से, फिर तुम उस में फूँक मारते थे,

فَتَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِي وَتُبْرِئُ الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ

फिर वो उड़ता हुवा परिन्दा बन जाता था मेरे हुक्म से, और तुम नाबीना और बर्स वाले को मेरे हुक्म से अच्छा

بِإِذْنِي ۚ وَإِذْ تَخْرِجُ السَّوْتِ بِإِذْنِي ۚ وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي

करते थे। और जब तुम मुर्दों को मेरे हुक्म से (ज़िन्दा कर के) निकालते थे। और जब मैं ने बनी

إِسْرَائِيلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالَ الَّذِينَ

इस्राईल को तुम से रोका जब आप उन के पास मोअजिज़ात ले कर आए, फिर उन में से

كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ وَإِذْ

काफिरों ने कहा बस, ये तो खुला जादू है। और जब

أَوْحَيْتُ إِلَى الْخَوَارِجِ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا

मैं ने वही की हवारीयीन की तरफ के तुम मुझ पर और मेरे पैगम्बर पर ईमान लाओ। तो उन्होंने ने कहा

أَمَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ۝ إِذْ قَالَ الْخَوَارِجُ

के हम ईमान ले आए और आप गवाह रहिए के हम मुसलमान हैं। जब के हवारीयीन ने कहा

يَعِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنْزِلَ

ऐ ईसा इब्ने मरयम! क्या आप का रब इस की ताकत रखता है के हमारे ऊपर आसमान से

عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ ۖ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ كُنتُمْ

माइदा (भरा हुवा दस्तरख्वान) उतारो। ईसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के अल्लाह से डरो अगर तुम

مُؤْمِنِينَ ۝ قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ

मोमिन हो। उन्होंने ने कहा के हम ये चाहते हैं के उस से खाएं और हमारे दिल

قُلُوبُنَا وَ نَعْلَمَ أَنَّ قَدْ صَدَقْتَنَا وَ نَكُونُ عَلَيْهَا

मुतमइन हों और मालूम कर लें के आप ने हम से सच बोला है और हम उस पर गवाही देने

مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ

वालों में से हो जाएं। ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) ने कहा ऐ अल्लाह!

رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا

ऐ हमारे रब! तू हम पर आसमान से भरा हुवा दस्तरख्वान उतार जो हमारे

عَيْدًا لِأَوَّلِنَا وَ آخِرِنَا وَ آيَةً مِّنكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ

अगले और पिछलों के लिए खुशी का बाइस बने और तेरी तरफ से निशानी हो। और आप हमें रोज़ी दीजिए,

خَيْرُ الرّٰزِقِينَ ۝ قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ

और आप बेहतरीन रोज़ी देने वाले हैं। अल्लाह ने फरमाया के मैं उसे उतारूंगा तुम पर।

فَمَن يَكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ عَذَابًا

लेकिन उस के बाद तुम में से जो कुफ़ करेगा तो मैं उसे ऐसा अज़ाब दूंगा के

لَا أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ ۝ وَإِذْ قَالَ اللَّهُ

जहान वालों में से किसी को वो अज़ाब नहीं दूंगा। और जब अल्लाह ने फरमाया के

يُعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي

ऐ ईसा इब्ने मरयम! क्या आप ने इन्सानों से कहा था के तुम मुझे

وَأُمَّيَ الْهَيْنِ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ

और मेरी माँ को अल्लाह को छोड़ कर दो माबूद बना लो। ईसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा के आप पाक हैं, मेरे लिए

لِي أَن أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي ۚ بِحَقِّ ۚ إِن كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ

मुनासिब नहीं था के मैं कहूं वो जिस का मुझे हक़ नहीं। अगर मैं ने वो कहा होता तो यकीनन

عَلِمْتُهُ ۚ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ

आप को मालूम होता। (क्यूं के) आप जानते हैं उस को जो मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता उस को जो आप के जी में है।

إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝ مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا

यकीनन आप तमाम छुपी हुई चीज़ों को खूब जानने वाले हैं। मैं ने तो उन से नहीं कहा मगर

مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ

वही जिस का आप ने मुझे हुक्म दिया के तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा रब है। और मैं

۝

۝

وَقَدْ أَيْدَى إِلَهُ عَالَمِينَ ۝

عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَبَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ

उन पर गवाह था जब तक मैं उन में था। फिर जब आप ने मुझे उठा लिया

أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٤﴾

तो आप उन पर निगरान थे। और आप हर चीज़ देख रहे थे।

إِنْ تُعَذِّبُهُمْ فَإِنَّهُمْ عَبْدُكَ ۚ وَإِنْ تَغْفِرَ لَهُمْ فإِنَّكَ

अगर आप उन्हें अज़ाब दें तो यकीनन वो आप के बन्दे हैं। और अगर आप उन की मग़फ़िरत कर दें तो यकीनन

أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٥﴾ قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ

आप ज़बर्दस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। अल्लाह ने फरमाया के ये वो दिन है के

الصّٰدِقِينَ صَدَقْتُهُمْ لَهُمْ جَنَّتُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا

सच्चों को उन की सच्चाई नफ़ा देगी। उन के लिए जन्नतें होंगी जिन के नीचे से नेहरें बेहती

الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا

होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। अल्लाह उन से राज़ी हुवा और वो अल्लाह से राज़ी

عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٦﴾ لِلَّهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ

हुए। ये भारी कामयाबी है। अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन और उन तमाम चीज़ों

وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾

की सलतनत है जो उन में हैं। और वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

رُؤُوسُهَا ٢٠

سُورَةُ الْأَنْعَامِ بِمَكِّيَّةٌ (٦) (٥٥)

آيَاتُهَا ١٦٥

और २० सूकूअ हैं

सूरह अन्आम मक्का में नाज़िल हुई

उस में १६५ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ

तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने आसमान और ज़मीन पैदा किए और तारीकियों और नूर को

الظُّلُمِ وَالنُّوْرَ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١٨﴾

पैदा किया। फिर वो लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया, वो अपने रब के साथ दूसरे शुरका को बराबर करार देते हैं।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلَ ۖ

वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर उस ने एक आखिरी मुद्दत का फैसला कर लिया।

وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَآ ثُمَّ أَنْتُمْ تَنْتَرُونَ ۝ وَهُوَ اللَّهُ

और मुकर्रर की हुई आखिरी मुद्दत अल्लाह के पास है, फिर भी तुम शक करते हो? और वही अल्लाह

فِي السَّمَوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ ۖ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ

आसमानों में भी है और ज़मीन में भी है। वो जानता है तुम्हारी चुपके से कही हुई बात को और तुम्हारी ज़ोर

وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ۝ وَمَا تَأْتِيهِمْ مِّنْ آيَةٍ

से कही हुई बात को और वो जानता है उन आमाँल को जो तुम करते हो। और उन के पास कोई निशानी नहीं आती

مِّنْ آيَةِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ فَقَدْ

उन के रब की निशानियों में से मगर वो उस से पैराज़ करते हैं। फिर

كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ

उन्हों ने हक़ को झुठलाया जब वो उन के पास आया। फिर अनक़रीब उन के

أَنْبَأُوا مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ

पास उन चीज़ों की खबरें आएंगी जिन का वो इस्तिहज़ा किया करते थे। क्या उन्होंने ने देखा नहीं

أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّيْنَهُمْ فِي الْأَرْضِ

के हम ने उन से पेहले कितनी कौमों को हलाक किया जिन को हम ने कुदरत दी थी ज़मीन में,

مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَهُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا

उतनी जितनी हम ने तुम्हें कुदरत नहीं दी और हम ने उन पर आसमान बरसता हुवा छोड़ा।

وَجَعَلْنَا الْإِنْتَهَرَ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ

और हम ने नेहरें बनाई जो उन के नीचे से बेहती थीं, फिर हम ने उन को हलाक किया

بِذُنُوبِهِمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝

उन के गुनाहों की वजह से और हम ने उन के बाद दूसरी कौमों पैदा कीं।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِى قُرْطَاسٍ فَلَمْسُوهُ

और अगर हम आप के ऊपर कागज़ में लिखी हुई किताब उतारते, फिर वो उस को अपने हाथों से

بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ

छूते, तब भी काफिर लोग केहते के ये नहीं है मगर खुला

مُبِينٌ ۝ وَ قَالُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَلَوْ

जादू। और उन्होंने ने कहा के इस नबी पर कोई फरिश्ता क्यूँ नहीं उतारा गया? और अगर

أَنْزَلْنَا مَلَكًا لِّقَضَى الْأَمْرِ ثُمَّ لَا يُنْظَرُونَ ٨ وَلَوْ جَعَلْنَاهُ

हम फरिश्ता उतारते तो अलबत्ता मुआमला खत्म कर दिया जाता, फिर उन्हें मोहलत न दी जाती। और अगर हम उस को फरिश्ता

مَلَكًا جَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَ لَلْبَسْنَا عَلَيْهِمْ نَا يَلْبِسُونَ ٩

बनाते तो उस फरिश्ते को भी मर्द बनाते और हम उन पर वही शुबह डाल देते जिस शुबहे में वो अब हैं।

وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ

यकीनन आप से पेहले पैगम्बरों का भी इस्तिहज़ा किया गया, फिर उन में से मज़ाक करने वालों को

سَخَرُوا مِنْهُمْ مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ١٠ قُلْ

उस अज़ाब ने घेर लिया जिस का वो इस्तिहज़ा किया करते थे। आप फरमा दीजिए

سَيُرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

के तुम ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो के झुठलाने वालों का अन्जाम

الْمُكَذِّبِينَ ١١ قُلْ لِّمَن مَّا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

कैसा हुआ। आप फरमा दीजिए के किस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं?

قُلْ لِلَّهِ ۖ كَتَبَ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةُ ۖ لِيَجْمَعَنَّكُمْ

आप फरमा दीजिए ये अल्लाह ही की हैं। अल्लाह ने अपनी ज़ात पर रहमत लाज़िम कर ली है। ज़रूर वो तुम्हें जमा

إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۖ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ

करेगा क़यामत के दिन जिस में कोई शक नहीं। वो लोग जिन्होंने ने अपनी जानों को खसारे में डाला है, वो

فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ١٢ وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ

ईमान नहीं लाएंगे। और अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो रात और दिन में सुकून हासिल करती हैं। और वही

وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ١٣ قُلْ أَغَيَّرَ اللَّهُ أَلِيًّا وَلِيًّا

अल्लाह सुनने वाला, इल्म वाला है। आप फरमा दीजिए के क्या मैं अल्लाह के अलावा को दोस्त बनाऊँ,

فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ

जो अल्लाह आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला है और वो खाना देता है और उसे खाना नहीं दिया जाता।

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ

आप फरमा दीजिए के मुझे इस का हुक्म है के मैं सब से अव्वल फरमांबरदार बन्नूँ

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ١٤ قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ

और आप मुशरिकीन में से हरगिज़ न बनें। आप फरमा दीजिए के अगर मैं मेरे रब की नाफरमानी

عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾ مَنْ يُصْرَفْ

करुं तो मैं भारी दिन के अज़ाब से डरता हूँ। जिस शख्स से उस दिन

عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ ۖ وَ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْبَيِّنُ ﴿١٦﴾

वो अज़ाब हटा दिया जाएगा, तो यकीनन अल्लाह ने उस पर रहम फरमाया। और ये खुली कामयाबी है।

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ

और अगर अल्लाह आप को ज़रर पहुँचाए तो सिवाए उस के कोई उस को दूर नहीं कर सकता।

وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾

और अगर अल्लाह आप को भलाई पहुँचाए तो वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۖ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿١٨﴾

और वो अपने बन्दों पर ग़ालिब है। और वो हिक्मत वाला, खबर रखने वाला है।

قُلْ أَيْ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلْ اللَّهُ شَهِيدٌ

आप फरमा दीजिए के कौन सी चीज़ शहादत के एतेबार से सब से बड़ी है? आप फरमा दीजिए के अल्लाह! मेरे

بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ هَذَا الْقُرْآنِ لِأُنْذِرَكُمْ

और तुम्हारे दरमियान गवाह है। और मेरी तरफ ये कुरआन वही किया गया ताके मैं उस के ज़रिए तुम्हें

بِهِ ۖ وَمَنْ بَلَغَ ۖ أَيْنَكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ

डराऊँ और उन्हें भी डराऊँ जिन को ये कुरआन पहुँचे। क्या तुम गवाही देते हो के

مَعَ اللَّهِ إِلَهَةً أُخْرَىٰ ۖ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَهُ

अल्लाह के साथ दूसरे माबूद भी हैं? आप फरमा दीजिए के मैं तो गवाही नहीं देता। आप फरमा दीजिए के वो तो सिर्फ

وَاحِدٌ وَإِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَشْرِكُونَ ﴿١٩﴾ الَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ

यकता माबूद है और ये के मैं बरी हूँ उन चीज़ों से जिन को तुम शरीक ठेहराते हो। वो लोग जिन को हम ने

الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۚ الَّذِينَ

किताब दी वो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पेहचानते हैं जैसा के वो अपने बेटों को पेहचानते हैं। वो लोग

خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ

जिन्होंने ने अपनी जानों को खसारे में डाला है अब वो ईमान नहीं लाएंगे। और उस से ज़्यादा ज़ालिम

مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۖ إِنَّهُ

कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या उस की आयतों को झुठलाए? यकीनन

لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿١١﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ

ज़ालिम लोग फलाह नहीं पाएंगे। और जिस दिन हम उन्हें इकट्ठा करेंगे, फिर हम

لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا آيِنَ شُرَكَائِكُمُ الَّذِينَ كُنْتُمْ

मुशरिकीन से कहेंगे तुम्हारे वो शुरका कहां हैं जिन का तुम दावा किया

تَرْعُونَ ﴿١٢﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فَتَنْتَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ

करते थे? फिर उन का जवाब नहीं होगा मगर ये के वो कहेंगे के हमारे रब अल्लाह की कसम!

رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ﴿١٣﴾ أَنْظِرْ كَيْفَ كَذَبُوا

हम शिर्क नहीं करते थे। आप देखिए के कैसे उन्होंने ने अपनी जानों के खिलाफ

عَلَى أَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٤﴾ وَمِنْهُمْ

झूठ बोला और उन से खो जाएंगे जो वो झूठ गढ़ा करते थे। और उन में से कुछ लोग

مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً

वो हैं जो आप की तरफ कान लगाते हैं। और हम ने उन के दिलों पर परदे रख दिए हैं

أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِنْ يَرَوْا كَلًّا

इस से के वो उस को समझें और उन के कानों में डाट रख दी है। और अगर वो तमाम मोअजिज़ात भी देख लेंगे

لَا يُؤْمِنُوا بِهِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ

तब भी उन पर ईमान नहीं लाएंगे। यहां तक के जब वो आप के पास आते हैं तो आप से झगड़ते

الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٥﴾ وَهُمْ

हुए काफिर लोग केहते हैं के ये नहीं है मगर पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ। और ये

يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْهَوْنَ عَنْهُ ۚ وَإِنْ يُهْلِكُونَ

दूसरों को उस से रोकते हैं और खुद भी उस से दूर भागते हैं। और वो हलाक नहीं करते

إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٦﴾ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وَقَفُوا

मगर अपनी जानों को और उन्हें पता नहीं। और काश के आप देखते जब वो आग के सामने खड़े किए जाएंगे,

عَلَى النَّارِ فَقَالُوا يَلَيْتَنَا شُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبُ بِآيَاتِ رَبِّنَا

फिर वो कहेंगे के काश के हम ज़मीन में दोबारा लौटाए जाते और हम अपने रब की आयात को न झुठलाते और हम

وَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٧﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَا كَانُوا

ईमान लाने वालों में से होते। बल्के उन के सामने खुल जाएंगे वो जिस को वो

يُخْفُونَ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ

इस से पहले छुपाया करते थे। और अगर वो ज़मीन में लौटा भी दिए जाएं तब भी दोबारा वही करेंगे जिस से

وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٨﴾ وَقَالُوا إِن هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا

उन्हें रोका गया था और यकीनन ये झूठ बोल रहे हैं। और ये केहते हैं के ये ज़िन्दगी नहीं है मगर हमारी सिर्फ दुन्यवी ज़िन्दगी,

وَمَا نَحْنُ بِبَعُوثِينَ ﴿٩﴾ وَلَوْ تَرَى إِذْ وَقَفُوا عَلَى رَبِّهِمْ

और हम मरने के बाद ज़िन्दा कर के उठाए नहीं जाएंगे। और काश के आप देखते जब वो अपने रब के सामने खड़े किए

قَالَ أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا

जाएंगे तो अल्लाह फरमाएंगे क्या ये हक़ नहीं है? तो वो कहेंगे क्यूं नहीं? हमारे रब की कसम! अल्लाह फरमाएंगे

الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿١٠﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا

के फिर अज़ाब चखो इस वजह से के तुम कुफ़र करते थे। यकीनन नुक़सान उठाया उन लोगों ने जिन्होंने अल्लाह की

بِلِقَاءِ اللَّهِ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمْ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا

मुलाकात को झुठलाया। यहां तक के जब उन के पास क़यामत अचानक आएगी तो वो कहेंगे

يَحْسَرَتْنَا عَلَىٰ مَا فَرَطْنَا فِيهَا ۖ وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ

हाए अफसोस हमारी उस कोताही पर जो हम ने क़यामत के बारे में की। और वो अपने गुनाह उठा रहें होंगे

عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۖ إِلَّا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ﴿١١﴾ وَمَا الْحَيَاةُ

अपनी पुश्तों पर। सुनो! बुरा है वो बोझ जो वो उठा रहे हैं। और ये दुन्यवी ज़िन्दगी

الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۖ وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ

नहीं है मगर खेल और अल्लाह से ग़ाफ़िल करने वाली। और अलबत्ता पिछला घर बेहतर है

لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٢﴾ قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ

उन के लिए जो मुत्तकी हैं। क्या फिर तुम अक़ल नहीं रखते? यकीनन हमें मालूम है के आप को

لِيَحْزُنَكَ الَّذِي يَقُولُونَ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ

ग़मगीन करती है वो बात जो ये केहते हैं, के ये कुफ़ार आप को झूठा नहीं केहते,

وَلَكِنَّ الظَّالِمِينَ بَايَتِ اللَّهُ يَجْحَدُونَ ﴿١٣﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَتْ رُسُلٌ

लेकिन ये ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं। यकीनन आप से पहले पैग़म्बरों

مِّن قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا وَأَوْدُوا حَتَّىٰ

को झुठलाया गया, फिर उन्होंने ने सब्र किया उन के झुठलाए जाने पर और उन को ईज़ा दिए जाने पर, यहां तक के

أَتَهُمْ نَصْرُنَا ۖ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ وَلَقَدْ جَاءَكَ

उन के पास हमारी नुसरत आई। और अल्लाह के कलिमात को कोई बदल नहीं सकता। और यकीनन आप के पास

مِنْ تَبَآئِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٧﴾ وَإِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ

पैगम्बरों की खबरों में से कुछ हिस्सा आ चुका है। और यकीनन आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उन का पैराज़

إِعْرَاضُهُمْ فَإِنْ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ

भारी है, फिर अगर आप इस की ताक़त रखते हों के ज़मीन में कोई सुरंग तलाश कर लें

أَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُمْ بِآيَةٍ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ

या आसमान में कोई सीढ़ी लगा लें, फिर उन के पास कोई मोअजिज़ा आप ले आए। और अगर अल्लाह चाहता

لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَىٰ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٨﴾

तो उन को हिदायत पर इकट्ठा कर देता, इस लिए आप जाहिलों में से न हों।

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْعَوْنَ ۖ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمْ

बात सिर्फ वही लोग क़बूल करते हैं जो कान लगा कर सुनते हैं। और मुर्दों को अल्लाह ज़िन्दा कर के

اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٣٩﴾ وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ

उठाएंगे, फिर अल्लाह की तरफ वो लौटाए जाएंगे। और ये केहते हैं के इस नबी पर उस के रब की

مِّن رَّبِّهِ ۖ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يُنْزِلَ آيَةً

तरफ से कोई मोअजिज़ा क्यूं नहीं उतारा गया? आप फरमा दीजिए यकीनन अल्लाह इस पर कादिर है के वो कोई मोअजिज़ा उतारे

وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾ وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ

लेकिन उन में से अक्सर जानते नहीं। और ज़मीन में कोई चलने वाला नहीं

وَلَا ظَيْرٍ يَّطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمٌّ أَمْثَلُكُمْ ۖ مَا فَرَطْنَا

और न कोई परिन्दा अपने बाजुओं के ज़रिए उड़ता है, मगर वो तुम जैसी उम्मतें हैं। हम ने इस किताब

فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ﴿٤١﴾ وَالَّذِينَ

में कोई चीज़ नहीं छोड़ी। फिर अपने रब की तरफ उन्हें इकट्ठा किया जाएगा। और वो लोग

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمٌّ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ ۚ مَنْ يَّشَأَنَّ اللَّهُ

जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया वो बेहरे हैं और गूंगे हैं, तारीकियों में हैं। जिस को अल्लाह चाहें

يُضِلَّهُ ۖ وَمَنْ يَّشَأَّ يَجْعَلُهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤٢﴾

उसे गुमराह कर देते हैं। और जिसे अल्लाह चाहते हैं उसे सीधे रास्ते पर कर देते हैं।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَتْكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ

आप फरमा दीजिए क्या तुम्हारी राह है के अगर तुम्हारे पास अल्लाह का अज़ाब आ जाए या तुम्हारे पास क़यामत आ जाए,

أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ ۚ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ بَلْ إِلَٰهُ

क्या अल्लाह के अलावा को तुम पुकारोगे, अगर तुम सच्चे हो, बल्के तुम उसी को

تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ

पुकारोगे, फिर वही दूर करेगा वो जिस की तरफ तुम पुकारते हो अगर वो चाहेगा

وَتَنْسَوْنَ مَا تَشْرِكُونَ ۚ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ

और तुम भूल जाओगे उन को जिन को तुम शरीक ठेहराते थे। और यकीनन हम ने रसूल भेजे उन उम्मतों की तरफ

مِّن قَبْلِكَ فَآخَذْنَاهُمْ بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ

जो आप से पेहले थीं, फिर हम ने उन को पकड़ा सख्ती और तकलीफ के ज़रिए, शायद के वो आजिज़ी करें।

يَتَضَرَّعُونَ ۚ فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا

फिर जब उन के पास हमारा अज़ाब आया तो उन्होंने ने आजिज़ी क्यूं नहीं की?

وَلَكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا

लेकिन उन के दिल सख्त हो गए और उन के लिए शैतान ने मुज़य्यन किए वो आमाल जो वो

يَعْمَلُونَ ۚ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ

करते थे। फिर जब उन्होंने ने भुला दिया उसे जिस के ज़रिए उन्हें नसीहत की गई थी, तो हम ने उन पर

أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُمْ

हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए। यहां तक के जब वो इतराए उस की वजह से जो उन्हें दिया गया था

بَغْةً ۖ فَإِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ ۚ فَقَطَّعَ دَائِرُ الْقَوْمِ

तो हम ने उन्हें अचानक पकड़ लिया, फिर वो मायूस हो कर रहे गए। फिर ज़ालिम कौम की जड़

الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ قُلْ

काट दी गई। और तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं। आप फरमा दीजिए के

أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ

तुम्हारी क्या राह है अगर अल्लाह तुम्हारी कुवते सिमाअ और तुम्हारी बसारत को ले ले और तुम्हारे दिलों पर

عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيَكُمْ بِهِ ۖ أَنْظُرْ

मुहर लगा दे, तो अल्लाह के अलावा कौन माबूद है जो उस को तुम्हारे पास ले आए? आप देखिए

كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ ﴿۳۱﴾ قُلْ

के हम कैसे आयतों को फेर फेर कर बयान करते हैं, फिर भी वो ऐराज़ कर रहे हैं। आप फरमा दीजिए

أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً

तुम्हारी क्या राह है अगर तुम्हारे पास अल्लाह का अज़ाब अचानक आ जाए या खुल्लम खुल्ला आ जाए

هَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ الظَّالِمُونَ ﴿۳۲﴾ وَمَا نُرْسِلُ

तो सिवाए ज़ालिमों के कोई और हलाक होगा? और हम रसूलों को नहीं

الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَ مُنْذِرِينَ ۚ فَمَنْ آمَنَ

भेजते मगर बशारत देने वाले और डराने वाले बना कर। फिर जो ईमान लाए

وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿۳۳﴾

और इस्लाह करे तो उन पर न खौफ होगा और न वो ग़मगीन होंगे।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَسْتَهْمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا

और वो लोग जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया उन्हें अज़ाब पहुँच कर रहेगा इस वजह से के वो

يَفْسُقُونَ ﴿۳۴﴾ قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ

नाफरमान थे। आप फरमा दीजिए के मैं तुम से नहीं केहता के मेरे पास अल्लाह के खज़ाने हैं

وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ ۚ

और न मैं ग़ैब जानता हूँ और न मैं ये केहता हूँ के मैं फरिश्ता हूँ।

إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوْحَىٰ إِلَيَّ ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ

मैं तो सिर्फ उस के पीछे चलता हूँ जो मेरी तरफ वही किया जा रहा है। आप फरमा दीजिए के क्या अन्धा और बीना

وَالْبَصِيرُ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿۳۵﴾ وَ أَنْذِرْ بِهِ الَّذِينَ

बराबर हो सकते हैं? क्या फिर तुम सोचते नहीं हो? और आप उस के ज़रिए डराइए उन को

يَخَافُونَ أَنْ يُخْشَرُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ

जो डरते हैं इस से के वो इकट्ठे किए जाएंगे उन के रब की तरफ, उन के लिए उस के

مَنْ دُونَهُ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿۳۶﴾

अलावा कोई मददगार और सिफारिशी नहीं होगा, (डराइए) ताके वो डरें।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ

और आप उन को न धुतकारें जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह व शाम

يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۖ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ

और उस की रिज़ा चाहते हैं। आप पर उन के हिसाब में से कुछ भी

مِّنْ شَيْءٍ ۚ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ

नहीं है और न आप के हिसाब में से उन पर कुछ है, फिर आप उन को धुतकार दोगे

فَتَكُونُ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٧﴾ وَكَذَلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ

तो आप भी ज़ालिमों में से बन जाओगे। और इसी तरह हम ने उन में से एक को दूसरे के लिए

بِبَعْضٍ لِّيَقُولُوا أَهَؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ

फितना (आज़माईश का ज़रिया) बनाया ताके वो कहें के क्या यही लोग हैं जिन पर हमारे दरमियान में से अल्लाह ने

مِّنْ بَيْنِنَا ۚ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ ﴿٥٨﴾ وَإِذَا جَاءَكَ

इन्आम फरमाया? क्या अल्लाह क़दर करने वालों को ख़ूब नहीं जानते? और जब आप के पास आएँ

الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ

वो लोग जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो आप कहिए अस्सलामु अलैकुम, तुम्हारे

رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةُ ۖ إِنَّهُ مَنِ عَمِلَ مِنْكُمْ

रब ने अपनी ज़ात पर रहमत लाज़िम कर ली है के जो तुम में से कोई बुरा काम

سُوْءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْهُ بَعْدَ ۖ وَأَصْلَحَ ۖ فَأَنَّهُ

कर लेगा नावाक़िफ़ीयत से, फिर वो उस के बाद तौबा कर लेगा और इस्लाह कर लेगा तो यकीनन अल्लाह

عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٩﴾ وَكَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ

बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और इसी तरह हम आयात तफ़सील से बयान करते हैं और इस लिए ताके

سَبِيلِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٦٠﴾ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ

मुजरिमों का रास्ता साफ़ हो जाए। आप फरमा दीजिए के मुझे इस से मना किया गया है के मैं इबादत करूँ उन की

تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ قُلْ لَا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ ۚ

अल्लाह को छोड़ कर के जिन को तुम पुकारते हो। आप फरमा दीजिए के मैं तुम्हारी ख्वाहिशत के पीछे नहीं चलूँगा,

قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿٦١﴾ قُلْ

यकीनन तब तो मैं गुमराह हो जाऊँगा और मैं हिदायतयाफ़ता लोगों में से नहीं हूँगा। आप फरमा दीजिए

إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّي ۚ وَكَذَّبْتُمْ بِهِ ۚ مَا عِنْدِي

यकीनन मैं अपने रब की तरफ से रोशन दलील पर हूँ और तुम ने उस को झुठलाया। मेरे पास वो अज़ाब नहीं

مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۖ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ ۖ يَقْضُ الْحَقُّ

है जिस को तुम जल्दी तलब कर रहे हो। हुक्म तो सिर्फ अल्लाह ही का चलता है। अल्लाह हक़ को बयान करता है और

وَهُوَ خَيْرُ الْفَصِلِينَ ﴿٥٥﴾ قُلْ لَّوْ أَن عِنْدِي

वो बेहतरीन फैसला करने वाला है। आप फरमा दीजिए के अगर मेरे पास वो अज़ाब होता

مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ

जिस को तुम जल्दी तलब कर रहे हो तो मुआमला मेरे और तुम्हारे दरमियान खत्म कर दिया जाता।

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ﴿٥٦﴾ وَ عِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ

और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानते हैं। और अल्लाह के पास ग़ैब की कुन्जियाँ हैं,

لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ ۖ وَ يَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۖ

उन को सिवाए अल्लाह के कोई नहीं जानता। और अल्लाह जानता है उन तमाम चीज़ों को जो खुशकी और समन्दर में हैं।

وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٌ

और कोई पत्ता नहीं गिरता मगर अल्लाह उसे जानता है और कोई दाना ज़मीन की

فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا

तारीकियों में नहीं होता और न कोई तर चीज़ और न खुशक चीज़ है, मगर

فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٥٧﴾ وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ

वो साफ साफ बयान करने वाली किताब (यानी लौहे महफूज़) में है। और वही अल्लाह तुम्हें रात में वफात देता है

وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ

और वो जानता है उन आमाल को जो तुम दिन में करते हो, फिर वो तुम्हें उठाता है नींद से दिन में

لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ

ताके मुकर्रर की हुई आखिरी मुद्दत पूरी की जा सके। फिर उसी की तरफ तुम्हें लौट कर जाना है,

ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ

फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों की जो तुम करते थे। और वो अपने बन्दों पर ग़ालिब

عِبَادِهِ ۖ وَ يُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ

है और वो तुम पर मुहाफिज़ फरिश्ते भेजता है। यहां तक के जब तुम में से किसी एक की मौत का वक़्त

أَحَدَكُمْ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ﴿٥٨﴾

करीब आता है तो उसे हमारे भेजे हुए फरिश्ते वफात देते हैं और वो कोताही नहीं करते।

ثُمَّ رُدُّوْا إِلَى اللَّهِ مَوْلَهُمُ الْحَقُّ ۖ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ

फिर वो लौटाए जाएंगे अल्लाह की तरफ जो उन का हकीकी मौला है। सुनो! उसी के लिए हुक्म है और वो हिसाब

وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَسِيبِينَ ﴿١٦﴾ قُلْ مَنْ يُخَيِّكُم

लेने वालों में सब से तेज़ हिसाब लेने वाला है। आप फरमा दीजिए कौन तुम्हें खुशकी और

مِّنْ ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ

समन्दर की तारीकियों से नजात देता है, तुम उसी को पुकारते हो आजिजी से और चुपके चुपके।

لَئِنْ أَجَبْنَا مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٧﴾

के अगर वो हमें इस से नजात देगा तो हम ज़रूर शुक्र करने वालों में से बन जाएंगे।

قُلْ اللَّهُ يُخَيِّكُم مِّنْهَا وَ مِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنْتُمْ

आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही तुम्हें उस से नजात देता है और हर तकलीफ से नजात देता है, फिर तुम

تُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ

शिरक करने लग जाते हो। आप फरमा दीजिए के वो अल्लाह इस पर क़ादिर है के तुम पर अज़ाब

عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتَ آرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ

भेजे तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से या मुख्तलिफ़ फिरके बना कर

شَيْعًا وَ يُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ ۚ أَنْظُرْ كَيْفَ

तुम्हें खलत मलत कर दे और तुम्हें आपस की लड़ाई का मज़ा चखाए। आप देखिए के हम

نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَالَهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿١٩﴾ وَكَذَّبَ بِهِ

आयतों को कैसे फेर फेर कर बयान करते हैं ताके वो समझें। और आप की कौम ने उसे

قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۖ قُلْ لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿٢٠﴾

झुठलाया हालांके वो हक़ है। आप फरमा दीजिए के मैं तुम पर मुसल्लत नहीं हूँ।

لِكُلِّ نَبِيٍّ مُّسْتَقَرٌّ ۖ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٢١﴾ وَإِذَا رَأَيْتَ

हर खबर के लिए एक वाक़ेअ होने का वक़्त है। और अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा। और जब आप

الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ

देखें उन लोगों को जो हमारी आयतों के बारे में बेहूदा कलाम करते हैं तो आप उन से ऐराज़ कीजिए

حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ وَإِمَّا يُنسِيَنَّكَ

यहां तक के वो उस के अलावा किसी दूसरी बात में लग जाएं। और अगर आप को शैतान

الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرِى مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٦٨﴾

भुला दे तो आप याद आने के बाद ज़ालिम कौम के साथ न बैठिए।

وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ

और मुत्तकियों पर उन के हिसाब की ज़िम्मेदारी ज़रा भी नहीं,

وَلَكِنْ ذِكْرَى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٦٩﴾ وَذَرِ الَّذِينَ

लेकिन नसीहत कर देना है, शायद वो मुत्तकी बन जाएं। और आप छोड़ दीजिए उन लोगों को

اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَ لَهْوًا وَ غَرَّتْهُمْ الْحَيَوةُ

जिन्होंने ने अपना दीन लहव व लइब को बना रखा है और उन को दुन्यवी ज़िन्दगी ने धोके में डाल रखा है

الدُّنْيَا وَ ذَكَرَ بِهِ أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ ۖ

और इस की आप नसीहत करते रहिए के कहीं कोई शख्स उन आमाल की वजह से हलाक हो जाए जो उस ने किए।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ ۚ

के उस के लिए अल्लाह के अलावा कोई मददगार और सिफारिशी न हो।

وَإِنْ تَعَدِلَ كُلُّ عَدْلٍ لَأَيُؤْخَذُ مِنْهَا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ

और अगर वो सारे फिदये भी दे देगा तो उस की तरफ से नहीं लिए जाएंगे। यही वो लोग हैं जो

أَبْسَلُوا بِمَا كَسَبُوا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ

हलाक हुए उन आमाल की वजह से जो उन्होंने ने किए। उन के लिए गर्म पानी से पीना होगा और दर्दनाक

أَلِيمٌ ۚ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾ قُلْ أَدْعُوا مِنْ دُونِ

अज़ाब होगा इस वजह से के वो कुफ़र करते थे। आप फरमा दीजिए के क्या हम पुकारें अल्लाह को छोड़ कर के

اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَ نُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا

उन चीज़ों को जो हमें न नफा दे सकती हैं और न हमें ज़रर पहुँचा सकती हैं और हम पलट जाएं हमारी एड़ियों के बल

بَعْدَ إِذْ هَدَيْنَا اللَّهَ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ

इस के बाद के अल्लाह ने हमें हिदायत दी उस शख्स की तरह जिस को शयातीन ने

فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ ۚ لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ

खबती बना दिया हो ज़मीन में हैरान हो। उस के दोस्त उस को बुला रहे हों

إِلَى الْهُدَىٰ اتَّبَعُوا قُلْ إِنَّ هُدَىٰ اللَّهَ هُوَ الْهُدَىٰ ۚ

हिदायत की तरफ के तू हमारे पास आ जा। आप फरमा दीजिए के यकीनन अल्लाह की हिदायत वही हिदायत है।

وَأَمْرُنَا لِنُسَلِّمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَأَنْ أَقِيمُوا

और हमें हुक्म दिया गया है के हम रब्बुल आलमीन के सामने झुक जाएं। और ये के नमाज़

الصَّلَاةَ وَاتَّقُوهُ ۖ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝

काइम करो और उस से डरो। और वही अल्लाह है जिस की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ

और वही अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया हक के साथ।

وَيَوْمَ يَقُولُ كُنْ فَيَكُونُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۖ وَلَهُ

और जिस दिन वो केहता है हो जा, तो वो हो जाता है। उस का केहना हक है। और उसी के लिए

الْمُلْكُ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ ۚ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ

सलतनत है उस दिन जिस दिन सूर में फूँका जाएगा। वो छुपी हुई और ज़ाहिर चीज़ को जानने वाला है।

وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ

और वो हिक्मत वाला, बाखबर है। और जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने बाप आज़र से

أَزَّرَ أَتَّخِذُ أَصْنَامًا إِلَهَةً ۖ إِنِّي أَرَاكَ وَقَوْمَكَ

फरमाया के क्या आप बुतों को माबूद बनाते हो? यकीनन मैं आप को और आप की कौम को

فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ وَكَذَلِكَ نَرَىٰ إِبْرَاهِيمَ

खुली गुमराही में देख रहा हूँ। और इसी तरह हम इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को

مَلَكَوَتِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ

दिखाने लगे आसमानों और ज़मीन की सलतनत ताके वो

مِنَ الْمُؤَقِنِينَ ۝ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَىٰ كَوْكَبًا ۖ

यकीन करने वालों में से हों। फिर जब उन पर रात छा गई तो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने सितारा देखा।

قَالَ هَذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْإِفْلِينَ ۝

केहने लगे ये मेरा रब है। फिर जब वो डूब गया तो फरमाने लगे के मैं डूबने वालों से महबबत नहीं

فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِعًا قَالَ هَذَا رَبِّي ۖ

करता। फिर जब आप ने चमकता हुवा चाँद देखा तो फरमाया ये मेरा रब है।

فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ

फिर जब वो भी डूब गया तो फरमाया के अगर मुझे मेरे रब ने हिदायत न दी, तो मैं गुमराह लोगों

الْأَنْعَامُ ۶

مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ﴿٤٤﴾ فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسُ بَازِغَةً

में से हो जाऊंगा। फिर जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने जगमगाता सूरज देखा

قَالَ هَذَا رَبِّي هَذَا أَكْبَرُ ۖ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ

तो फरमाया ये मेरा रब है के ये सब से बड़ा है। फिर जब वो डूब गया तो फरमाया

يَقَوْمِ إِنِّي بُرِّئٌ مِّمَّا تَشْرِكُونَ ﴿٤٥﴾ إِنِّي وَجَّهْتُ

ऐ मेरी कौम! यकीनन मैं तुम्हारे शिर्क से बरी हूँ। यकीनन मैं ने सब

وَجْهِيَ لِلدِّينِ فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ حَنِيفًا

तरफ से कट कर अपना रूख कर लिया है उस ज़ात की तरफ जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया

وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٤٦﴾ وَحَاجَّهُ قَوْمُهُ ۖ قَالَ

और मैं मुशरिकीन में से नहीं हूँ। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से हुज्जतबाज़ी की उन की कौम ने। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

أَتَحَاجُّونِي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ ۖ وَلَا أَخَافُ

ने फरमाया क्या तुम मुझ से हुज्जतबाज़ी करते हो अल्लाह के बारे में हालांकि उस ने मुझे हिदायत दी है। और

مَا تَشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَنْ يُشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ۖ وَسِعَ رَبِّي

मैं ज़रा भी नहीं डरता उन चीज़ों से जिन को तुम शरीक ठेहराते हो मगर ये के मेरा रब चाहे। मेरा रब हर

كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۖ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٧﴾ وَكَيْفَ

चीज़ पर इल्म के ऐतेबार से वसीअ है। क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? और कैसे

أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُمْ

मैं डरूंगा उन चीज़ों से जिन को तुम ने शरीक ठेहरा रखा है हालांकि तुम नहीं डरते उस से के तुम ने अल्लाह

بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا

के साथ शरीक ठेहरा रखा है ऐसी चीज़ों को जिस पर अल्लाह ने तुम पर कोई दलील नहीं उतारी।

فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۚ إِنَّ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤٨﴾

फिर दोनों जमाअतों में से कौन सी जमाअत अमन की ज़्यादा हकदार है, अगर तुम इल्म रखते हो?

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ

वो लोग जो ईमान लाए और जिन्होंने ने अपने ईमान को जुल्म के साथ नहीं मिलाया, तो उन्ही

لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَا

लोगों के लिए अमन है और वही हिदायतयाफता हैं। और ये हमारी हुज्जत है

اتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۖ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مِّنْ نَّشَأٍ ۖ

जो हम ने दी इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को उन की कौम के खिलाफ। हम दरजात बुलन्द करते हैं जिस के चाहते हैं। यकीनन

إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۖ

तेरा रब हिकमत वाला, इल्म वाला है। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इस्हाक और याकूब (अलैहिमस्सलाम) अता किए।

كُلًّا هَدَيْنَاهُ ۖ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ

सब को हम ने हिदायत दी। और नूह (अलैहिस्सलाम) को हम ने इस से पेहले हिदायत दी और उन्ही की औलाद

وَسُلَيْمَانَ وَإِيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ۖ وَكَذَلِكَ

में से दावूद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ और मूसा और हारून (अलैहिमुस्सलाम) को हिदायत दी। और इसी तरह

نَجَّزِيَ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِيلَاسَ ۖ

हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं। और ज़करीया और यहया और ईसा और इल्यास (अलैहिमुस्सलाम) को हिदायत दी।

كُلٌّ مِّنَ الصَّالِحِينَ ۝ وَاسْمُعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُوشَعَ

सब के सब सुलहा में से थे। और इस्माईल और अलयसअ और यूनस और लूत (अलैहिमुस्सलाम)

وَلُوطًا ۖ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَىٰ الْعَالَمِينَ ۝ وَمِنْ آبَائِهِمْ

को हिदायत दी। और उन सब को हम ने तमाम जहान वालों पर फज़ीलत दी। और उन के बाप दादा

وَذُرِّيَّتِهِمْ ۖ وَإِخْوَانِهِمْ ۖ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ ۖ وَهَدَيْنَاهُمْ

और उन की औलाद और उन के भाईयों में से भी हिदायत दी। और हम ने उन को मुन्तखब किया और हम ने उन को हिदायत

إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ ذَٰلِكَ هُدَىٰ اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَنْ

दी सीधे रास्ते की। ये अल्लाह की हिदायत है, इस के ज़रिए वो हिदायत देता है जिसे

يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبَطَ عَنْهُمْ مَا كَانُوا

चाहता है अपने बन्दों में से। और अगर ये अम्बिया भी शिर्क करते तो उन से हब्त हो जाते वो अमल जो

يَعْمَلُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اتَّيْنَاهُمُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ

उन्हों ने किए। ये वो थे के जिन्हें हम ने किताब और शरीअत और

وَالنَّبُوءَةَ ۖ فَإِنْ يَكْفُرْ بِهَا هَٰؤُلَاءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا

नबूव्वत दी। फिर अगर ये लोग उस के साथ कुफ़ करेंगे तो हम इसे ऐसी कौम को सौंप देंगे

لَيَسُوءَ بِهَا كَافِرِينَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَىٰ اللَّهُ فِيمَهُمْ

जो उस के साथ कुफ़ करने वाली नहीं होगी। यही लोग हैं जिन को अल्लाह ने हिदायत दी, तो उन की हिदायत की

اِقْتَدِهٖ ۖ قُلْ لَا اَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۚ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰی

आप इकतिदा कीजिए। आप फरमा दीजिए के मैं उस पर तुम से किसी अज्र का सवाल नहीं करता। ये तो सिर्फ तमाम जहान

لِلْعٰلَمِیْنَ ۚ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۚ اِذْ قَالُوْا

वालों के लिए नसीहत है। और उन्होंने ने अल्लाह की क़दर नहीं पेहचानी जैसा के उस की क़दर पेहचानने का हक़ है,

مَا اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰی بَشَرٍ مِّنْ شَیْءٍ ۚ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ

जब के उन्होंने ने कहा के अल्लाह ने किसी बशर पर कोई चीज़ नहीं उतारी। आप फरमा दीजिए के किस ने उतारी वो किताब

الَّذِیْ جَاءَ بِهٖ مُّوسٰی نُوْرًا وَّهٰدٰی لِلنَّاسِ یَجْعَلُوْنَہٗ

जो मूसा (अलैहिस्सलाम) ले कर आए थे जो नूर थी और हिदायत थी इन्सानों के लिए जिस को तुम

قَرٰطِیْسَ تُبَدِّلُوْنَہَا وَ تُخْفَوْنَ کَثِیْرًا ۚ وَ عَلِمْتُمْ

कागज़ात में रखते हो, कुछ हिस्से को तुम खोलते हो और बहोत सी चीज़ें छुपाते हो। और तुम्हें इल्म दिया गया

مَا لَمْ تَعْمَلُوْا اَنْتُمْ وَلَا اٰبَاؤُكُمْ ۚ قُلِ اللّٰهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِیْ خَوْضِهِمْ

उन चीज़ों का जो तुम और तुम्हारे बाप दादा जानते नहीं थे। आप फरमा दीजिए के अल्लाह (ही ने किताब उतारी है), फिर

یَلْعَبُوْنَ ۝۱۱ وَ هٰذَا کِتٰبُ اَنْزَلْنٰہُ مُبْرَکٌ مُّصَدِّقُ الَّذِیْ

आप उन को छोड़ दीजिए उन की दिल्लगी में खेलता हुवा। और ये किताब जो हम ने उतारी है बरकत वाली है, जो सच्चा बतलाने वाली है उन

بَیْنَ یَدَیْہٖ وَ لِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰی وَمَنْ حَوْلَهَا ۚ وَالَّذِیْنَ

किताबों को जो इस से पेहले थीं और इस लिए ताके आप मक्का वालों को डराएं और उन बस्तियों को जो उस के इर्द गिर्द हैं। और जो लोग

یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰی صَلَٰتِهِمْ

आखिरत पर ईमान रखते हैं वो इस पर भी ईमान रखते हैं और वो अपनी नमाज़ों की भी

یَحَافِظُوْنَ ۝۱۲ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلٰی اللّٰهِ کَذِبًا

पाबन्दी करते हैं। और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े

اَوْ قَالَ اُوْحٰی اِلَیَّ وَلَمْ یُوْحَ اِلَیْہِ شَیْءٌ ۚ وَمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ

या यूं कहे के मेरी तरफ भी वही किया गया, हालांकि उस की तरफ कोई चीज़ वही नहीं की गई और जो यूं कहे के

مِثْلَ مَا اَنْزَلَ اللّٰهُ ۚ وَلَوْ تَرٰی اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِیْ غَمَرٰتٍ

अनकरीब मैं भी उताखंगा उस के मानिन्द जो अल्लाह ने उतारा। और काश के आप देखते जब के ये ज़ालिम लोग मौत

النُّوْتِ وَالْمَلَٰئِکَةُ بِاَسْطُوْا اَیْدِیْہِمُ ۚ اَخْرِجُوْا اَنْفُسَکُمْ

की सख्तियों में होंगे और फरिश्ते अपने हाथ फैलाए हुए होंगे। (और केहते होंगे के) अपनी जानें निकालो।

الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ

आज तुम्हें सज़ा दी जाएगी ज़िल्लत के अज़ाब की इस वजह से के तुम अल्लाह पर हक़

عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَ كُنْتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿١٣﴾ وَلَقَدْ

के अलावा केहते थे और तुम अल्लाह की आयतों से तकबुर करते थे। और यकीनन

جَعَلْنَا فِرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَ تَرْكُكُمْ

तुम हमारे पास अकेले आए हो जैसा के हम ने तुम्हें पेहली मर्तबा पैदा किया था और तुम वो माल जो हम ने

مَا خَوَّلْنَكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ

तुम्हें दिया था अपनी पीठ पीछे छोड़ कर आए हो। और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन शुफआ को नहीं

الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَدْ تَقَطَّعَ بَيْنَكُمْ

देखते जिन के मुतअल्लिक़ तुम दावा करते थे के ये तुम में शरीक हैं। यकीनन तुम्हारे दरमियान जुदाई वाकेअ हो गई

وَصَلَّ عَنْكُمْ مَا كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿١٤﴾ إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْوَحْيِ

और तुम से खो गए वो जिन का तुम दावा किया करते थे। यकीनन अल्लाह दाने को फाड़ने वाला है और गुठली को

وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ مُخْرِجُ الْمَيِّتِ

निकालने वाला है। वो ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है और मुर्दे को निकालने वाला है

مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمْ اللَّهُ ۚ فَإِنِّي تُوفِّكُونَ ﴿١٥﴾ فَإِلْقُ الْإِصْبَاحِ ۚ

ज़िन्दा से। यही अल्लाह है, फिर तुम कहाँ उल्टे फिरे जा रहे हो? वो सुबह को फाड़ने वाला है।

وَ جَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا ۚ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ

और उसी ने रात को सुकून का वक्त बनाया और सूरज और चाँद को हिसाब का ज़रिया बनाया। ये

تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿١٦﴾ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ

ज़बर्दस्त इल्म वाले अल्लाह की मुकर्रर की हुई मिकदार है। और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिए सितारे बनाए

لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ

ताके तुम उन के ज़रिए खुशकी और समन्दर की तारीकियों में राह पाओ। यकीनन हम ने आयतें फेर फेर कर बयान कीं

لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿١٧﴾ وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ

ऐसी कौम के लिए जो जानती है। और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया,

وَإِحْدَةً فَمُسْتَقَرٌّ ۖ وَ مُسْتَوْدَعٌ ۚ قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ

फिर एक मुस्तकिल ठिकाना है एक और आरज़ी ठिकाना है। यकीनन हम ने आयतें तफसील से बयान कीं ऐसी कौम

يَفْقَهُونَ ﴿١٨﴾ وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا

के लिए जो समझती है। और वही अल्लाह है जिस ने आसमान से पानी उतारा। फिर हम ने

بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُخْرِجُ مِنْهُ

उस के ज़रिए हर चीज़ के सब्ज़े को निकाला, फिर हम ने उस से सरसब्ज़ पौदे निकाले जिस से हम तेह बतेह

حَبًّا مُتَرَاكِبًا وَمِنَ النَّخْلِ مِن طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ

दाने निकालते हैं। और खजूर से यानी उस के खोशे से मिले हुए गुच्छे होते हैं

وَجَنَّتِ مِنَ الْأَعْنَابِ وَالزَّيْتُونِ وَالرُّمَّانِ مُسْتَمِيمًا

और उस ने निकाला अंगूर के बागात और जैतून और अनार को के कुछ उन में से एक दूसरे के मुशाबेह हैं

وَغَيْرِ مُتَشَابِهِ ۚ أَنْظَرُوا إِلَى ثَمَرِهِ إِذَا أَثَرَ وَيَنْعِهِ ۚ

और कुछ एक दूसरे के मुशाबेह नहीं हैं। तुम देखो उस के फल की तरफ जब वो अपना फल लाता है और उस के पकने को देखो।

إِنَّ فِي ذَلِكَُمْ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١٩﴾ وَجَعَلُوا لِلَّهِ

यकीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी कौम के लिए जो ईमान लाती है। और उन्होंने ने अल्लाह के लिए

شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنَاتٍ

जिन्नात को शुरका करार दिया, हालांकि अल्लाह ने उन को पैदा किया है और उन्होंने ने अल्लाह के लिए बेटे गढ़े और बेटियाँ गढ़ीं

بَغْيٍ عِلْمٍ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُصِفُونَ ﴿٢٠﴾ بَدِيعُ السَّمَوَاتِ

इल्म के बगैर। अल्लाह पाक है और बरतर है उन चीज़ों से जो वो बयान करते हैं। अल्लाह आसमानों और ज़मीन

وَالْأَرْضِ ۚ أَلَىٰ يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ صَاحِبَةٌ ۚ

को बगैर नमूने के पैदा करने वाला है। उस के लिए औलाद कहाँ हो सकती है जब के उस की बीवी नहीं?

وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢١﴾ ذَلِكُمْ اللَّهُ

और हर चीज़ उस ने पैदा की है। और वो हर चीज़ को खूब जानने वाला है। यही अल्लाह तुम्हारा

رَبُّكُمْ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۚ فَاعْبُدُوهُ ۚ وَهُوَ

रब है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। वो हर चीज़ को पैदा करने वाला है, तो तुम उसी की इबादत करो। और वो

عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿٢٢﴾ لَا تَدْرِكُهُ الْبَصَارُ ۚ وَهُوَ يُدْرِكُ

हर चीज़ पर निगरान है। उस का इदराक नहीं कर सकती आँखें और वो आँखों का

الْبَصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿٢٣﴾ قَدْ جَاءَكُمْ بِصَآئِرٍ مِّنْ

इदराक करता है। और वो लुत्फ करने वाला, बाखबर है। यकीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से बसीरतें

رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ط

आ गई। फिर जो बसीरत को इस्तेमाल करेगा वो अपने ही फाइदे के लिए है। और जो अन्धा रहेगा तो उस पर उस का वबाल पड़ेगा।

وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ۝۱۳ وَكَذَلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ

और मैं तुम पर मुहाफिज़ नहीं हूँ। और इसी तरह हम आयतों को फेर फेर कर बयान करते हैं

وَلِيَقُولُوا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهُ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝۱۴ إِنَّبَعْ

और इस लिए ताके वो कहें के तुम ने तो सबक पढ़ लिया है और इस लिए ताके हम उस को बयान करें ऐसी कौम के लिए जो समझे। आप उस

مَا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۖ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ وَأَعْرِضْ

का इत्तिबा कीजिए जो आप की तरफ आप के रब की तरफ से वही किया जा रहा है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं। और आप मुशरिकीन

عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۝۱۵ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا ط وَمَا جَعَلْنَاكَ

से ऐराज़ कीजिए। और अगर अल्लाह चाहता तो वो शिर्क न करते। और हम ने आप को

عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝۱۶ وَلَا تَسُبُّوا

उन पर मुहाफिज़ बना कर नहीं भेजा। और आप उन पर मुसल्लत नहीं हो। और तुम लोग गाली न दो

الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ فَيَسُبُّوا اللَّهَ عَدْوًا بِغَيْرِ

उन्हें जिन को ये अल्लाह के अलावा पुकारते हैं, वरना वो अल्लाह को गाली देंगे हद से तजावुज़ कर के इल्म न होने की

عِلْمٍ ۖ كَذَلِكَ زَيَّيْنَا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۖ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ

वजह से। इसी तरह हर उम्मत के लिए हम ने उन के आमाल मुज़य्यन किए। फिर उन के रब की तरफ

مَرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝۱۷ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ

उन का लौटना है, फिर वो उन्हें खबर देगा उन कामों की जो वो करते थे। और वो अल्लाह की कस्में खाते हैं

جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لِيُنْجَأَ جَاءَتْهُمْ آيَةٌ ۖ لَّيُؤْمِنَنَّ بِهِآ ۖ قُلْ

अपनी कस्मों को मुअक्कद कर के के अगर उन के पास मोअजिज़ा आ जाएगा तो ज़रूर वो उस पर ईमान लाएंगे। आप फरमा दीजिए

إِنَّمَا الْآيَةُ عِنْدَ اللَّهِ ۖ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۖ أَنَّهُآ إِذَا جَاءَتْ

के तमाम मोअजिज़ात सिर्फ अल्लाह के पास हैं और आप को क्या मालूम के जब मोअजिज़ा आ जाएगा

لَا يُؤْمِنُونَ ۝۱۸ وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا

तब भी वो ईमान नहीं लाएंगे। और हम उन के दिलों को उलट पलट करते हैं और उन की आँखों को जैसा

لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ ۖ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَنَذَرُهُمْ فِي طَعْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝۱۹

के वो उस पर पेहली मर्तबा में ईमान नहीं लाए और हम उन को उन की सरकशी में भटकता हुवा छोड़ते हैं।

وَلَوْ أَنَّا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَىٰ

और अगर हम उन की तरफ फरिश्ते उतारते और उन से मुर्दे कलाम करते

وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا

और हम उन पर हर चीज़ को इकट्ठा कर देते आमने सामने तब भी वो ईमान न लाते

إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ يَجْهَلُونَ ﴿۱۱﴾

मगर ये के अल्लाह चाहे। लेकिन उन में से अक्सर जहालत की बातें करते हैं।

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيْطِينِ الْإِنْسِ

और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए इन्सानों और जिन्नात में से शयातीन को दुश्मन बनाया है,

وَالْجِنَّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرَفَ الْقَوْلِ

उन में से एक दूसरे को मुजय्यन बात की धोका देने के लिए खबर देते

عُرُورًا وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿۱۲﴾

हैं। और अगर तेरा रब चाहता तो वो ऐसा न करते, इस लिए आप उन को छोड़ दीजिए और उस चीज़ को जिस को वो खुद घड़ रहे हैं।

وَلِتَصْغَىٰ إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ

और इस लिए ताके उस की तरफ माइल हो जाएं उन लोगों के दिल जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते

وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُونَ ﴿۱۳﴾ أَفَغَيْرَ

और इस लिए ताके वो उस को पसन्द करें, और ताके वो करते रहें वो बुरे काम जो वो कर रहे हैं। क्या फिर

اللَّهِ أَبْتَغِي حَكْمًا وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ إِلَيْكُمُ

अल्लाह के अलावा को मैं हकम के तौर पर तलाश करूं हालांकि उसी ने तुम्हारी तरफ

الْكِتَابِ مُفَصَّلًا وَالَّذِينَ آتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ

किताब तफसील से उतारी है। और वो लोग जिन को हम ने किताब दी

يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ مُنْزِلُ مَنَازِلٍ مِّنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُونَنَّ

वो जानते हैं के ये तुम्हारे रब की तरफ से हक के साथ नाज़िल की गई है, इस लिए आप शक

مِنَ الْمُتَرَيِّنِينَ ﴿۱۴﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا

करने वालों में से न हों। और आप के रब के कलिमात सच्चाई और इन्साफ में ताम्म

وَعَدًا ۖ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ

हैं। उस के कलिमात को कोई बदलने वाला नहीं। और वो सुनने वाला,

الْعَلِيمُ ﴿١١٥﴾ وَإِنْ تَطِعْ أَكْثَرَ مَنْ فِي الْأَرْضِ

इल्म वाला है। और अगर आप उन में से अक्सर का केहना मान लोगे जो ज़मीन में हैं

يُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۖ إِنَّ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ

तो वो आप को अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर देंगे। वो तो सिर्फ गुमान के पीछे चलते हैं

وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿١١٦﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَنْ

और वो सिर्फ अटकल से बातें करते हैं। यकीनन आप का रब वो खूब जानता है उस शख्स को

يَضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١١٧﴾

जो अल्लाह के रास्ते से भटक गया। और वो हिदायतयाफ़ता लोगों को भी खूब जानता है।

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ

फिर तुम खाओ उस में से जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो अगर तुम अल्लाह की आयतों पर

مُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ

ईमान रखते हो। और तुम्हें क्या हुवा के तुम न खाओ उस में से जिस पर अल्लाह का नाम

اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ

लिया गया हो, हालांकि उस ने तुम्हारे लिए तफ़सील से बयान कर दिया है उस को जो उस ने तुम पर हराम किया है

إِلَّا مَا اضْطُرَرْتُمْ إِلَيْهِ ۚ وَإِنْ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ بِأَهْوَاءِهِمْ

मगर वो जिस की तरफ तुम मजबूर हो जाओ। और यकीनन बहोत से लोग अपनी ख्वाहिशात के ज़रिए बग़ैर इल्म के गुमराह

بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١١٩﴾

करते हैं। यकीनन आप का रब वो हद से तजावुज़ करने वालों को खूब जानता है।

وَذُرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ

और ज़ाहिरी गुनाह और बातिनी गुनाह छोड़ दो। यकीनन वो लोग जो गुनाह कमाते

الْإِثْمَ سَيَجْزُونَ بِمَا كَانُوا يَفْتَرِفُونَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا تَأْكُلُوا

हैं, अनक़रीब उन्हें उन के करतूत की सज़ा दी जाएगी। और तुम मत खाओ

مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۚ

उस में से जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो और यकीनन ये नाफरमानी है।

وَإِنَّ الشَّيْطَانَ لِيُؤْخَذَ إِلَىٰ أُولِيهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ ۚ وَإِنْ

और यकीनन शयातीन अपने दोस्तों की तरफ वही करते हैं ताके वो तुम से झगड़ें। और अगर

۴۰

أَطَعْتُوهُمْ إِنِّكُمْ لَبَشْرُونَ ﴿۱۳۱﴾ أَوْ مَن كَانَ مِثْلًا

तुम उन का केहना मान लोगे तो यकीनन तुम भी मुशरिक हो जाओगे। क्या वो शख्स जो मुर्दा था

فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ

फिर हम ने उसे ज़िन्दा किया और हम ने उस के लिए नूर बनाया जिस को ले कर वो इन्सानों में चलता है,

كَمَن مِّثْلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۖ

उस के मानिन्द हो सकता है जिस का हाल तारीकियों में है, जिस से वो निकलने वाला नहीं है।

كَذَلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿۱۳۲﴾ وَكَذَلِكَ

इसी तरह काफिरों के लिए मुजय्यन किए गए वो अमल जो वो करते हैं। और इसी तरह

جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبَرًا مُّجْرِمِينَ لِيَمْكُرُوا فِيهَا ۖ

हम ने हर बस्ती में वहां के बड़े मुजरिमों को बनाया ताके वो उस में मक्कारी करें।

وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿۱۳۳﴾

और वो मक्कारी नहीं करते मगर अपनी ही जान के साथ और उन्हें पता नहीं।

وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَن نُّؤْمِنَ حَتَّى نُؤْتَىٰ مِثْلَ

और जब उन के पास कोई मोअजिज़ा आता है तो वो केहते हैं के हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे जब तक के हमें उस के जैसा

مَا أُوتِيَ رَسُولُ اللَّهِ ۚ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۖ

(मोअजिज़ा) न दिया जाए जो अल्लाह के दूसरे पैग़म्बरों को दिया गया। अल्लाह ख़ूब जानता है उस जगह को जहां वो अपने पैग़ाम को रखता है।

سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِنْدَ اللَّهِ وَ عَذَابٌ

अनक़रीब मुजरिमों को ज़िल्लत पहींचेगी अल्लाह के पास और सख्त अज़ाब

شَدِيدٌ ۖ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿۱۳۴﴾ فَمَن يُرِدِ اللَّهُ

पहींचेगा इस वजह से के वो मक्कारी करते हैं। फिर वो शख्स जिस को हिदायत देने का अल्लाह

أَن يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ ۚ وَمَن يُرِدْ

इरादा करे तो अल्लाह उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देते हैं। और जिस के गुमराह करने का अल्लाह इरादा

أَن يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا كَانَبًا ۖ يَصْعَدُ

करते हैं उस का सीना तंग कर देते हैं, बहोत ज़्यादा तंग, गोया के वो आसमान में

فِي السَّمَاءِ ۖ كَذَلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ

चढ़ रहा है। इसी तरह अल्लाह गन्दगी डालते हैं उन लोगों पर

لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٧٥﴾ وَ هَذَا صِرَاطٌ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۖ قَدْ

जो ईमान नहीं लाते। और ये तेरे रब का रास्ता सीधा है। यकीनन

فَصَلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٧٦﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ

हम ने आयात को तफसील से बयान किया ऐसी कौम के लिए जो नसीहत हासिल करती है। उन के लिए दाखस्सलाम है

عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٧٧﴾ وَيَوْمَ

उन के रब के पास और वो उन का कारसाज़ है उन आमाल की वजह से जो वो कर रहे हैं। और जिस दिन

يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ۚ يَمْعَشِرُ الْجِنَّ قَدْ اسْتَكْثَرْتُمْ

अल्लाह उन तमाम को इकट्ठा करेगा, (तो कहेगा के) ऐ जिन्नात की जमाअत! तुम बहोत ज़्यादा

مِّنَ الْإِنْسِ ۚ وَقَالَ أَوْلِيُّهُمْ مِّنَ الْإِنْسِ رَبَّنَا

इन्सानों को तलब कर चुके। और उन के दोस्त इन्सानों में से कहेंगे ऐ हमारे रब!

اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ ۖ وَ بَلَّغْنَا آجَلَنَا الَّذِي

हम में से एक ने दूसरे से फाइदा उठाया और हम पहुँच गए हमारी मुक़रर की हुई आखिरी मुद्दत तक

أَجَلَتْ لَنَا ۖ قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خَالِدِينَ فِيهَا

जो तू ने हमारे लिए मुक़रर की थी। अल्लाह फरमाएंगे के दोज़ख तुम्हारा ठिकाना है, उस में हमेशा रहोगे,

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۖ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٧٨﴾ وَكَذَلِكَ

मगर जितना अल्लाह चाहे। यकीनन तेरा रब हिक्मत वाला, इल्म वाला है। और इसी तरह

نُؤَيِّ بَعْضُ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٧٩﴾

हम ज़ालिमों में से एक को दूसरे पर मुसल्लत करते हैं उन आमाल की वजह से जो वो करते हैं।

يَمْعَشِرُ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ

ऐ जिन्नात और इन्सानों की जमाअत! क्या तुम्हारे पास तुम में से पैग़म्बर नहीं आए

يَقْضُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي وَيُزِدُّوكُمُ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ

जो तुम पर मेरी आयतें तिलावत करते और जो तुम्हें तुम्हारे इस दिन के मिलने से

هَذَا ۖ قَالُوا شَهِدْنَا عَلَى أَنْفُسِنَا وَعَظَّمْتُهُمُ الْحَيَاةَ

डराते थे? तो उन्होंने ने कहा के हम ने हमारी जानों के खिलाफ गवाही दी और उन को दुन्यवी ज़िन्दगी ने

الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا

धोके में डाले रखा और उन्होंने ने अपनी जानों के खिलाफ गवाही दी के वो

كَفِرِينَ ﴿٣٠﴾ ذَٰلِكَ أَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ

काफिर थे। ये इस वजह से के तेरा रब बस्तियों को हलाक नहीं करता

يُظْلِمُ وَأَهْلُهَا غَفْلُونَ ﴿٣١﴾ وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ

जुल्म से इस हाल में के वहां वाले गाफिल हों। और हर एक के लिए उन के आमाल के मुताबिक

مِمَّا عَمِلُوا وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ﴿٣٢﴾ وَرَبُّكَ

दरजात हैं। और तेरा रब बेखबर नहीं है उन कामों से जो वो कर रहे हैं। और तेरा रब

الْغَنَىٰ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ

बेनियाज़ है, रहमत वाला है। अगर वो चाहे तो तुम्हें हलाक कर दे और तुम्हारे

مِنْ بَعْدِكُمْ مَا يَشَاءُ كَمَا أَنْشَأَكُمْ مِنْ ذُرِّيَّةٍ

बाद जानशीन बनाए जिसे चाहे जैसा के तुम्हें दूसरी कौम की जुरीयत में

قَوْمٍ آخَرِينَ ۚ إِنَّ مَا تُوْعَدُونَ لَأَتِي ۖ وَمَا أَنْتُمْ

से पैदा किया। यकीनन जिस का तुम से वादा किया जा रहा है वो ज़रूर आने वाला है। और तुम भाग कर

بِمُعْجزَتِنَا ۚ قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ

अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते। आप फरमा दीजिए ऐ मेरी कौम! तुम अपनी जगह पर रह कर अमल करते रहो,

إِنِّي عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۖ مَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ

यकीनन मैं भी अमल कर रहा हूँ। अनकरीब तुम्हें मालूम हो जाएगा के किस के लिए आखिरत का

الدَّارِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٣٥﴾ وَجَعَلُوا لِلَّهِ

घर है। यकीनन ज़ालिम लोग फलाह नहीं पाएंगे। और उन्होंने ने अल्लाह के लिए हिस्सा

مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هَٰذَا

मुकरर किया उस खेती में से और चौपाओं में से जिस को अल्लाह ने पैदा किया, फिर उन्होंने ने अपने ज़अम के

لِلَّهِ بِزَعْمِهِمْ وَهَٰذَا لِشُرَكَائِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَائِهِمْ

मुताबिक कहा के ये अल्लाह का हिस्सा है और ये हमारे शुरका का हिस्सा है। फिर जो उन के शुरका का हिस्सा है

فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلَّهِ فَهُوَ يَصِلُ

वो अल्लाह को नहीं पहुँचता। और जो अल्लाह का हिस्सा है वो उन के शुरका को

إِلَىٰ شُرَكَائِهِمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٣٦﴾ وَكَذَٰلِكَ زَيْنَ لِكَثِيرٍ

पहोँच जाता है। बुरे हैं वो फैसले जो वो कर रहे हैं। और इसी तरह मुशरिकीन में से

مِّنَ الْمُشْرِكِينَ قَتَلَ أَوْلَادَهُمْ شُرَكَائِهِمْ لِيُردُّوهُمْ

बहोत सों के लिए उन के शुरका ने उन की औलाद का कत्ल मुजय्यन किया ताके वो उन्हें हलाक कर दें

وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ

और ताके उन पर उन के दीन को मुल्लबिस कर दें। और अगर अल्लाह चाहता तो वो ऐसा न करते,

فَذَرَهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١٢﴾ وَقَالُوا هَذِهِ أَنْعَامٌ

इस लिए आप छोड़ दीजिए उन को और उन चीजों को जिस को वो झूठ गढ़ रहे हैं। और उन्होंने ने कहा के ये चौपाए हैं

وَحَرْتُ حَجْرٌ لَا يَطْعُمُهَا إِلَّا مَنْ نَّشَاءُ بِزَعْمِهِمْ

और ये खेतियाँ हैं जो ममनूअ हैं। इस को नहीं खा सकता मगर वही जो हम चाहें उन के ज़अम के मुताबिक और ये

وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَا يَذْكُرُونَ

चौपाए हैं के जिन की पुशत (उन की सवारी) हराम है और ये चौपाए जिन पर वो लोग

اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءٌ عَلَيْهِ ۖ سَيَجْزِيهِمُ

अल्लाह का नाम नहीं लेते, उस पर झूठ गढ़ते हुए। अनकरीब अल्लाह उन को सज़ा देगा

بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣﴾ وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَذِهِ

उन के झूठ गढ़ने की। और उन्होंने ने कहा के जो इन चौपाओं के पेटों

الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا ۚ

में है वो खालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी बीवियों पर हराम है।

وَإِنْ يَكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۖ سَيَجْزِيهِمُ

और अगर वो (जनीन) मुर्दा हो तो वो सब उस में शरीक होंगे। अनकरीब अल्लाह उन को उन के

وَصَفَهُمْ ۖ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٤﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ

बयान की सज़ा देगा। यकीनन वो हिक्मत वाला, इल्म वाला है। यकीनन नुकसान उठाया उन लोगों ने

قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا

जिन्होंने ने अपनी औलाद को कत्ल किया हिमाकत से इल्म न होने की वजह से और उन्होंने ने हराम की

مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ ۖ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا

वो चीज़ें जो अल्लाह ने उन को रोज़ी के तौर पर दी अल्लाह पर झूठ गढ़ते हुए। यकीनन वो गुमराह हो गए और

مُهْتَدِينَ ﴿١٥﴾ وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَ جَنَّاتٍ مَّعْرُوشَاتٍ

उन्होंने ने हिदायत नहीं पाई। और वही अल्लाह है जिस ने बेलों वाले और जिस ने बेलों के अलावा के (तने वाले दरख्तों के)

﴿١٥﴾

وَّ غَيْرَ مَعْرُوشَتٍ ۚ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أَكْلُهُ

बागात बनाए, और उस ने खजूर और खेती को बनाया जिन के फल मुख्तलिफ होते हैं (मजे और शकल में)।

وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ

और जिस ने जैतून और अनार को बनाया के कुछ उन में से एक दूसरे के मुशाबेह हैं और कुछ एक दूसरे के मुशाबेह नहीं

كُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثَرَ ۚ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ ۚ

हैं। तो तुम उस के फल में से खाओ जब वो फल लाए और तुम उस का उस की खेती काटने के दिन हक अदा करो।

وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۚ

और तुम इसराफ मत करो। यकीनन अल्लाह इसराफ करने वालों से महबबत नहीं करते।

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةٌ ۚ وَفَرَشَاءُ ۚ كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ

और उस ने चौपाओं में से कुछ जानवर बनाए बोझ उठाने वाले और कुछ छोटे चौपाए बनाए। तो तुम खाओ उस में

وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوتَ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۚ

से जो अल्लाह ने तुम को रोजी के तौर पर दिए और तुम शैतान के कदम बकदम मत चलो। यकीनन वो तुम्हारा खुला दुश्मन है।

ثَمْنِيَّةٌ ۚ أَزْوَاجٌ ۚ مِنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ ۚ وَمِنَ الْمَعْزِ

उस ने आठ किस्में पैदा कीं। भेड़ों में से दो दो और बकरियों में से

اثْنَيْنِ ۚ قُلْ ۖ الذَّكْرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ

दो दो। आप फरमा दीजिए के क्या दोनों मुजकर उस ने हराम किए या दोनों मादाएं

أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ ۚ نَبَّؤُنِي بِعِلْمٍ

या जिस को दोनों मादाओं की बच्चेदानियाँ महफूज किए हुए हैं? तुम मुझे खबर दो दलील से

إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ

अगर तुम सच्चे हो। और उस ने ऊँट में से पैदा किए दो दो

وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۚ قُلْ ۖ الذَّكْرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ

और गाए में से दो दो। आप फरमा दीजिए के क्या दोनों नर हराम किए या दोनों मादाएं हराम कीं

أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ ۚ أَمْ كُنْتُمْ

या उस को जिस को दोनों मादाओं की बच्चेदानी महफूज किए हुए हैं? क्या तुम

شُهَدَاءُ ۚ إِذْ وَصَّيْتُكُمْ اللَّهُ بِهَذَا ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ

मौजूद थे जब तुम्हें अल्लाह ने इस का हुक्म दिया? फिर उस से ज्यादा ज़ालिम कौन होगा जो

اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ	
अल्लाह पर झूठ गढ़े ताके वो इन्सानों को बगैर तहकीक के गुमराह करे?	
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ قُلْ لَا اَجِدُ	ع
यकीनन अल्लाह ज़ालिम कौम को हिदायत नहीं देते। आप फरमा दीजिए के मैं तो नहीं पाता	
فِيْ مَا اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَى طَاعِمٍ يَّتْعَمُهٗ اِلَّا	
उस में जो मेरी तरफ वही किया जा रहा है कोई हराम चीज़ किसी खाने वाले पर जिस को वो खाए सिवाए	
اَنْ يَكُوْنَ مَيِّتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خَنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ	
इस के वो मुर्दार हो या बेहता हुवा खून हो या खिन्ज़ीर का गोश्त हो, फिर वो यकीनन	
رَجَسٌ اَوْ فِسْقًا اٰهْلًا لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهِ ۚ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ	
सरापा गन्दगी है, या नाफरमानी का ज़रिया हो के उस पर ग़ैरुल्लाह का नाम लिया गया हो। फिर जो मजबूर हो जाए इस हाल में के वो लज़ज़त को तलाश	
بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۳४﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ	
करने वाला न हो और जान बचाने की मिक्दर से तजावुज़ करने वाला न हो तो यकीनन तेरा परवरदिगार बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और	
هَادَوْا حَرَمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفْرِ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ	
यहूदियों पर हम ने हर नाखुन वाले जानवर को हराम किया था। और गाए और बकरी में से हम ने उन पर हराम किया था	
حَرَمْنَا عَلَيْهِمْ شَحُوْمَهُمْ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمْ اَآ	
उन की चरबियों को मगर वो चरबी जिस को उन की पीठ उठाए हुए हो	
اَوْ الْحَوَايَا اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ذٰلِكَ جَزَيْنَهُمْ بِغَيْرِهِمْ ۚ	
या आंतें जिस को उठाए हुए हो या जो हड्डियों के साथ मिली हुई हो। ये हम ने उन को उन की सरकशी की वजह से सज़ा दी।	
وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ	
और यकीनन हम सच्चे हैं। फिर अगर वो आप को झुठलाएं तो आप फरमा दीजिए तुम्हारा रब वसीअ	
رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ	
रहमत वाला है। और उस का अज़ाब मुजरिम कौम से लौटाया नहीं	
الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَاءَ	
जाएगा। अनक़रीब मुशरिक लोग कहेंगे के अगर अल्लाह	
اللّٰهُ مَا اَشْرَكْنَا وَلَا اٰبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ شَيْءٍ	
चाहता तो न हम और न हमारे बाप दादा शिर्क करते और न हम कोई चीज़ हराम करते।	

كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّى ذَاقُوا

इसी तरह झुठलाया उन लोगों ने जो उन से पहले थे यहां तक के उन्होंने ने हमारा अज़ाब

بِأَسْنَاءٍ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ

चखा। आप फरमा दीजिए तुम्हारे पास क्या दलील है, तो तुम उसे हमारे सामने निकालो।

إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿۱۳۸﴾

तुम तो सिर्फ गुमान के पीछे चलते हो और तुम तो सिर्फ अटकल से बातें करते हो।

قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۖ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ

आप फरमा दीजिए फिर अल्लाह ही के लिए (दिल तक) पहुँचने वाली हुज्जत है। फिर अगर अल्लाह चाहता तो तुम तमाम को हिदायत

أَجْمَعِينَ ﴿۱۳۹﴾ قُلْ هَلَمْ شَهِدْكُمْ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ

दे देता। आप फरमा दीजिए के तुम अपने गवाहों को लाओ जो गवाही दें

أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَذَا ۖ فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدُ مَعَهُمْ ۚ

इस की के अल्लाह ने उस को हराम किया है। फिर अगर वो गवाही दें तो आप उन के साथ गवाही न दीजिए।

وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ

और उन की ख्वाहिशात के पीछे न चलिए जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया और जो

لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿۱۴۰﴾ قُلْ

आखिरत पर ईमान नहीं रखते और जो अपने रब के साथ दूसरे शुरका को बराबर करार देते हैं। आप फरमा दीजिए

تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبِّي عَلَيْكُمْ إِلَّا تَشْرَكُوا بِهِ

के तुम आओ, मैं तिलावत करता हूँ वो जो तुम्हारे रब ने तुम पर हराम किया है, ये है के उस के साथ किसी भी

شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ

चीज़ को शरीक मत ठेहराओ और वालिदैन् के साथ हुस्ने सुलूक करो। और अपनी औलाद को फक्क की वजह से

مِنْ إِمْلَاقٍ ۚ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۖ وَلَا تَقْرُبُوا

कल्ल मत करो। हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी। और बेहयाई की चीज़ों

الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۖ وَلَا تَقْتُلُوا

के क़रीब मत जाओ, उन के जो उस में से ज़ाहिर हैं और जो छुपी हुई हैं। और उस नफ्स को

النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ ذَلِكُمْ وَصَّيْكُمْ

कल्ल मत करो जिस को अल्लाह ने मुहतरम बनाया है, मगर हक़ की वजह से। इस की अल्लाह तुम्हें ताकीद

بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٥١﴾ وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ	करता है ताके तुम अकलमन्द बनो। और यतीम के माल के करीब भी मत जाओ
إِلَّا بِالتِّي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا	मगर उस तरीके से जो बेहतर हो यहां तक के वो अपनी जवानी को पहुँच जाए। और नाप
الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا تَكْفُفُ نَفْسًا	और तोल को इन्साफ के साथ पूरा पूरा दो। हम किसी शख्स को मुकल्लफ नहीं बनाते
إِلَّا وَسْعَهَا ۚ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۚ	मगर उस की वुसअत के मुताबिक। और जब बात करो तो इन्साफ की बात करो अगर्चे रिश्तेदार क्यूं न हों।
وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ۚ ذَلِكُمْ وَصَّكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ	और अल्लाह के अहद को पूरा करो। इस की अल्लाह तुम्हें ताकीद करता है ताके तुम
تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٢﴾ وَأَنَّ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ	नसीहत हासिल करो। और यकीनन ये मेरा रास्ता सीधा है
فَاتَّبِعُوهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ	तो उस पर चलो। और अलग अलग रास्तों पर मत चलो, वरना वो तुम्हें अल्लाह के रास्ते से अलग कर
عَنْ سَبِيلِهِ ۚ ذَلِكُمْ وَصَّكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥٣﴾	देंगे। इस की अल्लाह तुम्हें ताकीद करता है ताके तुम मुत्तकी बनो।
ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تِبَاءًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ	फिर हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को मुकम्मल किताब दी ऐसे लोगों के लिए जो नेक हैं
وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ	और हर चीज़ की तफसील और हिदायत और रहमत ताके वो अपने रब से मिलने
رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٤﴾ وَ هَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ	पर ईमान लाएं। और ये किताब है बरकत वाली जिस को हम ने उतारा,
فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٥٥﴾ أَنْ تَقُولُوا	तो उस के मुताबिक चलो और डरो ताके तुम पर रहम किया जाए। (इस वजह से उतारी) के कहीं तुम कहे
إِنَّمَا أَنْزَلَ الْكِتَابَ عَلَى طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۚ	के किताब हम से पेहले की दो जमाअतों पर उतारी गई।

وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَفْلِينَ ﴿١٥٦﴾ أَوْ تَقُولُوا

और हम उन एहले किताब की किराअत (ज़बान और इल्म) से यकीनन बेखबर थे। या कहीं तुम ये कहो के

لَوْ أَنَّا أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ ۖ

अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम उन से ज़्यादा हिदायतयाफता होते।

فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۖ

फिर यकीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रोशन किताब आ गई और हिदायत और रहमत आ गई।

فَمَن أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ

फिर उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और उस से पैराज़

عَنْهَا ۖ سَنَجْزِي الَّذِينَ يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا

करे। अनकरीब हम उन को जो हमारी आयतों से पैराज़ करते हैं

سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ﴿١٥٧﴾ هَلْ يَنْظُرُونَ

बदतरीन अज़ाब की सज़ा देंगे, इस वजह से के वो पैराज़ करते हैं। वो मुन्तज़िर नहीं हैं

إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ

मगर इस के के उन के पास फरिश्ते आ जाएं या तुम्हारा रब आ जाए या तेरे

بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ ۖ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ

रब की बाज़ अलामात आ जाएं। जिस दिन तेरे रब की बाज़ अलामात आ जाएंगी

لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ أَمَنَتْ مِنْ قَبْلُ

तो किसी शख्स को उस का ईमान लाना नफा नहीं देगा जो उस से पेहले ईमान न लाया हो

أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا ۖ قُلِ انْتَضَرُوا

या जिस ने अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई हो। आप फरमा दीजिए के तुम मुन्तज़िर रहो,

إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ﴿١٥٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ فَرَقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا

यकीनन हम भी मुन्तज़िर हैं। यकीनन वो लोग जिन्होंने ने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया और वो

شِيْعًا لَّسْتُ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ۖ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ

अलग अलग गिरोह बन गए आप उन में से किसी चीज़ में नहीं हो। उन का मुआमला तो सिर्फ अल्लाह के सुपुर्द है,

ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٥٩﴾ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ

फिर वो उन्हें खबर देगा उन कामों की जो वो करते थे। जो भलाई ले कर आएगा

فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ

तो उस के लिए उस के जैसी दस भलाइयाँ होंगी। और जो बुराई ले कर आएगा

فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٠﴾ قُلْ إِنِّي

तो उसे सज़ा नहीं दी जाएगी मगर उसी जैसी एक बुराई की और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा। आप फरमा दीजिए यकीनन मुझे

هَدَانِي رَبِّي إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ دِينًا قِيمًا

मेरे रब ने सीधे रास्ते की हिदायत दी है। सीधे दीन की,

مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١١﴾

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत की, जो सब से कट कर एक अल्लाह के हो कर रहने वाले थे। और मुशरिकीन में से नहीं थे।

قُلْ إِن صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ

आप फरमा दीजिए के यकीनन मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरा जीना और मरना अल्लाह रब्बुल आलमीन

رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢﴾ لَا شَرِيكَ لَهُ ۚ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ

के लिए है। जिस का कोई शरीक नहीं। और उसी का मुझे हुक्म दिया गया है

وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٣﴾ قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغَى رَبًّا

और मैं सब से पहला इस्लाम लाने वाला हूँ। आप फरमा दीजिए क्या अल्लाह के अलावा मैं किसी को रब के तौर पर तलाश

وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ

कसं हालांके वो हर चीज़ का रब है? और कोई गुनाह नहीं करता

إِلَّا عَلَيْهِ ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى ۚ ثُمَّ

मगर वो उसी की जान पर वबाल होगा। और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर

إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٤﴾

तुम्हारे रब की तरफ तुम्हें वापस जाना है, फिर वो तुम्हें खबर देगा उन चीज़ों की जिन में तुम इखतिलाफ करते थे।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ

और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें जानशीन बनाया ज़मीन में और जिस ने तुम में से एक को दूसरे पर

فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ ۚ

दरजात के एतेबार से बुलन्द किया ताके वो तुम्हें आजमाए उस में जो उस ने तुम्हें दिया।

إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ ۚ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٥﴾

यकीनन तेरा रब जल्द हिसाब लेने वाला है। और यकीनन वो बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

وَلَوْ أَنَّنَا ۙ

آیات ۲۰۶

(۷) سُورَةُ الْأَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ (۳۹)

رُكُوعَاتُهَا ۲۴

وہ ۲۰۶ آیات میں ۲۰۶ رکوع ہیں اور ۲۴ رکوع ہیں

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

پڑھتا ہوں اﷲ کا نام لے کر جو بڑا مہربان، نہایت رحم والا ہے۔

النَّصِّ ۚ كِتَابٌ أُنْزِلَ إِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِي صَدْرِكَ

اﷲ کا نام لے کر جو بڑا مہربان، نہایت رحم والا ہے۔

حَرْجٌ مِّنْهُ لِيَتَذَكَّرَ بِهِ وَ ذِكْرِي لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

اس لیے آپ کے سینے میں اس کی طرف سے کوئی تنگی نہ رہے تاکہ آپ اس کے لیے ڈراؤں اور یہ ایمان والوں کے لیے نسیحت ہے۔

اتَّبِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِّن رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا

تو اس کی پیروی کرو جو تمہارے رب کی طرف سے تمہاری طرف اتارا گیا ہے اور تم اﷲ کو छोड़ کر دوستوں

مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۖ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝

کے پیچھے مت چلو۔ بہت کم تم نسیحت حاصل کرتے ہو۔ اور کتنی بستیوں

مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا فَجَاءَهَا بَأْسُنَا بَيَاتًا أَوْ هُمْ قَائِلُونَ ۝

ہیں جن کو ہم نے ہلاک کیا اس طرح کے ہمارا اچھا ان پر آیا رات کے وقت یا جب وہ کھلے ہوئے تھے۔

فَمَا كَانَ دَعْوُهُمْ إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا إِلَّا أَنْ قَالُوا

پھر ان کی پکار نہیں تھی جب کے ہمارا اچھا ان پر آیا مگر یہ کہ انہوں نے کہا کہ

إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ

یہ کہ ہم ہی کوسوروار ہیں۔ پھر ہم جسر سوال کریں گے ان سے جن کی طرف پیغمبروں کو بجا گیا

وَلَنَسْأَلَنَّ الْمُرْسَلِينَ ۖ فَلَنَقْصِّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ

اور پیغمبروں سے بھی جسر ہم سوال کریں گے۔ پھر ہم ان کے سامنے اپنے علم سے کیسے بیان کریں گے

وَمَا كُنَّا غَائِبِينَ ۖ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ ۖ فَمَنْ ثَقُلَتْ

اور ہم غائب نہیں تھے۔ اور وزن اس دن حق ہے۔ پھر جس کے پلڑے باری

مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَمَنْ خَفَّتْ

موازینہ فاولیک ہم المفلحون ۝ ومن خفت موازینہ فاولیک الذین خسروا انفسهم بما كانوا

موازینہ فاولیک الذین خسروا انفسهم بما كانوا

رہیں گے تو یہی لوگ ہلاک ہونے والے ہیں۔ اور جس کے پلڑے ہلکے

بَايْتَنَا يَظْلِمُونَ ۝ وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ	
हमारी आयतों के साथ जुल्म करते थे। यकीनन हम ने तुम्हें बसाया ज़मीन में	
وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ ۖ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝	६
और हम ने तुम्हारे लिए ज़मीन में ज़िन्दगी के अस्बाब बनाए। बहोत कम तुम शुक्र अदा करते हो।	
وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَكِ	
और यकीनन हम ने तुम्हें पैदा किया, फिर हम ने तुम्हारी सूरतें बनाई, फिर हम ने फरिश्तों से कहा	
اسْجُدُوا لِآدَمَ ۖ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ لَمْ يَكُنْ	
के आदम को सजदा करो। सिवाए इबलीस के सब ने सजदा किया। के वो सजदा करने वालों	
مِّنَ السَّاجِدِينَ ۝ قَالَ مَا مَنَعَكَ آلَا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ ۖ	
में से नहीं रहा। अल्लाह ने फरमाया तुझे क्या मानेअ हुवा इस से के तू सजदा नहीं करता जब के मैं ने तुझे हुक्म दिया?	
قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ	
इबलीस ने कहा के मैं आदम से बेहतर हूँ। इस लिए के आप ने मुझे आग से पैदा किया और आप ने उसे	
مِّن طِينٍ ۝ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ	
मिट्टी से पैदा किया। अल्लाह ने फरमाया के फिर तू जन्नत से नीचे उतर जा, फिर तेरी ये ताक़त नहीं है	
أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ۝ قَالَ	
के तू जन्नत में तकब्बुर करे, तो तू निकल जा! यकीनन तू ज़लील लोगों में से है। इबलीस ने कहा के	
أَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ قَالَ إِنَّكَ	
आप मुझे मोहलत दीजिए उस दिन तक जिस दिन मुर्दे कब्रों से उठाए जाएंगे। अल्लाह ने फरमाया के	
مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۝ قَالَ فِيمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ	
यकीनन तुझे मोहलत दी गई। इबलीस ने कहा के फिर इस वजह से के तू ने मुझे गुमराह किया है, मैं उन के लिए	
صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ ثُمَّ لَا تَنِيَّهُمْ مِّنْ بَيْنِ	
तेरे सीधे रास्ते पर बैठ जाऊँगा। फिर मैं उन के पास आऊँगा उन के	
أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ	
आगे से और उन के पीछे से और उन के दाएं से	
وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ ۖ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ۝ قَالَ	
और उन के बाएं से। और तू उन में से अक्सर को शुक्रगुज़ार नहीं पाएगा। अल्लाह ने फरमाया	

اُخْرِجْ مِنْهَا مَذْعُومًا مَّدْحُورًا ۖ لَنْ تَبْعَكَ

के ज़लील और मरदूद हो कर तू जन्नत से निकल जा। अलबत्ता उन में से जो तेरे पीछे चलेगा

مِنْهُمْ لَا مَمَكْنَ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٨﴾ وَيَا آدَمُ

तो मैं तुम तमाम से जहन्नम को भर दूँगा। और (अल्लाह ने फरमाया के) ऐ आदम!

اَسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا

तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो, फिर तुम दोनों खाओ जहां से तुम चाहो

وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾

लेकिन इस दरख्त के करीब मत जाना, वरना तुम कुसूरवारों में से बन जाओगे।

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا

फिर शैतान ने उन के लिए वसवसा डाला ताके उन के लिए खोल दे उन के छुपे

مِنْ سَوَاتِهِمَا وَ قَالَ مَا نَهَكُمَا رَبُّكُمَا

हुए सतर को और इबलीस ने कहा के तुम्हारे रब ने तुम्हें इस

عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ تَكُونَا مَلَكَتَيْنِ أَوْ تَكُونَا

दरख्त से नहीं रोका मगर इस लिए के तुम दोनों फरिश्ते बन जाओगे या हमेशा रहने वालों

مِنَ الْخَالِدِينَ ﴿٢٠﴾ وَ قَاسَمَهُمَا إِنِّي لَكُمَا

में से बन जाओगे। और इबलीस ने उन दोनों के सामने कस्में खाई के यकीनन मैं तुम दोनों के लिए

لِنِ النَّاصِحِينَ ﴿٢١﴾ فَدَلَّهُمَا بِغُرُورٍ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ

खैरख्वाही करने वालों में से हूँ। चुनांचे इबलीस ने उन दोनों को धोका दे कर नीचे गिरा दिया के जब दोनों ने दरख्त को

بَدَتْ لَهُمَا سَوَاتُهُمَا وَطَفَقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهِمَا

चखा तो उन के लिए उन के सतर खुल गए और वो दोनों अपने ऊपर जन्नत के

مِنْ وَرَقِ الْجَنَّةِ ۖ وَ نَادَاهُمَا رَبُّهُمَا أَلَمْ أَنْهَكُمَا

पत्ते चिपकाने लगे। और उन के रब ने उन दोनों को पुकारा, क्या मैं ने तुम्हें मना नहीं किया था

عَنْ تِلْكَ الشَّجَرَةِ وَأَقُلْ لَكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا عَدُوٌّ

इस दरख्त से और मैं ने तुम से नहीं कहा था के शैतान तुम्हारा खुला

مُبِينٌ ﴿٢٢﴾ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا سَكَنَةً وَإِنْ لَمْ

दुश्मन है? आदम और हव्वा (अलैहिमस्सलाम) केहने लगे ऐ हमारे रब! हम ने अपनी जानों पर जुल्म किया। और अगर

تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿۱۳﴾ قَالَ

आप हमारी मग़फ़िरत नहीं करोगे और हम पर रहम नहीं करोगे तो हम नुक़सान उठाने वालों में से बन जाएंगे। अल्लाह ने

اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ

फरमाया के तुम सब नीचे उतर जाओ, तुम में से एक दूसरे के दुश्मन बन कर रहोगे। और तुम्हारे लिए ज़मीन में

مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿۱۴﴾ قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ

आरज़ी ठिकाना है और एक वक़्त तक फाइदा उठाना है। अल्लाह ने फरमाया के ज़मीन में तुम ज़िन्दगी गुज़ारोगे

وَ فِيهَا تَمُوتُونَ وَ مِنْهَا تُخْرَجُونَ ﴿۱۵﴾ يَبْنَىٰ آدَمَ

और उसी में मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे। ऐ इन्सानो!

قَدْ أَنزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُؤَارِي سَوَاتِكُمْ وَرِيشًا ۖ

यकीनन हम ने तुम पर लिबास उतारा जो तुम्हारे जिस्म के उन हिस्सों को छुपा सके जिन का खेलना बुरा है और जो खुशनुमाई का ज़रिया भी है।

وَلِبَاسُ التَّقْوَىٰ ۖ ذَٰلِكَ خَيْرٌ ذَٰلِكَ مِنْ آيَةِ اللَّهِ

और तक्वे का लिबास ही बेहतर है। ये अल्लाह की आयात में से है

لَعَلَّهُمْ يَذْكُرُونَ ﴿۱۶﴾ يَبْنَىٰ آدَمَ لَا يَفْتَنَنَّ الشَّيْطَانُ

ताके वो नसीहत हासिल करें। ऐ इन्सानो! तुम्हें शैतान फितने में न डाले

كَمَا أَخْرَجَ أَبَوَيْكَ مِنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا

जैसा के तुम्हारे वालिदैन् को जन्नत से निकाला के उन से उन के लिबास उतरवा रहा था

لِيُرِيَهُمَا سَوَاتِيَهُمَا ۖ إِنَّهُ يَرَبُّكُمْ هُوَ وَ قَبِيلُهُ

ताके उन को उन के सतर दिखाए। इस लिए के इबलीस और उस की जमाअत तुम्हें देखती है

مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۖ إِنَّا جَعَلْنَا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ

ऐसी जगह से के तुम उन को नहीं देख पाते। यकीनन हम ने शयातीन को उन लोगों का दोस्त बनाया है

لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿۱۷﴾ وَإِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً قَالُوا

जो ईमान नहीं लाते। और जब वो बेहयाई का काम करते हैं तो केहते हैं

وَجَدْنَا عَلَيْهَا آبَاءَنَا وَاللَّهُ أَمَرْنَا بِهَا ۖ قُلْ

के हम ने इस पर हमारे बाप दादा को पाया और अल्लाह ने हमें इस का हुक्म दिया। आप फरमा दीजिए

إِنَّ اللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ ۖ اتَّقُوا اللَّهَ عَلَىٰ اللَّهِ

यकीनन अल्लाह बेहयाई का हुक्म नहीं देते। क्या तुम अल्लाह पर वो बात केहते हो

مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿۱۸﴾ قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ وَأَقِيمُوا

जो तुम जानते नहीं हो? आप फरमा दीजिए के मेरे रब ने इत्साफ का हुक्म दिया है। और ये के तुम अपने रख

وُجُوهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ

सीधे रखो हर सजदे के वक्त और तुम उस को पुकारो उसी के लिए इबादत को खालिस

لَهُ الدِّينَ ۚ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ﴿۱۹﴾ فَرِيقًا هَدَىٰ

करते हुए। जैसा के उस ने तुम्हें पेहली मर्तबा पैदा किया, तुम दोबारा लौट कर आओगे। एक जमाअत को

وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ ۚ إِنَّهُمْ اتَّخَذُوا

अल्लाह ने हिदायत दी और एक जमाअत पर गुमराही साबित हो गई। यकीनन उन लोगों ने शयातीन को

الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ

दोस्त बनाया अल्लाह को छोड़ कर के और वो समझते रहे के

أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿۲۰﴾ يَبْنِي أَدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ

वो हिदायतयाफता हैं। ऐ इन्सानो! तुम अपनी ज़ीनत ले लिया करो

عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ

हर नमाज़ के वक्त और तुम खाओ और पियो और हद से तजावुज़ मत करो। यकीनन अल्लाह

لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿۲۱﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي

हद से तजावुज़ करने वालों से महबूत नहीं करते। आप फरमा दीजिए के अल्लाह की ज़ीनत को जो उस ने अपने

أَخْرَجَ لِعِبَادَةٍ وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ ۚ قُلْ هِيَ

बन्दों के लिए निकाली है और खाने की उम्दा चीज़ों को किस ने हराम किया? आप फरमा दीजिए ये नेअमते

لِلَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ

ईमान वालों के लिए दुन्यवी ज़िन्दगी में हैं, कयामत के दिन खालिस उन्ही के लिए

الْقِيَامَةِ ۚ كَذَلِكَ نَفْصِلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿۲۲﴾

होंगी। इसी तरह हम आयतों को तफसील से बयान करते हैं ऐसी क़ौम के लिए जो इल्म रखती हो।

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّي الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا

आप फरमा दीजिए के मेरे रब ने बेहयाई की चीज़ों को हराम किया है, उन में से ज़ाहिरी को भी

وَمَا بَطْنٌ وَإِلَاشٌ وَابْغَىٰ الْبَغْيَ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا

और बातिनी को भी और उस ने हराम किया गुनाह और नाहक जुल्म को। और हराम किया ये के तुम अल्लाह के साथ

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطٰنًا وَّ اَنْ تَقُوْلُوْا

शरीक ठेहराओ ऐसी चीज़ जिस पर अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी और ये के तुम अल्लाह पर

عَلٰى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ

कहो वो जो तुम जानते नहीं हो। और हर उम्मत के लिए एक आखिरी वक्त मुकर्रर किया हुआ है। फिर जब उस का

اَجْلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً ۚ وَلَا يَسْتَقْدِرُوْنَ ۝

आखिरी मुकर्रर किया हुआ वक्त आ जाता है तो एक घड़ी न वो पीछे हट सकते हैं और न एक घड़ी आगे बढ़ सकते हैं।

يٰۤاٰدَمُ اِمَّا يٰٓاَتِيْنٰكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقْصُوْنَ

ऐ इन्सानो! अगर तुम्हारे पास तुम में से पैग़म्बर आएँ जो तुम पर मेरी आयतें

عَلَيْكُمْ اٰتٰىنِى ۚ فَمِنْ اَتٰتٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ

तिलावत करें, फिर जो तक्वा इखतियार करेगा और इस्लाह करेगा तो न उन पर खौफ होगा

وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰتِنَا

और न वो ग़मगीन होंगे। और जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया

وَاَسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا

और उन से तकब्बुर किया वो दोज़खी हैं। वो उस में

خٰلِدُوْنَ ۝ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرٰى عَلٰى اللّٰهِ

हमेशा रहेंगे। फिर उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ

كَذَبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰتِيْهِ ۚ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ

गढ़े या अल्लाह की आयतों को झुठलाए। उन को उन का हिस्सा लिखे हुए में से

مِّنَ الْكِتٰبِ ۚ حَتّٰى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَقَّوْنَهُمْ ۚ

पहोंच कर रहेगा। यहां तक के जब उन के पास हमारे भेजे हुए फरिश्ते आएंगे जो उन की जान निकाल रहे होंगे,

قَالُوْا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ قَالُوْا

तो वो पूछेंगे कहाँ हैं वो शुरका जिन्हें तुम अल्लाह के अलावा पुकारते थे? वो कहेंगे

صَلُّوْا عَنَّا وَ شَهِدُوْا عَلٰى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا

के वो हम से खो गए और वो गवाही देंगे अपनी जानों के खिलाफ ये के वो

كَافِرِيْنَ ۝ قَالَ ادْخُلُوْا فِيْ اُمِّمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ

काफिर थे। अल्लाह फरमाएंगे के तुम दाखिल हो उन उम्मतों में जो तुम से पेहले

قَبْلَكُمْ مِّنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ

जिन्नात और इन्सानों की गुज़र चुकी हैं, (उन में शामिल हो कर) जहन्नम में दाखिल हो जाओ। जब कभी कोई जमाअत

أُمَّةٌ لَّعَنَتْ أُخْتَهَا حَتَّىٰ إِذَا آدَارُكُوا فِيهَا جَمِيعًا ۙ

जहन्नम में दाखिल होगी तो वो अपनी साथ वाली जमाअत पर लानत करेगी। यहां तक के जब वो जहन्नम में इकट्ठे हो जाएंगे

قَالَتْ أَخْرِهُمْ لِأُولِهِمْ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ أَضَلُّونَا

तो उन में से पीछे आने वाली जमाअत उन में से पेहली वाली जमाअत से कहेगी ऐ हमारे रब! ये वो लोग हैं

فَاتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ قَالَ لِكُلِّ

जिन्होंने ने हमें गुमराह किया, इस लिए आप उन्हें आग का दुगना अज़ाब दीजिए। अल्लाह फरमाएंगे हर एक के लिए

ضِعْفٍ وَلَكِنْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَقَالَتْ أُولَهُمْ

दुगना है, लेकिन तुम जानते नहीं हो। और उन में से पेहली जमाअत कहेगी

لِأَخْرِهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ

उन में से पीछे आने वाली जमाअत से के फिर तुम्हारे लिए हम पर कोई फज़ीलत नहीं है,

فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝

इस लिए तुम भी अज़ाब चखो उन्ही आमाल की वजह से जो तुम खुद करते थे।

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ

यकीनन वो लोग जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया और उन से तकब्बुर किया उन के लिए आसमान के दरवाज़े

لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ

खोले नहीं जाएंगे और वो जन्नत में दाखिल नहीं होंगे

حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۖ وَكَذَلِكَ نَجْزِي

यहां तक के ऊंट सुई के नाके (सुराख) में दाखिल हो जाए, और इसी तरह हम मुजरिमों को

الْبُجْرَمِينَ ۝ لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ

सज़ा देंगे। उन के लिए जहन्नम ही से बिछौना होगा और उन के ऊपर से

غَوَاشٍ ۖ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا

ओढ़ना भी होगा। और इसी तरह हम ज़ालिमों को सज़ा देंगे। और वो लोग जो ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ

और नेक काम करते रहे, हम किसी शख्स को मुकल्लफ नहीं बनाते मगर उस की ताकत के मुताबिक।

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢١٩﴾	यही लोग जन्नती हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे।
وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِي	और हम निकाल देंगे वो कीना जो उन के सीनों में है, उन के नीचे से
مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۖ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا	नेहरें बेहती होंगी। और वो कहेंगे के तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें इस की हिदायत
لِهَٰذَٰتٍ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنَّ هَدَانَا اللَّهُ ۖ	दी। और हम ऐसे नहीं थे के हम हिदायत पाते अगर अल्लाह हमें हिदायत न देता।
لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۖ وَنُودُوا	यकीनन हमारे रब के भेजे हुए पैग़म्बर हक़ ले कर आए। और उन को आवाज़ दी जाएगी
أَن تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي ارْتَبْتُمْ بِهَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٢٠﴾	के ये वो जन्नत है जिस का तुम्हें वारिस बनाया गया है उन आमाल की बदौलत जो तुम करते थे।
وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ ۖ أَن قَدْ	और जन्नती दोज़खियों को पुकारेंगे के यकीनन
وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ	हम ने तो हक़ पाया वो वादा जो हमारे रब ने हम से किया था, फिर क्या तुम ने उस वादे को हक़ पाया
مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ قَالُوا نَعَمْ ۖ فَادِّنْ مُّؤَدِّنٌ	जो तुम्हारे रब ने तुम से किया था? तो वो कहेंगे, जी हाँ। फिर एक ऐलान करने वाला उन के
بَيْنَهُمْ ۖ أَن لَّعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿٢٢١﴾	दरमियान ऐलान करेगा के अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर। जो
يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۖ	अल्लाह के रास्ते से रोकते थे और उस में कजी तलाश करते थे।
وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كَافِرُونَ ﴿٢٢٢﴾ ۖ وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۖ	और वो आखिरत के भी मुन्किर थे। उन दोनों के दरमियान (आराफ़ की) दीवार होगी।
وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيئَتِهِمْ ۖ	और आराफ़ पर कुछ लोग होंगे जो सब को उन की अलामात से पेहचानते होंगे।

الْأَعْرَافِ

الْأَعْرَافِ

و نَادُوا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلِّمُوا عَلَيْكُمْ ۚ	“अस्सलामु अलैकुम” के पुकारेंगे को जन्नतियों वो और
لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ۝ وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ	अब तक वो जन्नत में दाखिल नहीं हुए होंगे, बल्के वो उस का लालच रखते होंगे। और जब उन की निगाहें
تَلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ ۖ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا	दोज़खियों की तरफ फेरी जाएंगी, तो वो कहेंगे के ऐ हमारे रब! तू हमें ज़ालिमों
مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَ نَادَى أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رَجُلًا	के साथ मत करना। और आराफ वाले पुकारेंगे उन (चन्द) लोगों को
يَعْرِفُونَهُمْ بِسِيمَاهُمْ قَالُوا مَا أَغْنَىٰ عَنْكُمْ	जिन को वो उन की अलामात से पेहचानते होंगे, वो कहेंगे के तुम्हारे कुछ काम नहीं आया
جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ۝ أَهَؤُلَاءِ	तुम्हारा जमा किया हुवा माल और वो जो तुम बड़ा बनना चाहते थे। के क्या ये वही लोग हैं
الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ۖ ادْخُلُوا	के तुम कस्में खाया करते थे के अल्लाह उन को रहमत नहीं पहुँचाएगा? तुम जन्नत में
الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ۝	दाखिल हो जाओ, तुम पर खौफ नहीं है और न तुम ग़मगीन होंगे।
وَ نَادَى أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا	और दोज़खी जन्नतियों को पुकारेंगे के तुम हमारे ऊपर
عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۖ قَالُوا	पानी में से कुछ बहाओ या उस में से जो अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दिया है। तो वो कहेंगे के
إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهَا عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ الَّذِينَ اتَّخَذُوا	यकीनन अल्लाह ने उन दोनों को काफिरों पर हराम किया है। उन पर जिन्होंने ने अपने
دِينَهُمْ لَهُوَ وَالْعِبَادَ وَغَرَّتَهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ	दीन को दिल बेहलाने का ज़रिया और खेल बना लिया और उन को दुन्यवी ज़िन्दगी ने धोके में डाले रखा।
فَالْيَوْمَ نَنْسِفُهُمْ كَمَا نَسَوْا لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَٰذَا ۖ وَمَا	फिर आज हम उन्हें भुला देंगे जैसा के उन्होंने ने भुलाए रखा था उन के इस दिन के मिलने को। और इस

كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٥١﴾ وَلَقَدْ جِئْنَاهُمْ بِكِتَابٍ

वजह से के वो हमारी आयतों का इन्कार करते थे। यकीनन हम उन के पास किताब लाए हैं

فَصَلَّنَاهُ عَلَىٰ عِلْمٍ هُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

जिस को हम ने इल्म के साथ तफसील से बयान किया है हिदायत और रहमत के तौर पर ऐसी कौम के लिए जो ईमान लाए।

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ ۚ يَوْمَ يَأْتِ تَأْوِيلُهُ

वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर उस के नतीजे के। जिस दिन उस का नतीजा आ जाएगा

يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ

तो कहेंगे वो लोग जिन्होंने ने उस को भुला रखा था इस से पेहले के यकीनन हमारे रब के भेजे हुए पैग़म्बर

رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۖ فَهَلْ لَنَا مِنْ شُفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا

हक़ ले कर आए थे। फिर क्या हमारे लिए कोई सिफारिशी है जो हमारे लिए सिफारिश

لَنَا أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۚ قَدْ

करे या हम (दुनिया में) वापस लौटाए जाएं के हम (जा कर) अमल करें उस के अलावा जो हम अमल करते थे? यकीनन

خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ نَا ۖ كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٥٣﴾

उन्होंने ने अपनी जानों को खसारे में डाला और उन से खो गए वो जो वो झूठ गढ़ा करते थे।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ

यकीनन तुम्हारा रब वो अल्लाह है जिस ने आसमान और ज़मीन पैदा किए

فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ يُغْشَىٰ

छे दिन में, फिर वो अर्श पर मुस्तवी हुवा। वो रात को

الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا ۚ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ

ढांपता है दिन पर, दिन रात की तलाश में तेज़ी से दौड़ता है और सूरज और चाँद

وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۚ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ

और सितारों को अपने हुक्म से काम में लगा रखा है। सुनो! उसी के लिए (आलमे) खल्क है और उसी के लिए (आलमे) अम्र है।

تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٤﴾ اَدْعُوا رَبَّكُمْ

अल्लाह बाबरकत है, तमाम जहानों का रब है। तुम अपने रब को पुकारो

تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُبْتَدِلِينَ ﴿٥٥﴾

आजिज़ी से और चुपके चुपके। यकीनन अल्लाह हद से आगे बढ़ने वालों से महबबत नहीं करते।

وَلَا تَفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا

और ज़मीन में फसाद मत फैलाओ उस की इस्लाह के बाद और उसी को खौफ से और लालच

وَوَطْبَعًا ۖ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

से पुकारो। यकीनन अल्लाह की रहमत एहसान वालों से करीब है।

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا ۖ بَيْنَ يَدَيْ

और वही अल्लाह है जो हवाओं को बशारत के तौर पर अपनी रहमत से पेहले

رَحْمَتِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَاهُ

भेजता है। यहां तक के जब ये हवाएं भारी बादलों को उठा कर लाती हैं तो हम उस को

لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ

मुरदा ज़मीन की तरफ हांक देते हैं, फिर हम उस से पानी उतारते हैं, फिर हम उस से तमाम

مِّن كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ كَذَلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ

फलों को निकालते हैं। इसी तरह हम मुरदों को भी (कबरों से) निकालेंगे, शायद के तुम नसीहत

تَذَكَّرُونَ ﴿٥٧﴾ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرِجُ نَبَاتَهُ

हासिल करो। और अच्छी ज़मीन, उस का सब्ज़ा उस के रब के

بِإِذْنِ رَبِّهِ ۚ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرِجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ

हुक्म से निकलता है। और वो ज़मीन जो बुरी है, उस का सब्ज़ा नहीं निकलता मगर निकम्मा।

كَذَلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ﴿٥٨﴾

इसी तरह हम आयतों को फेर फेर कर बयान करते हैं ऐसी कौम के लिए जो शुक्र अदा करती है।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يٰقَوْمِ

यकीनन हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को रसूल बना कर भेजा उन की कौम की तरफ, फिर उन्होंने ने कहा ऐ मेरी कौम!

اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ إِنِّي

अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं। यकीनन मैं

أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾ قَالَ

तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। उन की कौम

الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرُّكَ فِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٦٠﴾

के सरदारों ने कहा के यकीनन हम आप को खुली गुमराही में देख रहे हैं।

قَالَ يَقَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ

नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी कौम! मुझ में गुमराही नहीं लेकिन मैं रब्बुल आलमीन की

مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝۱۱ أَبْلَغُكُمْ رَسُولٌ مِّن رَّبِّ

तरफ से भेजा हुआ पैग़म्बर हूँ। मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुँचाता हूँ

وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝۱۲

और मैं तुम्हारी खैरखाही करता हूँ और मैं अल्लाह की तरफ से जानता हूँ वो जो तुम नहीं जानते।

أَوْعَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ

क्या तुम्हें तअज्जुब हुआ इस बात से के तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से नसीहत आई

عَلَى رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ

तुम में से एक शख्स पर ताके वो तुम्हें डराए और ताके तुम मुत्तकी बनो और ताके तुम पर रहम

تَرْحَمُونَ ۝۱۳ فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ

किया जाए? फिर उन्होंने ने नूह (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया, फिर हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को नजात दी और उन

مَعَهُ فِي الْفُلِكِ وَاعْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا

लोगों को जो आप के साथ कश्ती में थे। और हम ने गर्क किया उन लोगों को जिन्होंने ने

بِأَيَّتِنَا أَنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ۝۱۴

हमारी आयतों को झुठलाया। यकीनन वो अन्धी कौम थी।

وَإِلَىٰ عَادِ أَخَاهُمْ هُودًا ۝۱۵ قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ

और कौमे आद की तरफ भेजा उन के भाई हूद (अलैहिस्सलाम) को। हूद (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी कौम! अल्लाह की

مَا لَكُمْ مِّن إِلَهِ غَيْرُهُ ۝۱۶ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝۱۷ قَالَ

इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के सिवा कोई माबूद नहीं। क्या फिर तुम डरते नहीं हो? उन की

الْبَلَاءُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَزِلُّكَ

कौम के काफिर सरदारों ने कहा के यकीनन हम आप को हिमाक़त में देख

فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنُظُنُّكَ مِنَ الْكَذِبِينَ ۝۱۸ قَالَ

रहे हैं और यकीनन हम आप को झूठों में से गुमान करते हैं। हूद (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

يَقَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّن

ऐ मेरी कौम! मुझ में हिमाक़त नहीं, लेकिन मैं रब्बुल आलमीन की तरफ से भेजा हुआ

رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّ وَ أَنَا	पैग़म्बर हूँ। मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुँचाता हूँ और मैं
لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ ﴿١٧﴾ أَوْعِظْهُمْ أَنْ جَاءَكُمْ	तुम्हारे लिए अमानतदार खैरखाह हूँ। क्या तुम्हें तअज्जुब हुवा इस बात से के तुम्हारे पास
ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ۚ	तुम्हारे रब की तरफ से नसीहत आई तुम में से एक शख्स पर ताके वो तुम्हें डराए?
وَادْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ قَوْمِ	और याद करो जब के अल्लाह ने तुम्हें जानशीन बनाया कौमे नूह के
نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْطَةً ۚ فَادْكُرُوا	बाद और तुम्हारे डील डोल के फैलाव को ज़्यादा किया। फिर अल्लाह की नेअमतों
الْآءِ اللَّهُ لَعَلَّكُمْ تَفْلَحُونَ ﴿١٨﴾ قَالُوا أَجِئْتَنَا	को याद करो ताके तुम फलाह पाओ। उन्होंने ने कहा क्या आप हमारे पास आए हो
لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ	ताके हम यकता अल्लाह की इबादत करें और हम छोड़ दें उन माबूदों को जिन की हमारे बाप दादा इबादत
أَبَاؤُنَا ۚ فَاتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنْتَ	करते थे? तो फिर हमारे पास आप उस अज़ाब को ले आइए जिस से आप हमें डरा रहे हो अगर आप
مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿١٩﴾ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّن رَّبِّكُمْ	सच्चों में से हो। हूद (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यकीनन तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से
رَجْسٌ وَغَضَبٌ ۚ أَتُجَادِلُونَنِي فِي أَسْمَاءِ	अज़ाब और गज़ब नाज़िल हो चुका। क्या तुम मुझ से झगड़ते हो चन्द नामों के बारे में
سَمِيتُوهَا أَنْتُمْ وَ أَبَاؤُكُمْ مَا نَزَّلَ اللَّهُ	जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख रखे हैं, जिस पर अल्लाह ने कोई
بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ	दलील नहीं उतारी? और इन्तिज़ार करो, यकीनन मैं तुम्हारे साथ इन्तिज़ार
مِّنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿٢٠﴾ فَانجِيْنُهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ	करने वालों में से हूँ। फिर हम ने हूद (अलैहिस्सलाम) को नजात दी और उन लोगों को जो आप के

مِّنَّا وَ قَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا

साथ थे हमारी रहमत से और हम ने उन की जड़ काट दी जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया

وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾ وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا

और वो ईमान वाले नहीं थे। और कौमे समूद की तरफ भेजा उन के भाई सालेह (अलैहिस्सलाम) को।

قَالَ يَوْمَ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَهِ غَيْرُهُ ۖ

सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी कौम! इबादत करो अल्लाह की, तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं है।

قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ

यकीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रोशन मोअजिज़ा आ चुका है। ये अल्लाह की ऊँटनी

لَكُمْ آيَةٌ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ

तुम्हारे लिए मोअजिज़े के तौर पर है, तो उस को छोड़ दो के वो अल्लाह की ज़मीन में खाए

وَلَا تَبْسُوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ أَلِيمٍ ﴿٤٨﴾

और उस को बुराई के साथ मत छुओ, वरना तुम्हें दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा।

وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ عَادٍ

और याद करो जब के अल्लाह ने तुम्हें जानशीन बनाया कौमे आद के बाद

وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِنْ سَهُولِهَا

और तुम्हें ठिकाना दिया ज़मीन में, तुम उस के हमवार मैदानों में

قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا ۖ فَاذْكُرُوا

महल बनाते हो और तुम पहाड़ों को तराश कर मकानात बनाते हो। तो अल्लाह

الْآءِ اللَّهُ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٤٩﴾

की नेअमतों को याद करो और ज़मीन में फसाद फैलाते हुए मत फिरो।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِلَّذِينَ

उन सरदारों ने जिन्होंने ने तकबुर किया आप की कौम में से उन लोगों से कहा जो

اسْتَضَعُّوا لِمَنْ آمَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ

कमज़ोर किए गए थे, उन लोगों से जो उन लोगों में से ईमान लाए थे के क्या तुम ये अक़ीदा रखते हो के

أَن صَالِحًا مَّرْسَلٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ

सालेह अपने रब की तरफ से भेजे हुए पैग़म्बर हैं? उन मोमिनीन ने कहा के यकीनन हम तो उस पर भी ईमान

۱۴۳۵
۸/۱۲

بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٥٥﴾ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي

रखते हैं जिस को दे कर सालेह (अलैहिस्सलाम) भेजे गए हैं। उन लोगों ने कहा जिन्होंने ने बड़ा बनना चाहा यकीनन

أَمْنْتُمْ بِهِ كُفْرُونَ ﴿٥٦﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا

हम तो कुफ्र करते हैं उस के साथ जिस पर तुम ईमान रखते हो। फिर उन्होंने ने ऊँटनी के पैर काट दिए और उन्होंने ने

عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يُصْلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا

सरकशी की अपने रब के हुक्म से और उन्होंने ने कहा के ऐ सालेह! हमारे पास वो अज़ाब ले आइए जिस से तुम हमें डराते हो

إِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٥٧﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ

अगर तुम भेजे हुए पैगम्बरों में से हो। फिर उन को ज़लज़ले ने पकड़ लिया,

فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جُثَيَيْنَ ﴿٥٨﴾ فَتَوَلَّى عَنْهُمْ

फिर वो अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। फिर सालेह (अलैहिस्सलाम) ने उन से मुंह फेर लिया

وَقَالَ يَقُومِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رَسُولَ رَبِّي وَنَحْنُ

और फरमाया ऐ मेरी कौम! यकीनन मैं ने तुम्हें अपने रब का पैगाम पहुँचाया और मैं ने तुम्हारी

لَكُمْ وَلَكِنْ لَا تُحِبُّونَ التَّصْحِيْنَ ﴿٥٩﴾ وَلَوْطَا

खैरखाही की, लेकिन तुम खैरखाही करने वालों से महबबत नहीं रखते थे। और लूत (अलैहिस्सलाम) को भेजा

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ

जब के उन्होंने ने अपनी कौम से फरमाया क्या तुम बेहयाई करते हो, ऐसी बेहयाई जो

بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٦٠﴾ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ

तमाम जहान वालों में से किसी ने तुम से पेहले नहीं की? के मर्दों के पास आते हो

الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُونِ النِّسَاءِ ۖ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ

शहवत के मारे औरतों को छोड़ कर के। बल्के तुम ऐसी कौम हो जो

مُسْرِفُونَ ﴿٦١﴾ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا

हद से तजावुज़ करती हो। और उन की कौम का जवाब नहीं था मगर ये के उन्होंने ने कहा के

أَخْرِجُوهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ يَّتَطَهَّرُونَ ﴿٦٢﴾

उन को निकाल दो अपनी बस्ती से। इस लिए के ये ऐसे लोग हैं जो पाकबाज़ बनना चाहते हैं।

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٦٣﴾

फिर हम ने उन को और उन के घर वालों को नजात दी मगर उन की बीवी, जो हलाक होने वालों में से हो गई।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

और हम ने उन पर पथ्थरों की बारिश बरसाई। फिर आप देखिए के मुजरिमों का अन्जाम

الْجُرِمِينَ ﴿٨٧﴾ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ قَالَ

कैसा हुवा। और मद्यन वालों की तरफ उन के भाई शुऐब (अलैहिस्सलाम) को भेजा। शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنِّ إِلَهِ غَيْرُهُ ۖ قَدْ

ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं। यकीनन

جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ

तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रोशन मोअजिज़ा आ चुका, तो नाप और तोल को पूरा

وَالْهَيْزَانَ وَلَا تُبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا

पूरा दो और लोगों को उन की चीजें कम कर के मत दो और ज़मीन में फसाद

فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۖ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ

मत फैलाओ उस की इस्लाह के बाद। ये तुम्हारे लिए बेहतर है

إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾ وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ

अगर तुम मोमिन हो। और हर रास्ते पर मत

صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ

बैठो के तुम डराओ और रोको अल्लाह के रास्ते से

مَنْ آمَنَ بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ

उन लोगों को जो अल्लाह पर ईमान लाए हैं और तुम उस में कजी तलाश करते हो। और तुम याद करो जब के

كُنْتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمۢ ۖ وَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ

तुम थोड़े थे, फिर अल्लाह ने तुम्हें ज़्यादा किया। और देखो के फसाद फैलाने वालों

عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٩﴾ وَإِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ

का अन्जाम कैसा हुवा? और यकीनन तुम में से एक जमाअत

أَمَنُوا بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا

ईमान लाई उस पर जिस को दे कर मैं भेजा गया हूँ और एक जमाअत ईमान नहीं लाई,

فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿٩٠﴾

तो तुम सब्र करो यहां तक के अल्लाह हमारे दरमियान फैसला कर दे। और वो बेहतरीन फैसला करने वाला है।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ

उन सरदारों ने कहा जो बड़ाई तलब करते थे आप की कौम में से के ऐ शुऐब।

يُشْعِبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنْ قَرِيَّتِنَا

हम तुम्हें और उन लोगों को भी जो तुम्हारे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से निकाल देंगे,

أَوْ لَتَعُودَنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ۖ قَالَ أُولَٰؤُ كُنَّا كَرِهِيْنَ ۝۸

मगर ये के तुम हमारे मज़हब में लौट आओ। शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या अगर्चे हम नापसन्द करते हों?

قَدْ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ

तब तो हम ने अल्लाह पर झूठ बोला अगर हम तुम्हारे मज़हब में लौट जाएं

بَعْدَ إِذْ بَخَّسْنَا اللَّهُ مِنْهَا ۖ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ

इस के बाद के अल्लाह ने हमें उस से नजात दी। और हमारे लिए जाइज़ नहीं है के हम उस में लौट

فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۖ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ

जाएं मगर ये के हमारा रब अल्लाह चाहे। हमारा रब इल्म के ऐतेबार से

شَيْءٍ عِلْمًا ۖ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۖ رَبُّنَا افْتَحَ بَيْنَنَا

हर चीज़ पर वसीअ है। अल्लाह ही पर हम ने तवक्कुल किया। ऐ हमारे रब! तू हमारे दरमियान और हमारी कौम

وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ۝۹ وَقَالَ

के दरमियान इन्साफ के साथ फैसला कर दे और तू सब से अच्छा फैसला करने वाला है। और उन

الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِيَنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا

सरदारों ने कहा जो काफिर थे आप की कौम में से के अगर तुम ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) का इत्तिबा किया

إِنَّكُمْ إِذَا لَخِسرُونَ ۝۱۰ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا

तो यकीनन तुम नुकसान उठाने वाले बन जाओगे। फिर उन्हें ज़लज़ले ने पकड़ लिया, फिर वो अपने

فِي دَارِهِمْ جَثِيْنٍ ۝۱۱ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا

घरों में घुटने के बल पड़े रह गए। वो लोग जिन्होंने ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया

كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا

गोया वो उस में बसे ही नहीं थे। वो लोग जिन्होंने ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया वही

هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ۝۱۲ فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰ قَوْمِ لَقَدْ

खसारा उठाने वाले बन गए। फिर शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने उन से मुंह फेर लिया और फरमाया के ऐ कौम!

أَبْلَغْتُكُمْ رَسُولِ رَبِّي وَ نَصَحْتُ لَكُمْ فَكَيْفَ أَسَى

यकीनन मैं ने तुम्हें अपने रब के पैगामात पहुँचाए और मैं ने तुम्हारी खैरखाही की। फिर मैं कैसे अफसोस

عَلَى قَوْمٍ كَافِرِينَ ۖ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّبِيٍّ

करूँ काफिर कौम पर? और किसी बस्ती में हम ने कोई नबी नहीं भेजा

إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ

मगर हम ने वहां वालों को तकलीफ और सख्ती के ज़रिए पकड़ा, शायद वो

يَضَّرَّعُونَ ۚ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ

आजिजी करें। फिर हम ने बुराई के बदले में भलाई दी

حَتَّىٰ عَفَوْا وَقَالُوا قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ

यहां तक के वो खूब फूले फले और उन्होंने ने कहा के हमारे बाप दादा को भी तकलीफ और खुशी पहुँची थी,

فَأَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۚ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ

फिर अचानक हम ने उन को पकड़ लिया इस हाल में के उन्हें पता नहीं था। और अगर बस्तियों

الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ

वाले ईमान लाते और मुत्तकी बनते, तो हम उन पर आसमान और ज़मीन की बरकात

مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِن كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُم

खोल देते, लेकिन उन्होंने ने झुठलाया, फिर हम ने उन को पकड़ लिया

بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۚ أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُمْ

उन आमात की वजह से जो वो करते थे। क्या ये (मक्का की) बस्तियों वाले मामून हैं इस से के उन के पास

بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِبُونَ ۚ وَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ

हमारा अज़ाब आ जाए रात के वक्त इस हाल में के वो सोए हुए हों? क्या ये बस्तियों वाले इस से

أَن يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا ضَعْفَىٰ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ۚ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ

मामून हैं के उन के पास हमारा अज़ाब आ जाए चाश्त के वक्त इस हाल में के वो खेल रहे हों? क्या फिर वो

اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ۚ

अल्लाह की तदबीर से अमन में हैं? फिर अल्लाह की तदबीर से अमन में नहीं रहेते मगर खसारा उठाने वाले लोग।

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ

क्या हिदायत का बाइस नहीं बनी उन लोगों के लिए जो इस ज़मीन के वारिस होते हैं यहां वालों के

أَهْلَهَا أَنْ تَوْ نَشَاءُ أَصَبْنَهُمْ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنُطِيعُ

बाद ये बात के अगर हम चाहते तो उन्हें मुसीबत पहुँचाते उन के गुनाहों की वजह से? और हम उन के दिलों पर

عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠﴾ تِلْكَ الْقُرَى نَقُصُّ

मुहर लगाते हैं, फिर वो सुन नहीं पाते। ये बस्तियाँ जिन के कुछ किस्से हम

عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِهَا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ

आप के सामने बयान करते हैं। यकीनन उन के पैगम्बर उन के पास

بِالْبَيِّنَاتِ ۚ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ

रोशन मोअजिज़ात ले कर आए। फिर वो ईमान नहीं लाते थे इस वजह से के वो उस से पेहले झुठला चुके थे।

كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ﴿١١﴾

इसी तरह अल्लाह काफिरों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं।

وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ ۚ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ

और हम ने उन में से अक्सर में वफाए अहद नहीं पाया। और यकीनन हम ने उन में से अक्सर को

لَفُسِقِينَ ﴿١٢﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا

नाफरमान पाया। फिर हम ने उन के बाद मूसा (अलैहिस्सलाम) को भेजा अपनी आयात दे कर

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَ مَلَإِيهِ فظَاهَمُوا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

फिरऔन और उस की जमाअत की तरफ, फिर उन्होंने ने उन आयात के साथ जुल्म किया। फिर आप देखिए के फसाद फैलाने

عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٣﴾ وَ قَالَ مُوسَىٰ يَفْرَعُونَ

वालों का अन्जाम कैसा हुवा। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ फिरऔन!

إِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٤﴾ حَقِيقٌ عَلَىٰ أَنْ لَا أَقُولَ

यकीनन मैं रब्बुल आलमीन की तरफ से भेजा हुवा पैगम्बर हूँ। लाइक हूँ के मैं अल्लाह के

عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقُّ ۚ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ

ज़िम्मे न कहूँ सिवाए हक़ बात के। यकीनन मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रोशन मोअजिज़ात ले कर आया हूँ,

فَارْسِلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿١٥﴾ قَالَ إِنْ كُنْتَ جِئْتَ

तो तू मेरे साथ बनी इस्राईल को जाने दे। फिरऔन ने कहा के अगर तू मोअजिज़ा

بِآيَةٍ فَاتِّبِعْ بِهَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿١٦﴾ فَأَلْقَىٰ

लाया है, तो तू उस को पेश कर अगर तू सच्चों में से है। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने

عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ۖ وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا

अपना असा डाला, तो अचानक वो खुला अजदहा बन गया। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपना हाथ गिरेबान से निकाला तो अचानक

هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّظَرَيْنِ ۚ قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ

वो देखने वालों के सामने रोशन हो गया। फिरऔन की कौम के सरदारों ने कहा के

إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ عَلِيمٌ ۚ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ

यकीनन ये माहिर जादूगर है। ये चाहता है के तुम्हें तुम्हारे मुल्क

مِنْ أَرْضِكُمْ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ۚ قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ

से निकाल दे। फिर तुम क्या मश्वरा देते हो? उन्होंने ने कहा के उन को और उन के भाई को मोहलत दीजिए और

وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۚ يَأْتُوكَ بِكُلِّ سِحْرِ

शेहरों में जादूगरों को इकट्ठा करने वालों को भेज दीजिए। के वो आप के पास हर माहिर जादूगर को

عَلِيمٍ ۚ وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا

ले आएंगे। और जादूगर फिरऔन के पास आ गए। उन्होंने ने कहा के यकीनन हमारे लिए

لَاجِرًا إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ۚ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ

उजरत होनी चाहिए अगर हम ग़ालिब हुए। फिरऔन ने कहा के जी हां! और यकीनन तुम

لَبِنَ الْمَقْرَبِينَ ۚ قَالُوا يَمُوسَىٰ إِنَّا أَنْ تُلْقَىٰ وَإِنَّمَا

मुकर्रबीन में से कर दिए जाओगे। जादूगरों ने कहा ऐ मूसा! या आप डालोगे

أَنْ تَكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ ۚ قَالَ الْقَوَاهُ فَلَمَّا أَلْقَوْا

या हम डालें? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम डालो। फिर जब उन्होंने ने डाला

سَحَرُوا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَاءُوا بِسِحْرِ

तो उन्होंने ने लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्होंने ने उन को डराना चाहा और वो भारी जादू को ले कर

عَظِيمٍ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَلْقِ عَصَاهُ

आए थे। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की तरफ वही की के अपना असा डाल दीजिए।

فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۚ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ

तो अचानक वो निगलने लगा उन चीजों को जो वो झूठ बना कर लाए थे। फिर हक़ साबित हो गया और उन का अमल

مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ فَغَلِبُوا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا

बातिल हो गया। वहाँ पर जादूगर मग़लूब हो गए, और वो ज़लील

صَغِيرِينَ ۝ وَالْقَى السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ۝ قَالُوا

हो गए।

और जादूगर सजदे में गिर गए।

और उन्होंने ने

أَمَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ۝

कहा के हम रब्बुल आलमीन पर ईमान ले आए। जो मूसा और हारून (अलैहिमस्सलाम) का रब है।

قَالَ فِرْعَوْنُ أَمَنْتُمْ بِهِ قَبْلَ أَنْ أَدْنَا لَكُمْ

फिरऔन ने कहा के तुम उस पर ईमान ले आए इस से पेहले के मैं तुम्हें इजाज़त दूँ?

إِنَّ هَذَا لَمَكْرٌ مَّكْرَتُهُ فِي الْمَدِينَةِ لَتُخْرِجُوا مِنْهَا

यकीनन ये हीला है जो तुम ने इस शहर में किया है ताके तुम इस शहर से यहाँ वालों को

أَهْلَهَا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ لَا قُطْعَنَ أَيْدِيكُمْ

निकाल दो। फिर अनकरीब तुम्हें मालूम हो जाएगा। मैं तुम्हारे हाथ और पैर

وَأَرْجُلُكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

जानिबे मुखालिफ से काट दूंगा, फिर मैं तुम सब को सूली दूंगा।

قَالُوا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ۝ وَمَا تَنْقُمُ مِنَّا

उन्होंने ने कहा के यकीनन हम अपने रब ही के पास पलट कर जाएंगे। और हमारी तरफ से तुझे बुरी नहीं लगी

إِلَّا أَنْ أَمَّا بِأَيْتِ رَبِّنَا لَمَّا جَاءَتْنَا رَبَّنَا أَفِرْغْ

मगर ये बात के हम अपने रब की आयतों पर ईमान ले आए जब वो हमारे पास आई। ऐ हमारे रब! हम

عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ ۝ وَ قَالَ الْمَلَأُ

पर सब्र उडेल दे और तू हमें मुसलमान होने की हालत में वफात दे। और फिरऔन की कौम के

مِنْ قَوْمٍ فِرْعَوْنُ أَتَدْرُ مُوسَى وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوا

सरदारों ने कहा के तुम छोड़ते हो मूसा और उस की कौम को ताके वो इस मुल्क में फसाद

فِي الْأَرْضِ وَ يَذْرَكَ وَ إِلَهَتِكَ ۝ قَالَ سَنُقَتِّلُ أَبْنَاءَهُمْ

फैलाएं हालांकि वो तुझे और तेरे माबूदों को छोड़ देता है। फिरऔन ने कहा अनकरीब हम उन के बेटों को

وَنَسْتَحْيِ نِسَاءَهُمْ ۝ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ ۝ قَالَ

कत्ल कर देंगे और उन की औरतों को ज़िन्दा रेहने देंगे। और यकीनन हम उन पर ग़ालिब हैं। मूसा (अलैहिस्सलाम)

مُوسَى لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا ۝ إِنَّ

ने अपनी कौम से फरमाया के तुम अल्लाह से मदद मांगो और सब्र करो।

الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ

ये ज़मीन अल्लाह की है, अल्लाह उस का वारिस उसे बनाते हैं जिसे चाहते हैं अपने बन्दों में से।

وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٢٨﴾ قَالُوا أَوْذَيْنَا مِنْ قَبْلُ

और अच्छा अन्जाम मुत्तकियों के लिए है। उन्होंने ने कहा के हमें ईज़ा दी गई इस से पेहले के

أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْنَا ۖ قَالَ عَسَىٰ رَبُّكُمْ

आप हमारे पास आएँ और इस के बाद भी के आप हमारे पास आए। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के

أَنْ يَهْلِكَ عَدُوُّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ

हो सकता है के तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और तुम्हें इस मुल्क में जानशीन बनाए, फिर देखे

كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٢٩﴾ وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ

तुम कैसे अमल करते हो। और यकीनन हम ने आले फिरऔन को पकड़ा

بِالسِّنِينَ وَ نَقَصٍ مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٣٠﴾

कहतसाली और फलों की कमी के ज़रिए ताके वो नसीहत हासिल करें।

فَإِذَا جَاءَتْهُمْ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هَذِهِ ۚ

फिर जब उन्हें खुशहाली पहुँचती, तो वो केहते के ये तो हमारा हक़ है।

وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّتَظَيَّرُوا بِمُوسَىٰ وَمَنْ مَّعَهُ ۖ

और अगर उन्हें मुसीबत पहुँचती तो वो बदफाली लेते मूसा (अलैहिस्सलाम) से और उन लोगों से जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के साथ थे।

إِنَّمَا ظَنُّهُمْ عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ

सुनो! उन ही की नहूसत अल्लाह के पास है, लेकिन उन में से अक्सर

لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣١﴾ وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ

जानते नहीं। और उन्होंने ने कहा के जो मोअजिज़ा भी आप हमारे पास लाओगे

لَتَسْحَرَنَا بِهَا ۚ فَمَا خُنَّ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾ فَأَرْسَلْنَا

ताके तुम उस के ज़रिए हम पर जादू करो, तब भी हम उसे मानने वाले नहीं हैं।

عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ

फिर हम ने उन पर भेजा तूफान और टिड्डी और जुएं और मैडक

وَالدَّمَ آيَاتٍ مُّفَصَّلَاتٍ ۖ فَاسْتَكَبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا

और खून तफसीलवार निशानियाँ। फिर उन्होंने ने बड़ा बनना चाहा और वो मुजरिम

مُجْرِمِينَ ﴿٣٠﴾ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يٰمُوسَىٰ

कौम थी। और जब उन पर अज़ाब वाकेअ हो चुका तो केहने लगे के ऐ मूसा!

ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۖ لَئِنْ كَشَفْتَ

आप हमारे लिए अपने रब से दुआ कीजिए उस अहद की वजह से जो उस ने आप से कर रखा है। के अगर ये अज़ाब तू

عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي

हम से हटा देगा तो हम तुझ पर ईमान ले आएंगे और तेरे साथ बनी इस्राईल को भेज

إِسْرَءِيلَ ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الرِّجْزَ إِلَىٰ أَجَلٍ هُمْ

देंगे। फिर जब हम ने उन से अज़ाब हटा दिया एक वक्त तक जिस को

بَلِغُوهُ إِذَا هُمْ يَنْكُتُونَ ﴿٣١﴾ فَانْتَقَبْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ

वो पहुँचने वाले थे, तो अचानक वो अहदशिकनी करने लगे। फिर हम ने उन से इन्तिकाम लिया, फिर हम ने उन्हें

فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا

गर्क किया समन्दर में इस वजह से के वो हमारी आयतों को झुठलाते थे और उन से

غَافِلِينَ ﴿٣٢﴾ وَآوَرْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ

गाफिल थे। और हम ने वारिस बनाया उस कौम को जिस को कमज़ोर किया जा रहा था

مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا ۖ

ज़मीन के मशरिक व मगरिब में उस ज़मीन का जिस में हम ने बरकतें रखी हैं।

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ

और आप के रब के अच्छे कलिमात पूरे हो कर रहे बनी इस्राईल पर

بِمَا صَبَرُوا ۚ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ

इस वजह से के उन्होंने ने सब्र किया। और हम ने तबाह कर दिया उस को जिसे फिरऔन और उस की कौम

وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ﴿٣٣﴾ وَجَوَرْنَا بِبَنِي

बना रही थी और उन इमारतों को जिन्हें वो ऊँचा बनाते थे। और हम ने बनी इस्राईल

إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلَىٰ قَوْمٍ يَعْكُفُونَ

को समन्दर पार करा दिया, फिर वो आए एक कौम पर जो अपने बुतों पर

عَلَىٰ أَصْنَامٍ لَهُمْ ۖ قَالُوا يٰمُوسَىٰ اجْعَلْ لَّنَا إِلَٰهًا كَمَا

जमे हुए थे। वो केहने लगे ऐ मूसा! आप हमारे लिए भी माबूद मुकर्रर कर दीजिए जैसा के

لَهُمُ الْهَيْئَةُ ۖ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿۳۸﴾ إِنَّ هَؤُلَاءِ

उन के लिए माबूद हैं। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया यकीनन तुम ऐसी कौम हो जो जहालत की बातें करते हो। यकीनन ये

مُتَّبِعُونَ مَا هُمْ فِيهِ وَ بَطُلٌ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿۳۹﴾

लोग जिस चीज़ (दीन) में लगे हैं वो तबाह होने वाला है और बातिल है वो काम जो वो कर रहे हैं।

قَالَ اغْيِرِ اللَّهُ أَبْغِيكُمْ إِلَهًا وَهُوَ فَضْلُكُمْ

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या मैं अल्लाह के अलावा किसी को माबूद के तौर पर तुम्हारे लिए तलाश करूँ हालांकि

عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿۴۰﴾ وَإِذْ أَنْجَيْنَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ

उस ने तुम्हें तमाम जहां वालों पर फज़ीलत दी है। और जब हम ने तुम्हें आले फिरऔन से नजात दी

يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۖ يُقَتِّلُونَ أَبْنَاءَكُمْ

जो तुम्हें बदतरीन सज़ा के ज़रिए तकलीफ देते थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल करते थे

وَ يَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۖ وَفِي ذَلِكَ بَلَاءٌ

और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा रहने देते थे। और उस में तुम्हारे रब की

مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿۴۱﴾ وَوَعَدْنَا مُوسَى ثَلَاثِينَ

तरफ से भारी इमतिहान था। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से तीस रात का

لَيْلَةً ۖ وَاتَّخَذْنَاهَا بِعَشْرِ فِتْنَةٍ مِّمَّاتِ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ

वादा किया और हम ने उन को और दस रातों के ज़रिए पूरा किया, फिर आप के रब का मुक़र्रर किया हुवा वक्त चालीस

لَيْلَةً ۖ وَ قَالَ مُوسَى لِأَخِيهِ هَارُونَ اخْلُفْنِي

रातें पूरी हो गईं। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाई हारून (अलैहिस्सलाम) से फरमाया के तुम

فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿۴۲﴾

मेरे जानशीन बन कर रहो मेरी कौम में और इस्लाह करना और फसाद फैलाने वालों के रास्ते पर मत चलना।

وَلَمَّا جَاءَ مُوسَى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ ۖ قَالَ

और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) आए हमारे वक्ते मुक़र्ररा पर और उन के रब ने उन से कलाम किया तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ

رَبِّ ارْنِي ۖ أَنْظُرْ إِلَيْكَ ۖ قَالَ لَنْ تَرَانِي وَلَكِنْ

मेरे रब! आप मुझे दिखाइए के मैं आप की तरफ देखूँ। अल्लाह ने फरमाया के आप हरगिज़ मुझे देख नहीं सकते, लेकिन आप

انْظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ

निगाह कीजिए पहाड़ की तरफ, फिर अगर वो अपनी जगह पर ठेहरा रहे तो अनक़रीब आप

تَرَبُّنِي ۚ فَلَمَّا بَلَغَ رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ

मुझे देखोगे। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) के रब ने पहाड़ पर तजल्ली फरमाई तो उसे रेज़ा रेज़ा कर दिया और मूसा

مُوسَى صَعِقًا ۚ فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ سُبْحَنكَ ثُبَّتْ

(अलैहिस्सलाम) बेहोश हो कर गिर गए। फिर जब होश में आए तो केहने लगे आप पाक हैं, मैं आप की

إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ يُمُوسَىٰ

तरफ तौबा करता हूँ और मैं सब से पेहले ईमान लाने वाला हूँ। अल्लाह ने फरमाया के ऐ मूसा!

إِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسَالَتِي وَبِكَلَامِي ۚ

मैं ने आप को मुमताज़ किया तमाम इन्सानों से अपने पैग़ामात दे कर और मेरी हमकलामी के ज़रिए।

فَخُذْ مَا آتَيْتُكَ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝ وَكُتِبَ لَهُ

इस लिए आप लीजिए उसे जो मैं ने आप को दिया और आप शुक्रगुज़ारों में से रहिए। और हम ने उन्हें

فِي الْأَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا

तखतियों में हर चीज़ की नसीहत और तफसील हर चीज़ की

لِكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخَذَهَا بِقُوَّةٍ وَأَمَرَ قَوْمَكَ بِأَخْذِهَا

लिख कर दी थी। फिर तुम उस को मज़बूत पकड़ लो और अपनी कौम को हुक्म दो के उस के अच्छे अहकामात पर

بِأَحْسَنِهَا ۚ سَأُورِيكُمْ دَارَ الْفَاسِقِينَ ۝ سَاصِرُفٌ

अमल करें। अनकरीब मैं तुम्हें नाफरमानों का घर दिखाऊँगा। मैं अनकरीब मेरी आयतों (के समझने)

عَنْ آيَاتِي الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ

से हटा दूँगा उन को जो ज़मीन में नाहक़ तकबुर करते हैं।

وَأَنْ يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ لَا يُؤْمِنُوا بِهَا ۚ وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ

और अगर वो तमाम मोअजिज़ात भी देख लें तब भी वो ईमान न लावें। और अगर वो हिदायत के रास्ते

الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۚ وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ

को देखें तो उस को रास्ता न बनावें। और अगर वो सरकशी के रास्ते को देखें

يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا

तो उसे रास्ता बना लें। ये इस वजह से के उन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया और वो

عَنْهَا غَفِلِينَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ

उस से ग़ाफिल थे। और वो लोग जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया और आखिरत के मिलने को

الْآخِرَةِ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۖ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا

झुठलाया उन के आमाल हब्त हो गए। उन्हें सज़ा नहीं दी जाएगी मगर

مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٧﴾ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِنْ بَعْدِهِ

उन्ही कामों की जो वो करते थे। और मूसा (अलैहिस्सलाम) की कौम ने उन के जाने के बाद

مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَهُ خُورٌ ۚ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ

अपने ज़ेवरात से बछड़े का एक जिस्म बनाया जिस की बैल जैसी आवाज़ थी। क्या वो समझते नहीं थे के

لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۚ اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا

वो उन से कलाम नहीं कर सकता और उन को रास्ता नहीं दिखा सकता? उन्होंने ने उस को बना लिया इस हाल में के वो

ظَالِمِينَ ﴿١٣٨﴾ وَلَمَّا سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ

शिरक कर रहे थे। और जब वो नादिम हुए और उन्होंने ने समझा के वो

قَدْ ضَلُّوا ۚ قَالُوا لَئِنْ لَمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا

गुमराह हो गए, तो उन्होंने ने कहा के अगर हम पर हमारा रब रहम नहीं करेगा और हमारी मग़फिरत नहीं करेगा

لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿١٣٩﴾ وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ

तो हम ज़रूर खसारा उठाने वाले बन जाएंगे। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) वापस लौटे

إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي

अपनी कौम की तरफ गुस्से में अफसोस करते हुए, फरमाने लगे के तुम ने मेरे पीछे मेरे जाने के बाद

مِنْ بَعْدِي ۚ أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَالْقَىٰ الْأَلْوَاخَ

बुरी जानशीनी की। तुम ने अपने रब के हुक्म से जल्दी क्यूं की? और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने तख्तियों को डाला

وَآخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ ۚ قَالَ ابْنَ أُمِّ

और अपने भाई का सर पकड़ा, उस को अपनी तरफ खींच रहे थे। हारून (अलैहिस्सलाम) अर्ज करने लगे ऐ मेरी माँ

إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضَعُّوْنِي وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي ۚ

के बेटे! यकीनन इस कौम ने मुझे कमज़ोर समझा और करीब थे के मुझे क़त्ल कर देते।

فَلَا تُشِيتْ بِبِ الْأَعْدَاءِ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ

इस लिए आप मुझ पर दुश्मनों को न हंसाइए और मुझे मुशरिक कौम के साथ

الظَّالِمِينَ ﴿١٤٠﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِإِخْوِي وَأَدْخِلْنَا

न कीजिए। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! मेरी और मेरे भाई की मग़फिरत फरमा और तू हमें

فِي رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ﴿١٥٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ

अपनी रहमत में दाखिल कर दे। और तू अरहमुरीहिमीन है। यकीनन वो लोग

اتَّخَذُوا الْجُلَّ سَيِّئًا لَهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذَلَّةٌ

जिन्होंने ने बछड़े को बनाया था, अनकरीब उन्हें उन के रब की तरफ से गज़ब पहुँचेगा और दुन्यवी

فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٥﴾

जिन्दगी में ज़िल्लत पहुँचेगा। और इसी तरह हम झूठ गढ़ने वालों को सज़ा देते हैं।

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا وَأَمْنُوا ۖ

और वो लोग जिन्होंने ने बुरे काम किए, फिर उस के बाद तौबा की और ईमान लाए।

إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٥٦﴾ وَلَمَّا سَكَتَ

यकीनन तेरा रब उस के बाद अलबत्ता बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है। और जब मूसा

عَنْ مُوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ وَفِي نُحُوتِهَا

(अलैहिस्सलाम) का गुस्सा ठन्डा हो गया तो आप ने तख्तियों को लिया। और उस के मज़मून में

هُدًى وَرَحْمَةً لِّلَّذِينَ هُمْ لِربِّهِمْ يَرْهَبُونَ ﴿١٥٧﴾

हिदायत और रहमत थी उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं।

وَاخْتَارَ مُوسَى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا رِّبِّيَّاتِنَا ۖ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी कौम के सत्तर आदमियों को हमारे वक्ते मुकर्ररा के लिए मुन्तखब किया।

فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ

फिर जब उन को ज़लज़ले ने पकड़ लिया, तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया के ऐ मेरे रब! अगर तू चाहता

أَهْلَكْتَهُمْ مِّن قَبْلُ وَإِيَّايَ ۖ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ

तो इन्हें भी हलाक करता इस से पेहले और मुझे भी। क्या तू हमें हलाक करता है उस हरकत की वजह से जो हम

السُّفَهَاءُ مِنَّا ۚ إِنَّ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ ۖ تُضِلُّ بِهَا مَن

में से बेवकूफों ने की है? ये तो सिर्फ तेरा इमतिहान है। इस के ज़रिए तू गुमराह करता है

تَشَاءُ وَتَهْدِي مَن تَشَاءُ ۖ أَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا

जिसे चाहता है और हिदायत देता है जिसे चाहता है। तू हमारा कारसाज़ है, तू हमारी मग़फिरत कर दे

وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ﴿١٥٨﴾ وَاصْبِرْ لَنَا

और हम पर रहम फरमा, तू बेहतरीन मग़फिरत करने वाला है। और हमारे लिए

فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُنَا

इस दुनिया में भलाई लिख दे और आखिरत में भी, यकीनन हम ने

إِلَيْكَ ۖ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۗ

आप की तरफ खजूअ किया। अल्लाह ने फरमाया के अपना अज़ाब मैं उसे पहुँचाऊँगा जिसे मैं चाहूँगा।

وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَاكُنْهَا لِلَّذِينَ

और मेरी रहमत हर चीज़ पर वसीअ है। अनकरीब मैं उसे लिखूँगा उन लोगों के लिए

يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا

जो डरते हैं और ज़कात देते हैं और जो हमारी आयतों पर ईमान

يُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ

रखते हैं। वो लोग जो इस रसूल नबीए उम्मी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इत्तिबा करते

الرَّاقِيَ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ

हैं जिसे वो अपने पास तौरात और इन्जील में लिखा

فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ ۚ يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ

हुवा पाते हैं, जो उन्हें नेक कामों का हुक्म देते हैं और उन्हें बुरे कामों से

عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمْ

रोकते हैं और उन के लिए पाकीज़ा चीज़ें हलाल करते हैं और उन के लिए बुरी चीज़ें

الْخَبِيثَاتِ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ

हराम करते हैं और उन से उन के भारी बोझ को हटाते हैं (जो उन पर लादे गए थे) और वो तौक जो

عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّوْهُ وَنَصَرُوهُ

उन के ऊपर थे। फिर वो लोग जो नबीए उम्मी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान लाए और जिन्होंने ने उन की हिमायत की

وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنْزِلَ مَعَهُ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ

और उन की नुसरत की और उस नूर के पीछे चले जो उन के साथ उतारा गया, यही लोग फलाह

الْمُفْلِحُونَ ﴿٥٢﴾ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ

पाने वाले हैं। आप फरमा दीजिए ए इन्सानो! यकीनन मैं तुम सब की तरफ अल्लाह

إِلَيْكُمْ جَمِيعًا ۚ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

का भेजा हुआ पैग़म्बर हूँ, उस अल्लाह का जिस के लिए आसमानों और ज़मीन की सलतनत है।

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَ يُمِيتُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ

जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िन्दगी और मौत देता है। फिर तुम ईमान लाओ अल्लाह पर

وَ رَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَتِهِ

और उस के रसूल नबीए उम्मी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस के कलिमात पर

وَ اتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٨﴾ وَ مِنْ قَوْمِ مُوسَى

और तुम उसी का इत्तिबा करो ताके तुम हिदायत पाओ। और मूसा (अलैहिस्सलाम) की कौम में से एक

أُمَّةٌ يَهْتَدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٩﴾ وَ قَطَّعْنَهُمْ

जमाअत थी जो हक की रहनुमाई करती थी और उसी के साथ इन्साफ करती थी। और हम

اِثْنَتَى عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۖ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ

ने उन को बारा कबीले बनाया था। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की तरफ वही की

إِذِ اسْتَسْقَاهُ قَوْمُهُ أَنْ اَصْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرِ

जब के मूसा (अलैहिस्सलाम) से उन की कौम ने पानी मांगा, (वही की) के आप अपना असा पथ्थर पर मारिए।

فَانْبَجَسَتْ مِنْهُ اِثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ

फिर उस में से बारा चश्मे फूट पड़े। यकीनन सब लोगों ने

كُلُّ أَنْاسٍ مَّشْرَبُهُمْ ۖ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ

अपने पीने की जगह को मालूम कर लिया। और हम ने उन पर बादलों का साया किया

وَ أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّٰنَ وَ السَّلْوَٰى ۖ كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ

और हम ने उन पर मन्न और सलवा उतारा। के तुम खाओ उन उम्दा चीज़ों में से जो हम ने

مَا رَزَقْنَاكُمْ ۖ وَ مَا ظَلَمُونَا وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ

तुम्हें रोज़ी के तौर पर दीं। और उन्होंने ने हम पर जुल्म नहीं किया, लेकिन वो खुद अपनी जानों पर

يَظْلِمُونَ ﴿١٦٠﴾ وَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ اسْكُنُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ

जुल्म करते थे। और जब उन से कहा गया के रहो इस बस्ती में

وَ كُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَ قُولُوا حِطَّةٌ وَ ادْخُلُوا الْبَابَ

और इस में से खाओ जहां तुम चाहो और तुम कहो “حِطَّةٌ” और तुम दरवाजे से सजदा करते हुए

سُجَّدًا تَعْفِرُ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ ۖ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٦١﴾

दाखिल हो जाओ, हम तुम्हारे लिए तुम्हारी खताएं बख्श देंगे। अनकरीब हम नेकी करने वालों को मज़ीद देंगे।

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ

फिर उन में से ज़ालिमों ने बात को बदल दिया उस के अलावा से जो उन से कही

لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا

गई थी, इस लिए हम ने उन पर आसमान से अज़ाब भेजा इस वजह से के वो

يَظْلِمُونَ ۖ وَسَأَلَهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ

ज़ालिम थे। और आप उन से सवाल कीजिए उस बस्ती के मुतअल्लिक जो समन्दर

حَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ

के किनारे पर थी। जब वो सनीचर के बारे में ज़्यादती करते थे

إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَعًا وَيَوْمَ

इस लिए के उन के पास उन की मछलियाँ आती थीं सनीचर के दिन पानी पर तैरती हुई और जिस दिन

لَا يَسْبِثُونَ ۚ لَا تَأْتِيهِمْ ۚ كَذَلِكَ ۚ نَبُؤُهُمْ

सनीचर नहीं होता था तो मछलियाँ उन के पास नहीं आती थीं। इसी तरह हम उन को आजमाते थे

بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۖ وَإِذْ قَالَتْ أُمَةٌ مِّنْهُمْ

इस वजह से के वो फासिक थे। और जब उन में से एक जमाअत ने कहा के

لِمَ تَعْطُونَ قَوْمًا ۚ إِيَّاهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ

तुम क्यों नसीहत करते हो ऐसी कौम को जिन को अल्लाह हलाक करने वाले हैं या उन को सख्त अज़ाब देने वाले हैं?

عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعذِرَةٌ إِلَىٰ رَبِّكُمْ ۖ وَلَعَلَّهُمْ

उन्होंने ने कहा के (हम नसीहत करते हैं) तुम्हारे रब की तरफ उज़्र पेश करने के लिए और इस लिए के

يَتَّقُونَ ۖ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ ۚ أَنجَيْنَا الَّذِينَ

शायद वो डरें। फिर जब उन्होंने ने भुला दिया उस को जिस के ज़रिए उन को नसीहत की गई थी तो हम ने नजात दी

يَنَّهُوْنَ عَنِ السُّوءِ ۖ وَآخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا

उन को जो बुराई से रोकते थे और हम ने पकड़ लिया उन को जो ज़ालिम थे

بِعَذَابٍ ۖ بَئِيسٍ ۖ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۖ

सख्त अज़ाब में इस वजह से के वो नाफरमान थे।

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً

फिर जब उन्होंने ने सरकशी की उस से जिस से उन्हें मना किया गया था, तो हम ने उन से कहा के तुम ज़लील

خُسَيْنٌ ۝ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لِيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ

बन्दर बन जाओ। और जब आप के रब ने ऐलान किया के वो उन पर क़यामत के

إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ مَنْ يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۖ

दिन तक ज़रूर भेजता रहेगा ऐसे शख्स को जो उन्हें बदतरिन सज़ा से तकलीफ दे।

إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ۖ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

यकीनन तेरा रब अलबत्ता जल्द सज़ा देने वाला है। और यकीनन वो बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

وَقَطَّعْنَهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَمًا ۖ مِنْهُمْ الصَّالِحُونَ

और हम ने उन्हें ज़मीन में अलग अलग उम्मतें बनाया। उन में से कुछ नेक हैं

وَمِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ ۖ وَبَلَّوْنَهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ

और उन में से कुछ उस से कमतर हैं। और हम ने उन्हें आजमाया नेअमतों और निकमतों (अज़ाब) के ज़रिए

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ

शायद वो बाज़ आए। फिर उन के बाद नाखलफ आए

وَرِثُوا الْكِتَابَ يَأْخُذُونَ عَرَضَ هَذَا الْأَدْنَىٰ

जो किताब के वारिस हुए जो इस ज़लील दुन्या का सामान लेते थे

وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَإِنْ يَأْتِهِمْ عَرَضٌ مِثْلُهُ

और केहते थे के अनक़रीब हमारी तो मग़फ़िरत हो जाएगी। और अगर उन के पास उसी जैसा सामान आता

يَأْخُذُوهُ ۖ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِيثَاقُ الْكِتَابِ

तो उस को भी ले लेते। क्या उन से किताब में अहद नहीं लिया गया था

أَنْ لَا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ ۚ

के वो अल्लाह पर सिवाए हक के नहीं कहेंगे और उन्होंने ने पढ़ लिया था उसे जो उस किताब में है।

وَالدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۖ

और आखिरत वाला घर बेहतर है उन के लिए जो मुत्तक़ी हैं।

أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَالَّذِينَ يُمَسِّكُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا

क्या फिर तुम अक्ल नहीं रखते? और वो लोग जो किताब को मज़बूती से पकड़ते हैं और नमाज़ काइम

الصَّلَاةَ ۖ إِنَّا لَا نَضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ۝ وَإِذْ

करते हैं। यकीनन हम इस्लाह करने वालों का अज़्र ज़ायेअ नहीं करेंगे। और जब

تَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ

हम ने उन के ऊपर पहाड़ को उठाया गोया के वो सायबान है और उन्होंने ने समझा के वो

وَاقِعٌ بِهِمْ ۚ خُذُوا مَا آتَيْنَكُم بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا

उन पर गिरने वाला है। (कहा के) मजबूती से पकड़ो उसे जो हम ने तुम्हें दिया है और याद करो

مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٤١﴾ وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ

उस को जो उस में है ताके तुम मुत्तकी बनो। और जब के तुम्हारे रब ने

مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ

बनू आदम की जुरीयत को उन की पुश्तों से निकाल कर अहद लिया और उन्हें अपनी जानों

عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ ۚ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۖ شَهِدْنَا ۚ

के खिलाफ गवाह बनाया के क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? उन्होंने ने कहा क्यूं नहीं! हम गवाही देते हैं।

أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غْفِلِينَ ﴿١٤٢﴾

(ये इस लिए किया) के कहीं तुम क़यामत के दिन यूँ कहो के हम तो इस से बेखबर (गाफिल) थे।

أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا

या तुम कहीं यूँ कहो के हमारे बाप दादा ने इस से पेहले शिर्क किया था और हम

ذُرِّيَّةٌ مِّنْ بَعْدِهِمْ ۚ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ

तो उन के बाद आने वाली औलाद थे। क्या फिर आप हमें हलाक करते हैं उस हरकत की वजह से जो

الْبَاطِلُونَ ﴿١٤٣﴾ وَكَذَلِكَ نَقُصُّ الْأَيَاتِ وَلَعَلَّهُمْ

बातिलपरस्तों ने की? और इसी तरह आयात को हम तफसील से बयान करते हैं शायद के वो

يَرْجِعُونَ ﴿١٤٤﴾ وَاسْأَلْ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِي آتَيْنَهُ

बाज़ आएं। और आप उन के सामने उस शख्स का किस्सा तिलावत कीजिए जिसे हम ने अपनी आयतें

إِيْتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاتَّبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ

दी थीं, फिर वो उन से सालिम निकल गया और शैतान उस के पीछे पड़ा, फिर वो

مِنَ الْغَوِينَ ﴿١٤٥﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَكِنَّهُ

गुमराहों में से हो गया। और अगर हम चाहते तो उसे उन आयात की वजह से ऊपर उठाते, लेकिन वो

أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ ۚ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ

हमेशा नीचे ज़मीन की तरफ गया और अपनी ख्वाहिश के पीछे चलता रहा। तो उस का हाल कुत्ते के हाल

﴿١٤١﴾

معانقهم على الأثرين ۱۲

الْكَلْبُ ۚ إِنَّ تَحْمِلَ عَلَيْهِ يَلْهَثُ أَوْ تَتْرُكَهُ

की तरह है के अगर तुम उस पर बोझ लादो तब भी हांपेगा या उस को छोड़ दो तब भी वो

يَلْهَثُ ۚ ذَلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ

हांपेगा। ये उस कौम का हाल है जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया।

فَاقْصِصْ الْقِصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٥٦﴾ سَاءَ

तो आप ये किस्से बयान कीजिए ताके वो सोचें। बुरी

مَثَلًا ۚ الْقَوْمُ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَ أَنْفُسَهُمْ

मिसाल है उस कौम की जिस ने हमारी आयतों को झुठलाया और जो अपनी

كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿٥٧﴾ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِىٰ ۚ

जानों पर जुल्म करते थे। जिस को अल्लाह हिदायत दे वो हिदायतयाफता है।

وَمَنْ يُضِلِّ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٥٨﴾ وَلَقَدْ

और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे तो वही लोग खसारा उठाने वाले हैं। और यकीनन

دَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۚ

हम ने जहन्म के लिए बहोत से जिन्नात और इन्सानों को पैदा किया।

لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا ۚ وَلَهُمْ أَعْيُنٌ

उन के पास दिल हैं जिस से वो समझते नहीं। और उन के पास आँखें तो हैं (लेकिन)

لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا ۚ وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ

उन से वो देखते नहीं। और उन के पास कान तो हैं (लेकिन) उन से वो सुनते नहीं।

أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ

ये चौपाओं की तरह हैं, बल्के उन से भी ज़्यादा गुमराह हैं। यही लोग

الْغٰفِلُونَ ﴿٥٩﴾ وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ

गाफिल हैं। और अल्लाह के लिए अच्छे अच्छे नाम हैं, तो अल्लाह को उन नामों के ज़रिए

بِهَآءِ ۚ وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِيْٓ أَسْمَآئِهِۦ ۚ

पुकारो। और छोड़ दो उन लोगों को जो अल्लाह के नामों में टेढ़ा रास्ता इखतियार करते हैं।

سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾ وَمِمَّنْ خَلَقْنَا

अनकरीब उन्हें सज़ा दी जाएगी उस हरकत की जो वो कर रहे हैं। और हमारी मखलूक में से

أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٨١﴾

एक जमाअत है जो हक की रहनुमाई करती है और उसी के ज़रिए इन्साफ करती है।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ

और वो लोग जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया अनकरीब हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता पकड़ेंगे

مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٢﴾ وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي

इस तरीके से के उन्हें पता न चले। और मैं उन को मोहलत दूंगा। यकीनन मेरी तदबीर

مَتَيْنٌ ﴿١٨٣﴾ أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي مَا بَصَحَتْ بِهِمْ

मज़बूत है। क्या उन्होंने ने सोचा नहीं के उन के नबी को जुनून

مِّنْ جَنَّةٍ ۚ إِنَّ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١٨٤﴾ أَوَلَمْ يَنْظُرُوا

नहीं है? ये तो साफ साफ डराने वाले हैं। क्या उन्होंने ने देखा नहीं

فِي مَلَكَوَتِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ

आसमानों और ज़मीन की सलतनत में और उन चीज़ों में जो अल्लाह ने पैदा

مِنْ شَيْءٍ ۚ وَأَنْ عَسَى أَنْ يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ إِلَيْهِمْ

की, और (न देखा) ये के हो सकता है के उन की आखिरी मुदत करीब आ चुकी हो

فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٥﴾ مَنْ يُضِلِلْ

फिर उस के बाद किस चीज़ पर वो ईमान लाएंगे? जिस को अल्लाह गुमराह

اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ

कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। और अल्लाह उन्हें उन की सरकशी में सरगरदाँ

يَعْمَهُونَ ﴿١٨٦﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ

छोड़ देते हैं। वो आप से सवाल करते हैं क़यामत के मुतअल्लिक के उस के वाकेअ होने का वक्त

مُرْسَمًا ۚ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي ۚ لَا يُجَلِّيهَا

कब है? आप फरमा दीजिए के उस का इल्म तो सिर्फ मेरे रब के पास है। उसे उस के वक्त पर

لَوْفَتِهَا إِلَّا هُوَ ۚ ثَقُلَتْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ

ज़ाहिर नहीं करेगा मगर वही। क़यामत बड़ी भारी चीज़ है आसमानों और ज़मीन में।

لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً ۚ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۚ

वो तुम्हारे पास नहीं आएगी मगर अचानक। वो आप से सवाल करते हैं गोया आप क़यामत के बारे में जानते हैं।

قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ

आप फरमा दीजिए के उस का इल्म तो सिर्फ अल्लाह के पास है, लेकिन लोगों में से अक्सर जानते

لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٧٤﴾ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا

नहीं। आप फरमा दीजिए के मैं अपनी जान के लिए नफा और ज़रर का मालिक नहीं हूँ

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۖ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبِ لَا سَتَكُنْتُ

मगर वही जो अल्लाह चाहे। और अगर मैं ग़ैब जानता होता तो मैं खैर ज़्यादा

مِنَ الْخَيْرِ ۖ وَمَا مَسْنِيَ السُّوءُ ۖ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ

तलब कर लेता और मुझे कोई तकलीफ न पहुँचती। मैं तो सिर्फ डराने वाला

وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١٧٥﴾ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ

और बशारत देने वाला हूँ ऐसी कौम के लिए जो ईमान लाती है। वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें पैदा किया है

مِّنْ نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ

एक जान से (आदम अलैहिस्सलाम से) और उसी से उन की बीवी को बनाया ताके वो उन की तरफ सुकून

إِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيًّا فَبَرَّتْ

हासिल करे। फिर जब (आदम अलैहिस्सलाम) ने उन से सोहबत की तो वो हामिला हो गई हलके हमल से, फिर वो उस को ले

بِهِ ۚ فَلَمَّا أَثْقَلَتْ دَعَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا

कर चलती रही। फिर जब वो बोझिल हुई तो दोनों ने अल्लाह से अपने रब से दुआ की के अगर तू हमें नेक

صَالِحًا لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٧٦﴾ فَلَمَّا أَتَاهُمَا

औलाद देगा तो हम शुक्र अदा करने वालों में से बन जाएंगे। फिर जब अल्लाह ने उन्हें सालेह औलाद दी

صَالِحًا جَعَلَ لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا ۚ فَتَعَلَّى

तो वो अल्लाह के लिए शरीक ठेहराने लगे उस में जो अल्लाह ने उन्हें दिया। तो अल्लाह बरतर है उन चीजों से जिस

اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٧٧﴾ أَيْشُرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ

को वो शरीक ठेहरा रहे हैं। क्या वो शरीक ठेहराते हैं उन चीजों को जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकती,

شَيْئًا وَهُمْ يُخْلِقُونَ ﴿١٧٨﴾ وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا

बल्के वो खुद ही मखलूक हैं। और वो उन की मदद की ताकत नहीं रखते

وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ﴿١٧٩﴾ وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى

बल्के वो खुद अपनी मदद भी नहीं कर सकते। और अगर आप उन्हें बुलाएं हिदायत की

الْهُدَى لَا يَتَّبِعُوكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ

तरफ तो वो आप के पीछे नहीं चलेंगे। तुम पर बराबर है चाहे तुम उन को पुकारो

أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ﴿٩٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ

या तुम चुप रहो। यकीनन जिन को तुम पुकारते हो अल्लाह के

اللَّهِ عِبَادٌ أََمْثَالُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ

अलावा वो तुम्हारे जैसे बन्दे हैं, फिर तुम उन्हें पुकारो, तो उन्हें चाहिए के वो तुम्हें जवाब दें

إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩٣﴾ أَلَهُمْ آرْجُلٌ يَمْشُونَ

अगर तुम सच्चे हो। क्या उन के पैर हैं जिन से वो चलते

بِهَآءِ أَمْ لَهُمْ آيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَآءِ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ

हैं? या उन के हाथ हैं जिन से वो पकड़ते हैं? या उन की आँखें हैं जिन से

يُبْصِرُونَ بِهَآءِ أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَآءِ قُلْ

वो देखते हैं? या उन के कान हैं जिन से वो सुन सकते हैं? आप फरमा दीजिए के

ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنْظَرُونَ ﴿٩٤﴾

तुम अपने शुरका को पुकारो, फिर तुम मेरे खिलाफ मक्र करो, फिर मुझे मोहलत भी मत दो।

إِنَّ وَلِيََّ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى

यकीनन मेरा कारसाज़ वो अल्लाह है जिस ने ये किताब उतारी। और वो नेक लोगों का

الصَّالِحِينَ ﴿٩٥﴾ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ

वाली है। और जिन को तुम अल्लाह के अलावा पुकारते हो

لَا يَسْتَظِيلُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ﴿٩٦﴾

वो तुम्हारी नुसरत की ताकत नहीं रखते और न ही वो अपने आप की मदद कर सकते हैं।

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَسْعَوْا وَتَرْهُمْ

और अगर आप उन्हें बुलाएं हिदायत की तरफ तो वो सुनते भी नहीं। और आप उन्हें देखोगे

يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿٩٧﴾ خُذِ الْعَفْوَ

के वो आप की तरफ देख रहे हैं हालांकि वो देख नहीं पाते। आप मुआफी को लीजिए

وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ﴿٩٨﴾ وَإِمَّا

और नेकी का हुक्म दीजिए और जाहिलों से पैराज़ कीजिए। और अगर

يَنْزَعُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ

आप को शैतान की तरफ से कोई वसवसा आए तो अल्लाह की पनाह तलब कीजिए। यकीनन वो

سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَافٌ

सुनने वाला, इल्म वाला है। यकीनन वो जो मुत्तकी हैं जब उन्हें शैतान की तरफ से

مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُبْصِرُونَ ۝

कोई वसवसा पहुँचता है, तो वो ज़िक्र (याद) में लग जाते हैं, फिर उसी वक्त उन्हें बसीरत मिल जाती है।

وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ۝

और उन के भाई उन्हें खींच रहे हैं सरकशी में, फिर वो कोताही नहीं करते।

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۖ

और जब उन के पास आप का कोई मोअजिज़ा नहीं लाते तो केहते हैं के तुम कोई मोअजिज़ा चुन कर क्यूँ नहीं लाए?

قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰ إِلَىٰ مِنْ رَبِّي ۖ هَذَا

आप फरमा दीजिए के मैं तो सिर्फ उस के पीछे चलता हूँ जो मेरी तरफ मेरे रब की तरफ से वही की जाती है। ये

بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ

तुम्हारे रब की तरफ से बसीरतें हैं और हिदायत और रहमत है ऐसी कौम के लिए जो

يُؤْمِنُونَ ۝ وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ

ईमान लाती है। और जब कुरआन पढ़ा जाए तो सब उस की तरफ कान लगाओ

وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَادْكُرْ رَبَّكَ

और खामोशी इखतियार करो ताके तुम पर रहम किया जाए। और आप अपने रब को याद कीजिए

فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ

अपने दिल में आजिजी के साथ और डरते डरते और आवाज़ बुलन्द किए बगैर

بِالْعُدُوِّ وَالْأَصَالِ وَلَا تَكُن مِّنَ الْغَافِلِينَ ۝

सुबह व शाम और आप ग़ाफिलों में से न बनें।

إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ

यकीनन वो फरिश्ते जो तेरे तब के पास हैं वो अल्लाह की इबादत से तकबुर

عَنْ عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ۝

नहीं करते, बल्के वो उस की तस्बीह करते हैं और उसी को सज्दा करते हैं।

رُوعَاتُهَا ۱۰

(۸) سُورَةُ الْأَنْفَالِ مَكِّيَّةٌ (۸۸)

آيَاتُهَا ۷۵

और १० सूकूअ हैं

सूरह अन्फाल मदीना में नाज़िल हुई

उस में ७५ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ ۖ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ

ये आप से सवाल करते हैं अमवाले ग़नीमत के मुतअल्लिक। आप फरमा दीजिए के अमवाले ग़नीमत अल्लाह और रसूल के लिए हैं।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۖ وَأَطِيعُوا اللَّهَ

तो अल्लाह से डरो और आपस के तअल्लुकात उस्तुवार कर लो। और इताअत करो अल्लाह की

وَرَسُولَهُ ۚ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ

और उस के रसूल की अगर तुम ईमान वाले हो। ईमान वाले सिर्फ वही

الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تَلَيَّتْ

हैं के जब अल्लाह को याद किया जाए तो उन के दिल हिल जाते हैं और जब उन पर अल्लाह की आयतें

عَلَيْهِمْ آيَةٌ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ

तिलावत की जाती हैं तो ये आयतें उन का ईमान बढ़ा देती हैं और वो अपने रब पर तवक्कुल

يَتَوَكَّلُونَ ۚ ۝ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ

करते हैं। जो नमाज़ काइम करते हैं और उन चीज़ों में से जो हम ने खाने के लिए उन्हें दी

يُنْفِقُونَ ۝ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَهُمْ

खर्च करते हैं। यही हकीकी मोमिन हैं। उन के लिए

دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝

उन के रब के पास दरजात हैं और मग़फ़िरत है और इज़्ज़त वाली रोज़ी है।

كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۚ وَإِنَّ فَرِيقًا

जैसा के आप को आप के रब ने आप के घर से हक़ की खातिर निकाला। और यकीनन ईमान वालों की एक

مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَرِهُونَ ۝ يُجَادِلُونَكَ

जमाअत अलबत्ता नापसन्द कर रही थी। वो आप से झगड़ रहे थे

فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ إِلَى الْمَوْتِ

हक़ के बारे में इस के बाद के वो वाज़ेह हो चुका, गोया के वो हांके जा रहे थे मौत की तरफ

وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۖ وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى

इस हाल में के वो उसे देख रहे हों। और जब तुम से अल्लाह वादा कर रहा था दो जमाअतों में से एक का

الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ

के यकीनन एक तुम्हारे लिए है और तुम चाह रहे थे के (खतरे के) कांटे वाला न हो

الشُّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُحِقَّ

वो जमाअत तुम्हारे लिए हो जाए और अल्लाह चाहते थे के हक को अपने कलिमात के ज़रिए

الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَ يَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِينَ ۚ

हक साबित करे और काफिरों की जड़ काट दे।

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۝

ताके वो हक को हक साबित करे और बातिल को बातिल बनाए अगर्चे मुजरिमीन नापसन्द करें।

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ

जब के तुम अपने रब से मदद तलब कर रहे थे, तो उस ने तुम्हारी दुआ कबूल की

أَنِّي مُبِدِّكُمْ بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ۝

के मैं लगातार आने वाले एक हजार फरिश्तों के ज़रिए तुम्हारी मदद करूंगा।

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ ۚ

और अल्लाह ने उस को नहीं बनाया मगर बशारत और इस लिए ताके उस से तुम्हारे दिल मुतमइन हों।

وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ

और नुसरत नहीं है मगर अल्लाह ही की तरफ से। यकीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है,

حَكِيمٌ ۝ إِذْ يُغَشِّيكُمُ التُّعَاسُ أَمَنَةً مِّنْهُ

हिक्मत वाला है। जब अल्लाह तुम पर नींद डाल रहा था अपनी तरफ से अमन के लिए

وَيُنْزِلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ

और तुम पर आसमान से पानी बरसा रहा था ताके उस के ज़रिए तुम्हें पाक कर दे

وَ يُذْهِبَ عَنْكُم رَجَزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ

और तुम से शैतान की गन्दगी को दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को

عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ۝ إِذْ يُوحَىٰ

मज़बूत कर दे और उस से कदमों को जमा दे। जब के तुम्हारा

رَبُّكَ إِلَى الْمَلِيكَةِ إِنِّي مَعَكُمْ فَتَبَتُوا الَّذِينَ

रब फरिश्तों को हुक्म दे रहा था के मैं तुम्हारे साथ हूँ, तो तुम ईमान वालों को जमाए

أَمَنُوا سَأَلْتَنِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا

रखो। अनकरीब मैं काफिरों के दिलों में रौब

الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا

डाल दूँगा, तो तुम मारो गर्दनो के ऊपर और उन

مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٧﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ

की उँगलियों के हर जोड़ पर ज़र्ब लगाओ। ये इस वजह से के उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल की

وَرَسُولَهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ

मुखालफत की। और जो भी अल्लाह और उस के रसूल की मुखालफत करेगा

فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٨﴾ ذَلِكَ فَذُوقُوهُ

तो यकीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने वाला है। उस को तुम चखो

وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩﴾ يَأْيُهَا الَّذِينَ

और ये के काफिरों के लिए आग का अज़ाब भी है। ऐ ईमान

أَمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحَفًا

वालो! जब तुम कुफ़ार की जमईयत के मुक़ाबिल हो जाओ

فَلَا تَوَلَّوْهُمْ إِلَّا دُبَارًا ﴿٢٠﴾ وَمَنْ يُولِهِمْ يُؤْمِدْ

तो तुम उन की तरफ पीठ मत करो (मत भागो)। और जो उन से उस दिन

دُبْرَةً إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَى فِئَةٍ

भागे मगर वो जो लड़ाई के लिए किनारे पर आने वाला हो या लश्कर की तरफ कूवत हासिल करने वाला हो,

فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَا وَهُ جَهَنَّمُ

तो यकीनन वो अल्लाह के ग़ज़ब को ले कर लौटा और उस का ठिकाना जहन्नम है।

وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٢١﴾ فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ

और वो बुरी जगह है। फिर तुम ने उन को क़त्ल नहीं किया

وَلَكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ ۖ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ

लेकिन अल्लाह ने उन को क़त्ल किया। और आप ने मिट्टी नहीं फेंकी जब के आप ने फेंकी थी लेकिन अल्लाह ही ने फेंकी।

رَفِي ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا

और इस लिए ताके अल्लाह अपनी तरफ से आजमाए ईमान वालों को अच्छी तरह आजमाना।

إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٤﴾ ذَلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنٌ

यकीनन अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। ये इस वजह से के अल्लाह काफिरों के

كَيِّدُ الْكَافِرِينَ ﴿١٥﴾ إِنْ تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمْ

मक्र को कमजोर करने वाले हैं। अगर तुम फतह तलब करते हो तो यकीनन तुम्हारे पास

الْفَتْحُ ۚ وَإِنْ تَنْتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَإِنْ تَعُدُّوا

फतह आ पहेँची। और अगर तुम बाज़ आ जाओ तो ये तुम्हारे लिए बेहतर है। और अगर तुम दोबारा ऐसा करोगे

نَعْدُ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا

तो हम भी दोबारा ऐसा करेंगे। और हरगिज़ तुम्हारे काम नहीं आएगी तुम्हारी जमईयत कुछ भी

وَلَوْ كَثُرَتْ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٦﴾ يَا أَيُّهَا

अगर्वे वो कितनी ही ज़्यादा क्यूं न हो। और ये इस लिए के अल्लाह ईमान वालों के साथ हैं। ऐ

الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا

ईमान वालो! तुम अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो और उस से मुंह मत

عَنْهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ﴿١٧﴾ وَلَا تَكُونُوا

मोड़ो इस हाल में के तुम सुनते भी हो। और तुम उन लोगों की तरह मत बनो

كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٨﴾

जिन्हों ने कहा के 'समिना', हालांके वो सुनते नहीं।

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ

यकीनन बदतरीन चौपाए अल्लाह के नज़दीक वो बेहरे और गूंगे हैं जो

لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٩﴾ وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَّاسْمَعَهُمْ

समझते भी नहीं। और अगर अल्लाह उन में कोई भलाई जानता तो ज़रूर उन्हें सुनाता।

وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٢٠﴾ يَا أَيُّهَا

और अगर उन्हें अल्लाह सुनाता तो वो मुंह फेरते पैराज़ करते हुए। ऐ

الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ

ईमान वालो! तुम अल्लाह और रसूल की बात मानो जब तुम्हें वो पुकारें

لِمَا يُحْيِيكُمْ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ

ऐसी चीज़ की तरफ जो तुम्हें जिन्दगी देती है। और तुम जान लो के अल्लाह हाइल हो जाते हैं

الْبَرِّ وَ قَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تَحْشَرُونَ ﴿٢٣﴾ وَاتَّقُوا

इन्सान और उस के दिल के दरमियान और ये के तुम उस की तरफ इकट्ठे किए जाओगे। और तुम डरो

فِتْنَةً لَا تُصِيبُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً ۚ

उस फितने (आज़माइश) से जो सिर्फ तुम में से ज़ालिमों को नहीं पहुँचेगा।

وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾ وَاذْكُرُوا

और जान लो के अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं। और तुम याद करो

إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُّسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ

जब के तुम थोड़े थे, ज़मीन में कमज़ोर किए जा रहे थे, तुम डरते थे के

أَنْ يَتَخَفَكُمُ النَّاسُ فَأَوْعَكُمْ وَأَيِّدْكُمْ

तुम्हें लोग उचक लेंगे, फिर अल्लाह ने तुम्हें ठिकाना दिया और तुम्हारी ताईद की

بِنَصْرِهِ ۚ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٢٧﴾

अपनी नुसरत के ज़रिए और तुम्हें उम्दा चीज़ें खाने को दीं ताके तुम शुक्र अदा करो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ

ऐ ईमान वालो! खयानत मत करो अल्लाह और रसूल से

وَتَخُونُوا أَمْنَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾ وَاعْلَمُوا

और तुम अपनी अमानतों में खयानत मत करो इस हाल में के तुम जानते हो। और जान लो के

أَنَّ أَمْوَالَكُمْ وَأَوْلَادَكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَ

तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तो सिर्फ आज़माइश हैं। और ये के अल्लाह के पास

أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٣٠﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا

भारी अज़्र है। ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरोगे

اللَّهُ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا ۖ وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ

तो वो तुम्हारे लिए हक व बातिल के दरमियान फैसला करने वाली कुव्वत अता कर देगा और तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देगा

وَيَغْفِرَ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٣١﴾ وَإِذْ

और तुम्हारी मग़फ़िरत करेगा। और अल्लाह भारी फज़ल वाले हैं। और जब के

يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ

आप के साथ कुम्फार मक्र कर रहे थे ताके वो आप को कैद कर दें या आप को क़त्ल कर दे

أَوْ يُخْرِجُوكَ ۖ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ ۗ وَاللَّهُ خَيْرٌ

या आप को वतन से निकाल दें। और वो मक्र कर रहे थे और अल्लाह भी तदबीर कर रहे थे। और अल्लाह बेहतरीन

الْمَكِرِينَ ﴿٣٠﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ

तदबीर करने वाले हैं। और जब उन पर हमरी आयतें तिलावत की जाती हैं तो केहते हैं बस

سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَذَا ۖ إِنْ هَذَا

हम ने सुन लिया, अगर हम चाहें तो यकीनन हम भी उस जैसा कलाम केह लें। ये तो सिर्फ

إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣١﴾ وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ

पेहले लोगों की गढ़ी हुई कहानियाँ हैं। और जब के उन्होंने ने कहा ऐ अल्लाह!

إِنْ كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا

अगर ये तेरी तरफ से हक है, तो तू हम पर

حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاءِ أَوْ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٢﴾

आसमान से पथ्थर बरसा या हम पर दर्दनाक अज़ाब ले आ।

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ۖ وَمَا كَانَ

हालांके अल्लाह उन्हें अज़ाब नहीं देंगे इस हाल में के आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उन में हैं। और अल्लाह उन्हें

اللَّهُ مُعَذِّبُهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٣﴾ وَمَا لَهُمْ

अज़ाब नहीं देंगे इस हाल में के वो इस्तिग़फ़ार कर रहे हों। और उन को क्या हुवा

إِلَّا يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ

के अल्लाह उन को अज़ाब न दे इस हाल में के वो मस्जिदे हराम से रोकते

الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَ ۚ إِنْ أَوْلِيَائُهُ

हैं, हालांके वो उस के हक़दार भी नहीं हैं। उस के हक़दार तो

إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾ وَمَا كَانَ

सिर्फ मुत्तक़ी लोग हैं, लेकिन उन में से अक्सर जानते नहीं। और उन की

صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءٌ وَتَصْدِيَةٌ ۖ

नमाज़ बैतुल्लाह के पास सिवाए सीटियाँ बजाने और तालियों के नहीं होती।

فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿۵۵﴾

तो अज़ाब चखो इस वजह से के तुम कुफ़ करते थे।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا

यकीनन वो लोग जो काफिर हैं वो अपने माल खर्च करते हैं ताके वो

عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَسَيُنفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ

अल्लाह के रास्ते से रोकें। फिर वो अनकरीब उसे खर्च करेंगे, फिर वो

عَلَيْهِمْ حَسْرَةٌ ۖ ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا

उन पर हसरत का बाइस बनेगा, फिर वो मग़लूब होंगे। और जो काफिर हैं

إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ﴿۵۶﴾ لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ

वो जहन्नम की तरफ इकट्ठे किए जाएंगे। ताके अल्लाह बुरे को अच्छे से

مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضُهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمُهُ

अलग करे और अल्लाह बुरे को एक दूसरे के ऊपर कर दे, फिर उस को इकट्ठा तेह बतेह

جَمِيعًا فَيَجْعَلُهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ

कर दे, फिर उस को जहन्नम में डाल दे। यही लोग खसारा

الْخٰسِرُونَ ﴿۵۷﴾ قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَنْتَهُوا يُغْفَرْ

उठाने वाले हैं। आप काफिरों से फरमा दीजिए के अगर वो बाज़ आ जाएंगे तो उन के लिए मग़फिरत कर दी

لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ ۚ وَإِنْ يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ

जाएगी उन गुनाहों की जो पेहले हो चुके। और अगर वो दोबारा ऐसा करेंगे तो पेहले लोगों का

سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ ﴿۵۸﴾ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ

तरीका गुज़र चुका है। और तुम उन से क़िताल करो यहां तक के कुफ़ का फितना बाकी न रहे

وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ

और दीन सारा का सारा अल्लाह ही के लिए हो जाए। फिर अगर वो बाज़ आ जाएं तो यकीनन अल्लाह

بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿۵۹﴾ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا

उन के आमाल को देख रहे हैं। और अगर वो ऐराज़ करें तो तुम जान लो के

أَنَّ اللَّهَ مَوْلَكُمْ ۖ نِعَمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعَمَ النَّصِيرِ ﴿۶۰﴾

अल्लाह तुम्हारा मौला है, बेहतरीन मौला और बेहतरीन मदद करने वाला है।

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَإِنَّ لِلَّهِ حُسَّهُ

और जान लो के जो कुछ तुम ग़नीमत में हासिल करो तो अल्लाह

وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ

और रसूल और रिश्तेदारों और यतीमों और मिसकीनों और मुसाफिरों के लिए

وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ إِن كُنتُمْ آمَنتُمْ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَنَا

उस का खुम्स है, अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और उस कुरआन पर जो हमारे बन्दे पर

عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ التَّقَىٰ الْجَمْعِ ۖ

हक़ और बातिल के दरमियान फैसले के दिन हम ने उतारा, जिस में दो लश्कर बाहम मुकाबिल हुए।

وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝۲۱

और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। जब तुम करीब वाले

الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوَىٰ وَالرَّكْبِ أَسْفَلَ

किनारे में थे और वो दूर वाले किनारे में थे और काफ़ला तुम से

مِنْكُمْ ۖ وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ لِاخْتِلَافْتُمْ فِي الْمِيْعَدِ ۖ

नीचे था। और अगर तुम एक दूसरे से वादा कर लेते तो अलबत्ता वादे में ज़रूर तुम आगे पीछे हो जाते।

وَلَكِنْ لِّيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۚ لِيَهْلِكَ

ये इस लिए किया ताके अल्लाह फैसला फरमा दे एक काम का जो मुकर्रर हो चुका था, ताके हलाक हो

مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَ يَحْيَىٰ مَنْ حَىٰ

जिसे हलाक होना हो क़यामे हुज्जत के बाद और ज़िन्दा रहे जिसे ज़िन्दा रेहना हो

عَنْ بَيِّنَةٍ ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝۲۲

क़यामे हुज्जत के बाद। और यकीनन अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। जब अल्लाह ने आप को दिखलाया

فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا ۖ وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ

उन कुम्फ़ार को आप के ख़्वाब में कम कर के। और अगर आप को अल्लाह उन कुम्फ़ार को ज़्यादा दिखाता तो तुम मुसलमान हिम्मत हार जाते

وَلَتَنَارَعَنَّ فِي الْأَمْرِ وَلَكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ ۚ إِنَّهُ

और तुम इस मुआमले में बाहम उलझ पड़ते, लेकिन अल्लाह ने बचा लिया। यकीनन वो

عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝۲۳

दिलों के हाल को ख़ूब जानने वाला है। और जब अल्लाह उन कुम्फ़ार को जब तुम मुकाबिल

التَّقِيَّتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَ يُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ

हुए, तुम्हारी निगाहों में तुम्हें कम दिखा रहा था और तुम्हें कम दिखा रहा था उन की निगाहों में

لِيَقْضَىٰ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۖ وَإِلَى اللَّهِ

ताके अल्लाह एक काम का फैसला कर दे जो मुकर्रर हो चुका था। और अल्लाह ही की तरफ

تَرْجَعُ الْأُمُورُ ۚ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً

तमाम उमूर लौटाए जाएंगे। ऐ ईमान वालो! जब तुम किसी लश्कर के मुकाबिल हो

فَاتَّبِعُوا وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۚ

तो साबित कदम रहो और अल्लाह को बहोत ज़्यादा याद करो ताके फलाह पाओ।

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا

और अल्लाह और उस के रसूल का खुशी से केहना मानो और आपस में मत झगड़ो, वरना तुम हिम्मत हार जाओगे

وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۚ

और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और सब्र करो। यकीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ हैं।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ

और उन लोगों की तरह मत बनो जो अपने घरों से निकले थे

بَطْرًا ۚ وَرِثَاءَ النَّاسِ وَ يُصْذَوْنَ عَنْ سَبِيلِ

इतराते हुए और लोगों के दिखावे के लिए और अल्लाह के रास्ते से

اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝ وَإِذْ زَيْنَ

रोकते थे। और अल्लाह उन के आमाल का इहाता किए हुए है। और जब उन के लिए

لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمْ

शैतान ने उन के आमाल मुज़य्यन किए और शैतान ने कहा के आज तुम पर इन्सानों में से

الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَأَتْ

कोई ग़ालिब नहीं आ सकता और मैं तुम्हारा मददगार हूँ। फिर जब दोनों लश्कर एक दूसरे के

الْفِئَتَيْنِ نَكَصَ عَلَىٰ عَقْبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ

मुकाबिल हुए तो शैतान अपनी ऐड़ियों के बल पलट गया और केहने लगा के मैं तुम से

مِّنْكُمْ إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ ۖ

बरी हूँ के मैं देख रहा हूँ वो (फरिश्ते) जो तुम नहीं देख रहे, इस लिए मैं अल्लाह से डरता हूँ।

۲۴

وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٣٨﴾ إِذْ يَقُولُ الْمُبْفِقُونَ

और अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं। जब मुनाफ़िक्कीन और वो लोग

وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هَوَاهُمْ دِينُهُمْ ۖ

जिन के दिलों में मर्ज़ है केह रहे थे के उन लोगों को उन के दीन ने मग़रूर बना रखा है।

وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٣٩﴾

और जो अल्लाह पर तवक्कुल करेगा तो यकीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

وَلَوْ تَرَى إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ الْمَلَائِكَةُ

और काश के आप देखते जब के काफ़िरों की जान निकाल रहे होंगे फरिश्ते,

يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ۖ وَذُوقُوا

मार रहे होंगे उन के चेहरों पर और उन की पीठों पर। और (केहते होंगे के)

عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٤٠﴾ ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيكُمْ

आग का अज़ाब चखो। ये अज़ाब उन गुनाहों की वजह से है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजे

وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٤١﴾ كَذَّابٍ ۖ

और ये बात साबित है के अल्लाह बन्दों पर ज़रा भी जुल्म करने वाला नहीं है। उन का हाल आले फिरऔन

فِرْعَوْنَ ۖ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ

के हाल की तरह और उन लोगों के हाल की तरह है जो उन से पेहले थे। जिन्होंने ने अल्लाह की आयात के साथ कुफ़्र किया,

فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدٌ

फिर अल्लाह ने उन को उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया। यकीनन अल्लाह कुव्वत वाला है, सख्त सज़ा देने

الْعِقَابِ ﴿٤٢﴾ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً

वाला है। ये इस वजह से के अल्लाह किसी नेअमत को बदलता नहीं जिस का उस ने

أَنْعَمَهَا عَلَى قَوْمٍ حَتَّى يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ۖ

किसी क़ौम पर इन्आम किया हो यहाँ तक के वो खुद न बदल लें उस को जो उन के दिलों में है।

وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٤٣﴾ كَذَّابٍ ۖ

और ये के अल्लाह सुनने वाला, इल्म वाला है। उन का हाल आले फिरऔन के हाल की तरह

وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ كَذَّبُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ

और उन लोगों के हाल की तरह है जो उन से भी पेहले थे। जिन्होंने ने अपने रब की आयात को झुठलाया

فَاهْلَكْنَهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَ اَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ ؕ

फिर हम ने उन्हें हलाक किया उन के गुनाहों की वजह से और हम ने आले फिरऔन को ग़र्क किया।

وَ كُلُّ كَانُوا ظَالِمِينَ ۝ إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ

और सब के सब ज़ालिम थे। यकीनन बदतरीन मखलूक अल्लाह के

عِنْدَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ

नज़दीक वो लोग हैं जो काफिर हैं, फिर वो ईमान नहीं लाते। उन में से

عٰهَدَتْ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ

वो जिन से आप ने अहद कर रखा है, फिर वो अपने अहद को तोड़ते हैं

فِي كُلِّ مَرَّةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ۝ فَمَا تَثْقَفَنَّهُمْ

हर मर्तबा में और वो डरते नहीं हैं। फिर अगर आप उन पर काबू पाएं

فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَدْكُرُونَ ۝

जंग में तो उन के ज़रिए से मुन्तशिर कर दीजिए उन को जो उन के पीछे हैं, शायद वो नसीहत हासिल करें।

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْبِذْ إِلَيْهِمْ

और अगर तुम्हें डर हो किसी कौम की तरफ से खयानत का तो उन की तरफ बराबर सराबर

عَلَى سَوَاءٍ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ۝

मुआहदे को फैंक दो। यकीनन अल्लाह खयानत करने वालों से महबबत नहीं करते।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا ۖ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ۝

और काफिर लोग ये न समझें के वो भाग कर आगे निकल गए हैं। यकीनन वो (अल्लाह को) आजिज़ नहीं कर सकते।

وَاعِدُوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ

और तुम तय्यारी रखो उन के लिए उस सामान की जिस की तुम इस्तिताअत रखते हो

وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ

और घोड़ों को बांध कर के भी जिस के ज़रिए तुम डराओ अल्लाह के दुश्मन को और अपने दुश्मन को

وَآخَرِينَ مِنْ دُونِهِمْ ؕ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ

और उन के अलावा दूसरों को जिन को तुम जानते नहीं हो। अल्लाह

يَعْلَمُهُمْ ۖ وَمَا تَنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

उन्हें जानते हैं। और जो चीज़ भी खर्च करोगे अल्लाह के रास्ते में

يُوفِّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَظْلُمُونَ ﴿١٠﴾ وَإِنْ جَنَحُوا

तो वो तुम्हें पूरी पूरी दी जाएगी और तुम्हें कम कर के नहीं दी जाएगी। और अगर वो सुल्ह की तरफ

لِلسَّلَامِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ

झुके तो आप भी सुल्ह की तरफ झुकिए और अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए। यकीनन अल्लाह

السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١١﴾ وَإِنْ يَرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ

सुनने वाले, इल्म वाले हैं। और अगर वो चाहें के वो आप को धोका दें

فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ ۖ هُوَ الَّذِي آتَاكَ بِنَضْرَةٍ

तो यकीनन अल्लाह आप को काफी है। वही अल्लाह है जिस ने अपनी नुसरत और ईमान वालों के ज़रिए

وَبِالْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢﴾ وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۖ لَوْ أَنْفَقْتَ

आप को कूवत दी। और जिस ने उन के दिलों को जोड़ दिया। अगर आप खर्च कर देते

مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَّا أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ

वो दौलत जो ज़मीन में है सारी की सारी तो भी उन के दिलों को जोड़ नहीं सकते थे,

وَلَكِنَّ اللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۖ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿١٣﴾

लेकिन अल्लाह ने उन के दिलों को जोड़ दिया। यकीनन वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप को अल्लाह काफी है और वो मोमिनीन काफी हैं

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٤﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضَ الْمُؤْمِنِينَ

जो आप के पीछे चल रहे हैं। ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! ईमान वालों को क़िताल

عَلَى الْقِتَالِ ۖ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عِشْرُونَ صَبْرُونَ

पर उभारिए। अगर तुम में से बीस साबित क़दम रहने वाले होंगे

يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ

तो वो ग़ालिब आ जाएंगे दो सौ पर। और अगर तुम में से सौ होंगे

يَغْلِبُوا أَلْفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ

तो एक हज़ार काफ़िरों पर ग़ालिब आ जाएंगे इस वजह से के वो ऐसी

لَّا يَفْقَهُونَ ﴿١٥﴾ أَلَنْ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ

कौम है जो कुछ समझती नहीं। अब अल्लाह ने तुम से तख्फ़ीफ़ कर दी और अल्लाह ने

أَنْ فِيكُمْ ضَعْفًا ۖ فَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ صَابِرَةٌ

जान लिया के तुम में कमजोरी है। तो अगर तुम में से सौ साबित कदम रहने वाले होंगे

يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا

तो वो ग़ालिब आ जाएंगे दो सौ पर। और अगर तुम में से एक हजार होंगे तो ग़ालिब आएंगे

أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿١١﴾ مَا كَانَ

दो हजार पर अल्लाह के हुक्म से। और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। नबी के लिए

لِنَبِيِّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَى حَتَّى يُشْخَنَ

मुनासिब नहीं है के उस के पास कैदी हों यहां तक के वो अच्छी तरह खून बहा दे

فِي الْأَرْضِ ۖ تُرِيدُونَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۚ وَاللَّهُ يُرِيدُ

जमीन में। तुम दुनिया का सामान चाहते हो, और अल्लाह आखिरत

الْآخِرَةَ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿١٢﴾ لَوْلَا كُتِبَ

चाहते हैं। और अल्लाह ज़बर्दस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। अगर अल्लाह की तरफ से पेहले से लिखी हुई तहरीर

مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ لِمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٣﴾

न होती तो तुम्हें भारी अज़ाब पहुंचता उस फिदये की वजह से जो तुम ने लिया।

فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ

अब तुम खाओ उस में से जो तुम ने ग़नीमत के तौर पर हासिल किया हलाल पाकीज़ा समझ कर और अल्लाह से डरो।

إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٤﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَن

यकीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप फरमा दीजिए उन कैदियों

فِي أَيْدِيكُمْ مِّنَ الْأَسْرَى ۚ إِنْ يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ

से जो तुम्हारे हाथों में हैं के अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में भलाई मालूम

خَيْرًا يُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّا أَخَذَ مِنْكُمْ ۖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ

करेगा तो अल्लाह तुम्हें उस से बेहतर देगा जो तुम से लिया गया और तुम्हारी मग़फ़िरत कर देगा।

وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٥﴾ وَإِنْ يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ

और अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और अगर वो आप से खयानत करना चाहते हैं

فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ۖ

तो यकीनन वो अल्लाह से इस से पेहले खयानत कर चुके हैं, फिर अल्लाह ने उन पर कुदरत दी।

وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝۴۱	وَالَّذِينَ آمَنُوا
और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। यकीनन वो लोग जो ईमान लाए	
وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ	
और जिन्होंने हिजरत की और जिहाद किया अपने मालों और जानों के ज़रिए	
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا	
अल्लाह के रास्ते में और जिन्होंने ठिकाना दिया और नुसरत की	
أُولَئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۖ وَالَّذِينَ	
उन में से एक दूसरे के दोस्त हैं। और वो लोग	
آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا لَكُمْ مِّنْ وَلَايَتِهِمْ	
जो ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत नहीं की तो तुम्हारे लिए उन की किसी भी चीज़ की विलायत नहीं है	
مِّنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ وَإِنِ اسْتَنْصَرُوكُمْ	
(न ईर्स की, न ग़नीमत की) जब तक के वो हिजरत न करें। और अगर वो तुम से दीन	
فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمْ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ	
में मदद तलब करें तो तुम पर मदद करना ज़रूरी है मगर ऐसी कौम के खिलाफ के तुम्हारे	
وَبَيْنَهُمْ مِّيثَاقٌ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝۴۲	
और उन के दरमियान मुआहदा हो। और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहे हैं।	
وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۖ	
और वो जो काफिर हैं, वो उन में से एक दूसरे के दोस्त हैं।	
إِلَّا تَفْعَلُوا تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ	
अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो ज़मीन में फितना हो जाएगा और बड़ा	
كَبِيرٌ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا	
फसाद होगा। और वो लोग जो ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और जिहाद किया	
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَئِكَ	
अल्लाह के रास्ते में और जिन्होंने ठिकाना दिया और नुसरत की, यही	
هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝۴۳	
हकीकी मोमिन हैं। उन के लिए मग़फ़िरत है और इज्ज़त वाली रोज़ी है।	

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ

और वो जो ईमान लाए उस के बाद और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया

فَأُولَٰئِكَ مِنْكُمْ ۖ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ

तो ये लोग तुम ही में से हैं। और करीबी रिश्तेदार उन में से एक दूसरे

بَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

के ज़्यादा हकदार हैं अल्लाह की किताब में। यकीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं।

أَيَّاهَا ١٢٩ (٩) سُورَةُ التَّوْبَةِ مَكِّيَّةٌ (١١٣) رُكُوعَاتُهَا ١٢

और १६ स्कूअ हैं सूरह तौबा मदीना में नाज़िल हुई उस में १२६ आयतें हैं

بَرَاءَةً مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ

अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से बराअत का ऐलान है उन मुशरिकीन की तरफ जिन

مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ۖ فَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ

से तुम ने मुआहदा किया था। के (मुशरिको!) तुम ज़मीन में चलो फिरो चार

أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۚ

महीने तक और तुम जान लो के तुम अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकोगे,

وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ ۝ وَأَذَانٌ مِّنَ اللَّهِ

और ये के अल्लाह काफिरों को रूस्वा करने वाले हैं। और अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से तमाम

وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ

इन्सानों की तरफ आम ऐलान है हज्जे अकबर के दिन के अल्लाह

بَرِيءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ وَرَسُولُهُ ۚ فَإِنْ تُبْتُمْ

बरी है मुशरिकीन से और उस का रसूल भी बरी है। फिर अगर तुम तौबा करो

فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا أَنكُمْ غَيْرُ

तो ये तुम्हारे लिए बेहतर है। और अगर रूगरदानी करो तो जान लो के अल्लाह को (भाग कर)

مُعْجِزِي اللَّهِ ۚ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ

तुम आजिज़ नहीं कर सकते। और आप काफिरों को दर्दनाक अज़ाब की बशारत

أَلِيمٍ ۚ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ

सुना दीजिए। मगर उन को जिन मुशरिकीन से तुम ने मुआहदा कर रखा था

ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ

फिर उन्होंने ने तुम से किसी चीज़ की कमी नहीं की और उन्होंने ने तुम्हारे खिलाफ किसी की मदद

أَحَدًا فَأَتَمُّوْا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۖ

नहीं की, तो तुम उन के साथ उन के मुआहदे को पूरा करो उस की मुदत तक।

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝ فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ

यकीनन अल्लाह मुत्तकियों से महबबत करते हैं। फिर जब हुरमत वाले महीने गुज़र

الْحُرْمِ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ

जाएं तो मुशरिकीन को क़त्ल करो जहाँ उन को पाओ

وَ خُذُوهُمْ وَأَحْصُرُوهُمْ وَأَقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ

और उन को पकड़ो और उन को कैद करो और तुम उन के लिए हर ताकने की जगह में बैठो।

فَإِنْ تَابُوا وَ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوْا الزَّكَاةَ

फिर अगर वो तौबा कर लें और नमाज़ काइम करें और ज़कात दें

فَخَلُّوْا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

तो उन का रास्ता छोड़ दो। यकीनन अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ

और अगर मुशरिकीन में से कोई आप से पनाह तलब करे तो आप उस को पनाह दे दीजिए यहाँ तक के वो अल्लाह

كَلِمَ اللَّهُ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ

के कलाम को सुने, फिर उस को उस के अमन की जगह तक पहुँचा दीजिए। ये इस वजह से के ये ऐसी कौम है

قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ۖ كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ

ع

जो जानती नहीं। मुशरिकीन के लिए कैसे मुआहदा बाकी रहे

عَهْدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَ عِنْدَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ

सकता है अल्लाह और उस के रसूल के पास मगर हाँ, जिन से

عُهِدَتْكُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوا

तुम ने मस्जिदे हराम के पास मुआहदा किया था। फिर वो तुम्हारे लिए जब तक सीधे

لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝

रहें तुम भी उन के लिए सीधे रहो। यकीनन अल्लाह मुत्तकियों से महबबत फरमाते हैं।

كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ

कैसे (मुआहदा बाकी रहे सकता है) हालांकि अगर वो तुम पर ग़ालिब आ जाएं तो तुम्हारे बारे में वो परवाह न करें

إِلَّا وَلَا ذِمَّةٌ يُرْضُونَكُمْ بِأَفْوَهِهِمْ وَتَابُوا

रिश्तेदारी और अहद की। वो तुम्हें अपने मुँह से खुश करते हैं हालांकि उन के दिल इन्कार

قُلُوبُهُمْ ۚ وَ أَكْثَرُهُمْ فَسِقُونَ ۝۸۱

करते हैं। और उन में से अक्सर नाफरमान हैं। उन्होंने ने अल्लाह की आयात

اللَّهُ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ۚ إِنَّهُمْ

के बदले थोड़ी कीमत ली, फिर उन्होंने ने अल्लाह के रास्ते से रोका। यकीनन

سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝۸۲ لَا يَرْقُبُونَ

बुरे हैं वो काम जो वो कर रहे हैं। वो परवाह नहीं करते

فِي مُؤْمِنٍ إِلَّا وَلَا ذِمَّةٌ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ۝۸۳

किसी मोमिन के बारे में रिश्तेदारी और ज़िम्मे की। और वही लोग ज़्यादाती करने वाले हैं।

فَإِنْ تَابُوا وَ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ

फिर अगर वो तौबा कर लें और नमाज़ काइम करें और ज़कात दें

فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ ۚ وَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ

तो वो दीन में तुम्हारे भाई हैं। और हम आयतों को तफसील से बयान करते हैं ऐसी कौम के लिए

يَعْلَمُونَ ۝۸۴ وَإِنْ نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ مِنْ بَعْدِ

जो जानती है। और अगर वो अपनी कस्में तोड़ें अपने मुआहदे

عَهْدِهِمْ وَ طَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَبْنَاءَ

के बाद और तुम्हारे दीन में तानाज़नी करें तो तुम कुफ़ के सरगनों से

الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ ۝۸۵

क़िताल करो, इस लिए के उन को कस्मों की कोई परवाह नहीं, (उन से क़िताल करो) ताके वो बाज़ आ जाएं।

إِلَّا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَ هُمُ

तुम क़िताल क्यूं नहीं करते ऐसी कौम से जिन्होंने ने अपनी कस्मों को तोड़ा और जिन्होंने ने रसूल को

بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ

निकालने का इरादा किया और उन्होंने ने तुम से (नक़ज़े अहद में) पेहल की।

أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَإِنَّهُمْ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُمْ إِنْ كُنْتُمْ

क्या तुम उन से डरते हो? हालांकि अल्लाह उस का ज़्यादा हकदार है के उस से डरो अगर तुम

مُؤْمِنِينَ ۝ قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ

मोमिन हो। उन से क़िताल करो ताकि अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें अज़ाब दे

وَيُخْزِهِمْ وَ يَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ

और उन्हें रूखा करे और उन के खिलाफ तुम्हारी नुसरत करे और ईमान वाली कौम

قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ۝ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۚ

के दिलों को शिफा दे। और उन के दिलों के ग़ैज़ को दूर करे।

وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ

और अल्लाह तौबा कबूल करे जिस की चाहे। और अल्लाह इल्म वाले,

حَكِيمٌ ۝ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ

हिक्मत वाले हैं। क्या तुम ने ये गुमान कर रखा है के तुम छूट जाओगे हालांकि अब तक

اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا

अल्लाह ने मालूम नहीं किया उन को जो तुम में से मुजाहिद हैं और उन्होंने ने

مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً ۚ

अल्लाह के अलावा और उस के रसूल और ईमान वालों के अलावा किसी को राज़दार नहीं बनाया।

وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ

और अल्लाह को खबर है उन कामों की जो तुम करते हो। मुशरिकीन का काम नहीं है

أَنْ يَعْمُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ شَهِدِينَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ

के वो अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें इस हाल में के वो अपने खिलाफ कुफ़्र की गवाही देने

بِالْكَفْرِ ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۚ وَفِي النَّارِ

वाले हैं। यही लोग हैं के उन के आमाल हब्त हो गए। और वही दोज़ख में हमेशा

هُمْ خَالِدُونَ ۝ إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ

रेहने वाले हैं। अल्लाह की मसजिद को सिर्फ वही लोग आबाद करते हैं जो ईमान लाए हैं

بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَ أَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ

अल्लाह पर और आखिरी दिन पर और नमाज़ काइम करते हैं और ज़कात देते हैं

وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ ۖ فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَن يَكُونُوا	और नहीं डरते मगर अल्लाह से, तो उम्मीद है के ये लोग हिदायतयाप्ता
مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿١٨﴾ أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ	लोगों में से हों। क्या तुम ने हाजियों के पानी पिलाने
وَ عِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ أَمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ	और मस्जिदे हराम के आबाद करने को उस शख्स की तरह बना दिया जो अल्लाह पर ईमान रखता है और आखिरी
الْآخِرِ وَ جَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ لَا يَسْتَوُونَ	दिन पर और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता है। अल्लाह के नज़दीक
عِنْدَ اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾ الَّذِينَ	ये सब बराबर नहीं हो सकते। और अल्लाह ज़ालिम कौम को हिदायत नहीं देते। वो लोग
آمَنُوا وَ هَاجَرُوا وَ جَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ	जो ईमान लाए और जिन्होंने ने हिजरत की और जिहाद किया अल्लाह के रास्ते में
بِأَمْوَالِهِمْ وَ أَنْفُسِهِمْ ۖ أَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ ۖ	अपने मालों और जानों के ज़रिए, ये अल्लाह के नज़दीक दरजे के एतेबार से ज़्यादा बड़े हुए हैं।
وَ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ	और यही लोग कामयाब हैं। उन का रब उन्हें बशारत देता है
بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَ رِضْوَانٍ وَ جَنَّتِ لَهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ	अपनी रहमत की और खुशनूदी की और ऐसी जन्नतों की के उन के लिए उन में दाइमी नेअमते
مُقِيمٌ ﴿٢١﴾ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ	होंगी। वो उन में हमेशा रहेंगे। यकीनन अल्लाह के पास
أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٢﴾ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا	भारी अज़्र है। ऐ ईमान वालो! तुम अपने
أَبَاءَكُمْ وَ إِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ ۖ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ	बाप दादा और अपने भाइयों को दोस्त मत बनाओ अगर वो ईमान के मुक़ाबले में
عَلَى الْإِيمَانِ ۖ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَأُولَٰئِكَ	कुफ़्र को पसन्द करें। और जो तुम में से उन से दोस्ती रखेगा तो वही

هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿۲۳﴾ قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَابْنَاؤُكُمْ लोग गुनेहगार हैं। आप फरमा दीजिए के अगर तुम्हारे बाप दादा और तुम्हारे बेटे
وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारा कबीला और वो माल जो तुम
اِقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا ने कमाए हैं और वो तिजारत जिस के घाटे से तुम डरते हो
وَمَسْكِنٌ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِّنْ اللَّهِ और वो मकानात जिन को तुम पसन्द करते हो, (अगर ये तमाम चीजें) तुम्हें अल्लाह और
وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّى يَأْتِيَ उस के रसूल और उस के रास्ते में जिहाद करने से ज्यादा महबूब हैं, तो तुम मुन्तज़िर रहो यहां तक के अल्लाह
اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۖ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿۲۴﴾ अपना अज़ाब ले आए। और अल्लाह नाफरमान कौम को हिदायत नहीं देते।
لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۖ وَيَوْمَ यकीनन अल्लाह ने तुम्हारी नुस्हत फरमाई बहोत से मैदानों में, (खास तौर पर)
حُنَيْنٍ ۖ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ जंगे हुनैन में, जब के तुम्हारी कस्रत ने तुम्हें उज्ज में मुबतला किया, फिर ये कस्रत तुम्हारे
شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمْ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ कुछ भी काम नहीं आई और तुम पर ज़मीन तंग हो गई अपनी वुसअत के बावजूद,
ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُدْبِرِينَ ۖ ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ फिर तुम पीठ फेर कर भागे। फिर अल्लाह ने अपनी तसल्ली उतारी
عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا अपने रसूल पर और ईमान वालों पर और फौजें उतारीं
لَمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَذَلِكَ جَزَاءُ जो तुम ने नहीं देखी और अल्लाह ने काफिरों को अज़ाब दिया। और ये काफिरों
الْكَاذِبِينَ ﴿۲۵﴾ ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ की सज़ा है। फिर अल्लाह उस के बाद तौबा कबूल करेंगे

عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٥﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ	
जिस की चाहें। और अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। ऐ ईमान	
أَمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ	
वालो! मुशरिकीन तो सरापा नजासत हैं, इस लिए वो मस्जिदे हराम के करीब	
الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَذَا ۖ وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً	
इस साल के बाद न जाने पाएं। और अगर तुम फक्र से डरते हो	
فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۖ إِنْ شَاءَ ۖ	
तो अनकरीब अल्लाह तुम्हें ग़नी कर देंगे अपने फज़ल से अगर चाहेंगे।	
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٦﴾ قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ	
यकीनन अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। तुम क़िताल करो उन लोगों से जो एहले किताब में से	
بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ	
ईमान नहीं रखते अल्लाह पर और आखिरी दिन पर और जो हराम नहीं करार देते उन चीज़ों को	
اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ	
जो अल्लाह और उस के रसूल ने हराम करार दी हैं और दीने हक़ को अपना दीन नहीं बनाते,	
أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّىٰ يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ	
(क़िताल करो) यहां तक के वो जिज़या दें अपने हाथ से इस हाल में के वो	
صَغِيرُونَ ﴿١٧﴾ وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللَّهِ	۞
ज़लील भी हों। यहूद ने कहा के उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं	
وَقَالَتِ النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ۖ ذَلِكَ قَوْلُهُمْ	
और नसारा ने कहा के मसीह अल्लाह के बेटे हैं। ये उन की अपने मुंह से कही हुई	
بِأَفْوَاهِهِمْ ۖ يُضَاهِئُونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا	
बातें हैं। ये उन लोगों जैसी बातें करते हैं जो उन से पेहले	
مِنْ قَبْلُ ۖ قَاتِلْهُمْ اللَّهُ ۚ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿١٨﴾ اتَّخَذُوا	
काफिर हो चुके। उन पर अल्लाह की मार हो। ये किधर उल्टे जा रहे हैं? उन्होंने ने	
أَحْبَارَهُمْ وَرُهَبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّنْ دُونِ اللَّهِ	
अपने उलमा और अपने राहिबों को रब बना लिया अल्लाह को छोड़ कर के	

وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَا أُمُورًا إِلَّا لِيَعْبُدُوا

और रब बना लिया मसीह इब्ने मरयम को। हालांकि खुद उन्हें हुक्म नहीं दिया गया मगर इसी का के वो इबादत करेंगे

إِلَهًا وَاحِدًا ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ سُبْحَنَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٠﴾

एक ही माबूद की। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। वो पाक है उन चीजों से जिन को वो शरीक ठेहरा रहे हैं।

يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى

वो चाहते हैं के अल्लाह के नूर को अपने मुंह से बुझा दें और अल्लाह इन्कार

اللَّهُ إِلَّا أَنْ يَتَمَنَّوْا نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿١١﴾

करते हैं मगर ये के वो अपने नूर को इतमाम तक पहुँचाएं अगर्चे काफिर लोग नापसन्द करें।

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ

वही अल्लाह है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक दे कर भेजा

لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۚ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿١٢﴾

ताके उसे ग़ालिब कर दे तमाम अदयान पर अगर्चे मुशरिक नापसन्द करें।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن كَثِيرًا مِّنَ الْأَخْبَارِ

ऐ ईमान वालो! यकीनन बहोत से उलमा

وَالرُّهْبَانِ لِيَآكُلُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ

और राहिब लोगों के माल बातिल तरीके से खाते हैं

وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ

और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। और जो भी सौना और चाँदी को

الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يَنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ

खज़ाना कर के रखते हैं और उसे खर्च नहीं करते अल्लाह के रास्ते में

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿١٣﴾ يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا

तो आप उन्हें बशारत सुना दीजिए दर्दनाक अज़ाब की। जिस दिन जहन्नम की आग में

فِي نَارٍ جَهَنَّمَ فَتُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ

उसे गर्म किया जाएगा, फिर उस के ज़रिए उन की पेशानी और उन के पेहलुओं और उन की

وَأُظْهَرُ لَهُمْ ۚ هَذَا مَا كَنْزْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ فَذُوقُوا

पीठों को दागा जाएगा। (कहा जाएगा के) ये वो है जो तुम ने अपने लिए जमा किया था, तो अपने जमा करने का

मज़ा	चखो।	यकीनन	महीनों	की	तादाद
مَا كُنْتُمْ تَكْنُزُونَ ﴿٥﴾ إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ					
عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ					
अल्लाह के नज़दीक बारा महीने हैं अल्लाह की किताब में उस दिन से जिस दिन					
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرْمٌ ذَلِكَ					
अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, उन में से चार हुरमत वाले महीने हैं। ये					
الدِّينِ الْقَيِّمَةِ فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنْفُسَكُمْ					
सीधा दीन है। इस लिए तुम उन में अपनी जानों पर जुल्म न करो					
وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ					
और तमाम मुशरिकीन से क़िताल करो जैसा के वो तुम सब से क़िताल					
كَافَّةً ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿٦﴾					
करते हैं। और तुम जान लो के अल्लाह मुत्तकियों के साथ है।					
إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضِلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا					
महीनों की तक़दीम व ताखीर ये कुफ़ में ज़्यादती है, उस के ज़रिए गुमराह किया जाता है उन लोगों को जो काफ़िर हैं					
يُحِلُّونَهُ عَامًا وَ يَحَرِّمُونَهُ عَامًا لِّيُؤَاطُوا عِدَّةَ					
के उसे एक साल हलाल महीना बनाते हैं और अगले साल उसे हराम महीना बनाते हैं ताके वो उस तादाद के मुवाफ़िक					
مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيُحِلُُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ ۖ زَيْنَ لَهُمْ سُوءُ					
बना दें जिसे अल्लाह ने हुरमत वाला बनाया के फिर वो हलाल कर लें उसे जिस को अल्लाह ने हुरमत वाला बनाया। उन के लिए उन की					
أَعْمَالِهِمْ ۖ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٧﴾					
बदअमली मुज़य्यन की गई। और अल्लाह काफ़िर कौम को हिदायत नहीं देते।					
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمْ					
ऐ ईमान वालो! तुम्हें क्या हुआ जब तुम से कहा जाता है के					
انْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَثَأَقَلُّتُمْ إِلَى الْأَرْضِ ۖ					
तुम निकलो अल्लाह के रास्ते में तो तुम ज़मीन को लगे जाते हो।					
أَرْضَيْتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ ۖ فَمَا مَتَاعٌ					
क्या तुम आखिरत के मुक़ाबले में दुन्यवी ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए? जब के दुन्यवी ज़िन्दगी					

الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝۳۸ اِلَّا تَنْفَرُوْا

का फाइदा उठाना आखिरत के मुकाबले में नहीं है मगर थोड़ा। अगर तुम (अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए) नहीं निकलोगे

يُعَذِّبُكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ

तो अल्लाह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा और तुम्हारे अलावा दूसरी क़ौम को बदले में ले आएगा

وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْئًا ۝ وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝۳۹

और तुम अल्लाह को ज़रा भी ज़रर नहीं पहुँचा सकोगे। और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं।

اِلَّا تَضُرُّوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ

अगर तुम आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नुसरत नहीं करोगे तो यक़ीनन अल्लाह आप की नुसरत कर चुका है जब आप को काफ़िरों ने

كَفَرُوْا ثٰنِيْ اٰثِنِيْنَ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ

वतन से निकाला इस हाल में के आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दो में से दूसरे थे, जब के वो दोनों ग़ार में थे

لِصّٰحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۝ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ

जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने साथी से फरमा रहे थे के ग़म न करो, यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है। फिर अल्लाह

سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ ۝ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا

ने अपना सकीना उन पर उतारा और उन की मदद की ऐसे लश्क़रों के ज़रिए जिन को तुम ने देखा नहीं

وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا السُّفْلٰى ۝ وَكَلِمَةَ

और अल्लाह ने काफ़िरों के कलिमे को नीचे वाला बना दिया। और

اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ۝ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝۴۰ اِنْفَرُوْا

अल्लाह का कलिमा ही बुलन्द है। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। निकलो

خِفَافًا وَثِقَالًا ۝ وَجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ

हलके होने की हालत में और बोझिल होने की हालत में और तुम जिहाद करो मालों और जानों के ज़रिए

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۝ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

अल्लाह के रास्ते में। ये तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम

تَعْلَمُوْنَ ۝۴۱ لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا ۝ وَ سَفَرًا قٰصِدًا

जानते हो। अगर क़रीब ही माल हो और दरमियाना सफ़र हो

لَا تَتَّبِعُوْكَ وَلٰكِنْ بَعْدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۝

तो ज़ख़र वो आप के पीछे हो लेते, लेकिन उन्हें सफ़र मशक्कत भरा, दूर मालूम हुवा।

وَسَيَحْلِفُونَ بِاللّٰهِ لَوْ اَسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۝

और अब वो (मुनाफिकीन) अल्लाह की कस्में खाएंगे के अगर हमें इस्तिताअत होती तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकलते।

يُهْلِكُونَ اَنْفُسَهُمْ ۝ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

वो अपने आप को हलाक कर रहे हैं। और अल्लाह जानता है के यकीनन वो झूठे हैं।

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۝ لِمَ اِذْنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَّبِعَنَ

अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मुआफ कर दिया। आप ने उन मुनाफिकीन को इजाज़त क्यूं दी यहां तक

لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَ تَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ۝

के आप के सामने अलग हो जाते वो जो सच्चे हैं और आप झूठों को जान लेते।

لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

आप से इजाज़त नहीं मांगते वो लोग जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और अखिरी दिन पर

اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۝ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ

के वो जिहाद करें अपने मालों से और अपनी जानों से। और अल्लाह मुत्तकियों को

بِالْبَيِّنٰتِ ۝ اِنَّهَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

खूब जानते हैं। आप से तो वही लोग इजाज़त तलब करते हैं जो ईमान नहीं रखते

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاِذَا بَتِ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ

अल्लाह पर और आखिरी दिन पर और उन के दिल शक करते हैं, फिर वो

فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ۝ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ

अपने शक में हैरान हैं। और अगर वो निकलने का इरादा करते

لَا عُدُوْا لَهُ عُدَّةٌ ۝ وَلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ اَنْبِعَاثَهُمْ

तो ज़रूर उस के लिए तय्यारी भी करते लेकिन अल्लाह ने नापसन्द फरमाया उन का उठना,

فَتَبَطَّوْهُمْ ۝ وَقِيْلَ اَقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝

इस लिए उन को पड़ा रहने दिया और कहा गया के तुम बैठे रहो बैठे रहने वालों के साथ।

لَوْ خَرَجُوْا فَيَكُوْمُ مَا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا ۝ وَلَا اَوْضَعُوْا

अगर वो तुम में शामिल हो कर निकलते भी तो वो तुम्हारा नुकसान ही ज़्यादा करते और अलबत्ता तेज़ दौड़ते

خَلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمْ الْفِتْنَةَ ۝ وَفِيْكُمْ سٰعُوْنَ

फिरते तुम्हारे दरमियान फितने की गर्ज से। और तुम में उन के लिए कुछ कान लगाने वाले

لَهُمْ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿۴۷﴾ لَقَدْ ابْتَغُوا

(जासूस) हैं। और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानते हैं। यकीनन उन्होंने ने इस से पेहले भी

الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَ قَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ حَتَّى جَاءَ

फितना बरपा करना चाह और आप के सामने उमूर को उलट पलट कर के पेश किया यहां तक के हक

الْحَقُّ وَ ظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَرِهُونَ ﴿۴۸﴾ وَمِنْهُمْ

आ गया और अल्लाह का अम्र वाज़ेह हो गया इस हाल में के वो नापसन्द कर रहे थे। और उन में से वो भी हैं

مَنْ يَقُولُ ائْذَنْ لِي وَلَا تَفْتِنِّي ۖ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ

जो केह रहे थे के आप मुझे इजाज़त दीजिए और मुझे फितने में न डालिए। सुनो! फितने में तो वो

سَقُطُوا ۚ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَهِيَطَةُ ۖ بِالْكَافِرِينَ ﴿۴۹﴾

गिर चुके हैं। और यकीनन जहन्नम काफिरों को घेरे हुए है।

إِنْ تُصِيبَكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِنْ تُصِيبَكَ مُصِيبَةٌ

अगर आप को भलाई पहुँचे तो उन्हें बुरी लगती है। और अगर आप को मुसीबत पहुँचे

يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَ يَتَوَلَّوْا

तो केहते हैं के हम ने इस से पेहले हमारे मुआमले में एहतेयात को ले लिया था और वो लौटते हैं

وَهُمْ فَرِحُونَ ﴿۵۰﴾ قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ

इस हाल में के वो खुश होते हैं। आप फरमा दीजिए के हरगिज़ हमें नहीं पहुँचेगा मगर वही जो अल्लाह ने हमारे

اللَّهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلَانَا ۚ وَ عَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

लिए लिख दिया है। वही हमारा मौला है। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल

الْمُؤْمِنُونَ ﴿۵۱﴾ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا اِحْدَى

करना चाहिए। आप फरमा दीजिए के तुम हमारे बारे में मुन्तज़िर नहीं हो मगर दो भलाइयों में

الْحُسْنَيْنِ ۖ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمْ

से एक के। और हम भी तुम्हारे लिए मुन्तज़िर हैं इस के के अल्लाह

اللَّهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهِ أَوْ بِأَيْدِينَا ۚ فَتَرَبَّصُوا

तुम्हें अपनी तरफ से या हमारे हाथ से अज़ाब पहुँचाए। तो तुम मुन्तज़िर रहो,

إِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُونَ ﴿۵۲﴾ قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا

यकीनन हम तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हैं। आप फरमा दीजिए के तुम खुशी से खर्च करो

أَوْ كَرِهًا لَّنَ يُتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ۖ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا

या ज़बर्दस्ती, हरगिज़ तुम्हारी तरफ से कबूल नहीं किया जाएगा। इस लिए के तुम नाफरमान

فَسِيقِينَ ۝ وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقَبَّلَ مِنْهُمْ نَفَقَتُهُمْ

लोग हो। और उन को मानेअ नहीं हुवा इस से के उन की तरफ से उन के सदक़ात कबूल किए जाएं

إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ

मगर ये के उन्होंने ने क़ुफ़ किया अल्लाह और उस के रसूल के साथ और वो नमाज़ में नहीं

الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كَسَالَى وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ

आते मगर इस हाल में के वो सुस्त होते हैं और वो खर्च नहीं करते मगर इस हाल में के वो

كَرْهُونَ ۝ فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ ۖ

नापसन्द करते हैं। इस लिए आप को उन के माल और उन की औलाद अच्छी न लगे।

إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

अल्लाह तो सिर्फ़ ये चाहता है के उन्हें इस के ज़रिए अज़ाब दे दुन्यवी ज़िन्दगी में

وَتَرْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝ وَيَحْلِفُونَ

और उन की जान निकले इस हाल में के वो काफिर हों। और वो अल्लाह की

بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ۖ وَمَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَكِنَّهُمْ

कसम खाते हैं के यकीनन वो तुम में से हैं, हालांके वो तुम में से नहीं हैं, लेकिन वो

قَوْمٌ يَفْرُقُونَ ۝ لَوْ يَجِدُونَ مَلَجًا أَوْ مَغْرًا

ऐसी क़ौम है जो डरती है। अगर वो पाएं कोई पनाह लेने की जगह या कोई ग़ार

أَوْ مَدْخَلًا لَّوَلَوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ ۝ وَمِنْهُمْ

या कोई घुसने की जगह तो वो ज़रूर उस की तरफ भागेंगे इस हाल में के वो सरो को ऊँचा किए हुए होंगे। और उन

مَنْ يَلْبِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ ۚ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا

में से कुछ लोग वो हैं जो आप को सदक़ात के बारे में ताना देते हैं। फिर अगर उन्हें सदक़ात में से कुछ दिया

رَضُوا وَإِنْ لَمْ يُعْطُوا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسَخَطُونَ ۝

जाए तो राज़ी हो जाते हैं और अगर उन्हें सदक़ात में से कुछ न दिया जाए तो नाराज़ हो जाते हैं।

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ

और अगर वो राज़ी रहते उस पर जो अल्लाह और उस का रसूल उन को देते हैं

	وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ और वो केहते के अल्लाह हमें काफी है, अल्लाह हमें अपने फज़ल से अनकरीब देगा
ع	وَرَسُولُهُ ۖ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ﴿٩﴾ إِنَّمَا الصَّدَقَتُ और उस का रसूल भी देगा। यकीनन हम तो अल्लाह की तरफ रग़बत करने वाले हैं (तो अच्छा होता)। सदकात तो
	لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَالْعَمِلِينَ عَلَيْهَا सिर्फ फुकरा और मसाकीन और सदकात पर काम करने वालों
	وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغَرَمِينَ और जिन की तालीफे क़ल्ब मकसूद हो उन का हक़ है और सदकात गुलामों की गर्दन आज़ाद कराने में और जो मक़रूज़
	وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَبْنِ السَّبِيلِ ۖ فَرِيضَةً हों उन में और अल्लाह के रास्ते में और मुसाफ़ि़रों के लिए हैं। अल्लाह की तरफ से फरीज़े के तौर पर।
	مِّنَ اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾ وَمِنْهُمْ الَّذِينَ और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और उन लोगों में से वो भी हैं जो नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)
	يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ هُوَ أذُنٌ ۖ قُلْ أذُنُ को ईज़ा पहोंचाते हैं और केहते हैं के ये तो कान हैं। आप फरमा दीजिए के तुम्हारे भले के लिए कान हैं जो
	خَيْرٌ لَّكُمْ يَوْمُنُ بِاللَّهِ وَ يُؤْمِنُ لِّلْمُؤْمِنِينَ ईमान रखते हैं अल्लाह पर और तसदीक़ करते हैं ईमान वालों की
	وَرَحْمَةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ ۖ وَالَّذِينَ और रहमत हैं तुम में से मोमिनीन के लिए, और जो
	يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١﴾ अल्लाह के रसूल को ईज़ा पहोंचाएंगे उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है।
	يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيَرْضَوْكُمْ ۖ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ वो अल्लाह की कस्में खाते हैं तुम्हारे सामने ताके तुम्हें राज़ी कर दें। हालांके अल्लाह और उस का रसूल
ع	أَحَقُّ أَنْ يَرْضَوْهُ إِنْ كَانُوا مُؤْمِنِينَ ﴿١٢﴾ इस के ज़्यादा हक़दार हैं के वो उन को राज़ी करें अगर वो ईमान वाले हैं।
	أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَنْ يُحَادِدِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَأَنَّ क्या उन्हें मालूम नहीं के जो भी अल्लाह और उस के रसूल की मुखालफ़त करेगा तो यकीनन

لَهُ نَارٌ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ۚ ذَلِكَ الْخِزْيُ	
उस के लिए जहन्नम की आग है जिस में वो हमेशा रहेगा। ये भारी	
الْعَظِيمُ ۝ يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ	
खुस्वाई है। मुनाफिक इस से डरते हैं के उन पर कोई सूरत उतारी	
سُورَةً تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلْ اسْتَهِزْءُوا ۚ	
जाए जो खबर देती हो उन को उन चीजों की जो उन के दिलों में है। आप फरमा दीजिए के तुम मज़ाक उड़ाते रहो।	
إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُونَ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ	
यकीनन अल्लाह उसे ज़ाहिर करेगा जिस से तुम डरते हो। और अगर आप उन से सवाल करें	
لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِاللَّهِ	
तो ज़रूर कहेंगे के हम तो सिर्फ दिल्लगी और खेल कर रहे थे। आप फरमा दीजिए के क्या अल्लाह के साथ	
وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ۝	
और उस की आयतों और उस के रसूल के साथ तुम मज़ाक करते हो?	
لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ۚ إِنَّ نَعْفَ	
तुम उज़्र पेश मत करो, यकीनन तुम काफिर हो गए तुम्हारे ईमान लाने के बाद। अगर हम तुम में से	
عَنْ طَائِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبُ طَائِفَةً ۚ بِأَنَّهُمْ	
एक जमाअत को मुआफ करेंगे तो एक जमाअत को अज़ाब देंगे इस बिना पर	
كَانُوا مُجْرِمِينَ ۝ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُمْ	وَقَدْ
कि वो मुजरिम थे। मुनाफिक मर्द और मुनाफिक औरतें उन में से	وَقَدْ
مِّنْ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ	
एक दूसरे से हैं। वो बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से	
عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ ۚ نَسُوا اللَّهَ	
रोकते हैं और अपने हाथों को बन्द रखते हैं। उन्होंने ने भुला दिया अल्लाह को,	
فَنَسِيَهُمْ ۚ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ۝ وَعَدَ	
फिर अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया। यकीनन मुनाफिक वही नाफरमान हैं। अल्लाह ने	
اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ	
वादा किया है मुनाफिक मर्दों और औरतों और काफिरों से जहन्नम की	

جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ هِيَ حَسْبُهُمْ وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ

आग का जिस में वो हमेशा रहेंगे। ये उन को काफी है। और अल्लाह ने उन पर लानत की है।

وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝ كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ

और उन के लिए दाइमी अज़ाब है। तुम्हारा हाल उन के हाल की तरह है जो तुम से पेहले थे

كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَآكَثَرَ أَمْوَالًا وَ أَوْلَادًا

जो तुम से ज़्यादा कुव्वत वाले थे और तुम से ज़्यादा माल और औलाद वाले थे।

فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلْقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلْقِكُمْ

फिर उन्होंने ने अपने हिस्से से फाइदा उठाया, फिर तुम ने भी फाइदा उठा लिया तुम्हारे हिस्से से

كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلْقِهِمْ

जैसा के उन लोगों ने अपने हिस्से से फाइदा उठाया जो तुम से पेहले थे।

وَ خُضْتُمْ كَالَّذِي خَاضُوا ۖ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ

और तुम मज़ाक उड़ाने में लगे रहे जैसा के वो मज़ाक उड़ाते थे। उन के आमाल

أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ

हब्त हो गए दुनिया और आखिरत में। और यही लोग खसारा

الْخٰسِرُونَ ۝ أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ

उठाने वाले हैं। क्या उन के पास उन लोगों की खबर नहीं आई जो उन से पेहले थे

قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَ ثَمُودَ ۖ وَ قَوْمِ إِبْرٰهِيْمَ

कौमे नूह और कौमे आद और कौम समूद और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की कौम

وَ أَصْحَابِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَ ۖ اتَّتَهُمْ رُسُلُهُمْ

और मदयन वाले और उलट दी जाने वाली बस्तियों की। जिन के पास उन के पैगम्बर

بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوا

रोशन मोअजिज़ात ले कर आए। फिर अल्लाह ऐसा नहीं था के उन पर जुल्म करता, लेकिन वो

أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ

खुद अपनी जानों पर जुल्म करते थे। और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें

بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۖ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ

उन में से एक दूसरे के दोस्त हैं। वो नेकी का हुक्म देते हैं

وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ	हैं करते काइम नमाज़ और हैं रोकते से बुराई और
وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۝	हैं। करते इताअत की रसूल उस और अल्लाह और देते ज़कात और
أُولَٰئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝	है। हिक्मत वाला है, ज़बर्दस्त है, अल्लाह यकीनन करेगा। ही रहम पर अल्लाह उन लोगों
وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَدَنٍ	जन्तों का औरतों से और ईमान वाली मर्दों ईमान वाले वादा ने अल्लाह
تَجَرَّى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا	रहेंगे हमेशा में वो जिन में वो नेहरे बेहती होंगी जिन के नीचे से
وَمَسْكَنَ طَيِّبَةً ۚ فِيْ بَدَنٍ عَدْنٍ ۖ وَرِضْوَانٌ	और (उस ने वादा किया है) उम्दा रेहने की जगहों का जन्नाते अदन में। और अल्लाह की तरफ से
مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝	है। कामयाबी भारी ये है। नेअमत बड़ी से सब खुशनूदी
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ	ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप जिहाद कीजिए काफिरों से और मुनाफिकीन से
وَاعْلُظْ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝	है। और वो बुरी जगह है। और उन का ठिकाना जहन्नम है। और उन के बारे में सख्ती बरतिए। और
يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا ۖ وَلَقَدْ قَالُوا	वो अल्लाह की कस्में खाते हैं के ये बात उन्होंने ने नहीं कही। यकीनन उन्होंने ने
كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهُمْ	कुफ्र का कलिमा कहा और वो उन के इस्लाम के बाद काफिर हो गए और उन्होंने ने इरादा किया ऐसी चीज़ का जिस को वो
بِمَا لَمْ يَنْتَلُوا ۚ وَمَا نَقَمُوا إِلَّا أَنْ أَغْنَاهُمْ	हासिल न कर सके। और उन्हें बुरी नहीं लगी मगर ये बात के अल्लाह और उस के रसूल
اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ	ने उन्हें ग़नी कर दिया अपने फज़ल से। फिर अगर वो तौबा करेंगे तो ये

خَيْرًا لَهُمْ ۚ وَإِنْ يَتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمْ اللَّهُ	उन के लिए बेहतर होगा। और अगर वो ऐराज करेंगे तो अल्लाह उन्हें अज़ाब देंगे
عَذَابًا أَلِيمًا ۚ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ	दर्दनाक अज़ाब दुनिया और आखिरत में। और उन का
فِي الْأَرْضِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝	ज़मीन में कोई हिमायती और मददगार न होगा। और उन में से
مَنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰنَا مِنْ فَضْلِهٖ	कुछ लोग वो हैं जिन्होंने ने अल्लाह से अहद किया था के अगर वो हमें अपने फज़ल से देगा
لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝	तो हम ज़रूर सद्का करेंगे और हम सुलहा में से बन जाएंगे।
فَلَمَّآ اٰتٰهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ	फिर जब अल्लाह ने उन को अपने फज़ल से दिया तो उन्होंने ने उस में बुखल किया और वो लौटते हैं ऐराज
مُّعْرِضُوْنَ ۝ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِىْ قُلُوْبِهِمْ	करते हुए। फिर अल्लाह ने सज़ा के तौर पर उन के दिलों में निफाक डाल दिया
اِلٰى يَوْمٍ يَلْقَوْنَہٗ بِمَا اَخْلَفُوْا اللّٰهَ	उस दिन तक जिस दिन वो अल्लाह से मिलेंगे इस वजह से के उन्होंने ने अल्लाह से
مَا وَعَدُوْهُۥ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝ اَلَمْ يَعْلَمُوْا	वादाखिलाफी की और इस वजह से के वो झूठ बोलते हैं। क्या उन्हें मालूम नहीं
اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۚ وَاَنَّ اللّٰهَ	के अल्लाह जानता है उन के दिल की बात को और उन की सरगोशी भी और ये के अल्लाह
عَلٰمُ الْغُیُوْبِ ۝ الَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَوَّعِيْنَ	तमाम पोशीदा चीज़ों को खूब जानने वाला है। वो लोग जो ताना देते हैं सद्कात के
مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِى الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ	बारे में ईमान वालों में से सद्का करने वालों को और उन लोगों को जो नहीं पाते
اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۚ سَخَرَ اللّٰهُ	मगर अपनी ताक़त भर, फिर वो उन से मज़ाक करते हैं। अल्लाह भी उन से मज़ाक करता है।

مَنْهُمْ ز وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٩﴾ اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ	और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। आप उन के लिए
أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۖ إِنَّ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ	इस्तिग़फ़ार करें या न करें। अगर आप उन के लिए सत्तर मरतबा भी इस्तिग़फ़ार
مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۖ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ	करेंगे, फिर भी हरगिज़ अल्लाह उन की मग़फ़िरत नहीं करेगा। ये इस वजह से के उन्होंने ने
كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ	कुफ़्र किया अल्लाह के साथ और उस के रसूल के साथ। और अल्लाह नाफरमान कौम को हिदायत
الْفَاسِقِينَ ﴿٥٠﴾ فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلَافَ	नहीं देते। जिहाद से पीछे रहने वाले खुश हो गए अपने बैठे रहने पर
رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ يَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ	अल्लाह के रसूल के पीछे और उन्होंने ने नापसन्द किया के वो जिहाद करें अपने मालों
وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ	और जानों के ज़रिए अल्लाह के रास्ते में और उन्होंने ने कहा तुम भी इस गर्मी में मत निकलो।
قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا ۖ لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ﴿٥١﴾	आप फरमा दीजिए के जहन्नम की आग इस से भी ज़्यादा गर्म है। काश के वो समझते।
فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا ۖ جَزَاءً	फिर उन्हें चाहिए के वो कम हंसें और ज़्यादा रोएं। उन आमाल की सज़ा
بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾ فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ	के तौर पर जो वो करते थे। फिर अगर आप को अल्लाह लौटाए
إِلَى طَائِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَأْذِنُوا ۚ لِلْخُرُوجِ فَقُلْ	उन में से एक जमाअत की तरफ, फिर वो आप से इजाज़त तलब करें निकलने की तो आप केह दीजिए
لَنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا ۖ	के तुम मेरे साथ हरगिज़ कभी भी मत निकलो और हरगिज़ क़िताल मत करो मेरे साथ रह कर कभी भी किसी दुश्मन से।
إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ	इस लिए के तुम बैठे रहने पर राज़ी हो गए पेहली मरतबा में, तो अब तुम बैठे रहो

الْخَلِيفَيْنِ ۝ وَلَا تَصِلْ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ

पीछे रहने वालों के साथ। और उन में से किसी एक की जो मर जाए न कभी नमाज़े जनाज़ा

أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ ۖ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ

पड़िए, न उस की कब्र पर खड़े रहिए। इस लिए के उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ

وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ فَسِقُونَ ۝ وَلَا تُعْجِبْكَ

कृफ़ किया और वो मरे इस हाल में के वो फासिक थे। और उन के माल और उन की औलाद

أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ ۖ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ

आप को अच्छे न लगे। अल्लाह तो सिर्फ ये चाहते हैं के उन्हें

بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَرْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝

अज़ाब दें उस के ज़रिए दुनिया में और उन की जान निकले इस हाल में के वो काफिर हों।

وَإِذَا أَنْزَلْتُ سُورَةً أَنْ أَمِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا

और जब कोई सूरत उतारी जाती है के ईमान लाओ अल्लाह पर और तुम जिहाद करो

مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُوا الصَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا

अल्लाह के रसूल के साथ मिल कर तो उन में से इस्तिताअत वाले आप से इजाज़त तलब करते हैं और केहते हैं

ذَرْنَا نَكُنْ مَعَ الْقَعْدِيِّينَ ۖ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا

के आप हमें छोड़ दीजिए के हम बैठे रहने वालों के साथ रहें। वो पसन्द करते हैं इस को के वो

مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۝

पीछे रहने वालियों के साथ हों, और उन के दिलों पर मुहर लगा दी गई, फिर वो समझते नहीं।

لَكِنَّ الرُّسُولَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهِدُوا

लेकिन रसूल और वो लोग जो रसूल के साथ ईमान लाए हैं, उन्होंने ने जिहाद किया

بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۖ وَأُولَئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ ۖ

अपने मालों और जानों के ज़रिए। उन ही के लिए भलाइयाँ हैं।

وَأُولَئِكَ هُمُ الْبَافِلِحُونَ ۝ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ

और यही फलाह पाने वाले हैं। अल्लाह ने उन के लिए जन्नतें तय्यार कर रखी हैं

تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ

जिन के नीचे से नेहरें बेहती हैं, जिन में वो हमेशा रहेंगे।

ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَ جَاءَ الْمَعْدَرُونَ

ये भारी कामयाबी है। और अअराब में से उज़्र पेश करने वाले

مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَ قَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا

आए ताके उन्हें इजाज़त दी जाए और बैठे रह गए वो जिन्होंने ने अल्लाह

اللَّهُ وَ رَسُولَهُ ۖ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ

और उस के रसूल से झूठ बोला। अनकरीब उन में से काफिरों को दर्दनाक

عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَى

अज़ाब पहींचेगा। जुअफ़ा पर और बीमारों पर और उन पर कोई हर्ज नहीं

وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يَنْفِقُونَ حَرْجٌ

जो नहीं पाते वो माल जिसे वो खर्च करें

إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ

जब के वो अल्लाह और उस के रसूल के खैरखाह हों। नेकी करने वालों पर कोई इल्ज़ाम

مِنْ سَبِيلٍ ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَلَا عَلَى الَّذِينَ

नहीं है। और अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और न उन पर कोई हर्ज है के

إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ

जब वो आप के पास आते हैं के आप उन्हें सवारी दें तो आप फरमाते हैं के मैं नहीं पाता

مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۖ تَوَلَّوْا وَأَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ

वो सवारी जिस पर मैं तुम्हें सवार कराऊँ। तो वो वापस लौटते हैं इस हाल में के उन की आँखों से आंसू

مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا إِلَّا يَجِدُوا مَا يُنْفِقُونَ ۝ إِنَّمَا

बेह रहे होते हैं ग़म के मारे इस वजह से के वो नहीं पाते वो माल जिसे वो खर्च करें। इल्ज़ाम

السَّبِيلِ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ

तो सिर्फ़ उन लोगों पर है जो आप से इजाज़त तलब करते हैं इस हाल में के

أَغْنِيَاءُ ۚ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ ۚ

वो मालदार हैं। वो पसन्द करते हैं के वो पीछे रहने वालियों के साथ रहें।

وَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी है, फिर उन्हें मालूम भी नहीं।

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ ۚ قُلْ

वो तुम्हारी तरफ उज़्र पेश करेंगे जब उन की तरफ लौट कर जाओगे। आप फरमा दीजिए के तुम

لَا تَعْتَذِرُوا لَنْ تُؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ بَانَ اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ ۚ

उज़्र मत पेश करो, हम तुम्हारी बात हरगिज़ नहीं मानेंगे, इस लिए के अल्लाह ने हमें तुम्हारी पोशीदा बातों की खबर दे दी है।

وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ

अनकरीब अल्लाह और उस का रसूल तुम्हारा अमल देखेगा, फिर तुम लौटाए जाओगे

إِلَىٰ عِلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ

पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले अल्लाह की तरफ, फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों की जो तुम

تَعْمَلُونَ ۚ سَيُخْلِفُونَ بِاللهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ

करते थे। अनकरीब वो अल्लाह की कस्में खाएंगे तुम्हारे सामने जब तुम उन की तरफ पलट कर

إِلَيْهِمْ لَتُعْرِضُوا عَنْهُمْ ۚ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ ۚ إِنَّهُمْ

जाओगे ताके तुम उन से पैराज़ करो। इस लिए तुम उन से पैराज़ करो। इस लिए के वो

رَجِسٌ ۚ وَمَا لَهُمْ جَهَنَّمَ جَزَاءً ۚ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۚ

सरापा गन्दगी हैं। और उन का ठिकाना उन के कर्तूत की सज़ा में जहन्नम है।

يُخْلِفُونَ لَكُمْ لَتَرْضُوا عَنْهُمْ ۚ فَإِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ

वो तुम्हारे सामने कस्में खाते हैं ताके तुम उन से राज़ी हो जाओ। फिर अगर तुम उन से राज़ी हो भी जाओगे

فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۚ الْأَعْرَابُ

तब भी यकीनन अल्लाह नाफरमान कौम से राज़ी नहीं होंगे। अअराब

أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ

ज़्यादा सख्त कुफ़्र वाले और ज़्यादा सख्त निफाक वाले हैं और इस के ज़्यादा लाइक हैं के वो न समझें उस की हुदूद

مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ

को जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारी हैं। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُّ

और अअराब में से कुछ लोग वो हैं के जिसे वो खर्च करते हैं उसे तावान करार देते हैं और मुन्तज़िर रहेते

بِكُمْ الدَّوَائِرَ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ

हैं तुम पर ज़माने की गर्दिशों के। बुरा वक़्त उन्ही पर पड़ने वाला है। और अल्लाह सुनने वाले,

عَلَيْهِمْ ۝ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ

इल्म वाले हैं। और अअराब में से कुछ वो हैं जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आखिरी दिन

الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرْبَةً عِنْدَ اللَّهِ وَصَلَوَاتِ

पर और उन चीजों को जिसे वो खर्च करते हैं अल्लाह के यहाँ कुर्ब का ज़रिया समझते हैं और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

الرَّسُولِ ۖ إِلَّا إِتَّهَا قُرْبَةً لَهُمْ ۖ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ

की दुआ का ज़रिया समझते हैं। सुनो! यकीनन ये उन के लिए कुर्बत है। अनकरीब अल्लाह उन्हें अपनी

فِي رَحْمَتِهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَالسَّابِقُونَ

रहमत में दाखिल करेंगे। यकीनन अल्लाह बख्शाने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और पेहेल कर के

الْأُولُونَ مِنَ الْهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ

सबकत करने वाले मुहाजिरीन और अन्सार में से और उन में से

اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ ۖ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا

जिन्होंने ने उन का इत्तिबा किया नेकी में। अल्लाह उन से राज़ी हुवा और वो अल्लाह से राज़ी

عَنْهُ وَاعْدَ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

हुए और अल्लाह ने उन के लिए जन्नतें तय्यार कर रखी हैं जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَمِمَّنْ

जिन में वो हमेशा रहेंगे। ये भारी कामयाबी है। और उन अअराब में से भी

حَوْلَكُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ مُنْفِقُونَ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ ۖ

जो तुम्हारे इर्द गिर्द हैं उन में से भी मुनाफिक हैं और एहले मदीना में से।

مَرَدُّوا عَلَى النِّفَاقِ ۖ لَا تَعْلَمُهُمْ ۖ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۖ

कुछ निफाक में बहोत आगे निकल गए हैं, जिन को आप नहीं जानते। हम उन्हें जानते हैं।

سَنُعَذِّبُهُمْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ۝

अनकरीब हम उन्हें दुगनी सज़ा देंगे, फिर वो भारी अज़ाब की तरफ लौटाए जाएंगे।

وَالْآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا

और दूसरे वो हैं जिन्होंने ने अपने गुनाहों का ऐतेराफ किया जिन्होंने ने आमाले सालिहा और दूसरे बुरे

وَالْآخَرُ سَيِّئًا ۖ عَسَىٰ اللَّهُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ

कामों को खलत मलत कर दिया। उम्मीद है के अल्लाह उन की तौबा कबूल करेंगे। यकीनन अल्लाह

ۙ

ۙ

غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿۱۲﴾ خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ

बख्शाने वाले, निहायत रहम वाले हैं। आप उन के माल में से सदका लीजिए जो उन्हें पाक करे

و تَزَكِّيَهُمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ

और उन का तजकिया करे और आप उन के लिए दुआए रहमत कीजिए। यकीनन आप की दुआ उन के लिए सुकून का

لَهُمْ ۖ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿۱۳﴾ أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ

बाइस है। और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। क्या वो जानते नहीं के अल्लाह

هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ

आप अपने बन्दों की तरफ से तौबा कबूल करते हैं और सदकात कबूल फरमाते हैं

وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿۱۴﴾ وَقُلْ أَعْمَلُوا فَسَيَرَى

और ये के अल्लाह ही तौबा कबूल करने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और आप केह दीजिए के तुम अमल करते रहो,

اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ ۖ وَسَتُرَدُّونَ

अनकरीब तुम्हारा अमल अल्लाह और उस का रसूल और ईमान वाले देखेंगे। और अनकरीब तुम लौटाए जाओगे

إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ

पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले की तरफ, फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों की

تَعْمَلُونَ ۚ وَآخِرُونَ مُرْجُونَ ۚ لِأَمْرِ اللَّهِ

जो तुम करते थे। और दूसरे वो हैं जिन का मुआमला अल्लाह का हुक्म आने तक मुल्लवी है,

إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ

या अल्लाह उन को अज़ाब दे या उन की तौबा कबूल करे। और अल्लाह इल्म वाले,

حَكِيمٌ ﴿۱۵﴾ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضَرَارًا وَكُفْرًا

हिक्मत वाले हैं। और वो लोग जिन्होंने मस्जिद बनाई इस्लाम को नुकसान पहुँचाने के लिए और कुफ्र के लिए

وَتَفْرِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِّبَن حَارَبَ

और ईमान वालों के दरमियान तफरक़ा डालने के लिए और उस शख्स के घात लगाने में जो अल्लाह और उस के

اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَا

रसूल के साथ पेहले से जंग कर रहा है। और ये लोग कस्में खा कर केहते हैं के हम ने तो सिर्फ

إِلَّا الْحُسْنَىٰ ۖ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿۱۶﴾ لَا تَقُمْ

भलाई का इरादा किया है। हालांकि अल्लाह गवाही देते हैं के यकीनन ये झूठे हैं। आप उस मस्जिद में

فِيهِ أَبَدًا ۖ لَمْ يَجِدْ أَسَسَ عَلَى التَّقْوَى مِنْ أَوَّلِ

कभी भी खड़े न हों। अलबत्ता वो मस्जिद जिस की बुन्याद तक्वा पर रखी गई है पेहले

يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ ۖ فِيهِ رَجَالٌ يُحِبُّونَ

दिन से वो इस की ज़्यादा मुस्तहिक है के आप उस में खड़े हों। (इस लिए के) उस में ऐसे मर्द हैं

أَنْ يَتَطَهَّرُوا ۖ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ ﴿٩﴾ أَفَمَنْ أَسَسَ

जो पाक रेहना पसन्द करते हैं। और अल्लाह भी पाक रेहने वालों को पसन्द करते हैं। क्या फिर वो शख्स जिस ने

بُنْيَانَهُ عَلَى تَقْوَى مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ

मस्जिद की बुन्याद अल्लाह की खशीयत और उस की रिज़ा पर रखी है वो ज़्यादा बेहतर है या वो

أَسَسَ بُنْيَانَهُ عَلَى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ

जिस ने उस की बुन्याद गिरने वाली खाई के किनारे पर रखी हो जो उसे ले कर

فِي نَارٍ جَهَنَّمَ ۖ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠﴾

जहन्नम की आग में गिर जाए। और अल्लाह ज़ालिम कौम को हिदायत नहीं देते।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ

उन की बनाई हुई तामीर बराबर उन के दिलों में शक (का कांटा) बनी रहेगी

إِلَّا أَنْ تَقْطَعَ قُلُوبُهُمْ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١﴾ إِنَّ اللَّهَ

यहां तक के उन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। यकीनन अल्लाह

اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ

ने ईमान वालों से खरीद लीं उन की जानें और उन के माल

بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةُ ۖ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ

इस के इवज़ के उन के लिए जन्नत है। वो अल्लाह के रास्ते में क़िताल करते हैं, फिर क़त्ल करते हैं

وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ

और क़त्ल होते हैं। ये अल्लाह के ज़िम्मे सच्चा वादा है तौरात और इन्जील

وَالْقُرْآنِ ۖ وَمَنْ أَوْفَى بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا

और कुरआन में। और कौन है अल्लाह से बढ़ कर अपने अहद को पूरा करने वाला? तो तुम खुश हो जाओ

بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ۖ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

अपने उस सौदे पर जो तुम ने किया है। और ये भारी

الْعَظِيمُ ۥ التَّابُونَ الْعِبْدُونَ الْحِمْدُونَ

कामयाबी है। जो तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, हम्द करने वाले हैं,

السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّجِدُونَ الْآمِرُونَ

जिहाद करने वाले हैं, रूकूअ करने वाले हैं, सज्दा करने वाले हैं, अम्र

بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَفِظُونَ

बिल मारुफ और नही अनिल मुन्कर करने वाले हैं और अल्लाह की हुदूद की

لِحُدُودِ اللَّهِ ۖ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۥ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ

हिफाज़त करने वाले हैं। और ईमान वालों को बशारत सुना दीजिए। नबी के लिए

وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا

और ईमान वालों के लिए मुनासिब नहीं हैं के वो इस्तिगफार करें मुशरिकीन के लिए अगर वो

أُولَىٰ قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ

रिश्तेदार क्यों न हों इस के बाद के उन के लिए वाज़ेह हो गया के वो दोज़खी

الْبَحِيمِ ۥ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ

हैं। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का इस्तिगफार अपने अब्बा के लिए नहीं था मगर एक वादे की वजह

إِلَّا عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ ۖ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ

से जो उन्होंने ने उन से किया था। लेकिन जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के सामने वाज़ेह हो गया के ये अल्लाह का दुश्मन है तो

عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۖ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ۥ

उस से उन्होंने ने बराअत कर ली। यकीनन इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) बहोत ज़्यादा अल्लाह की तरफ रूजूअ होने वाले, हिल्म वाले थे।

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ

और अल्लाह ऐसा नहीं है के किसी कौम को गुमराह करे उन्हें हिदायत देने के बाद

حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ ۖ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۥ

जब तक उन पर वाज़ेह न कर दे के किन बातों से उन्हें बचना है। यकीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं।

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ

यकीनन अल्लाह ही के लिए आसमानों और ज़मीनों की सलतनत है। वो ज़िन्दा करता है और मौत देता है।

وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۥ لَقَدْ

और तुम्हारे लिए अल्लाह के अलावा कोई कारसाज़ और मददगार नहीं है। यकीनन

تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ

अल्लाह ने तवज्जुह फरमाई नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर और मुहाजिरीन और अन्सार पर जिन्होंने ने

اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का साथ दिया तंगी की घड़ी में इस के बाद के उन में से एक जमाअत

قُلُوبُ فَرِيقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّهُ بِهِمْ رَءُوفٌ

के दिल मुतज़लज़िल होने लगे, फिर अल्लाह उन पर महरबान हुवा। यकीनन वो उन पर महरबान,

رَّحِيمٌ ۝ وَ عَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خَلَفُوا

निहायत रहम वाला है। और (यकीनन तौबा कबूल की) उन तीन सहाबा की जिन का मुआमला मुलतवी छोड़ दिया गया।

حَتَّىٰ إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ

यहां तक के जब उन पर ज़मीन तंग हो गई अपनी वुस्तत के बावजूद और उन पर

عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَنْ لَا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ

उन की जानें तंग हो गई और उन्होंने ने समझा के अल्लाह से कोई छुपने की जगह नहीं

إِلَّا إِلَيْهِ ۚ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ

मगर उसी के पास। फिर अल्लाह ने उन की तौबा कबूल की ताके वो तौबा करते रहें। यकीनन अल्लाह तौबा कबूल करने वाला

الرَّحِيمُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا

निहायत रहम वाला है। ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चों

مَعَ الصّٰدِقِينَ ۝ مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ

के साथ रहो। एहले मदीना के लिए और उन अअराब के लिए जो उन के

حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ

इर्द गिर्द हैं ये मुनासिब नहीं है के वो अल्लाह के रसूल से पीछे रहें

وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنْفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ۚ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ज़ाते आली को छोड़ कर के अपनी जानों से रग़बत रखें। ये इस वजह से के

لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ

उन्हें लगती नहीं प्यास और थकावट और भूक अल्लाह के

اللَّهِ وَلَا يَطُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ

रास्ते में और वो नहीं रौंदते किसी चलने की जगह को जो कुफ़ार को गुस्सा दिलाती हो और वो नहीं छीनते

مِنْ عَدُوِّ نِيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ

दुश्मन से कोई चीज़ मगर उन के लिए उस के इवज़ अमले सालेह लिखा जाता है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَلَا يُنْفِقُونَ

यकीनन अल्लाह नेकी करने वालों का अज़्र जायेअ नहीं करते। और वो खर्च नहीं करते

نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا

कोई छोटा खर्च और न बड़ा खर्च और न किसी वादी को क़तअ करते हैं

إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

मगर उन के लिए वो लिखा जाता है ताके अल्लाह उन्हें बदला दे उन अच्छे कामों का जो वो करते थे।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ

और ईमान वालों के लिए मुनासिब नहीं है के वो सारे के सारे निकल खड़े हों। फिर ऐसा क्यूं नहीं करते

مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ

के उन की हर बड़ी जमाअत में से एक गिरोह निकले ताके दीन की समझ हासिल करे

وَ لِيُنْذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ

और ताके अपनी कौम को डराए जब उन की तरफ वापस लौटे, हो सकता है के वो

يَحْذَرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ

मुतनब्बेह हो जाएं। ऐ ईमान वालो! तुम क़िताल करो उन

يُلُونَكُمْ مِنَ الْكُفَّارِ وَلِيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَاعْلَمُوا

कुफ़्फार से जो तुम्हारे करीब हैं और चाहिए के वो तुम में शिद्दत को महसूस करें। और तुम जान लो

أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْبَاقِينَ ۝ وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُمْ

के अल्लाह मुत्तकियों के साथ है। और जब भी कोई सूरत उतारी जाती है तो उन में से कुछ लोग

مَنْ يَقُولُ أَيْكُمُ زَادَتْهُ هَذِهِ إِيمَانًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ

ऐसे हैं जो केहते हैं के तुम में से किस के ईमान को इस सूरत ने ज़्यादा कर दिया? फिर अलबत्ता जो

آمَنُوا فَرَادَتْهُمْ إِيمَانًا ۚ وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝

ईमान वाले हैं तो ये सूरत उन्हें ईमान में बढ़ाती है और वो उस से खुश होते हैं।

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ

और अलबत्ता जिन के दिलों में मर्ज़ है, तो इस सूरत ने उन की गन्दगी के साथ गन्दगी

رَجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿۵﴾ أَوَلَا يَرَوْنَ

और बढ़ा दी और वो मरते हैं इस हाल में के वो काफिर होते हैं। क्या वो देखते नहीं हैं

أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ

के उन्हें आजमाइश में डाला जाता है हर साल एक मरतबा या दो मरतबा, फिर भी

لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذْكُرُونَ ﴿۶﴾ وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ

न वो तौबा करते हैं और न नसीहत पकड़ते हैं। और जब कोई सूरत उतारी जाती है

نَظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ هَلْ يَرِيكُمْ مِّنْ أَحَدٍ

तो उन में से एक दूसरे की तरफ देखते हैं के क्या तुम्हें किसी ने देखा तो नहीं?

ثُمَّ انْصَرَفُوا ۖ صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ

फिर वो सरक जाते हैं। अल्लाह ने उन के दिलों को फेर दिया इस वजह से के वो ऐसी कौम है

لَا يَفْقَهُونَ ﴿۷﴾ لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ

जो समझती नहीं। यकीनन तुम्हारे पास रसूल आए तुम ही में से जिन पर भारी है वो

عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ

चीज़ जो तुम्हें मशक्कत में डाले, वो तुम पर हरीस है, ईमान वालों के साथ बहोत ज़्यादा महरबान, निहायत

رَحِيمٌ ﴿۸﴾ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۚ لَا إِلَهَ

रहम वाले हैं। फिर अगर वो ऐराज़ करें तो आप फरमा दीजिए के मुझे अल्लाह काफी है। उस के सिवा कोई

إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿۹﴾

माबूद नहीं। उसी पर मैं ने तवक्कुल किया और वो अर्शे अज़ीम का रब है।

عَجَبٌ

رُكُوعَاتُهَا ۥ

(۱۰) سُورَةُ يُوسُفَ مَكِّيَّةٌ (۵۱)

آيَاتُهَا ۱۰۹

और ११ रूकूअ हैं

सूरह यूनस मक्का में नाज़िल हुई

उस में १०६ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الْقُرْآنَ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ۝ أَكَانَ لِلنَّاسِ

अलिफ लाम रौ। ये हिकमत वाली किताब की आयतें हैं। क्या लोगों के लिए ये बात

عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَى رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ

बाइसे तअज्जुब हुई के हम ने उन्ही में से एक शख्स की तरफ वही की के लोगों को डराओ

الْقُرْآنَ الثَّالِثُ (۳)

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ

और ईमान वालों को बशारत सुनाओ इस बात की के उन के लिए उन के रब के पास पूरा

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَذَا السَّحَرُ مُبِينٌ ۝

मरतबा है। काफिरों ने कहा के यकीनन ये साफ जादूगर है।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ

यकीनन तुम्हारा रब वो अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया

فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۚ

छे दिन में, फिर वो अर्श मर मुस्तवी हुवा, वही तमाम उमूर की तदबीर करता है।

مَا مِنْ شَفِيعٍ إِلَّا مِنْ بَعْدِ إِذْنِهِ ۚ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ

कोई सिफारिश करने वाला नहीं मगर उस की इजाज़त के बाद। यही अल्लाह तुम्हारा रब है,

فَاعْبُدُوهُ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۚ

तो उसी की इबादत करो। क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? उसी की तरफ तुम सब को लौट कर जाना है।

وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا ۚ إِنَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ

ये अल्लाह का बरहक़ वादा है। यकीनन वही मखलूक को पेहली मरतबा पैदा करता है, फिर वही उस को दोबारा पैदा करेगा ताके

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ ۚ وَالَّذِينَ

वो इन्साफ से बदला दे उन लोगों को जो ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे। और

كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ بِمَا كَانُوا

काफिरों के लिए खौलता हुवा पानी पीने को मिलेगा और दर्दनाक अज़ाब होगा इस वजह से के वो

يَكْفُرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ

कुफ़र करते थे। वही अल्लाह है जिस ने सूरज को रोशन बनाया और चाँद को

نُورًا ۚ وَقَدَرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ

नूरानी बनाया और उसी ने उस की मन्ज़िलों की मिक़दार मुतअय्यन की ताके तुम सालों की गिन्ती और हिसाब

وَالْحِسَابُ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ يُفَصِّلُ

मालूम करो। उस को अल्लाह ने नहीं बनाया मगर फाइदे के साथ। वो तमाम आयतों की

الآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ

तफसील करता है ऐसी कौम के लिए जो समझ रखती है। यकीनन रात और दिन के आने

وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا يَتَّبِعُونَ

जाने में और उन चीजों के पैदा करने में जिस को अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा किया अलबत्ता निशानियाँ

لَقَوْمٍ يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا

हैं ऐसी कौम के लिए जो डरती है। यकीनन वो लोग जो हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते और जिन्होंने ने दुन्यवी

بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنُّوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا

ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया है और उस पर मुतमइन हैं और जो हमारी आयतों से

غَفِلُونَ ۚ أُولَٰئِكَ مَا لَهُمْ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

गाफिल हैं। उन का ठिकाना दोज़ख है उन आमाल की वजह से जो वो कर रहे हैं।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ

यकीनन वो लोग जो ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे उन को उन का रब उन के ईमान की वजह से

بِأَيِّمَانِهِمْ ۚ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّتِ

हिदायत देगा। उन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी जन्नाते नईम

التَّعِيمِ ۚ دَعْوُهُمْ فِيهَا سُبْحَنَكَ اللَّهُمَّ وَ تَحِيَّتُهُمْ

में। उन की पुकार उन में होगी “سُبْحَنَكَ اللَّهُمَّ” (ऐ अल्लाह! तेरी ज़ात پاک है) और उन का तहीय्या

فِيهَا سَلَامٌ ۚ وَآخِرُ دَعْوُهُمْ أَنْ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ

उन में सलाम होगा। और उन की आखिरी दुआ उन में ये होगी के “الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ

الْعَالَمِينَ ۝ وَلَوْ يَعْجَلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ

”। और अगर अल्लाह इन्सानों के लिए बुराई (अज़ाब) में जल्दी करे, उन के भलाई में जल्दी

بِالْخَيْرِ لَقَضَىٰ إِلَيْهِمْ أَجْلَهُمْ ۚ فَذَرُ الَّذِينَ

करने की तरह तो उन की अजल आ चुकी होती। इस लिए हम उन लोगों को जो हम से

لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ وَإِذَا مَسَّ

मिलने की उम्मीद नहीं रखते उन को उन की सरकशी में सरगरदाँ छोड़ रहे हैं। और जब इन्सान

الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنبَةٍ أَوْ قَائِمًا ۚ

को तकलीफ पहुँचती है तो वो हमें पुकारता है अपने पेहलू पर लेटे या बैठे हुए या खड़े हो कर।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَنْ لَّمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ

फिर जब हम उस से उस की तकलीफ दूर कर देते हैं तो ऐसे आगे बढ़ जाता है जैसा के उस ने हमें पुकारा ही नहीं था किसी तकलीफ

ضُرِّ مَسَّهُ ۖ كَذَلِكَ زَيْنَ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿۱۱﴾

की वजह से जो उसे पहुँची थी। इसी तरह इसराफ करने वालों के लिए मुजय्यन किए गए वो आमाल जो वो कर रहे हैं।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونََ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۖ

और यकीनन हम ने तुम से पेहली कौमों को हलाक किया जब उन्होंने ने जुल्म किया,

وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا ۖ

हालांकि उन के पास उन के पैगम्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए थे लेकिन वो ईमान नहीं लाते थे।

كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْجَرِيمِينَ ﴿۱۲﴾ ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ

इसी तरह हम मुजरिम कौम को सज़ा देंगे। फिर हम ने तुम्हें

خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ

जमीन में उन के बाद जानशीन बनाया ताकि हम देखें के तुम कैसे

تَعْمَلُونَ ﴿۱۳﴾ وَإِذَا تَثَلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۖ قَالَ

अमल करते हो। और जब उन पर हमारी साफ साफ आयतें तिलावत की जाती हैं तो वो लोग केहते हैं

الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا إِنَّا بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَذَا

जो हमारी मुलाकात की उम्मीद नहीं रखते के तुम उस के अलावा कुरआन ले आओ

أَوْ بَدَّلَهُ ۖ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَائِي

या उसे बदल दो। आप फरमा दीजिए के मेरी ये मजाल नहीं के मैं उसे बदल दूँ अपनी

نَفْسِي ۚ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُؤْتَىٰ إِلَيَّ ۚ إِنِّي أَخَافُ

तरफ से। मैं तो सिर्फ उस का इत्तिबा करता हूँ जो मेरी तरफ वही किया जा रहा है। यकीनन मैं डरता हूँ

إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿۱۴﴾ قُلْ لَوْ شَاءَ

भारी दिन के अज़ाब से अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूँ। आप फरमा दीजिए के अगर

اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرِكُمْ بِهِ ۖ فَقَدْ

अल्लाह चाहता तो मैं उसे तुम पर तिलावत न करता और मैं तुम्हें उस की खबर न देता। यकीनन

لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّن قَبْلِهِ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿۱۵﴾ فَمَن

मैं तुम्हारे साथ इस से पेहले उम्र के कई साल रहा। क्या फिर तुम्हें अक्ल नहीं है? फिर उस से

أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۖ

ज्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या अल्लाह की आयतों को झुठलाए?

إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْبُجْرُمُونَ ﴿١٤﴾ وَ يَعْبُدُونَ

यकीनन मुजरिम लोग फलाह नहीं पाएंगे। और ये अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीजों की

مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ

इबादत करते हैं जो उन्हें न ज़रूर पहुँचा सकती हैं, न नफा पहुँचा सकती हैं, और ये कहते हैं के

هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ۖ قُلْ أَتَنْبِئُونَ اللَّهَ

ये हमारे सिफारिशी हैं अल्लाह के यहाँ। आप फरमा दीजिए के क्या तुम अल्लाह को खबर देते हो

بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى

ऐसी चीज़ की जो अल्लाह नहीं जानता आसमानों में और ज़मीन में। अल्लाह پاک है और बरतर है

عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٥﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً

उन चीज़ों से जिसे वो शरीक ठेहरा रहे हैं। और तमाम इन्सान नहीं थे मगर एक ही उम्मत,

فَاخْتَلَفُوا ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ

फिर वो अलग अलग हो गए। और अगर एक बात तेरे रब की तरफ से पेहले से हो चुकी न होती तो उन के

بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٦﴾ وَ يَقُولُونَ

दरमियान फैसला कर दिया जाता उस में जिस में वो इखतिलाफ कर रहे हैं। और ये कहते हैं के

لَوْلَا أَنْزَلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّنْ رَبِّهِ ۚ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ

उस पर उस के रब की तरफ से कोई आयत क्यूँ नहीं उतारी गई? आप फरमा दीजिए के ग़ैब तो सिर्फ

لِلَّهِ فَانْتَظِرُوا ۚ إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿١٧﴾

अल्लाह के लिए है, तो तुम मुन्तज़िर रहो। यकीनन मैं तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ।

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَّسَّتْهُمْ

और जब इन्सानों को हम रहमत का मज़ा चखाते हैं किसी तकलीफ के बाद जो उन्हें पहुँची हो

إِذَا لَهُمْ مَكْرٌ فِي آيَاتِنَا ۚ قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ

तो अचानक हमारी आयतों में उन का मक्र शुरू हो जाता है। आप फरमा दीजिए के अल्लाह जल्द तदबीर वाला है।

إِن رُّسُلَنَا يَكْتُوبُونَ مَا تَبْكُرُونَ ﴿١٨﴾ هُوَ الَّذِي

यकीनन हमारे भेजे हुए फरिश्ते लिख रहे हैं उसे जो तुम मक्र करते हो। वही अल्लाह

يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي

तुम्हें सफर कराता है खुशकी में और समन्दर में। यहां तक के जब तुम कशती में

الْفَلَكَ ۚ وَ جَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَ فَرِحُوا بِهَا

होते हो और वो कशतियाँ उन्हें ले कर चलती हैं उम्दा हवा के साथ और वो उस पर खुश होते हैं

جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَ جَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ

तो कशती पर तूफानी हवा आ जाती है और उन पर मौज आ जाती है हर तरफ से

مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ ۚ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ

और वो समझते हैं के उन्हें घेर लिया गया। तो वो अल्लाह को पुकारने लगते हैं उसी के लिए इबादत को खालिस

لَهُ الدِّينَ ۚ لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ

करते हुए के अगर तू हमें इस से नजात देगा तो हम शुक्र अदा करने वालों में से

مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝ فَلَمَّا أَجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ

बन जाएंगे। फिर जब अल्लाह उन्हें बचा लेता है तो अचानक वो नाहक ज़मीन में सरकशी

بَغْيٍ الْحَقِّ ۚ يَأْتِيهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيَكُمْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ ۚ

करने लगते हैं। ऐ इन्सानो! तुम्हारी सरकशी का वबाल तुम्हारी जानों ही के खिलाफ पड़ेगा।

مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ

ये दुन्यवी ज़िन्दगी का नफा उठाना है। फिर हमारी तरफ तुम्हें वापस आना है, फिर हम तुम्हें खबर देंगे

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

उन कामों की जो तुम करते थे। दुन्यवी ज़िन्दगी का हाल तो

كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ

उस पानी की तरह है जिसे हम ने आसमान से बरसाया, फिर उस के साथ ज़मीन का सबज़ा

الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ ۚ حَتَّىٰ

मिल गया उस चीज़ में से जिस को इन्सान और चौपाए खाते हैं। यहां तक के

إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا

जब ज़मीन ने अपनी ज़ीनत ले ली और मुज़य्यन हो गई और ज़मीन वालों ने समझा

أَنَّهُمْ قَدِرُونَ عَلَيْهَا ۚ أَتَاهَا أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا

के वो उस पर क़दिर हैं, तो उस पर हमारा हुक्म आ गया रात के वक्त या दिन के वक्त,

فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَنْ لَّمْ تَغْنَبْ بِالْأَمْسِ ۚ كَذَلِكَ

फिर हम ने उस को कटी हुई खेती बना दी गोया के वो कल को आबाद ही नहीं हुई थी। इसी तरह

نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿۳۷﴾ وَاللَّهُ يَدْعُوا

हम आयतों को तफसील से बयान करते हैं ऐसी कौम के लिए जो सोचती है। और अल्लाह दाखलसलाम की तरफ

إِلَى دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿۳۸﴾

बुलाते हैं। और सीधे रास्ते की तरफ हिदायत देते हैं उस शख्स को जिसे वो चाहते हैं।

لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ ۚ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ

उन लोगों के लिए जिन्होंने ने भलाई की अच्छा बदला है और मज्दीद भी मिलेगा। और उन के चेहरों पर न

قَتَرٌ ۚ وَلَا ذِلَّةٌ ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا

(शरमिन्दगी की) सियाही होगी, न ज़िल्लत। ये लोग जन्नती हैं। वो उस में हमेशा

خَالِدُونَ ﴿۳۹﴾ وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ

रहेंगे। और जिन लोगों ने बुराई कमाई तो उन के लिए उसी जैसी बुराई का

بِئْسَ مَا تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ مَا لَهُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ

बदला मिलेगा। और उन को ज़िल्लत ढांप लेगी। कोई उन को अल्लाह से बचाने वाला न होगा।

كَانَمًا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطْعًا مِّنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا ۚ

गोया के उन के चेहरे ढांप दिए गए होंगे तारीक रात के टुकड़ों से।

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿۴۰﴾ وَيَوْمَ

ये दोज़खी हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे। और जिस दिन

نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا

हम उन तमाम को इकट्ठा करेंगे, फिर मुशरिकीन से कहेंगे के

مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاؤُكُمْ ۖ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَ قَالَ

तुम और तुम्हारे शुरका अपनी जगह पर रहो। फिर हम उन के दरमियान जुदाई कर देंगे और उन के शुरका

شُرَكَاؤُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ﴿۴۱﴾ فَكَفَىٰ بِاللَّهِ

कहेंगे के तुम हमारी इबादत नहीं करते थे। फिर अल्लाह हमारे

شَهِيدًا ۖ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ

और तुम्हारे दरमियान काफी गवाह है के यकीनन हम तुम्हारी इबादत से

لَغَفْلِينَ ﴿۴۲﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوا كُلُّ نَفْسٍ مَّا أَسْلَفَتْ

बेखबर थे। वहां हर शख्स मालूम कर लेगा उन आमाल को जो उस ने आगे भेजे

عَنْ

وَمُرُدُّوْا۟ اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰهُمُ الْحَقُّ وَضَلَّ عَنْهُمْ

और वो लौटाए जाएंगे अल्लाह की तरफ जो उन का हकीकी मौला है और उन से खो जाएंगे

مَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ

जिसे वो झूठ गढ़ते थे। आप फरमा दीजिए कौन तुम्हें रोजी देता है आसमान से

وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَمْلِكُ السَّبْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ

और ज़मीन से? या कौन सिमाअत और बसारत पर कादिर है? और कौन

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ

ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है? और मुर्दा को ज़िन्दा से

مِّنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ

निकालता है? और कौन तमाम उमूर की तदबीर करता है? तो अनकरीब वो कहेंगे अल्लाह। फिर आप फरमा दीजिए

اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ فَذَلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ الْحَقُّ ۚ فَاِذَا بَعَدَ

के तुम डरते क्यों नहीं हो? फिर यही अल्लाह तुम्हारा हकीकी रब है। फिर हक के

الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚ فَاِنِّيْ تُصْرَفُوْنَ ۝ كَذٰلِكَ حَقَّتْ

बाद सिवाए गुमराही के क्या है? फिर तुम कहाँ फेरे जा रहे हो? इसी तरह आप के रब के कलिमात

كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْۤا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

साबित हो गए उन पर जो नाफरमान हैं के वो ईमान नहीं लाएंगे।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَّنْ يَّبْدُوْۤا الْخَلْقَ

आप फरमा दीजिए क्या तुम्हारे शुरका में से कोई है जो मखलूक को पेहली मरतबा पैदा करे, फिर उस को

ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ۚ قُلِ اللّٰهُ يَّبْدُوْۤا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ۚ فَاِنِّيْ

दोबारा पैदा करे? आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही मखलूक को पेहली मरतबा पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा। फिर

تُؤْفَكُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْ

तुम कहाँ उलटे फिरे जा रहे हो? आप फरमा दीजिए तुम्हारे शुरका में से कोई है जो हक की तरफ रहनुमाई

اِلَى الْحَقِّ ۚ قُلِ اللّٰهُ يَّهْدِيْ لِلْحَقِّ ۚ اَفَمَنْ يَّهْدِيْ

करे? आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही हक की तरफ रहनुमाई करता है। फिर जो हक की तरफ रहनुमाई करता है

اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُتَّبَعَ اَمَّنْ لَا يَّهْدِيْ ۚ اِلَّا اَنْ يُّهْدٰى

वो इस के ज़्यादा लाइक है के उस का इत्तिबा किया जाए या वो जो रास्ता नहीं पाता मगर ये के उसी की रहनुमाई की जाए।

فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٢٥﴾ وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ

फिर तुम्हें क्या हुआ? तुम कैसे फैसले करते हो? और उन में से अक्सर नहीं चलते मगर गुमान के

إِلَّا ظَنًّا ۚ إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ

पीछे। यकीनन गुमान हक के मुकाबले में कोई भी काम नहीं देता। यकीनन अल्लाह

عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٦﴾ وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ

खूब जानता है उन कामों को जो वो कर रहे हैं। और ये कुरआन ऐसा नहीं है

أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ

के उस का घड़ लिया जाए अल्लाह के सिवा (किसी और की तरफ से) लेकिन (ये कुरआन) उस को सच्चा बताता है जो पेहले

يَدِيهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ

से था और तमाम किताबों की तफसील करने वाला है, इस में कोई शक नहीं, ये रब्बुल आलमीन

الْعَالَمِينَ ﴿٢٧﴾ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ

की तरफ से है। क्या ये केहते हैं के इस नबी ने उस को घड़ लिया है? आप फरमा दीजिए के फिर तुम उस के

مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ

जैसी एक सूरत ले आओ और बुलाओ उन सब को जिन की ताकत रखते हो अल्लाह के अलावा

إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٨﴾ بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ

अगर तुम सच्चे हो। बल्के उन्होंने ने झुठलाया उस चीज़ को जिस के इल्म का उन्होंने ने इहाता नहीं किया

وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ ۚ كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ

और अब तक उन के पास उस की हकीकत नहीं आई। इसी तरह उन लोगों ने झुठलाया जो

مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾

उन से पेहले थे, फिर आप देखिए के ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुआ?

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَا يُّؤْمِنُ بِهِ ۚ

फिर उन में से कुछ लोग वो हैं जो उस पर ईमान रखते हैं और उन में से कुछ लोग वो हैं जो उस पर ईमान नहीं लाते।

وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٣٠﴾ وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ

और आप का रब फसाद फैलाने वालों को खूब जानता है। और अगर ये आप को झुठलाएं तो आप फरमा दीजिए

لِي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ أَنْتُمْ بَرِّيُّونَ مِنَّا أَعْمَلُ

के मेरे लिए मेरा अमल है और तुम्हारे लिए तुम्हारा अमल है। तुम बरी हो मेरे अमल से

وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٣١﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُونَ

और मैं बरी हूँ तुम्हारे अमल से। और उन में से कुछ लोग वो हैं जो आप की तरफ कान

إِلَيْكَ ۖ أَفَأَنْتَ تَسْمِعُ الصَّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ﴿٣٢﴾

लगाते हैं। क्या फिर आप बेहरों को सुना सकते हैं अगर्चे उन्हें अक्ल भी न हो?

وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَنْتَظِرُ إِلَيْكَ ۖ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْى

और उन में कुछ लोग वो हैं जो आप की तरफ देखते हैं। क्या फिर आप अन्धे को रास्ता दिखा सकते हैं

وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ﴿٣٣﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ

अगर्चे वो देख न सकते हों? यकीनन अल्लाह इन्सानों पर कुछ भी जुल्म

شَيْئًا وَلَٰكِنَّ النَّاسَ أَنْفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٤﴾ وَيَوْمَ

नहीं करता, लेकिन लोग अपने आप पर जुल्म करते हैं। और जिस दिन

يَحْشُرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ

अल्लाह उन को इकट्ठा करेगा तो गोया के वो ठेहरे ही नहीं थे मगर दिन की एक घड़ी।

يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۖ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ

वो आपस में एक दूसरे को पेहचानते होंगे। यकीनन नुकसान उठाया उन लोगों ने जिन्होंने ने झुठलाया

اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٣٥﴾ وَإِنَّمَا تُرِيَّتكَ بَعْضَ

अल्लाह की मुलाक़ात को और वो हिदायतयाफ़्त नहीं हुए। और अगर हम आप को दिखाएं उस का कुछ हिस्सा

الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفِّيكَ ۖ فَالَيْنَا مَرْجِعُهُمْ

जिस से हम उन को डरा रहे हैं या हम आप को वफ़ात दें, फिर हमारी तरफ उन्हें वापस आना है,

ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ

फिर अल्लाह गवाह है उन कामों पर जो वो कर रहे हैं। और हर एक उम्मत के लिए एक

رَسُولٌ ۚ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ

रसूल है। फिर जब उन का रसूल आ जाता है तो उन के दरमियान इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जाता है

وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٣٧﴾ وَ يَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ

और उन पर जुल्म नहीं किया जाता। और ये कहते हैं के ये वादा कब पूरा होगा

إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا

अगर तुम सच्चे हो? आप फरमा दीजिए के मैं खुद अपने लिए नफा और ज़रर

وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۖ إِذَا جَاءَ

का मालिक नहीं मगर जितना अल्लाह चाहे। हर एक उम्मत के लिए एक आखिरी मुक़रर किया हुआ वक़्त है। जब उन का

أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۚ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝

आखिरी वक़्त आ जाता है तो वो एक घड़ी न पीछे हट सकते हैं और न एक घड़ी आगे बढ़ सकते हैं।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا

आप फरमा दीजिए तुम्हारी क्या राय है अगर तुम्हारे पास अल्लाह का अज़ाब रात के वक़्त आए या दिन के वक़्त,

مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ۝ أَتُمْ إِذَا مَا وَقَعَ

तो मुजरिम लोग किस चीज़ की जल्दी मचा रहे हैं? क्या फिर जब वो अज़ाब वाक़ेअ हो जाएगा तब तुम

أَمَنْتُمْ بِهِ ۚ آلَيْنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۝

उस पर ईमान लाओगे? (तब तो कहा जाएगा के) अब (ईमान लाते हो?) हालांकि तुम उस को जल्दी तलब कर रहे थे।

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ ۖ

फिर ज़ालिमों से कहा जाएगा के तुम हमेशा का अज़ाब चखो।

هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ وَيَسْتَنْبِئُونَكَ

तुम्हें सज़ा नहीं दी जाएगी मगर उन्हीं कामों की जो तुम करते थे। और ये आप से मालूम करते हैं के

أَحَقُّ هُوَ ۚ قُلْ إِنْى وَرَبِّى إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنْتُمْ

क्या ये हक़ है? आप फरमा दीजिए के जी हां! मेरे रब की कसम! यकीनन ये हक़ है। और तुम अल्लाह को (भाग कर)

بِمُعْجِزَيْنِ ۖ وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ

आजिज़ नहीं बना सकते। और अगर हर ज़ालिम शख्स को दुनिया की तमाम चीज़ें मिल जाएं जो ज़मीन में

مَا فِى الْأَرْضِ لَا فُتِدَتْ بِهِ ۖ وَأَسْرُوا النَّدَامَةَ

हैं, तो यकीनन वो उन सब को फिदये में दे देगा। और वो नदामत को छुपाएंगे

لَمَّا رَأَوْا الْعَذَابَ ۖ وَ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ

जब अज़ाब को देखेंगे। और उन के दरमियान इन्साफ़ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर

لَا يُظْلَمُونَ ۝ آلاَ إِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ

जुल्म नहीं किया जाएगा। सुनो! यकीनन अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं।

آلاَ إِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا

सुनो! यकीनन अल्लाह का वादा सच्चा है, लेकिन उन में से अक्सर

۝۱۰ وَقَفَ النَّبِيُّ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾ هُوَ يُحْيِي وَ يُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥٦﴾

जानते नहीं। वही ज़िन्दगी देता है और मौत देता है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ

ऐ इन्सानो! यकीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से नसीहत आई है

وَ شِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ ۖ وَ هُدًى وَ رَحْمَةٌ

और दिलों की बीमारियों के लिए शिफा और हिदायत और ईमान वालों के लिए

لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾ قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَ بِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ

रहमत आई है। आप फरमा दीजिए के ये अल्लाह के फज़ल और उस की रहमत की बिना पर है, फिर उस पर

فَلْيَفْرَحُوا ۖ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٨﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ

उन्हें खुश होना चाहिए। ये बेहतर है उन तमाम चीज़ों से जो वो इकट्ठी कर रहे हैं। आप फरमा दीजिए क्या तुम

مَا أَنزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِّن رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ

ग़ौर नहीं करते जो रिज़क अल्लाह ने तुम्हारे लिए उतारा, फिर उस में से कुछ तुम

حَرَامًا وَ حَلَالًا ۚ قُلْ اللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ

ने हलाल और कुछ हराम बना दिया। आप फरमा दीजिए क्या अल्लाह ने तुम्हें खबर दी

أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ ﴿٥٩﴾ وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ

या तुम अल्लाह पर झूठ घड़ते हो? और उन लोगों का गुमान जो अल्लाह पर

عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو

झूठ घड़ते हैं क़यामत के दिन क्या होगा? यकीनन अल्लाह इन्सानों

فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦٠﴾

पर फज़ल वाले हैं, लेकिन उन में से अक्सर शुक अदा नहीं करते।

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ

और आप जिस हाल में होते हैं और जो कुरआन तिलावत कर रहे

مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ

होते हैं और तुम जो अमल भी कर रहे होते हैं मगर हम तुम्हें देख रहे

شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ

होते हैं जब तुम उस में मसरूफ होते हैं। और आप के रब से गाइब

سَرِّبَكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا	नहीं है ज़रा भर कोई चीज़, न ज़मीन में और न
فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ	आसमान में और न उस से छोटी और न उस से बड़ी चीज़ मगर वो साफ साफ बयान करने वाली किताब
إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝ آ لَا إِنْ أَوْلِيَاءُ اللَّهِ	(लौहे महफूज़) में लिखी हुई है। सुनो! यकीनन अल्लाह के दोस्त,
لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا	उन पर न खौफ होगा और न वो ग़मगीन होंगे। वो जो ईमान लाए
وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا	और जो मुत्तकी रहे। उन के लिए बशारत है दुन्यवी ज़िन्दगी में
وَفِي الْآخِرَةِ ۝ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۝ ذَلِكَ	और आखिरत में। अल्लाह के कलिमात को बदला नहीं जा सकता। ये
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَلَا يَحْزَنكَ قَوْلُهُمْ	बड़ी कामयाबी है। और आप को ग़मगीन न करे उन की बात।
إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۝ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝	यकीनन इज्ज़त सारी की सारी अल्लाह के लिए है। वही सुनने वाला, इल्म वाला है।
آ لَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۝	सुनो! यकीनन अल्लाह ही की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।
وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ	और ये जो पीछे चल रहे हैं वो लोग जो अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हैं
شُرَكَاءَ ۝ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ	शुर्का को, ये सिर्फ़ गुमान ही के पीछे चल रहे हैं और ये सिर्फ़ अटकल से
إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ	बातें करते हैं। वही अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिए रात बनाई
لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصَرًا ۝ إِنْ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ	ताके तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन को रोशन बनाया। यकीनन उस में सुनने वाली क़ौम के

لَقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ۖ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ ۖ

लिए निशानियाँ हैं। ये केहते हैं के अल्लाह औलाद रखता है, अल्लाह उस से पाक है।

هُوَ الْغَنِيُّ ۖ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۖ

वो बेनियाज़ है। उस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ۖ اَتَقُولُوْنَ

तुम्हारे पास इस की कोई दलील नहीं है। क्या तुम अल्लाह पर

عَلٰى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۚ قُلْ اِنَّ الَّذِیْنَ یَفْتَرُوْنَ

ऐसी बातें केहते हो जो तुम जानते नहीं हो। आप फरमा दीजिए यकीनन वो लोग जो अल्लाह पर

عَلٰى اللّٰهِ الْکَذِبَ لَا یُفْلِحُوْنَ ۚ ۝۱۹ مَتَاعٌ فِی الدُّنْیَا

झूठ घड़ते हैं वो कामयाब नहीं होंगे। दुनिया में थोड़ा नफा उठाना है,

ثُمَّ اِلَیْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نَذِیْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِیْدَ

फिर हमारी तरफ उन्हें वापस आना है, फिर हम उन्हें सख्ततरीन अज़ाब चखाएँगे

۝۲۰

ۚ بِمَا كَانُوا یَكْفُرُوْنَ ۚ ۝۲۰ وَاَتْلُ عَلَیْهِمْ نَبَا نُوْحٍ ۖ اِذْ قَالَ

इस वजह से के वो कुफ़ करते थे। और आप उन को नूह (अलैहिस्सलाम) का वाकिआ बयान कीजिए। जब उन्होंने ने

لِقَوْمِهِ یَقُوْمُ ۖ اِنْ كَانَ کَبُرَ عَلَیْكُمْ مَّقَامِیْ

अपनी कौम से फरमाया ऐ मेरी कौम! अगर तुम पर गिरा है मेरा (इस काम के लिए) खड़ा होना

وَتَذٰکِرِیْ ۖ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ فَعَلٰى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاجْمَعُوْا

और अल्लाह की आयात के ज़रिए नसीहत करना, तो मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया, तो अपने काम

اَمْرَكُمْ وَشُرَکَّاءُكُمْ ثُمَّ لَا یَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَیْكُمْ

और शुरका को इकट्ठा कर लो, फिर तुम्हारा मुआमला तुम्हारे लिए घुटन का बाइस

غُمَّةٌ ثُمَّ اَقْضُوْا اِلَیَّ وَلَا تَنْظُرُوْنَ ۚ ۝۲۱ فَاِنْ تَوَلَّیْتُمْ

न रहे, फिर तुम मुझ पर हमला करो और मुझे मोहलत भी न दो। फिर अगर तुम ऐराज़ करो

فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجَرِیْ اِلَّا عَلٰى اللّٰهِ ۚ

तो मैं ने तुम से किसी अज़्र का सवाल नहीं किया। मेरा अज़्र सिर्फ अल्लाह के ज़िम्मे है।

وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ۚ ۝۲۲ فَكَذَّبُوْهُ

और मुझे इस का हुक्म दिया गया है के मैं मुसलमानों में से हूँ। फिर उन्होंने ने नूह (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया,

فَنَجَّيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلِّ وَ جَعَلْنَاهُمْ خَلِيفَ

फिर हम ने उन्हें नजात दी और उन लोगों को भी जो उन के साथ कशती में थे और हम ने उन्हें जानशीन बनाया और हम

وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

ने उन को गर्क किया जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया। फिर आप देखिए के डराए जाने

عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا

वालों का अन्जाम कैसा हुवा? फिर उन के बाद हम ने पैगम्बर भेजे

إِلَى قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا

उन की कौम की तरफ, फिर वो उन के पास रोशन मोअजिजात ले कर आए, फिर भी वो ईमान नहीं लाते थे

بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۖ كَذَلِكَ نَطْبَعُ عَلَى قُلُوبِ

इस वजह से के इस से पेहले झुठला चुके थे। इसी तरह हम हद से आगे बढ़ने वालों के दिलों

الْبُعْتَدِينَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَى وَ هَارُونَ

पर मुहर लगा देते हैं। फिर हम ने उन के बाद मूसा (अलैहिस्सलाम) और हारून (अलैहिस्सलाम) को

إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا

फिरऔन और उस की कौम की तरफ अपनी आयात दे कर भेजा, फिर उन्होंने ने बड़ा बनना चाहा और वो

قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا

मुजरिम कौम थी। फिर जब उन के पास हक आया हमारी तरफ से,

قَالُوا إِنَّ هَذَا لِسِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ قَالَ مُوسَى

तो उन्होंने ने कहा के यकीनन ये खुला जादू है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ ۖ أَسِحْرٌ هَذَا وَلَا يُفْلِحُ

क्या तुम ये हक के मुतअल्लिक केहते हो जब वो तुम्हारे पास आया? क्या ये जादू है? और जादूगर तो कामयाब

السَّحَرُونَ ۝ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَلْفِتَنَّا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ

नहीं होते। तो उन्होंने ने कहा के क्या आप हमारे पास आए हो ताके हमें फेर दो उस से जिस पर हम

أَبَاءَنَا وَ تَكُونُ لَكُمْ أَعْيَانٌ فِي الْأَرْضِ ۖ

ने अपने बाप दादा को पाया और इस मुल्क में तुम दोनों को सरदारी मिल जाए।

وَمَا نَحْنُ لَكُمْ بِمُؤْمِنِينَ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ اسْتَوْنِي

और हम तुम दोनों पर ईमान लाने वाले नहीं हैं। और फिरऔन ने कहा के तुम मेरे

بِكُلِّ سِحْرِ عَلِيمٍ ۝ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ

पास हर माहिर जादूगर को ले आओ। फिर जब जादूगर आए तो उन से मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के

مُوسَى أَلْقُوا مَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ ۝ فَلَمَّا أَلْقَوْا

डालो जो तुम डालने वाले हो। फिर जब उन्होंने ने डाला

قَالَ مُوسَى مَا جِئْتُمْ بِهِ السَّحَرُ ۝ إِنَّ اللَّهَ

तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया जो तुम लाए हो वो जादू है। यकीनन अल्लाह

سَيُبْطِلُهُ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ۝

अनकरीब उस को बातिल कर देगा। यकीनन अल्लाह फसाद फैलाने वालों के अमल को चलने नहीं देता।

وَيُحَقِّقُ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۝

और अल्लाह हक को अपने कलिमात के ज़रिए हक साबित करेगा अगर्वे मुजरिम नापसन्द करें।

فَمَا أَمَنَ لِمُوسَى إِلَّا ذُرِّيَّتُ ۖ مِنْ قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ

फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) पर ईमान नहीं लाई मगर थोड़ी सी जमाअत आप की कौम में से फिरऔन और उस की

مَنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ أَنْ يَفْتِنَهُمْ ۖ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ

जमाअत के खौफ की वजह से के वो उन को अज़ाब में मुबतला करेंगे। और यकीनन फिरऔन

لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ ۖ وَإِنَّهُ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ۝ وَقَالَ

उस मुल्क में बरतरी वाला था। और यकीनन वो हद से आगे बढ़ने वालों में से था। और मूसा (अलैहिस्सलाम)

مُوسَى يَقَوْمٍ إِنْ كُنْتُمْ أَمَنْتُمْ بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا

ने फरमाया ऐ मेरी कौम! अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर तो उसी पर तवक्कुल करो

إِنْ كُنْتُمْ مُسْلِمِينَ ۝ فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۖ

अगर तुम मुसलमान हो। तो उन्होंने ने कहा के अल्लाह पर हम ने तवक्कुल किया।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً ۖ لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَنَجِّنَا

ऐ हमारे रब! तू हमें ज़ालिम कौम का तख्तए मश्क न बना। और तू अपनी

بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ وَأَوْحَيْنَا

रहमत से काफिर कौम से हमें नजात दे। और हम ने वही की मूसा (अलैहिस्सलाम) और उन के भाई

إِلَى مُوسَى وَآخِيهِ أَنْ تَبَوَّآ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ

की तरफ के तुम दोनों ठिकाना बनाओ अपनी कौम के लिए मिस्र में

بُيُوتًا وَاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً وَأَقِيمُوا	घरों को और अपने घर किबलारुख बनाओ और नमाज़
الصَّلَاةَ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٤﴾ وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَا	काइम करो। और आप ईमान वालों को बशारत सुना दीजिए। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ हमारे रब!
إِنَّكَ أَتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَ مَلَآةَ زَيْنَةً وَ أَمْوَالًا	यकीनन तू ने फिरऔन और उस की कौम को ज़ीनत दी और माल दिया
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ رَبَّنَا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِكَ	दुन्यवी ज़िन्दगी में। ऐ हमारे रब! इस लिए ताके वो तेरे रास्ते से गुमराह करें?
رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ	ऐ हमारे रब! उन के मालों को मिटा दे और उन के दिलों को
عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّىٰ يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٨٥﴾	सख्त कर दे के वो ईमान न लाएं यहां तक के दर्दनाक अज़ाब देखें।
قَالَ قَدْ أُجِيبْتُ دَعْوَتُكُمْ فَاسْتَقِيمَا	अल्लाह ने फरमाया यकीनन तुम दोनों की दुआ क़बूल कर ली गई, तो तुम इस्तिक्ामत से रहो
وَلَا تَتَّبِعَنَّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾ وَجُوزْنَا	और उन लोगों के रास्ते पर न चलना जो जानते नहीं। और हम ने
بَنِي إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ	बनी इस्राईल को समन्दर पार करा दिया, फिर फिरऔन और उस का लशकर उन के पीछे आया
وَجُنُودُهُ بَغْيًا وَعَدَوًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۖ	सरकशी करता हुवा और हद से तजावुज़ करता हुवा। यहां तक के जब फिरऔन डूबने लगा
قَالَ آمَنْتُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي آمَنْتُ بِهِ	तो केहने लगा के मैं ईमान ले आया ये के कोई माबूद नहीं मगर वही जिस पर
بَنُوا إِسْرَءِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٨٧﴾ أَلَمْ	बनू इस्राईल ईमान लाए हैं और मैं मुसलमानों में से हूँ। (फरिश्ते ने कहा) क्या अब (ईमान लाया)
وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٨﴾	हालांके तू इस से पेहले नाफरमान था और तू फसाद फैलाने वालों में से रहा।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّكَ بِدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلَقَكَ

तो आज हम तेरे बदन को बचा लेंगे ताके तेरे पीछे आने वालों के लिए वो इब्रत

آيَةً ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا

बने। और यकीनन इत्सानों में से बहोत से हमारी आयतों से

لَغَفْلُونَ ﴿٩٧﴾ وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مَبَوَّأَ

गाफिल हैं। और तहकीक के हम ने बनी इस्राईल को ठिकाना दिया सच्चाई के

صَدَقَ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۖ فَمَا اخْتَفَوْا

रेहने की जगह और हम ने उन्हें उम्दा चीजों में से रोजी दी। फिर उन्होंने ने इखतिलाफ नहीं किया

حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ

यहां तक के उन के पास इल्म आया। यकीनन तेरा रब उन के दरमियान कयामत

يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٩٨﴾

के दिन फैसला करेगा उन चीजों में जिस में वो इखतिलाफ कर रहे हैं।

فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْأَلِ الَّذِينَ

फिर अगर आप शक में हैं उस की तरफ से जो हम ने आप की तरफ उतारा तो आप सवाल कीजिए

يَقْرَأُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ ۖ لَقَدْ جَاءَكَ

उन से जो किताब पढ़ते हैं आप से भी पेहले। यकीनन आप के पास

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٩٩﴾

हक आया आप के रब की तरफ से, इस लिए आप शक करने वालों में से न हों।

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ

और आप उन लोगों में से न हों जिन्होंने ने अल्लाह की आयतों को झुठलाया,

فَتَكُونَنَّ مِنَ الْخُسْرَىٰ ۖ إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ

फिर आप खसारा उठाने वालों में से हो जाएंगे। यकीनन वो लोग जिन के

عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٠﴾ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ

ऊपर तेरे रब के कलिमात साबित हो गए, वो ईमान नहीं लाएंगे। अगरचे उन के पास

كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿١٠١﴾ فَلَوْلَا

तमाम मोअजिजात भी आ जाएँ, (वो ईमान नहीं लाएंगे) यहां तक के दर्दनाक अज़ाब देख लें। फिर कोई

كَانَتْ قَرْيَةً اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَا اِيْمَانُهَا اِلَّا قَوْمٌ

बस्ती जो ईमान लाई हो, फिर उस के ईमान लाने ने उस को नफा दिया हो, कोई बस्ती नहीं हुई सिवाए यूनस

يُونُسَ ۥ لَمَّا اٰمَنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ

(अलैहिस्सलाम) की कौम के। जब वो ईमान लाए तो उन से हम ने खुस्वाई के अज़ाब को हटा दिया

فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ مَتَّعْنَهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ۝۹۹

दुन्यवी ज़िन्दगी में और उन को हम ने एक वक्त तक मुतमत्तेअ किया।

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَآمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيعًا ۥ

और अगर आप का रब चाहता तो वो सारे के सारे जो ज़मीन में हैं इकट्ठे ईमान ले आते।

اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝۱۰۰

क्या फिर आप इन्सानों को मजबूर कर सकते हो के वो ईमान ले आएँ?

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُوْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۥ

और किसी शख्स की ये ताकत नहीं है के वो ईमान लाए मगर अल्लाह की इजाज़त से।

وَ يَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝۱۰۱

और अल्लाह गन्दगी रखते हैं उन पर जो अक्ल नहीं रखते।

قُلْ اَنْظُرُوْا مَاذَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۥ

आप फरमा दीजिए के तुम देखो के क्या चीज़ें हैं आसमानों में और ज़मीन में?

وَمَا تُغْنِى الْاٰیٰتِ وَالنَّذْرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝۱۰۲

और मोअजिज़ात और डराने वाले कुछ काम नहीं आते ऐसी कौम से जो ईमान नहीं लाती।

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا

फिर वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर उन लोगों के जैसे दिनों के जो उन

مِنْ قَبْلِهِمْ ۥ قُلْ فَانْتَظِرُوْا اِنِّىْ مَعَكُمْ

से पेहले गुज़र चुके। आप फरमा दीजिए फिर तुम मुन्तज़िर रहो, यकीनन मैं तुम्हारे साथ इन्तिज़ार

مِّنَ الْمُنْتَظَرِيْنَ ۝۱۰۳ ثُمَّ نُنَجِّىْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ

करने वालों में से हूँ। फिर हम अपने पैगम्बरों को बचा लेंगे और उन लोगों को जो ईमान लाए हैं, इसी तरह।

حَقًّا عَلَيْنَا نُنَجِّى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۱۰۴ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّ

हमारे जिम्मे लाज़िम है के हम ईमान वालों को नजात दें। आप फरमा दीजिए ऐ इन्सानो! अगर

كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِّنْ دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ

तुम शक में हो मेरे दीन की तरफ से तो मैं इबादत नहीं करूंगा उन की

تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي

जिन की तुम अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते हो, लेकिन मैं तो इबादत करता हूँ उस अल्लाह की जो तुम्हें

يَتَوَفَّكُمُ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

वफात देगा। और मुझे हुक्म दिया गया है के मैं ईमान वालों में से रहूँ।

وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۖ وَلَا تَكُونَنَّ

और ये के आप अपना चेहरा सीधा रखिए इस दीन के लिए हर तरफ से कट कर। और मुशरिकीन

مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ

में से मत बनिए। और अल्लाह के अलावा ऐसी चीजों को मत पुकारिए जो

مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ

आप को न नफा दे सकती हैं और न ज़रर पहुँचा सकती हैं। फिर अगर आप ऐसा करेंगे तो यकीनन आप

إِذَا مِّنَ الظَّالِمِينَ ۝ وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ

कुसूरवारों में से हो जाएंगे। और अगर आप को अल्लाह नुक़सान पहुँचाए

فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۚ وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ

तो उस के सिवा कोई भी उसे दूर करने वाला नहीं। और अगर वो तुम्हारी भलाई का इरादा करे तो अल्लाह के फज़ल को

لِفَضْلِهِ ۖ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَهُوَ

कोई रोक नहीं सकता। वो अपने बन्दों में से जिसे अपना फज़ल पहुँचाना चाहे पहुँचा देता है। और वो

الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ قُلْ يَٰأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ

बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। आप फरमा दीजिए ऐ इन्सानो! यकीनन तुम्हारे पास

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّا يَهْتَدِي

तुम्हारे रब की तरफ से हक़ आ चुका। अब जो हिदायत चाहे, तो उस की हिदायत अपनी ज़ात ही के

لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ ضَلَّٰ فَإِنَّا يَضِلُّ عَلَيْهِ ۚ

लिए है। और जो गुमराही इखतियार करे तो उस का वबाल खुद उसी पर है।

وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۝ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ

और मैं तुम पर मुसल्लत नहीं हूँ। और आप उस के पीछे चलिए जो आप की तरफ वही किया जा रहा है

وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝

और आप सब कीजिए यहां तक के अल्लाह फैसला कर दे। और वो बेहतरीन फैसला करने वाला है।

رُوعَاتُهَا ۱۰

(۱۱) سُورَةُ هُودٍ مَكِّيَّةٌ (۵۲)

آيَاتُهَا ۱۲۳

और १० रूकूअ हैं सूरह हूद मक्का में नाज़िल हुई उस में १२३ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الرَّثْ كِتَبٌ أُحْكِمَتْ آيَاتُهُ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَدُنْ

अलिफ लाम रौ। ये किताब है जिस की आयतें मुहकम की गई हैं, फिर उन की तफसील की गई है

حَكِيمٍ حَبِيرٍ ۝ إِلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي لَكُمْ

हिक्मत वाले, बाखबर अल्लाह की तरफ से। के इबादत मत करो मगर अल्लाह ही की। यकीनन मैं तुम्हारे लिए

مِّنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ ۖ وَإِنْ أَسْتَغْفِرُوا رَبُّكُمْ

उस की तरफ से डराने वाला और बशारत सुनाने वाला हूँ। और ये के अपने रब से इस्तिगफार करो,

ثُمَّ تَوْبُوا إِلَيْهِ يُتَّعَمَّكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ

फिर तुम उस की तरफ तौबा करो तो वो तुम्हें मुतमत्तेअ करेगा अच्छी तरह मुतमत्तेअ करना

مُسَمًّى وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ ۖ

मुकर्र किए हुए वक्त तक और हर एक साहिबे फज़ल को अपना फज़ल (जज़ा) देगा।

وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيرٍ ۝

और अगर तुम पैराज़ करो तो मुझे तुम्हारे ऊपर एक बड़े दिन के अज़ाब का खौफ है।

إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

अल्लाह की तरफ तुम्हें वापस जाना है। और वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

إِلَّا أَنَّهُمْ يَتَنَوَّنْ صُدُورُهُمْ لِيَسْتَخَفُوا مِنْهُ ۖ

सुनो! यकीनन वो अपने सीनों को अल्लाह से छुपने के लिए मोड़ते हैं।

إِلَّا حِينَ يَسْتَغْشُونَ ثِيَابَهُمْ ۖ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ

सुनो! जिस वक्त वो अपने कपड़े ओढ़े हुए होते हैं, तब भी अल्लाह जानता है उन चीज़ों को जिन्हें वो

وَمَا يُعْلِنُونَ ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

छुपाते हैं और जिन्हें वो ज़ाहिर करते हैं। यकीनन वो दिलों के हाल को खूब जानने वाला है।

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ

और ज़मीन में कोई चौपाया नहीं मगर अल्लाह के ज़िम्मे उस की रोज़ी है और वो उस के दाइमी

مُسْتَقَرَّهَا وَ مُسْتَوْدَعَهَا ۖ كُلُّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝

ठिकाने और आरज़ी ठिकाने को जानता है। सब कुछ साफ साफ बयान करने वाली किताब (लौहे महफूज़) में है।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ

और वही अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया छे दिन में

أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوكُمْ أَيُّكُمْ

और उस का अर्श पानी पर था ताके वो तुम्हें आजमाए के तुम में से कौन

أَحْسَنُ عَمَلًا ۖ وَلَئِنْ قُلْتُمْ إِنَّكُمْ مَبْعُوثُونَ

अच्छे अमल वाला है। और अगर आप कहते हैं के यकीनन तुम ज़िन्दा कर के उठाए

مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا

जाओगे मौत के बाद तो ज़रूर काफिर कहेंगे के ये नहीं है

إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ

मगर खुला जादू। और अगर हम उन से अज़ाब मुअख़्खर कर दें

إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ لَيَقُولَنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۖ إِلَّا يَوْمَ

एक मालूम वक्त तक के लिए तब भी वो यकीनन कहेंगे के किस ने अज़ाब को रोक रखा है? सुनो! जिस दिन

يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَ حَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا

वो अज़ाब उन के पास आएगा तो उन से हटाया नहीं जाएगा और उन्हें घेर लेगा वो अज़ाब जिस का

بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً

वो मज़ाक उड़ा रहे थे। और अगर इन्सान को हम अपनी तरफ से रहमत चखाएं

ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ ۖ إِنَّهُ لَكَيُّوسٌ كَفُورٌ ۝

फिर उस से उस को छीन लें, तो यकीनन वो मायूस नाशुकरा बन जाता है।

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نِعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَاءٍ مَسَتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ

और अगर हम उसे नेअमत चखाएं किसी तकलीफ के बाद जो उसे पहेँची हो तो ज़रूर वो कहेगा के मुझ से

السَّيِّئَاتُ عَنِّي ۖ إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ

बराइयाँ दूर हो गई। यकीनन वो इतराने वाला, फखर करने वाला है। मगर वो लोग

صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ

जिन्होंने ने सब्र किया और नेक अमल करते रहे। उन के लिए मगफिरत है

وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوعَىٰ

और बड़ा अज्र है। शायद आप छोड़ दें उस के बाज़ हिस्से को जो आप की तरफ वही किया जा रहा

إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنْزِلَ

है और आप का सीना उस की वजह से तंग हो रहा है, ये इस वजह से के वो केहते हैं के इस पर कोई खज़ाना

عَلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ ۖ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ

क्यूं नहीं उतारा गया या उस के साथ कोई फरिशता क्यूं नहीं आया? आप तो सिर्फ डराने वाले हैं।

وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ

और अल्लाह हर चीज़ पर कारसाज़ है। क्या ये केहते हैं के इस नबी ने इस को घड़ लिया?

قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوْرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرِيَةٍ وَادْعُوا

आप फरमा दीजिए के तुम उस के जैसी घड़ी हुई दस सूरतें ले आओ और तुम

مَنْ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

उन को भी बुला लो जिन की तुम ताक़त रखते हो अल्लाह के अलावा अगर तुम सच्चे हो।

فَلَا يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا أُنْزِلَ بِعِلْمِ

फिर अगर वो तुम्हारी बात का जवाब न दे सकें तो जान लो के जो आप की तरफ उतारा गया है वो अल्लाह के इल्म से है

اللَّهِ وَأَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ۝

और ये के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है। फिर क्या तुम इस्लाम लाते हो?

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوفٍ

जो दुन्यवी ज़िन्दगी चाहेगा और उस की ज़ीनत, तो हम उन को उन के आमाल का दुन्या में

إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ۝

पूरा पूरा बदला देंगे और उन के लिए उस में कमी नहीं की जाएगी।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۚ

उन लोगों के लिए आखिरत में सिवाए आग के कुछ नहीं होगा।

وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبِطُلُ مَا كَانُوا

और बेकार हो जाएंगे वो अमल जो उन्होंने ने दुन्या में किए और बातिल होंगे वो जो वो

يَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾ أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ

करते थे। क्या फिर वो शख्स जो अपने रब की तरफ से रोशन रास्ते पर है और अल्लाह की तरफ से

شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۖ

एक शाहिद उस के साथ साथ है और उस से पेहले मूसा (अलैहिस्सलाम) की किताब पेशवा और रहमत थी।

أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ

ये लोग उस पर ईमान रखते हैं। और जो उस के साथ कुफ्र करेगा गिरोहों में से

فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ

तो दोज़ख उस की वादे की जगह है। फिर आप उस की तरफ से शक में न रहिए। यकीनन ये

الْحَقُّ مِّن رَّبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٨﴾

हक है आप के रब की तरफ से लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۖ أُولَٰئِكَ

और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े। ये लोग

يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَ يَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ

अपने रब के सामने पेश किए जाएंगे और गवाही देने वाले कहेंगे के ये वो हैं

الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ

जिन्होंने ने अपने रब पर झूठ बोला। सुनो! अल्लाह की लानत है

عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾ الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ

ज़ालिमों पर। उन पर जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं

وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۖ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٢٠﴾

और उस में कजी तलाश करते हैं। और वो अखिरत के भी मुन्किर हैं।

أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ

ये लोग ज़मीन में (भाग कर) अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّن دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ۚ يُضَعْفُونَ

और उन के लिए अल्लाह के अलावा कोई हिमायती नहीं होगा। उन के लिए

لَهُمُ الْعَذَابُ ۖ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا

अज़ाब दुगना किया जाएगा। वो सुनने की ताकत नहीं रखते थे और न

كَانُوا يُبْصِرُونَ ﴿١٠﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ	देख सकते थे। यही हैं जिन्होंने अपनी जानों को खसारे में डाला
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١١﴾ لَا جَرَمَ لَهُمْ	और उन से खो गए वो जो वो घड़ा करते थे। यकीनन ये
فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا	आखिरत में सब से ज़्यादा खसारा वाले हैं। यकीनन वो लोग जो ईमान लाए
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآخَبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ ۖ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ	और नेक काम करते रहे और अपने रब की तरफ आजिज़ी की। ये लोग
الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٣﴾ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ	जन्नती हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे। दोनों जमाअतों का हाल ऐसा है
كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصْمَىٰ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۖ هَلْ يَسْتَوِينَ	जैसा के अन्धा और बेहरा और देखने वाला और सुनने वाला। क्या दोनों मिसाल के एतेबार से बराबर
مَثَلًا ۖ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا	हो सकते है? क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? और यकीनन हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को भेजा
إِلَىٰ قَوْمِهِ ۚ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾ أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ	उन की कौम की तरफ के मैं तुम्हारे लिए साफ साफ डराने वाला हूँ। ये के इबादत मत करो मगर अल्लाह की।
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمِ الْيَوْمِ ﴿١٦﴾ فَقَالَ	यकीनन मैं तुम पर एक दर्दनाक दिन के अज़ाब से डरता हूँ। फिर आप
الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا تَرَىٰ	की कौम में से काफिर सरदारों ने कहा के हम आप को नहीं देखते
إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا تَرَىٰ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ	मगर अपने जैसा इन्सान और हम आप को नहीं देखते के आप का इत्तिबा किया मगर उन लोगों ने जो
أَرَادْنَا بِآدَى الرَّأْيِ ۚ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا	हम में सब से ज़्यादा ज़लील हैं सरसरी नज़र में। और हम तुम्हारे लिए अपने पर कोई फज़ीलत भी
مِنْ فَضْلٍ ۚ بَلْ نَطْنُكُمْ كَذِبِينَ ﴿١٧﴾ قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ	नहीं देखते, बल्के हम तुम्हें झूठा गुमान करते हैं। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी कौम! तुम्हारी

إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَاشِدْنِي رَحْمَةً

क्या राए है अगर मैं अपने रब की तरफ से रोशन रास्ते पर हूँ और उस ने मुझे अपनी तरफ से

مِّنْ عِنْدِهِ فَعَمِيتَ عَلَيْكُمْ ۖ أَنْزَلْنَاهَا وَأَنْتُمْ

रहमत अता की हो, और वो रोशन रास्ता तुम पर छुपा दिया जाए। तो क्या हम तुम से इस हिदायत को ज़बर्दस्ती चिपका दें इस हाल

لَهَا كَرِهُونَ ﴿١٨﴾ وَ يَقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَا لَا

में के तुम उस को नापसन्द करते हो? और ऐ मेरी कौम! मैं तुम से इस पर किसी माल का सवाल नहीं करता।

إِنْ أَجْرِي إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ

मेरा अज़्र तो अल्लाह के ज़िम्मे है और मैं उन को धुतकारने वाला नहीं हूँ जो ईमान

أَمَنُوا ۖ إِنَّهُمْ مُّلقُوا رَبِّهِمْ وَلَكِنِّي أَرْكُم قَوْمًا

लाए हैं। यकीनन वो अपने रब से मिलने वाले हैं लेकिन मैं तुम्हें ऐसी कौम देख रहा हूँ

تَجْهَلُونَ ﴿١٩﴾ وَ يَقَوْمِ مَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ

जो जहालत की बातें करते हो। और ऐ मेरी कौम! कौन बचाएगा मुझ को अल्लाह की गिरिफ्त से

إِنْ طَرَدْتَهُمْ ۖ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي

अगर मैं उन्हें धुतकार दूँ? क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? और मैं तुम से नहीं केहता के मेरे पास

خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبِ وَلَا أَقُولُ إِنِّي

अल्लाह के खज़ाने हैं और न मैं ग़ैब जानता हूँ और न मैं ये केहता हूँ के मैं

مَلِكٌ ۖ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ

फरिश्ता हूँ और न मैं ये केहता हूँ उन लोगों के मुतअल्लिक जिन को तुम्हारी निगाहें हकीर समझती हैं के

لَنْ يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ ۚ

अल्लाह उन को हरगिज़ कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह ख़ूब जानता है उस को जो उन के दिलों में है।

إِنِّي إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٢١﴾ قَالُوا يَنْوُحُ قَدْ جَدَلْنَا

यकीनन तब तो मैं ज़ालिमों में से बन जाऊँगा। उन्होंने ने कहा ऐ नूह! यकीनन आप ने हम से झगड़ा किया, फिर

فَاكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ

आप ने हम से बहोत ज़्यादा झगड़ा कर लिया, इस लिए आप हमारे पास ले आइए वो अज़ाब जिस से आप हमें डरा रहे

مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٢٢﴾ قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيَكُمْ بِهِ اللَّهُ إِنْ

हैं अगर आप सच्चों में से हैं। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के वो अज़ाब तो तुम्हारे पास सिर्फ अल्लाह ही लाएगा

شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿۳۱﴾ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِي

अगर वो चाहेगा और तुम उस वक्त अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकोगे। और तुम्हें मेरी नसीहत फाइदा नहीं देगी

إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ

अगर मैं चाहूँ के मैं तुम्हारे लिए खैरखाही करूँ अगर अल्लाह तुम्हें गुमराह करने का

أَنْ يُغْوِيَكُمْ ۖ هُوَ رَبُّكُمْ تَوَّابٌ ۖ إِلَيْهِ تَرْجَعُونَ ﴿۳۲﴾

इरादा करो। वही तुम्हारा रब है। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَىٰ إِجْرَائِي

क्या वो केहते हैं के इस नबी ने उस को घड़ लिया है? आप फरमा दीजिए के अगर मैं ने उस को घड़ा है तो मेरे ऊपर मेरा जुर्म है

وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تُجْرِمُونَ ﴿۳۳﴾ وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ نُوحٍ

और मैं तुम्हारे जुर्मों से बरी हूँ। और नूह (अलैहिस्सलाम) की तरफ वही की गई के

أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ

आप की कौम में से हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे मगर वो जो ईमान ला चुके

فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿۳۴﴾ وَاصْنَعِ الْفُلَ

इस लिए आप मायूस न हों उन हरकतों की वजह से जो वो कर रहे हैं। और आप कशती बनाइए

بَاعَيْنَا وَوَحَيْنَا وَلَا تَخَاطِبُنِي فِي الَّذِينَ

हमारी आँखों के सामने और हमारे हुक्म से और आप हम से गुफ्तगू न कीजिए उन के बारे में

ظَلَمُوا ۚ إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ ﴿۳۵﴾ وَيَصْنَعِ الْفُلَ

जो ज़ालिम हैं। इस लिए के ये गर्क किए जाएंगे। और कशती बना रहे थे नूह (अलैहिस्सलाम)।

وَكَلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأَ مِنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ ۖ قَالَ

और जब कभी आप पर आप की कौम में से कोई रईस जमाअत गुज़रती तो वो आप से मज़ाक करती। नूह

إِنْ تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ

(अलैहिस्सलाम) फरमाते के अगर तुम हम से मज़ाक करते हो, तो यकीनन हम भी तुम से मज़ाक करेंगे

كَمَا تَسْخَرُونَ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ

जिस तरह तुम मज़ाक करते हो। अनकरीब तुम्हें मालूम हो जाएगा के किस पर ऐसा अज़ाब आता है

يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۖ حَتَّىٰ إِذَا

जो उसे रूस्वा कर देगा और किस पर दाइमी अज़ाब उतरता है। यहां तक के जब

جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ ۖ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا

हमारा (अज़ाब का) हुक्म आया और तन्नूर जोश मारने लगा तो हम ने कहा के इस में आप सवार करा लीजिए हर

مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ

किस्म से जोड़ा (यानी) दो दो (नर और मादा) और अपने एहल को मगर वो जिन के मुतअल्लिक़ पेहले बात हो

الْقَوْلُ وَمَنْ أَمِنَ ۖ وَمَا أَمِنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ۝

चुकी है और उन लोगों को जो ईमान लाए हैं। और आप के साथ ईमान नहीं लाए थे मगर थोड़े।

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرِبَهَا وَمُرسِلُهَا ۖ

और नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से इस का चलना है और इस का ठेहरना है।

إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ

यकीनन मेरा रब बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और ये कशती उन को ले कर चलती रही

كَالْجِبَالِ ۖ وَنَادَى نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ

ऐसी मौजों में जो पहाड़ों की तरह थीं। नूह (अलैहिस्सलाम) ने अपने बेटे को पुकारा और वो किनारे में था,

يَبْنَىٰ ارْكَبْ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكَافِرِينَ ۝

ऐ मेरे बेटे! तू हमारे साथ सवार हो जा और तू काफिरों के साथ मत रहे।

قَالَ سَاوِيَ إِلَىٰ جِبَلٍ يَّعْصِمُنِي مِنَ الْمَاءِ ۖ قَالَ

बेटे ने कहा अनकरीब मैं पनाह लूंगा इस पहाड़ पर जो मुझे पानी से बचा लेगा। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَنْ رَحِمَهُ ۖ وَحَالٌ

के आज अल्लाह के अज़ाब से कोई बचा नहीं सकता मगर वो जिस पर अल्लाह रहम करे। और उन दोनों के

بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ ۝ وَقِيلَ يَا أَرْضُ

दरमियान मौज हाइल हो गई, फिर वो डूबने वालों में से हो गया। और हुक्म आया के ऐ ज़मीन!

ابْلَعِي مَاءَكَ وَيَسْمَاءُ أَقْلَعِي وَغِيضَ الْمَاءِ وَقُضِيَ

तू अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान! तू थम जा, और पानी खुश्क हो गया और मुआमला

الْأَمْرِ ۖ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِلْقَوْمِ

खत्म हो गया और कशती ठेहर गई जूदी पहाड़ पर और कहा गया के ज़ालिम कौम का

الظَّالِمِينَ ۝ وَنَادَى نُوحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي

नास हो। और नूह (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब को पुकारा, फिर कहा ऐ मेरे रब! मेरा बेटा

مِنْ أَهْلِیْ وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ

मेरे एहल में से था और यकीनन तेरा वादा सच्चा है और तू तमाम फैसला करने वालों में बेहतरीन फैसला

الْحَكِيمِينَ ﴿۳۵﴾ قَالَ يَنْفُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ ۚ إِنَّهُ

करने वाला है। अल्लाह ने फरमाया ऐ नूह! यकीनन वो आप के एहल में से नहीं था। इस लिए के उस का

عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْأَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۖ

अमल ग़ैर सालेह था। इस लिए आप मुझ से ऐसा सवाल न करें जिस का आप को इल्म नहीं।

إِنِّي أَعْظِكَ أَنْ تَكُونُ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿۳۶﴾ قَالَ رَبِّ

मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ इस की के तुम जहालत करने वालों में से न हो जाओ। नूह (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज

إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ ۖ

किया ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ इस से के मैं तुझ से सवाल करूं ऐसी चीज़ का जिस का मुझे इल्म नहीं।

وَالْأَلَّا تَغْفِرَ لِي وَتَرْحَمَنِي أَكُنْ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿۳۷﴾

और अगर तू मेरी मग़फ़िरत नहीं करेगा और मुझ पर रहम नहीं करेगा तो मैं खसारा उठाने वालों में से बन जाऊँगा।

قِيلَ يَنْفُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِّنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ

कहा गया ऐ नूह! आप हमारी तरफ से सलामती और बरकतों के साथ उतर जाइए, आप पर भी

وَعَلَىٰ أُمَمٍ مِّمَّنْ مَعَكَ ۖ وَأُمَمٌ سَنُبَتِّعُهُمْ

और उन उम्मतों पर भी जो आप के साथ हैं। और बहोत सी उम्मतें हैं अनक़रीब हम उन्हें फाइदा उठाने देंगे,

ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿۳۸﴾ تِلْكَ مِنْ أَنْبَاءِ

फिर उन्हें हमारी तरफ से दर्दनाक अज़ाब पહोंचेगा। ये ग़ैब की खबरों में से

الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا أَنْتَ

है जिसे हम आप की तरफ वही कर रहे हैं, जो आप और आप की कौम

وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هَذَا ۖ فَاصْبِرْ ۚ إِنَّ الْعَاقِبَةَ

इस से पेहले जानती नहीं थी। इस लिए आप सब्र कीजिए। यकीनन अच्छा अन्जाम

لِلْمُتَّقِينَ ﴿۳۹﴾ وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۖ قَالَ يَقَوْمِ

मुत्तकियों के लिए है। और कौमे आद की तरफ भेजा उन के भाई हूद (अलैहिस्सलाम) को। हूद (अलैहिस्सलाम)

اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهِ غَيْرُهُ ۖ إِنَّ أَنْتُمْ إِلَّا

ने फरमाया ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं। तुम तो सिर्फ

مَعَانِفَةٌ ۚ
عِدَائَتُهُمْ عَلَىٰ قَوْمِهِمْ خَسِرَاتٌ ۚ
۲ (۳۹)

مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾ يَقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنَّ أَجْرِي

झूठ घड़ते हो। ऐ मेरी कौम! मैं तुम से इस पर किसी अज्र का सवाल नहीं करता। मेरा अज्र तो

إِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرَنِي ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾ وَيَقَوْمِ

सिर्फ उस अल्लाह के ज़िम्मे है जिस ने मुझे पैदा किया। क्या फिर तुम अक्ल नहीं रखते? और ऐ मेरी कौम!

اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ

तुम अपने रब से इस्तिगफार करो, फिर उस की तरफ तौबा करो, तो वो तुम पर आसमान को बरसता हुवा

مِدْرَارًا ۖ وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا

छोड़ेगा और तुम्हारी मौजूदा कुव्वत में और कुव्वत का इज़ाफा करेगा और मुजरिम बन कर

مُجْرِمِينَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا يَهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ

पुश्त मत फेरो। उन्होंने ने कहा ऐ हूद! तुम हमारे पास कोई मोअजिज़ा नहीं लाए और हम अपने माबूदों को

بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٥٣﴾

तुम्हारे केहने की वजह से छोड़ने वाले नहीं हैं और हम आप पर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

إِنْ نَقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ ۖ

हम नहीं केहते मगर ये के हमारे माबूदों में से किसी ने आप को कोई बुराई लगा दी है।

قَالَ إِنِّي أَشْهَدُ اللَّهَ وَاشْهَدُوا إِنِّي بَرِيءٌ

हूद (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ और तुम भी गवाह रहो के मैं बरी हूँ

مِمَّا تَشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾ مِنْ دُونِهِ فَكِيدُونِي جَمِيعًا ثُمَّ

उन चीज़ों से जिन को तुम शरीक ठेहराते हो। अल्लाह के अलावा। फिर तुम इकट्ठे हो कर मेरे खिलाफ तदबीर कर लो, फिर

لَا تُنْظَرُونَ ﴿٥٥﴾ إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ ۖ

मुझे मोहलत भी मत दो। यकीनन मैं ने अल्लाह पर तवक्कुल किया जो मेरा और तुम्हारा रब है।

مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۖ إِنَّ رَبِّي

कोई चौपाया नहीं मगर वो (अल्लाह) उस की चोटी पकड़े हुए है। यकीनन मेरा रब

عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْغَضْتُكُمْ

सीधे रास्ते पर है। फिर अगर तुम ऐराज़ करो तो मैं ने तुम्हें पहोंचा दिया

مَا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ ۖ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۖ

वो जिस को दे कर मैं तुम्हारी तरफ भेजा गया हूँ। और मेरा रब तुम्हारे अलावा किसी और कौम को जानशीन बनाएगा।

وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيزٌ ﴿٥٤﴾

और तुम उस को ज़रा भी ज़रर नहीं पहुँचा सकोगे। यकीनन मेरा रब हर चीज़ की हिफाज़त करने वाला है।

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ

और जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आया तो हम ने हूद (अलैहिस्सलाम) को और उन लोगों को जो उन के साथ ईमान

بِرَحْمَةٍ مِنَّا ۚ وَنَجَّيْنَاهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٥﴾

लाए थे अपनी रहमत से नजात दी। और हम ने उन्हें सख्त अज़ाब से नजात दी।

وَتِلْكَ عَادٌ ۖ جَادُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ

और ये कौमे आद है, जिन्होंने ने अपने रब की आयात का इन्कार किया और अल्लाह के पैग़म्बरों की नाफरमानी की

وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٥٦﴾ وَاتَّبِعُوا فِي هَذِهِ

और वो हर ज़ालिम सरकश के हुक्म के पीछे चले। और इस दुनिया में उन के पीछे

الدُّنْيَا لَعَنَةً ۖ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ إِلَّا عَادًا كَفَرُوا

लानत कर दी गई और क़यामत के दिन भी। सुनो! यकीनन कौमे आद ने अपने रब से

رَبَّهُمْ ۖ إِلَّا بُعْدًا ۚ لِّعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ﴿٥٧﴾ وَإِلَىٰ شُودٍ

कुफ़्र किया। सुनो! कौमे आद का नास हो, हूद (अलैहिस्सलाम) की कौम का। और कौमे समूद की तरफ भेजा

أَخَاهُمْ صَالِحًا ۚ قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ

उन के भाई सालेह (अलैहिस्सलाम) को। सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो,

مِّنْ إِلَهِ غَيْرُهُ ۖ هُوَ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ

तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं। उसी ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया

وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تَوْبُوا إِلَيْهِ ۖ

और उस ने तुम्हें ज़मीन में आबाद किया तो तुम उस से इस्तिग़फ़ार करो, फिर उस की तरफ तौबा करो।

إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ﴿٥٨﴾ قَالُوا يُصْلِحُ قَدْ كُنْتَ

यकीनन मेरा रब करीब, तौबा कबूल करने वाला है। उन्होंने ने कहा के ऐ सालेह! यकीनन आप

فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَذَا ۖ أَتَنْهَانَا أَنْ نَعْبُدَ مَا يَعْبُدُ

हमारे अन्दर क़ाबिले उम्मीद थे इस से पेहले। क्या आप हमें रोकते हो इस से के हम इबादत करें उन चीज़ों की

أَبَاؤُنَا وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَا

जिन की हमारे बाप दादा इबादत करते थे? और यकीनन हम उस की तरफ से गेहरे शक में हैं जिस की तरफ

إِلَيْهِ مُرِيبٌ ﴿٣١﴾ قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ

तुम हमें दावत देते हो। सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी कौम! तुम्हारी क्या राय है अगर मैं

عَلَى بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَ أَشْنَىٰ مِنْهُ رَحْمَةً فَسَنَ

अपने रब की तरफ से रोशन रास्ते पर हूँ और उस ने मुझे अपनी तरफ से रहमत अता की हो,

يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُ ۖ فَمَا تَزِيدُونَنِي

फिर मुझे अल्लाह की गिरिफ्त से कौन बचाएगा अगर मैं अल्लाह की नाफरमानी करूँ? फिर तुम मुझे नहीं बढ़ाते

غَيْرَ تَخْسِيرٍ ﴿٣٢﴾ وَ يَقَوْمِ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ

सिवाए खसारे के। और ऐ मेरी कौम! ये अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए

آيَةً ۖ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا

निशानी है, तो तुम उस को छोड़ दो के अल्लाह की ज़मीन में खाए और तुम उसे बुराई के साथ

بِسُوءٍ ۖ فَيَأْخُذْكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ﴿٣٣﴾ فَعَقَرُوهَا

मत छुओ, वरना तुम्हें करीबी अज़ाब पकड़ लेगा। फिर उन्होंने ने ऊँटनी के पैर काट दिए

فَقَالَ تَبَتَّعُوا فِي دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ۖ ذَٰلِكَ

तो सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मजे उड़ा लो अपने घरों में तीन दिन। ये ऐसा

وَعْدٌ غَيْرُ مَكْدُوبٍ ﴿٣٤﴾ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا بَحَيْنَا

वादा है जो झुठलाया नहीं जा सकता। फिर जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आया तो हम ने सालेह (अलैहिस्सलाम) को

صَلِحًا ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا

और उन लोगों को जो आप के साथ ईमान लाए थे हमारी रहमत से

وَمِنْ خِزْيٍ يُومِيذٍ ۖ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ﴿٣٥﴾

और उस दिन की ख़ुस्वाई से नजात दी। यकीनन तेरा रब वो कुव्वत वाला, ज़बर्दस्त है।

وَ أَخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ ۖ فَاصْبَحُوا

और ज़ालिमों को चीख ने पकड़ लिया, फिर वो अपने घरों में

فِي دِيَارِهِمْ جَثِيئِينَ ﴿٣٦﴾ كَانَ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۖ آلَا

घुटनों के बल पड़े रहे गए। गोया के वो उस में बसे ही नहीं थे। सुनो!

إِنَّ شَمُودَ أَكْفَرُوا رَبَّهُمْ ۖ آلَا بُعْدًا لِثَمُودَ ﴿٣٧﴾

यकीनन कौमे समूद ने क़ुफ़ किया अपने रब के साथ। सुनो! नास हो कौमे समूद के लिए।

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلًا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوا

और यकीनन हमारे भेजे हुए फरिश्ते इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास बशारत ले कर आए तो उन्होंने ने कहा

سَلَامًا ۖ قَالَ سَلَامٌ فَمَا لِيَتْ أَنْ جَاءَ بِعَجَلٍ حَنِيزٍ ۖ

अस्सलामु अलैकुम। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अस्सलामु अलैकुम, फिर वो नहीं ठेहरे के भुना हुवा बछड़ा ले आए।

فَلَمَّا رَأَى أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَأَوْجَسَ

फिर जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने उन के हाथ देखे के उस (खाने) तक नहीं पहुँचते तो उन को अजनबी महसूस किया

مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ

और उन की तरफ से खौफ महसूस किया। फरिश्तों ने कहा के आप खौफ न कीजिए, यकीनन हम तो कौमे लूत की तरफ भेजे

لُوطٍ ۖ وَأَمْرُهُ قَابِلَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنَاهَا

गए हैं। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की बीवी खड़ी हुई थी, फिर वो हंस पड़ी तो हम ने उन्हें बशारत दी

بِإِسْحَاقَ ۖ وَمِنْ وَرَاءِ إِسْحَاقَ يَعْقُوبَ ۖ قَالَتْ

इसहाक . की। और इसहाक के पीछे याकूब की। वो कहने लगी

يُؤْيِلَتِي ۖ أَلِدُ وَأَنَا عَجُوزٌ وَهَذَا بَعْلِي شَيْخًا ۖ

हाए अफसोस! क्या मैं औलाद जनूगी हालांकि मैं बूढ़ी हूँ और ये मेरे शौहर बूढ़े हैं।

إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ۖ قَالُوا اتَّعَجِبِينَ

यकीनन ये काबिले तअज्जुब चीज़ है। उन्होंने ने कहा के क्या तुम तअज्जुब करती हो

مَنْ أَمَرَ اللَّهُ رَحِمَتُ اللَّهِ وَبَرَكَتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ ۖ

अल्लाह के हुक्म से? अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें तुम एहले बैत पर हैं।

إِنَّهُ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ۖ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ

यकीनन वो अल्लाह काबिले तारीफ, बुजुर्ग है। फिर जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से खौफ दूर

الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَى يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ

हो गया और उन के पास बशारत आई, तो वो हम से कौमे लूत के बारे में झगड़ने

لُوطٍ ۖ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ۖ

लगे। यकीनन इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) निहायत बुर्दबार, आहें भरने वाले, तौबा करने वाले थे।

يَا إِبْرَاهِيمُ اعْرِضْ عَنْ هَذَا ۖ إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ

ऐ इब्राहीम! इस से आप ऐराज़ कीजिए, यकीनन आप के रब का हुक्म

رَبِّكَ ۚ وَإِنَّهُمْ لَاتِيهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ﴿٤٦﴾

आ गया। और यकीनन उन के पास ऐसा अज़ाब आने वाला है जो लौटाया नहीं जाएगा।

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سَيِّئًا بِهِمْ وَضَاقَ

और जब हमारे भेजे हुए फरिश्ते लूत (अलैहिस्सलाम) के पास आए तो वो उन की वजह से ग़मगीन हुए और उन की

بِهِمْ ذَرَعًا وَقَالَ هَذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ﴿٤٧﴾ وَجَاءَهُ

वजह से तंगदिल हुए और लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ये बड़ा सख्त दिन है। और लूत (अलैहिस्सलाम) के

قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ ۖ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا يَعْمَلُونَ

पास उन की कौम आई उन की तरफ तेज़ दौड़ती हुई। और वो पेहले से बुराइयाँ करते

السَّيِّئَاتِ ۖ قَالَ يَقَوْمِ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ

थे। लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी कौम! ये मेरी बेटियाँ ये तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़ा

لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تَخْزَوْا فِي صِيفِي ۖ أَلَيْسَ

हैं, फिर तुम अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के बारे में रूस्वा मत करो। क्या तुम में

مِنْكُمْ رَجُلٌ رَشِيدٌ ﴿٤٨﴾ قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا

से कोई हिदायतयाफ़्ता शख्स नहीं? वो केहने लगे यकीनन आप को मालूम है के हमें

فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ﴿٤٩﴾

आप की बेटियों में कोई रग़बत नहीं है। और यकीनन आप जानते हैं वो जो हम चाहते हैं।

قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةٌ أَوْ آوِي إِلَىٰ رُكْنٍ

लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया काश के मुझे तुम पर कुव्वत होती या मैं किसी मज़बूत कबीले की तरफ

شَدِيدٍ ﴿٥٠﴾ قَالُوا يَلُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَصِلُوا

पनाह लेता। उन्होंने ने कहा के ऐ लूत! यकीनन हम तेरे रब के भेजे हुए फरिश्ते हैं, वो हरगिज़ आप तक

إِلَيْكَ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ

नहीं पहुँच सकेंगे, इस लिए आप अपने घर वालों को ले कर रात के किसी हिस्से में सफर कर जाइए

وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا امْرَأَتَكَ ۖ إِنَّهُ مُصِيبُهَا

और तुम में से कोई पीछे मुड़ कर न देखे मगर आप की बीवी, के उसे वो अज़ाब पहुँचने वाला है

مَا أَصَابَهُمْ ۖ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۖ أَلَيْسَ الصُّبْحُ

जो उन को पहुँचेगा। यकीनन उन के अज़ाब के वादे का वक़्त सुबह का वक़्त है। क्या सुबह

بِقَرِيبٍ ﴿٨١﴾ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا

करीब नहीं है? फिर जब हमारे अज़ाब का हुक्म आ गया तो हम ने उस के ऊपर वाले हिस्से को उस के नीचे वाला हिस्सा बना दिया

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيلٍ ۖ مَّنْضُودٍ ﴿٨٢﴾

और हम ने उन के ऊपर मिट्टी के पथर बरसाए, जो लगातार बरस रहे थे।

مُسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ ۚ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ

जो निशानज़दा थे तेरे रब के पास। और ये बस्ती ज़ालिमों से कुछ दूर

بَبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ

नहीं है। और मदन वालों की तरफ उन के भाई शुऐब (अलैहिस्सलाम) को भेजा। शुऐब (अलैहिस्सलाम)

يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ

ने फरमाया के ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं।

وَلَا تَنْقُصُوا الْبِكْيَالَ وَالْبِيزَانَ إِنِّي أَرِكُمْ بِخَيْرٍ

और तुम नाप और तोल में कमी न करो, इस लिए के मैं तुम्हें अच्छी हालत में देख रहा हूँ

وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مَّحْظٍ ﴿٨٤﴾ وَيَقَوْمِ

और मैं तुम पर एक घेरने वाले दिन के अज़ाब का खौफ करता हूँ। और ऐ मेरी कौम!

أَوْفُوا بِالْبِكْيَالَ وَالْبِيزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا

नाप और तोल को इन्साफ के साथ पूरा पूरा दो और लोगों को उन की

النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾

चीज़ें कम कर के मत दो और ज़मीन में फसाद फैलाते हुए मत फिरो।

بَقِيَّتِ اللَّهُ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ۚ

अल्लाह की बकीय्या चीज़ें तुम्हारे लिए बेहतर हैं अगर तुम ईमान वाले हो।

وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِخَفِيظٍ ﴿٨٦﴾ قَالُوا يَشْعِبُ أَصْلُوكَ

और मैं तुम पर मुहाफिज़ नहीं हूँ। वो केहने लगे ऐ शुऐब! क्या आप की नमाज़ आप को

تَأْمُرُكَ أَنْ تَتْرَكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَنْ تَفْعَلَ

इस का हुक्म देती है के हम छोड़ दें उन को जिन की हमारे बाप दादा इबादत करते थे या ये के हम अपने

فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ ۖ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾

मालों में करना छोड़ दें जो हम चाहें? यकीनन तुम हिल्म वाले, हिदायतयाफता हो।

قَالَ يَقَوْمِ ارْعَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي

शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ऐ मेरी कौम! बतलाओ अगर मैं अपने रब की तरफ से वाज़ेह रास्ते पर हूँ

وَرَزَقْنِي مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۖ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ

और उस ने मुझे अपनी तरफ से अच्छी रोज़ी दी हो। और मैं नहीं चाहता के तुम्हारी मुखालफत करूँ

إِلَىٰ مَا أَنهَكُم عَنْهُ ۚ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحُ

उन चीज़ों को कर के जिन से मैं तुम्हें रोकता हूँ। मैं तो सिर्फ इस्लाह चाहता हूँ

مَا اسْتَطَعْتُ ۚ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

जितनी मैं ताक़त रखूँ। और मेरी तौफ़ीक़ नहीं है मगर अल्लाह की तरफ से। उसी पर मैं ने तवक्कुल किया

وَالِيهِ أُنِيبُ ﴿٨٨﴾ وَيَقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِي

और उसी की तरफ मैं ख़ुजुअ करता हूँ। और ऐ मेरी कौम! मेरी मुखालफत तुम्हें इस बात की तरफ न ले जाए

أَنْ يُصِيبَكُمْ مِّثْلُ مَا أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ

के तुम्हें पहुँच जाए उस जैसा अज़ाब जो कौमे नूह या कौमे हूद

أَوْ قَوْمَ صَالِحٍ ۚ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِّنكُمْ بِبَعِيدٍ ﴿٨٩﴾ وَاسْتَغْفِرُوا

या कौमे सालेह को पहुँचा। और कौमे लूत तुम से कुछ दूर नहीं हैं। और तुम अपने रब से इस्तिग़फ़ार

رَبَّكُمْ ثُمَّ تَوَبُّوا إِلَيْهِ ۚ إِنْ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ﴿٩٠﴾ قَالُوا

करो, फिर तुम उस की तरफ तौबा करो। यकीनन मेरा रब बहोत ज़्यादा रहम करने वाला, महब्वत करने वाला है।

يُشْعِبُ مَا نَفَقَهُ كَثِيرًا مِّمَّا تَقُولُ وَإِنَّا لَنَرُكَ

उन्हों ने कहा के ऐ शुऐब! हम बहोत सी बातें नहीं समझते उस में से जो तुम केहते हो और यकीनन हम तुम्हें अपने

فِينَا ضَعِيفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْمُكَ لَرَجَمْنَاكَ ۚ وَمَا أَنْتَ

दरमियान कमज़ोर देख रहे हैं। और अगर आप का कबीला न होता, तो हम आप को रज्म कर देते। और आप

عَلَيْنَا بِعَزِيزٍ ﴿٩١﴾ قَالَ يَقَوْمِ أَرَهَيْتُمْ أَعْرُ عَلَيْكُمْ

हम पर कुछ भारी नहीं हो। शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ऐ मेरी कौम! क्या मेरा कबीला तुम पर अल्लाह से

مِّنَ اللَّهِ ۚ وَاتَّخَذْتُمُوهُ وَرَاءَكُمْ ظَهْرِيًّا ۚ إِنَّ رَبِّي

ज़्यादा भारी है? और तुम ने उस को अपनी पीठ पीछे डाल दिया है। यकीनन मेरा रब

بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٩٢﴾ وَيَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ

तुम्हारे आमाल को धेरे हुए है। और ऐ मेरी कौम! अपनी जगह पर रहे कर अमल करते रहो,

إِنِّي عَامِلٌ ۖ سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ

मैं भी अमल कर रहा हूँ। अनकरीब तुम्हें मालूम हो जाएगा के किस पर ऐसा अज़ाब आता है जो

يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۖ وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ

उस को ख़स्वा कर दे और कौन झूठा है। और तुम मुन्तज़िर रहो, मैं तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने

رَقِيبٌ ۚ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَالَّذِينَ

वाला हूँ। और जब के हमारा अज़ाब आया तो हम ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) को और उन लोगों को जो आप के

آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا ۚ وَآخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا

साथ ईमान लाए थे अपनी रहमत से बचा लिया। और उन ज़ालिमों को चीख ने

الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جُثَيِّنَ ۖ كَانِ

पकड़ लिया, फिर वो अपने घरों में घुटने के बल पड़े रह गए। गोया के वो

لَمْ يَعْزُوا فِيهَا ۖ إِلَّا بَعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعَدَتْ ثَمُودُ ۚ

उस में बसे ही नहीं थे। सुनो! नास हो मद्यन के लिए जिस तरह के कौमे समूद का नास हुवा।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۖ

यकीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को रसूल बना कर भेजा अपने मोअजिज़ात दे कर और वाज़ेह दलील दे कर।

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَ مَلَآئِهِ فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ

फिरऔन और उस की कौम की तरफ, फिर भी वो लोग फिरऔन के हुक्म पर चले।

وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ۚ يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ

और फिरऔन का हुक्म अच्छा नहीं था। वो अपनी कौम के आगे आगे क़यामत के दिन चल रहा होगा,

فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۖ وَبِئْسَ الْوَرْدُ الْبُورُودُ ۚ وَاتَّبَعُوا

फिर उन को दोज़ख में दाखिल करेगा। और वो उतरने का बुरा घाट है। और इस

فِي هَذِهِ لَعْنَةٌ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ بِئْسَ الرِّفْدُ

दुन्या में उन के पीछे लानत कर दी गई और क़यामत के दिन भी। बहोत बुरी मदद है जो

الرِّفْدُ ۚ ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرَىٰ نَقِصُهُ عَلَيْكَ

उन को दी गई। ये उन बस्तियों के किस्सों में से कुछ हम आप के सामने तिलावत करते हैं

مِنْهَا قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ۚ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلٰكِنْ

जिन में से कुछ खड़ी हुई हैं और कुछ कटी हुई हैं। और हम ने उन पर जुल्म नहीं किया, लेकिन

ظَلَبُوا أَنْفُسَهُمْ فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي

वो अपनी जानों पर जुल्म करते थे, फिर उन के कुछ काम नहीं आए उन के वो माबूद जिन को

يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ لَهَا جَاءَ أَمْرٌ

वो अल्लाह को छोड़ कर पुकारते थे जब के आप के रब का अज़ाब

رَبِّكَ ۖ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٍ ۚ وَكَذَلِكَ أَخْذُ

आया। और उन (मुशरिकीन) को सिवाए नुकसान के उन्हीं (माबूदों) ने नहीं बढ़ाया। इसी तरह आप के

رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۖ إِنَّ أَخْذَهُ

रब की पकड़ होती है जब वो बस्तियों को पकड़ता है जब के वो ज़ालिम होती हैं। यकीनन उस की पकड़

أَلِيمٌ شَدِيدٌ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ خَافَ

दर्दनाक, सख्त है। यकीनन उस में निशानी है उस शख्स के लिए जो आखिरत के

عَذَابِ الْآخِرَةِ ۖ ذَلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوعٌ لَّهُ النَّاسُ

अज़ाब से डरे। ये वो दिन है के जिस के लिए इन्सानों को जमा किया जाएगा

وَ ذَلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُودٌ ۚ وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ

और ये वो दिन है जिस में गवाहों को हाज़िर किया जाएगा। और हम उस को मुअख्खर नहीं कर रहे मगर मुक़र्रर किए हुए

مَّعْدُودٍ ۚ يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ

वक़्त के लिए। जिस दिन वो आएगा तो कोई शख्स बात नहीं कर सकेगा मगर अल्लाह की इजाज़त से।

فِيهِمْ شِقَئٌ شَقِيٌّ وَسَعِيدٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا

फिर उन में से कुछ बदबख्त होंगे और कुछ नेकबख्त होंगे। अलबत्ता जो बदबख्त होंगे

فِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ ۚ خَلِدِينَ فِيهَا

वो दोज़ख में होंगे, उन के लिए उस में चिल्लाना और सिसकियाँ होंगी। जिस में वो हमेशा रहेंगे

مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۖ

जब तक के आसमान और ज़मीन बाकी हैं, मगर जितना आप का रब चाहे।

إِنَّ رَبَّكَ فَعَالٌ لِّمَا يُرِيدُ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ سَعَدُوا

यकीनन आप का रब वही करता है जिस का वो इरादा करता है। अलबत्ता जो नेकबख्त होंगे

فِي الْجَنَّةِ خَلِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ

वो जन्नत में होंगे जिस में वो हमेशा रहेंगे जब तक आसमान

وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۚ عَطَاءٌ غَيْرُ مَجْذُوذٍ ۝

और ज़मीन काइम हैं, मगर जितना आप का रब चाहे। ऐसी अता के तौर पर जो बन्द नहीं की जाएगी।

فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَؤُلَاءِ ۚ مَا يَعْبُدُونَ

फिर आप शक में न रहिए उस की तरफ से जिन की ये लोग इबादत करते हैं। ये इबादत नहीं करते हैं

إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاؤُهُمْ مِنْ قَبْلُ ۚ وَإِنَّا لَمُوفُّوهُمْ

मगर उसी तरह जिस तरह के इस से पेहले उन के बाप दादा इबादत करते थे। और यकीनन हम उन को उन का

نَصِيبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوصٍ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ

हिस्सा पूरा पूरा देने वाले हैं इस हाल में के वो कम नहीं किया जाएगा। और यकीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम)

الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ

को किताब दी, फिर उस में इखतिलाफ किया गया। और अगर एक बात आप के रब की तरफ से पेहले हो चुकी

مِنْ رَبِّكَ لَفَضَلْنَا بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ

न होती तो उन के दरमियान फैसला कर दिया जाता। और यकीनन वो उस की तरफ से बड़े शक

مِرْيَةٍ ۝ وَإِنْ كُلًّا لِّيُؤْفِقَهُمُ رَبُّكَ

में हैं। और बेशक सब को आप का रब उन के आमाल पूरे पूरे

أَعْمَالَهُمْ ۚ إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ فَاسْتَقِمْ

देगा। इस लिए के वो उन के आमाल से पूरी तरह बाखबर है। इस लिए आप इस्तिक्ामत इखतियार कीजिए

كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۚ إِنَّهُ

जैसा आप को हुक्म दिया गया है, और वो लोग भी जिन्होंने आप के साथ तौबा की है, और तुम दाइरे से न निकलो। यकीनन वो

بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَلَا تَرْكَبُوا إِلَى الَّذِينَ

तुम्हारे आमाल को देख रहा है। और तुम उन ज़ालिमों की तरफ ज़रा भी मैलान

ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ

न करना, वरना तुम्हें आग पहुँच कर रहेगी। और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई हिमायती

مِنْ أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ۝ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي

नहीं होंगे, फिर तुम्हारी नुसरत नहीं की जा सकेगी। और आप दिन के दोनों किनारों

النَّهَارِ وَ زُلْفًا مِّنَ اللَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ

में और रात की इब्तिदाई घड़ियों में नमाज़ काइम कीजिए। यकीनन नेकियाँ बुराइयों को

السَّيِّئَاتِ ۖ ذَٰلِكَ ذِكْرِي لِلذَّكْرَيْنِ ۝ وَاصْبِرْ

खत्म कर देती हैं। ये याद रखने वालों के लिए याददिहानी है। और आप सब्र कीजिए,

فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْحَسِنِينَ ۝

फिर यकीनन अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र जायेअ नहीं करते।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ

फिर उन कौमों में से जो तुम से पेहले थीं अकल वाले लोग क्यूं न हुए

يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّنْ

जो ज़मीन में फसाद से रोकते सिवाए थोड़े लोगों के उन में से

أُنَجِّنَا مِنْهُمْ ۖ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ

जिन को हम ने नजात दी? और ज़ालिम लोग उस के पीछे पड़े जिस में उन्हें ऐश मिला,

وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ۝ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ

और वो मुजरिम थे। और आप का रब ऐसा नहीं के बस्तियों

الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ۝ وَلَوْ شَاءَ

को जुल्म से हलाक कर दे जब के वहाँ वाले इस्लाह कर रहे हों। और अगर आप का

رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَا يَزَالُونَ

रब चाहता तो तमाम इत्सानों को एक उम्मत बना देता। और ये बराबर इखतिलाफ

مُخْتَلِفِينَ ۝ إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّكَ ۖ وَلِذَٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۖ

करते रेहते हैं। मगर जिन पर आप के रब ने रहम किया। और इसी वजह से अल्लाह ने उन को पैदा किया है।

وَتَبَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ

और आप के रब का कलिमा ताम्म हो कर रहा के मैं इत्सानों और जिन्नात सब से जहन्नम को

وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝ وَكَلَّا تَقْصُ عَلَيَّ

ज़रूर भखंगा। और हम पैग़म्बरों के किस्सों में से आप के सामने

مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ ۖ وَجَاءَكَ

बयान करते हैं के हम इस से आप के दिल को मज़बूत करें। और इन किस्सों में आप के

فِي هَذِهِ الْحَقِّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرِي لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقُلْ

पास हक़ और नसीहत और ईमान वालों के लिए याददिहानी आई है। और आप फरमा दीजिए

لِّلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اَعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ ۖ اِنَّا

उन से जो ईमान नहीं लाते के तुम अपनी जगह पर रह कर अमल करते रहो, हम भी

عَمَلُونَ ۚ وَانْتَظِرُوا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُونَ ۝ (۱۲) وَلِلّٰهِ غَيْبُ

अमल कर रहे हैं। और तुम इन्तिज़ार करो, हम भी मुन्तज़िर हैं। और अल्लाह ही के लिए आसमानों और ज़मीन की छुपी

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ الْأَمْرُ كُلُّهُ فَاعْبُدْهُ

हुई चीज़ों का इल्म है और उसी की तरफ़ तमाम उमूर लौटाए जाएंगे, तो आप उसी की इबादत कीजिए

و تَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۖ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ (۱۳)

और उसी पर तवक्कुल कीजिए। और आप का रब तुम्हारे अमल से बेखबर नहीं है।

رُكُوعًا ۱۲

(۱۲) سُورَةُ يُوسُفَ مَكِّيَّةٌ (۵۳)

آيَاتُهَا ۱۱۱

और 92 रूकूअ हैं सूरह यूसुफ़ मक्का में नाज़िल हुई उस में 999 आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الرَّحْمٰنُ تِلْكَ اٰیَةُ الْكِتٰبِ الْبَيِّنٰتِ ۝ اِنَّا اَنْزَلْنٰهُ

अलिफ़ लाम रौ। ये साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब की आयतें हैं। यकीनन हम ने उसे

فُرِئْنَا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ (۲) نَحْنُ نَقُصُّ

अरबी कुरआन बना कर उतारा है ताके तुम समझ सको। हम आप के सामने

عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا اَوْحَيْنَا اِلَيْكَ هٰذَا

बेहतरीन किस्सा बयान करते हैं इस कुरआन के ज़रिए जो हम ने आप की तरफ

الْقُرْآنَ ۚ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝ (۳)

वही किया। और यकीनन इस से पेहले आप बेखबर लोगों में से थे।

اِذْ قَالَ يُوسُفُ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ اِنِّیْ رَاٰیٓتُ اَحَدَ عَشَرَ

जब के यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने अपने अब्बा से कहा ऐ मेरे अब्बा! मैं ने ग्यारा

كُوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاٰیْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝ (۴)

सितारे और सूरज और चाँद को देखा, मैं ने उन्हें देखा के मुझे सज्दा कर रहे हैं।

قَالَ يَبْنٰی لَا تَقْصُصْ رُءْیَاكَ عَلٰی اِخْوَتِكَ

याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरे बेटे! अपना ख्वाब अपने भाइयों के सामने बयान मत करना

فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ	वरना वो तेरे खिलाफ तदबीर करेंगे। यकीनन शैतान इन्सान का खुला
مُبِينٌ ۝ وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ	दुशमन है। और इसी तरह तेरा रब तुझे मुन्तखब करेगा और तुझे
مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ	ख्वाबों की ताबीर का इल्म देगा और अपनी नेअमत तुझ पर इत्माम तक पहुँचाएगा
وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَتْهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ	और आले याकूब पर भी जैसा के उसे इत्माम तक पहुँचाया इस से पेहले तेरे अजदाद
مِنْ قَبْلُ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝	६१ इब्राहीम और इसहाक़ (अलैहिमस्सलाम) पर। यकीनन तेरा रब इल्म वाला, हिक्मत वाला है।
لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٍ لِّلْسَائِلِينَ ۝	यकीनन यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) और उन के भाइयों में सवाल करने वालों के लिए बहोत सी निशानियाँ थीं।
إِذْ قَالُوا لَيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَىٰ آبِنَا مِنَّا	और वो वक़्त क़ाबिले ज़िक्र है जब के उन्होंने ने कहा के यूसुफ़ और उन का भाई हमारे अब्बा को हम से ज़्यादा महबूब हैं
وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ۚ إِنَّ آبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝	हालांके हम मज़बूत जमाअत हैं। यकीनन हमारे अब्बा अलबत्ता खुली ग़लती में हैं। तुम यूसुफ़
يُوسُفَ أَوْ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ	को क़त्ल कर दो या उसे किसी ज़मीन में फैंक दो तो तुम्हारे लिए तुम्हारे अब्बा की तवज्जुह खालिस रह जाएगी
وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا ضَالِحِينَ ۝ قَالَ قَائِلٌ	और उस के बाद तुम अच्छे लोग बन जाना। उन में से किसी केहने वाले
مِنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَلْقُوهُ فِي غَيَبَتِ الْجُبِّ	ने कहा के तुम यूसुफ़ को क़त्ल मत करो बल्के उसे कुवें की तारीकियों में फैंक दो
يَلْتَقِطَهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ۝	के उसे गुज़रने वाले काफ़लों में से कोई उठा लेगा, अगर तुम ऐसा करने वाले हो।
قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا	उन्होंने ने कहा के ऐ हमारे अब्बा! आप को क्या हुवा के आप हम पर मुतमइन नहीं यूसुफ़ के बारे में हालांके हम यकीनन

لَهُ لِنَصْحُونِ ۝۱۱ أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَيَلْعَبَ

उस के खैरखाह हैं। आप उसे हमारे साथ कल को भेज दीजिए के वो खाए और खेले

وَإِنَّا لَهُ لَحَفُظُونَ ۝۱۲ قَالَ إِنِّي لِيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا

और यकीनन हम उस की हिफाज़त करेंगे। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यकीनन मुझे ये बात ग़मगीन करती

بِهِ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ

है के तुम उसे ले जाओ और मैं डरता हूँ इस से के उसे भेड़िया खा जाए इस हाल में के तुम उस से

غَفْلُونَ ۝۱۳ قَالُوا لَيْنَ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا

बेखबर हो। उन्होंने ने कहा के अगर उस को भेड़िया खा जाए इस हाल में के हम मज़बूत नौजवान हैं, यकीनन तब तो हम

إِذَا لَخْسِرُونَ ۝۱۴ فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَاجْمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ

उस वक़्त खसारे वाले होंगे। फिर जब वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को ले कर गए और उन्होंने ने इत्तिफाक़ कर लिया इस

فِي غَيْبَتِ الْجُبِّ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِأَمْرِهِمْ

बात पर के यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को कुँवें की तारीकियों में डाल दें। और हम ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की तरफ

هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝۱۵ وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً

वही की के ज़ख़र आप उन को जतलाओगे उन की ये हरकत इस हाल में के उन को पता भी नहीं होगा। और वो अपने अब्बा के पास

يَبْكُونَ ۝۱۶ قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا

इशा के वक़्त रोते हुए आए। केहने लगे के ऐ हमारे अब्बा! यकीनन हम दौड़ने लगे थे और हम ने

يُوسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ

छोड़ दिया था यूसुफ को अपने सामान के पास, फिर उसे भेड़िया खा गया। और आप हम पर यकीन करने वाले

لَنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ۝۱۷ وَجَاءُوا عَلَى قَبْرِهِ بِدَمٍ

नहीं हैं अगरचे हम सच्चे हों। और वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की कमीस पर झूठा खून ले कर

كَذِبٌ ۖ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ

आए। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया बल्के तुम्हारे लिए तुम्हारे नफ़्सों ने एक अम्र को मुज़य्यन किया है। अब तो सब

جَمِيلٌ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ ۝۱۸ وَجَاءَتْ

ही बेहतर है। और अल्लाह मददगार है उस बात पर जो तुम बयान करते हो। और एक काफ़ला

سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوَهُ ۖ قَالَ يَبُشْرَى

आया, फिर उन्होंने ने अपने पानी लाने वाले को भेजा तो उस ने अपना डोल लटकाया। तो वो केहने लगा ओ खुशखबरी हो!

۱۲

هَذَا غُلْمٌ ۖ وَأَسْرُوهُ بَضَاعَةً ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

ये तो लड़का है। और उन्होंने ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को सामान बना कर छुपा दिया, और अल्लाह खूब जानते हैं उस हरकत को जो वो करते थे।

وَأَسْرُوهُ بِشَيْنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ ۚ وَكَانُوا فِيهِ

और उन्होंने ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को बेच दिया मामूली कीमत के बदले में, गिने चुने चन्द दराहिम के बदले में। और वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

مِنَ الرَّاغِبِينَ ۚ وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ

में बेरगबती करने वालों में से थे। और उस शख्स ने जिस ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को खरीदा मिस्र से उस

لِامْرَأَتِهِ أَكْرَمَنِ مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا

ने अपनी बीवी से कहा के तू इन का ठिकाना अच्छा रख, हो सकता है के वो हमें नफा दे

أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۖ وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ ۚ

या हम उसे लड़का ही बना लें। और इस तरह हम ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को उस मुल्क में कुदरत दी।

وَلِنُعَلِّمَهُ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۖ وَاللَّهُ غَالِبٌ

और इस लिए ताके हम उन्हें ख्वाबों की ताबीर सिखलाएं। और अल्लाह अपने हुक्म पर ग़ालिब

عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَمَّا بَلَغَ

हैं लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। और जब यूसुफ (अलैहिस्सलाम) अपनी जवानी को पहुँच

أَشَدَّهُ اتَّبَعَهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۖ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْحَسَنِينَ ﴿٢١﴾

गए, तो हम ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को हिक्मत और इल्म दिया। और इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

وَرَاودَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَّقَتِ

और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की तलबगार हुई वो औरत जिस के कमरे में यूसुफ (अलैहिस्सलाम) थे और तमाम

الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۖ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ

दरवाज़े उस ने बन्द कर लिए और केहने लगी जल्दी आ जाओ। यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अल्लाह की पनाह! अज़ीज़े मिस्र

رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ

मेरे मुरब्बी ने बहोत अच्छी तरह मुझे रखा है। यकीनन ज़ालिम फलाह नहीं पाते। यकीनन उस औरत ने

هَمَّتْ بِهِ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنَّ رَأَىٰ بُرْهَانَ رَبِّهِ ۖ

यूसुफ (अलैहिस्सलाम) का इरादा कर ही लिया था। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) भी उस का इरादा कर लेते अगर अपने रब के बुरहान को न देखते।

كَذَلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ ۚ إِنَّهُ مِنْ

इसी तरह (हम ने किया) ताके हम यूसुफ (अलैहिस्सलाम) से फेर दें बुराई और बेहयाई को। यकीनन यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

عَبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ﴿١٢﴾ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ

हमारे खालिस किए हुए बन्दों में से थे। और दोनों दरवाज़े की तरफ दौड़े और औरत (जुलैखा) ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

مِنْ دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ۖ قَالَتْ مَا جَزَاءُ

की कमीस पीछे से फाड़ दी और दोनों ने जुलैखा के शौहर को पाया दरवाज़े के पास। जुलैखा केहने लगी के उस

مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ

शख्स की सज़ा क्या है जो आप की बीवी के साथ बुराई का इरादा करे सिवाए इस के के उस को कैद कर दिया जाए या उसे

الْيَمِّ ﴿١٣﴾ قَالَ هِيَ رَاوَدْتَنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ

दर्दनाक सज़ा दी जाए? यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ये औरत तो खुद मुझ से मेरी तालिब हुई थी और जुलैखा

مِّنْ أَهْلِهَا ۚ إِنَّ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ

के घर वालों में से एक गवाही देने वाले ने गवाही दी के अगर उस का कुर्ता आगे से फटा हुआ है तो जुलैखा सच्ची

وَهُوَ مِنَ الْكَذِبِينَ ﴿١٤﴾ وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ

है और यूसुफ झूठों में से है। और अगर उन का कुर्ता पीछे से फटा हुआ

مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٥﴾ فَلَمَّا رَأَى قَمِيصَهُ

है तो जुलैखा झूठी है और यूसुफ सच्चों में से है। फिर जब अज़ीज़े मिस्र ने उन का कुर्ता देखा जो

قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۖ إِنَّ كَيْدَكُنَّ

फटा हुआ था पीछे से तो उस ने कहा के यकीनन ये तुम्हारी मक्कारियों में से है। यकीनन तुम्हारा मक्र

عَظِيمٌ ﴿١٦﴾ يُّوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَذَا ۖ سَتَجِدُنِي

बड़ा भारी होता है। ऐ यूसुफ! तुम इस से ऐराज़ करो। और (ऐ जुलैखा!) तू अपने गुनाह के लिए

لَذُنُوبِكِ ۚ إِنَّكَ كُنْتَ مِنَ الْخَاطِئِينَ ﴿١٧﴾ وَ قَالَ نِسْوَةٌ

इस्तिग़फ़ार करा। यकीनन तू ही कुसूरवार है। और शहर की औरतों

فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ ۖ

ने कहा के अज़ीज़े मिस्र की बीवी अपने गुलाम से उसी का मुतालबा करती है।

قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۚ إِنَّا لَنَرُهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١٨﴾

यकीनन उस की महबूत उस के दिल के अन्दर घुस गई है। यकीनन हम उसे खुली ग़लती में देख रही हैं।

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ

फिर जब उस ने उन का मक्र सुना तो उस ने उन को बुलाने के लिए आदमी भेजा और उन के लिए एक बैठक

لَهُنَّ مُتَّكَأٌ وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا (मजलिस) तय्यार की और उन औरतों में से हर एक को छुरी दी
وَقَالَتِ الْخُجَّاءُ عَلَىٰ يَاقُوبَ ۖ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ और कहा के यूसुफ! तुम उन के सामने निकल कर आओ। फिर जब उन औरतों ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को देखा तो शशदर रेह
أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا ۖ إِنْ هَذَا गई और उन्होंने ने अपने हाथ काट लिए और केहने लगीं अल्लाह की पनाह! ये इन्सान नहीं है। ये नहीं है
إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿١٣﴾ قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِينَ لُتْنِي فِيهِ मगर एक बुजुर्ग फरिशता। जुलैखा केहने लगी फिर यही तो वो है जिस के बारे में तुम मुझे मलामत करती थीं।
وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ ۚ وَلَئِنْ यकीनन मैं उस की तालिब हुई, लेकिन उस ने मासूम रेहना चाहा। और अगर वो
لَّمْ يَفْعَلْ مَا أَمَرُهُ لَيَسْجَنَنَّ وَلَيَكُونَا مِنَ الصَّغِيرِينَ ﴿١٤﴾ नहीं करेगा वो जिस का मैं उसे हुक्म दे रही हूँ तो यकीनन उसे कैद कर दिया जाएगा और वो ज़लील लोगों में से हो जाएगा।
قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की ऐ मेरे रब! कैदखाना मुझे ज़्यादा महबूब है उस काम से जिस की तरफ ये मुझे बुला रही हैं।
وَالَا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُنْ और अगर तू मुझ से उन की मक्कारी को नहीं फेरेंगा तो मैं उन की तरफ माइल हो जाऊँगा और मैं जाहिलों में
مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿١٥﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۖ से बन जाऊँगा। उस के रब ने उस की दुआ कबूल की, फिर यूसुफ (अलैहिस्सलाम) से उन के मक्र को फेर दिया।
إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٦﴾ ثُمَّ بَدَأَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا رَأَوْا यकीनन वो सुनने वाला, इल्म वाला है। फिर उन्हें खयाल आया इस के बाद के उन्होंने ने बहोत सी निशानियाँ
الْآيَاتِ لَيَسْجُنَّهُ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧﴾ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ देख लीं के यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को एक वक्त तक के लिए कैद कर दें और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के साथ कैदखाने में दाखिल
فَتَيْنٍ ۖ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرَانِي أَعْصِرُ خَمْرًا ۖ हुए दो नौजवान। उन में से एक ने कहा के यकीनन मैं ख्वाब देख रहा हूँ के मैं शराब निचोड़ रहा हूँ।
وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرَانِي أُحْمَلُ فَوْقَ رَأْسِي خُبْرًا تَأْكُلُ और दूसरे ने कहा के मैं ख्वाब देख रहा हूँ के मैं अपने सर पर रोटियाँ उठाए हुए हूँ जिस में से

الطَّيْرُ مِنْهُ ۖ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ ۚ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٦﴾

परिन्दे खा रहे हैं। ऐ यूसुफ! आप हमें इस की ताबीर दीजिए। यकीनन हम आप को नेक लोगों में से देख रहे हैं।

قَالَ لَا يَأْتِيَكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقُنِي إِلَّا نَبَأْتُكُمَا بِتَأْوِيلِهِ

यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम्हारे पास नहीं आएगा वो खाना जो तुम्हें खाने को दिया जाता है मगर मैं तुम्हें उस की ताबीर

قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ۖ ذِكْرًا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي ۖ إِنِّي

बतलाऊँगा इस से पेहले के वो तुम्हारे पास आए। ये उन उलूम में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखलाए हैं। यकीनन

تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ

मैं ने उस कौम का मज़हब छोड़ दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखती और जो आखिरत का इन्कार करने

كَافِرُونَ ﴿٢٧﴾ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ

वाली है। और मैं ने अपने बाप दादा इब्राहीम और इसहाक और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) की मिल्लत का इत्तिबा

وَيَعْقُوبَ ۚ مَا كَانَ لَنَا أَنْ نَشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۖ

किया है। हमारे लिए जाइज़ नहीं है के हम अल्लाह का शरीक ठेहराएं किसी भी चीज़ को।

ذَلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا وَ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ

ये अल्लाह का हम पर फज़ल है और तमाम इन्सानों पर भी, लेकिन अक्सर

النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٨﴾ يُصَاحِبِي السِّجْنِ ءَأَرْبَابُ

लोग शुक्र अदा नहीं करते। ऐ कैदखाने के साथियो! क्या अलग अलग

مُتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٢٩﴾ مَا تَعْبُدُونَ

रब बेहतर हैं या यकता ग़ालिब अल्लाह बेहतर है? तुम अल्लाह को छोड़ कर के

مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءَ سَمَّيْتُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مِمَّا أُنْزِلَ

इबादत नहीं करते मगर चन्द नामों की जो तुम और तुम्हारे बाप दादा ने रख रखे हैं, अल्लाह ने

اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ ۖ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ ۖ أَمَرَ

उस पर कोई दलील नहीं उतारी। हुक्म तो सिर्फ अल्लाह ही का चलता है। जिस ने हुक्म दिया है

أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ۖ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ

के इबादत मत करो मगर उसी की। यही सीधा दीन है, लेकिन लोगों

النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾ يُصَاحِبِي السِّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمْ

में से अक्सर जानते नहीं हैं। ऐ कैदखाने के साथियो! अलबत्ता तुम में से एक

فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا ۚ وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ

वो अपने बादशाह को शराब पिलाएगा। और अलबत्ता दूसरा उसे सूली दी जाएगी, फिर उस के सर में से

مِنْ رَأْسِهِ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِينَ ۝

परिन्दे खाएंगे। उस मुआमले का फैसला हो चुका जिस के बारे में तुम पूछ रहे हो।

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي

और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने उस शख्स से फरमाया के जिस के मुतअल्लिक आप ने गुमान किया के वो उन दोनों में से नजात पाने वाला

عِنْدَ رَبِّكَ ۚ فَانْسَهُ الشَّيْطَانُ ذَكَرَ رَبَّهُ فَلَيْتَ فِي السِّجْنِ

है के तू मुझे अपने बादशाह के यहाँ याद रखना। फिर शैतान ने उसे भुला दिया यूसुफ (अलैहिस्सलाम) का बादशाह से तज़क़िरा करना, फिर

بِضْعَ سِنِينَ ۝ وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ

यूसुफ (अलैहिस्सलाम) कैदखाने में कई साल ठेहरे रहे। और बादशाह ने कहा के यकीनन मैं सात मोटी गाएं देख रहा

سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ ۚ وَسَبْعٌ سُتَبِلَاتٍ خُضِرَ

हूँ जिन को खा रही हैं सात दुबली गाएं और सात सब्ज खोशों को देख रहा हूँ और दूसरे सात खुश्क खोशों

وَأَخْرَ يُبْسِتٌ ۚ يَأْيِيهَا الْهَلَاءُ أَفْتُونِي فِي رُءْيَايَ

को देख रहा हूँ। ऐ दरबारियो! तुम मुझे बताओ मेरे ख्वाब के बारे में

إِن كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُونَ ۝ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ ۚ

अगर तुम ख्वाब की ताबीर जानते हो। उन्होंने ने कहा के ये तो ज़ेहनी तसव्वुरात ही के ख्वाब हैं।

وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعَالِمِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِي

और हम ऐसे ख्वाबों की ताबीर नहीं जानते। और उस शख्स ने कहा जिस ने दो आदमियों में से

بَحَامْنُهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ

नजात पाई थी और उस को याद आया एक तवील ज़माने के बाद, उस ने कहा के मैं तुम्हें इस ख्वाब की ताबीर बतलाऊँगा,

فَأَرْسَلُونَا ۝ يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ

इस लिए तुम मुझे भेजो। ऐ यूसुफ! ऐ सिद्दीक! आप हमें ताबीर दीजिए सात मोटी

بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ

गायों के बारे में जिन को खा रही हैं सात दुबली गाएं और सात सब्ज खोशों

سُتَبِلَاتٍ خُضِرَ وَأَخْرَ يُبْسِتٌ ۚ لَّعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ

के बारे में और दूसरे सात खुश्क खोशों के बारे में, ताके मैं उन लोगों के पास वापस जाऊँ

لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾ قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَابَّاءُ	
ताके उन्हें इल्म हो। यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम खेती करोगे लगातार सात साल।	
فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنْبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا	
फिर जो तुम खेती करो उसे छोड़ दो उस के खोशे में मगर थोड़ा उस में से	
مِمَّا تَأْكُلُونَ ﴿٣٧﴾ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعُ شِدَادٍ	
जो तुम खाओ। फिर उस के बाद सात सख्त साल आएंगे	
يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تَحْصِنُونَ ﴿٣٨﴾	
जो खा जाएंगे उसे जो तुम ने उन के लिए पेहले से तय्यार किया है मगर थोड़ा उस में से जो तुम महफूज़ रखो।	
ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ	
फिर उस के बाद एक साल आएगा जिस में लोगों पर बारिश बरसाई जाएगी	
وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٣٩﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ انْتُونِي بِهِ ؕ	ع ١٤
और उस में वो फल निचोड़ेंगे। और बादशाह ने कहा के तुम उसे मेरे पास ले आओ।	
فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَسْأَلْهُ مَا بَالُ	
चुनांचे जब यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के पास कासिद आया, तो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तू अपने बादशाह के पास वापस जा,	
النَّسْوَةِ الَّتِي قَطَعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ	
फिर उस से पूछ के उन औरतों का क्या हाल है जिन्हों ने अपने हाथ काट दिए थे। यकीनन मेरा रब उन के मक्र को खूब	
عَلِيمٌ ﴿٤٠﴾ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَاوَدْتُنَّ يُوسُفَ	
जानता है। अजीजे मिस्त्र ने पूछा के तुम्हारा क्या वाकिआ है जब तुम ने यूसुफ को उस की ज़ात से वरगलाया?	
عَنْ نَفْسِهِ ۖ قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ ۖ	
उन्हों ने कहा के अल्लाह की पनाह! हम उन के बारे में कोई बुराई नहीं जानते। अजीजे मिस्त्र की बीवी ने कहा के अब हक़ वाज़ेह	
قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ إِنَّ حَصَصَ الْحَقُّ أَنَا رَاوَدْتُهُ	
हो गया। मैं ने उस को वरगलाया था (मुतालबा किया था उस की ज़ात का, न किसी खिदमत का) उस की ज़ात से और यकीनन वो सच्ची में से	
عَنْ نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٤١﴾ ذَلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي	
है। (यूसुफ अलैहिस्सलाम ने फरमाया ये मैं ने अपनी बराअत के लिए सब कुछ बर्दाश्त किया) ये इस लिए ताके वो (अजीजे मिस्त्र)	
لَمْ أَخْنُهِ بِالْغَيْبِ وَإِنَّ اللَّهَ لَإِيْهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ ﴿٤٢﴾	
जान ले के मैं ने उस से खयानत नहीं की उस की रैबत में और ये के अल्लाह खयानत करने वालों के मक्र को चलने नहीं देते।	

وَمَا أُبَرِّئُ نَفْسِي ۚ إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ

और मैं अपने नफ्स की बराअत नहीं करता। यकीनन नफ्स तो बहुत ज़्यादा बुराई का हुक्म देने वाला है

إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي ۚ إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ

मगर वो जिस पर मेरा रब रहम करे। यकीनन मेरा रब बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और बादशाह ने कहा के

الْمَلِكُ اتُّوْنِي بِهِ ۚ اسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي ۚ فَلَمَّا كَلَمَهُ

तुम उसे मेरे पास ले आओ, मैं उसे अपनी ज़ात के लिए खालिस रखना चाहता हूँ। फिर जब बादशाह ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ

से बात की तो बादशाह ने कहा के यकीनन आप आज से हमारे नज़दीक अमानतदार इज्जत के मरतबे पर हो। यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

اجْعَلْنِي عَلَى خَزَائِنِ الْأَرْضِ ۚ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ ﴿٥٥﴾

ने फरमाया के आप मुझे ज़मीन के खज़ानों पर मुक़र्रर कर दीजिए। यकीनन मैं हिफ़ाज़त करने वाला, जानने वाला हूँ।

وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ ۚ يَتَّبِعُونَ مِنْهَا

और इसी तरह हम ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को उस मुल्क में हुक्मत दी। वो ठिकाना बनाते थे उस मुल्क में

حَيْثُ يَشَاءُ ۚ نَصِيبٌ بِرَحْمَتِنَا مِنْ نَشَاءٍ وَلَا نُضِيعُ

जहाँ चाहते। हमारी रहमत हम पहुँचाते हैं जिसे चाहते हैं और हम नेकी करने वालों का अज़्र

أَجْرَ الْبُحْسَنِ ۚ وَلَا جُزْءُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ

ज़ायेअ नहीं करते। और अलबत्ता आखिरत का अज़्र बेहतर है उन के लिए जो

آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٦﴾ وَجَاءَ إِخْوَتُ يُوسُفَ

ईमान वाले हैं और जो मुत्तकी हैं। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के भाई आए, फिर वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٥٧﴾

के पास पहुँचे तो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने उन को पेहचान लिया और वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को पेहचानते नहीं थे।

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ قَالَ اتُّوْنِي بِأَخٍ لَكُمْ

और जब यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने उन को उन का सामान तय्यार कर के दिया तो फरमाया के तुम मेरे पास अपने उस भाई को भी ले आओ

مِّنْ أَبِيكُمْ ۚ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أُوفِي الْكَيْلَ وَأَنَا

जो तुम्हारे बाप की तरफ से है। क्या तुम देखते नहीं के मैं अनाज पूरा पूरा देता हूँ और मैं

خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٥٨﴾ فَإِنْ لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ

बेहतरीन मेज़बानी करने वाला हूँ। फिर अगर तुम उस को मेरे पास नहीं लाओगे तो तुम्हें ग़ल्ला नहीं मिलेगा

عِنْدِي وَلَا تَقْرَبُونِ ﴿١٠﴾ قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ أَبَاهُ

मेरे पास और तुम मेरे करीब भी मत आना। उन्होंने ने कहा के हम उसे उस के अब्बा से इसरार के साथ

وَأَنَا لَفَاعِلُونَ ﴿١١﴾ وَقَالَ لِفِتْنِيهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ

तलब करेंगे और यकीनन हम ऐसा करेंगे। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने अपने खादिमों से फरमाया के तुम उन

فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا

की पूंजी उन के सामान में रख दो ताके वो उस को पेहचान लें जब वो पलट कर जाएं

إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوا

अपने घर वालों के पास ताके वापस आए। फिर जब वो अपने अब्बा के पास वापस पहुँचे

إِلَىٰ آبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ

तो उन्होंने ने कहा के ऐ हमारे अब्बा! हम से ग़ल्ला रोक दिया गया, इस लिए हमारे साथ हमारे भाई

مَعَنَا أَخَانَا نَكْتَلُ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ﴿١٣﴾ قَالَ

(बिनयामीन) को भेजिए के हम ग़ल्ला लाएं और हम यकीनन उस की हिफाज़त करेंगे। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के क्या

هَلْ أَمْنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا أَمْنْتُكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ ۖ

मैं तुम्हें उस के बारे में अमीन समझूँ जैसा के मैं ने उस के भाई के बारे में इस से पेहले तुम्हें अमीन समझा था?

فَاللَّهُ خَيْرٌ حِفْظًا ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٤﴾

फिर अल्लाह बेहतरीन हिफाज़त करने वाला है। और वो अरहमुराहिमीन है।

وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ ۖ

और जब उन्होंने ने अपना सामान खोला तो अपनी पूंजी को पाया के जो उन की तरफ वापस लौटा दी गई थी।

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي ۖ هَذِهِ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا ۖ

उन्होंने ने कहा हमारे अब्बा! हमें क्या चाहिए? ये हमारी पूंजी हमें वापस लौटा दी गई है।

وَنَبِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيرٍ ۖ

और हम अपने घर वालों का ग़ल्ला लाएंगे और हम अपने भाई की हिफाज़त करेंगे और हमें एक ऊँट का ग़ल्ला ज़्यादा मिलेगा।

ذَلِكَ كَيْلُ يَسِيرٍ ﴿١٥﴾ قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ

ये ग़ल्ले (का हुसूल) आसान है। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं उस को तुम्हारे साथ हरगिज़ नहीं भेजूँगा

حَتَّىٰ تُوْتُونَ مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ لَتَأْتِنَنِي بِهِ إِلَّا آتُ

जब तक के तुम मुझे अल्लाह की तरफ से पुख्ता अहद न दो के तुम ज़रूर उसे मेरे पास लाओगे, मगर ये के

يُحَاطَ بِكُمْ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ

तुम्हें घेर लिया जाए। फिर जब उन्होंने ने याकूब (अलैहिस्सलाम) को अपना पुख्ता अहद दिया, तो याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के

عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ۝ ۱۲ وَ قَالَ يَبْنَئِي لَا تَدْخُلُوا

अल्लाह उस पर वकील है जो हम केहे रहे हैं। और याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरे बेटो! तुम एक

مِنْ بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ۝

दरवाज़े से दाखिल न होना और अलग अलग दरवाज़ों से दाखिल होना।

وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۝ ۱۳ إِنْ الْحُكْمُ

और मैं तुम्हें अल्लाह के हुक्म से कुछ भी बचा नहीं सकता। हुक्म तो सिर्फ अल्लाह ही का

إِلَّا لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۝ ۱۴ وَ عَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝

चलता है। उसी पर मैं ने भरोसा किया। और उसी पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिए।

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ ۝ ۱۵ مَا كَانَ

और जब वो दाखिल हुए उस तरह जैसे उन्हें उन के अब्बा ने हुक्म दिया था, तो ये बात

يُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً

उन्हें अल्लाह के हुक्म से ज़रा भी बचा न सकी मगर एक ख्वाहिश थी याकूब (अलैहिस्सलाम) के

فِي نَفْسٍ يَعْقُوبَ قَضَاهَا ۝ ۱۶ وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنَاهُ

दिल की जो उन्होंने ने पूरी कर ली। और यकीनन वो इल्म वाले थे, उसी को जानते थे जो हम ने उन्हें सिखलाया था

وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ ۱۷ وَلَمَّا دَخَلُوا

۱۱

लेकिन अक्सर लोग (हकीकत का) इल्म नहीं रखते। और जब वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के पास

عَلَىٰ يُوسُفَ أَوَىٰ إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا

दाखिल हुए तो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने अपने पास अपने भाई को जगह दी। यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के

أَخُوكَ فَلَا تَبْتَسِ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ ۱۸

यकीनन मैं तेरा भाई हूँ, इस लिए तू अफसोस मत कर उन हरकतों पर जो ये कर रहे हैं।

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ جَعَلَ السَّقَايَةَ

फिर जब यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने उन को उन का सामान तय्यार कर के दिया तो अपने भाई के थैले में

فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيَّتُهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ

प्याला रख दिया, फिर एक ऐलान करने वाले ने ऐलान किया के ऐ काफले वालो! यकीनन तुम

لَسْرِقُونَ ﴿٤٠﴾ قَالُوا وَقَابِلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقَدُونَ ﴿٤١﴾

तो चोर हो। ये कहते हुए वो उन के सामने आए के तुम क्या चीज़ गुम पाते हो?

قَالُوا نَفَقْدُ صَوَاعِ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ

उन्होंने ने कहा के हम बादशाह का प्याला गुम पाते हैं और उस शख्स के लिए जो उस को ले कर आएगा एक ऊँट का ग़ल्ला

بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ﴿٤٢﴾ قَالُوا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ

मिलेगा और मैं उस का ज़िम्मेदार हूँ। उन्होंने ने कहा के अल्लाह की क़सम! यकीनन तुम्हें मालूम है के

مَا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سَارِقِينَ ﴿٤٣﴾ قَالُوا

हम इस मुल्क में इस लिए नहीं आए के हम फ़साद फैलाएं और हम चोर नहीं हैं। उन्होंने ने कहा

فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كَذِبِينَ ﴿٤٤﴾ قَالُوا جَزَاؤُهُ

के फिर उस शख्स की क्या सज़ा है अगर तुम झूठे हो? तो उन्होंने ने कहा उस की सज़ा

مَنْ وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ ۖ كَذٰلِكَ

वही शख्स है जिस के थैले में वो प्याला पाया जाए, फिर वही उस की सज़ा है। इसी तरह

يُجْزَى الظَّالِمِينَ ﴿٤٥﴾ فَبَدَأَ بِأَوْعِيَّتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ

हम ज़ालिमों को सज़ा देते हैं। फिर यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने उन के थैलों से इब्तिदा की अपने भाई के

أَخِيهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ أَخِيهِ ۖ كَذٰلِكَ

थैले से पेहले, फिर उस को निकाला अपने भाई के थैले से। इसी तरह

كِدْنَا لِيُوسُفَ ۖ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ

हम ने तदबीर की यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के लिए। वो अपने भाई को नहीं ले सकते थे बादशाह के

الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۖ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّنْ نَّشَاءُ ۖ

मज़हब में मगर ये के अल्लाह चाहे। हम दरजात बुलन्द करते हैं जिस के चाहते हैं।

وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ﴿٤٦﴾ قَالُوا إِنْ يَسْرِقْ

और हर इल्म वाले से बढ़ कर इल्म वाला है। उन्होंने ने कहा के अगर उस ने चोरी की

فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَّهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاسْرَحَا يُوسُفَ

तो यकीनन इस से पेहले उस के भाई ने भी चोरी की थी। फिर यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने

فِي نَفْسِهِ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ أَنْتُمْ شَرٌّ

उस को अपने जी में छुपाया और उस को उन के सामने ज़ाहिर नहीं किया। (दिल में) कहा तुम बुरी

مَكَانًا ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ﴿٤٧﴾ قَالُوا يَا أَيُّهَا

जगह में हो। और अल्लाह खूब जानता है उस को जो तुम बयान कर रहे हो। उन्होंने ने कहा के ऐ

الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا

अज़ीज़े मिस्र! यकीनन इस के बहोत बूढ़े अब्बा हैं, इस लिए आप हम में से किसी एक को उस की जगह पर

مَكَانَهُ ۚ إِنَّا نُرِيكَ مِنَ الْحُسَيْنِينَ ﴿٤٨﴾ قَالَ مَعَاذَ

रख लीजिए। यकीनन हम आप को एहसान करने वालों में से देख रहे हैं। यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने

اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا مَنْ وَجَدْنَا مَتَاعَنَا عَنْدَهُ ۚ

फरमाया के अल्लाह की पनाह है इस से के हम लें मगर उसी शख्स को जिस के पास हम ने अपने सामान को पाया।

إِنَّا إِذَا لَظَلِمُونَ ﴿٤٩﴾ فَلَمَّا اسْتَيْسَسُوا مِنْهُ خَلَصُوا

यकीनन तब तो हम ज़ालिम होंगे। फिर जब वो उन से मायूस हो गए तो अलग हो कर उन्होंने ने तन्हाई में

نَجِيًّا ۚ قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ

सरगोशी की। उन में से बड़े ने कहा क्या तुम्हें मालूम नहीं के तुम्हारे अब्बा ने

قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَوْتَقًا مِنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلُ

तुम से अल्लाह का पुख्ता अहद लिया है और तुम्हें मालूम नहीं इस से पेहले वो कोताही (ज्यादती)

مَا فَطَرْتُمْ فِي يُوسُفَ ۚ فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ

जो तुम ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के बारे में की? मैं अब हरगिज़ इस ज़मीन से नहीं टलूँगा

حَتَّى يَأْذَنَ لِي أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لِي ۚ وَهُوَ خَيْرُ

जब तक के मेरे अब्बा मुझे इजाज़त न दें या अल्लाह मेरा फैसला कर दें। और वो बेहतरीन

الْحَكَمِينَ ﴿٥٠﴾ ارْجِعُوا إِلَىٰ آبَائِكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا

फैसला करने वाला है। तुम अपने अब्बा के पास वापस जाओ, फिर कहो ऐ हमारे अब्बा!

إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلِمْنَا

यकीनन आप के बेटे ने चोरी की। और हम ने गवाही नहीं दी थी मगर उसी के मुताबिक जो हमें मालूम था

وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَفِظِينَ ﴿٥١﴾ وَسَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِي

और हम ग़ैब को जानने वाले नहीं थे। और आप उस बस्ती वालों से पूछ लीजिए

كُنَّا فِيهَا وَالْعَيْرِ الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا ۚ وَإِنَّا

जिस में हम थे और उन काफ़ले वालों से भी जिस में शामिल हो कर हम आए हैं। और यकीनन हम

لَصِدْقُونَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا

सच्चे हैं। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के बल्के तुम्हारे लिए तुम्हारे नफ्सों ने एक मुआमले को मुजय्यन किया है।

فَصَبِّرْ جَمِيلٌ ۖ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا ۖ

अब तो सब ही बेहतर है। उम्मीद है के अल्लाह मेरे पास उन को इकट्ठा ले आए।

إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٨٣﴾ وَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ

यकीनन वो इल्म वाला, हिक्मत वाला है। और याकूब (अलैहिस्सलाम) ने उन की तरफ से मुंह फेरा और कहा

يَا سَفَى عَلَى يُوسُفَ وَأَبِصْرَتْ عَيْنُهُ مِنَ الْحُزَنِ

हाए अफसोस यूसुफ पर! इस हाल में के उन की आँखें ग़म की वजह से सफेद हो चुकी थीं,

فَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتُوا تَذْكُرُ يُوسُفَ

फिर वो बमुशकिल ग़म को ज़ब्त कर रहे थे। उन्होंने ने कहा अल्लाह की क़सम! आप तो यूसुफ को याद करते रहोगे

حَتَّى تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ﴿٨٥﴾

यहां तक के करीबुल मौत हो जाओ या हलाक होने वालों में से हो जाओगे।

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَ أَعْلَمُ

याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं तो फरयाद करता हूँ अपनी बेकरारी और अपने ग़म की सिर्फ अल्लाह से और

مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾ يَبْنِي أَدْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا

मैं जानता हूँ अल्लाह की तरफ से वो बातें जो तुम जानते नहीं हो। ऐ मेरे बेटो! तुम जाओ, फिर तुम तहकीक करो

مِنْ يُوسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَأْيَسُوا مِنْ رَوْحِ اللَّهِ إِنَّهُ

यूसुफ और उस के भाई के मुतअल्लिक और तुम मायूस मत हो अल्लाह की रहमत से। यकीनन अल्लाह

لَا يَأْيِسُ مِنْ رَوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٧﴾

की रहमत से मायूस नहीं होते मगर काफिर लोग।

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا وَأَهْلَنَا

फिर जब वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के पास पहुँचे तो कहा के ऐ अज़ीज़े मिस्र! हमें और हमारे घर वालों को

الضَّرُّ وَ جِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجَمَةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ

कहतसाली पहुँची है और हम नाकिस पूंजी ले कर आए हैं, इस लिए आप हमारे लिए ग़ल्ला पूरा पूरा दे दीजिए

و تَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۚ إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ﴿٨٨﴾

और हमें मज़ीद भी दीजिए। यकीनन अल्लाह सदका करने वालों को बदला देंगे।

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ يُّوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ

यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम्हें मालूम है वो हरकत जो तुम ने यूसुफ और उन के भाई के साथ की

جَهْلُونَ ﴿٩٨﴾ قَالُوا إِنَّكَ لَأَنْتَ يُّوسُفُ ۖ قَالَ أَنَا

जब के तुम जाहिल थे? उन्होंने ने कहा के क्या आप ही यूसुफ हो? यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं ही

يُّوسُفُ وَهَذَا أَخِي ۚ قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا ۖ إِنَّهُ مَن

यूसुफ हूँ और ये मेरा भाई है। यकीनन अल्लाह ने हम पर एहसान फरमाया। यकीनन जो भी

يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْحَسِنِينَ ﴿٩٩﴾

तकवा इखतियार करता है और सब्र करता है तो यकीनन अल्लाह नेकी करने वालों का अज़्र ज़ायेअ नहीं करते।

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ أَثَرَكِ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخَطِئِينَ ﴿١٠٠﴾

उन्होंने ने कहा के अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने आप को हम पर तरजीह दी और यकीनन हम कुसूरवार हैं।

قَالَ لَا تَثْرِبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۖ يَعْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ ۚ

यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के आज तुम पर कोई गिरिफ्त नहीं है। अल्लाह तुम्हें मुआफ़ करे।

وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِمِينَ ﴿١٠١﴾ إِذْهَبُوا بِقَمِيصِي هَذَا

और वो रहम करने वालों में सब से बेहतरीन रहम करने वाला है। तुम मेरे कुरते को ले कर जाओ,

فَالْقُوَّةَ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا ۚ وَأَتُونِي بِأَهْلِكُمْ

फिर उस को मेरे अब्बा के चेहरे पर डाल दो, तो वो बीना हो जाएंगे। और तुम अपने तमाम घर वालों को

أَجْمَعِينَ ﴿١٠٢﴾ وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ

मेरे पास ले आओ। और जब ये काफ़ला मिस्र से चला तो उन के अब्बा ने कहा के

إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُّوسُفَ لَوْلَا أَنْ تُفَنِّدُون ۖ ﴿١٠٣﴾

मैं यूसुफ की खुशबू पा रहा हूँ, अगर तुम मुझ में बुढ़ापे की अक्ल की कमी का शुबह न करो।

قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ﴿١٠٤﴾ فَلَمَّا

उन्होंने ने कहा के अल्लाह की क़सम! आप तो बदस्तूर अपनी पुरानी ग़लतफहमी में हो। फिर जब

أَنَّ جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۚ

बशारत देने वाला आया तो कुरते को आप के चेहरे पर डाल दिया, तो आप बीना हो गए।

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ ۖ إِنِّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا

याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या मैं ने तुम से कहा नहीं था के मैं अल्लाह की तरफ से जानता हूँ वो जो तुम

تَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا

जानते नहीं हो। उन्होंने ने कहा के ऐ हमारे अब्बा! आप हमारे लिए हमारे गुनाहों की मग़फ़िरत तलब कीजिए, यकीनन हम

خَطِيئِينَ ﴿٩٧﴾ قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي ۖ إِنَّهُ هُوَ

कुसूरवार हैं। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के अनकरीब मैं तुम्हारे लिए अपने रब से इस्तिग़फ़ार करूंगा। यकीनन वो

الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٩٨﴾ فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَى

बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। फिर जब वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के पास पहुँचे, तो यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

إِلَيْهِ أَبْوِيهِ وَ قَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ إِن شَاءَ اللَّهُ

ने अपने पास अपने वालिदैन् को जगह दी और कहा के तुम मिस्र में अमन से दाखिल हो जाओ अगर अल्लाह

أَمِينٌ ﴿٩٩﴾ وَ رَفَعَ أَبْوِيهِ عَلَى الْعَرْشِ وَ خَرُّوا لَهُ

ने चाहा। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने अपने वालिदैन् को तख्त पर बुलन्द जगह बिठाया और सब लोग यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के

سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يَا بَتِ هَذَا تَأْوِيلُ رُءْيَايَ

सामने सज्दे में गिर गए। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने कहा के ऐ मेरे अब्बा! ये मेरे इस से पेहले वाले

مِنْ قَبْلُ ۚ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا ۖ وَقَدْ أَحْسَنَ بِي

ख्वाब की ताबीर है। यकीनन मेरे रब ने उसे सच कर दिखलाया। और उस ने मेरे साथ एहसान किया

إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُم مِّنَ الْبَدْوِ

जब के मुझे जेलखाने से निकाला और तुम्हें देहात से ले आया

مِّنْ بَعْدِ أَنْ تَزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَ بَيْنَ إِخْوَتِي ۖ

इस के बाद के शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान झगड़ा डाला था।

إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِّمَا يَشَاءُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿١٠٠﴾

यकीनन मेरा रब बारीक तदबीर करने वाला है जिस काम के लिए चाहता है। यकीनन वो इल्म वाला, हिक्मत वाला है।

رَبِّ قَدْ أَتَيْتَنِي مِنَ الْمَلِكِ وَعَلَّمَتْنِي

ऐ मेरे रब! यकीनन तू ने मुझे सलतनत अता की और तू ने मुझे

مِّنْ تَأْوِيلِ الْآحَادِيثِ ۚ فَاطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ

ख्वाबों की ताबीर का इल्म दिया। ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले!

أَنْتَ وَلِيٌّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ تَوَقَّئِي مُسْلِمًا

तू ही मेरा दुनिया और आखिरत में कारसाज़ है। तू मुझे मुसलमान होने की हालत में वफ़ात दे

وَالْحَقِّنِي بِالصَّالِحِينَ ﴿١١﴾ ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ

और मुझे सुलहा के साथ मिला दे। ये ग़ैब की खबरों में से है जिस को हम

نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتُ لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوا أَمْرَهُمْ

आप की तरफ वही कर रहे हैं। और आप उन के पास मौजूद नहीं थे जब उन्होंने ने अपने मुआमले पर इत्तिफाक किया

وَهُمْ يَكْفُرُونَ ﴿١٢﴾ وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ

इस हाल में के वो मक्र कर रहे थे। और लोगों में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं अगर्चे आप

بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾ وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۗ

कितने ही हरीस हों। हालांकि आप उन से इस पर किसी अज़्र का सवाल नहीं करते।

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿١٤﴾ وَكَأَيِّنْ مِنْ آيَةٍ

ये तो सिर्फ तमाम जहान वालों के लिए नसीहत है। और बहोत सी निशानियाँ हैं

فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَمْشُونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا

ज़मीन और आसमानों में जिन पर वो गुज़रते हैं इस हाल में के वो उस से

مُعْرِضُونَ ﴿١٥﴾ وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ

मुंह मोड़ते हैं। और उन में से अक्सर अल्लाह पर ईमान नहीं रखते मगर इस तरह के वो

مُشْرِكُونَ ﴿١٦﴾ أَفَأَمِنُوا أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ

शिक भी करते जाते हैं। क्या फिर वो इस से मामून हैं के उन के पास अल्लाह के अज़ाब में से

مِّنْ عَذَابِ اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ

ढांपने वाला अज़ाब आ जाए या उन के पास क़यामत अचानक आ जाए इस हाल में के उन्हें

لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٧﴾ قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي أَدْعُوا إِلَى اللَّهِ

पता न हो? आप फरमा दीजिए ये मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ बसीरत के साथ

عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي ۖ وَسُبْحَنَ اللَّهُ

दावत देता हूँ, मैं भी और वो भी जिन्होंने ने मेरा इत्तिबा किया। और अल्लाह पाक है

وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٨﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ

और मैं मुशरिकीन में से नहीं हूँ। और हम ने आप से पेहले रसूल नहीं भेजे

إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ ۗ أَفَلَمْ يَسِيرُوا

मगर मर्दों को बस्तियों वालों में से जिन की तरफ हम वही भेजते थे। क्या फिर वो ज़मीन

فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ

में चले फिरे नहीं के देखते के उन का अन्जाम कैसा हुवा जो

مَنْ قَبْلِهِمْ ۖ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا ۖ

उन से पेहले थे। और अलबत्ता आखिरत का घर बेहतर है उन के लिए जो मुत्तकी हैं।

أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۚ حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ

क्या फिर तुम्हें अक्ल नहीं? यहां तक के जब पैग़म्बर मायूस हो गए

وَضُتُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كَذَّبُوا جَاءَهُمْ نَصْرُنَا ۖ فَنُجِّيَ

और उन्होंने ने गुमान किया के उन्हें झुठलाया गया तो उन के पास हमारी नुसरत आ गई, फिर उन्हें नजात दे दी गई

مَنْ نَشَاءُ ۖ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ۚ

जिन्हें हम ने चाहा। और हमारा अज़ाब लौटाया नहीं जाता मुजरिम कौम से।

لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۖ

यकीनन उन के किस्सों में अक्ल वालों के लिए इबरेत है।

مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ الَّذِي

ये कोई ऐसी बात नहीं है जिस को घड़ लिया जाए, लेकिन उन किताबों की तस्दीक है जो

بَيْنَ يَدَيْهِ وَ تَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى

इस से पेहले थीं और हर चीज़ की तफसील है और हिदायत

و رَحْمَةً لِّلْقَوْمِ يُؤْمِنُونَ ۚ

और रहमत है ऐसी कौम के लिए जो ईमान लाए।

۱۲
۶

رُوعَاتِهَا ۖ

(۱۳) سُورَةُ الرَّعْدِ مَائِيَّةٌ (۹۰)

آيَاتُهَا ۴۳

और ६ रुकूअ हैं सूरह रअद मदीना में नाज़िल हुई उस में ४३ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الْأَرْفَ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ ۖ وَالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ

अलिफ लाम मीम रौ। ये इस किताब की आयतें हैं। और जो कुरआन आप की तरफ आप के रब की तरफ से

مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ

उतारा गया वो हक है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا

अल्लाह ही है जिस ने आसमानों को बुलन्द किया ऐसे सुतून के बगैर जिस को तुम देखो,

ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

फिर वो अर्श पर मुस्तवी हुवा और उस ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है।

كُلُّ يَجْرِى لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ

सब के सब चलते रहेंगे मुकर्ररा वक्त तक के लिए। वो तमाम उमूर की तदबीर करता है, आयात को तफसील

الْأَيِّ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ۖ وَهُوَ الَّذِي

से बयान करता है ताके तुम अपने रब की मुलाकात पर यकीन रखो। और वही अल्लाह है जिस ने

مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا

ज़मीन को फैलाया और उस में पहाड़ रख दिए और नेहरों को बनाया।

وَمِنْ كُلِّ الشَّجَرِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشَىٰ

और तमाम फलों के उस ने ज़मीन में जोड़े (नर और मादा) बनाए, वो रात को दिन पर

الْيَلِ النَّهَارُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

ढांपता है। यकीनन उस में अलबत्ता निशानियाँ हैं ऐसी कौम के लिए जो सोचती है।

وَفِي الْأَرْضِ قِطْعٌ مُّتَجَوِّرَةٌ وَجَنَّتْ مِنْ أَعْنَابٍ

और ज़मीन में मिले जुले टुकड़े हैं और अंगूर के बागात हैं और खेतियाँ हैं और खजूर के बागात हैं, कुछ

وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنَوَانٌ وَغَيْرُ صِنَوَانٍ يُسْقَىٰ بِمَاءٍ

शाखों वाले होते हैं और कुछ शाखों वाले नहीं होते, हालांकि एक ही पानी से उन्हें सैराब किया

وَإِحْدَثَ وَ نُفِضَ بَعْضُهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأُكُلِ ۖ

जाता है। और हम उन में से एक को दूसरे से बढ़ा देते हैं मज़ों में।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَإِنْ تَعْجَبْ

यकीनन इस में निशानियाँ हैं ऐसी कौम के लिए जो अक्ल रखती है। और अगर आप तअज्जुब करें

فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ۖ إِذَا كُنَّا تُرَابًا ۖ إِنَّا لَنَفِىٰ خَلْقٍ

तो उन की ये बात काबिले तअज्जुब है के क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे तो क्या हम अज़ सरे नौ ज़िन्दा किए

جَدِيدُهُ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ

जाएंगे? उन्होंने ने अपने रब के साथ कुफ़ किया। और उन की

الْأَغْلَىٰ فِي أَعْنَاقِهِمْ ۚ وَ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ	हैं।	दोखी	लोग	यही	और	होंगे।	तौक	में	गरदनों												
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَ يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ	हैं	कर	तलब	जल्दी	को	बुराई	आप	से	और	ये	हमेशा	रहेंगे।	उस	में	वो						
قَبْلِ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثَلُ ط	हैं।	चुके	गुजर	अज़ाब	भी	पेहले	उन	से	हालांके	पेहले,	से	भलाई									
وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلَىٰ ظُلْمِهِمْ ۚ	है।	करने	मग़फ़िरत	बावजूद	के	जुल्म	उन	के	इन्सानों	अलबत्ता	रब	तेरा	यकीनन	और							
وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ وَ يَقُولُ الَّذِينَ	ने	काफ़िरों	और	है।	देने	सज़ा	सख्त	रब	तेरा	यकीनन	और										
كَفَرُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ط إِنَّمَا	कहा	के	इस	नबी	पर	उस	के	रब	की	तरफ	से	कोई	मोअजिज़ा	क्यूं	नहीं	उतारा	गया?	आप	तो	सिर्फ	
أَنْتَ مُنذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝ اللَّهُ يَعْلَمُ	है	जानता	अल्लाह	है।	एक	हादी	के	लिए	हर	कौम	और	हैं	डराने	वाले							
مَا تَحِبُّ كُلُّ أَنْثَىٰ وَمَا تَغِيضُ الرَّحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ط	हैं।	बढ़ाती	और	उसे	भी	जिसे	बच्चादानियाँ	खुशक	कर	देती	हैं	और	उसे	भी	जो	बढ़ाती	हैं।				
وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ ۝ عِلْمُ الْغَيْبِ	जानने	का	ज़ाहिर	और	पोशीदा	है।	साथ	एक	मिक्दार	अल्लाह	के	पास	और	हर	चीज़						
وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرِ ۝ سَوَاءٌ مِّنكُمْ مَنْ أَسَرَ	से	चुपके	बात	जो	सब	हैं	बराबर	में	तुम	है।	बरतर	है,	बड़ा	है,	वाला						
الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِالنَّيْلِ	चाहें	छुपना	में	रात	जो	और	कहें	से	ज़ोर	जो	और	कहें									
وَسَارِبٍ ۝ بِالنَّهَارِ ۝ لَهُ مُعَقِّبٌ مِّن بَيْنِ يَدَيْهِ	हैं	फरिश्ते	वाले	जाने	आने	बारी	बारी	के	इन्सान	के	लिए	हैं।	चलने	खुल्ला	खुल्लम	दिन	जो	और			
وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِّن أَمْرِ اللَّهِ ۝ إِنَّ اللَّهَ	है	अल्लाह	के	अम्र	से।	यकीनन	अल्लाह	उस	के	आगे	और	उस	के	पीछे	से	जो	उस	की	हिफाज़त	करते	हैं

لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ۖ

बदलता नहीं उस हालत को जो किसी कौम के साथ है यहां तक के वो खुद न बदलें उस को जो उन के अन्दरून में है।

وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ ۚ وَمَا لَهُمْ

और जब अल्लाह किसी कौम के साथ बुराई का इरादा करते हैं तो उसे लौटाया नहीं जा सकता। और उन के लिए

مَنْ دُونَهُ مِنْ وَّالٍ ۚ هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا

अल्लाह के सिवा कोई बचाने वाला नहीं। वही अल्लाह तुम्हें बिजली दिखाता है खौफ

وَ طَمَعًا ۚ يُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۚ وَ يُسَبِّحُ الرَّعْدُ

और लालच के लिए और वो भारी बादलों को उठाता है। और रअद फरिशता अल्लाह की हम्द के साथ

بِحَمْدِهِ ۚ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ ۚ وَيُرْسِلُ

तस्बीह पढ़ता है, और फरिशते भी तस्बीह पढ़ते हैं अल्लाह के खौफ से। और अल्लाह

الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ

बिजलियों को भेजता है, फिर उसे पहोंचाता है जिस पर चाहता है इस हाल में के वो अल्लाह के बारे में

فِي اللَّهِ ۚ وَهُوَ شَدِيدُ الْحَالِ ۚ لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۖ

झगड़ रहे होते हैं। और वो मजबूत तदबीर वाला है। उसी के लिए हक की पुकार है।

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ

और जिन को अल्लाह के अलावा ये पुकारते हैं वो उन की किसी पुकार का जवाब नहीं दे

بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطٌ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ

सकते मगर अपने दोनों हाथ पानी की तरफ फैलाने वाले की तरह, ताके वो पानी उस के मुंह में पहोंच जाए,

وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ ۖ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۚ

हालांके वो उस के मुंह में पहोंचने वाला नहीं है। और काफिरों की पुकार जो भी है वो सिर्फ गुमराही है।

وَاللَّهُ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا

और अल्लाह को सज्दा करती हैं वो तमाम चीजें जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं खुशी से और ज़बर्दस्ती

وَوَظَلُّهُمْ بِالْعُدُوِّ وَالْأَصَالِ ۚ قُلْ مَنْ رَبُّ

और उन के साए भी, सुबह और शाम के वक़्त में। आप पूछिए के आसमानों

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قُلْ اللَّهُ ۖ قُلْ أَفَاتَّخَذْتُمْ مِنْ

और ज़मीन का रब कौन है? आप फरमा दीजिए के अल्लाह। आप कहिए क्या तुम ने अल्लाह के सिवा

دُونَهُ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ لِأَنفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا ط

ऐसे हिमायती बना लिए हैं जो अपने लिए किसी नफे और नुकसान के मालिक नहीं हैं?

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي

आप पूछिए क्या अन्धा और बीना बराबर हो सकते हैं? या क्या तारीकियाँ

الظُّلُمُتِ وَالنُّورُ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا

और नूर बराबर हो सकते हैं? या उन्होंने ने अल्लाह के जो शुरका बनाए हैं उन्होंने ने कोई चीज़ पैदा की है

كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ط قُلِ اللَّهُ خَالِقُ

अल्लाह के मखलूक पैदा करने की तरह के फिर उन कुफ़ार पर मखलूक मुश्तबह हो गई है? आप फरमा दीजिए के अल्लाह हर

كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ

चीज़ को पैदा करने वाला है और वो यकता है, ग़ालिब है। उस ने आसमान से पानी

مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةً بِقُدْرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ

उतारा, फिर वादियाँ अपनी (वुस्अते) मिकदार के एतेबार से बेह पड़ीं, फिर सैलाब उभरे हुए

زَبَدًا رَّابِيًا ط وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ

झाग को उठा कर लाता है। और उन चीज़ों का भी उसी जैसा झाग होता है जिसे ये

ابْتِغَاءَ حُلِيٍّ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهُ ط كَذَلِكَ يَضْرِبُ

जेवर या सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं। इस तरह अल्लाह

اللَّهُ الْحَقُّ وَالْبَاطِلُ ۚ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۚ

हक़ और बातिल की मिसालें बयान करता है। फिर अलबत्ता झाग तो खुश्क हो कर खत्म हो जाता है।

وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ط كَذَلِكَ

और अलबत्ता जो चीज़ इन्सानों को नफ़ा देती है वो ज़मीन में ठेहेर जाती है। इसी तरह

يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ۝ لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ

अल्लाह मिसालें बयान करते हैं। उन लोगों के लिए जिन्होंने ने अपने रब का केहना माना

الْحُسْنَىٰ ۖ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُمْ

उन के लिए भलाई है। और जिन्होंने ने अपने रब का केहना नहीं माना अगर उन की मिल्क बन जाएं वो तमाम चीज़ें जो ज़मीन

مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَ مِثْلَهُ مَعَهُ لَا فُتَدُوا بِهِ ط

में हैं सारी की सारी और उस के जैसी उस के साथ और भी हो जाएं तो भी यकीनन वो उस को फिदये में दे देंगे।

هَٰذَا اللَّهُ عَالِمُ الْغُيُوبِ
(تَقْصِصُ الْبَنِي)

عَنْ

أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ ۚ وَمَأْوَهُمُ جَهَنَّمُ ۖ

उन के लिए बदतरीन हिसाब होगा और उन का ठिकाना जहन्नम होगा।

وَبِئْسَ الْبِهَادُ ۝۱۸ أَفَمَنْ يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ

और वो बुरी आराम की जगह है। क्या फिर वो शख्स जो ये जानता है के जो आप की तरफ आप के रब की

مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَى ۖ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ

तरफ से उतारा गया वो हक है वो उस शख्स की तरह हो सकता है जो अन्धा है? नसीहत तो सिर्फ

أُولَٰئِكَ الْأَلْبَابِ ۝۱۹ الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ

अकल वाले ही हासिल करते हैं। वो लोग जो अल्लाह के अहद को पूरा करें

وَلَا يَنْقُضُونَ الْبَيْثَاقَ ۝۲۰ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ

और पुख्ता अहद न तोड़ें। और जो जोड़ें उन तअल्लुकात को जिन के जोड़े रखने का

بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَ يَخَافُونَ سُوءَ

अल्लाह ने हुकम दिया और जो अपने रब से डरें और जो हिसाब की सख्ती

الْحِسَابِ ۝۲۱ وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا

से डरें। और वो लोग जिन्होंने ने सब्र किया अपने रब की रज़ा तलब करने के लिए और जिन्होंने ने नमाज़

الصَّلَاةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً

काइम की और खर्च किया उन चीजों में से जो हम ने उन्हें रोज़ी के तौर पर दी चुपके और अलानिया

وَيَذَرُوهْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى

और जो भलाई के ज़रिए बुराई को दफा करते हैं, उन के लिए पिछला (आखिरत का)

الدَّارِ ۝۲۲ جَنَّتٌ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ

घर है। जो जन्नाते अदन हैं जिन में वो दाखिल होंगे, वो भी और वो लोग भी जो लाइक होंगे

مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ

उन के आबा व अजदाद में से और उन की बीवियों में से और उन की औलाद में से और फरिश्ते उन पर

عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ۝۲۳ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ

हर दरवाज़े से दाखिल होते होंगे। (कहेंगे) अस्सलामु अलैकुम, (तुम पर सलामती हो) उस सब्र के बदले में जो तुम ने

عُقْبَى الدَّارِ ۝۲۴ وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ

किया, फिर ये आखिरत का घर कितना अच्छा है। और जो अल्लाह के अहद को तोड़ते हैं उस के पुख्ता करने

مِيثَاقِهِ وَ يَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ

के बाद और उन तअल्लुकात को तोड़ते हैं जिन के जोड़े रखने का अल्लाह ने हुक्म दिया

وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۖ وَلِيَكْ لَّهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ

और जो ज़मीन में फसाद फैलाते हैं, उन के लिए लानत है और उन के लिए मुसीबत का

سَوْءُ الدَّارِ ۝ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ

घर है। अल्लाह रोज़ी कुशादा करते हैं जिस के लिए चाहते हैं और तंग करते हैं जिस के लिए चाहते हैं।

وَ فَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا

और ये लोग दुन्यवी ज़िन्दगी पर खुश हैं। और दुन्यवी ज़िन्दगी आखिरत के

فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ۖ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا

मुक़ाबले में नहीं है मगर थोड़ा सा फाइदा उठाना। और काफिर लोग कहते हैं के

لَوْلَا أَنْزَلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ

इस नबी पर उस के रब की तरफ से कोई मोअजिज़ा क्यूं नहीं उतारा गया? आप फरमा दीजिए के यकीनन अल्लाह गुमराह करते हैं

يَشَاءُ ۖ وَيَهْدِي إِلَى اللَّهِ مَنِ أَنْابَ ۖ الَّذِينَ آمَنُوا

जिसे चाहते हैं और हिदायत देते हैं अपनी तरफ उसे जो मुतवज्जेह होता है। वो लोग जो ईमान लाए

وَ تَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ ۖ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ

और जिन के दिल अल्लाह की याद से मुतमइन हैं। सुनो! अल्लाह की याद ही से

تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۖ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

दिल इतमिनान पाते हैं। वो लोग जो ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे

طُوبَى لَهُمْ وَحَسَنُ مَا بِهِمْ كَذَلِكَ أَرْسَلْنَاكَ

उन के लिए तूबा है और अच्छा अन्जाम है। इसी तरह हम ने आप को रसूल बना कर भेजा

فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لَّتَتَلَوْنَ عَلَيْهِمْ

उस उम्मत में जिस से पेहले बहोत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं, ताके आप उन पर तिलावत करें

الَّذِينَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَنِ ۖ قُلْ

वो जो हम ने आप की तरफ वही की, और ये रहमान के साथ कुफ़र कर रहे हैं। आप फरमा दीजिए के

هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ

वो मेरा रब है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मैं ने तवक्कुल किया और उसी की तरफ

مَتَابِ ﴿۳۵﴾ وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ

मेरा लौटना है। और अगर कुरआन ऐसा होता के जिस के ज़रिए पहाड़ों को चलाया जाता

أَوْ قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كَلِمَ بِهِ الْمَوْتُ ۖ بَلْ لِلَّهِ

या उस के ज़रिए ज़मीन को काटा जाता, या उस के ज़रिए मुर्दों से बुलवाया जाता (तब भी ये ईमान न लाते)। बल्के अल्लाह ही

الْأَمْرُ جَمِيعًا ۖ أَفَلَمْ يَأْتِيسِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ

के लिए तमाम उमूर हैं। क्या फिर वो लोग जो ईमान लाए हैं इस से मायूस नहीं हुए के

لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَهْدَى النَّاسَ جَمِيعًا ۖ وَلَا يَزَالُ

अगर अल्लाह चाहता तो तमाम इन्सानों को हिदायत दे देता। और काफिरों को उन

الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُمْ بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ

हरकतों की वजह से जो उन्होंने ने की हैं बराबर मुसीबत पड़ोचती रहेगी या उन के घर के करीब में

قَرِيبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ

उतरती रहेगी यहाँ तक के अल्लाह का वादा आ पड़ोचे। यकीनन अल्लाह

لَا يُخْلِفُ الْوَعْدَ ۚ وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْ بِرُسُلِ

वादे के खिलाफ नहीं करेंगे। यकीनन आप से पेहले पैग़म्बरों के साथ भी

مِّنْ قَبْلِكَ فَأَمَلَيْتُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۖ

इस्तिहज़ा किया गया, फिर मैं ने काफिरों को ढील दी, फिर मैं ने उन को पकड़ा।

فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿۳۶﴾ أَفَمَن هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ

फिर मेरा अज़ाब कैसा रहा? क्या फिर वो ज़ात जो हर शख्स पर निगराँ है उन आमाल की जो उस ने किए (वो ज़ात और शुरका

بِمَا كَسَبَتْ ۖ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ ۖ قُلْ سَمُّوهُمْ ۖ

बराबर हैं? नहीं!) उन्होंने ने अल्लाह के लिए शुरका बना लिए हैं। आप पूछिए के तुम उन के नाम बतलाओ।

أَمْ تُنَبِّئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ أَمْ بِظَاهِرٍ

क्या तुम अल्लाह को खबर देते हो ऐसी चीज़ की जिस को वो ज़मीन में नहीं जानता या बातों में से

مِّنَ الْقَوْلِ ۖ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوا

सरसरी बात तुम करते हो? बल्के काफिरों के लिए उन का मक्र मुज़य्यन किया गया और उन्हें

عَنِ السَّبِيلِ ۖ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿۳۷﴾

रास्ते से रोका गया। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं।

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَ لَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ ۚ

उन के लिए दुन्यवी ज़िन्दगी में अज़ाब है और अलबत्ता आखिरत का अज़ाब ज़्यादा मशक्कत वाला है।

وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ وَّاقٍ ۝ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي

और उन के लिए अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं। उस जन्नत का हाल जिस का

وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ أُكُلُهَا

मुत्तकियों से वादा किया गया है, ये है के उस के नीचे से नेहरें बेहती होंगी। उस के मजे

دَائِمٌ ۖ وَ ظِلُّهَا ۖ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا ۖ وَعُقْبَىٰ

दाइमी होंगे और उस के साए (भी दाइमी होंगे)। ये मुत्तकियों का अन्जाम है। और काफिरों

الْكُفْرَيْنِ النَّارُ ۖ وَالَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابُ يَفْرَحُونَ

का अन्जाम दोज़ख है। और वो लोग जिन को हम ने किताब दी वो खुश हैं

بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ ۖ مَن يُنْكِرْ بَعْضَهُ ۖ

उस की वजह से जो आप की तरफ उतारा गया है और गिरोहों में से बाज़ इस कुरआन के बाज़ हिस्से का इन्कार करते हैं।

قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ ۖ

आप फरमा दीजिए के मुझे तो सिर्फ ये हुक्म दिया गया है के मैं अल्लाह की इबादत करूँ और मैं उस के साथ शरीक न ठेहराऊँ।

إِلَيْهِ أَدْعُوا وَإِلَيْهِ مَآبٍ ۖ وَ كَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ

उसी की तरफ मैं दावत देता हूँ और उसी की तरफ मुझे वापस जाना है। और इसी तरह हम ने इस को अरबी वाला हक और

حُكْمًا عَرَبِيًّا ۖ وَلَئِنْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ

बातिल के दरमियान फैसला करने वाला कुरआन बना कर उतारा। और अगर आप भी उन की ख्वाहिशात का इत्तिबा करेंगे

مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۚ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَّلِيٍّ

इस के बाद के आप के पास इल्म आया तो आप को अल्लाह से कोई बचाने वाला और कोई

وَلَا وَاقٍ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا

मददगार नहीं होगा। यकीनन हम ने आप से पेहले पैग़म्बर भेजे और हम ने

لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ۖ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ

उन के लिए बीवियाँ और औलाद बनाई। और किसी रसूल की ये ताक़त नहीं है के

أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ۝

वो कोई मोअजिज़ा ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से। हर मुक़ररा वक्त के लिए लिखी हुई तहरीर है।

يَمَحُوا اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُثَبِّتُ ۖ وَ عِنْدَهُ أُمُّ

और अल्लाह मिटाते हैं जिसे चाहते हैं और बाकी रखते हैं (जिसे चाहते हैं)। और अल्लाह ही के पास उम्मुल किताब

الْكِتَابِ ۝ وَإِنْ مَا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي

(यानी लौहे महफूज़) है। और अगर हम आप को दिखा दें उस अज़ाब का कुछ हिस्सा

نَعْدُهُمْ أَوْ نَتَوَفِّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ وَعَلَيْنَا

जिस से हम उन्हें डरा रहे हैं या हम आप को वफात दे दें तो आप के ज़िम्मे तो सिर्फ पहुँचाना है और हमारे ज़िम्मे

الْحِسَابُ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا

हिसाब लेना है। क्या उन्होंने ने देखा नहीं के हम ज़मीन को उस के चारों तरफ से कम करते

مِنْ أَطْرَافِهَا ۖ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۖ

हुए आ रहे हैं? और अल्लाह फैसला करता है, अल्लाह के फैसले को कोई पीछे नहीं कर सकता।

وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ

और वो तेज़ हिसाब लेने वाला है। यकीनन मक्र कर चुके वो जो

مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَئِنَّ الْبُكْرَ جَمِيعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ

उन से पेहले थे, फिर अल्लाह के पास तमाम तदाबीर हैं। उसे मालूम है जो कोई जो कुछ

نَفْسٍ ۖ وَسَيَعْلَمُ الْكُفْرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ۝ وَيَقُولُ

करता है। और अनकरीब कुफ़ार जान लेंगे किस के लिए आखिरत का घर है। और काफिर

الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا ۖ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا

केहते हैं के आप भेजे हुए पैग़म्बर नहीं हो। आप फरमा दीजिए के अल्लाह मेरे

بَيْنِي وَ بَيْنَكُمْ ۖ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ ۝

और तुम्हारे दरमियान काफी गवाह है। और वो भी गवाह हैं जिन के पास किताब का इल्म है।

رُكُوعًا ۷

(۱۳) سُورَةُ الْآِٰزِہِیْمِ مَكِّيَّةٌ (۷۲)

اٰیٰتِهَا ۵۲

और ७ रूकूअ हैं

सूरह इब्राहीम मक्का में नाज़िल हुई

उस में ५२ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الرَّتْ كِتَبٌ أُنْزِلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ

अलिफ लाम रौ। ये किताब है जिसे हम ने आप की तरफ उतारा है ताके आप इन्सानों को निकालें

إِلَى التُّورَةِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطِ الْعَزِيزِ	तारीकियों से नूर की तरफ। उन के रब के हुक्म से ग़ालिब क़ाबिले तारीफ अल्लाह के रास्ते
الْحَمِيدِ ۝ اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا	की तरफ। वो अल्लाह के जिस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो
فِي الْأَرْضِ ۖ وَوَيْلٌ لِلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ۝	ज़मीन में हैं। और काफ़िरों के लिए सख्त अज़ाब से हलाकत है।
الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ	उन के लिए जो दुनिया से महबबत रखते हैं आखिरत के मुक़ाबले में
وَ يُصَدِّقُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۖ	और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उस में कज़ी तलाश करते हैं।
أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ	ये (हक़ से बहोत ही) दूर वाली गुमराही में हैं। और हम ने कोई रसूल नहीं भेजा
إِلَّا بِلِسَانٍ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۖ فَيُضِلَّ اللَّهُ مَنْ يَشَاءُ	मगर उस की क़ौम की ज़बान दे कर ताके उन के सामने साफ़ साफ़ बयान करे। फिर अल्लाह जिसे चाहते हैं गुमराह करते हैं
وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَلَقَدْ	और जिसे चाहते हैं हिदायत देते हैं। और वो ग़ालिब है, हिक्मत वाला है। यकीनन
أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمَاتِ	हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को भेजा अपने मोअजिज़ात दे कर के अपनी क़ौम को तारीकियों से नूर की तरफ
إِلَى النُّورِ ۖ وَذَكَرَهُمْ بِآيِهِم ۖ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ	निकालिए। और उन्हें अल्लाह की नेअमतें याद दिलाइए। यकीनन उस में हर सब्र करने
لَآيَةٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ	वाले, शुक्र करने वाले के लिए निशानियां हैं। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी क़ौम से फरमाया के
اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنْجَاكُمْ مِنْ آلِ	तुम याद करो अल्लाह की उस नेअमत को जो तुम पर है जब के अल्लाह ने तुम्हें नजात दी आले फिरऔन से
فِرْعَوْنَ ۖ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۖ وَيَذْبَحُونَ	जो तुम्हें बदतरीन अज़ाब से तकलीफ देते थे और तुम्हारे बेटों को ज़बह

۶۴

أَبْنَاءَكُمْ وَ يَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۖ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ
करते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा रहेने देते थे। और उस में तुम्हारे रब की तरफ से

مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝۱۰ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ
भारी इम्तिहान था। और जब तुम्हारे रब ने ऐलान किया के अगर तुम शुक्र करोगे

لَازِيدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ۝
तो मैं तुम्हें मज़ीद दूंगा और अगर तुम नाशुकरी करोगे तो यकीनन मेरा अज़ाब अलबत्ता सख्त है।

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنَّ تَكْفُرًا أَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ
और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमया के अगर तुम और वो जो ज़मीन में हैं सारे के सारे काफिर

۶۵

جَمِيعًا ۖ فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝۱۱ أَلَمْ يَأْتَكُمْ نَبُؤُا
बन जाओ, तो यकीनन अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ़ है। क्या तुम्हारे पास उन लोगों की

الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمٌ نُوحٍ وَ عَادٍ وَ ثَمُودُ
खबर नहीं आई जो तुम से पेहले थे कौमे नूह और कौमे आद और कौमे समूद

وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۖ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ ۖ
और वो जो उन के बाद हुए जिन को सिवाए अल्लाह के कोई नहीं जानता।

جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ
जिन के पास उन के पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए, फिर उन्होंने ने अपने हाथ रख दिए

فِي أَفْوَاهِهِمْ وَ قَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ وَإِنَّا
अपने मुंह में और कहा यकीनन हम तो कुफ़र करते हैं उस के साथ जिस को दे कर तुम भेजे गए हो और यकीनन हम

۶۶

لِفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٌ ۝۱۲ قَالَتْ
अलबत्ता बहोत ज़्यादा शक में हैं उस की तरफ से जिस की तरफ तुम हमें दावत देते हो। उन के पैग़म्बरों

رُسُلُهُمْ أَفِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ
ने कहा के क्या अल्लाह के बारे में शक जो आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला है?

يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَ يُؤَخِّرَكُمْ
जो तुम्हें बुलाता है ताके वो तुम्हारी मग़फ़िरत करे तुम्हारे गुनाहों की और तुम्हें मोहलत दे

إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ قَالُوا إِن أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۖ
एक वक्ते मुक़र्रर तक के लिए। उन्होंने ने कहा के तुम नहीं हो मगर हम जैसे इन्सान।

تُرِيدُونَ اَنْ تَصُدُّوْنَ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَاؤُنَا	
तुम ये चाहते हो के हमें रोक दो उस से जिस की हमारे बाप दादा इबादत करते थे	
فَاتُّوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبٰیْنٍ ۝۱۰ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ	
तो तुम हमारे पास रोशन मोअजिज़ा ले आओ। उन से उन के पैग़म्बर ने कहा के हम तो	
اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰی مَنْ يَّشَآءُ	
सिर्फ तुम जैसे इन्सान हैं, लेकिन अल्लाह एहसान करता है जिस पर चाहता है	
مِّنْ عِبَادٍ ۝۱۱ وَمَا كَانَ لَنَا اَنْ نَّاتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ	
अपने बन्दों में से। और हमारी ताकत नहीं है के हम तुम्हारे पास कोई मोअजिज़ा लाएं	
اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۝۱۲ وَ عَلٰی اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝۱۳	
मगर अल्लाह के हुक्म से। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल करना चाहिए।	
وَمَا لَنَا اِلَّا نَتَوَكَّلَ عَلٰی اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰنَا سُبُلَنَا ۝۱۴	
और हमें क्या हुवा के हम अल्लाह पर तवक्कुल न करें हालांके उस ने हमें हमारे रास्तों की हिदायत दी।	
وَ لَنَصْبِرَنَّ عَلٰی مَا اٰذٰیْتُمُوْنَا ۝۱۵ وَ عَلٰی اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ	
और अलबत्ता हम ज़रूर सब्र करेंगे उस पर जो तुम हमें ईज़ा दोगे। और अल्लाह ही पर तवक्कुल करने वालों को	
الْمُتَوَكِّلُونَ ۝۱۶ وَ قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ	ع ۱۳
तवक्कुल करना चाहिए। और काफ़िरों ने अपने पैग़म्बरों से कहा के	
لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَاۤ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِیْ مِلَّتِنَا ۝۱۷	
हम तुम्हें ज़रूर निकाल देंगे अपने मुल्क से या ये के तुम हमारे मज़हब में आ जाओ।	
فَاَوْحٰی اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِیْنَ ۝۱۸	
फिर उन के रब ने उन की तरफ वही की के हम इन ज़ालिमों को ज़रूर हलाक करेंगे।	
وَلَنُسَكِّنَنَّكُمْ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۝۱۹ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ	
और तुम्हें इस मुल्क में उन के बाद ज़रूर ठेहराएंगे। ये उस शख्स के लिए है जो मेरे सामने	
مَّقَامِیْ وَخَافَ وَعِیْدِ ۝۲۰ وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ	
खड़े होने से डरे और मेरे अज़ाब की वईद से डरे। और उन्होंने ने फतह तलब की और हर ज़ालिम	
جَبَّارٍ عَنِیْدٍ ۝۲۱ مِّنْ وَّرَآئِهِ جَهَنَّمُ وَ یُسْقٰی مِنْ مَّآءٍ	
सरकश नाकाम हुवा। उस के आगे जहन्नम है और उसे पीप वाला पानी पीने को	

صَدِيدٍ ۱۶ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِغُهُ وَيَأْتِيهِ

दिया जाएगा। जिस को वो घूट घूट कर के पिएगा और उस को हलक से नीचे उतार नहीं सकेगा और उसे

السَّوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٌ ط

मौत आ लेगी हर तरफ से हालांके वो मरने वाला नहीं है।

وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ۱۷ مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا

और उस के बाद भी सख्त अज़ाब होगा। उन लोगों का हाल जिन्होंने ने अपने रब के साथ

بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ مُّشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ

कुफ़ किया उन के आमाल ऐसे हैं जैसा के राख, जिस को तूफानी हवा ने तेज़ उड़ाया हो

فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ ط لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَى شَيْءٍ ط

सख्त हवा वाले दिन में के वो अपने आमाल में से किसी चीज़ पर भी कादिर नहीं हैं।

ذَلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ۱۸ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ

ये (हक से बहोत) दूर वाली गुमराही है। क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह ने

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ط إِنَّ يَشَاءُ يَذْهَبْكُمْ

आसमानों और ज़मीन को हक के साथ पैदा किया। अगर वो चाहे तो तुम्हें हलाक कर दे

وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۱۹ وَ مَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ

और नई मख़लूक को ले आए। ये अल्लाह पर कुछ मुशकिल

بِعَزِيزٍ ۲۰ وَبَرُّوْا بِاللَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ

नहीं। और वो सारे के सारे इकट्ठे अल्लाह के सामने पेश होंगे, फिर जुअफा उन से कहेंगे जो

اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُّغْنُونَ

बड़ा बनना चाहते थे के यकीनन हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे, फिर क्या तुम हमारे कुछ काम

عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ط قَالُوا لَوْ هَدَانَا

आओगे अल्लाह के अज़ाब से? वो कहेंगे के अगर अल्लाह ने हमें हिदायत दी होती

اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ ط سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجْرَعْنَا أَمْ صَبَرْنَا

तो हम तुम्हें हिदायत देते। हम पर बराबर है, चाहे हम फरयाद करें या हम सब्र करें,

مَا لَنَا مِنْ مَّحِيصٍ ۲۱ وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَبَّآ قُضِيَ

हमारे लिए किसी तरह छुटकारा नहीं है। और जब तमाम उमूर का फैसला कर दिया जाएगा तो शैतान

الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعَدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ

कहेगा के यकीनन अल्लाह ने तुम से वादा किया था सच्चा वादा और मैं ने भी तुम से वादा किया था,

فَاَخْلَفْتُكُمْ ۖ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ

फिर मैं ने तुम से वादाखिलाफी की। और मेरा तुम पर कोई ज़ोर नहीं था

إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي ۚ فَلَا تُلْوَ مُؤْنِي وَلَوْ مُؤَا

सिवाए इस के के मैं ने तुम्हें दावत दी, फिर तुम ने मेरी दावत कबूल कर ली। इस लिए तुम मुझे मलामत मत करो बल्के

أَنْفُسَكُمْ ۖ مَا أَنَا بِصُرْحِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِصُرْخِي ۖ إِنِّي

अपने आप को मलामत करो। न मैं तुम्हारी फरयादरसी कर सकता हूँ और न तुम मेरी फरयाद को पहुँच सकते हो। यकीनन मैं

كَفَرْتُ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ ۚ إِنَّ الظَّالِمِينَ

इन्कार करता हूँ शिर्क का जो तुम इस से पेहले मुझे शरीक ठेहराते रहे। यकीनन ज़ालिमों

لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝۱४ وَأَدْخَلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا

के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा। और वो लोग जो ईमान लाए और जो नेक काम

الصَّالِحَاتِ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ

करते रहे वो अपने रब के हुक्म से दाखिल किए जाएंगे ऐसी जन्नतों में जिन के नीचे से नेहरें बेहती

فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ۖ تَجِيئُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۝۱५ أَلَمْ تَرَ

होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। उन का तहीय्या उस में अस्सलामु अलैकुम होगा। क्या आप ने देखा नहीं के

كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ

अल्लाह ने कैसे मिसाल बयान की पाकीज़ा कलिमे की पाकीज़ा दरख्त

طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ۝۱६

की तरह जिस की जड़ें मज़बूत हों और जिस की शाखें आसमान में हों।

تُؤْتِي أَكْلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا ۖ وَيَضْرِبُ اللَّهُ

जो हर वक्त अपने रब के हुक्म से अपना फल देता हो। और अल्लाह मिसालें बयान

الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝۱७ وَ مَثَلُ

करते हैं इन्सानों के लिए ताके वो नसीहत हासिल करें। और बुरे

كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِنْ

कलिमे की मिसाल ऐसी है जैसा के बुरा दरख्त, जो ज़मीन के ऊपर ही

فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۝ يَثْبُتُ اللَّهُ الَّذِينَ

से उखाड़ लिया गया हो जिस के लिए कोई क़रार न हो। अल्लाह ईमान वालों को

أَمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ

कौले साबित के ज़रिए दुन्यवी ज़िन्दगी में और आखिरत में जमाते हैं।

وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ ۖ وَ يَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۝

और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराह करते हैं। और अल्लाह करते वही हैं जो वो चाहते हैं।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا

क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जिन्होंने ने अल्लाह की नेअमत को कुफ़ से बदल दिया

وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ۖ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا

और जिन्होंने ने अपनी कौम को हलाकत के घर में उतारा। यानी जहन्नम में, जिस में वो दाखिल होंगे।

وَيُسْأَلُ الْقَرَارُ ۖ وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا لِّيُضِلُّوا

और वो बुरी ठेहरने की जगह है। और उन्होंने ने अल्लाह के लिए शरीक ठेहराए ताके वो अल्लाह के रास्ते से

عَنْ سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَسْعُوا فَإِنْ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ۖ قُلْ

गुमराह करें। आप फरमा दीजिए के तुम मज़े उड़ा लो, फिर यकीनन तुम्हारा लौटना जहन्नम की तरफ है। आप फरमा दीजिए

لِعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَ يُنْفِقُوا

मेरे उन बन्दों से जो ईमान लाए के वो नमाज़ काइम करें और खर्च करें

مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً ۖ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ

उन चीज़ों में से जो हम ने उन्हें रोज़ी के तौर पर दी, चुपके और अलानिया, इस से पेहले के वो दिन

يَوْمٌ لَا يَبِيعُ فِيهِ وَلَا خَلٌّ ۖ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ

आ जाए के जिस में न खरीद व फरोख्त और न दोस्ती होगी। अल्लाह ही है जिस ने आसमानों

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ

और ज़मीन को पैदा किया और जिस ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस

بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ

के ज़रिए तुम्हारे खाने के लिए फल निकाले। और उस ने तुम्हारे लिए कशती को मुसख़र किया

لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ۝

ताके वो चले समन्दर में अल्लाह के हुक्म से। और उस ने तुम्हारे लिए नेहरों को भी काम में लगा रखा है।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ

और उस ने तुम्हारे लिए चाँद और सूरज को काम में लगा रखा है जो लगातार हरकत में हैं। और उस ने तुम्हारे

الْيَلَّ وَالنَّهَارَ ۚ وَآتَاكُم مِّن كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ ۚ

लिए रात और दिन को काम में लगा रखा है। और उस ने तुम्हें हर चीज़ में से दिया जिस का तुम ने उस से सवाल किया।

وَإِن تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تَحْصُوهَا ۗ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ

और अगर तुम अल्लाह की नेअमत को शुमार करो तो उस को गिन नहीं सकते। यकीनन इन्सान बहोत ज़्यादा ज़ालिम

كَفَّارٌ ۝ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ

और बहोत ज़्यादा नाशुकरा है। और जब के इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! इस शहर को अमन वाला

أَمِنًا وَاجْعَلْ لِّي بَنِيَّ أَوْ بَنِيَّ أَنْ تَعْبُدَ الْأَصْنَامَ ۝ رَبِّ

बनाइए और मुझे और मेरे बेटे को इस से बचाइए के हम बुतों की इबादत करें। ऐ मेरे रब!

إِنَّهُمْ أَضَلُّنَ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ ۖ فَمَنْ تَبِعَنِي

यकीनन इन बुतों ने बहोत से इन्सानों को गुमराह किया। फिर जो मेरा इत्तिबा करे

فَإِنَّهُ مِنِّي ۖ وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

तो वो मुझ से है। और जो मेरी नाफरमानी करे तो यकीनन आप बख्शने वाले, निहायत रहम करने वाले हैं।

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زُرْعَةٍ

ऐ हमारे रब! यकीनन मैं ने अपनी औलाद में से बाज़ को ऐसी वादी में जो खेती वाली नहीं

عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۖ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ

तेरे इज्जत वाले घर के पास ठेहराया है, ऐ हमारे रब! इस लिए ताके वो नमाज़ काइम करें, फिर

أَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ

लोगों के दिलों को आप कर दीजिए के उन की तरफ माइल हों और उन्हें रोज़ी दीजिए

مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ۝ رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ

फलों की ताके वो शुक्र अदा करें। ऐ हमारे रब! यकीनन आप जानते हैं

مَا نَخْفَىٰ وَمَا نَعْلُنُ ۖ وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ

वो जिसे हम छुपाते हैं और जिसे हम ज़ाहिर करते हैं। और अल्लाह पर कोई चीज़ मख्फी नहीं है

فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۝ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي

न ज़मीन में और न आसमान में। तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने

وَهَبْ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ ۖ إِنَّ رَبِّي	मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक दिए। यकीनन मेरा रब
لَسَيِّعُ الدُّعَاءِ ۝ رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ	अलबत्ता दुआ सुनने वाला है। ऐ मेरे रब! आप मुझे नमाज़ काइम करने वाला बनाइए
وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۚ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَاءِ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي	और मेरी औलाद में से भी। ऐ हमारे रब! और मेरी दुआ को कबूल कर लीजिए। ऐ हमारे रब! मेरी
وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ۝	और मेरे वालिदैन् की और तमाम ईमान वालों की मग़फ़िरत कर दीजिए उस दिन जिस दिन हिसाब काइम होगा।
وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ ۚ إِنَّمَا	और तुम अल्लाह को ग़ाफ़िल मत समझो उस से जो ये ज़ालिम लोग कर रहे हैं। अल्लाह तो सिर्फ़
يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ۚ مُهْطِعِينَ	उन्हें ढील दे रहा है ऐसे दिन के लिए जिस में निगाहें फटी रह जाएंगी। वो तेज़ दौड़ रहे होंगे,
مُقْبِعِي رُءُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَأَفْئِدَتُهُمْ	अपने सरो को ऊँचे किए हुवे होंगे, उन की तरफ़ उन की निगाह वापस नहीं लौटेगी। और उन के दिल
هَوَاءٌ ۚ وَ أَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ	तमाम खयालात से खाली होंगे। और आप इन्सानों को डराइए उस दिन से जिस दिन वो अज़ाब आएगा
فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخْرِنَا إِلَىٰ أَجَلٍ	तो ज़ालिम लोग कहेंगे के ऐ हमारे रब! आप हमें मोहलत दीजिए करीबी वक्त तक
قَرِيبٍ ۖ نَّجِبْ دَعْوَتِكَ وَ تَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۖ أَوَلَمْ تَكُونُوا	के हम आप की दावत को कबूल कर लें और रसूलों का इत्तिबा करें। क्या तुम ने इस से पेहले
أَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلِ مَا لَكُم مِّنْ زَوَالٍ ۚ وَ سَكَنتُمْ	कस्में नहीं खाई थीं के तुम्हारे लिए ज़वाल नहीं है? हालांके तुम रहे थे
فِي مَسْكِنٍ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ وَ تَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ	उन लोगों के मकानात में जिन्हों ने अपनी जानों पर जुल्म किया और तुम्हारे सामने वाज़ेह हो चुका था के हम ने
فَعَلْنَا بِهِمْ وَ ضَرَبْنَا لَكُمْ الْأَمْثَالَ ۝ وَقَدْ مَكَرُوا	उन के साथ क्या किया और हम ने तुम्हारे लिए मिसालें भी बयान की थीं। और उन्होंने ने अपना

مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ ^ط وَإِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ

मक्र किया और अल्लाह के पास उन का मक्र है। और उन का मक्र ऐसा नहीं था के उस से

لِتَرْوُلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٣٢﴾ فَلَا تَحْسِبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفَ

पहाड़ (पहाड़ से मुराद शरीअत है) टल जाते। इस लिए आप अल्लाह को अपने रसूलों से किए हुए वादे

وَعَدِهِ رُسُلُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ﴿٢٤﴾ يَوْمَ

के खिलाफ करने वाला मत समझो। यकीनन अल्लाह जबर्दस्त है, इन्तिकाम लेने वाला है। उस दिन

تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّهَوُتُ وَ بَرَزُوا

ये जमीन इस के अलावा जमीन से बदल दी जाएगी और आसमान (दूसरे आसमान से बदल दिए जाएंगे) और तमाम

لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٣٨﴾ وَ تَرَى الْجُرِمِينَ يَوْمَئِذٍ

के तमाम ग़ालिब यकता अल्लाह के सामने पेश होंगे। और आप मूजरिमों को देखोगे उस दिन के

مُقَرَّرَيْنِ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٧٩﴾ سَرَابِيلُهُمْ مِّنْ قَطْرَانِ

वो बेड़ियों में जकड़े हुए होंगे। उन का लिबास तारकोल का होगा।

وَتَغْشَىٰ وُجُوهُهُمْ النَّارُ ۖ لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ

और उन के चेहरों को आग ढांपे हुए होगी। ताके अल्लाह सजा दे हर

نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾

शख्स को उन आमाल की जो उस ने किए हैं। यकीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

هَذَا بَلَّغُ لِلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوا بِهِ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا

ये आम फैलान है इन्सानों के लिए और इस लिए ताके उन्हें उस से डराया जाए और ताके वो जान लें के वही

هُوَ إِلَهُ وَاحِدٌ وَلِيَذَّكَّرَ أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

अल्लाह यकता माबूद है और ताके अक्ल वाले नसीहत हासिल करें।

اِيَّاتَهَا ٩٩ (١٥) سُورَةُ الْحَجِّ بِمَكِّيَّةٌ (٥٢) رُكُوعَاتُهَا ٢

और ६ खूब हैं सूरह हिज़्र मक्का में नाज़िल हुई उस में ८८ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿١﴾

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الرَّفَقِ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُبِينٍ ﴿١﴾

अलिफ लाम रौ। ये साफ साफ बयान करने वाले कूरआन और इस किताब की आयतें हैं।

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ۝

किसी वक्त तमन्ना करेंगे कुफ़ार के काश वो मुसलमान होते।

ذُرُّهُمْ يَأْكُلُوا وَ يَتَمَتَّعُوا وَ يُلْهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ

आप उन्हें छोड़ दीजिए के वो खाएं और मजे उड़ाएं और उम्मीद ने उन्हें गाफिल बना रखा है, फिर अनकरीब

يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا

उन्हें मालूम हो जाएगा। और हम ने किसी बस्ती को हलाक नहीं किया मगर इस हाल में के उस

كِتَابٌ مَّعْلُومٌ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا

के लिए मालूम तहरीर थी। कोई उम्मत अपने मुकर्ररा वक्त से न आगे जा सकती है

وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ۝ وَقَالُوا يَأَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ

और न पीछे रह सकती हैं। और ये लोग केहते हैं के ऐ वो शख्स जिस पर ये ज़िक्र उतारा

الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ۝ لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَكَةِ

गया, यकीनन तुम तो मजनून हो। तू हमारे पास फरिश्तों को क्यूं नहीं ले आता

إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۝ مَا نُنْزِلُ الْمَلَكَةَ

अगर तू सच्चा है। हम फरिश्तों को नहीं उतारते

إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذَا مُنْظَرِينَ ۝ إِنَّا نَحْنُ

मगर हक के साथ और तब तो उन्हें मोहलत भी नहीं दी जाएगी। यकीनन हम ने ही

نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا

ये ज़िक्र (कुरआन) उतारा है और हम ही उस की हिफाज़त करने वाले हैं। यकीनन हम ने आप

مِنْ قَبْلِكَ فِي شَيْعِ الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِمْ

से पेहले रसूल भेजे पिछली उम्मतों में। और उन के पास कोई रसूल नहीं

مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ كَذَلِكَ نَسْلُكُ

आता था मगर वो उस के साथ इस्तिहज़ा करते थे। इसी तरह हम इस्तिहज़ा मुजरिमों के

فِي قُلُوبِ الْبُجْرَمِينَ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ

दिलों में दाखिल करते हैं। के वो उस पर ईमान नहीं लाते और पिछले लोगों का

سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ

तरीका गुज़र चुका है। और अगर हम उन पर आसमान का दरवाज़ा खोल दें,

فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ﴿١٢﴾ لَقَالُوا إِنَّمَا سُكَّرَتْ	फिर वो उस में चढ़ भी जाएं, तब भी कहेंगे के हमारी निगाहें मदहोश
أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ﴿١٣﴾ وَلَقَدْ	कर दी गई, बल्के हम ऐसी कौम हैं के जिन पर जादू कर दिया गया है। हम ने
جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ﴿١٤﴾	ही आसमान में बुर्ज बनाए हैं और उसे देखने वालों के लिए मुज़य्यन किया है।
وَ حَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ﴿١٥﴾ إِلَّا مَنْ اسْتَرَقَ	और हम ने उसे हर शैतान मरदूद से महफूज़ बना दिया है। सिवाए उस के के जो चुपके से
السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ شَهَابٌ مُبِينٌ ﴿١٦﴾ وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا	सुन भागे तो एक चमकता हुवा अंगारा उस का पीछा करता है। और ज़मीन को हमीं ने फैलाया
وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَ أُنَبَّتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ	और हम ने ही ज़मीन में पहाड़ डाल दिए और हम ने ही ज़मीन में हर चीज़ को एक मिक्दार के
مَوْزُونٍ ﴿١٧﴾ وَ جَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ	साथ उगाया। और हम ने ही उस में ज़िन्दगी के असबाब रख दिए तुम्हारे लिए और उन के
لَسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ ﴿١٨﴾ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا	लिए भी जिन्हें तुम रोज़ी नहीं देते। और कोई चीज़ नहीं है मगर हमारे पास
خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿١٩﴾ وَأَرْسَلْنَا	उस के खज़ाने हैं। और हम उसे सिर्फ़ मुक़र्रर मिक्दार में उतारते हैं। और हम ने ही हवाएं
الرِّيحَ لَوَاقِحَ فَاُنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ ۚ	भेजीं जो पानी से भरी हुई होती हैं, फिर हम आसमान से पानी बरसाते हैं, फिर हम वो पानी तुम्हें पिलाते हैं,
وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿٢٠﴾ وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي	इस हाल में के तुम पानी को खज़ाना कर के नहीं रख सकते। और हम ही ज़िन्दगी देते हैं
وَنُمِيتُ وَ نَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿٢١﴾ وَلَقَدْ عَلِمْنَا	और हम ही मौत देते हैं और हम बाकी रहने वाले हैं। यकीनन हमें मालूम हैं
الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٢﴾	तुम में से आगे बढ़ने वाले और यकीनन हमें मालूम हैं पीछे आने वाले।

۲۰

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ وَلَقَدْ

यकीनन तेरा रब ही उन्हें इकट्ठा करेगा। यकीनन वो हिक्मत वाला, इल्म वाला है। यकीनन

خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ۝

हम ने ही इन्सान को पैदा किया सड़े हुए गारे की खन खन बजने वाली मिट्टी से।

وَالْبَآنَ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُومِ ۝

और जिन्नात को हम ने इन्तिहाई गर्म आग से उस से पेहले पैदा किया।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا

और जब के तेरे रब ने फरिश्तों से कहा यकीनन मैं सड़े हुए गारे की

مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ۝ فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ

खन खन बजने वाली मिट्टी से इन्सान को पैदा करने वाला हूँ। फिर जब मैं उसे बना लूँ और मैं

فِيهِ مِنْ رُّوحِي فَتَقَعُوا لَهُ يَسْجُدِينَ ۝ فَسَجَدَ الْمَلَكَةُ

उस में अपनी रूह फूंक दूँ तो तुम उस के सामने सजदे में गिर जाना। फिर तमाम फरिश्तों ने सजदा

كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۝ إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَى أَنْ يَكُونَ

किया इकट्ठे, मगर इबलीस ने। इन्कार किया इस से के वो सजदा करने वालों

مَعَ السَّاجِدِينَ ۝ قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ

के साथ हो। अल्लाह ने पूछा ऐ इबलीस! तुझे क्या हुवा के तू सजदा करने वालों

مَعَ السَّاجِدِينَ ۝ قَالَ لَمْ أَكُنْ لِأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ

के साथ नहीं हुवा? इबलीस ने कहा के मैं सजदा नहीं करूँगा ऐसे बशर को जिसे तू ने

مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ۝ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا

पैदा किया है सड़े हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से। अल्लाह ने फरमाया फिर तू यहाँ से निकल जा,

فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَى يَوْمِ

यकीनन तू मरदूद है। और तुझ पर लानत है कयामत के दिन

الدِّينِ ۝ قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝

तक। इबलीस ने कहा ऐ मेरे रब! तू मुझे मोहलत दे उस दिन तक जिस दिन मुर्दे कब्रों से उठाए जाएंगे।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۝ إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ

अल्लाह ने फरमाया यकीनन तुझे मोहलत दी गई। मालूम वक्त के

الْمَعْلُومُ ۳۸ قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ

दिन तक। इबलीस ने कहा ऐ मेरे रब! इस वजह से के तू ने मुझे गुमराह किया, मैं उन के लिए

فِي الْأَرْضِ وَلَا أَغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۳۹ إِلَّا عِبَادَكَ

जमीन में ज़ीनतें काइम करूंगा और मैं उन तमाम को गुमराह करूंगा। मगर उन में से तेरे

مِنْهُمْ الْمَخْلَصِينَ ۴۰ قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ۴۱

खालिस किए हुए बन्दे। अल्लाह ने फरमाया के ये रास्ता मुझ तक सीधा आता है।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ

यकीनन मेरे बन्दे तेरा उन के ऊपर कोई ज़ोर नहीं चलेगा मगर वो जो

اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَوِينَ ۴۲ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ

गुमराह लोगों में से तेरे पीछे चलें। और यकीनन उन तमाम के वादे की जगह

أَجْمَعِينَ ۴۳ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ ۖ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ

जहन्नम है। उस के सात दरवाजे हैं। उन में से हर दरवाजे के लिए एक

جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ۴۴ إِنَّ الْبَاقِينَ فِي جَذَّتٍ وَ عُيُونٌ ۴۵

गिरोह तकसीम किया जाएगा। यकीनन मुत्तकी लोग जन्नतों और चशमों में होंगे।

أَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۖ آمِنِينَ ۴۶ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ

(कहा जाएगा के) तुम उन में सलामती के साथ अमन से दाखिल हो जाओ। और हम निकाल देंगे उस कीने को जो उन के

مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ۴۷ لَا يَمَسُّهُمْ

सीनों में है, वो भाई भाई बन कर रहेंगे तख्तों पर आमने सामने बैठे हुए होंगे। उन को उस में

فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ۴۸ نَبِئْ عِبَادِي

न थकावट पहुँचेगी और न वो वहां से निकाले जाएंगे। आप मेरे बन्दों को खबर कर दीजिए

أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۴۹ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ

के यकीनन मैं बख्शने वाला, निहायत रहम वाला हूँ। और ये के मेरा अज़ाब वो दर्दनाक

الْأَلِيمُ ۵۰ وَنَبِّئُهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ۵۱ إِذْ دَخَلُوا

अज़ाब है। और आप उन को इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मेहमानों की खबर दीजिए। जब वो दाखिल हुए

عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ۵۲ قَالُوا

उन पर तो उन्होंने ने कहा अस्सलामु अलैकुम। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यकीनन हम तुम से डरते हैं। उन्होंने ने

لَا تَوَجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلْمٍ عَلِيمٍ ﴿۵۱﴾ قَالَ أَبَشِّرْتُمُونِي

कहा के आप न डरिए, यकीनन हम आप को एक इल्म वाले लड़के की बशारत देते हैं। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

عَلَىٰ أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فِيمَ تَبَشِّرُونَ ﴿۵۲﴾ قَالُوا

क्या तुम मुझे बशारत देते हो इस हालत में के मुझे बुढ़ापा पहोंच चुका है, फिर तुम किस चीज की बशारत देते हो? उन्होंने ने

بَشِّرْنَا بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْقَاطِئِينَ ﴿۵۳﴾ قَالَ وَمَنْ

कहा के हम आप को हक की बशारत देते हैं इस लिए आप मायूस लोगों में से न हों। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

يَقْظُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ﴿۵۴﴾ قَالَ

ने फरमाया सिवाए गुमराहों के और कौन अपने रब की रहमत से मायूस होता है? इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने पूछा

فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿۵۵﴾ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا

फिर तुम्हारे (ज़िम्मे) क्या काम (ड्यूटी) है, ऐ भेजे हुए फरिश्तो? उन्होंने ने कहा के यकीनन हम एक

إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿۵۶﴾ إِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا لَنَجِّيهِمْ

मुजरिम कौम की तरफ भेजे गए हैं, मगर लूत (अलैहिस्सलाम) के मानने वाले। यकीनन हम उन तमाम को नजात

أَجْمَعِينَ ﴿۵۷﴾ إِلَّا أُمَّرَأَتَهُ قَدَرْنَا لَهَا لَيْنَ الْغُبَرِيِّ ﴿۵۸﴾

देंगे। मगर उन की बीवी के हम ने मुकद्दर कर दिया है के वो हलाक होने वालों में से होगी।

فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ﴿۵۹﴾ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ

फिर जब लूत (अलैहिस्सलाम) के घर वालों के पास भेजे हुए फरिश्ते आए, तो लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम ऐसे लोग

مُنْكَرُونَ ﴿۶۰﴾ قَالُوا بَلْ جِئْنَاكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ

हो जो अजनबी मालूम होते हो। उन्होंने ने कहा बल्के हम आप के पास वो अज़ाब ले कर आए हैं जिस में ये

يَمْتَرُونَ ﴿۶۱﴾ وَ أَتَيْنَاكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿۶۲﴾

शक करते थे। और हम आप के पास हक ले कर आए हैं और यकीनन हम सच्चे हैं।

فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ

इस लिए आप अपने मानने वालों को ले कर के सफर कर जाइए रात के किसी हिस्से में और आप उन के पीछे पीछे चलिए

وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَيْثُ تُؤْمَرُونَ ﴿۶۳﴾

और तुम में से कोई पीछे मुड़ कर न देखे और तुम चलते रहो उस जगह तक जहां का तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है।

وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَوْلَاءِ

और हम ने लूत (अलैहिस्सलाम) की तरफ उस हुक्म की वही कर दी के उन लोगों की जड़

مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ﴿١٦﴾ وَجَاءَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ	सुबह होते हुए काट दी जाएगी। और शहर वाले आए एक दूसरे को खुशखबरी
يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٧﴾ قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ ضَيْفِي	सुनाते हुए। लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ये मेरे मेहमान हैं,
فَلَا تَفْضَحُونِ ﴿١٨﴾ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تَخْزُونِ ﴿١٩﴾ قَالُوا	इस लिए तुम मुझे रूस्वा मत करो। और अल्लाह से डरो और मुझे तुम बेआबरू न करो। उन्होंने ने कहा
أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٢٠﴾ قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي إِنْ كُنْتُمْ	क्या हम ने आप को तमाम जहान वालों (की हिमायत) से रोका नहीं? लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ये मेरी बेटियाँ हैं
فَاعِلِينَ ﴿٢١﴾ لَعَنُوكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٢٢﴾	अगर तुम्हें ऐसा करना ही है। आप की ज़िन्दगी की कसम! यकीनन वो अपने नशे में मदहोश थे।
فَاخَذَتْهُمْ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ﴿٢٣﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا	फिर सूरज निकलते हुए उन्हें एक चीख ने पकड़ लिया। फिर हम ने उस बस्ती के ऊपर वाले हिस्से को उस का नीचे वाला
سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيلٍ ﴿٢٤﴾	हिस्सा बना दिया और हम ने उन के ऊपर कंकर के पथ्थर बरसाए।
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُتَوَسِّينَ ﴿٢٥﴾ وَإِنَّهَا لِسَبِيلٍ	यकीनन उस में गौर से देखने वालों के लिए निशानियाँ हैं। और यकीनन ये बस्ती ऐसे रास्ते पर है जो अभी
مُقِيمٍ ﴿٢٦﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٧﴾	मौजूद है। यकीनन उस में ईमान वालों के लिए निशानी है।
وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ ظَالِمِينَ ﴿٢٨﴾ فَانْتَقَبْنَا	और यकीनन ऐका वाले भी ज़ालिम थे। फिर हम ने उन से
مِنْهُمْ وَإِنَّهُمْ لِبِأَمَامٍ مُّبِينٍ ﴿٢٩﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ	इनतिकाम लिया। और यकीनन ये दोनों बस्तियाँ मारुफ रास्ते पर हैं। यकीनन हिज्र
أَصْحَابُ الْحَجَرِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٠﴾ وَآتَيْنَاهُمْ آيَتِنَا	वालों ने भी पैग़म्बर को झुठलाया। और हम ने उन्हें दी अपनी निशानियाँ,
فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٣١﴾ وَكَانُوا يُنْحِتُونَ	फिर वो उस से पैराज़ करते थे। और वो पहाड़ों को

مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا أَمِينًا ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ

तराश कर अमन से घर बनाते थे। फिर उन्हें एक चीख ने पकड़ लिया

مُصْبِحِينَ ۝ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

सुबह होते हुए। फिर उन के कुछ काम नहीं आए वो जो वो बनाते थे।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا

और हम ने आसमानों और ज़मीन और उन चीज़ों को जो उन के दरमियान में हैं पैदा नहीं किया

إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ فَاصْغِ الصَّفْحَ

मगर हक के साथ। और यकीनन क़यामत ज़रूर आने वाली है, इस लिए आप अच्छे तरीके से दरगुज़र

الْجَمِيلَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلَقُ الْعَلِيمُ ۝ وَلَقَدْ

कीजिए। यकीनन तेरा रब वही पैदा करने वाला, खूब जानने वाला है। यकीनन

آتَيْنَكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ۝

हम ने आप को सबअे मसानी और कुरआने अज़ीम दिया है।

لَا تَبْدَنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ

आप अपनी निगाहें न उठाएं उस सामान की तरफ जिस के ज़रिए हम ने उन की चन्द किस्मों को मुतमत्तेअ कर रखा है

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

और उन पर ग़म न कीजिए और अपना पेहलू ईमान वालों के सामने झुकाए रखिए।

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْبَيِّنُ ۝ كَمَا أَنْزَلْنَا

और आप फरमा दीजिए के मैं तो साफ साफ डराने वाला हूँ। जैसा हम ने उन तक़सीम

عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ۝ الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ۝

करने वालों पर (अज़ाब) उतारा। जो कुरआन को टुकड़े टुकड़े करते थे।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ عَمَّا كَانُوا

फिर आप के रब की क़सम! यकीनन हम उन तमाम से ज़रूर सवाल करेंगे। उन आमाल के मुतअल्लिक़ जो

يَعْمَلُونَ ۝ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ

वो करते थे। इस लिए आप साफ साफ बयान कर दीजिए वो जिस का आप को हुक्म दिया जा रहा है और मुशरिकीन

عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۝ إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ۝

से पैराज़ कीजिए। यकीनन हम आप की तरफ से उन इस्तिहज़ा करने वालों के लिए काफी हैं।

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَسَوْفَ يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

उन के लिए जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूद करार देते हैं। फिर उन्हें अनकरीब मालूम हो जाएगा।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾

यकीनन हम जानते हैं के आप का सीना तंग होता है उन बातों की वजह से जो वो केहते हैं।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ﴿٩٨﴾

फिर आप अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए और सज्दा करने वालों में से रहिए।

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ﴿٩٩﴾

और अपने रब की इबादत कीजिए यहां तक के आप को मौत आ जाए।

عَبْدُكَ

رُكُوعًا ۱۶

(۱۶) سُورَةُ النَّجْلِ مَكِّيَّةٌ (۷۰)

آيَاتُهَا ۱۲۸

और १६ रूकूअ हैं सूरह नहल मक्का में नाज़िल हुई उस में १२८ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۖ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ

अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा, फिर तुम उस को जल्दी तलब मत करो। अल्लाह पाक है और बरतर है

عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ

उन चीज़ों से जिसे वो शरीक ठेहराते हैं। वो फरिशते उतारता है वही के साथ अपने

أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُوا

हुक्म से जिस पर चाहता है अपने बन्दों में से, ये के तुम डराओ

أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ۝ خَلَقَ السَّمُوتِ

के कोई माबूद नहीं मगर मैं ही, तो तुम मुझ से डरो। उस ने आसमानों और

وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ ۖ تَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ خَلَقَ

ज़मीन को हक के साथ पैदा किया। वो बरतर है उन चीज़ों से जिसे वो शरीक ठेहराते हैं। उस ने

الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ۝

इन्सान को पैदा किया नुत्फे से, फिर अचानक वो खुला झगड़ालू बन गया।

وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ

और उस ने चौपाए पैदा किए। तुम्हारे लिए उन चौपाओं में गर्मी हासिल करने का सामान है और दूसरे मनाफेअ भी

وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۖ وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرْجَوْنَ

हैं और उन में से बाजों को तुम खाते भी हो। और तुम्हारे लिए उन चौपाओं में खूबसूरती है जिस वक्त के तुम शाम को

وَحِينَ تَسْرَحُونَ ۖ وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ

चरागाह से वापस लाते हो और जब के तुम जानवर चराने के लिए ले जाते हो। और ये जानवर तुम्हारे बोझ उठा ले

لَمْ تَكُونُوا بِهِ غِيَةً ۚ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ ۗ إِنَّ رَبَّكُمْ

जाते हैं ऐसे इलाके तक के तुम वहाँ तक नहीं पहुँच सकते मगर जानों की मशक़त से। यकीनन तुम्हारा रब

لَرَّءَوْفٌ رَّحِيمٌ ۚ وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ

अलबत्ता निहायत मेहरबान, बड़ा रहम वाला है। और (उस ने) घोड़े और खच्चर और गधे (पैदा किए)

لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً ۚ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

ताके तुम उन पर सवारी करो और ज़ीनत (के लिए पैदा किए)। और पैदा करता है वो जो तुम नहीं जानते।

وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَ مِنْهَا جَائِرٌ وَلَوْ شَاءَ

और अल्लाह ही के ज़िम्मे है दरमियानी रास्ता बयान करना और उन रास्तों में से कुछ टेढ़े हैं। और अगर वो चाहता

لَهْدَكُمْ أَجْمَعِينَ ۚ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ

तो तुम सब को हिदायत दे देता। वही अल्लाह है जिस ने आसमान से तुम्हारे लिए

مَاءً لَكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ۝

पानी बरसाया, उस में से पीने के लिए है और उसी पानी से दरख्त उगते हैं जिन में तुम जानवर चराते हो।

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ

वो तुम्हारे लिए उस पानी के ज़रिए उगाता है खेती और जैतून और खजूर

وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الشَّجَرِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً

और अंगूर और तमाम फलों को। यकीनन उस में निशानी है

لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۚ وَ سَخَّرَ لَكُمْ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ

ऐसी कौम के लिए जो सोचती है। और उस ने तुम्हारे लिए रात और दिन को काम में लगा रखा है

وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۚ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِ ۚ

और सूरज और चाँद को भी। और सितारे उस के हुक्म से काम में लगे हुए हैं।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۚ وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ

यकीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी कौम के लिए जो अक्ल रखती है। और जो चीज़ें उस ने तुम्हारे लिए

فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً	जमीन में पैदा कीं जिन के रंग मुखतलिफ हैं। यकीनन उस में निशानी है
لَقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٣﴾ وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ	ऐसी कौम के लिए जो नसीहत हासिल करती है। और वही अल्लाह है जिस ने समन्दर को काम में लगा रखा है
لِتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ	ताके तुम उस में से ताज़ा गोشت खाओ और उस से ज़ेवर
حَلِيَةً تَلْبَسُونَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاجِرَ فِيهِ	निकालो जिसे तुम पेहनो। और तू कशतियों को देखेगा के उस में मौजें चीरती हुई चलती हैं
وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٤﴾ وَالْقَى	और ताके अल्लाह का फज़ल तलाश करो और ताके तुम शुक्र अदा करो। और उस
فِي الْأَرْضِ رَوَاسِي أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا	ने ज़मीन में पहाड़ डाल दिए के कहीं वो तुम्हारी वजह से हिलने न लगे और उस ने नेहेर और रास्ते बनाए
لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥﴾ وَ عَلِمْتَ ۖ وَ بِاللَّجْمِ هُمْ	ताके तुम राह पाओ। और अलामतें बनाई। और सितारों से भी वो राह
يَهْتَدُونَ ﴿١٦﴾ أَفَمَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ ۖ	पाते हैं। क्या फिर वो अल्लाह जो मखलूक पैदा करता है उस की तरह हो सकता है जो पैदा नहीं कर सकता?
أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٧﴾ وَإِنْ تَعْدُوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصَوْهَا ۖ	क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते हो? और अगर तुम अल्लाह की नेअमत को गिनो तो तुम उस का इहसा नहीं कर सकते।
إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٨﴾ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسْرُونَ	यकीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और अल्लाह जानता है उसे जो तुम छुपाते हो
وَمَا تَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ	और उसे जो तुम ज़ाहिर करते हो। और जिन को वो पुकारते हैं अल्लाह के अलावा
لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ﴿٢٠﴾ أَمْوَاتٌ	वो कोई चीज़ पैदा नहीं कर सकते बल्के वो तो मखलूक हैं। मुर्दे हैं,
غَيْرُ أَحْيَاءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ ۚ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٢١﴾	बेजान हैं। और उन्हें पता भी नहीं के किस वक्त मुर्दे क़ब्र से उठाए जाएंगे?

إِلَهُكُمْ إِلَهُ وَاحِدٌ ۖ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ तुम्हारा माबूद यकता माबूद है। फिर जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते
قُلُوبُهُمْ مُنْكَرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿١٢﴾ لَا جَرَمَ उन के कुलूब मुन्किर हैं और वो बड़ाई चाहते हैं। यकीनन
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۖ إِنَّهُ अल्लाह जानता है उसे जो वो छुपाते हैं और जिसे वो ज़ाहिर करते हैं। यकीनन अल्लाह
لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿١٣﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ तकबुर करने वालों को पसन्द नहीं करता। और जब उन से कहा जाता है
مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٤﴾ لِيَحْمِلُوا के तुम्हारे रब ने क्या उतारा तो केहते हैं के पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ हैं। ताके वो
أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ अपने सारे गुनाह उठाएं क़यामत के दिन और उन लोगों के गुनाहों में से भी जिन्हें
يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ إِلَّا سَاءَ مَا يَزُرُونَ ﴿١٥﴾ ये इल्म के बग़ैर गुमराह कर रहे हैं। सुनो! बुरा है वो जिसे वो बोझ बना रहे हैं।
قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَآتَى اللَّهُ بُنْيَانَهُمْ यकीनन उन लोगों ने भी मक्र किया जो उन से पेहले थे, फिर अल्लाह (का हुक्म) उन की इमारत पर आया
مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ बुनियादों की जानिब से और उन पर छत गिर पड़ी उन के ऊपर से
وَأَتَتْهُمْ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ يَوْمَ और उन के पास अज़ाब आया जिधर से उन्हें खयाल भी नहीं था। फिर क़यामत
الْقِيَمَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ के दिन अल्लाह उन्हें रूस्वा करेगा और कहेगा के मेरे वो शुरका कहाँ हैं जिन के
كُنْتُمْ تُشَاقُّونَ فِيهِمْ ۖ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ बारे में तुम झगड़ते थे? वो कहेंगे जिन्हें इल्म दिया गया है के
إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿١٧﴾ यकीनन आज रूस्वाई और बुराई काफ़िरोँ पर है।

الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ ۝

उन पर जिन की फरिशते जान निकालते हैं इस हाल में के वो अपनी जानों पर जुल्म करने वाले होते हैं।

فَالْقَوْمَ الْسَّلَامَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوءٍ ۝

फिर वो सुलह को डालेंगे के हम तो कोई बुराई नहीं करते थे।

بَلَىٰ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ فَادْخُلُوا

क्यूं नहीं? यकीनन अल्लाह को खूब मालूम हैं वो अमल जो तुम करते थे। इस लिए

أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۝ فَلَبِئْسَ مَثْوَىٰ

तुम जहन्नम के दरवाजों से उस में हमेशा रहने के लिए दाखिल हो जाओ। फिर वो तकबुर करने वालों का

الْمُتَكَبِّرِينَ ۝ وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنْزَلَ

बुरा ठिकाना है। और पूछा जाएगा उन से जो मुत्तकी हैं के तुम्हारे रब ने क्या

رَبُّكُمْ ۝ قَالُوا خَيْرٌ ۝ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا

उतारा? तो वो कहेंगे के भलाई। उन के लिए जिन्होंने ने इस दुनिया में नेकियाँ कीं

حَسَنَةً ۝ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ

भलाई है। और अलबत्ता आखिरत का घर वो बेहतर है। और यकीनन मुत्तकियों का घर कितना

الْمُتَّقِينَ ۝ جَنَّاتٌ عَدْنٌ يَدْخُلُونَهَا يُجْرَوْنَ

अच्छा है? वो जन्नाते अदन हैं जिन में वो दाखिल होंगे, जिन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ۝ كَذَلِكَ

नेहरें बेहती होंगी, जिन में उन के लिए वो तमाम चीजें होंगी जो वो चाहेंगे। इसी तरह

يُجْزَى اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ الْمَلَائِكَةُ

अल्लाह मुत्तकियों को बदला देगे। उन को जिन की फरिशते जान निकालेंगे

طَيِّبِينَ ۝ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۝ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ

पाकीजा होने की हालत में, वो कहेंगे 'अस्सलामु अलैकुम'। तुम जन्नत में दाखिल हो जाओ

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ

उन आमाँल के बदले में जो तुम करते थे। वो मुत्तज़िर नहीं हैं मगर इस के के उन के पास

الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ ۝ كَذَلِكَ فَعَلَ

फरिशते आ जाएं या तेरे रब का (अज़ाब का) हुक्म आ जाए। इसी तरह उन लोगों

الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ

ने भी किया जो उन से पेहले थे। और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया लेकिन

وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿۳۳﴾ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ

वो अपनी जानों पर जुल्म करते थे। फिर उन्हें उन की बदअमली की सज़ाएं मिलीं

مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿۳۴﴾

जो उन्होंने ने की और उन्हें उस अज़ाब ने घेर लिया जिस का वो इस्तिहज़ा किया करते थे।

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُونِهِ

और मुशरिकीन ने कहा के अगर अल्लाह चाहता तो हम अल्लाह के सिवा किसी चीज़ की इबादत

مِنْ شَيْءٍ تَحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ دُونِهِ

न करते, न हम और न हमारे बाप दादा, और न हम (उस के हुक्म) के बग़ैर कोई चीज़

مِنْ شَيْءٍ ۚ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ

हराम ठेहराते। इसी तरह उन लोगों ने भी किया जो उन से पेहले थे।

فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْبَيِّنُ ﴿۳۵﴾ وَلَقَدْ بَعَثْنَا

तो पैग़म्बरों के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुँचा देना है। यकीनन हम

فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنْ أَعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا

ने हर उम्मत में रसूल भेजे के तुम अल्लाह की इबादत करो और शैतान

الطَّاغُوتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَن هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُمْ مَن

से बचो। फिर उन में से बाज़ को अल्लाह ने हिदायत दी और उन में से बाज़ पर

حَقَّتْ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ ۖ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ

गुमराही साबित हो गई। तो तुम ज़मीन में चलो फिरो,

فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿۳۶﴾

फिर देखो के झुठलाने वालों का अन्जाम कैसा हुवा?

إِنْ تَحْرِصْ عَلَى هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن

अगर आप उन की हिदायत पर हरीस हैं, तो यकीनन अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता जिसे

يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿۳۷﴾ وَأَقْسُوا بِاللهِ جَهْدَ

अल्लाह गुमराह करता है और उन के लिए कोई मददगार नहीं होगा। और ये अपनी क़स्मों पर ज़ोर दे कर अल्लाह की

أَيْمَانِهِمْ ۚ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَنْ يَمُوتُ ۖ بَلَىٰ وَعْدًا कस्में खाते हैं के अल्लाह जिन्दा कर के नहीं उठाएगा उन्हें जो मर जाते हैं। क्यूं नहीं? अल्लाह के जिम्मे	
عَلَيْهِ حَقًّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ सच्चे वादे के तौर पर लाज़िम है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं।	
لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يُخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ (अल्लाह जिन्दा करेगा) ताके उन के सामने बयान करे वो जिस में वो इखतिलाफ करते थे और ताके काफिर लोग जान	
كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَذِبِينَ ۝ إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ लें के यकीनन वो झूठे थे। हमारा तो किसी चीज़ को सिर्फ़ केहना होता है जब	
إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ وَالَّذِينَ हम उस का इरादा करते हैं के हम उस को केहते हैं के 'कुं' (हो जा) तो वो हो जाती है। और वो लोग	۵۷۵
هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ जिन्हों ने अल्लाह की वजह से हिजरत की इस के बाद के उन पर जुल्म किया गया तो हम उन्हें	
فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَا جَزَاءَ الْآخِرَةِ الْكَبِيرُ لَوْ كَانُوا दुन्या में अच्छा ठिकाना देंगे। और आखिरत का अज़्र तो बहोत बड़ा है। काश के वो	تَفْصِيلًا
يَعْلَمُونَ ۝ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ जानते होते। वो जिन्हों ने सब्र किया और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं।	
وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ और हम ने आप से पेहले रसूल नहीं भेजे मगर मर्द ही, जिन की तरफ हम वही भेजा करते थे,	
فَسَأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ तो तुम जिक्र वालों से पूछ लो अगर तुम जानते नहीं हो।	
بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۖ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ (रसूल भेजे) मोअजिज़ात और किताबें दे कर। और हम ने आप की तरफ ये जिक्र (किताब) उतारा ताके आप	
لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝ लोगों के सामने बयान करें वो जो उन की तरफ उतारा गया और शायद वो सोचें।	تَفْصِيلًا
أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ क्या फिर वो जिन्हों ने बुरा मक्र किया वो मामून हैं इस से के अल्लाह उन्हें ज़मीन में	

بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ

धंसा दे या उन पर अज़ाब ले आए जहां से उन्हें

لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٥﴾ أَوْ يَأْخُذْهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ

गुमान भी न हो। या उन को पकड़ ले चलते फिरते, फिर वो (अल्लाह को)

بُعْجِزِينَ ﴿٣٦﴾ أَوْ يَأْخُذْهُمْ عَلَى تَخَوُّفٍ ۖ فَإِنَّ رَبَّكُمْ

आजिज़ नहीं कर सकते। या उन को डरा कर पकड़ ले। फिर यकीनन तेरा रब

لَرَّءَوْفٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٤﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا خَلَقَ اللَّهُ

अलबत्ता शफ़क़्त वाला, निहायत रहम वाला है। क्या उन्होंने ने देखा नहीं अल्लाह की पैदा की हुई

مِنْ شَيْءٍ يَتَفَيَّؤُا ظِلُّهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا

चीज़ों को जिन के साए दाएं और बाएं ढलते हैं अल्लाह ही को सजदा

لِلَّهِ وَهُمْ دُخِرُونَ ﴿٢٨﴾ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَوَاتِ

करते हुए और वो आजिजी करने वाले हैं। और अल्लाह ही को सजदा करती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों

وَمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةِ وَهُمْ لَا يُسْتَكْبَرُونَ ﴿٣٩﴾

में हैं और जो ज़मीन में हैं जानदारों में से और फरिशते भी और वो तकबुर नहीं करते।

يَخَافُونَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَ يَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾ السجدة

वो अपने रब से डरते हैं अपने ऊपर से और करते हैं वही जिस का उन्हें हुक्म दिया जाता है।

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ إِنَّمَا هُوَ إِلَهُ

और अल्लाह ने फरमाया के तुम दो माबूद मत बनाओ। वो तो सिर्फ एकता

وَإِذْ قَالَ فِرْعَوْنُ لِفُلُوْهِ فَإِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٥١﴾ وَلَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

माबूद है। तो तुम मुझ ही से डरो। और उस की मिल्क हैं वो तमाम चीजें जो आसमानों

وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصْبَاءُ أَفْعَيْرِ اللَّهِ تَتَّقُونَ ﴿٥٦﴾

और जमीन में हैं और उसी के लिए खालिस इबादत है। क्या अल्लाह के अलावा से तुम डरते हो?

وَمَا بِكُمْ مِنْ نِعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ

और जो नेअमत भी तुम्हारे पास है तो वो अल्लाह की तरफ से है, फिर जब तुम्हें जरूर पहुँचता है

فَالْيَهِ تَجْعَرُونَ ﴿٨٣﴾ ثُمَّ إِذَا كُشِفَ الضُّرُّ عَنْكُمْ إِذَا

तो उसी की तरफ तुम आजिजी करते हो। फिर जब वो तुम से जरूर दूर करता है तो अचानक

فَرِيقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿۵۱﴾ لِيَكْفُرُوا

तुम में से एक जमाअत अपने रब के साथ शिर्क करने लगती है। ताके वो नाशुक्री करें उस (नेअमत) की

بِمَا آتَيْنَهُمْ ۖ فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿۵۲﴾ وَيَجْعَلُونَ

जो हम ने उन्हें दी, तो मजे उड़ा लो। फिर तुम्हें मालूम हो जाएगा। और ये लोग हिस्सा मुकर्रर करते हैं

لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ ۖ تَاللَّهِ لَتَسْعَلُنَّ

हमारी दी हुई रोजी में से उन बुतों के लिए जिन के बारे में उन्हें कुछ मालूम नहीं। अल्लाह की कसम! ज़रूर तुम से

عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُونَ ﴿۵۳﴾ وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَدَنَ

सवाल होगा उस झूठ के मुतअल्लिक जो तुम घड़ते हो। और वो अल्लाह के लिए बेटियाँ करार देते हैं,

سُبْحَنَهُ ۖ وَلَهُمْ مَا يَشْتَهُونَ ﴿۵۴﴾ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ

अल्लाह इस से पाक है, और अपने लिए वो (लड़के) जिन की उन्हें चाहत है। हालांकि जब उन में से किसी एक को

بِالْأُنْثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿۵۵﴾

बशारत दी जाती है लड़की की तो उस का चेहरा सियाह हो जाता है और ग़म (व गुस्से) से भर जाता है।

يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ ۖ أَيُمْسِكُهُ

वो छुपता (फिरता) है लोगों से उस की बुराई की वजह से जिस की बशारत उसे दी गई। अब आया उसे ज़िल्लत

عَلَىٰ هُونٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ ۖ أَلَا سَاءَ

के साथ रोके रखे या उस को मिट्टी में दबा दे। सुनो! बुरा है

مَا يَحْكُمُونَ ﴿۵۶﴾ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ

जिस का वो फैसला कर रहे हैं। उन लोगों की जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते

مَثَلُ السُّوءِ ۖ وَاللَّهُ الْبَثْلُ الْأَعْلَىٰ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ

बुरी मिसाल है। और अल्लाह के लिए बरतर मिसाल है। और वो ज़बर्दस्त है,

الْحَكِيمُ ﴿۵۷﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ

हिक्मत वाला है। और अगर अल्लाह इन्सानों को पकड़ ले उन के जुल्म की वजह से

مَا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ

तो ज़मीन पर किसी जानदार को न छोड़े, लेकिन अल्लाह उन्हें मोहलत देता है

إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَلَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا

एक वक़्ते मुकर्ररा तक। फिर जब उन का वक़्ते मुकर्ररा आ जाता है तो

يَسْتَخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿۱۱﴾ وَ يَجْعَلُونَ

एक घड़ी न पीछे रेह सकते हैं और न एक घड़ी आगे जा सकते हैं। और ये अल्लाह के

لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ وَ تَصِفُ أَلْسِنَتُهُمُ الْكُذِبَ

लिए वो मुकर्रर करते हैं जिसे खुद नापसन्द करते हैं और उन की ज़बानें झूठ घड़ती हैं

أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَىٰ ۖ لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُمْ

के उन के लिए भलाई है। यकीनन उन के लिए दोज़ख है और यही

مُفْرَطُونَ ﴿۱۲﴾ تَاللَّهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ

आगे आगे होंगे। अल्लाह की कसम! यकीनन हम ने रसूल भेजे आप से पेहली उम्मतों की तरफ

فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَهُوَ

फिर शैतान ने उन के लिए उन के अमल मुज़य्यन किए, फिर वो

وَلِيَّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿۱۳﴾

आज उन का साथी है और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

وَمَا أُنْزِلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي

और हम ने आप पर ये किताब सिर्फ इस लिए उतारी है ताके आप उन के सामने साफ साफ बयान करें वो

اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَهُدًى وَ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿۱۴﴾

जिस में वो इखतिलाफ कर रहे हैं, और (ये किताब) ईमान लाने वाली कौम के लिए हिदायत और रहमत है।

وَاللَّهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْيَأَ بِهِ الْأَرْضَ

और अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रिए ज़मीन को ज़िन्दा किया

بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ

उस के खुशक हो जाने के बाद। यकीनन उस में निशानी है ऐसी कौम के लिए

يَسْمَعُونَ ﴿۱۵﴾ وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ

जो सुनती है। और यकीनन तुम्हारे लिए चौपाओं में इब्रत है।

نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهِ مِن بَيْنِ فَرْثٍ وَ دَمٍ

के हम तुम्हें पिलाते हैं उस से जो उन के पेटों में है गोबर और खून के दरमियान से

لَبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِلشَّارِبِينَ ﴿۱۶﴾ وَمِنْ شَرَابٍ

खालिस दूध, जो पीने वालों के लिए खुशगवार होता है। और खजूर और

النَّحْلُ وَالْأَعْنَابُ تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا	अंगूर के फलों से तुम नशाआवर चीजें बनाते हो
وَرِزْقًا حَسَنًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٧﴾	और अच्छी खाने की चीजें। यकीनन उस में निशानी है ऐसी कौम के लिए जो अक्ल रखती हो।
وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي	और तेरे रब ने शहद मक्खी को हुक्म दिया के तू पहाड़ों
مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ﴿١٨﴾	में घर बना और दरख्तों में और उन के छप्परो में।
شُمَّ كُلِّيٍّ مِنْ كُلِّ الشَّجَرِ فَأَسْلَكَ سُبُلَ	फिर तू खा तमाम फलों से, फिर अपने रब के बनाए हुए
رَبِّكَ ذُلًّا ۖ يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ	रास्तों पर चल। उस के पेट से निकलती है ऐसी पीने की चीज़ जिस के रंग मुखतलिफ
أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً	होते हैं, जिस में इन्सानों के लिए शिफा है। यकीनन उस में निशानी है
لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٩﴾ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ ۚ	ऐसी कौम के लिए जो सोचती है। और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वही तुम्हें वफात देगा।
وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ إِلَىٰ أَرْدَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ	और तुम में कुछ वो हैं जो लौटाए जाते हैं निकम्मी उम्र तक ताके वो सब कुछ
بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾	जानने के बाद कुछ भी न जानें। यकीनन अल्लाह इल्म वाला, कुदरत वाला है।
وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ	और अल्लाह ने तुम में से एक को दूसरे पर फज़ीलत दी रोज़ी में
فَمَا الَّذِينَ فَضَّلُوا بِرَادِّي رِزْقِهِمْ عَلَىٰ	फिर जिन्हें फज़ीलत दी गई है वो अपनी रोज़ी नहीं देते अपने
مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ ۚ أَفَبِنِعْمَةِ اللَّهِ	गुलामों को इस तरह के ये आका और वो गुलाम उस में बराबर हो जाएं। क्या फिर अल्लाह की नेअमत

يَجْحَدُونَ ﴿٥١﴾ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ	जोड़ें से जानों अपनी तुम्हारी और हैं? करते इन्कार वो का
أَزْوَاجًا ۖ وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَنِينَ	बेटे तुम्हें से बीवियों तुम्हारी और बनाए
وَ حَفَدَةً ۖ وَ رَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ أَفَبِالْبَاطِلِ	पर बातिल ये फिर क्या दी। खाने की चीजें पाकीजा तुम्हें और पोते दिए
يُؤْمِنُونَ ۖ وَ بِنِعْمَتِ اللَّهِ هُمْ يَكْفُرُونَ ﴿٥٢﴾	हैं? करते नाशुकी की नेअमत की अल्लाह और हैं रखते ईमान
وَ يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا	आसमानों को उन जो चीजों की ऐसी अलावा अल्लाह के करते इबादत और
مِّنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٥٣﴾	हैं। रखते ताकत उस की न और हैं कादिर नहीं देने की चीज खाने से ज़मीन और
فَلَا تَضْرِبُوا لِلَّهِ الْأَمْثَالَ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ	है जानता अल्लाह यकीनन मत बयान मिसालें के लिए तुम अल्लाह इस लिए
وَ أَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٤﴾ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا	वो एक के की बयान मिसाल एक ने अल्लाह हो। नहीं जानते तुम और
مَمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ ۖ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِنَّا	रोज़ी से अच्छी हम ने हमारी तुमसे है जो किसी चीज पर कादिर नहीं है और एक वो है ममलूक गुलाम
رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَ جَهْرًا ۖ	पर। तौर अलानिया और चुपके से खर्च करता है उस में से फिर वो है, दी
هَلْ يَسْتَوْنَ ۖ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾	नहीं। जानते अक्सर उन में बल्के हैं। लिए अल्लाह तमाम तारीफें हो सकते दोनों क्या ये
وَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكَمُ	है, गूंगा एक से जिन की आदमियों ने अल्लाह और
لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ ۖ وَهُوَ كَلٌّ عَلَى مَوْلَاهُ ۖ أَيَّمَا	वो जहां पर आका अपने है बोझ वो बल्के, किसी चीज पर कादिर नहीं,

يُوجِّهُهُ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ ۖ هَلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ	
उसे भेजे तो कोई भलाई ले कर नहीं आता। तो क्या ये और वो शख्स बराबर हो सकता है जो	
يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ ۖ وَهُوَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَلِلَّهِ	۱۶
इन्साफ का हुक्म करता है और वो सीधे रास्ते पर है? और अल्लाह	
غَيْبِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ	
के लिए आसमानों और ज़मीन का ग़ैब है। और कयामत का मुआमला नहीं है	
إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ	
मगर एक पलक झपकने की तरह, बल्के उस से भी ज़्यादा करीब। यकीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत	
قَدِيرٌ ۝ وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ	
वाला है। और अल्लाह ने तुम्हें निकाला तुम्हारी माओं के पेट से,	
لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا ۖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ	
तुम कुछ भी जानते नहीं थे। और उस ने तुम्हारे लिए कान और आँख	
وَالْأَفْئِدَةَ ۖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا	
और दिल बनाए ताके तुम शुक्र अदा करो। क्या उन्होंने ने देखा नहीं	
إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِي جَوِّ السَّمَاءِ ۖ مَا يُمْسِكُهُنَّ	
परिन्दों को जो (अध्धर) लटके हुए होते हैं आसमानी फिज़ा में। उन को सिवाए अल्लाह के	
إِلَّا اللَّهُ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَاللَّهُ	
कोई रोके हुए नहीं है। यकीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान रखती है। और अल्लाह	
جَعَلَ لَكُم مِّنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُم	
ने तुम्हारे घरों में रहने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए	
مِّنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ	
चौपाओं की खालों से घर बनाए जिन को तुम हलका समझते हो तुम्हारे सफर के	
ظُعْنِكُمْ وَ يَوْمَ إِقَامَتِكُمْ ۖ وَمِنْ أَصْوَافِهَا	
वक्त और तुम्हारी इक़ामत के दौरान। और उन के ऊन और उन के	
وَأَوْبَارِهَا وَ أَشْعَارِهَا أَثَاثًا وَ مَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝	
बबरियों और उन के बालों से तुम सामान बनाते हो और एक वक्त तक नफा उठाने की चीज़ें बनाते हो।	

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِمَّا خَلَقَ ظِلًّا وَ جَعَلَ لَكُمْ

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए अपनी मखलूक के साए बनाए और तुम्हारे लिए

مِّنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا وَ جَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ تَقِيْكُمْ

पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए लिबास बनाया जो तुम्हें बचाता है

الْحَرَّ وَ سَرَابِيلَ تَقِيْكُمْ بِأَسْكُمُ ۖ كَذَلِكَ يُتِمُّ

गर्मी से और लिबास बनाया जो तुम्हें तुम्हारी लड़ाई में बचाता है। इसी तरह अल्लाह अपनी

نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ﴿ ۸۱ 〉 فَإِنْ تَوَلَّوْا

नेअमतें तुम पर इतमाम तक पहुँचाते हैं ताके तुम ताबेदार हो जाओ। फिर अगर वो पैराज़ करें

فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ الْبَيِّنُ ﴿ ۸۲ 〉 يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ

तो आप के ज़िम्मे सिर्फ साफ साफ पहुँचा देना है। वो अल्लाह की नेअमत को

اللَّهُ ثُمَّ يَنْكُرُونَهَا وَ أَكْثَرُهُمُ الْكَافِرُونَ ﴿ ۸۳ 〉 وَ يَوْمَ

पेहचानते हैं, फिर उस का इन्कार करते हैं और उन में से अक्सर नाशुकरे हैं। और जिस दिन

نَبْعْتُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ

हम हर उम्मत में से एक गवाह को उठाएंगे, फिर काफिरों को इजाज़त नहीं दी

كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿ ۸۴ 〉 وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا

जाएगी और न उन से मुआफी मांगने को कहा जाएगा। और जब ज़ालिम अज़ाब

الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿ ۸۵ 〉

देखेंगे तो उन से हलका नहीं किया जाएगा और न उन को मोहलत दी जाएगी।

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا

और जब मुशरिकीन अपने शुरका को देखेंगे तो कहेंगे ऐ हमारे रब!

هَؤُلَاءِ شُرَكَائُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا مِنْ دُونِكَ ۚ

ये हमारे शुरका हैं जिन को हम तुझे छोड़ कर पुकारा करते थे।

فَالْقَوْلُ إِلَيْهِمُ الْقَوْلُ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿ ۸۶ 〉 وَالْقَوْلُ

तो वो उन की तरफ बात को डालेंगे के तुम झूठ बोलते हो। और वो

إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَامَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا

अल्लाह की तरफ उस दिन सुलह को डालेंगे और उन से खो जाएंगे वो जिसे वो

يَفْتَرُونَ ﴿۸۷﴾ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ	घड़ा करते थे। वो लोग जिन्होंने ने कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते से
اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا	रोका उन को हम एक से बढ़ कर एक अज़ाब देंगे इस वजह से के वो फसाद
يُفْسِدُونَ ﴿۸۸﴾ وَ يَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا	फेलाते थे। और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गवाह उन के
عَلَيْهِمْ مِّنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا	खिलाफ उन्ही में से खड़ा करेंगे, फिर हम आप को उन तमाम पर गवाह के तौर पर
عَلَى هَؤُلَاءِ ۖ وَ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ	लाएंगे। और हम ने आप पर ये किताब उतारी हर चीज़ के बयान
شَيْءٍ وَ هُدًى وَ رَحْمَةً وَ بُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿۸۹﴾	के लिए और मुसलमानों के लिए हिदायत और रहमत और बशारत के तौर पर।
إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَايَ ذِي	यकीनन अल्लाह हुक्म देते हैं इन्साफ का और नेकी का और रिश्तेदारों को
الْقُرْبَىٰ وَ يَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ	देने का और मना फरमाते हैं बेहयाई से और बुराई से और जुल्म से।
يَعْظُمُ لَعَنُكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿۹۰﴾ وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ	वो तुम्हें नसीहत करता है ताके तुम नसीहत हासिल करो। और तुम अल्लाह का अहद पूरा करो
إِذَا عَهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا	जब तुम आपस में मुआहदा करो और तुम कस्मों को उन के पक्का करने के बाद मत तोड़ो
وَقَدْ جَعَلَهُ اللَّهُ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۖ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ	इस हाल में के तुम ने अल्लाह को अपने ऊपर कफील बना लिया है। यकीनन अल्लाह तुम्हारे
مَا تَفْعَلُونَ ﴿۹۱﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزَاهَا	अफआल जानता है। और तुम उस औरत की तरह मत बनो जिस ने मेहनत कर के
مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا ۖ تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا	अपना काता हुवा सूत टुकड़े टुकड़े कर के तोड़ डाला, के तुम अपनी कस्मों को आपस में दखल देने का

بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبُ مِنْ أُمَّةٍ ط	जरिया बनाओ ताके एक जमाअत दूसरी जमाअत से बढ़ जाए।
إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ط وَ لِيَبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ	अल्लाह तो इस के ज़रिए तुम्हें आजमाते हैं। और अल्लाह तुम्हारे सामने क़यामत के
الْقِيَمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩٧﴾ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ	दिन उस को बयान करेंगे जिस में तुम इखतिلاف करते थे। और अगर अल्लाह चाहता
لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَشَاءُ	तो तुम्हें एक उम्मत बना देता लेकिन अल्लाह गुमराह करते हैं जिसे चाहते हैं
وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ط وَ لَسْأَلَنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٨﴾	और हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं। और तुम से तुम्हारे आमाल का ज़रूर सवाल होगा।
وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمُ	और तुम अपनी कस्मों को आपस में दखल देने का ज़रिया मत बनाओ, वरना क़दम फिसल जाएगा
بَعْدَ شُبُوتِهَا وَ تَذُوقُوا السُّوءَ بِمَا صَدَدْتُمْ	उस के जमने के बाद और तुम सज़ा चखोगे इस वजह से के तुम ने अल्लाह के
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ء وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٩٩﴾ وَلَا تَشْتَرُوا	रास्ते से रोका। और तुम्हारे लिए भारी अज़ाब होगा। और तुम अल्लाह के अहद के
بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ط إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ	इवज़ मामूली सा फाइदा मत खरीदो। जो अल्लाह के पास है वही तुम्हारे लिए बेहतर
لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٠﴾ مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ	है अगर तुम जानते हो। जो तुम्हारे पास है वो खत्म हो जाएगा
وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ط وَ لَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا	और जो अल्लाह के पास है वो बाकी रहने वाला है। और हम ज़रूर बदला देंगे सब्र करने वालों को
أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٠١﴾ مَنْ عَمِلَ	उन का सवाब, उन अच्छे आमाल का जो वो करते थे। जो आमाले सालिहा
صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ اُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ	करेगा मर्दों में से हो या औरतों में से बशर्तेके वो मोमिन हो, तो हम उसे

حَيَوةً طَيِّبَةً ۚ وَ لَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ	उम्दा ज़िन्दगी देंगे। और हम ज़रूर उन्हें उन का सवाब देंगे, उन अच्छे
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿۱۷﴾ فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ	आमाल का जो वो करते थे। फिर जब तुम कुरआन पढ़ो तो
بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿۱۸﴾ إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ	अल्लाह की शैतान मरदूद से पनाह मांगो। यकीनन उस का ज़ोर
سُلْطَنٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿۱۹﴾	उन पर नहीं है जो ईमान लाते हैं और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं।
إِنَّمَا سُلْطَنُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ هُمْ	उस का ज़ोर तो सिर्फ उन पर होता है जो उस से दोस्ती रखते हैं और जो
بِهِ مُشْرِكُونَ ﴿۲۰﴾ وَإِذَا بَدَلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ ۚ	अल्लाह के साथ शरीक ठेहराते हैं। और जब हम एक आयत के बदले दूसरी आयत लाते हैं,
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنْزِلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتَرٍ ۖ	और अल्लाह खूब जानता है उसे जिसे वो उतारता है, तो ये कुम्फार केहते हैं के आप तो सिर्फ झूठ घड़ते हैं।
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۲۱﴾ قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ	बल्के उन में से अक्सर जानते नहीं। आप फरमा दीजिए के उस को रूहुल कुदुस
الْقُدُسُ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا	ने तेरे रब की तरफ से हक के साथ उतारा है ताके वो ईमान वालों को मज़बूत करे
وَهُدًى وَ بُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿۲۲﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ	और हिदायत और बशारत बने मानने वालों के लिए। यकीनन हम जानते हैं
أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ لِّسَانُ الَّذِي	के ये कुम्फार केहते हैं के इस नबी को तो एक इन्सान सिखा रहा है। उस शख्स की ज़बान जिस की
يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجَمِيٌّ وَ هَذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ	तरफ ये मन्सूब करते हैं अजमी है और ये कुरआन तो साफ अरबी ज़बान
مُبِينٌ ﴿۲۳﴾ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۚ	वाला है। यकीनन वो लोग जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते

لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿۱۳﴾	अल्लाह उन को हिदायत नहीं देंगे और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा।
إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ	झूठ वही लोग घड़ते हैं जो अल्लाह की आयात पर
بِآيَاتِ اللَّهِ ۚ وَ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَذِبُونَ ﴿۱۴﴾	ईमान नहीं रखाते। और यही लोग झूठे हैं।
مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ	जो अल्लाह के साथ कुफ़र करे ईमान लाने के बाद मगर जो मजबूर किया जाए
وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ	इस हाल में के उस का दिल मुतमइन हो ईमान पर, लेकिन वो जिसे
بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللَّهِ ۚ وَلَهُمْ	कुफ़र का शर्हें सद्र हो, तो उन पर अल्लाह की तरफ से ग़ज़ब होगा। और उन के लिए
عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿۱۵﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ	भारी अज़ाब होगा। ये इस वजह से के उन्होंने ने दुन्यवी ज़िन्दगी को आखिरत
الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ	के मुक़ाबले में पसन्द किया, और ये के अल्लाह काफिर कौम को हिदायत
الْكَاثِرِينَ ﴿۱۶﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ	नहीं देते। उन के दिलों और उन के कानों और
عَلَى قُلُوبِهِمْ وَ سَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ	उन की आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है। और यही लोग
الْغٰفِلُونَ ﴿۱۷﴾ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ	गाफिल हैं। बिलाशुबा यही लोग आखिरत में खसारे
الْخٰسِرُونَ ﴿۱۸﴾ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا	वाले हैं। फिर यकीनन तेरा रब उन के लिए जिन्होंने ने हिजरत की
مِّنْ بَعْدِ مَا فَتَنُوا ثُمَّ جَاهَدُوا وَصَبَرُوا ۖ إِنَّ رَبَّكَ مِنْ	मसाइब झेलने के बाद, फिर जिहाद करते रहे और साबिर रहे, तो यकीनन तेरा रब इस

بَعْدَهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿۱۱﴾ يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ

के बाद बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। जिस दिन हर शख्स आएगा

نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَفْسِهَا وَتُوْفَىٰ كُلُّ نَفْسٍ

झगड़ा करते हुए अपनी ज़ात की तरफ से और हर शख्स को पूरे पूरे दिए जाएंगे

مَا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿۱۲﴾ وَضَرَبَ اللَّهُ

वो अमल जो उस ने किए और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा। और अल्लाह ने मिसाल

مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا

बयान की एक बस्ती की जो अमन वाली थी, इतमिनान वाली थी, उस की रोज़ी

رِزْقُهَا رَغَدًا مِنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ

फरावानी के साथ आती थी हर तरफ से, फिर उस ने कुफ्र किया अल्लाह की नेअमतों

اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ

के साथ, तो अल्लाह ने उसे भूक और खौफ के लिबास का मज़ा चखाया

بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿۱۳﴾ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْهُمْ

उन आमाल की वजह से जो वो करते थे। यकीनन उन के पास उन्ही में से एक पैग़म्बर आए,

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿۱۴﴾

फिर उन्होंने ने उन्हें झुठलाया, फिर उन को अज़ाब ने पकड़ लिया इस हाल में के वो ज़ालिम थे।

فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاشْكُرُوا

तो खाओ उन चीज़ों में से जो अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दी हैं हलाल पाकीज़ा को। और अल्लाह की

نِعْمَتِ اللَّهِ إِنَّ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿۱۵﴾ إِنَّمَا

नेअमत का शुक्र अदा करो अगर तुम उसी की इबादत करते हो। उस ने

حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ

तुम पर सिर्फ़ मुर्दार और खून और खिन्ज़ीर का गोشت हराम किया है और वो जानवर जिन पर अल्लाह

وَمَا أَهْلًا لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۚ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ

के अलावा का नाम लिया गया हो। फिर जो शख्स मजबूर हो जाए इस हाल में के वो लज़ज़त को तलाश करने वाला

وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿۱۶﴾ وَلَا تَقُولُوا

न हो और जान बचाने की मिक्दर से ज़्यादा खाने वाला न हो, तो यकीनन अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और

لَمَّا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هَذَا حَلٌّ	तुम्हारी ज़बानों की किज़्बयानी की बिना पर ये मत कहो के ये हलाल है
وَهَذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ	और ये हराम है ताके तुम अल्लाह पर झूठ घड़ो।
إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ	यकीनन जो अल्लाह पर झूठ घड़ते हैं
لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٣﴾ مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ	वो फलाह नहीं पाएंगे। थोड़ा नफ़ा उठाना है। और उन के लिए दर्दनाक
أَلِيمٌ ﴿١١٤﴾ وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَمًا	अज़ाब है। और यहूदियों पर हम ने हराम की वो चीज़ें
مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۖ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ	जो हम ने इस से पेहले आप के सामने बयान की हैं। और हम ने उन पर जुल्म नहीं किया
وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٥﴾ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ	लेकिन वो अपनी जानों पर जुल्म करते थे। फिर तेरा रब
لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا	उन के लिए जिन्होंने ने बुरे अमल किए नावाक़िफ़ीयत से, फिर उस के बाद
مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَاصْلَحُوا ۖ إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا	तौबा कर ली और इस्लाह कर ली, तो यकीनन तेरा रब इस के बाद अलबत्ता
لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١٦﴾ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا	बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। यकीनन इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) वो एक उम्मत थे, अल्लाह के सामने आजिज़ी
لِلَّهِ حَنِيفًا ۖ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١١٧﴾ شَاكِرًا	करने वाले थे, सिर्फ अल्लाह के हो कर रेहने वाले थे। और मुशरिकीन में से नहीं थे। अल्लाह की नेअमतों
لَا نُعِجُ ۖ اجْتَبَاهُ وَهَدَيْنَاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١١٨﴾	का शुक्र अदा करने वाले थे। उन को अल्लाह ने मुन्तख़ब किया था और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत दी थी।
وَأَتَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ	और हम ने उन्हें दुन्या में भलाई अता की थी। और यकीनन वो आखिरत में

لِمَنِ الصَّالِحِينَ ﴿۱۲۱﴾ ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ اتَّبِعْ

सुलहा में से हैं। फिर हम ने आप की तरफ वही की के आप इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत का इत्तिबा

مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿۱۲۲﴾

कीजिए, जो सिर्फ अल्लाह के हो कर रहेने वाले थे। और मुशरिकीन में से नहीं थे।

إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۖ

सनीचर तो उन पर मुकर्रर किया गया था जिन्हों ने उस के बारे में इखतिलाफ किया था।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ

और यकीनन तेरा रब अलबत्ता उन के दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा

فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿۱۲۳﴾ اُدْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ

उस में जिस में वो इखतिलाफ करते थे। आप अपने रब के रास्ते की तरफ दावत दीजिए

بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بَالَّتِي

हिक्मत के ज़रिए और अच्छी नसीहत से और उन से बहस कीजिए उस तरीके से

هِيَ أَحْسَنُ ۖ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

जो बेहतर हो। आप का रब वो खूब जानता है उस शख्स को जो अल्लाह के रास्ते से भटक गया

عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿۱۲۴﴾ وَإِنْ عَاقَبْتُمْ

और वो हिदायत पाने वालों को खूब जानता है। और अगर तुम बदला लो

فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ ۖ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ

तो उतना ही लो जितनी तुम्हें तकलीफ दी जाए। और अगर तुम सब्र करो

لَهُوَ خَيْرٌ لِلصَّابِرِينَ ﴿۱۲۵﴾ وَأَصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ

तो अलबत्ता सब्र करने वालों के लिए ये सब्र बेहतर है। और आप सब्र कीजिए और आप का सब्र

إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ

सिर्फ अल्लाह की तौफीक ही से है और उन पर ग़म न कीजिए और आप उन के मक़ की वजह से

مِمَّا يَمْكُرُونَ ﴿۱۲۶﴾ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا

तंगदिल न हों। यकीनन अल्लाह मुत्तकियों के साथ है

وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ ﴿۱۲۷﴾

और उन के साथ है जो नेकी करने वाले हैं।

رُكُوعَاتُهَا ۱۲

(۱۷) سُورَةُ بَنِي إِسْرَءِيلَ (۵۰)

آيَاتُهَا ۱۱۱

और १२ रूकूअ हैं सूरह बनी इस्राईल मक्का में नाज़िल हुई उस में १११ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سُبْحَنَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدٍ لَّيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

पाक है वो ज़ात जिस ने अपने बन्दे को रात के वक्त मस्जिदे हराम से

إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ

मस्जिदे अक़सा तक सफर कराया, जिस के इर्द गिर्द हम ने बरकतें रखी हैं ताके हम उन्हें अपनी

مِّنْ آيَاتِنَا إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝ وَآتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ

बाज़ निशानियाँ दिखाएँ। यकीनन वो सुनने वाला, देखने वाला है। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी

وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ إِلَّا تَتَّخِذُوا

और हम ने उसे हिदायत का ज़रिया बनाया बनी इस्राईल के लिए के तुम मुझे छोड़ कर किसी को

مِّنْ دُونِي وَكَيْلًا ۚ ذُرِّيَّةً مِّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ ۖ إِنَّهُ كَانَ

कारसाज़ मत बनाओ। हम ने तुम्हें उन की ज़रियत बनाया है जिन को हम ने सवार कराया था नूह (अलैहिस्सलाम) के साथ। यकीनन वो

عَبْدًا شَكُورًا ۝ وَقَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ

शुक्रगुज़ार बन्दे थे। और हम ने बनी इस्राईल के लिए उस किताब में फैसला

فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ

कर दिया के तुम ज़मीन में ज़रूर फसाद मचाओगे दो मर्तबा और ज़रूर तुम

عُلُوًّا كَبِيرًا ۝ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَاهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ

बड़ी सरकशी करोगे। फिर जब उन में से पेहली मर्तबा का वक्त आएगा तो हम तुम पर

عِبَادًا لَّنَا أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الدِّيَارِ

अपने सख्त जंग करने वाले बन्दों को भेजेंगे, फिर वो घरों में घुस जाएंगे।

وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ۝ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ

और ये वादा बिल्कुल पूरा हो कर रहा। फिर हम तुम्हें उन पर गुलबा देंगे

وَأَمَدَدْنَكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ۝

और हम तुम्हारी इमदाद करेंगे मालों और बेटों के ज़रिए और हम तुम्हें ज़्यादा लशकर देंगे।

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا अगर तुम अच्छे बनोगे तो अपने लिए अच्छे बनोगे। और अगर तुम बुरे बनोगे तो अपने लिए।	
فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيُسْوَءَا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا फिर जब दूसरी मर्तबा का वक्त आएगा ताके वो तुम्हारी सूरतें बिगाड़ दें और वो मस्जिद में	
السَّجْدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا दाखिल हो जाएं जैसा के वो उस में पेहली मर्तबा में दाखिल हुए थे और ताके वो बरबाद कर दें उन तमाम चीजों को	
تَتَّبِعُوا ۚ عَلَىٰ رَبِّكُمْ أَنْ يَرْحَمَكُمْ ۚ وَإِنْ عُذْتُمْ जिन पर वो ग़ालिब आ जाएं। हो सकता है के तुम्हारा रब तुम पर रहम करे। अगर तुम दोबारा वही करोगे	
عُدْنَا ۚ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ۚ إِنَّ هَذَا तो हम भी दोबारा वही करेंगे। और हम ने जहन्नम काफिरों को घेरने वाली बनाई है। यकीनन ये	
الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ कुरआन हिदायत देता है उस रास्ते की जो ज़्यादा सीधा है और बशारत देता है ईमान वाले उन लोगों को	
الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ۚ जो नेक अमल करते हैं इस बात की के उन के लिए बड़ा अज़्र है।	
وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا और ये के जो आखिरत पर ईमान नहीं लाते उन के लिए हम ने दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर	
أَلِيمًا ۚ وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ रखा है। और कुछ लोग खुद मसाइब की दुआ उन के भलाई मांगने की तरह करते हैं।	
وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ۚ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ और इन्सान जल्दबाज़ वाकेअ हुवा है। और हम ने रात और दिन दो निशानियाँ	
آيَتَيْنِ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصَرَةً बनाई, फिर हम ने रात की निशानी को तारीक बनाया और दिन की निशानी को हम ने रोशन बनाया	
لِتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّنْ رَبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ ताके तुम अपने रब के फ़ज़ल (रोज़ी) को तलाश करो और ताके तुम सालों की गिनती और हिसाब को	
وَالْحِسَابَ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ۚ وَكُلَّ जान लो। और हर चीज़ हम ने तफसील से बयान की है। और हर	

مَشْكُورًا ۱۹ كَلَّا نُبَدُّ هَؤُلَاءِ وَهَؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ط

जाएगी। तमाम को हम इमदाद दे रहे हैं, इन को भी और उन को भी तेरे रब की अता में से।

وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ۲۰ أَنْظِرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا

और तेरे रब की अता बन्द नहीं है। आप देखिए के कैसे हम में उन में से एक को दूसरे पर

بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ ط وَلِلْآخِرَةِ الْكِبْرُ دَرَجَتٍ وَأكْبَرُ

फज़ीलत दी है। और यकीनन आखिरत दरजात के एतेबार से ज़्यादा बड़ी है और फज़ीलत में भी

تَفْضِيلًا ۲۱ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَقْعَدَ مَذْمُومًا

बढ़ी हुई है। तुम अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद मत बनाओ, वरना तुम बैठे रहोगे मज़मूम किए हुए,

مُخَذَّوْلًا ۲۲ وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ

बेकसी की हालत में। तेरे रब ने हुक्म दिया है के इबादत मत करो मगर उसी की और वालिदैन् के साथ

إِحْسَانًا ط إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا

हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया है। अगर तेरे सामने उन में से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जाएं

فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا

तो उन से उफ भी मत कहो और उन को मत झिड़को, बल्के उन से ताज़ीम वाले लेहजे में

كَرِيمًا ۲۳ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ

बात करो। और उन के सामने नरमी से आजिजी के साथ कन्धे झुकाए रखो

وَقُلْ رَبِّ اَرْحَمُهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ۲۴ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ

और यूँ कहो ऐ मेरे रब! तू उन दोनों पर रहम फरमा जैसा के उन्होंने ने मेरी बचपन में परवरिश की। तुम्हारा रब खूब

بِمَا فِي نَفْسِكُمْ ط إِنْ تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ

जानता है उसे जो तुम्हारे दिलों में है। अगर तुम नेक रहोगे तो यकीनन वो

لِلْأَوَّابِينَ غَفُورًا ۲۵ وَاتِذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْيَسِيرِينَ

तौबा करने वालों की बखशिश करने वाला है। और रिश्तेदार को उस का हक दो और मिसकीन

وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا ۲۶ إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ

और मुसाफिर को और फुज़ूलखर्ची मत करो। इस लिए के फुज़ूलखर्च

كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ ط وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ۲۷

शैतान के भाई हैं। और शैतान अपने रब का नाशुकरा है।

وَاَمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمْ اِبْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِّن رَّبِّكَ تَرْجُوهَا और अगर तू उन से ऐराज़ करे अपने रब की रहमत तलब करने के लिए जिस की तू उम्मीद रखता है
فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ۝ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً तब भी उन से नर्म बात केह। और तू अपना हाथ गर्दन से बन्धा हुआ
اِلَى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا मत रख और न उसे पूरे तौर पर खोल दे, वरना तू मलामत किया हुआ, हार कर बैठा
مَّحْسُورًا ۝ اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَّشَاءُ وَيَقْدِرُ रहेगा। यकीनन तेरा रब रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए चाहता है और तंग करता है (जिस के लिए चाहता
اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًاۙ بَصِيرًا ۝ وَلَا تَقْتُلُوْا اَوْلَادَكُمْ है)। यकीनन वो अपने बन्दों की खबर रखने वाला, देखने वाला है। और अपनी औलाद को फक्र के खौफ
خَشْيَةِ اِمْلَاقٍ ۖ نَّحْنُ نَّرْزُقُهُمْ وَاٰيَاكُمْ ۖ اِنَّ قَتْلَهُمْ से क़त्ल मत करो। हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी। यकीनन उन का क़त्ल
كَانَ خَطَاً كَبِيْرًا ۝ وَلَا تَقْرُبُوا الرِّزْقَ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ۖ बहोत बड़ा गुनाह है। और ज़िना के करीब मत जाओ, यकीनन वो बेहयाई है।
وَسَاءَ سَبِيْلًا ۝ وَلَا تَقْتُلُوْا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللّٰهُ और बुरा रास्ता है। और उस जान को क़त्ल मत करो जिस को अल्लाह ने हराम करार दिया
اِلَّا بِالْحَقِّ ۖ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوَلِيّٰهٖ मगर हक़ की वजह से। और जिसे मज़लूम क़त्ल किया जाए तो हम ने उस के वारिस को इखतियार
سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفُ فِي الْقَتْلِ ۚ اِنَّهٗ كَانَ مَنصُوْرًا ۝ दिया है, इस लिए वो क़त्ल में ज़्यादती न करो। इस लिए के उस की नुसरत की गई है।
وَلَا تَقْرُبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِي هِيَ اَحْسَنُ और यतीम के माल के करीब मत जाओ मगर उस तरीके से जो बेहतर हो,
حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّاهٖ ۖ وَاَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ यहां तक के वो अपनी जवानी को पहुँच जाए। और अहद पूरा करो। इस लिए के अहद का भी सवाल
مَسْئُوْلًا ۝ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزَنُوْا بِالْقُسَاطِ किया जाएगा। और पैमाना भर भर कर दो जब नापो और सीधी तराजू से

الْمُسْتَقِيمُ ذَلِكَ خَيْرٌ وَ أَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٣٦﴾ وَلَا تَقْفُ	वज़न करो। ये बेहतर है और अन्जाम के एतेबार से अच्छा है। और उस के पीछे
مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ	मत पड़ जिस का तुझे इल्म नहीं। इस लिए के कान और आँखें और दिल
كُلُّ أُولَئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ﴿٣٧﴾ وَلَا تَمْسَسْ	उन तमाम के मुतअल्लिक सवाल किया जाएगा। और तू ज़मीन में अकड़ता
فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَن تَبْلُغَ	हुवा मत चला। इस लिए के तू ज़मीन को हरगिज़ फाड़ नहीं सकता और लम्बा हो कर पहाड़ों
الْجِبَالِ طُولًا ﴿٣٨﴾ كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ	(की बराबरी) को हरगिज़ नहीं पहुँच सकता। ये सब बुरे खसाइल तेरे रब के नज़दीक
مَكْرُوهًا ﴿٣٩﴾ ذَلِكَ مِمَّا أَوْحَى إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ	नापसन्द हैं। ये हिक्मत की उन बातों में से है जिन की आप के रब ने आप की तरफ़ वही की है।
وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتُلْقَى فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا	और तू अल्लाह के साथ दूसरे माबूद मत करार दे, वरना जहन्नम में मलामत किया हुवा धुतकारा हुवा
مَذْهُورًا ﴿٤٠﴾ أَفَأَصْفُكُمْ رَبُّكُمُ بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ	डाल दिया जाएगा। क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें बेटे चुन कर दिए और खुद उस ने
مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ﴿٤١﴾ وَلَقَدْ	फ़रिशतों में से बेटियाँ लीं? यकीनन तुम बड़ी भारी बात केहते हो। यकीनन हम ने इस
صَرَفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذْكُرُوا وَمَا يُزِيدُهُمْ	कुरआन में फेर फेर कर बयान किया ताके वो नसीहत हासिल करें। और ये कुरआन उन को नहीं बढ़ाता
إِلَّا نُفُورًا ﴿٤٢﴾ قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ	मगर नफरत में। आप पूछिए के अगर अल्लाह के साथ और माबूद भी होते जैसा के वो केहते हैं, तब
إِذَا ابْتَغَوُا إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ﴿٤٣﴾ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ	तो वो सब के सब अर्श वाले माबूद की तरफ रास्ता तलाश करते। अल्लाह पाक है और बरतर है
عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٤٤﴾ تَسْبِيحٌ لَهُ السَّمَوَاتُ	उन बातों से जो वो केहते हैं, बहोत ज़्यादा बरतर है। उस के लिए तो सातों आसमान और ज़मीन और वो

السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ

तमाम चीजें जो उन में हैं, वो तस्बीह करती हैं। और कोई चीज़ नहीं है मगर वो अल्लाह की हम्द के साथ

بِحَمْدِهِ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ

तस्बीह करती है, लेकिन तुम उस की तस्बीह समझते नहीं हो। यकीनन अल्लाह

حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٣٣﴾ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ

हिल्म वाला, बख्शाने वाला है। और जब आप कुरआन पढ़ते हो तो हम आप के दरमियान

وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ﴿٣٤﴾

और उन लोगों के दरमियान जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते एक पोशीदा पर्दा रख देते हैं।

وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ

और हम ने उन के दिलों पर पर्दे रख दिए हैं इस से के वो कुरआन को समझें और उन के कानों में डाट

وَقُرْءًا ۖ وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَّوْا عَلَى

रख दी है। और जब आप अपने रब का तन्हा कुरआन में जिक्र करते हो तो वो अपनी पीठ फेर कर नफरत

أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ﴿٣٥﴾ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ

करते हुए भागते हैं। हम खूब जानते हैं उस गर्ज को जिस के लिए वो कान लगा कर सुनते हैं

إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ

जब के वो आप की तरफ कान लगाते हैं और जब के वो सरगोशी करते हैं, जब के ज़ालिम लोग केहते हैं के

إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٣٦﴾ أَنْظِرْ كَيْفَ ضَرَبُوا

तुम तो पीछे नहीं चलते मगर ऐसे शख्स के जिस पर जादू कर दिया गया है। आप देखिए के वो आप के लिए

لَكَ الْأَمْثَالُ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٣٧﴾

कैसी मिसालें बयान करते हैं, फिर वो रास्ते से भटक गए हैं, फिर रास्ते की ताकत नहीं रखते।

وَقَالُوا إِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا ۖ إِنَّا لَبَعُوثُونَ

और वो केहते हैं के क्या जब हम हड्डियाँ हो जाएंगे और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे तब हम अज़ सरे नौ

خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٣٨﴾ قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ۖ

ज़िन्दा किए जाएंगे? आप फरमा दीजिए के तुम पथ्थर बन जाओ या लोहा बन जाओ। या कोई मख़लूक बन जाओ

أَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ ۚ فَسَيَقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا ۖ

उस में से जिस को तुम अपने दिलों में बड़ा समझते हो। फिर भी अनक़रीब ये लोग कहेंगे के हमें दोबारा कौन

قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ

पैदा करेगा? आप फरमा दीजिए के वही अल्लाह जिस ने तुम्हें पेहली मर्तबा में पैदा किया। तो वो अनकरीब

رُءُوسَهُمْ وَ يَقُولُونَ مَتَى هُوَ ۖ قُلْ عَسَى أَنْ يَكُونَ

आप के सामने अपने सर हिलाएंगे और कहेंगे के वो कब है? आप फरमा दीजिए के हो सकता है के वो

قَرِيبًا ۝ يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَ تَظُنُّونَ

करीब ही हो। जिस दिन वो तुम्हें पुकारेगा तो तुम अल्लाह की हम्द के साथ पुकार को कबूल कर लोगे और तुम गुमान

أَنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۝ وَقُلْ لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي

करोगे के तुम (कब्र में) नहीं ठेहरे मगर बहोत थोड़ा। और मेरे बन्दों से केह दीजिए के वो कहें वो बात जो

هِيَ أَحْسَنُ ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ بَيْنَهُمْ ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ

अच्छी हो। यकीनन शैतान उन के दरमियान झगड़ा डालता है। यकीनन शैतान

كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ۝ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۖ

इन्सान का खुला दुश्मन है। तुम्हारा रब तुम्हें खूब जानता है।

إِنْ يَشَأْ يُرْحَمَكُم ۖ أَوْ إِنْ يَشَأْ يُعَذِّبْكُمْ ۖ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ

अगर वो चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर चाहे तो तुम्हें अज़ाब दे। और हम ने आप को उन पर निगरां

عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝ وَ رَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَوَاتِ

बना कर नहीं भेजा। और आप का रब खूब जानता है उन को जो आसमानों में हैं

وَالْأَرْضِ ۖ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّنَ عَلَى بَعْضٍ

और जो ज़मीन में हैं। यकीनन हम ने अम्बिया में से बाज़ को बाज़ पर फज़ीलत दी और हम ने

وَآتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ۝ قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ

दावूद (अलैहिस्सलाम) को ज़बूर दी। आप फरमा दीजिए के तुम पुकारो उन को जिन को तुम अल्लाह के सिवा (माबूद)

مِنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ۝

समझते हो, फिर वो तुम से ज़रर दूर करने के मालिक नहीं हैं और न ज़रर तबदील करने के मालिक हैं।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمْ

जिन को पुकारते हैं ये कुफ़ार वो खुद अपने रब की तरफ वसीला तलाश करते हैं

الْوَسِيلَةَ إِلَيْهِمْ أَقْرَبُ وَ يَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَ يَخَافُونَ

के उन में कौन ज़्यादा मुकर्रब है और वो उस की रहमत के उम्मीदवार हैं और उस के अज़ाब से

عَذَابُهُ ۖ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ۝۵۷ وَإِنْ مِنْ قَرْيَةٍ

डरते हैं। यकीनन तेरे रब का अज़ाब डरने की चीज़ है। और कोई बस्ती नहीं

إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَمَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا

मगर हम उस को क़यामत के दिन से पेहले हलाक करने वाले हैं या उसे हम सख्त अज़ाब

عَذَابًا شَدِيدًا ۖ كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۝۵۸

देने वाले हैं। ये किताब में लिखा हुआ है।

وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْأَيِّتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا

और हमें मानेअ नहीं हुवा इस से के हम मोअजिज़ात भेजें मगर ये के उस को पेहलों ने

الْأَوَّلُونَ ۖ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصَرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۖ

झुठलाया। और हम ने कौमे समूद को नाका (ऊँटनी) दी जो रोशन मोअजिज़ा थी, फिर भी उन्होंने ने उस के साथ जुल्म

وَمَا نُرْسِلُ بِالْأَيِّتِ إِلَّا تَخَوِيفًا ۝۵۹ وَإِذْ قُلْنَا لَكَ

किया। और हम मोअजिज़ात नहीं भेजते मगर डराने के लिए। और जब हम आप से केहते हैं के यकीनन आप के

إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ۖ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ

रब ने उन लोगों का इहाता कर रखा है। और बेदारी में जो मन्ज़र आप को हम ने दिखाया, उसे हम ने नहीं बनाया

إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ ۖ

मगर उन लोगों के लिए फ़ितना (इस्तिहान) और उस दरख्त को भी जिस पर कुरआन में लानत की गई है।

وَنُحُوفُهُمْ ۖ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ۝۶۰ وَإِذْ قُلْنَا

और हम उन्हें डराते हैं, फिर ये उन को नहीं बढ़ाता मगर बड़ी सरकशी में। और जब हम ने फरिशतों से

لِلْمَلَكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ قَالَ

कहा के आदम (अलैहिस्सलाम) को सज्दा करो, तो सिवाए इबलीस के उन तमाम ने सज्दा किया। इबलीस ने कहा

ءَ اسْجُدْ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ۖ قَالَ أَرَأَيْتَكَ هَذَا الَّذِي

क्या मैं सज्दा करूँ उस को जिसे आप ने मिट्टी से बनाया है? इबलीस ने कहा भला देख! ये इन्सान जिसे

كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ أَخَّرْتَنِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَأَحْتَنِكَنَّ

तू ने मुझ से बढ़ा दिया। अगर तू मुझे क़यामत के दिन तक मोहलत दे तो मैं उस की औलाद

دُرَيْتَةً إِلَّا قَلِيلًا ۖ قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ

को गुमराह कर दूँ सिवाए चन्द लोगों के। अल्लाह ने फ़रमाया के तू जा! फिर जो उन में से तेरे पीछे चलेगा

فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاؤُكُمْ جَزَاءً مَّوْفُورًا ۝۱۳ وَاسْتَفْزِرْ مِنْ	तो जहन्नम तुम्हारी पूरी पूरी सज़ा है। और तू डरा उन में से
اَسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ	जिस पर तू ताक़त रख सके तेरी आवाज़ के ज़रिए और तू उन पर खींच कर ला तेरी सवार फौज को
وَوَجَلِكْ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۝	और तेरी प्यादा फौज को और तू उन के साथ शरीक हो जा मालों में और औलाद में और तू उन को वादा दिला।
وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ۝۱۴ إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ	और शैतान उन को वादा नहीं दिलाता मगर धोके का। अल्बत्ता मेरे बन्दों पर तेरा कोई
عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ۝۱۵ رَبُّكُمْ الَّذِي يُزَيِّجُ	बस नहीं चलेगा। और तेरा रब काफी कारसाज़ है। तुम्हारा रब वो है जो तुम्हारे लिए कशती को
لَكُمْ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۝۱۶ إِنَّهُ كَانَ	तेज़ चलाता है समन्दर में ताके तुम उस के फ़ज़ल को तलाश करो। यकीनन वो
بِكُمْ رَحِيمًا ۝۱۷ وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ	तुम्हारे साथ मेहरबान है। और जब तुम्हें ज़रूर पहोंचता है समन्दर में तो खो जाते हैं वो जिन को
تَدْعُونَ إِلَّا إِلَٰهًا فَلَمَّا نَجَّيْكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ	तुम पुकारते हो सिवाए अल्लाह के। फिर जब वो तुम्हें बचा कर ले आता है खुशकी तक तो तुम ऐराज़ करते हो।
وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ۝۱۸ أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يَخْصِفَ بِكُمْ جَانِبَ	और इन्सान बहोत नाशुकरा है। क्या तुम मामून हो गए इस से के वो तुम्हारे साथ खुशकी के किनारे को ज़मीन
الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ	में धंसा दे या तुम्हारे ऊपर तेज़ हवा को छोड़ दे? फिर तुम अपने लिए कोई कारसाज़ भी
وَكِيلًا ۝۱۹ أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ	न पाओ। या तुम मामून हो गए इस से के वो तुम्हें दूसरी मर्तबा उस में लौटा दे,
فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُم بِمَا كَفَرْتُمْ ۝	फिर तुम पर तूफानी हवा छोड़ दे, फिर वो तुम्हें ग़र्क कर दे तुम्हारी नाशुकरी की वजह से।
ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ۝۲۰ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا	फिर तुम अपने लिए उस पर कोई हमारा पीछा करने वाला भी न पाओ? यकीनन हम ने

۶۰

بَنَى آدَمَ وَ حَمَلْنَهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَ رَزَقْنَهُمْ

इन्सान को इज्जत दी और हम ने उन्हें सवारी दी खुश्की और समन्दर में और हम ने उन्हें रोज़ी दी

مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَ فَضَّلْنَهُمْ عَلَى كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا

उम्दा चीज़ों की और हम ने उन्हें अपनी मखलूक में से बहोत सी मखलूक पर

تَفْضِيلًا ۚ يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ فَمَنْ

फज़ीलत दी। जिस दिन हम तमाम इन्सानों को उन के पेशवा के साथ बुलाएंगे। फिर जिस का

أَوْتَى كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ

नामाए आमाल उस के दाएं हाथ में दिया जाएगा तो वो अपना आमालनामा पढ़ेंगे और उन पर खजूर

وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۚ وَمَنْ كَانُ فِي هَذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ

की गुठली के तागे के बराबर भी जुल्म नहीं किया जाएगा। और जो इस दुन्या में अन्धा होगा तो वो आखिरत

فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۚ وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ

में भी अन्धा होगा और ज़्यादा रास्ता भटका हुवा होगा। और यकीनन वो करीब थे के आप को फितने में मुबतला

عَنِ الذِّئْبِ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لِتُنْفِرَ عَلَيْنَا غَيْرًا ۚ

कर दें उस कुरआन की तरफ से जिसे हम ने आप की तरफ वही की ताके उस के अलावा को आप हम पर घड़ लें।

وَإِذَا لَتَّخَذُوكَ خَلِيلًا ۚ وَلَوْلَا أَنْ تَبَيَّنَّا لَقَدْ كَدَّتْ

और तब तो वो आप को दोस्त बना लेते। और अगर ये बात न होती के हम ने आप को साबितकदम रखा है तो यकीनन आप

تَرَكُنُ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا ۚ إِذَا لَدَّاقْنَاكَ ضَعْفَ

उन की तरफ थोड़ा सा माइल हो जाते। तब तो हम आप को दुन्यवी ज़िन्दगी में दुगना अज़ाब चखाते

الْحَيَوَةِ وَضَعَفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ۚ

और मरने के बाद का दुगना अज़ाब चखाते, फिर आप अपने लिए हमारे खिलाफ कोई मददगार भी न पाते।

وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفْرِزُّوكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ

और यकीनन ये करीब थे के आप को डरा घबरा कर निकाल दें उस सरज़मीन

مِنْهَا وَإِذَا لَا يَلْبَثُونَ خَلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا ۚ سُنَّةَ

से और तब तो वो आप के पीछे न ठेहर पाते मगर थोड़ा। यही दस्तूर उन का

مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا

भी रहा जिन को हम ने आप से पेहले रसूल बना कर भेजा और आप हमारे दस्तूर में तबदीली

تَحْوِيلًا ۷۷۷ اَقِمِ الصَّلَاةَ لِذُلُوكِ الشَّمْسِ اِلَى غَسَقِ اللَّيْلِ

नहीं पाएंगे। आप नमाज़ काइम कीजिए सूरज ढलने के वक्त से ले कर रात की तारीकी तक

وَقُرْآنَ الْفَجْرِ ۖ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ۷۷۸

और फज्र में कुरआन पढ़ने को काइम कीजिए। यकीनन फज्र की किराअत में फ़रिशतों की हाज़िरी होती है।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَكَ

और रात के किसी वक्त में तहज्जुद पढ़िए, ये आप के लिए ज़ाइद है। हो सकता है के आप को

رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ۷۷۹ وَقُلْ رَبِّ ادْخُلْنِي مَدْخَلَ

आप का रब मक़ामे महमूद में पहुँचाए। और आप यूँ कहिए के ऐ मेरे रब! तू मुझे दाखिल कर सच्चा

صَدَقٍ ۖ وَآخِرْجَنِي مُخْرَجٍ صَدَقٍ ۖ وَاجْعَلْ لِي

दाखिल करना और मुझे निकाल सच्चा निकालना और तू मेरे लिए अपनी तरफ

مِنْ لَدُنْكَ سُلْطَانًا نَّصِيرًا ۷۸۰ وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ

से मददगार कुव्वत अता फरमा। और आप कहिए के हक़ आ गया और बातिल

الْبَاطِلُ ۖ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ۷۸۱ وَنُزِّلَ

मिट गया। यकीनन बातिल मिटने ही वाला था। और हम कुरआन में से

مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۚ وَلَا يَزِيدُ

वो उतारते हैं जो ईमान वालों के लिए शिफा है और रहमत है। और ये ज़ालिमों को

الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ۷۸۲ وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ

नहीं बढ़ाता मगर खसारे में। और जब हम इन्सान पर इन्आम करते हैं तो वो

أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ ۚ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوسًا ۷۸۳

ऐराज़ करता है और अपना पेहलू दूर हटाता है। और जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो मायूस हो जाता है।

قُلْ كُلُّ يَعْمَلُ عَلَىٰ شَاكِلَتِهِ ۖ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ

आप फरमा दीजिए के सब के सब अमल अपने तरीके पर कर रहे हैं। फिर आप का रब खूब जानता है उसे

هُوَ أَهْدَىٰ سَبِيلًا ۷۸۴ وَ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ ۖ قُلْ

जो ज़्यादा सीधे रास्ते वाला है। और ये आप से रूह के मुतअल्लिक पूछते हैं। आप फरमा दीजिए के

الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ۷۸۵

रूह मेरे रब के हुक्म से है। और तुम्हें इल्म नहीं दिया गया मगर थोड़ा सा।

وَلَيْنَ شِئْنَا لَنُدْهَبَنَّ بِالَّذِي اَوْحَيْنَا اِلَيْكَ شَيْءٌ

और अगर हम चाहें तो सल्ब कर लें जो हम ने आप की तरफ वही की है, फिर आप अपने लिए

لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا ۝۸۷ اِلَّا رَحْمَةً

उस के (वापस लाने के) लिए हमारे खिलाफ कोई कारसाज़ भी न पाओ। मगर आप के रब की रहमत

مِّن رَّبِّكَ ۚ اِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ۝۸۸ قُلْ

की वजह से (सल्ब नहीं किया)। यकीनन उस का फज़ल आप पर बहोत ज़्यादा है। आप फरमा दीजिए के

لِّیْنَ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰی اَنْ یَّاتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا

अगर तमाम इन्सान और जिन्नात जमा हो जाएं इस पर के इस जैसा कुरआन

الْقُرْآنِ لَا یَاتُوْنَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ

ले आएँ, तब भी इस जैसा कुरआन नहीं ला सकते अगर्चे उन में से एक दूसरे के मददगार

ظَهِيْرًا ۝۸۹ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هٰذَا الْقُرْآنِ

बन जाएं। यकीनन हम ने इन्सानों के लिए इस कुरआन में हर मिसाल को

مِّنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ فَاَبٰی اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۝۹۰

फेर फेर कर बयान किया। फिर भी इन्सानों की अकसरीयत ने इन्कार किया, मगर कुफ़्र में (बढ़ते गए)।

وَقَالُوْا لَنْ تُؤْمِنَ لَكَ حَتّٰی تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ

और कहा के हम हरगिज़ आप पर ईमान नहीं लाएंगे यहां तक के आप हमारे लिए इस ज़मीन में चशमा

یَنْبُوْعًا ۝۹۱ اَوْ تَكُوْنُ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ تَّخِیْلِ وَوَعْدٍ

जारी कर दें। या आप के लिए खजूर और अंगूर का बाग़ हो,

فَتَفْجَرَ الْاَنْهَارُ خَلْلَهَا تَفْجِيْرًا ۝۹۲ اَوْ تُسْقَطُ السَّمَاۗءُ

फिर उस के दरमियान में आप नेहरें जारी कर दें। या आप आसमान हम पर टुकड़े कर के गिरा दें

كَمَا رَعِمْتَ عَلَيْنَا كِسْفًا اَوْ تَاْتٰی بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ

जैसा के आप दावा करते हैं या अल्लाह और फरिशतों को आमने सामने

قَبِيْلًا ۝۹۳ اَوْ یَكُوْنُ لَكَ بَیْتُ مِّنْ زُخْرَفٍ اَوْ تَرْقٰی

ले आएँ। या आप के लिए सौने का मकान हो या आप आसमान में

فِی السَّمَاۗءِ ۚ وَلَنْ تُؤْمِنَ لِرُقِیِّكَ حَتّٰی تُنَزَّلَ عَلٰیْنَا

चढ़ जाएं, और हम आप के चढ़ने को भी हरगिज़ नहीं मानेंगे यहां तक के आप हम पर किताब उतार कर

كُتِبَ تَقَرُّؤُهُ ۖ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا

ले आएंगे जिस को हम पढ़ भी लें। आप फरमा दीजिए के “सُبْحَانَ اللَّهِ” (मेरा रब पाक है), मैं तो नहीं हूँ मगर

رَسُولًا ۚ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمْ

एक भेजा हुआ इन्सान। और इन्सानों को ईमान लाने से मानेअ नहीं हुई जब उन के पास हिदायत

الْهُدَى إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا ۚ قُلْ

आई मगर ये बात के उन्होंने ने कहा क्या अल्लाह ने एक बशर को रसूल बना कर भेजा? आप फरमा दीजिए

لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ

के अगर ज़मीन में फरिशते चलते होते इतमिनान से

لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَسُولًا ۚ قُلْ كَفَىٰ

तो हम उन पर आसमान से फरिशता रसूल बना कर उतारते। आप फरमा दीजिए के

بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ

अल्लाह मेरे और तुम्हारे दरमियान काफी गवाह है। यकीनन वो अपने बन्दों की

خَبِيرًا بَصِيرًا ۚ وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ

खबर रखने वाला, देखने वाला है। और जिस को अल्लाह हिदायत दे वो हिदायतयाफता है। और जिसे अल्लाह

يُضِلِّ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ ۚ وَنَحْشُرُهُمْ

गुमराह कर दे तो आप उन के लिए अल्लाह के अलावा कोई हिमायती हरगिज़ नहीं पाएंगे। और हम उन्हें क़्यामत के

يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمِّيًّا وَبُكَيًا وَصَمًّا ۚ مَا لَهُمْ

दिन उन के चेहरों के बल चला कर अन्धा, गूंगा और बेहरा होने की हालत में इकट्ठा करेंगे। उन का ठिकाना

جَهَنَّمَ ۚ كُلًّا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا ۚ ذَلِكَ جَزَاؤُهُمْ

जहन्नम है। जो अगर ज़रा ठंडी होगी हम उसे उन के लिए और ज़्यादा भड़काएंगे। ये उन की सज़ा है इस वजह से

بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا وَ قَالُوا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا

के उन्होंने ने क़ुफ़ किया हमारी आयतों के साथ और उन्होंने ने कहा के क्या जब हम हड्डियाँ हो जाएंगे और रेज़ा रेज़ा हो

ءَا إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ۚ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ

जाएंगे तब फिर नए सिरे से पैदा किए जाएंगे। क्या उन्होंने ने देखा नहीं के अल्लाह ने

الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ

आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, वो क़ादिर है इस पर के उन के जैसे

مَثَلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَا رَيْبَ فِيهِ ۖ فَابَى الظَّالِمُونَ

पैदा करे और अल्लाह ने उन के लिए एक आखिरी मुद्दत मुकर्रर कर दी है जिस में शक नहीं। फिर भी ज़ालिम लोग इन्कार

إِلَّا كُفُورًا ۚ قُلْ لَّوْ أَنْتُمْ تَبْلُغُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي

करते हैं मगर कुफ्र में (बढ़ते हैं)। आप फरमा दीजिए के अगर तुम मालिक होते मेरे रब की रहमत के खज़ानों के

ع
ع

إِذَا لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ ۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ۚ

तब तो तुम खर्च हो जाने के खौफ से रोक लेते। और इन्सान बड़ा बखील वाकेअ हुवा है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَسَأَلَ بَنَىٰ إِسْرَءِيلَ

यकीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को नौ मोअजिज़ात दिए, फिर आप बनी इस्राईल से पूछिए जब

إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يَمُوسَىٰ

मूसा (अलैहिस्सलाम) उन के पास आए तो फिरऔन ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से कहा के यकीनन मैं तुम्हें ऐ मूसा! जादू किया

مَسْحُورًا ۚ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا أَنزَلَ هَؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ

हुवा गुमान करता हूँ मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यकीनन तू जानता है के उन को नहीं उतारा मगर आसमानों और

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِصَآئِرٍ ۚ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يُفْرَعُونَ

ज़मीन के रब ने आँखें खोल देने वाले (दलाइल) बना कर। और यकीनन मैं तुझे ऐ फिरऔन! हलाक होने वाला

مَشْبُورًا ۚ فَآرَادَ أَنْ يَسْتَفِزَّهُمْ مِنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ

गुमान कर रहा हूँ फिर फिरऔन ने चाहा के उन को उस मुल्क से परेशान कर के निकाल दे, तो हम ने फिरऔन और

وَمَنْ مَّعَهُ جَمِيعًا ۚ وَقُلْنَا مِنْ بَعْدِهِ لِبَنَىٰ إِسْرَءِيلَ

उन तमाम को जो फिरऔन के साथ थे सब को गर्क कर दिया। और हम ने उस के बाद बनी इस्राईल से कहा के

اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ۚ

इस मुल्क में रहो, फिर जब आखिरत का वादा आएगा तो हम तुम्हें समेट कर ले आएंगे।

وَبِالْحَقِّ أَنزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۖ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا

और हक़ ही के साथ हम ने उस को उतारा और हक़ ही के साथ वो उतरा। और हम ने आप को रसूल बना कर नहीं भेजा मगर बशारत

ع
ع

و نَذِيرًا ۚ وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ

देने वाला और डराने वाला बना कर। और कुरआन को हम ने अलग अलग कर के उतारा ताके आप इन्सानों के सामने उस को

عَلَىٰ مُكْتَبٍ وَنَزَّلْنَاهُ تَنْزِيلًا ۚ قُلْ إِمْنُوا بِهِ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا

पढ़ें ठेहर ठेहर कर और हम ने उस को थोड़ा थोड़ा उतारा है। आप फरमा दीजिए के तुम उस पर ईमान लाओ या ईमान न लाओ।

إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَى عَلَيْهِمْ

यकीनन वो जिन्हें इल्म दिया गया इस से पेहले, उन पर तो जब ये तिलावत किया जाता है

يَخْرُونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ۖ وَيَقُولُونَ سُبْحَنَ رَبِّنَا

तो वो अपनी ठोड़ियों के बल सजदे में गिर जाते हैं। और केहते हैं के हमारा रब पाक है,

إِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ۖ وَيَخْرُونَ لِلْأَذْقَانِ

यकीनन हमारे रब का वादा अलबत्ता पूरा हो कर रहा। और वो ठोड़ियों के बल गिर जाते हैं

يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۖ قُلِ ادْعُوا اللَّهَ

रोते हुए और ये उन के खुशूअ को और ज़्यादा करता है। आप फ़रमा दीजिए के तुम अल्लाह को पुकारो

أَوْ ادْعُوا الرَّحْمَنَ ۖ أَيَّامًا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ

या रहमान को पुकारो। जौनसे को भी तुम पुकारो तो उस के लिए सब से अच्छे नाम हैं।

وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافَتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ

और आप अपनी नमाज़ में न ज़्यादा ज़ोर से पढ़िए और न बिल्कुल आहिस्ता पढ़िए और उस के दरमियान

ذَلِكَ سَبِيلًا ۖ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ

रास्ता इख्तियार कीजिए। और आप फरमा दीजिए के तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जो न

وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ

औलाद रखता है और न उस का कोई शरीक है सलतनत में और न कोई

لَهُ وَلِيٌّ مِّنَ الدُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ۖ

उस का कमज़ोरी की वजह से मददगार है और उसी की आप खूब बड़ाई बयान कीजिए।

ۙ أَيَّامًا ۙ (۱۸) سُورَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ (۶۹) رُكُوعَاتُهَا ۙ

और १२ रूकूअ हैं सूरह कहफ मक्का में नाज़िल हुई उस में ११० आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ

तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने अपने बन्दे पर ये किताब उतारी

وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ۖ قِيمًا لِّيُنذِرَ بِأَسَاسِدِيدًا مِّنْ

और उस में कोई कजी नहीं रखी। (इस किताब को उतारा) तसदीक करने वाला बना कर ताके डराए सख्त अज़ाब

لَدُنْهُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ

से अल्लाह की तरफ से और ईमान वालों को बशारत दे जो आमाले सालिहा करते हैं

أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ۖ مَا كَثِيرٌ فِيهِ أَبْدًا ۝

इस बात की के उन के लिए अच्छा सवाब है। जिस में वो हमेशा ठेहरेंगे।

وَيُنذِرُ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ وَلَدًا ۚ مَا لَهُمْ بِهِ

और डराए उन को जो यूँ कहते हैं के अल्लाह ने औलाद बनाई है। उन के पास और उन

مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِأَبَائِهِمْ ۖ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ

के बाप दादा के पास उस पर कोई दलील नहीं। बहोत बड़ा कलिमा है जो उन के

مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۚ إِنَّ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ۚ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ

मुंह से निकलता है। वो सिर्फ झूठ केहते हैं। फिर शायद आप अपनी जान

نَفْسِكَ عَلَىٰ آثَارِهِمْ ۚ إِنَّ لَكُمْ يَوْمَئِذٍ فِي هَذَا الْحَدِيثِ

निकाल देंगे उन के पीछे अफसोस के मारे अगर वो इस कुरआन पर ईमान नहीं

أَسْفًا ۚ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لِّهَا

लाते। यकीनन हम ने उसे जो ज़मीन के ऊपर है ज़मीन की ज़ीनत बनाया है

لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۚ وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ

ताके हम उन्हें आजमाएं के कौन उन में से अच्छा अमल करने वाला है। और यकीनन हम उस को जो ज़मीन के

مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۚ أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ

ऊपर है साफ चटयल मैदान बना कर छोड़ने वाले हैं। क्या आप ने गुमान किया के असहाबे कहफ (ग़ार वाले)

وَالرَّقِيمِ ۖ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ۚ إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ

और तख्ती वाले वो हमारी अजीब निशानियों में से थे? जब के चन्द नौजवानों ने

إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا مِنْ لَدُنْكَ

ग़ार में पनाह ली, और उन्होंने ने कहा के ऐ हमारे रब! तू हमें अपनी तरफ से रहमत

رَحْمَةً ۖ وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۚ فَضَرْبَنَا

अता कर और हमारे लिए हमारे मुआमले में रहनुमाई मुहय्या फ़रमा। फिर हम

عَلَىٰ أَذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۚ ثُمَّ

ने उन के कानों पर उस ग़ार में चन्द साल तक थपकी दी। फिर हम ने उन को

بَعَثْنَهُمْ لِتَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْطَىٰ لِمَا لَدَيْنَا

नींद से उठाया ताके हम मालूम करें के कौन सी जमाअत अपने ठेहरने की मुद्दत को ज़्यादा याद रखने

أَمَدًا ۚ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ ۖ إِنَّهُمْ

वाली है? हम आप के सामने उन का किस्सा तहकीक़ से बयान करते हैं। यकीनन वो चन्द

فَتِيَّةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَهُمْ هُدًى ۚ وَرَبَطْنَا

नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए थे और हम ने उन को ज़्यादा हिदायत दी थी। और हम ने उन के

عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَوَاتِ

दिलों को मज़बूत कर दिया था जब वो खड़े हुए और उन्होंने ने कहा के हमारा रब आसमानों और ज़मीन का

وَالْأَرْضِ لَنْ نَدْعُوهُ مِنْ دُونِهِ إِلَهًا لَقَدْ قُلْنَا

रब है, हम उस के अलावा किसी माबूद को हरगिज़ नहीं पुकारेंगे, यकीनन तब तो हम ने

إِذَا شَطَطًا ۚ هَؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ

हक़ से दूर वाली बात कही। ये हमारी कौम है जिन्होंने ने अल्लाह के अलावा कई माबूद बना

إِلَهَةً ۖ لَوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ ۖ فَمَنْ

लिए हैं। उस पर कोई रोशन दलील क्यूं नहीं लाते? फिर उस से

أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ

ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े।

وَإِذِ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأَوْا إِلَى الْكَهْفِ

और जब तुम उन से और अल्लाह के अलावा उन के माबूदों से अलग हो गए हो तो तुम ग़ार में पनाह लो,

يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ

तुम्हारे लिए तुम्हारा रब अपनी रहमत निछावर करेगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे मुआमले में

مِنْ أَمْرِكُمْ مَرْفَقًا ۚ وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَزُورُ

आसानी मुहय्या करेगा। और तू सूरज को देखेगा, जब वो तुलूअ होता है तो उन

عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقْرِضُهُمْ

के ग़ार से दाईं तरफ़ को हटता है और जब ग़रूब होता है तो उन को बाईं तरफ़

ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِنْهُ ۖ ذَٰلِكَ مِنْ

काट देता है हालांकि वो उस के खुले मैदान में हैं। ये अल्लाह की

آيَةُ اللَّهِ ۖ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَنْ يُضِلِلْ

आयात में से है। जिस को अल्लाह हिदायत दे वो हिदायतयाफता है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो

فَلَنْ تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ۖ وَ تَحْسَبُهُمْ آيِقَاطًا

आप उस के लिए कोई दोस्त रास्ता बताने वाला हरगिज़ नहीं पाओगे। और आप उन्हें बेदार गुमान करेंगे

وَهُمْ رُقُودٌ ۚ وَتُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَ ذَاتَ الشِّمَالِ ۚ

हालांके वो सोए हुए हैं। और हम उन्हें दाईं और बाईं तरफ उलट पलट करते हैं।

وَ كَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ ۖ لَوِ اطَّلَعْتَ

और उन का कुत्ता अपनी बाहें चौखट पर फैलाए हुए है। अगर आप उन की

عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَمَلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ۝

तरफ झाकें तो उन से पीठ फेर कर भागें और आप उन की तरफ से मरऊब हो जाएं।

وَكَذَلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ ۖ قَالَ قَائِلٌ

और इसी तरह हम ने उन को जगा दिया ताके वो आपस में सवाल करें। उन में से एक केहने वाले

مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۖ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ

ने कहा के तुम कितना ठेहरे रहे? तो उन्होंने ने कहा के हम एक दिन या एक दिन से भी कम ठेहरे रहे।

قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ۖ فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ

उन्होंने ने कहा के तुम्हारा रब तुम्हारे ठेहरेने की मुद्दत खूब जानता है। अब तुम अपने में से किसी एक को

بِوَرِقِكُمْ هَذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَى

तुम्हारा चाँदी का ये दिरहम दे कर शहर की तरफ भेजो, फिर उसे चाहिए के वो देखे के कौन सा खाना

طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ

ज्यादा पाकीज़ा है, फिर वो तुम्हारे पास उस में से खाना लाए और उसे चाहिए के वो नर्म बात करे

وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ۚ إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ

और किसी को तुम्हारा पता न बतलाए। इस लिए के वो अगर तुम पर मुत्तलेअ हो जाएंगे

يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا

तो तुम्हें रज्म कर देंगे या तुम्हें अपने मज़हब में लौटा देंगे और तुम उस वक्त कभी भी हरगिज़

إِذَا أَبَدًا ۝ وَكَذَلِكَ أَعَثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ

कामयाब न हो सकोगे। और इसी तरह हम ने उन पर मुत्तलेअ किया ताके वो जान लें के अल्लाह का

اللَّهُ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا ۖ إِذْ يَتَنَازَعُونَ

वादा सच्चा है और ये के क़यामत में कोई शक नहीं। जब के वो आपस में झगड़ रहे थे उन (असहाबे

بَيْنَهُمْ أَمْرُهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِم بُنْيَانًا ۖ رَبُّهُمْ

कहफ़) के मुआमले में, तो बाज़ ने कहा के उन पर इमारत बना लो। उन का रब उन्हें खूब

أَعْلَمُ بِهِمْ ۖ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ

जानता है। उन लोगों ने कहा जो उन के मुआमले में ज़्यादा बाइखतियार थे के हम ज़रूर उन के ऊपर

عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ۖ سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ

मस्जिद बनाएंगे। अब वो कहेंगे के असहाबे कहफ़ तीन थे, उन में चौथा

كَلْبُهُمْ ۖ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجَبًا

उन का कुत्ता था। और कहेंगे के पाँच थे, उन में छठा उन का कुत्ता था, बेदेखे पत्थर

بِالْغَيْبِ ۖ وَ يَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ

फैंकते हुए। और वो कहेंगे के सात थे, और आठवां उन का कुत्ता था।

قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ بِعَدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۚ

आप फरमा दीजिए के मेरा रब उन की तादाद खूब जानता है, थोड़े लोगों के सिवा किसी को उन की तादाद का इल्म नहीं।

فَلَا تُحَارِبْ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا ۚ وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ

इस लिए आप उन के बारे में सिवाए सरसरी बहस के ज़्यादा बहस न कीजिए। और आप उन के बारे

مِّنْهُمْ أَحَدًا ۚ وَلَا تَقُولَنَّ لِّشَأْيٍ إِنِّي فَاعِلٌ

में उन में से किसी से न पूछिए। और किसी चीज़ के मुतअल्लिक यूँ न कहिए के मैं उस को

ذَلِكَ عَدَا ۚ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَادْكُرْ رَبَّكَ

कल करूँगा। मगर ये के अल्लाह चाहे (तो करूँगा)। और अपने रब को याद कीजिए

إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَىٰ أَنْ يَهْدِيَنِي رَبِّي ۖ لَا قَرَبَ

जब आप भूल जाएं और आप यूँ कहिए के हो सकता है के मेरा रब इस से अक़रब

مِنْ هَذَا رَشَدًا ۚ وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ

रूश्द व हिदायत की राह पर मुझे लगा दे। और वो अपने ग़ार में तीन सौ बरस

سِنِينَ ۖ وَارْتَدَادُوا ثِسْعًا ۚ قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا

और मज़ीद नौ साल ठेहरे। आप फरमा दीजिए के अल्लाह उन के ठेहेरने की मुदत खूब

لَيْتُوا لَهُ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ أَبْصُرْ بِهِ	जानता है। उस के पास आसमानों और ज़मीन का ग़ैब है। क्या अजब उस का देखना
وَأَسْمِعْ ۖ مَا لَهُمْ مِّنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ ۚ وَلَا يُشْرِكُ	और सुनना है। बन्दों के लिए अल्लाह के सिवा कोई मददगार नहीं। और वो अपनी हुक्मत
فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ۝ وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ	में किसी को शरीक नहीं करता। और आप तिलावत कीजिए उसे जो आप की तरफ आप के रब की किताब में
مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ	से वही किया गया है। उस के कलिमात को कोई बदल नहीं सकता। और आप उस के अलावा कोई पनाह की
مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ	जगह हरगिज़ नहीं पाओगे। और आप अपने को रोके रखिए उन के साथ जो
يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ	अपने रब को सुबह व शाम पुकारते हैं, उस की
وَجْهَهُ ۚ وَلَا تَعْدُ عَيْنُكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ	रज़ा के तालिब हैं और अपनी निगाह उन से न हटाइए। दुन्यवी ज़िन्दगी की ज़ीनत आप चाहते
الدُّنْيَا ۚ وَلَا تَطْعُ مَنْ أَعْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا	हैं? और उस शख्स का केहना न मानिए जिस का दिल हम ने अपनी याद से ग़ाफिल कर रखा है और वो
وَاتَّبَعَ هَوَاهُ ۚ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرْطًا ۝ وَقُلِ الْحَقُّ	अपनी ख्वाहिश के पीछे पड़ गया है और उस का मुआमला हद से आगे बढ़ गया है। और आप यूँ कहिए के हक़
مِنْ رَبِّكُمْ ۖ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ ۚ	तुम्हारे रब की तरफ से है। तो जो चाहे वो ईमान लाए और जो चाहे वो कुफ़ करे।
إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا ۚ أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ	यकीनन हम ने ज़ालिमों के लिए आग तय्यार कर रखी है, आग की क़नातें उन्हें घेरे हुए हैं।
وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۚ	और अगर वो मदद मांगेंगे तो उन की मदद की जाएगी ऐसे पानी से जो पिघले हुए तांबे की तरह होगा, जो
بِئْسَ الشَّرَابُ ۖ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ	चेहरों को भून देगा। कितनी बुरी शराब। और (जहन्नम) कितनी बुरी जगह है। यकीनन जो

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ	ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे, यकीनन उस का अज्र हम ज़ायेअ नहीं करेंगे जिस ने
عَمَلًا ۖ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنَّتٌ عَدْنٌ تَجْرٰى	अच्छा अमल किया। उन के लिए जन्नाते अद्न होंगी, जिन के नीचे से
مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُجَالُوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ	नेहरें बेहती होंगी, उन्हें उन में कंगन पेहनाए जाएंगे सौने के
وَيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُصْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ	और वो सब्ज़ लिबास पेहनेंगे बारीक रेशम के और मोटे रेशम के,
مُتَّكِنِينَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَاٰكِ ۖ نِعْمَ الثَّوَابُ ۖ وَحَسُنَتْ	उन में वो तख्तों पर टेक लगाए होंगे। कितना अच्छा बदला है। और कितनी अच्छी
مُرْتَفَقًا ۚ وَاَضْرَبَ لَهُمْ مِّثْلًا مِّثْلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا	राहत की जगह है। और आप उन के सामने मिसाल बयान कीजिए दो आदमियों की के उन में से एक
اِحٰدِيْهُمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ	के लिए हम ने अंगूर के दो बाग़ बनाए और हम ने उन दोनों बाग़ों को चारों तरफ से घेर लिया खजूर के दरख्तों से
وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زُرْعًا ۚ كُلَّا الْجَنَّتَيْنِ اَتَتْ	और उन दोनों के दरमियान हम ने खेत बना दिए। ये दोनों बाग़ अपने फल
اُكْلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِنْهُ شَيْئًا ۚ وَفَجَّرْنَا خِلَالَهُمَا	देते थे और उस में से कुछ कम नहीं करते थे। और हम ने उन दोनों बाग़ों के दरमियान नहर जारी
نَهْرًا ۚ وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُجَاوِرُهُ	कर दी थी। और बराबर फल उसे मिल रहे थे। तो वो अपने साथी से केहने लगा उस से गुफ्तगू के दौरान
اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ۖ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ	के मैं तुझ से ज़्यादा माल वाला हूँ और तुझ से ज़्यादा भारी नफरी वाला हूँ। और वो अपने बाग़ में दाखिल हुवा
وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَّا اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهِ	इस हाल में के वो अपनी जान पर जुल्म करने वाला था। वो केहने लगा के मेरा ये गुमान नहीं के ये बाग़
اَبَدًا ۚ وَمَا اَظُنُّ السَّاعَةَ قٰآئِمَةً ۚ وَلٰكِنْ رُّدِدْتُ	कभी बरबाद होगा। और मैं क़यामत के आने का अक़ीदा नहीं रखता, और अगर मैं मेरे

إِلَىٰ رَبِّ لَاجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ۖ قَالَ

रब की तरफ लौटा भी दिया गया तो मैं उस से बेहतर जगह पाऊँगा। उस के

لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي

साथी ने उसे कहा गुफतगू के दौरान, क्या तू कुफ्र करता है उस ज़ात के साथ जिस ने

خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّكَ

तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फे से, फिर तुझे पूरा इन्सान

رَجَلًا ۚ لَكِنَّا هُوَ اللَّهُ رَبُّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي

बनाया? लेकिन वही अल्लाह मेरा रब है और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं

أَحَدًا ۚ وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ

”مَا شَاءَ اللَّهُ“ ठेहराता। और जब तू अपने बाग में दाखिल हुवा तो तू ने यूँ क्यूँ नहीं कहा

مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ إِن تَرَنِ أَنَا أَقَلُّ

” (जो अल्लाह ने चाहा (वही होगा) ताक़्त नहीं मगर अल्लाह की तरफ़ से) अगर तू मुझे देख

مِنْكَ مَالًا ۚ وَلَدَّا ۚ فَعَسَىٰ رَبِّي أَن يُؤْتِيَنِي

रहा है के मैं तुझ से कम माल और कम औलाद वाला हूँ। तो हो सकता है के मेरा रब मुझे तेरे बाग

خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا

से बेहतर दे दे और इस बाग पर आसमान से अज़ाब

مِّنَ السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا زَلَقًا ۚ أَوْ يُصْبِحَ مَاءُهَا

भेज दे, और ये फिसलन वाला मैदान बन जाए। या उस का पानी ज़मीन में नीचे

غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۚ وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِ

चला जाए, किसी तरह तू उसे तलाश भी न कर सकेगा। और उस के फलों पर आफत आ गई,

فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَا أَنْفَقَ فِيهَا وَهِيَ

और वो अपने दोनों हाथ मलता रेह गया उस माल पर जो उस ने बाग में खर्च किया था और वो बाग

خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَلَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ

गिरा पड़ा हुवा था उस के छप्परोँ पर, इधर ये केह रहा था के काश मैं अपने रब के साथ किसी को

بِرَبِّي أَحَدًا ۚ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَنْصُرُونَهُ

शरीक न ठेहराता। और उस की कोई जमाअत भी न हुई जो उस की नुसरत करती

مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ﴿۳۳﴾ هُنَالِكَ	अल्लाह के अलावा और वो खुद भी अपनी मदद न कर सका। वहाँ पर
الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ ۖ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ﴿۳۴﴾	हकीकी हुकूमत अल्लाह ही के लिए है। वही बेहतर सवाब और बेहतर बदला देने वाला है।
وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا أَنْزَلْنَاهُ	और आप उन के सामने दुन्यवी ज़िन्दगी की मिसाल बयान कीजिए उस पानी की तरह जो हम ने आसमान से
مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ	उतारा, फिर उस के साथ ज़मीन का सब्ज़ा मिल गया, फिर वो कूड़ा करकट
هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيحُ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ	हो जाता है जिस को हवाएं उड़ाती हैं। और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत
مُقْتَدِرًا ﴿۳۵﴾ أَلْبَابُ وَالْبُنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ	वाला है। माल और बटे दुन्यवी ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं।
وَالْبَقِيَّتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ	और बाकी रहने वाली नेकियाँ बेहतर हैं तेरे रब के यहाँ सवाब के एतेबार से और उम्मीद के एतेबार से
أَمَلًا ﴿۳۶﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً ۖ	बेहतर हैं। और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे और तू ज़मीन हमवार देखेगा।
وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿۳۷﴾ وَعَرْضُوا	और हम उन को इकट्ठा करेंगे, फिर हम उन में से किसी एक को भी नहीं छोड़ेंगे। और वो तेरे रब के सामने
عَلَى رَبِّكَ صَفًّا ۖ لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ	सफ बसफ पेश किए जाएंगे। (कहा जाएगा) के यकीनन तुम हमारे पास आ गए हो, जैसा हम ने तुम्हें
أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَجْعَلَ لَكُمْ مَوْعِدًا ﴿۳۸﴾	पेहली बार पैदा किया था। बल्के तुम ने तो ये गुमान किया था के हम तुम्हारे लिए वादे की जगह हरगिज़ नहीं बनाएंगे।
وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ	और नामाए आमाल रख दिया जाएगा, फिर मुजरिमों को आप देखेंगे के डरे हुए हैं
مِمَّا فِيهِ وَ يَقُولُونَ يَؤْيِلَتَنَا مَالِ هَذَا الْكِتَابِ	उस से जो आमालनामे में है और वो कहेंगे के हाए हमारी हलाकत! इस नामाए आमाल को क्या हुवा

لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا

के न सगीरा गुनाह को छोड़ा है, न कबीरा मगर सब को इस ने महफूज़ रखा है।

وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا ۖ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ

और वो अपने आमाल सामने पाएंगे। और तेरा रब किसी पर जुल्म नहीं

أَحَدًا ۖ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ

करता। और जब हम ने फरिशतों से कहा के आदम को सज्दा करो

فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ

तो सिवाए इबलीस के सब ने सज्दा किया। वो जिन्नात में से था, फिर उस ने नाफरमानी की

عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ ۖ أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ

अपने रब के हुक्म की। क्या फिर तुम मुझे छोड़ कर के उसे और उस की औलाद को

مِنْ دُونِي وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ

दोस्त बनाते हो हालांके वो तुम्हारे दुश्मन हैं? ज़ालिमों को बुरा

بَدَلًا ۖ مَا أَشْهَدْتُهُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

बदल मिला। मैं ने उन्हें मौजूद नहीं रखा आसमानों और ज़मीन के पैदा करने के वक्त

وَلَا خَلَقَ أَنْفُسَهُمْ ۖ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّينَ

और न खुद उन के पैदा करने के वक्त। और मैं गुमराह करने वालों को मददगार नहीं

عَضْدًا ۖ وَ يَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَاءِيَ

बनाता। और जिस दिन वो कहेगा के तुम पुकारो मेरे उन शुरका को

الَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ

जिन का तुम दावा करते थे, तो वो उन को पुकारेंगे, फिर वो उन की पुकार का जवाब नहीं देंगे

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَوْبِقًا ۖ وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ

और हम उन के दरमियान में हलाकतगाह काइम कर देंगे। और मुजरिम जहन्नम को देखेंगे,

فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاقِعُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا

फिर समझेंगे के वो उस में गिरने वाले हैं और उस से बचने की जगह नहीं

مَصْرَفًا ۖ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ

पाएंगे। यकीनन हम ने इस कुरआन में इत्सानों के लिए फेर फेर कर

مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ	تमाम मिसालें बयान की हैं। और इन्सान सब चीज़ से ज़्यादा
جَدَلًا ۝ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمْ	झगड़ा लू है। और इन्सानों को ईमान लाने से मानेअ नहीं हुई जब उन के पास
الْهُدَى وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ	हिदायत आई और अपने रब से मग़फ़िरत तलब करने से मानेअ नहीं हुई मगर ये बात के उन के पास
سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝	पेहले लोगों का तरीका आ जाए या उन के पास अज़ाब सामने आ पहरेंचे।
وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَ مُنْذِرِينَ ۚ	और हम रसूल नहीं भेजते मगर बशारत देने वाले और डराने वाले बना कर।
وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا	और काफिर बातिल के ज़रिए झगड़ा करते हैं ताके उस के ज़रिए
بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آيَتِي وَمَا أَنْذَرُوا هُزُوعًا ۝	हक़ को मिटा दें और वो मेरी आयतों को और उस को जिस से उन को डराया गया उसे मज़ाक़ बनाते हैं।
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ	और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिसे उस के रब की आयतों के ज़रिए नसीहत की जाए, फिर वो उस से
عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ ۖ إِنَّا جَعَلْنَا	पैराज़ करे और भुला दे उसे जो उस के हाथों ने आगे भेजा है। यकीनन हम ने उन के दिलों पर
عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ	परदे रख दिए हैं इस से के वो उसे समझें और उन के कानों में डाट रख दी है।
وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَى فَلَنْ يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ۝	और अगर आप उन्हें हिदायत की तरफ बुलाएंगे तब भी हरगिज़ हिदायत नहीं पाएंगे कभी भी।
وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ لَوْ يُؤَاخِذُهم	और आप का रब बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला, रहम वाला है। अगर अल्लाह उन को पकड़े उन के आमाल
بِمَا كَسَبُوا لَعَجَلْ لَهُمُ الْعَذَابُ ۖ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ	की वजह से तो उन के लिए अज़ाब जल्दी ले आए। बल्के उन के लिए मुकर्ररा वक़्त है,

	لَنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْيلًا ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ الْقُرَىٰ उस से पनाह की जगह वो हरगिज़ नहीं पाएंगे। और ये बस्तियाँ हैं
	أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ जिन को हम ने हलाक किया जब उन्होंने ने जुल्म किया और हम ने उन की हलाकत का वक्त
﴿٥٩﴾	مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ मुकर्रर कर रखा था। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने खादिम से फरमाया के मैं बराबर चलता रहूँगा
	حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا यहां तक के मैं पहुँच जाऊँ दो समन्दरों के बाहम मिलने की जगह पर या मैं मुद्दतों चलता रहूँगा। फिर जब वो
	مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا نِسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ दोनों पहुँचे दो समन्दरों के बाहम मिलने की जगह पर तो दोनों अपनी मछली भूल गए, फिर मछली ने समन्दर में
	فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ إِنِّي सुराख कर के अपना रास्ता बना लिया। फिर जब वो दोनों आगे निकल गए, तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने खादिम
	عَدَاءَنَا ۖ لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾ से फरमाया के हमारे पास हमारा नाशता लाइए। यकीनन हमारे इस सफर से हमें थकावट पहुँची है।
	قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ खादिम ने अर्ज़ किया क्या आप ने देखा जब हम ने पनाह ली चटान के पास तो मैं मछली
	الْحُوتَ ۚ وَمَا أُنْسِنِيهِ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ ۚ भूल गया। और उस की याद शैतान ही ने मुझे भुला दी।
	وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذَلِكِ और मछली ने अपना रास्ता अजीब तरीके से समन्दर में बना लिया। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ये वही
	مَا كُنَّا نَبْعَثُ ۖ فَاِزْتَدَا عَلَىٰ آثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾ तो है जिसे हम तलाश कर रहे थे। फिर वो दोनों अपने निशानाते क़दम को तलाश करते हुए वापस लौटे।
	فَوَجَدَا عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا اتَيْنَهُ رَحْمَةً फिर दोनों ने हमारे बन्दों में से एक बन्दे को पाया जिसे हम ने हमारी तरफ से रहमत
	مِنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِنْ لَدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهُ अता की थी और जिसे हम ने हमारी तरफ़ से इल्म दिया था। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उन से फरमाया

مُوسَىٰ هَلْ أَتَيْتُكَ عَلَىٰ أَنْ تُعَلِّمَ

क्या मैं आप के साथ चल सकता हूँ इस शर्त पर के आप मुझे सिखलाएं उन उलूम में से जो आप को

مِمَّا عَلَّمْتَ رُشْدًا ۝ قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ

दिए गए हैं रुश्द (व हिदायत) के लिए। उन्होंने (ख़िज़र) ने कहा यकीनन आप मेरे साथ रहे कर हरगिज़

مَعِيَ صَبْرًا ۝ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ

सब्र नहीं कर सकोगे। और आप कैसे सब्र कर सकते हो उस पर जिस की मुकम्मल हकीकत आप को

بِهِ خَبْرًا ۝ قَالَ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا

मालूम नहीं? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अनकरीब अगर अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे

وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ۝ قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي

और मैं आप की किसी मुआमले में नाफरमानी नहीं करूंगा। उन्होंने (ख़िज़र) ने कहा फिर अगर आप मेरे साथ चलते हो

فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ

तो मुझ से किसी चीज़ से मुतअल्लिक सवाल न कीजिए जब तक के मैं खुद आप के सामने उस को बयान

ذِكْرًا ۝ فَانْطَلَقَا ۝ حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ

न कसं। फिर वो दोनों चले। यहां तक के जब वो सवार हुए कशती में तो उन्होंने (ख़िज़र) ने

خَرَقَهَا ۝ قَالَ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا ۚ

उस को फाड़ दिया। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम ने कशती फाड़ दी ताके कशती वालों को ग़र्क कर दो?

لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ۝ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ

यकीनन आप ने बहोत बुरी हरकत की है। उन्होंने (ख़िज़र) ने कहा क्या मैं ने कहा नहीं था के आप

لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِي

हरगिज़ मेरे साथ रहे कर सब्र नहीं कर सकोगे? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के आप मेरा मुआखज़ा न कीजिए

بِمَا نَسِيتُ وَلَا تَرْهَقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ۝

उस में जो मैं भूल गया और मेरे मुआमले में मुझे तंगी के करीब न कीजिए।

فَانْطَلَقَا ۝ حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا غُلَامًا فَقَتَلَهُ ۖ قَالَ أَقْتَلْتُ

फिर दोनों चले। यहां तक के जब दोनों एक लड़के से मिले तो उन्होंने (ख़िज़र) ने उसे क़त्ल कर दिया। मूसा (अलैहिस्सलाम)

نَفْسًا زَكِيَّةً ۖ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۖ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا ۝

ने फरमाया क्या तुम ने एक पाकीज़ा जान को किसी नफ़्स के बग़ैर क़त्ल किया? यकीनन आप ने बहोत बुरी हरकत की।

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ

उन्हों (खिज़र) ने कहा क्या मैं ने आप से कहा नहीं था के आप मेरे साथ रह कर हरगिज़ सब्र नहीं

صَبْرًا ۝ قَالَ إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا

कर सकोगे। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अगर मैं आप से किसी चीज़ के मुतअल्लिक इस के बाद सवाल करूँ

فَلَا تُصَحِّبْنِي ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا ۝ فَانْطَلَقَا ۝

तो आप मुझे अपने साथ न रखिए। बेशक आप मेरी तरफ से उज़्र की इन्तिहा को पहुँच गए हो। फिर वो दोनों

حَتَّىٰ إِذَا أَتَىٰ أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطَعَا أَهْلَهَا فَاذْبَوًا

चले। यहां तक के जब वो दोनों एक गाँव वालों के पास पहुँचे तो दोनों ने बस्ती वालों से खाना मांगा, तो

أَنْ يُضَيِّفُوهُمْ فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ

बस्ती वालों ने उन दोनों की ज़ियाफ़्त करने से इन्कार कर दिया। फिर दोनों ने उस बस्ती में दीवार को पाया जो गिरना

أَنْ يَنْقَضَ فَأَقَامَهُ ۚ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ

चाह रही थी, तो उन्हों (खिज़र) ने उसे सीधा कर दिया। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अगर तुम चाहते तो इस पर उजरत

أَجْرًا ۝ قَالَ هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ سَأُنَبِّئُكَ

ले लेते। उन्हों (खिज़र) ने कहा के ये मेरे और आप के दरमियान जुदाई (का वक़्त) है। मैं आप को अभी बतलाता

بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝ أَمَّا السَّفِينَةُ

हूँ हकीकत उन बातों की जिन पर सब्र की आप ताक़त न रख सके। अल्बत्ता कश्ती,

فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ

तो वो चन्द मिसकीनों की थी जो समन्दर में काम करते थे, तो मैं ने चाहा के मैं उसे

أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ

ऐबदार कर दूँ, और उन के आगे एक बादशाह था जो हर (अच्छी) कश्ती को ज़बर्दस्ती कर के ले लेता

غَصَبًا ۝ وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ

था। और अल्बत्ता लड़का, तो उस के वालिदैन मोमिन थे

فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۝ فَأَرَدْنَا

तो हम डरे इस से के वो उन दोनों को भी सरकशी और कुफ़ के करीब कर दे। तो हम ने इरादा किया के

أَنْ يُبَدِّلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ۝

उन का रब उन्हें बदले में (ऐसी औलाद) दे जो पाकीज़गी में उस से बेहतर और सिलारहमी में उस से बढ़ कर हो।

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ	और अल्बत्ता दीवार, तो वो दो यतीम लड़कों की थी उस शहर में और
تَحْتَهُ كَنْزٌ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ	उस दीवार के नीचे उन का खज़ाना था और उन के बाप नेक थे। तो तेरे रब ने चाहा
أَنْ يُبْلَغَا أَشْدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً	के वो दोनों अपनी जवानी को पहुँचें और अपना खज़ाना खुद निकालें। ये आप के
مِّنْ رَبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۗ ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ	रब की रहमत की वजह से हुवा। और मैं ने उस को अपनी तरफ से नहीं किया। ये उस चीज़ का मतलब है जिस
مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۖ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْقُرْنَيْنِ	पर आप सब्र की ताकत न रख सके। और ये आप से जुलकरनैन के मुतअल्लिक सवाल करते हैं। आप फरमा
قُلْ سَأَتْلُوا عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا ۙ إِنَّا مَكَنَّا لَهُ	दीजिए के अनकरीब मैं तुम्हारे सामने उस का कुछ तज़क़िरा करूँगा। यकीनन हम ने उसे ज़मीन में हुक्मत
فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۖ فَاتَّبَعَ	दी थी और हम ने उसे हर चीज़ के असबाब दिए थे। फिर वो असबाब
سَبَبًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ	ले कर चले। यहां तक के जब सूरज के डूबने की जगह तक पहुँचे तो उसे पाया के वो डूब रहा है
فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ ۖ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا قُلْنَا يَدَا	कीचड़ वाले चशमे में और उस के पास एक कौम को पाया। हम ने कहा के ऐ
الْقُرْنَيْنِ ۖ إِمَّا أَنْ تَعَذِّبَ وَإِمَّا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ	जुलकरनैन! या तो आप अज़ाब दें या उन में भलाई
حُسْنًا ۚ قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ	करें। जुलकरनैन ने कहा अल्बत्ता जो जुल्म करेगा, तो हम उसे अज़ाब देंगे, फिर उसे लौटाया जाएगा
إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُكْرًا ۖ وَأَمَّا مَنْ أَمِنَ	अपने रब की तरफ, फिर वो भी उसे बदतरनीन अज़ाब देगा। और अल्बत्ता जो ईमान लाएगा
وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءٌ الْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ	और आमाले सालिहा करेगा तो उस के लिए अच्छा बदला होगा। और हम उस से अपने मुआमले में

أَمْرًا يُسْرًا ۖ ثُمَّ اتَّبَعَ سَبِيلًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ

आसानी वाली बात कहेंगे। फिर वो सामान ले कर चले। यहां तक के जब वो सूरज के तुलूअ होने की

الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ يَجْعَلْ لَّهُمْ

जगह पर पहुँचे, तो उसे पाया के वो तुलूअ हो रहा है एक कौम पर जिन के लिए हम ने सूरज से आड़

مِنْ دُونِهَا سِتْرًا ۚ كَذٰلِكَ ۖ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ۚ

नहीं बनाई। इसी तरह, और हम ने उस का भी इहाता कर रखा है इल्म के ऐतेबार से जो उन के पास था। फिर

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبِيلًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ

वो असबाब ले कर चले। यहां तक के जब वो दो बन्द तक पहुँच गए तो उन्होंने ने दोनों बन्द के पीछे एक

مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا ۚ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ۚ قَالُوا يٰذَا

कौम को पाया, जो बात समझने के भी करीब नहीं थी। उन्होंने ने कहा के ऐ

الْقَرْنَيْنِ ۚ إِنَّ يَاجُوجَ وَمَاجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ

जुलकरनैन! यकीनन याजूज माजूज ज़मीन में फसाद फेला रहे हैं,

فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ

तो क्या हम आप के लिए कोई खर्च मुतअख्यन कर दें इस शर्त पर के आप हमारे और उन के दरमियान बन्द

سَدًّا ۚ قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي

बना दें? जुलकरनैन ने कहा के जिस की मेरे रब ने मुझे क़ुदरत दी है, वो बेहतर है, इस लिए तुम मेरी इआनत

بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۚ أَتُونِي زَبَرَ الْحَدِيدِ ۚ

करो कूबत से, तो मैं तुम्हारे और उन के दरमियान में एक मज़बूत दीवार बना दूंगा। तुम मेरे पास लोहे की तखतियाँ

حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا ۖ

लाओ। यहां तक के जब उन्होंने ने दोनों किनारों को बराबर कर दिया, तो कहा के आग फूँको। यहां तक के जब

حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا ۖ قَالَ اتُّونِي أَفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ۚ

उस को सरापा आग बना दिया, तो जुलकरनैन ने कहा के तुम मेरे पास पिघला हुवा तांबा लाओ के मैं उस पर बहा दूँ।

فَمَا اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ ۖ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ۚ

फिर वो उस पर चढ़ने की ताक़त नहीं रख सकेंगे और न उस में सूराख करने की ताक़त रख सकेंगे।

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّن رَّبِّي ۚ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ

जुलकरनैन ने कहा ये मेरे रब की रहमत है। फिर जब मेरे रब का वादा आ जाएगा तो वो उसे

دَكَاءٌ ۷ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ۱۹ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ

रेज़ा रेज़ा कर देगा। और मेरे रब का वादा सच्चा है। और हम छोड़ देंगे उन को उस दिन

يَوْمَئِذٍ يَبُوْجُ فِي بَعْضٍ وَ نَفْخُ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنَاهُمْ

इस हाल में के बाज़ बाज़ से गुड़मुड़ होंगे और सूर में फूंक मारी जाएगी, फिर हम उन सब को इकट्ठा

جَمَعْنَا ۱۹ وَ عَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرْضًا ۲۰

करेंगे। और हम जहन्नम को उस दिन काफिरों के सामने पेश करेंगे।

الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا

जिन की आँखें मेरे जिक्र (कुरआन) से (ग़फलत के) परदे में थीं और जो

لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ۱۰۱ أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا

सुनने की ताक़त नहीं रखते थे। क्या फिर काफिरों ने ये समझ रखा है के

أَنْ يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ دُونِي أَوْلِيَاءَ ۱۰۲ إِنَّا أَعْتَدْنَا

वो मुझे छोड़ कर मेरे बन्दों को हिमायती बना लेंगे? यकीनन हम ने काफिरों की ज़ियाफ़त

جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ۱۰۳ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ

के लिए जहन्नम तय्यार कर रखी है। आप फरमा दीजिए क्या हम तुम्हें बतलाएं उन लोगों के बारे में

أَعْمَالًا ۱۰۴ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ

जो आमाँल के ऐतेबार से सब से ज़्यादा खसारे वाले हैं? वो लोग हैं के जिन की कोशिशें दुन्यवी ज़िन्दगी में बेकार

يُحْسِبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۱۰۵ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ

हो गई और वो ये समझते रहे के वो अच्छे काम कर रहे हैं। यही लोग हैं जिन्होंने ने अपने रब की

كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ

आयात के साथ कुफ़्र किया और उस की मुलाक़ात का (इन्कार किया), फिर उन के आमाँल अकारत हो गए

فَلَا نَقِيْمٌ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَنَرْنَا ۱۰۶ ذَلِكَ جَزَاؤُهُمْ

फिर हम उन के लिए क़यामत के दिन वज़न काइम नहीं करेंगे। ये उन की सज़ा जहन्नम है

جَهَنَّمَ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ۱۰۷

उन के कुफ़्र की वजह से और मेरी आयतों और मेरे पैग़म्बरों को मज़ाक़ बनाने की वजह से।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ

यकीनन वो लोग जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे उन की ज़ियाफ़त के लिए जन्नतुल

الفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝ خَلِدِينَ فِيهَا لَا يَبْعُونَ عَنْهَا فیردیس ہوں گی۔ جن میں وہ ہمیشہ رہیں گے، جس سے وہ ہٹنا نہیں
حَوْلًا ۝ قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لَّكَلِمَاتِ رَبِّي لَنَفَذَ چاہیں گے۔ آپ فرما دیجیے کہ اگر سمندر روشنائی بن جائے میرے رب کے کلمات کے لیے، تو سمندر ختم
الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَذَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ ہو جائے گا اس سے پہلے کہ میرے رب کے کلمات ختم ہوں، اگرچہ ہم اسی جیسی مدد کے تئیں اور بھی لے
مَدَدًا ۝ قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَىٰ أَتَمَّا آؤں۔ آپ فرما دیجیے کہ میں تو صرف تم جیسا ایک انسان ہوں، میری طرف وہی کی جا رہی ہے
إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ ۖ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ یہ کہ تمہارا مابود یکتا مابود ہے۔ فیر جو اپنے رب کی ملاقات کی اُمید رکھتا ہے، تو اسے
عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝ چاہیے کہ وہ آملے سالیہ کرے اور اپنے رب کی عبادت میں کسی کو شریک نہ ڈھرایے۔
۹۸ آیاتہا (۱۹) سُورَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ (۴۴) رُكُوعَاتُهَا ۶ اور ۶ رکوع ہیں سوره مریم مکه میں ناچل ہڈی اس میں ۹۸ آیات ہیں بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ پڑھتا ہوں اللہ کا نام لے کر جو بڑا مہربان، نیہایت رھم والا ہے۔
كَلَيْعَصَ ۚ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهُ زَكَرِيَّا ۚ کاف ہا یا این ساد۔ یہ تیرے رب کی اس کے بندے زکریا (اٹلہسسلام) پر رھمت کا تچکیرا ہے۔
إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ جب انھوں نے اپنے رب کو چپکے چپکے پکارا۔ زکریا (اٹلہسسلام) نے کہا اے میرے رب! یقیناً میری
الْعَظْمُ مِنِّي وَاسْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ ہڈیاں کمزور ہو گئی ہیں اور سر میں بڑاپا پیل چکا ہے اور میں توڑ سے مانگنے
بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝ وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ میں اے میرے رب! ناکام نہیں رہا۔ اور یقیناً میں اپنے پیچھے وارسیوں سے ڈرتا
مِنْ وَّرَائِي ۚ وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ہوں اور میری بیوی بانج ہے، تو تو اپنی طرف سے میرے لیے وارس اتا

وَلِيًّا ۝ يَرِثُنِي وَيَرِثُ مِنْ آلِ يَعْقُوبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ

फरमा। जो मेरा वारिस बने और आले याकूब का वारिस बने। और उसे ऐ मेरे रब! तू

رَضِيًّا ۖ يُزَكِّرِيَا إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ إِسْمُهُ يُحْيَىٰ ۖ

पसन्दीदा बना। ऐ ज़करीया! यकीनन हम आप को एक लड़के की बशारत दे रहे हैं जिस का नाम यहया होगा,

لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ

जिस का इस से पेहले हम ने कोई हमनाम नहीं बनाया। ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे

لِي غُلَامٌ ۖ وَكَأَنْتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا ۖ وَقَدْ بَلَغْتُ

लिए लड़का कहाँ से होगा हालांके मेरी बीवी बांझ है और मैं बुढ़ापे की इन्तिहा को

مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝ قَالَ كَذَلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىٰ

पहोंच चुका हूँ? अल्लाह ने फरमाया के इसी तरह होगा। तेरे रब ने कहा है के वो मुझ पर

هَيِّنٌ ۖ وَقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْئًا ۝ قَالَ

आसान है और मैं ने तुझे इस से पेहले पैदा किया हालांके तू कुछ भी नहीं था। ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने कहा

رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً ۚ قَالَ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

ऐ मेरे रब! मेरे लिए निशानी मुकर्रर कर दीजिए। अल्लाह ने फरमाया के तेरी निशानी ये है के तुम इन्सानों से

ثَلَاثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝ فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنَ الْمِحْرَابِ

बात नहीं करोगे तंदुरुस्त होने के बावजूद तीन रात तक। फिर वो अपनी कौम के सामने मेहराब से निकले

فَأَوَّاهٍ إِلَيْهِمْ ۚ أَنْ سَبِّحُوا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ۝ يَحْيَىٰ خُذِ

तो ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने उन को भी इशारे से कहा के तुम अल्लाह की सुबह व शाम तसबीह करो। ऐ यहया! किताब

الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ ۚ وَآتَيْنَاهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝ وَحَنَانًا مِّنَ لَّدُنَّا

को मज़बूती से पकड़ लो। और हम ने उन्हें बचपन ही में दानाई अता कर दी थी। और हमारी तरफ से शफ़क़त

وَزَكَاةً ۚ وَكَانَ تَقِيًّا ۝ وَبَرًّا ۚ بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا

और पाकीज़गी अता की। और वो मुत्तकी थे और अपने वालिदैन् के फरमांबरदार थे और ज़बर्दस्ती करने वाले

عَصِيًّا ۝ وَسَلَّمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوتُ وَيَوْمَ

नाफरमान नहीं थे। और उन पर सलामती हो जिस दिन वो पैदा हुए और जिस दिन वो मरेंगे और जिस दिन

يُبْعَثُ حَيًّا ۝ وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذِ انْتَبَذَتْ

वो ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे। और इस किताब में मरयम का तज़क़िरा कीजिए। जब वो अपने

مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۝ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ घर वालों से अलग हो कर मशरिकी किनारे में चली गई। और उन से
حَبَابًا ۝ فَارْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا परदा कर लिया, फिर हम ने उन की तरफ हमारी रूह को भेजा जो उन के सामने पूरा इन्सान बन कर मुतमस्सिल
سَوِيًّا ۝ قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتُ हुवा। मरयम (अलैहस्सलाम) ने कहा के यकीनन मैं तुझ से रहमान की पनाह मांगती हूँ अगर तू अल्लाह से
تَقِيًّا ۝ قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ ۝ لِأَهَبَ لَكَ عُلْمًا डरता है। तो रूह ने कहा मैं तो सिर्फ तेरे रब का भेजा हुवा फरिशता हूँ। ताके मैं तुझे पाकीज़ा लड़का
زَكِيًّا ۝ قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ दूँ। मरयम (अलैहस्सलाम) ने कहा के मुझे लड़का कहाँ से होगा हालांके मुझे किसी इन्सान ने छूवा नहीं है
وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ۝ قَالَ كَذَلِكَ ۝ قَالَ رَبِّكِ هُوَ عَلَىٰ هَيْئٍ ۝ और मैं ज़िनाकार नहीं हूँ? फरिशते ने कहा के इसी तरह होगा। तेरे रब ने कहा है के ये मुझ पर आसान है।
وَلَنَجْعَلَ لِهَذِهِ الْآيَةِ لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً ۝ وَمَكَانَ أَمْرًا और इस लिए होगा ताके हम उसे इन्सानों के लिए निशानी बनाएं और हमारी तरफ से रहमत बनाएं। और इस मुआमले
مَقْضِيًّا ۝ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ۝ का फैसला कर दिया गया है। फिर मरयम (अलैहस्सलाम) लड़के से हामिला हो गई, फिर उस को ले कर दूर जगह में अलग चली गई।
فَاجَاءَهَا الْبَخَاسُ إِلَىٰ جِدْعِ النَّخْلَةِ ۝ قَالَتْ يَلَيْتَنِي फिर उन को दर्दे ज़ेह आया खजूर के तने के पास। मरयम (अलैहस्सलाम) केहने लगी ऐ काश के
مَتَّ قَبْلَ هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًّا مِّنْ سَيِّئًا ۝ فَنَادَاهَا मैं इस से पेहले मर जाती और मैं भुला कर फरामोश कर दी जाती। फिर मरयम (अलैहस्सलाम) को उन के नीचे से
مِنْ تَحْتِهَا ۝ إِلَّا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۝ आवाज़ दी के तू ग़म न कर, यकीनन तेरे रब ने तेरे नीचे नेहेर जारी कर दी है।
وَهَزَيْتُ إِلَيْكَ بِجِدْعِ النَّخْلَةِ تَسْقُطُ عَلَيْكَ رَطْبًا और तू अपनी तरफ इस खजूर के तने को हिला, खुद टूट कर तुझ पर ताज़ा खजूरें
جَنِيًّا ۝ فَكُلِي وَاشْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا ۝ فَمَا تَرَيْنَ مِنْ गिरेगी। फिर तू खा और पी और आँखें ठन्डी रखा। फिर अगर तू इन्सानों में

الْبَشَرِ أَحَدًا ۖ فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَنِ صَوْمًا

से किसी को देखे, तो यूँ केहना के मैं ने रहमान के लिए रोज़े की नज़र मानी है,

فَلَنْ أَكَلَمَ الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ۖ فَاتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ ۖ قَالُوا

के मैं आज किसी इन्सान से हरगिज़ गुफ्तगू नहीं करूंगी। फिर वो उस लड़के को उठा कर अपनी क़ौम के पास आई। वो

يَمْرُئِمُ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا فَرِيًّا ۚ يَأْخُذُ هَرُونَ مَا كَانَ

केहने लगे ऐ मरयम! यकीनन तू ने बहोत गन्दी हरकत की है। ऐ हासून की बेहेन! तेरा बाप भी बुरा

أَبُوكِ امْرَأًا سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكَ بَغِيًّا ۚ فَأَشَارَتْ

इन्सान नहीं था और न तेरी माँ ज़िनाकार थी। तो मरयम (अलैहस्सलाम) ने उस लड़के की तरफ

إِلَيْهِ ۖ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْهَيْدِ صَبِيًّا ۚ قَالَ

इशारा किया। वो केहने लगे हम कैसे कलाम करें उस से जो गेहवारे में बच्चा है? तो बच्चा बोला

إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ ۖ آتَنِي الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۖ وَجَعَلَنِي

यकीनन मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उस ने मुझे किताब दी है और मुझे नबी बनाया है। और मुझे मुबारक

مُبْرَكًا آيِنَ مَا كُنْتُ ۖ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ

बनाया है जहाँ मैं रहूँ। और उस ने मुझे हुक्म दिया है नमाज़ का और ज़कात का जब तक

مَا دُمْتُ حَيًّا ۚ وَبَرًّا بِوَالِدَتِي ۖ وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا

मैं ज़िन्दा रहूँ। और मुझे अपनी वालिदा का फरमांबरदार बनाया है। और मुझे सरकश, बदबख्त नहीं

شَقِيًّا ۚ وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ

बनाया। और सलामती हो मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुवा और जिस दिन मैं मरूंगा

وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۚ ذَلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۖ قَوْلَ الْحَقِّ

और जिस दिन मैं ज़िन्दा कर के उठाया जाऊँगा। ये ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) हैं। ये सच्ची बात है

الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ۚ مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ

जिस में ये झगड़ा कर रहे हैं। अल्लाह के लिए मुनासिब नहीं के वो औलाद

مِنْ وَلَدٍ ۖ سُبْحَنَهُ ۖ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ

बनाए, अल्लाह तो औलाद से पाक है। जब वो किसी मुआमले का फैसला करता है तो उस से केहता है के हो जा,

فَيَكُونُ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَذَا

तो वो हो जाता है। और यकीनन मेरा रब और तुम्हारा रब अल्लाह है, तो तुम उसी की इबादत करो। ये

صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿۳۳﴾ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ सीधा रास्ता है। फिर गिरोह आपस में अलग अलग हो गए।
فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿۳۴﴾ أَسْمِعْ फिर काफिरों के लिए एक भारी दिन की हाजिरी से हलाकत है। वो कितना अच्छी तरह सुनने वाले
بِهِمْ وَأَبْصُرْ ۖ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَكِنَ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ और कितना अच्छी तरह देखने वाले होंगे, जिस दिन वो हमारे पास आएंगे। लेकिन ज़ालिम लोग आज
فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿۳۵﴾ وَأَنْذَرَهُمْ يَوْمَ الْحُسْرَىٰ ۖ إِذْ قُضِيَ खुली गुमराही में हैं। और आप उन्हें डराइए हसरत वाले दिन से जब मुआमले का फैसला कर दिया
الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿۳۶﴾ إِنَّا نَحْنُ जाएगा, अभी वो ग़फ़लत में हैं और ईमान नहीं लाते। यकीनन हम ही इस ज़मीन
نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿۳۷﴾ وَاذْكُرْ के वारिस होंगे और उन के भी जो ज़मीन पर हैं और हमारी तरफ़ वो सब लौटाए जाएंगे। और आप
فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ ۖ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ﴿۳۸﴾ किताब में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का तज़क़िरा कीजिए। यकीनन वो सिद्दीक़ थे, नबी थे।
إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने अब्बा से कहा के ऐ मेरे अब्बा! तुम क्यों इबादत करते हो ऐसी चीज़ों की जो न सुनती
وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ﴿۳۹﴾ يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي हैं और न देखती हैं और आप के कुछ भी काम नहीं आती। ऐ मेरे अब्बा! यकीनन मेरे पास वो इल्म
مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿۴۰﴾ आया है जो आप के पास नहीं आया इस लिए आप मेरे पीछे चलिए, मैं आप को सीधे रास्ते की रहनुमाई करूँगा।
يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَنِ ऐ मेरे अब्बा! आप शैतान की इबादत मत कीजिए। यकीनन शैतान रहमान का
عَصِيًّا ﴿۴۱﴾ يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِّن नाफरमान है। ऐ मेरे अब्बा! यकीनन मैं डरता हूँ इस से के आप को रहमान की तरफ़ से अज़ाब
الرَّحْمَنِ فَتَكُونَنَّ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ﴿۴۲﴾ قَالَ أَرَأَيْتَ إِنْ पहोंचे, फिर तुम शैतान के दोस्त बन जाओ। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के बाप ने कहा क्या तुम ऐराज

عَنِ الرَّهْتَىٰ يَابْرَهِيمَ ۚ لَيْنَ لَمْ تَنْتَهَ لِمَرْجُمِكَ करते हो मेरे माबूदों से, ऐ इब्राहीम? अगर तुम बाज़ नहीं आओगे तो मैं तुम्हें रज्म कर दूँगा और तू दूर हो जा	وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا ۖ قَالَ سَلَّمَ عَلَيْكَ ۚ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي मुझ से मुहते दराज़ तक। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अस्सलामु अलैकुम! अनकरीब मैं तुम्हारे लिए अपने रब से
إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ۖ وَأَعْتَزَلَكُمْ وَمَا تَدْعُونَ इस्तिगफार करूँगा। यकीनन वो मुझ पर महरबान है। और मैं छोड़ रहा हूँ तुम्हें और उन को जिन की तुम	مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ وَأَدْعُوا رَبِّي ۚ عَسَىٰ آلَا أَكُونَ بِدُعَاءِ अल्लाह के अलावा इबादत करते हो और मैं अपने रब को पुकारता हूँ। उम्मीद है के मैं मेरे रब से दुआ
رَبِّي شَقِيًّا ۖ فَلَمَّا أَعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ करने में नामुराद नहीं रहूँगा। फिर जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) अलग हो गए उन से और उन से भी जिन की वो अल्लाह	اللَّهِ ۚ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۖ كُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ۖ के अलावा इबादत करते थे, तो हम ने उन्हें इसहाक और याकूब (अलैहिस्सलाम) दिए। और तमाम को हम ने नबी बनाया।
وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِنْ رَحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صَدِقٍ और हम ने उन्हें हमारी रहमत में से हिस्सा दिया और हम ने उन के उलूखे मन्ज़िलत, सच्चाई को बयान करने वाली ज़बानें	عَلِيًّا ۖ وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ مُوسَىٰ ۚ إِنَّهُ كَانَ (तमाम अदयान में) बना दी। और इस किताब में मूसा (अलैहिस्सलाम) का तज़क़िरा कीजिए। यकीनन वो
مُخْلَصًا ۖ وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ۖ وَنَادَيْنَاهُ مِنْ جَانِبِ खालिस किए हुए और रसूल थे, नबी थे। और हम ने उन्हें पुकारा कोहे तूर की दाई	الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَفَرَّغْنَا لَهُ الْيَمِينَ ۖ وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَحْمَتِنَا जानिब से और हम ने उन्हें सरगोशी के लिए करीब किया। और हम ने उन्हें अपनी रहमत से उन के भाई
أَخَاهُ هَارُونَ نَبِيًّا ۖ وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ إسماعِيلَ ۚ हारून को नबी बना कर अता किया। और इस किताब में इस्माईल (अलैहिस्सलाम) का तज़क़िरा कीजिए।	إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ ۖ وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ۖ وَكَانَ यकीनन वो सच्चे वादे वाले थे और रसूल थे, नबी थे। और वो
يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ ۖ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ अपने घर वालों को नमाज़ का और ज़कात का हुक्म देते थे। और वो अपने रब के नज़दीक	مَنْزِلَ ۚ

مَرْصِيًّا ۝ وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيسَ ۚ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا पसन्दीदा थे। और इस किताब में इदरीस (अलैहिस्सलाम) का तज़क़िरा कीजिए। यकीनन वो सिद्दीक़ थे,
نَبِيًّا ۝ وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ नबी थे। और हम ने उन्हें बुलन्द जगह पर उठा लिया। यही लोग हैं जिन पर
أَنعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيِّنَ مِنْ ذُرِّيَةِ آدَمَ ۚ अल्लाह ने इन्आम फरमाया अम्बिया में से, आदम (अलैहिस्सलाम) की औलाद में से।
وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ ۚ وَمِنْ ذُرِّيَةِ إِبْرَاهِيمَ और उन में से जिन को हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) के साथ सवार कराया। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)
وَإِسْرَءِيلَ ۚ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ۚ إِذَا تُتْلَىٰ और याकूब (अलैहिस्सलाम) की जुरीयत में से। और उन में से जिन को हम ने हिदायत दी और जिन को हम ने मुत्तखब किया। जब
عَلَيْهِمْ آيَاتُ الرَّحْمَنِ حَرَّوْا سُبْحًا وَبُكْيَا ۝ فَخَلَفَ उन पर रहमान की आयतें तिलावत की जाती हैं तो वो सज्दा करते हुए और रोते हुए गिर पड़ते हैं। फिर
مِنْ بَعْدِهِمْ خَلَفُوا ضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا उन के बाद ऐसे नाख़लफ आए जिन्होंने ने नमाज़ ज़ायेअ की और ख्वाहिशात के
الشَّهَوَاتِ فَسُوفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ۝ إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ पीछे पड़े, फिर वो अनक़रीब खराबी पाएंगे। मगर जो तौबा करे और ईमान लाए
وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ और नेक काम करता रहे तो ये जन्नत में दाखिल होंगे और उन पर ज़रा भी
شَيْئًا ۝ جَنَّتِ عَدْنٍ ۖ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ जुल्म नहीं किया जाएगा। जन्नाते अद्न में दाख़िल होंगे, जिन का रहमान ने वादा किया है अपने बन्दों से बग़ैर देखे।
إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ۝ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لُعْوًا यकीनन उस का वादा पूरा हो कर रहेगा। उस में वो सिवाए सलाम के कोई लूग्व बात
إِلَّا سَلَامًا وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ۖ تِلْكَ नहीं सुनेंगे। और उन को उस में खाना सुबह व शाम मिलेगा। ये
الْجَنَّةُ الَّتِي نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۝ वो जन्नत है जिन का हम वारिस बनाएंगे अपने बन्दों में से उन्हें जो मुत्तकी हैं।

وَمَا نُنَزِّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا

और हम नहीं उतरते मगर तेरे रब के हुक्म से। उसी की मिल्क हैं वो तमाम चीजें जो हमारे आगे हैं

وَمَا خَلَقْنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝ ۱९

और जो हमारे पीछे हैं और जो उन के दरमियान में हैं। और तेरा रब भूलने वाला नहीं है। वो आसमानों

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ

और ज़मीन का रब है और उन चीजों का रब है जो उन के दरमियान में हैं, तो आप उसी की इबादत कीजिए और

لِعِبَادَتِهِ ۚ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ۝ ۲०

उस की इबादत पर जमे रहिए। क्या आप उस का कोई हमनाम जानते हैं? और इन्सान केहता है के

ءِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ۝ ۲१

क्या जब मैं मर जाऊँगा तब मैं ज़िन्दा कर के निकाला जाऊँगा? क्या इन्सान याद नहीं रखता के

أَنَا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ۝ ۲२

हम ने उसे इस से पेहले पैदा किया हालांके वो कुछ भी नहीं था? फिर तेरे रब की कसम! ज़रूर हम उन्हें

لَنَحْشُرَهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ

और शयातीन को इकट्ठा करेंगे, फिर हम उन्हें जहन्नम के इर्द गिर्द घुटने के बल बैठा हुवा होने की हालत में

جَثِيًّا ۝ ۲३

हाज़िर करेंगे। फिर हम निकालेंगे हर जमाअत में से उसे जो उन में से रहमान पर ज़्यादा

عَلَى الرَّحْمَنِ عِتِيًّا ۝ ۲४

सख्त सरकश था। फिर हम खूब जानते हैं उन्हें जो जहन्नम में दाखिल होने के

صَلِيًّا ۝ وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَى رَبِّكَ حَتْمًا

लाइक़ हैं। और तुम में से हर एक ज़रूर जहन्नम पर वारिद होने वाला है। ये तेरे रब पर लाज़िम है,

مَقْضِيًّا ۝ ۲५

इस का फैसला कर दिया गया है। फिर हम मुत्तकियों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उस में

فِيهَا جَثِيًّا ۝ ۲६

घुटनों के बल पड़ा हुवा छोड़ देंगे। और जब उन पर हमारी आयतें तिलावत की जाती हैं साफ़ साफ़,

الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا ۚ أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ

तो काफिर लोग ईमान वालों से केहते हैं के दोनों फ़रीक़ में से किस का

مَقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿۴۵﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ

मकान बेहतर है और किस की मजलिस अच्छी है? और उन से पेहले कितनी कौमों को हम ने हलाक किया

هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِعْيًا ﴿۴۶﴾ قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَاةِ

जो ज़्यादा अच्छे सामान वाली और ज़्यादा अच्छी रौनक वाली थी। आप फरमा दीजिए जो गुमराही में हैं

فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَنُ مَدًّا ۖ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ

तो उन को रहमान तआला ढील दे रहे हैं। यहां तक के जब वो देखेंगे उस अज़ाब को

إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ ۖ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ

जिस से उन्हें डराया जा रहा है या अज़ाब या क़यामत, तो अनक़रीब उन्हें मालूम हो जाएगा के कौन

شَرُّ مَكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا ﴿۴۷﴾ وَ يَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ

ज़्यादा बुरी जगह वाला है और कौन कमज़ोर जमाअत वाला है। और अल्लाह हिदायत में बढ़ाते हैं उन्हें

اهْتَدَوْا هُدًى ۖ وَالْبَقِيَّةُ الصَّالِحَةُ خَيْرٌ عِنْدَ

जो हिदायतयाफ़ता हैं। और बाक़ी रेहने वाले अच्छे आमाल बेहतर हैं तेरे रब के नज़दीक

رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿۴۸﴾ أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ

सवाब के ऐतेबार से और ज़्यादा अच्छे हैं अन्जाम के ऐतेबार से। क्या फिर आप ने देखा वो शख्स जिस ने

بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَاؤْتَيْنَ مَالًا ۖ وَلَدَّا ۖ أَطْلَعَ الْغَيْبَ

हमारी आयतों के साथ क़ुफ़ किया और उस ने कहा के ज़रूर मुझे माल और औलाद मिलेगी? क्या वो ग़ैब पर

أَمْ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ﴿۴۹﴾ كَلَّا ۖ سَنَكْتُبُ

मुत्तलेअ हुवा या उस ने रहमान तआला के पास कोई अहद ले रखा है? हरगिज़ नहीं! अनक़रीब हम लिख रहे हैं उसे

مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۖ وَ نَرِثُهُ

जो वो केह रहा है और हम उस के लिए अज़ाब को लम्बा करेंगे। और हम उस के वारिस बनेंगे उन चीज़ों में

مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿۵۰﴾ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً

जिन्हें वो केह रहा है और वो हमारे पास तन्हा आएगा। और उन्होंने ने अल्लाह को छोड़ कर कई माबूद बना लिए हैं

لِيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ﴿۵۱﴾ كَلَّا ۖ سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ

ताके वो उन के लिए कूवत का ज़रिया बनें। हरगिज़ नहीं! अनक़रीब वो उन की इबादत का इन्कार करेंगे

وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ صِدًّا ﴿۵۲﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا

और वो उन के मुखालिफ बन जाएंगे। क्या आप ने देखा नहीं के हम ने

الشَّيْطَانِ عَلَى الْكَافِرِينَ تَؤْزُرُهُمْ آرَأًا ۖ فَلَا تَجْعَلْ

शयातीन को काफिरों पर छोड़ रखा है, वो उन को खूब भड़का रहे हैं। इस लिए आप उन के बारे में

عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ۗ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ

जल्दी न करें। हम उन के लिए गिन्ती गिन रहे हैं। जिस दिन हम मुत्तकियों को इकट्ठा करेंगे रहमान तआला

إِلَى الرَّحْمَنِ وَفَدًّا ۗ وَنَسُوقُ الْجُرِمِينَ إِلَى جَهَنَّمَ وَرِدًّا ۗ

की तरफ जमाअत दर जमाअत। और हम मुजरिमों को हाँकेंगे जहन्नम की तरफ प्यासा होने की हालत में।

لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ

वो शफ़ाअत के मालिक नहीं होंगे मगर वो जिस ने रहमान तआला के पास कोई अहद ले

عَهْدًا ۗ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ۗ لَقَدْ جِئْتُمْ

रखा हो। और वो केहते हैं के रहमान तआला ने औलाद बनाई है। यकीनन तुम ने बड़ी भारी

شَيْئًا إِذَا ۗ تَكَادُ السَّمُوتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَ تَنْشَقُّ

बात कही है। के करीब है के आसमान भी उस से फट जाएं और ज़मीन भी

الْأَرْضُ وَتَخْزُ الْجِبَالُ هَدًّا ۗ أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا ۗ

फट पड़े और पहाड़ रेज़ा हो कर गिर पड़ें। इस वजह से के वो रहमान तआला के लिए औलाद का दावा करते हैं।

وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ۗ إِنْ كُلُّ مَنْ

और रहमान तआला के लिए मुनासिब नहीं हैं के औलाद बनाए। यकीनन सारे के सारे वो जो आसमानों

فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا أَتَى الرَّحْمَنَ عَبْدًا ۗ لَقَدْ أَحْضَمُّهُمْ

और ज़मीन में हैं वो रहमान तआला के पास सिर्फ बन्दे की हैसियत से हाज़िर होने वाले हैं। यकीनन अल्लाह ने

وَعَدَهُمْ عَدًّا ۗ وَكُلُّهُمْ إِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَرْدًا ۗ

उन का इहाता कर रखा है और उन की गिनती गिन रहा है। और सब के सब उस के पास क़यामत के दिन तन्हा आएंगे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ

यकीनन वो जो ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे, अनकरीब रहमान तआला उन के लिए महबूबीयत रख

وُدًّا ۗ فَإِنَّا يَسِّرْنَاهُ بِلسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ

देगा। फिर हम ने ही इस कुरआन को आप की ज़बान में आसान किया है, ताके आप उस के ज़रिए मुत्तकियों को

وَنُنَذِرَ بِهِ قَوْمًا لَّدَا ۗ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ

बशारत दें और उस के ज़रिए आप झगड़लू क़ैम को डराएं। और उन से पेहले कितनी उम्मतों को हम ने हलाक किया।

تَفْصِيلًا

تَفْصِيلًا

وَقَالَ

هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۖ

क्या आप उन में से किसी को महसूस करते हैं या उन की कोई आहट सुनते हैं?

رُكُوعَاتِهَا ٨

(२०) سُورَةُ طه مَكِّيَّةٌ (٢٥)

آيَاتُهَا ١٣٥

और ८ रूकूअ हैं

सूरह ताहा मक्का में नाज़िल हुई

उस में १३५ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

طه ۝ مَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَى ۝ إِلَّا تَذَكُّرٌ

ता हा। हम ने ये कुरआन आप पर इस लिए नहीं उतारा ताके आप मशक्कत उठाएं। मगर उतारा है उस शख्स को

لِّمَن يَخْشَى ۝ تَنْزِيلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمُوتِ

नसीहत देने के लिए जो डरे। ये उतारा गया है उस अल्लाह की तरफ से जिस ने ज़मीन और बुलन्द आसमानों

الْعُلَى ۝ الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ۝ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ

को पैदा किया। रहमान तआला अर्श पर जलवाअफरोज़ है। उस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में

وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَى ۝

हैं और जो ज़मीन में हैं और जो उन के दरमियान में हैं और जो गीली मिट्टी के नीचे हैं। और अगर आप बात को

وَأِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ۝ اللَّهُ لَا إِلَهَ

जोर से कहें तो यकीनन चुपके से कही हुई बात को और सब से ज्यादा छुपाई हुई बात को वो जानता है। अल्लाह के

إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ۝ وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۝

सिवा कोई माबूद नहीं। उस के लिए अच्छे अच्छे नाम हैं। क्या आप के पास मूसा (अलैहिस्सलाम) का किस्सा आया?

إِذْ رَأَى نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا ۖ

जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने आग देखी, फिर अपने घर वालों से कहा के तुम ठेहरो! यकीनन मैं ने आग देखी है,

لَعَلِّي آتِيكُمْ مِنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ أَجْدٍ عَلَى النَّارِ هُذًى ۝

शायद मैं तुम्हारे पास उस में से कोई शौला ले आऊँ या आग पर रहनुमाई पा लूँ। फिर जब

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يَوْمُوسَى ۝ إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ

मूसा (अलैहिस्सलाम) आग के पास पहुँचे तो आवाज़ दी गई ऐ मूसा! यकीनन मैं तुम्हारा रब हूँ, इस लिए

نَعْلَيْكَ ۖ إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝ وَأَنَا اخْتَرْتُكَ

अपने चप्पल उतार लीजिए। यकीनन आप पाक वादिए तुवा में हैं। और मैं ने आप को मुन्तख़ब किया,

فَاسْتَبِغْ لِمَا يُوْحٰى ۝۱۲ اِنْتَنِى اَنَا اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا

इस लिए आप कान लगा कर सुनिए उसे जो आप की तरफ वही की जा रही है। यकीनन मैं ही अल्लाह हूँ मेरे सिवा कोई

فَاعْبُدْنِىْ ۚ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِىْ ۝۱۳ اِنَّ السَّاعَةَ اَتَتْهُ

माबूद नहीं, इस लिए आप मेरी इबादत कीजिए और मेरी याद के लिए नमाज़ क़इम कीजिए। यकीनन क़यामत आने

اَكَادُ اخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعٰى ۝۱۴

वाली है, मैं उसे छुपाना चाहता हूँ ताके हर शख्स को बदला दिया जाए उन आमाल का जो उस ने किए।

فَلَا يَصُدُّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاَتَّبِعْ هُوْلَهُ فَتَرْدٰى ۝۱۵

इस लिए आप को हरगिज़ उस से न रोके वो शख्स जो क़यामत पर ईमान नहीं रखता और जो अपनी ख्वाहिश के पीछे

وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوسٰى ۝۱۶ قَالَ هٰى عَصٰى اَتَوَكَّلُ

चल पड़ा है, फिर कहीं आप हलाक हो जाएं। और ऐ मूसा! आप के दाएं हाथ में क्या है? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया ये मेरी

عَلَيْهَا وَاَهْشُ بِهَا عَلَى غَنَمِىْ وَلِىَ فِيْهَا مَارِبٌ

लाठी है। उस पर मैं टेक लगाता हूँ और उस के ज़रिए मैं पत्ते झाड़ता हूँ अपनी बकरियों पर और मेरी उस में दूसरी भी

اٰخَرٰى ۝۱۷ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوسٰى ۝۱۸ فَالْقَهَا فَاِذَا هٰى حَيَّةٌ

हाजते हैं। अल्लाह ने फरमाया ऐ मूसा! उस को डाल दीजिए। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उस को डाल दिया तो अचानक वो साँप

تَسْعٰى ۝۱۹ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۚ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا

बन गया दौड़ता हुवा। अल्लाह ने फरमाया के उस को पकड़ लीजिए और न डरिए। अनक़रीब हम उसे उस की पेहली

الْاُولٰى ۝۲० وَاَضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجُ بَيْضًا

हालत पर लौटा देंगे। और अपना हाथ अपनी बगल में दबा दीजिए, वो बग़ैर किसी बुराई के सफ़ेद हो कर

مِنْ غَيْرِ سُوْءٍ اٰیَةً اٰخَرٰى ۝۲१ لِنُرِيْكَ مِنْ اٰیٰتِنَا الْكُبْرٰى ۝

निकलेगा। ये दूसरे मोअजिज़े के तौर पर (दे रहे हैं)। ताके हम आप को दिखाएं हमारी बड़ी निशानियों में से।

اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهُ طَغٰى ۝۲२ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ

आप जाइए फिरऔन के पास, यकीनन उस ने सरकशी की है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की ऐ मेरे रब!

لِىْ صَدْرِىْ ۝۲३ وَیَسِّرْ لِىْ اَمْرِىْ ۝۲४ وَاَحْلِلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِىْ

मेरे लिए मेरा सीना खोल दीजिए। और मेरे लिए मेरे मुआमले में आसानी कर दीजिए। और मेरी ज़बान की गिरह खोल दीजिए।

یَفْقَهُوا قَوْلِىْ ۝۲५ وَاجْعَلْ لِىْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِىْ ۝

ताके वो मेरी बात को समझ सकें। और मेरे लिए मेरे घर वालों में से मददगार मुक़र्रर कर दीजिए।

هَرُونَ أَخِي ۖ أَشَدُّ بِهِ أَزْرًا ۖ وَأَشْرَكَهُ

(यानी) मेरे भाई हारून को (मददगार मुकर्रर कर दीजिए)। उस के ज़रिए मेरी कूव्वत को और बढ़ा दीजिए। और उस को

فِي أَمْرِي ۖ كَىٰ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ۖ وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا ۖ إِنَّكَ

मेरे मुआमले में शरीक बना दीजिए। ताके हम आप की तस्बीह करें बहोत ज़्यादा। और बहोत ज़्यादा आप को याद करें।

كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا ۝ قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يٰمُوسَىٰ ۝

यकीनन आप हमें देख रहे हैं। अल्लाह ने फरमाया ऐ मूसा! आप को आप का सवाल यकीनन दे दिया गया।

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ ۖ إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ

यकीनन हम ने आप पर एक दूसरी मरतबा भी एहसान किया है। जब हम ने आप की माँ की तरफ वही की,

مَا يُوحَىٰ ۖ أَنْ أَقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ

जो अब वही की जा रही है। के तुम मूसा को डाल दो सन्दूक में, फिर उस को समन्दर में

فِي الْيَمِّ ۖ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ

फैंक दो, फिर समन्दर उस को किनारे पर फैंक देगा, उस को मेरा और उस का दुश्मन ले

لِيَّ وَ عَدُوٌّ لَهُ ۖ وَالْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّمَّنِيَّ ۖ وَلِتُصْنَعَ

लेगा। और मैं ने आप पर अपनी तरफ से महबबत डाल दी। और इस लिए ताके आप की परवरिश मेरी हिफाज़त

عَلَىٰ عَيْنِي ۖ إِذْ تَمْشِي أَخْتِكَ فَقُتُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَنْ

में हो। जब आप की बेहेन चल रही थी, और वो केह रही थी, क्या मैं तुम्हें पता बतलाऊँ ऐसे घर वालों का जो

يَكْفُلُهُ ۖ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَىٰ تَقَرَّ عَيْنُهَا

उस की परवरिश करें? फिर हम ने आप को लौटाया आप की माँ की तरफ ताके उन की आँखें ठन्डी हों

وَلَا تَحْزَنَ ۖ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ

और वो ग़मगीन न हों। और आप ने एक शख्स को क़त्ल किया, फिर हम ने आप को नजात दी ग़म से और हम ने

فُتُونًا ۖ فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ۖ ثُمَّ جِئْتَ

आप को कई इम्तिहानों से गुज़ारा। फिर आप मदनन वालों में कई साल रहे। फिर ऐ मूसा!

عَلَىٰ قَدَرٍ يٰمُوسَىٰ ۖ وَأَصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ۖ إِذْ هَبْ

मुकर्ररा वक़्त पर आप आ गए। और मैं ने आप को खास अपने लिए मुन्तखब किया। आप और आप का

أَنْتَ وَأَخُوكَ بِآيَتِي وَلَا تَنِيَا فِي ذِكْرِي ۖ إِذْ هَبَا

भाई मेरे मोअजिज़ात को ले कर जाइए, और मेरी याद में कोताही न कीजिए। तुम दोनों जाओ

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۖ فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيِّنًا لِّعَلَّاهُ

फिरऔन के पास इस लिए के उस ने सरकशी की है। फिर उस से नरम बात कहो, शायद वो

يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ۚ قَالَ رَبَّنَا إِنَّنَا نَخَافُ أَنْ يَفْرُطَ

नसीहत हासिल करे या डरे। वो दोनों केहने लगे ऐ हमारे रब! यकीनन हम डरते है इस से के वो हम पर

عَلَيْنَا أَوْ أَنْ يَطْغَىٰ ۚ قَالَ لَا تَخَافَا إِنِّي مَعَكُمَا

ज्यादती करे या जुल्म करे। अल्लाह ने फरमाया के मत डरो, इस लिए के मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं सुन भी रहा

أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ۚ فَأْتِيهِ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ

हूँ और देख भी रहा हूँ। फिर तुम उस के पास जाओ, फिर उस से कहो के यकीनन हम तेरे रब के भेजे हुए पैग़म्बर हैं,

مَعَنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ وَلَا تَعْدِبْهُمْ ۖ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ

इस लिए तू बनी इस्राईल को हमारे साथ भेज दे और तू उन्हें अज़ाब न दे। यकीनन हम तेरे पास तेरे रब की

مِّنْ رَبِّكَ ۖ وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ۚ إِنَّا قَدْ

तरफ़ से मोअजिज़ा ले कर आए हैं। और सलामती है उस पर जो हिदायत के पीछे चले। यकीनन हमारी तरफ

أَوْحَىٰ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۚ قَالَ

वही की गई है के अज़ाब (नाज़िल होगा) उस पर जो झुठलाए और ऐराज़ करे। फिरऔन ने पूछा

فَمَنْ رَبُّكُمَا يَهُوسُفٰ ۚ قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ

के तुम्हारा कौन रब है ऐ मूसा? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया हमारा रब वो है जिस ने हर चीज़ को उस का

خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ۚ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ۚ

वुजूद अता किया, फिर उस ने रहनुमाई की। फिरऔन ने कहा फिर पेहली कौमों का क्या हाल हुवा?

قَالَ عَلِمَهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ لَا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنْسَىٰ ۚ

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया उस का इल्म मेरे रब के पास है किताब में। मेरा रब न भटकता है और न भूलता है।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَوَسَّلَكَ لَكُمُ فِيهَا

वो अल्लाह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को गेहवारा बनाया और जिस ने ज़मीन में तुम्हारे लिए रास्ते

سُبُلًا وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَخَرَجْنَا بِهِ أَرْوَاجًا

बनाए और जिस ने आसमानों से पानी उतारा। फिर हम ने उस के ज़रिए मुख़तलिफ़

مِّنْ نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ۚ كُلُّوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ۚ إِنَّ فِي

नबातात के जोड़ों को निकाला। के तुम खाओ और अपने चौपाओं को चराओ। यकीनन इस में

۲
۶۰
۱۱

ذٰلِكَ لَاۤیْتِیَ لِاٰوٰی النَّهۡیۡ ۙ مِنْهَا خَلَقْنٰكُمۡ وَفِیْهَا

अकल वालों के लिए निशानियाँ हैं। मिट्टी ही से हम ने तुम्हें पैदा किया है और उसी में

نُعِیْدُكُمۡ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمۡ تَارَةًۭ اٰخَرٰی ۙ

हम तुम्हें दोबारा लौटाएंगे और उसी से हम तुम्हें दूसरी मरतबा निकालेंगे। यकीनन हम ने

وَلَقَدْ اَرٰیۡنٰهُ اٰیٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاٰیۡ ۙ قَالَ

फिरऔन को अपने सारे मोअजिजात दिखलाए, फिर भी उस ने झुठलाया और इन्कार किया। फिरऔन ने कहा

اٰجِئْنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِکَ یٰمُوسٰی ۙ

क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो ताके हमें हमारे मुल्क से निकाल दो अपने जादू के ज़ोर से ऐ मूसा?

فَلَنَاۤتِیَنَّکَ بِسِحْرِ مِّثْلِهٖ فَاَجْعَلْ بَیْنَنَا وَبَیْنَکَ

फिर हम ज़रूर आप के पास उसी जैसा जादू लाएंगे, फिर हमारे और आप के दरमियान एक मुक़ररा वक़्त

مَوْعِدًا ۙ لَا نُخَلِّفُہٗ نَحْنُ وَلَا اَنْتَ مَکٰنًا سُوۡیَ ۙ

तै कीजिए के न हम उस से पीछे रहें और न तुम, (ये मुक़ाबला) एक हमवार मैदान में (होना चाहिए)।

قَالَ مَوْعِدُکُمۡ یَوْمَ الرِّیَیَّةِ ۙ وَاَنْ یُّحْشَرَ النَّاسُ

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम्हारा मुक़ररा वक़्त ईद का दिन है और ये के चाश्त के वक़्त तमाम लोग जमा

ضَحٰی ۙ فَتَوَلّٰی فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ کَیۡدَہٗ ثُمَّ اٰتٰی ۙ

हो जाएं। फिर फिरऔन वापस लौटा, फिर उस ने अपने मक्र व फरेब को जमा किया, फिर वो आया।

قَالَ لَهُمۡ مُّوسٰی وَیٰۤاَیُّکُمۡ لَا تَقْتَرُوْا عَلٰی اللّٰهِ کَذِبًا

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उन से कहा के तुम्हारा नास हो! अल्लाह पर झूठ मत घड़ो वरना वो तुम्हें

فَیُسْجِتْکُمۡ بِعَذَابٍ ؕ وَقَدْ خَابَ مِّنْ اَفْثٰرِیۡ ۙ

अज़ाब के ज़रिए हलाक कर देगा। और यकीनन नाकाम होता है वो शख्स जो झूठ घड़ता है।

فَتَنَازَعُوْا اَمْرَهُمۡ بَیْنَهُمْ وَاَسْرُوْا النَّجْوٰی ۙ

फिर उन्होंने ने अपने मुआमले में आपस में इख़तिलाफ़ किया और चुपके से सरगोशी की।

قَالُوْۤا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰجِرٰنِ یُرِیْدٰنِ اَنْ یُّخْرِجَکُمۡ

उन्होंने ने कहा के बेशक ये दोनों जादूगर हैं, ये चाहते हैं के तुम्हें अपने मुल्क से

مِّنْ اَرْضِکُمۡ بِسِحْرِہِمَا وَیَذْهَبَا بِطَرِیْقَتِکُمۡ

अपने जादू के ज़ोर से निकाल दें और तुम्हारे अच्छे तरीके को खत्म

الْمُثْلَى ۝ فَاجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوا صَفًّا وَقَدْ	कर दें। इस लिए अपनी तदबीर इकट्ठी करो, फिर तुम सफ़ बना कर आओ। और यकीनन
أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَى ۝ قَالُوا يُمُوسَى إِمَّا	कामयाब होगा वही शख़्स जो आज ग़ालिब रहेगा। उन्होंने ने कहा ऐ मूसा! या
أَنْ تُلْقَى وَإِمَّا أَنْ تَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَى ۝ قَالَ	तुम डालो या हम पेहले डालें। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया बल्के तुम
بَلْ الْقَوَاءُ فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيَّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ	डालो! फिर अचानक उन की रस्सियाँ और उन की लाठियाँ उन के सामने उन के जादू के ज़ोर से मुतखय्यल
مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَى ۝ فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ	होने लगीं के वो दौड़ रही हैं। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने जी में
خِيفَةً مُّوسَى ۝ قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى ۝	खौफ़ महसूस किया। हम ने कहा आप न डरिए, यकीनन तुम ही बुलन्द रहोगे।
وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۝ إِنَّمَا	और आप डाल दें उसे जो आप के दाएं हाथ में है, वो निगल लेगा उन चीज़ों को जो वो बना कर लाए हैं। वो
صَنَعُوا كَيْدُ سِحْرٍ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَى ۝	जो बना कर लाए हैं वो सिर्फ़ जादूगर का मक्र है। और जादूगर कामयाब नहीं होता जहाँ वो जाए।
فَأَلْقَى السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ	फिर जादूगर सजदे में गिर गए, वो केहने लगे के हम मूसा और हारून के रब पर ईमान
وَمُوسَى ۝ قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۝ إِنَّهُ	ले आए। फिरऔन ने कहा क्या तुम उस पर ईमान ले आए इस से पेहले के मैं तुम्हें इजाज़त दूँ? यकीनन ये
لَكَيْلُكُمْ الَّذِي عَلَيْكُمْ السَّحَرَةُ فَلَا قُطْعَنَ أَيْدِيكُمْ	मूसा तुम में से बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखलाया है। तो मैं तुम्हारे हाथ और
وَأَرْجُلُكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وُصْلَ بَيْنَكُمْ فِي جُدُوعٍ	पैर जानिबे मुखालिफ़ से काट दूँगा, फिर मैं तुम्हें खजूर के तनों में सूली पर चढ़ाऊँगा। और तुम्हें
النَّحْلِ ۝ وَلَتَعْلَمَنَّ آيُنَا أَسَدًا عَذَابًا وَابَقَى ۝ قَالُوا	मालूम हो जाएगा के कौन ज़्यादा सख़्त अज़ाब वाला है और कौन ज़्यादा बाक़ी रहने वाला है। उन्होंने ने

لَنْ تُؤْشِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي

कहा के हम तुझे हरगिज़ तरजीह नहीं देंगे उन रोशन मोअजिज़ात पर जो हमारे पास आए और उस अल्लाह पर

فَطَرْنَا فَاقْضِ مَا أَنْتَ قَاضٍ ۖ إِنَّمَا تَقْضِي هَذِهِ

जिस ने हमें पैदा किया, इस लिए तू कर ले जो तुझे करना हो। तू तो सिर्फ इस दुन्यवी ज़िन्दगी को

الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۖ إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِنَغْفِرَ لَنَا خَطِيئَاتِنَا

ख़त्म कर सकता है। हम तो ईमान ले आए हैं हमारे रब पर ताके वो हमारी ख़ताएं मुआफ़ कर दे

وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۖ وَاللَّهُ خَيْرٌ

और उस को मुआफ़ कर दे जिस जादू पर तू ने हमें मजबूर किया। और अल्लाह बेहतर है

وَأَبْقَى ۖ إِنَّهُ مِنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ

الْبَاقِي

और बाकी रहने वाला है। यकीनन जो भी अपने रब के पास मुजरिम बन कर आएगा तो यकीनन उस के लिए

جَهَنَّمَ ۖ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ۖ وَمَنْ يَأْتِهِ

जहन्नम है, जिस में न वो मरेगा और न जिएगा। और जो उस के पास मोमिन बन कर

مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ

आएगा, जिस ने आमाले सालिहा भी किए होंगे तो उन के लिए बुलन्द दरजात

الْعُلَىٰ ۖ جَنَّتْ عَدْنٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

होंगी। जन्नाते अद्न होंगी, जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी,

خُلِدِينَ فِيهَا ۖ وَذَٰلِكَ جَزَاؤُا مَنْ تَزَيَّ ۖ

الْبَاقِي

जिन में वो हमेशा रहेंगे। और ये उस शख्स का बदला है जो पाक साफ़ रहा।

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ ۖ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي

यकीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की तरफ वही की के मेरे बन्दों को ले कर रात के वक़्त निकल जाइए,

فَاصْرَبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۖ لَا تَخَفْ

फिर उन के लिए समन्दर में खुश्क रास्ता बनाने के लिए (असा) मारिए, पकड़े जाने

دَرَكًا ۖ وَلَا تَخْشَىٰ ۖ فَاتَّبِعْهُمْ فَرْعَوْنَ بِجُنُودِهِ

का न आप को खौफ़ होगा, न डर। फिर फिरऔन अपना लश्कर ले कर उन के पीछे चला,

فَغَشَّيْهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشَّيْهُمْ ۖ وَأَصَلَ فَرْعَوْنَ

फिर उन को डुबो दिया समन्दर ने जैसा के डुबोया। और फिरऔन ने अपनी कौम को

قَوْمَهُ وَمَا هَدَىٰ ۝ يَبْنَئِ إِسْرَءِيلَ قَدْ أَنْجَيْنَاكُمْ

गुमराह किया और उस ने रास्ता नहीं दिखाया। ऐ बनी इस्राईल! यकीनन हम ने तुम्हें नजात दी

مَنْ عَدُوَّكُمْ وَوَعَدْنَاكُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنِ

तुम्हारे दुश्मन से और हम ने तुम से वादा किया कोहे तूर की दाईं जानिब का,

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَیَ ۝ كُلُوا

और हम ने तुम पर मन्न व सल्वा उतारा। खाओ उन पाकीजा

مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ فَيَحِلَّ

चीजों में से जो हम ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दी हैं और उन में सरकशी मत करो, वरना तुम

عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۚ وَمَنْ يَحِلِّلْ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ

पर मेरा ग़ज़ब उतरेगा। और जिस पर मेरा गुस्सा उतरेगा तो यकीनन वो (जहन्नम में)

هَوَىٰ ۝ وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ

गिर गया। और यकीनन मैं बख्शने वाला हूँ उस शख्स को जिस ने तौबा की, और जो ईमान लाया और जिस ने

صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ۝ وَمَا أَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ

आमाले सालिहा किए, फिर उस ने हिदायत पाई। और आप को अपनी कौम से क्या चीज़ जल्दी लाई,

يُؤَسَّىٰ ۝ قَالَ هُمْ أَوْلَاءُ عَلَىٰ أَثَرِي وَعَجِلْتُ

ऐ मूसा? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया के ये लोग मेरे पीछे हैं और मैं आप के पास जल्दी

إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ ۝ قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ

आया, ऐ मेरे रब! ताके आप राज़ी हो जाएं। अल्लाह ने फरमाया के यकीनन हम ने आप की कौम को आप के

مِنْ بَعْدِكَ وَاضْلَلَّ السَّامِرِيُّ ۝ فَرَجَعَ

बाद बला में मुब्तला किया है और उन को सामिरी ने गुमराह कर दिया है। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) अपनी

مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَقَوْمُ

कौम की तरफ वापस लौटे गुस्सा होते हुए, अफ़सोस करते हुए। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ

أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعَدًّا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ

मेरी कौम! क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था? क्या फिर

عَلَيْكُمْ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدْتُمْ أَنْ يَحِلَّ عَلَيْكُمْ

तुम पर लम्बा ज़माना गुज़र गया या तुम ने इरादा किया के तुम पर अपने रब की

غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُم مَّوْعِدِي ﴿٨٩﴾ قَالُوا

तरफ से ग़ज़ब उतरे, फिर तुम ने मेरे वादे के खिलाफ़ किया? वो बोले

مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلِكِنَا وَلَكِنَّا حُمِلْنَا أَوْثَرًا

हम ने अपने इख्तियार से आप के वादे के खिलाफ़ नहीं किया, लेकिन हम पर बोझ डाल दिया गया था

مِّن زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنَاهَا فَكَذَلِكَ أَلْقَى

कौम के ज़ेवरात का, फिर हम ने वो ज़ेवरात डाल दिए, और इसी तरह सामिरी ने भी

السَّامِرِيُّ ﴿٩٠﴾ فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَهُ خُورٌ

डाले। फिर सामिरी ने उन के लिए एक गाए के बछड़े का जिस्म बना कर निकाला जिस के लिए गाए की आवाज़ थी,

فَقَالُوا هَذَا إِلَهُكُمْ وَإِلَهُ مُوسَىٰ فَنَسِيَ ﴿٩١﴾

तो वो बोले के ये तुम्हारा माबूद है और मूसा का माबूद है, फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) भूल गए हैं।

أَفَلَا يَرَوْنَ إِلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا وَلَا يَمْلِكُ

क्या फिर वो समझते नहीं के वो उन की बात का जवाब भी नहीं दे सकता और न उन के

لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ﴿٩٢﴾ وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ

लिए नफ़ा और ज़रर का मालिक है? और उन से हारून (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया उस से पेहले ऐ

مِّن قَبْلُ يَقُولُ إِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهِ ۖ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَنُ

मेरी कौम! तुम तो सिर्फ़ इस के ज़रिए बला में डाले गए हो। यकीनन तुम्हारा रब रहमान तआला है, तो तुम

فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي ﴿٩٣﴾ قَالُوا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ

मेरे पीछे चलो और मेरे हुक्म की इताअत करो। उन्होंने ने कहा के हम हरगिज़ हटेंगे नहीं, इसी पर जमे

عُكْفَيْنَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ﴿٩٤﴾ قَالَ يَهُدُوثُ

रहेंगे, यहां तक के हमारे पास मूसा (अलैहिस्सलाम) वापस आएंगे। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ हारून! तुझे

مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ۖ إِلَّا تَتَّبِعَنِ ۖ أَفَعَصَيْتَ

क्या मानेअ था जब तू ने उन को देखा के वो गुमराह हो गए हैं, इस से के तू मेरे पीछे आ जाता, क्या तू ने मेरे

أَمْرِي ﴿٩٥﴾ قَالَ يَبْنَؤُمْ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي ۖ

हुक्म के खिलाफ़ किया? हारून (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया के ऐ मेरी माँ के बेटे! मेरी दाढ़ी और मेरे सर के बालों को

إِنِّي خَشِيتُ أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَءِيلَ

मत पकड़िए। यकीनन मैं डरा इस से के आप ये कहो के तू ने बनी इस्राईल के दरमियान जुदाई डाली

وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ﴿٩٧﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يُسَامِرِيُّ ﴿٩٨﴾

और तू ने मेरी बात का लिहाज़ नहीं किया। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने पूछा फिर तेरा क्या हाल है, ऐ सामिरी?

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً

सामिरी ने कहा के मैं ने देखा वो जिस को उन्होंने ने नहीं देखा, तो मैं ने एक मुट्ठी भर ली थी अल्लाह के भेजे हुए

مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَلِكَ سَوَّلَتْ لِي

फरिश्ते के निशाने क़दम की, फिर मैं ने उस को डाल दिया और इसी तरह मेरे नफ़्स ने मुझे ये बात

نَفْسِي ﴿٩٩﴾ قَالَ فَادْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ

समझाई। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के फिर तू जा! यकीनन तेरे लिए दुन्यवी ज़िन्दगी में ये सज़ा है के

أَنْ تَقُولَ لَا مِسَاسَ ۖ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهُ ۚ

तू केहता फिरे के “لَا مِسَاسَ” (मुझे मत छूना!) और यकीनन तेरे लिए वादे का वक़्त मुकर्रर है, जिस के तू

وَأَنْظُرْ إِلَى إِلٰهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۖ

आगे पीछे नहीं हो सकेगा। और देख अपने उस माबूद की तरफ जिस पर तू जमा बैठा था।

لَنَحْرِقَنَّهُ ۖ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿١٠٠﴾ إِنَّمَا إِلٰهُكُم

के हम उसे जला देते हैं, फिर उसे रेज़ा रेज़ा कर के समन्दर में फैंक देते हैं। तुम्हारा माबूद तो वही

اللَّهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿١٠١﴾

अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं। जो हर चीज़ पर इल्म के ऐतेबार से वसीअ है।

كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ

इसी तरह हम आप के सामने बयान करते हैं उन चीज़ों की ख़बरों में से जो गुज़र चुकी हैं। और यकीनन

آتَيْنَكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ۖ مَّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ

हम ने आप को अपने पास से एक नसीहतनामा दिया है। जो भी उस से ऐराज़ करेगा तो यकीनन

يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وِزْرًا ۖ خَلِيدِينَ فِيهِ ۖ وَسَاءَ لَهُمْ

वो क़यामत के दिन बोझ उठाएगा। जिस में वो हमेशा रहेंगे। और उन के लिए क़यामत के दिन

يَوْمَ الْقِيَمَةِ حِمْلًا ۖ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ

वो बहोत बुरा बोझ होगा। जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी और हम मुजरिमों को

الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۖ يَتَخَفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ

उस दिन नीली आँखों वाले होने की हालत में इकट्ठा करेंगे। वो आपस में सरगोशी करेंगे के तुम

لَبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ۝ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ	नहीं ठेहरे मगर दस (दिन)। हम खूब जानते हैं उसे जो वो केह रहे हैं
إِذْ يَقُولُ امْكُثْهُمْ طَرِيقَةً ۚ إِنَّ لَبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ۝	जब के उन में से ज़्यादा बेहतर राए वाला कहेगा के तुम नहीं ठेहरे मगर एक दिन।
وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۝	और ये आप से पूछते हैं पहाड़ों के मुतअल्लिक। आप फरमा दीजिए के मेरा रब उन को रेज़ा रेज़ा कर देगा।
فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝ لَا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا	फिर उन को चटयल मैदान कर छोड़ेगा। जिस में तुम न कजी देखोगे और
وَلَا أَمْتًا ۝ يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ ۚ	न कोई टीला। उस दिन वो एक पुकारने वाले के पीछे चलते होंगे जिस के सामने कोई कजी नहीं होगी।
وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ۝	और आवाज़ें रहमान तआला के सामने पस्त होंगी, फिर तुम नहीं सुन सकोगे सिवाए हल्की आवाज़ के।
يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ	उस दिन सिफ़ारिश नफ़ा नहीं देगी मगर उस को जिस को रहमान तआला इजाज़त दे
وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ	और जिस का बोलना पसन्द करे। वो जानता है उन चीज़ों को जो उन के आगे हैं और जो उन के
وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ۝ وَعَدَّتِ الْوُجُوهُ	पीछे हैं और वो उस का इल्म के एतेबार से इहाता नहीं कर सकते। और तमाम चेहरे ज़िन्दा रेहने वाले,
لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۝	थामने वाले के सामने आजिज़ होंगे। और यकीनन नाकाम हुवा वो जो जुल्म उठा कर लाया।
وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَفُ	और जो आमाले सालिहा करेगा बशर्तेके वो मोमिन हो तो उसे न जुल्म का
ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ۝ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا	अन्देशा होगा, न हक़तलफ़ी का। और इसी तरह हम ने इसे अरबी वाला कुरआन बना कर उतारा है
وَوَصَّيْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ	और उस में हम ने वईद बार बार बयान की है ताके वो मुत्तकी बनें

أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۖ فَتَعْلَىٰ اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ

या ये कुरआन उन में सोच पैदा करो। फिर अल्लाह बरतर है, जो बरहक बादशाह है।

وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُقْضَىٰ إِلَيْكَ

और आप कुरआन में जल्दी न कीजिए आप की तरफ उस की वही ख़त्म होने से पेहले।

وَحُيُّهُ ۚ وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۖ وَلَقَدْ عَهِدْنَا

और यूँ कहिए “رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا” (ऐ मेरे रब! मुझे ज़्यादा इल्म दे!) और यकीनन हम ने इस से पेहले

إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ فَتَسَىٰ وَلَمْ نَجِدْ لَهُ عِزْمًا ۖ

आदम (अलैहिस्सलाम) से अहद लिया था, फिर वो भूल गए और हम ने उन में अज़्म नहीं पाया।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا

और जब हम ने फ़रिशतों से कहा के तुम आदम को सज्दा करो तो उन तमाम ने सज्दा किया मगर

إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ أَبَىٰ ۖ فَقُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هَذَا عَدُوٌّ لَكَ

इबलीस ने। उस ने इन्कार किया। फिर हम ने कहा के ऐ आदम! यकीनन ये तुम्हारा और तुम्हारी

وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكَ مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقَىٰ ۖ

बीवी का दुश्मन है, तो वो कहीं तुम दोनों को जन्नत से न निकाल दे, वरना तुम मशक्कत उठाओगे।

إِنَّ لَكَ أَلًا تَجُوعُ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ۖ وَأَنَّكَ

यकीनन तुम्हारे लिए ये (नेअमत) है के जन्नत में न तुम्हें भूक लगती है और न तुम नंगे होते हो। और ये के

لَا تَطْمَؤُا فِيهَا وَلَا تَضْحَىٰ ۖ فَوَسَّوَسَ إِلَيْهِ

न तुम्हें जन्नत में प्यास लगती है और न धूप लगती है। फिर उन की तरफ़ शैतान ने

الشَّيْطَانُ قَالَ يَا آدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةٍ

वसवसा डाला, इबलीस ने कहा के ऐ आदम! क्या मैं तुम्हें हमेशा रहने का दरख्त बतलाऊँ और

الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلَىٰ ۖ فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ

ऐसी सल्लनत जिसे कभी ज़वाल न आए? फिर उन दोनों ने उस दरख्त से खा लिया, फिर उन के

لَهُمَا سَوَاتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهِمَا

सामने उन के पोशीदा सतर खुल गए और वो दोनों अपने ऊपर जन्नत के पत्ते

مِنْ وَرَقِ الْجَنَّةِ ۖ وَعَصَىٰ آدَمُ رَبَّهُ فَغَوَىٰ ۖ ثُمَّ

चिपकाने लगे। और आदम (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब के हुक्म के खिलाफ़ किया, और ग़लती कर ली। फिर

اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَى ﴿١٣﴾ قَالَ اهْبِطَا

उन के रब ने उन्हें मुत्तख़ब किया, फिर उन की तौबा कबूल की और हिदायत दी। अल्लाह ने फ़रमाया के तुम सब के

مِنْهَا جَمِيعًا ۖ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ فَأَمَّا يَٰٓأَتَيْنَكُمُ

सब यहां से नीचे उतर जाओ, तुम में से एक दूसरे के दुश्मन बन कर रहोगे। फिर अगर तुम्हारे पास

مِّنِّي هُدًى ۖ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَاى فَلَا يَضِلُّ

मेरी तरफ़ से हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत के पीछे चलेगा तो वो न गुमराह होगा

وَلَا يَشْقَى ﴿١٤﴾ وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً

और न बदबख़्त। और जो मेरी नसीहत (कुरआन) से ऐराज़ करेगा तो यकीनन उस के लिए तंग

صَنَكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَعْمَى ﴿١٥﴾ قَالَ رَبِّ

ज़िन्दगी होगी और हम उसे क़यामत के दिन अन्धा उठाएंगे। वो कहेगा के ऐ मेरे रब!

لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا ﴿١٦﴾ قَالَ كَذَلِكَ

तू ने मुझे अन्धा क्यूं उठाया हालांकि मैं बसारा वाला था। अल्लाह फ़रमाएंगे के इसी तरह तेरे पास हमारी

اِتَّكَ اٰیٰتُنَا فَنَسِيْنَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٧﴾

आयतें आई थीं, तो तू ने उन को भुला दिया था। और इसी तरह आज तुझे भुला दिया जाएगा।

وَكَذٰلِكَ نَجْزِي مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِاٰیٰتِ رَبِّهِ ۚ

और इसी तरह हम सज़ा देंगे उस शख्स को जिस ने ज़्यादती की और जो अपने रब की आयतों पर ईमान नहीं लाया।

وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٨﴾ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ

और अल्बल्ला आख़िरत का अज़ाब वो ज़्यादा सख्त है और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला है। क्या फिर उन के लिए हिदायत

كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَيسُرُوْنَ

का बाइस नहीं हुई ये बात के हम ने उन से पेहले कितनी कौमों को हलाक किया जिन के घरों में

فِي مَسْكِنِهِمْ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ۚ

ये चलते हैं? यकीनन उस में निशानियाँ हैं अक्ल वालों के लिए। और अगर एक

وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا

बात जो तेरे रब की तरफ़ से पेहले से हो चुकी है, वो और मुक़रर किया हुवा वक़्त न होता तो अज़ाब

وَاَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ

लाज़िम हो जाता। इस लिए आप सब्र कीजिए उन बातों पर जो वो केहते हैं और अपने रब की हम्द के साथ

يَحْمَدُ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَ قَبْلَ غُرُوبِهَا

तस्बीह कीजिए सूरज के तलूअ होने से पेहले और सूरज के गुरुब होने से पेहले।

وَمِنْ أُنَائِیِ اللَّیْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ

और रात के औकात में भी आप तस्बीह कीजिए और दिन के किनारों में भी ताके आप

تَرْضَى ۝ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ

राज़ी हो जाएं। अपनी निगाह भी आप न उठाएं उन चीज़ों की तरफ जिन के ज़रिए उन की जमाअतों

أَرْوَاجًا مِّنْهُمْ نَرْهَرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ لِنَفْتِنَهُمْ

को हम ने मुतमत्तेअ कर रखा है दुनवी ज़िन्दगी की रौनक से, ताके हम उन्हें आज़माएं

فِيهِ ۖ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝ وَأْمُرْ أَهْلَكَ

उस में। और तेरे रब की रोज़ी बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रेहने वाली है। और अपने घर वालों को हुक्म

بِالصَّلَاةِ وَأَصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا نَحْنُ

दीजिए नमाज़ का और उस पर आप भी पाबन्दी कीजिए। हम आप से रोज़ी नहीं मांगते। हम

نَرْزُقُكَ ۖ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ۝ وَقَالُوا

आप को रोज़ी देते हैं। और अच्छा अन्जाम तक्वा का है। और उन्होंने ने कहा के

لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِّن رَّبِّهِ ۖ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةٌ

उस के रब की तरफ से हमारे पास कोई मोअजिज़ा क्यूं नहीं आता? क्या उन के पास नहीं आए उन में

مَا فِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ۝ وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِعَذَابٍ

से रोशन मोअजिज़ात जो पेहले सहीफों में हैं? और अगर हम उन्हें इस से पेहले अज़ाब से

مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا

हलाक कर दें तो वो केहते के ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ कोई रसूल क्यूं नहीं भेजा

فَنَتَّبِعَ آيَتِكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَذِلَّ وَنَخْزَىٰ ۝

के हम तेरी आयतों का इत्तिबा करते इस से पेहले के हम ज़लील और खुस्वा हों।

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ

आप फ़रमा दीजिए के सब मुन्तज़िर हैं, तो तुम भी मुन्तज़िर रहो। फिर अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा

أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ ۝

के कौन सीधी राह वाले हैं और कौन हिदायतयाफ़ता हैं।

رُوعًا ۷

(۲۱) سُورَةُ الْأَنْبِيَاءِ مَكِّيَّةٌ (۷۳)

آيَاتُهَا ۱۱۲

और ७ रूकूअ हैं

सूरह अम्बिया मक्का में नाज़िल हुई

उस में ११२ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ

इन्सानों के लिए उन के हिसाब का वक़्त करीब आ गया, और वो ग़फ़लत में पड़े ऐराज़ कर रहे हैं।

مَا يَأْتِيهِمْ مِّن ذِّكْرِ مِّن رَّبِّهِمْ مُّحَدَّثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ

उन के पास उन के रब की तरफ़ से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वो उधर कान लगाते हैं

وَهُمْ يَلْعَبُونَ ۚ لَاهِيَةً قُلُوبُهُمْ ۚ وَأَسْرُوا النَّجْوَىٰ

इस हाल में के वो खेल रहे होते हैं। उन के दिल ग़ाफ़िल होते हैं। और वो ज़ालिम चुपके चुपके

الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ هَلْ هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ أَفَتَأْتُونَ

सरगोशी करते हैं के ये नबी नहीं है मगर तुम जैसा एक इन्सान है। क्या फिर तुम जादू के पास

السَّحَرَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ۚ قُلْ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ

जाते हो इस हाल में के तुम आँखों से देख रहे हो? नबी ने कहा के मेरा रब जानता है हर बात

فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

जो आसमान में और ज़मीन में है। और वो सुनने वाला है, जानने वाला है।

بَلْ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ ۚ بَلْ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ

बल्के उन्होंने ने कहा के ये तो परेशान ख़यालात हैं, बल्के ये कुरआन इस नबी ने घड़ लिया है, बल्के वो तो

شَاعِرٌ ۚ فَلْيَأْتِنَا بِآيَةٍ ۚ كَمَا أُرْسِلَ الْأَوَّلُونَ

शाइर है। इस लिए उसे चाहिए के हमारे पास मोअजिज़ा ले आए जैसा पेहले पैग़म्बर मोअजिज़ा दे कर भेजे गए थे।

مَا أَمْنَتْ قَبْلَهُمْ مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا ۚ أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ

उन से पेहले कोई बस्ती ईमान नहीं लाई जिसे हम ने हलाक किया है। क्या फिर ये ईमान लाएंगे?

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوْحِي إِلَيْهِمْ

और हम ने आप से पेहले रसूल नहीं भेजे मगर मर्दों को जिन की तरफ हम वही करते थे,

فَسَأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

इस लिए तुम एहले किताब से पूछो अगर तुम जानते नहीं हो।

وَمَا جَعَلْنَهُمْ جَسَدًا لَا يَأْكُلُونَ الطَّعَامَ

और हम ने उन अमबिया को ऐसा जिस्म नहीं बनाया के वो खाना न खाते हों

وَمَا كَانُوا خُلْدَيْنِ ۝ ثَمَّ صَدَقْنَاهُمُ الْوَعْدَ فَأَنْجَيْنَاهُمْ

और न वो हमेशा रहेने वाले थे। फिर हम ने उन से वादा सच कर दिखाया, फिर हम ने उन को

وَمَنْ نَشَاءُ وَاهْلَكْنَا الْمُسْرِفِينَ ۝ لَقَدْ أَنْزَلْنَا

और जिन को हम ने चाहा नजात दी और ज्यादती करने वालों को हम ने हलाक किया। यकीनन हम ने तुम्हारी

الْيَكْمُ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَكَمْ

तरफ किताब उतारी है, जिस में तुम्हारी नसीहत है। क्या फिर तुम अक्ल नहीं रखते? और कितनी

قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَأَنْشَأْنَا

बस्तियाँ हम ने तबाह कीं जो ज़ालिम थीं और हम ने उन के बाद

بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۝ فَلَمَّا أَحْسَوْا بِأَسْنَا

दूसरी कौमों को पैदा किया। फिर जब उन्होंने ने हमारा अज़ाब महसूस किया

إِذَا هُمْ مِنْهَا يَرْكُضُونَ ۝ لَا تَرْكُضُوا وَارْجِعُوا إِلَى

तो फौरन वहाँ से वो भागने लगे। (तो हम ने कहा के) भागो मत, बल्के वापस जाओ उधर जिस में

مَا أُتْرِفْتُمْ فِيهِ وَمَسْكِنُكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْأَلُونَ ۝ قَالُوا

तुम ऐश कर रहे थे और अपने मकानात में, शायद तुम्हारी पूछ हो। वो केहने लगे

يُؤْيِلْنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ فَمَا زَالَتْ تِلْكَ

हाए हमारी कमबख्ती! यकीनन हम ही कुसूरवार थे। फिर यही उन की

دَعْوَاهُمْ حَتَّى جَعَلْنَهُمْ حَصِيدًا خِمْدِينَ ۝

पुकार रही यहां तक के हम ने उन को कटा हुवा, बुझा हुवा बना दिया। और हम ने

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لِعِبَادِنَا ۝

आसमान और ज़मीन और उन चीज़ों को जो उन के दरमियान में हैं खेल करते हुए पैदा नहीं किया।

لَوْ أَرَدْنَا أَنْ نَتَّخِذَ لَهُمْ لَهَوًا لَوَلَّيْنَا عَنْهُمُ الْغَايَةَ ۝

अगर हम चाहते के दिल बेहलाने के लिए कुछ बनाएं तो हमारे पास की चीज़ों (मलाइका, हूर) में से बनाते (न मसीह

إِنْ كُنَّا فَعَلِينَ ۝ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى

व मरयम को), अगर हमें ऐसा करना होता। बल्के हम हक़ को बातिल पर दे

الْبَاطِلُ فَيَذْمُغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۖ وَلَكُمْ الْوَيْلُ

मारते हैं, फिर हक़ बातिल का सर कुचल देता है, फिर वो फौरन मिट जाता है। और तुम पर अफ़सोस है

مِمَّا تَصِفُونَ ۝ وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ

उन बातों से जो तुम बयान करते हो। और अल्लाह ही का है वो सब जो आसमान व ज़मीन में है।

وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ

और वो फरिश्ते जो उस के पास हैं, वो अल्लाह की इबादत से तकबुर नहीं करते

وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ۝ يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ

और न वो थकते हैं। वो तस्बीह करते रहते हैं रात और दिन,

لَا يَفْتُرُونَ ۝ أَمْ اتَّخَذُوا إِلَهًا مِّنَ الْأَرْضِ

सुस्ती नहीं करते। क्या उन्होंने ने माबूद बना लिए हैं ज़मीन से

هُمْ يُنْشِرُونَ ۝ لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ

जो मुर्दा ज़िन्दा कर सकते हैं? अगर ज़मीन व आसमान में कई माबूद होते अल्लाह के सिवा

لَفَسَدَتَا ۖ فَسُبْحَنَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ

तो ज़मीन व आसमान ज़रूर तबाह हो जाते। फिर पाक है अल्लाह, जो अर्श का रब है, उन बातों से जो वो

عَمَّا يَصِفُونَ ۝ لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ۝

केह रहे हैं। उस से सवाल नहीं किया जा सकता उन बातों के मुतअल्लिक जो वो करता है, बल्के उन से सवाल

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ ۚ

किया जाएगा। क्या उन्होंने ने अल्लाह के अलावा माबूद बना लिए हैं? आप फरमा दीजिए के तुम दलील लाओ।

هَذَا ذِكْرٌ مِّنْ مَّعِيَ وَذِكْرٌ مِّنْ قَبْلِي ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ

ये उन की किताब है जो मेरे साथ हैं और ये उन की किताब है जो मुझ से पेहले थे। बल्के उन में से अक्सर

لَا يَعْلَمُونَ ۖ الْحَقُّ فَهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا

हक़ को जानते नहीं, फिर वो उस से ऐराज़ कर रहे हैं। और हम ने

مِّنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ

आप से पेहले कोई रसूल नहीं भेजा मगर हम उस की तरफ वही करते थे इस बात की के मेरे सिवा कोई

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ

माबूद नहीं, तो तुम मेरी ही इबादत करो। और उन्होंने ने कहा के रहमान तआला ने औलाद

وَلَدًا سُبْحَنَهُ ۖ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿۲۱﴾ لَا يَسْبِقُونَهُ	बनाई है, अल्लाह इस से पाक है। बल्के वो मुअज़्ज़ ज़ बन्दे हैं। वो किसी बात में अल्लाह से सबक़त
بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ ﴿۲۲﴾ يَعْلَمُ	नहीं कर सकते, बल्के वो अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ काम करते हैं। अल्लाह जानता है जो
مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ ۚ	उन के आगे और पीछे है और वो सिफ़ारिश नहीं करते मगर
إِلَّا لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يَرْضَىٰ وَهُمْ مِنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ﴿۲۳﴾ وَمَنْ	उस की जो अल्लाह का पसन्दीदा हो और वो अल्लाह के खौफ से सेहमे रहेते हैं। और जो भी
يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَهُ مِنْ دُونِهِ فَذَلِكَ نَجْزِيهِ	उन में से ये कहेगा के मैं माबूद हूँ अल्लाह के सिवा तो उस को हम जहन्नम की
جَهَنَّمَ ۖ كَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿۲۴﴾ أَوَلَمْ يَرِ	सज़ा देंगे। इसी तरह ज़ालिमों को हम सज़ा देते हैं। क्या काफ़िरों
الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا	ने देखा नहीं के आसमान और ज़मीन दोनों
رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ	मिले हुए थे, फिर हम ने उन दोनों को अलग किया। और हम ने पानी से हर ज़िन्दा चीज़ को
حَيٍّ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿۲۵﴾ وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ	बनाया। क्या फिर ये ईमान नहीं लाते? और हम ने ज़मीन में पहाड़ रख दिए
أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ ۖ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا	के कहीं वो उन को ले कर न हिले। और हम ने ज़मीन में कुशादा रास्ते बना दिए
لَعَالَهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿۲۶﴾ وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَفْفًا	ताके वो राह पाएं। और हम ने आसमान को महफूज़
مَحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿۲۷﴾	छत बनाया। और वो आसमान की निशानियों से ऐराज़ कर रहे हैं।
وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ	और वही अल्लाह है जिस ने रात और दिन पैदा किए और सूरज और चाँद पैदा किए।

كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿۳۳﴾ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ

सब के सब आसमान में तैर रहे हैं। और हम ने किसी इन्सान के लिए आप से

مِّن قَبْلِكَ الْخُلْدَ أَفَإِنْ مِتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ﴿۳۴﴾

पेहले हमेशा रेहना नहीं बनाया। क्या फिर अगर आप मर जाओगे तो ये हमेशा रेहने वाले हैं?

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۖ وَنَبْلُوكُم بِالشَّرِّ

हर जानदार मौत का मज़ा चखने वाला है। और बुराई और भलाई के ज़रिए

وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿۳۵﴾

हम तुम्हारी आजमाइश व इमतिहान लेते हैं। और हमारी ही तरफ तुम लौटाए जाओगे।

وَإِذَا رَأَوْا الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا

और जब काफिर लोग आप को देखते हैं तो आप ही को मज़ाक बना लेते हैं। के क्या ये वो आदमी

أَهَذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ ۖ وَهُمْ يَذْكُرُ الرَّحْمَنَ

है जो तुम्हारे माबूदों का तज़क़िरा करता रेहता है? और वो खुद रहमान तआला की याद के

هُمْ كَفَرُونَ ﴿۳۶﴾ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَجَلٍ ۖ سَأَوْرِكُكُمْ

मुन्क़िर हैं। इन्सान जल्दबाज़ी की ख़सलत के साथ पैदा किया गया है। अनक़रीब मैं तुम्हें अपनी

أَيَّتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونَ ﴿۳۷﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا

आयतें दिखलाऊँगा। फिर तुम मुझ से जल्दी का मुतालबा मत करो। और ये केहते हैं के ये

الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿۳۸﴾ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ

वादा कब है अगर तुम सच्चे हो? काश ये काफ़िर जानते

كَفَرُوا حِينَ لَا يَكْفُونُ عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ

उस वक़्त को जब वो अपने चेहरों से आग रोक नहीं सकेंगे

وَلَا عَنْ ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ﴿۳۹﴾ بَلْ تَأْتِيهِمْ

और न अपनी पीठों से और उन की नुसरत नहीं की जाएगी। बल्के वो उन के पास अचानक आ जाएगी,

بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ

फिर वो उन को मबहूत कर देगी, फिर वो उस को लौटाने की ताक़त नहीं रख सकेंगे और न

يُنْظَرُونَ ﴿۴۰﴾ وَلَقَدْ اسْتَهْزَىٰ بِرُسُلٍ مِّن

उन्हें मुहलत दी जाएगी। यकीनन आप से पेहले पैग़म्बरों के साथ इस्तिहज़ा

قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا	
किया गया, फिर उन में से इस्तिहज़ा करने वालों को उसी अज़ाब ने घेर लिया जिस का	
بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿۳۱﴾ قُلْ مَنْ يَكْلُؤُكُمْ بِاللَّيْلِ	۱۷۵
वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे। आप फ़रमा दीजिए के कौन तुम्हारी हिफाज़त करता है रात में	
وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَنِ ۖ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ	
और दिन में रहमान तआला से। बल्के वो अपने रब की याद से	
مُعْرِضُونَ ﴿۳۲﴾ أَمْ لَهُمُ الْهَيْئَةُ تَمْنَعُهُمْ مِنَ دُونِنَا ۖ	
मुंह मोड़ते हैं। क्या उन के लिए माबूद हैं हमारे अलावा जो उन को हम से बचा सकेंगे? वो तो खुद अपने	
لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِنَّا يُصْحَبُونَ ﴿۳۳﴾	
आप की मदद करने की ताक़त नहीं रखते और उन को हम से बचाने वाला साथी मुयस्सर नहीं आ सकता।	
بَلْ مَتَّعْنَا هَؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۖ	
बल्के हम ने उन्हें और उन के बाप दादा को मुतमत्तेअ किया यहां तक के उन की उमरें तवील हो गईं।	
أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۖ	
क्या फिर वो देखते नहीं के हम ज़मीन को उस के अतराफ से कम करते हुए आ रहे हैं?	
أَفَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿۳۴﴾ قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۚ	
क्या फिर ये ग़ालिब हो सकते हैं? आप फ़रमा दीजिए के मैं तो सिर्फ़ तुम्हें वही के ज़रिए डराता हूँ।	
وَلَا يَسْمَعُ الصَّمُّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ﴿۳۵﴾	
और बेहरे पुकार नहीं सुनते जब उन्हें डराया जाए।	
وَلَئِنْ مَسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ	
और अगर तेरे रब के अज़ाब का कोई झौंका उन को छू ले तो ज़रूर कहेंगे	
يَوْمَلْنَا ۖ إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿۳۶﴾ وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ	
के हाए हमारी खराबी! यकीनन हम ही कुसूरवार थे। और मीज़ाने अद्ल (इन्साफ के	
الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَمَةِ ۖ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ۖ	
तराजू) हम काइम करेंगे क़यामत के दिन, फिर किसी शख्स पर ज़रा भी जुल्म नहीं किया जाएगा।	
وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ۖ وَكَفَىٰ	
और अगर राई के दाने के बराबर भी कोई अमल होगा तो हम उसे ले आएंगे। और हम	

بَنَّا حُسَيْنَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ

हिसाब लेने वाले काफी हैं। यकीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) और हारून (अलैहिस्सलाम) को दी हक और बातिल के दरमियान

وَضِيَاءٌ وَذِكْرًا لِلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ

फेसला करने वाली किताब और रोशनी वाली किताब और नसीहत दिलाने वाली किताब उन मुत्तकियों के लिए।

رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ۝

जो अपने रब से बेदेखे डरते हैं और वो कयामत से भी डरते हैं।

وَهَذَا ذِكْرٌ مُبَارَكٌ أَنْزَلْنَاهُ ۖ أَفَأَنْتُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ۝

और ये मुबारक तज़क़िरा है जो हम ने उतारा है। क्या फिर तुम उस का इन्कार करते हो?

وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهِ

यकीनन हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को उन की हिदायत दी इस से पेहले और हम उन को खूब जानने

عَالِمِينَ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَ قَوْمِهِ مَا هَذِهِ التَّمَاثِيلُ

वाले थे। जब के उन्होंने ने अपने अब्बा और अपनी कौम से फरमाया के ये क्या मूरतियाँ हैं

الَّتِي أَنْتُمْ لَهَا عَاشِقُونَ ۝ قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا

जिन पर तुम जमे हुए हो? उन्होंने ने कहा के हम ने अपने बाप दादा को उन की

لَهَا عِبَادِينَ ۝ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ

इबादत करते हुए पाया। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यकीनन तुम और तुम्हारे बाप दादा

فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ قَالُوا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ

भी गुमराही में थे। उन्होंने ने कहा क्या तुम हमारे पास हक लाए हो

أَمْ أَنْتَ مِنَ اللَّاعِبِينَ ۝ قَالَ بَلْ رَبُّكُمْ رَبُّ

या तुम दिल्लगी कर रहे हो? इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया बल्के तुम्हारा रब आसमानों

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي فَطَرَهُنَّ ۖ وَأَنَا

और ज़मीन का रब है, वो जिस ने उन को पैदा किया। और मैं उस

عَلَىٰ ذِكْرِكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَتَاللَّهِ لَأَكِيدَنَّ

पर गवाहों में से हूँ। और अल्लाह की कसम! ज़रूर मैं

أَصْنَامَكُمْ بَعْدَ أَنْ تُوَلُّوا مُدْبِرِينَ ۝ فَجَعَلَهُم

तुम्हारे बूतों के लिए तदबीर करूंगा इस के बाद के तुम वापस चले जाओगे। फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

جُذَذًا إِلَّا كَبِيرًا لَهُمْ لَعَلَّهُمْ إِلَيْهِ يَرْجِعُونَ ﴿۵۸﴾

ने उन को टुकड़े टुकड़े कर दिया, मगर उन में से बड़े को, शायद वो उस की तरफ रूजूअ करें।

قَالُوا مَنْ فَعَلَ هَذَا بِالْهَيْتَانِ إِنَّهُ لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿۵۹﴾

उन्होंने ने कहा जिस ने ये हरकत की हमारे माबूदों के साथ यकीनन वो ज़ालिमों में से है।

قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ ﴿۶۰﴾ قَالُوا

उन्होंने ने कहा के हम ने सुना है के एक नौजवान उन की बातें करता है जिसे इब्राहीम कहा जाता है। उन्होंने ने कहा

فَاتُّوا بِهِ عَلَىٰ أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ ﴿۶۱﴾

के उसे लोगों के सामने लाओ ताके सब लोग गवाह रहें।

قَالُوا ءَأَنْتَ فَعَلْتَ هَذَا بِالْهَيْتَانِ يَا إِبْرَاهِيمُ ﴿۶۲﴾

उन्होंने ने कहा के तू ने ये हरकत की है हमारे माबूदों के साथ, ऐ इब्राहीम?

قَالَ بَلْ فَعَلَهُ ۚ كَبِيرُهُمْ هَذَا فَسْأَلُوهُمْ إِنْ كَانُوا

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया बल्के उन के इस बड़े ने ये हरकत की है, तो तुम उन से पूछो अगर ये

يَنْطِقُونَ ﴿۶۳﴾ فَرَجَعُوا إِلَىٰ أَنْفُسِهِمْ فَقَالُوا إِنَّكُمْ

बोलते हों। फिर वो खुद अपने दिल में केहने लगे के यकीनन तुम

أَنْتُمْ الظَّالِمُونَ ﴿۶۴﴾ ثُمَّ نَكَسُوا عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ ۚ لَقَدْ

खुद ही कुसूरवार हो। फिर उन्होंने ने अपने सर झुका लिए के यकीनन

عَلِمْتَ مَا هَؤُلَاءِ يَنْطِقُونَ ﴿۶۵﴾ قَالَ أَفَتَعْبُدُونَ

तुम्हें मालूम है के ये तो बोल नहीं सकते। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के क्या तुम इबादत करते

مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا وَلَا يَضُرُّكُمْ ﴿۶۶﴾

हो अल्लाह के अलावा ऐसी चीजों की जो तुम्हें न कुछ नफा दे सकती हैं और न ज़रर पहुँचा सकती हैं?

أَفِ لَكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ

अफ़सोस है तुम पर भी और उन माबूदों पर भी जिन की तुम अल्लाह के अलावा इबादत करते हो।

أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿۶۷﴾ قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ

क्या फिर तुम्हें अक्ल नहीं? उन्होंने ने कहा के तुम इब्राहीम को जला दो और अपने माबूदों की मदद करो

إِنْ كُنْتُمْ فَعِلِينَ ﴿۶۸﴾ قُلْنَا يَنَارُ كُونِي بَرْدًا

अगर तुम्हें करना है। हम ने कहा के ऐ आग! तू इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के

وَّ سَلَمًا عَلٰی اِبْرٰهِيْمَ ﴿۱۹﴾ وَ اَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا

के लिए ठंडी और सलामती वाली बन जा। और उन्होंने ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के साथ मक़ का इरादा किया

فَجَعَلْنٰهُمْ الْاٰخِسْرِيْنَ ﴿۲۰﴾ وَ نَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا

तो हम ने उन्हें खसारा उठाने वाले बना दिया। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को और लूत (अलैहिस्सलाम) को नजात दी

اِلَى الْاَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۱﴾ وَوَهَبْنَا

उस ज़मीन की तरफ जिस में हम ने जहान वालों के लिए बरकतें रखी हैं। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

لَهٗ اِسْحٰقَ ۖ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۚ وَكُلًّا جَعَلْنَا

को इसहाक़ अता किए और मज़ीद याकूब भी। और सब को हम ने नेक

صٰلِحِيْنَ ﴿۲۲﴾ وَجَعَلْنٰهُمْ اٰيَةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا

बनाया। और हम ने उन्हें पेशवा बनाया, वो हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे

وَاَوْحَيْنَا اِلَيْهِمْ فَعَلَ الْخَيْرَاتِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ

और हम ने उन की तरफ वही की नेकी के काम के करने की और नमाज़ काइम करने की

وَآتَيْنَا الزَّكٰوةَ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿۲۳﴾ وَلُوْطًا

और ज़कात देने की। और वो सब हमारी इबादत करने वाले थे। और लूत (अलैहिस्सलाम) को

اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي

हम ने नुबूवत और इल्म दिया और हम ने उन्हें नजात दी उस बस्ती से जो

كَانَتْ تَعْمَلُ الْخَبِيْثَ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ

गन्दे काम करती थी। यकीनन वो बुरी नाफरमान कौम

فٰسِقِيْنَ ﴿۲۴﴾ وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ۚ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۲۵﴾

थी। और हम ने लूत (अलैहिस्सलाम) को अपनी रहमत में दाखिल किया। यकीनन वो नेक लोगों में से थे।

وَ نُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ

और नूह (अलैहिस्सलाम) का (किस्सा सुनिए) जब के उन्होंने ने पुकारा इस से पहले, फिर हम ने उन की दुआ क़बूल की, फिर हम ने

وَ اَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۶﴾ وَنَصَرْنٰهُ

उन्हें और उन के मानने वालों को उस बड़ी मुसीबत से नजात दी। और हम ने उन की

مِّنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِآيٰتِنَا ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا

नुसरत की उस कौम के खिलाफ जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया। यकीनन वो

قَوْمَ سَوَءٍ فَاعْرِقْنَاهُمْ اَجْمَعِينَ ﴿۴۵﴾ وَدَاوُدَ وَسَلَمَانَ

बुरी कौम थी, फिर हम ने उन सब को ग़र्क कर दिया। और दावूद और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) को (याद कीजिए) जब के

اِذْ يَحْكُمْنَ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَسَتْ فِيْهِ غَمٌّ

वो दोनों फैसला कर रहे थे खेती के बारे में जब के उस में एक कौम की बकरियाँ (भेड़) रात को

الْقَوْمِ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِينَ ﴿۴۶﴾ فَفَهَّمْنَاهَا

चर गई। और हम उन का फैसला देख रहे थे। फिर हम ने उस फैसले की सुलैमान (अलैहिस्सलाम)

سُلَيْمٰنَ ؑ وَكُلًّا اَتَيْنَا حُكْمًا وَّ عِلْمًا ۚ وَسَخَّرْنَا

को समझ दी। और हम ने सब को नुबूवत और इल्म दिया। और हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम) के साथ

مَعَ دَاوُدَ الْجَبَالِ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرُ وَكُنَّا فَاعِلِينَ ﴿۴۷﴾

पहाड़ों और परिन्दों को ताबेअ किया था जो तस्बीह पढ़ते थे। और हम ही करने वाले थे।

وَعَلَّمْنَاهُ صَنْعَةَ لَبُؤْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ

और हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम) को ज़िरह बनाना सिखाया तुम्हारे लिए ताके वो तुम्हारी लड़ाई से तुम्हारी

مِّنْ بَّاسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُونَ ﴿۴۸﴾ وَسَلَمٰنَ

हिफाज़त करो। क्या फिर तुम शुक्र अदा करते हो? और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए

الرَّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِىۡ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِى

तेज़ हवा को ताबेअ किया जो चलती थी उन के हुक्म से उस ज़मीन की तरफ जिस में

بُرَكْنَا فِيْهَا ۚ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمِينَ ﴿۴۹﴾

हम ने बरकतें रखी हैं। और हम हर चीज़ जानते हैं।

وَمِنَ الشَّيْطٰنِ مَن يَّغْوٰصُونَ لَهُ وَيَعْمَلُونَ عَمَلًا

और शयातीन में से वो भी थे जो सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए गोता लगाते थे और उस के अलावा दूसरे

دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿۵۰﴾ وَاَيُّوبَ

काम भी करते थे। और हम ही उन को संभाल रहे थे। और अय्यूब (अलैहिस्सलाम) को जब के उन्होंने ने

اِذْ نَادٰى رَبَّهُۥ اِنِّىۡ مَسْنٰى الضُّرِّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ

अपने रब को पुकारा के मुझे तकलीफ़ पहेँची है और तू रहम करने वालों में सब से ज़्यादा रहम

الرَّحِيْمِ ﴿۵۱﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ

करने वाला है। फिर हम ने उन की दुआ कबूल की और हम ने दूर कर दी वो तकलीफ जो उन्हें

صُرِّ وَآتَيْنَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً

थी और हम ने उन्हें दे दी उन की औलाद और उन के साथ उन के मानिन्द और भी दिए रहमत के तौर पर

مِّنْ عِندِنَا وَذِكْرَىٰ لِلْعَبِيدِينَ ﴿٨٣﴾ وَإِسْعٰٓئِيلَ

हमारी तरफ़ से और यादगार इबादत करने वालों के लिए। और

وَإِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ ۖ كُلٌّ مِّنَ الصّٰٓبِرِينَ ﴿٨٤﴾

और इदरीस और जुल किफल (अलैहिमुस्सलाम) को। ये तमाम सब्र करने वालों में से थे।

وَ أَدْخَلْنَاهُمْ فِي رَحْمَتِنَا ۖ إِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰٓلِحِينَ ﴿٨٥﴾

और हम ने उन्हें अपनी रहमत में दाखिल किया। यकीनन वो सुलहा में से थे।

وَذَا التَّوْنِ إِذْ دَهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَن

और मछली वाले पैग़म्बर (यूनुस अलैहिस्सलाम) को जब के वो गुस्सा हो कर चले गए, तो उन्होंने ने समझा के

لَّن نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادَىٰ فِي الظُّلُمَاتِ أَن لَّا إِلَهَ

हम उन पर गिरिफ्त हरगिज़ नहीं करेंगे, फिर उन्होंने ने दुआ की तारीकियों में के कोई माबूद नहीं

إِلَّا أَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِينَ ﴿٨٦﴾

मगर तू ही, तू पाक है। यकीनन मैं कुसूरवारों में से हूँ।

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ ۖ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ ۖ وَكَذٰلِكَ

तो हम ने उन की दुआ कबूल की और हम ने उन्हें ग़म से नजात दी। और इसी तरह हम

نُجِّي الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٧﴾ وَزَكَرِيَّا إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ

ईमान वालों को नजात देते हैं। और ज़करीया (अलैहिस्सलाम) को जब के उन्होंने ने अपने रब को पुकारा

رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ ﴿٨٨﴾

ऐ मेरे रब! तू मुझे तन्हा मत छोड़ और तू बेहतरीन वारिस है।

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ ۖ وَوَهَبْنَا لَهُ يَحْيَىٰ وَاصْلَحْنَا

तो हम ने उन की दुआ कबूल की। और हम ने उन्हें यहया अता किए और हम ने उन के लिए उन की बीवी को

لَهُ زَوْجَةً ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا يُسْرِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ

अच्छा कर दिया। यकीनन वो सबक़त करते थे नेकियों में

وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا ۖ وَكَانُوا لَنَا خٰشِعِينَ ﴿٨٩﴾

और हमें शौक और डर से पुकारते थे। और वो हम से डरने वाले थे।

وَالَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهَا مِنْ رُوحِنَا

और उस मरयम को जिस ने अपनी शर्मगाह की हिफाज़त की, तो हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी

وَجَعَلْنَاهَا وَابْنَهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ﴿٩١﴾ إِنَّ هَذِهِ

और हम ने उन्हें और उन के बेटे को जहान वालों के लिए मोअजिज़ा बनाया। यकीनन ये

أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ﴿٩٢﴾

तुम्हारी उम्मत एक उम्मत है। और मैं तुम्हारा माबूद हूँ, तो तुम मेरी इबादत करो।

وَنَقْطَعُوْا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ۖ كُلُّ إِلَيْنَا رَاجِعُونَ ﴿٩٣﴾

और उन के मुआमले में आपस में वो मुख्तलिफ़ गिरोह हो गए। सब को हमारी तरफ़ लौट कर आना है।

فَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ

फिर जो आमाले सालिहा करेगा बशर्तेके वो मोमिन हो तो उस की कोशिश की नाक़दरी

لِسَعْيِهِ ۖ وَإِنَّا لَهُ كَاتِبُونَ ﴿٩٤﴾ وَحَرَّمْ عَلَى قَرْبَةٍ

नहीं की जाएगी। यकीनन हम उस को लिख रहे हैं। और जिस बस्ती (वालों) को भी हम ने हलाक किया

أَهْلَكْنَاهَا أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٩٥﴾ حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ

नामुमकिन है के वो लौट कर हमारे पास न आए। यहां तक के जब याजूज और

يَأْجُوجُ وَمَاجُوجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ ﴿٩٦﴾

माजूज खोल दिए जाएंगे और वो हर ढलवान जगह से तेज़ी से सरक रहे होंगे।

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَإِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ

और सच्चा वादा करीब आ जाएगा, तो एक दम उन की निगाहें फटी रह

أَبْصَارُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ يَوِيلَنَا قَدْ كُنَّا

जाएंगी जिन्हों ने कुफ़ किया। (वो कहेंगे) हाए हमारी कमबख्ती! यकीनन हम

فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا بَلْ كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٩٧﴾ إِنَّكُمْ

ग़फ़लत में पड़े रहे इस से, बल्के हम मुजरिम थे। यकीनन तुम

وَمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۚ أَنْتُمْ لَهَا

और वो जिन की तुम अल्लाह के अलावा इबादत करते हो सब जहन्नम का ईंधन हैं। तुम उस जहन्नम में

وَرَدُونَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هَؤُلَاءِ إِلَهًا مَّا وَرَدُوهَا

दाखिल होने वाले हो। अगर वो माबूद होते तो उस जहन्नम में दाखिल न होते।

وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَهُمْ

और सब के सब उस में हमेशा रहेंगे। उन का उस में चिल्ला कर रोना होगा और इतना के उस में

فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا

कोई आवाज़ भी सुन नहीं पाएंगे। यकीनन वो जिन के लिए हमारी तरफ से अच्छा फैसला पेहले

الْحُسْنَىٰ ۖ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُونَ

हो चुका है, तो ये जहन्नम से दूर रखे जाएंगे। वो जहन्नम की आहट भी नहीं सुन

حَسِيْسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿١٠٢﴾

सकेंगे। और वो उन नेअमतों में जो उन के जी चाहेंगे हमेशा रहेंगे।

لَا يَحْزَنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ

उन को बड़ी घबराहट गमगीन नहीं करेगी और फरिशते उन का

الْمَلَائِكَةُ ۖ هَٰذَا يَوْمُكُمْ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٠٣﴾

इस्तिक़बाल करेंगे। (ये केहते हुए) के ये वो दिन है जिस का तुम्हें वादा किया जा रहा था।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۗ

जिस दिन हम आसमान को लपेटेंगे लिखे हुए काग़ज़ात दफ़तर में लपेटने की तरह। जैसा के हम ने पेहली

كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ ۖ وَعَدًا عَلَيْنَا ۗ إِنَّا كُنَّا

दफ़ा मखलूक पैदा की तो हम दोबारा उस को पैदा करेंगे। ये हम पर वादे के तौर पर लाज़िम है। यकीनन हम

فَعِلِينَ ﴿١٠٤﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنۢ بَعْدِ الذِّكْرِ

ऐसा करने वाले हैं। यकीनन हम ने ज़बूर में ज़िक्र के बाद ये बात लिख दी है

أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ

के ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे। यकीनन

فِي هَٰذَا لَبَلَاغٌ لِّقَوْمٍ غِيْبِينَ ﴿١٠٦﴾ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ

इस में इबादतगुज़ार कौम का मतलब पूरा पूरा है। और आप को जो हम ने भेजा तो तमाम

إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِإِلَٰهِ

जहानों के लिए रहमत बना कर ही भेजा है। आप फ़रमा दीजिए मेरी तरफ तो यही वही आती है के

إِلَهُكُمْ إِلَهُ وَاحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾

तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, क्या अब तुम मानते हो?

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلَىٰ سَوَآءٍ ۖ

फिर अगर वो पैराज़ करें तो आप फरमा दीजिए के मैं ने तो तुम्हें पूरी खबर दे दी।

وَإِنْ اٰدِرْبِیْٓ اَقْرَبُۢ اَمْ بَعِیْدُۢ مَا تُوعَدُوْنَ ۚ اِنَّهٗ

और मैं नहीं जानता के वो करीब है या दूर है जिस का तुम से वादा किया जा रहा है। यकीनन वो

یَعْلَمُ الْجَهَرَ مِنَ الْقَوْلِ وَیَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ۚ

अल्लाह बातों में से जोर से कही हुई बात भी जानता है और जानता है जो तुम छुपाते हो।

وَإِنْ اٰدِرْبِیْٓ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَ مَتَاعٌ

और मैं नहीं जानता, शायद ये तुम्हारे लिए आजमाइश हो और एक वक़्त तक नफा

اِلٰی حَیْنٍ ۚ قُلْ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ ۚ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ

पहोँचाना हो। पैग़म्बर ने कहा के ऐ मेरे रब! तू हक के साथ फैसला कर दे। और हमारे रब रहमान तआला

الْمُسْتَعٰنُ عَلٰی مَا تَصِفُوْنَ ۚ

ही से मदद चाहते हैं उन बातों पर जो तुम बयान करते हो।

رُكُوْعَاهَا ۱۰

سُوْرَةُ الْحَجِّ مَكِّيَّةٌ (۱۱۳)

آيَاتُهَا ۷۸

और १० रूकूअ हैं

सूरह हज मदीना में नाज़िल हुई

उस में ७८ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمۡ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ

ऐ इन्सानो! तुम अपने रब से डरो। यकीनन क़यामत का ज़लज़ला

شَیْءٌ عَظِیْمٌ ۝ یَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ

बड़ी भारी चीज़ है। जिस दिन तुम उस को देखोगे तो हर दूध पिलाने वाली औरत

عَمَّا اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا

अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और हर हमल वाली गिरा देगी अपने हमल को

وَتَرٰی النَّاسَ سُكَرٰی وَمَا هُمْ بِسُكَرٰی

और तू इन्सानों को नशे में देखेगा हालांकि वो नशे में नहीं होंगे

وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِیْدٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یُّجَادِلُ

लेकिन अल्लाह का अज़ाब ही सख्त होगा। और कुछ लोग वो हैं जो जाने

فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطَانٍ مَّرِيدٍ ۝

बगैर अल्लाह के बारे में झगड़ा करते हैं और हर सरकश शैतान के पीछे चलते हैं।

كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَنْ تَوَلَّاهُ فَأَتَهُ يُضِلُّهُ

जिस की निसबत ये लिख दिया गया है के जो उस से दोस्ती रखेगा तो वो उसे गुमराह कर देगा

وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ۝ يَأْتِيهَا النَّاسُ

और जहन्नम के अज़ाब की तरफ उस की रहनुमाई करेगा। ऐ इन्सानो!

إِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَاكُمْ

अगर तुम शक में हो दोबारा ज़िन्दा किए जाने की तरफ से, तो यकीनन हम ने तुम्हें पेहले पैदा किया

مِّن ثَرَابٍ ثُمَّ مِّن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِّن عَلَقَةٍ ثُمَّ

मिट्टी से, फिर नुत्फे से, फिर जमे हुए खून से, फिर गोश्त के लोथड़े

مِّن مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۝

से जिस में सूरत बनाई जाती है और (कभी) सूरत नहीं बनाई जाती, ताके हम तुम्हारे लिए बयान करें।

وَنُقَرِّ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى

और हम बच्चादानी में ठेहराते हैं जो हम चाहते हैं वक्ते मुकर्ररा तक,

ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِّتَبْلُغُوا أَشَدَّكُمْ ۝

फिर हम तुम्हें बच्चा बना कर निकालते हैं ताके तुम अपनी जवानी को पहोंचो।

وَمِنْكُمْ مَّن يُّتَوَفَّىٰ وَ مِنْكُمْ مَّن يُرَدُّ

और तुम में से बाज़ की रूह कब्ज़ कर ली जाती है और तुम में से बाज़ लौटाए जाते हैं

إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِن بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا ۝

निकम्मी उम्र की तरफ ताके वो बहोत कुछ जानने के बाद कुछ भी न जानें।

وَتَرَى الْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا

और तू ज़मीन को खुश्क देखता है, फिर जब हम उस के ऊपर पानी बरसाते

الْمَاءِ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأَنْبَتَتْ مِن كُلِّ زَوْجٍ

हैं तो हिलने और उभरने लगती है और हर खुशनुमा जोड़े को

بِهَيْجَةٍ ۝ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُ يُحْيِي

उगाती है। ये इस वजह से के अल्लाह हक है और वही मुर्दों को

اَلْمَوْتِ وَآتَتْهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَاَنَّ السَّاعَةَ	जिन्दा करेगा और वो हर चीज़ पर कादिर है। और ये के क़यामत
اَتِيَتْ لَا رَيْبَ فِيهَا ۝ وَاَنَّ اللَّهَ يَبْعَثُ مَنْ	आने वाली है उस में कोई शक ही नहीं, और ये के अल्लाह जिन्दा कर के उठाएगा उन को भी
فِي الْقُبُورِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ	जो क़ब्रों में हैं। और लोगों में से वो है जो झगड़ा करता है अल्लाह के बारे में
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ ۝ ثَانِي	जाने बग़ैर और हिदायत और रोशन किताब के बग़ैर। अपना पेहलू
عَظِفَهُ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۝ لَهُ فِي الدُّنْيَا	मोड़ कर ताके अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे। और उस के लिए दुन्यवी ज़िन्दगी में
خِزْيٌ ۝ وَنُذِيقُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝	रुस्वाई है और हम उसे क़यामत के दिन आग का अज़ाब चखाएंगे।
ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتَ يَدَكَ ۝ وَاَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ	(कहा जाएगा के) ये उस का बदला है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा और ये के अल्लाह बन्दों पर ज़रा भी
لِّلْعَبِيدِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللَّهَ	जुल्म नहीं करता। और इत्सानों में से वो शख्स भी है जो अल्लाह की इबादत करता है
عَلَىٰ حَرْفٍ ۝ فَإِنْ أَصَابَهُ خَيْرٌ اطْمَأَنَّ بِهِ ۝	किनारे पर। फिर अगर उसे भलाई पहुँचे तो उस से मुतमइन हो जाता है।
وَإِنْ أَصَابَتْهُ فِتْنَةٌ اِنْقَلَبَ عَلَىٰ وَجْهِهِ ۝ خَسِرَ الدُّنْيَا	और अगर उसे आजमाइश पहुँचे तो मुंह फेर कर पलट जाता है। दुन्या और आख़िरत में
وَالْآخِرَةِ ۝ ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۝ يَدْعُوا	उस ने खसारा उठाया। यही सरीह घाटा है। वो अल्लाह
مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُ وَمَا لَا يَنْفَعُهُ ۝ ذَلِكَ	के सिवा पुकारता है ऐसी चीज़ को जो उसे न ज़रूर पहुँचा सकती है और न नफ़ा दे सकती है। यही
هُوَ الضَّلَلُ الْبَعِيدُ ۝ يَدْعُوا لَمَنَ ضُرُّهُ أَقْرَبُ	है परले दरजे की गुमराही। वो पुकारता है उस को जिस का ज़रूर उस के नफे से ज़्यादा

مِنْ نَفْعِهِ ط لَيْسَ الْمَوْلَى وَلَيْسَ الْعَشِيرُ ﴿۱۳﴾	करीब है। अलबत्ता बहोत बुरा दोस्त है और बहोत बुरा साथी है।
إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ	यकीनन अल्लाह ईमान वालों को और जो नेक काम करते रहे उन्हें जन्नतों में दाखिल करेगा
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ	जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी। यकीनन अल्लाह करता है
مَا يُرِيدُ ﴿۱۴﴾ مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَنْ يَنْصُرَهُ اللَّهُ	वही जिस का वो इरादा करता है। जो ये समझता है के अल्लाह इस नबी की हरगिज़ नुसरत नहीं करेगा
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ	दुनिया और आखिरत में तो उसे चाहिए के एक रस्ती लम्बी कर ले आसमान तक,
ثُمَّ لِيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُدْهَبَنَّ كَيْدُهُ مَا يَغِيظُ ﴿۱۵﴾	फिर उसे काट दे, फिर देखे के क्या उस की ये तदबीर उस को खत्म कर देती है जो उसे गुस्सा दिलाती है?
وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي	और इसी तरह हम ने कुरआन को रोशन आयतें बना कर उतारा, और ये के अल्लाह हिदायत देता है
مَنْ يُرِيدُ ﴿۱۶﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا	उसी को जिसे वो चाहता है। यकीनन वो लोग जो ईमान लाए और जो यहूदी
وَالصَّبِيَّانَ وَالنَّصَارَى وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۖ	और साबी और नसारा और आतिशपरस्त हैं और जो मुशरिक हैं।
إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ إِنَّ اللَّهَ	यकीनन अल्लाह उन के दरमियान कयामत के दिन फैसला करेगा। यकीनन अल्लाह
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿۱۷﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ	हर चीज़ को देख रहा है। क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह को सजदा करते हैं वो
لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ	जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं और सूरज
وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ	और चाँद और सितारे और पहाड़ और दरख्त और जानवर भी

وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ ۖ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۚ

और बहोत से इन्सान भी। और बहोत सों पर अज़ाब साबित हो चुका है।

وَمَن يُّهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّكْرِمٍ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ

और जिसे अल्लाह ख़ुस्वा कर दे तो उसे कोई इज़्ज़त दे नहीं सकता। यकीनन अल्लाह करता है

مَا يَشَاءُ ۚ ۞ هَذِهِ خَصْمَتَانِ اِخْتَصِمَا فِي رَبِّهِمَا ۚ

वही जो वो चाहता है। ये दो मुद्दई हैं जिन्हों ने अपने रब के बारे में झगड़ा किया।

فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِعَتْ لَهُمْ رِيشَابٌ مِّن نَّارٍ ۖ

फिर जो काफिर हैं उन के लिए आग के कपड़े काटे जाएंगे।

يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ۚ ۞ يُصْهِرُ

उन के सरो के ऊपर से गर्म पानी डाला जाएगा। जिस से गल

بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ۚ ۞ وَلَهُمْ مَقَامِعُ

जाएगा जो उन के पेट में है और खालें भी। और उन के लिए लोहे के

مِّن حَدِيدٍ ۚ ۞ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا

गुर्ज तय्यार हैं। जब वो जहन्नम से ग़म के मारे निकलने का इरादा

مِّنْ غَمٍّ أَعِيدُوا فِيهَا ۚ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۚ ۞

करेंगे तो उन्हें दोबारा उस में लौटा दिया जाएगा। और कहा जाएगा के आग का अज़ाब चखो।

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

यकीनन अल्लाह दाखिल करेगा उन को जो ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे

جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا

ऐसी जन्नतों में जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, उन में उन्हें

مِّنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا

सौने के कंगन पेहनाए जाएंगे और मोती पेहनाए जाएंगे। और उन का लिबास उन में

حَرِيرٌ ۚ ۞ وَهَدُوءًا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهَدُوءًا

रेशम का होगा। और उन्हें हिदायत दी गई है कलिमात में से सब से उम्दा कलिमे की (ला इलाहा इल्लल्लाह की)।

إِلَى صِرَاطِ الْحَسِيدِ ۚ ۞ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا

और उन्हें हिदायत दी गई है क़बिले तारीफ़ अल्लाह के रास्ते की। यकीनन जो काफिर हैं

وَّ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْحَسْبُ الْحَرَامِ और अल्लाह के रास्ते से और उस मस्जिदे हराम से रोकते हैं
الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً ۖ الْعَاكِفُ فِيهِ जो हम ने तमाम लोगों के लिए बनाई है के बराबर है उस में वहां का रहेने वाला
وَالْبَادِ ۖ وَمَنْ يُّرِدْ فِيهِ بِالْحَادِ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ और बाहर से आने वाला। और जो उस में शरारत से बेदीनी का इरादा करेगा तो हम उसे
مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۚ وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ दर्दनाक अज़ाब चखाएंगे। और जब हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को तय्यार कर के दी
الْبَيْتِ أَنْ لَا تُشْرِكَ بِي شَيْئًا وَطَهَّرَ بَيْتِي बैतुल्लाह की जगह के मेरे साथ किसी चीज़ को तुम शरीक न ठेहराओ और मेरे घर को पाक करो
لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ۝ तवाफ करने वालों और कयाम और रूकूअ और सजदा करने वालों के लिए।
وَإِذْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا और आप ऐलान कर दीजिए इन्सानों में हज का तो वो आप के पास आएंगे पैदल
وَعَلَى كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ۚ और हर दुबली ऊँटनी पर (सवार हो कर) आएंगे जो दूर दराज़ इलाकों से आ रही होंगी।
لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ ताके वो अपने मनाफेअ के लिए हाज़िर हो जाएं और अल्लाह का नाम लें
فِي أَيَّامٍ مَّعْلُومَةٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيمَةٍ मखसूस दिनों में उन चौपाओं पर जो अल्लाह ने उन्हें रोज़ी के तौर पर
الرَّعَايَةِ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِعُوا الْبَاسَ الْفَقِيرَ ۝ दिए हैं। तो तुम उस से खाओ और मोहताज फकीर को खिलाओ।
ثُمَّ لِيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلِيُوفُوا نُدُورَهُمْ وَلِيَطَّوَّفُوا फिर उन्हें चाहिए के अपना मैल कुचैल दूर करें और अपनी नज़रें पूरी करें और पुराने
بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۚ ذَٰلِكَ ۖ وَمَنْ يُعْظَمْ حُرْمَتِ घर का वो तवाफ करें। ये हुक्म तो है। और जो अल्लाह की इज्ज़त दी हुई चीज़ों की

اللَّهُ فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَ أُحِلَّتْ لَكُمْ	
ताज़ीम करेगा तो ये उस के लिए बेहतर है उस के रब के नज़दीक। और तुम्हारे लिए चौपाए	
الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ	
हलाल किए गए हैं मगर वो जो तुम पर तिलावत किए जाते हैं, इस लिए तुम बुतों की	
مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ۚ حُنَفَاءَ	
गन्दगी से बचो और झूठ बोलने से बचो। एक अल्लाह के	
لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ	
हो कर रहो, उस के साथ शरीक न करने वाले बनो। और जो अल्लाह के साथ शरीक ठेहराएगा	
فَكَانَ خَرًّا مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُ الطَّيْرُ	
तो गोया वो आसमान से गिरा, फिर उसे परिन्दे उचक ले जाते हैं	
أَوْ تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ۚ ذَٰلِكَ	
या तूफानी हवा किसी दूर जगह में उसे फैंक रही है। ये हुक्म तो है।	
وَمَنْ يُعْظَمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ ۚ	
और जो अल्लाह की तरफ से मिले अफ़आले हज की ताज़ीम करेगा तो यकीनन ये दिलों के तक़वे से है।	
لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَا	
तुम्हारे लिए उन चौपाओं में एक वक़्ते मुक़र्ररा तक नफ़ा उठाना है, फिर उन के ज़बह की जगह	
إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۚ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا	٢٨
पुराने घर के पास है। और हर उम्मत के लिए हम ने कुरबानी का एक तरीक़ा बनाया है	॥
لِيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةٍ	
ताके वो अल्लाह का नाम लें उन चौपाओं पर जो अल्लाह ने उन्हें खाने के	
الْأَنْعَامِ ۖ فَالَهُكُمْ إِلَهُ وَاحِدٌ فَلَهُ أَسْلِمُوْا	
लिए दिए। फिर तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, तो तुम उसी के फरमांबरदार बनो।	
وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ ۚ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ	
और आप बशारत सुना दीजिए उन आजिज़ी करने वालों को, के जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है	
وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ مَا أَصَابَهُمْ	
तो उन के दिल डर जाते हैं और मसाइब पर सब्र करने वालों को	

وَالْمُقِيمِي الصَّلَاةِ ۚ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿۲۵﴾

और नमाज़ काइम करने वालों को। और उन चीज़ों में से जो हम ने उन्हें रोज़ी के तौर पर दी वो खर्च करते हैं।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ

और हदी के जानवरों को हम ने तुम्हारे लिए अल्लाह के शआइर में से बनाया है तुम्हारे लिए

فِيهَا خَيْرٌ ۚ فَأَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا صَوَافٍ ۚ

उन में भलाई है। फिर तुम उन पर अल्लाह का नाम लो उन को खड़ा कर के।

فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعُمُوا

फिर जब उन के पेहलू ज़मीन पर गिर पड़ें तो तुम उन में से खाओ और तुम न मांगने वालों

الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۚ كَذَلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ

और मांगने वालों को खिलाओ। इसी तरह हम ने मुसख़र किया है उन जानवरों को तुम्हारे लिए

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿۲۶﴾ لَن يَنَالَ اللَّهُ لُحُومُهَا

ताके तुम शुक्र अदा करो। अल्लाह को न उन का गोश्त हरगिज़ पहुँचता है

وَلَا دِمَآؤُهَا وَ لَكِن يَنَالُهُ التَّقْوَىٰ مِنْكُمْ ۚ

न खून, लेकिन अल्लाह को तुम्हारा तक्वा पहुँचता है।

كَذَلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتَكْبِرُوا اللَّهَ عَلَىٰ

इसी तरह हम ने उन जानवरों पर तुम्हें काबू दिया ताके तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो इस पर के अल्लाह

مَا هَدَاكُمْ ۚ وَبَشِّرِ الْحَسِنِينَ ﴿۲۷﴾ إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ

ने तुम्हें हिदायत दी। और बशारत सुना दीजिए नेकी करने वालों को। यकीनन अल्लाह ईमान वालों की

عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ

तरफ से मुदाफअत करता है। यकीनन अल्लाह हर ख़यानत करने वाले नाशुकरे से महबबत

كَفُورٍ ۚ اِذْ لِلَّذِينَ يُقَتَّلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلُمُوا ۚ

नहीं करता। उन लोगों के लिए जिन से क़िताल किया जाता है उन को इजाज़त दी गई है इस वजह से के वो मज़लूम

وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ۚ اِلَّذِينَ

हैं। और ये के यकीनन अल्लाह उन की नुसरत पर कुदरत रखने वाला है। उन लोगों की

اُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّا اَنْ يَقُولُوا

जिन्हें अपने घरों से नाहक निकाल दिया गया सिर्फ़ इस लिए के उन्होंने ने कहा

رَبَّنَا اللَّهُ ۖ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ

के हमारा रब अल्लाह है। और अगर अल्लाह का इन्सानों को उन में से एक को दूसरे के ज़रिए दफ़ करना न होता

بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيعُ وَصَلَوْتُ

तो अल्लबत्ता मुन्हदिम कर दी जाती राहिबों की खलवतगाहें और नसारा की इबादतगाहें और यहूदियों की

وَّ مَسْجِدُ يُذْكَرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۖ

इबादतगाहें और वो मस्जिदें जिन में अल्लाह का नाम बहोत ज़्यादा लिया जाता है।

وَ لَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ

और ज़रूर अल्लाह उस की नुसरत करेगा जो अल्लाह की नुसरत करेगा। यकीनन अल्लाह कूव्वत वाला,

عَزِيزٌ ۝ الَّذِينَ إِنْ مَكَّنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ

इज्ज़त वाला है। वो लोग ऐसे हैं के अगर हम उन्हें ज़मीन में हुकूमत दें

أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَآمَرُوا

तो वो नमाज़ काइम करें और ज़कात दें और अम्र

بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَاللَّهُ عَاقِبَةُ

बिल मास्फ और नही अनिल मुन्कर करें। और अल्लाह के इखतियार में तमाम उमूर

الْأُمُورِ ۝ وَإِنْ يَكْذِبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ

का अन्जाम है। और अगर वो आप को झुठलाएं तो यकीनन उन से

قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَشُعُودٌ ۝ وَقَوْمُ

पेहले कौमे नूह और कौमे आद और कौमे समूद और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

إِبْرَاهِيمَ وَ قَوْمُ لُوطٍ ۝ وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ ۚ وَكَذَّبَ

की कौम और कौमे लूत और मदयन वाले भी झुठला चुके हैं। और मूसा (अलैहिस्सलाम)

مُوسَى فَأَمَلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۚ

की तकज़ीब की गई, फिर मैं ने काफिरों को मुहलत दी, फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया।

فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۝ فَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ

फिर मेरी पकड़ कैसी रही? फिर बहोत सी बस्तियाँ हैं

أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى

जिन को हम ने हलाक किया इस हाल में के वो ज़ालिम थीं, फिर अब वो अपनी छतों पर

عُرُوشَهَا ۚ وَبِئْرٍ مَّعْطَلَةٍ وَقَصْرِ مَشِيدٍ ﴿٥٥﴾ और बेकार पड़े कुवें पर और ऊंचे पक्के महल पर गिरी पड़ी हैं।
أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونُ لَهُمْ قُلُوبٌ क्या फिर वो ज़मीन में चले फिरे नहीं के उन के पास दिल होते
يَعْقِلُونَ بِهَا ۖ أَوْ إِذَا نَسَمِعُونَ بِهَا ۖ فَآتَاهَا जिन से वो समझते या कान होते जिन से वो सुनते? इस लिए के
لَا تَعْيَى الْأَبْصَارُ وَلَكِنْ تَعْيَى الْقُلُوبُ الَّتِي आँखें अन्धी नहीं हुवा करतीं, लेकिन वो दिल अन्धे हो जाया करते हैं जो
فِي الصُّدُورِ ۖ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ सीनों में हैं। और ये आप से अज़ाब जल्दी तलब कर रहे हैं
وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ ۖ وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ और अल्लाह अपने वादे के खिलाफ हरगिज़ नहीं करेगा। और यकीनन एक दिन तेरे रब
رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ﴿٥٦﴾ وَكَأَيِّنْ के यहाँ का तुम्हारी गिन्ती के ऐतेबार से एक हज़ार साल के बराबर है। और कितनी
مِّنْ قَرْيَةٍ أَمَلَتْ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ बस्तियाँ हैं जिन को मैं ने मुहलत दी और वो ज़ालिम थीं, फिर
أَخَذْتُهَا ۖ وَإِلَى الْبَصِيرِ ﴿٥٧﴾ قُلْ يَٰأَيُّهَا मैं ने उन को पकड़ लिया। और मेरी तरफ लौटना है। और फ़रमा दीजिए ऐ
النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٨﴾ فَالَّذِينَ लोगो! मैं तो सिर्फ तुम्हारे लिए साफ साफ डराने वाला हूँ। फिर जो
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए मग़फिरत है और इज़्ज़त वाली
كَرِيمٌ ﴿٥٩﴾ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ रोज़ी है। और जो हमारी आयतों के बारे में कोशिश करेंगे मुक़ाबला करने की
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٦٠﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ तो ये दोज़खी हैं। और हम ने आप से पेहले

قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَنَّى أَلْقَى	कोई रसूल और नबी नहीं भेजे मगर जब उन्होंने ने किराअत की तो शैतान ने
الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ ۚ فَيَنْسُخُ اللَّهُ مَا يُلْقَى	उन की किराअत में (खलल) डाला। फिर अल्लाह मन्सूख कर देता है शैतान के डाले
الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكُمُ اللَّهُ أَيْتَهُ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ	हुए को और अल्लाह अपनी आयतों को मुहकम रखता है। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत
حَكِيمٌ ۝ لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقَى الشَّيْطَانُ فِتْنَةً	वाले हैं। ताके अल्लाह शैतान के डाले हुए को आजमाइश बनाएं
لِّلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ ۖ	उन के लिए जिन के दिलों में बीमारी है और उन के लिए जिन के दिल सख्त हैं।
وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۖ وَلِيَعْلَمَ	और यकीनन ये ज़ालिम अलबत्ता लम्बी मुखालफत में हैं। और ताके
الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ	वो लोग जिन को इल्म दिया गया वो जान लें के ये हक है आप के रब की तरफ से,
فِيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ قُلُوبُهُمْ ۖ وَإِنَّ اللَّهَ	फिर वो उस पर ईमान लाएं, फिर उन के दिल उस के सामने झुक जाएं। और यकीनन अल्लाह
لَهُدَى الَّذِينَ آمَنُوا إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝	ज़रूर सीधी राह की हिदायत देगा उन लोगों को जो ईमान लाए।
وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مَرِيَةٍ مِّنْهُ	और काफिर तो उस की तरफ से हमेशा शक ही में रहेंगे
حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ	यहां तक के क़यामत अचानक आ जाए या उन के पास मनहूस
يَوْمٍ عَقِيمٍ ۝ أَلَمْ يَكُنْ يَوْمَئِذٍ بِاللهِ ۖ يَحْكُمُ	दिन का अज़ाब आ जाए। सल्लतनत उस दिन अल्लाह के लिए ही होगी। अल्लाह उन के दरमियान
بَيْنَهُمْ ۖ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي	फेसला करेगा। फिर जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे वो

جَذَّتِ النَّعِيمُ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا जन्नाते नईम में होंगे। और जो काफिर हैं, जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया
فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥٨﴾ وَالَّذِينَ उन के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब होगा। और जिन्होंने ने
هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قَتِلُوا أَوْ مَاتُوا हिजरत की अल्लाह के रास्ते में, फिर वो क़त्ल किए गए या अपनी मौत मर गए
لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ तो ज़रूर अल्लाह उन्हें अच्छी रोज़ी देगा। और यकीनन अल्लाह बेहतरीन
خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٥٩﴾ لِيَدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُ ۖ रोज़ी देने वाला है। अल्लाह ज़रूर उन्हें दाखिल करेगा ऐसी जगह में जिस को वो पसन्द करेंगे।
وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿٦٠﴾ ذَلِكَ ۚ وَمَنْ और यकीनन अल्लाह इल्म वाले, हिल्म वाले हैं। ये तो हुवा। और जो
عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ बदला ले उसी क़दर जो उसे सताया गया था, फिर उस पर ज़्यादती की गई तो अल्लाह
لَيَنْصُرَنَّهُ اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُؤٌ غَفُورٌ ﴿٦١﴾ ذَلِكَ ज़रूर उस की नुसरत करेगा। यकीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा मुआफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। ये इस वजह
بِأَنَّ اللَّهَ يُوَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوَلِّجُ النَّهَارَ से के अल्लाह रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में
فِي اللَّيْلِ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٦٢﴾ ذَلِكَ بِأَنَّ दाखिल करता है और ये के अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। ये इस वजह से के
اللَّهُ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ هُوَ अल्लाह ही हक़ है और ये के अल्लाह के सिवा जिस को ये काफिर पुकारते हैं वो
الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٦٣﴾ बातिल है और ये के अल्लाह वो बरतर है, बड़ा है।
أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَتُصْبِحُ क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा? फिर ज़मीन

الْأَرْضُ مُخَضَّرَةٌ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۚ لَهُ सरसब्ज हो गई। यकीनन अल्लाह महरबान है, बाखबर है। उस की मिल्क हैं	مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ वो तमाम चीजें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और ये के अल्लाह
الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمُ बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ़ है। क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह ने तुम्हारे ताबेअ कर दी	مَا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۖ वो चीजें जो ज़मीन में हैं और कशती जो चलती है समन्दर में अल्लाह के हुक्म से?
وَ يُنْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ और अल्लाह आसमान को थामे हुए है इस से के वो ज़मीन पर गिर जाए	إِلَّا بِإِذْنِهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝ मगर अल्लाह के हुक्म से (एक दिन गिर जाएगा)। यकीनन अल्लाह इन्सानों पर बहोत ज़्यादा शफीक़ है, महरबान है।
وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۖ और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें ज़िन्दा किया। फिर वो तुम्हें मौत देगा, फिर तुम्हें दोबारा ज़िन्दा करेगा।	إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ۝ لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا यकीनन इन्सान अलबत्ता नाशुकरा है। हर उम्मत के लिए हम ने एक इबादत का तरीक़ा मुक़र्रर किया है
مَنْسَكًا ۚ هُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا يُنَازِعُكَ فِي الْأَمْرِ जिस के मुताबिक़ वो इबादत करते हैं, इस लिए ये आप से झगड़ा न करें इस मुआमले में	وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۖ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُّسْتَقِيمٍ ۝ और अपने रब की तरफ़ बुलाते रहिए। यकीनन आप ज़रूर हिदायत और सीधे रास्ते पर हैं।
وَإِنْ جَدَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ और अगर ये आप से बहस करें तो आप केह दीजिए के अल्लाह तुम्हारे आमाल ख़ूब जानता है।	اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ अल्लाह तुम्हारे दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा जिस में तुम इख़तिलाफ़
تَخْتَلِفُونَ ۝ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي कर रहे हो। क्या तुझे मालूम नहीं के अल्लाह जानता है वो चीजें जो	

السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۖ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ ۖ आसमान और ज़मीन में हैं? बेशक ये सब कुछ लौहे महफूज़ में है।
إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ وَ يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ यकीनन ये अल्लाह पर आसान है। और ये अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं
اللَّهُ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُمْ ऐसी चीज़ की जिस पर अल्लाह ने कोई हुज्जत नहीं उतारी और उन के पास इस की कोई
بِهِ عِلْمٌ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ تَصِيرٍ ۝ وَإِذَا تُثْلَىٰ दलील भी नहीं। और उन ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं होगा। और जब उन पर हमारी साफ साफ
عَلَيْهِمْ أَيْتَانَا بَيِّنَتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ आयतें तिलावत की जाती हैं तो आप काफिरों के चेहरों में
كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ۖ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ इन्कार देख सकोगे। करीब है के ये हमला कर दें उन पर जो
يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۖ قُلْ أَفَأَنْتُمْ بِشِرِّ उन पर हमारी आयतें तिलावत करते हैं। आप फ़रमा दीजिए क्या मैं तुम्हें इस से बुरी
مِّنْ ذَلِكُمْ النَّارُ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ चीज़ की खबर दूँ? वो दोज़ख है, जिस का अल्लाह ने काफिरों से वादा किया है।
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ يَأَيُّهَا النَّاسُ ضَرْبٌ مِّثْلُ और वो बुरी जगह है। ऐ इन्सानो! एक मिसाल बयान की गई है,
فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۖ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ तुम उस को ग़ौर से सुनो। यकीनन वो जिन को तुम अल्लाह के अलावा पुकारते
اللَّهُ لَنْ يَخْلُقُوا دُبَابًا وَلَوْ اجْتَمَعُوا لَهُ ۖ हो वो एक मक्खी भी हरगिज़ पैदा नहीं कर सकते अगर वो सब उस के लिए इकट्ठे हो जाएं।
وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَنْقِذُوهُ और अगर उन से मक्खी कोई चीज़ छीन कर ले जाए तो मक्खी से वो चीज़ ये छुड़ा
مِنْهُ ۖ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ۖ مَا قَدَرُوا नहीं सकते। तालिब भी कमज़ोर और मतलूब भी। अल्लाह की उन्हीं ने क़दर

اللَّهُ حَقٌّ قَدَرُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿۴۶﴾

नहीं की जैसा के अल्लाह की क़दर का हक़ है। यकीनन अल्लाह कूब्त वाला, इज़्ज़त वाला है। अल्लाह

يُضْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ ۖ

मुन्तख़ब करता है फ़रिशतों में से और इन्सानों में से पैग़ाम पहुँचाने वाले।

إِنَّ اللَّهَ سَبِيعٌ ۖ بَصِيرٌ ﴿۴۷﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ

यकीनन अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। अल्लाह जानता है वो चीज़ें जो उन के आगे

وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿۴۸﴾

और उन के पीछे हैं। और अल्लाह ही की तरफ़ तमाम उमूर लौटाए जाएंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا وَعِبُدُوا

ऐ ईमान वाले! रूकूअ करो और सज्दा करो और इबादत करो

رَبَّكُمْ ۖ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿۴۹﴾ وَجَاهِدُوا

अपने रब की और नेकी के काम करो ताके तुम फलाह पाओ। और मुजाहदा करो

فِي اللَّهِ حَقٌّ جِهَادُهُ ۖ هُوَ اجْتَبَاكُمْ وَمَا جَعَلَ

अल्लाह के रास्ते में जैसा उस में मेहनत का हक़ है। उस ने तुम्हें मुन्तख़ब किया और उस ने

عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرْجٍ ۖ مَلَّةَ أَبِيكُمْ

दीन में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी। तुम अपने बाप इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत का

إِبْرَاهِيمَ ۖ هُوَ سَمَّكُمُ الْمُسْلِمِينَ ۚ مِنْ قَبْلُ

इत्तिबा करो। उसी अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है इस से पेहले

وَفِي هَذَا لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ

और इस कुरआन में भी ताके रसूल तुम पर गवाह रहें

وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ ۚ فَأَقِيمُوا

और तुम गवाह रहो लोगों पर। और नमाज़ काइम

الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا بِاللَّهِ هُوَ

करो और ज़कात दो और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थामे रहो। वो

مَوْلَاكُمْ ۖ فَنِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿۵۰﴾

तुम्हारा मालिक है। फिर वो कितना अच्छा मालिक है, और कितना अच्छा मददगार है।

السُّجْدَةُ عِنْدَ الْجَمَاعَةِ الشَّافِعِيَّةِ وَالْمَالِكِيَّةِ وَالْحَنَابِلَةِ

۱۷

رُؤُوعَاتُهَا ۶

(۲۳) سُورَةُ الْمُؤْمِنُونَ مَكِّيَّةٌ (۷۲)

آيَاتُهَا ۱۱۸

और ६ सूकूअ हैं

सूरह मोमिनून मक्का में नाज़िल हुई

उस में ११८ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ

यकीनन कामयाब हैं वो जो ईमान लाए। जो अपनी नमाज़ में खुशूअ करने

خَشِعُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ

वाले हैं। और जो लगविष्यात से ऐराज़ करने वाले हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ

और जो ज़कात देने वाले हैं। और जो अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने

حَافِظُونَ ۝ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ

वाले हैं। मगर अपनी बीवियों के साथ या अपनी बाँदियों के साथ

فَرَأَتْهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۝ فَمِنْ ابْتِغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ

इस लिए के उन पर (उन में) कुछ मलामत नहीं। फिर जो उस के अलावा तलाश करेगा

فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ

तो यकीनन वो ज्यादती करने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने अहद की देख भाल करने

رَاعُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَوَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۝

वाले हैं। और जो अपनी नमाज़ की पाबन्दी करते हैं।

أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ۝ الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ ۝

यही लोग वारिस हैं। वो लोग जो वारिस होंगे जन्नतुल फिरदौस के।

هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ

वो उस में हमेशा रहेंगे। यकीनन हम ने इन्सान को पैदा किया

مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ طِينٍ ۝ ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ

मिट्टी के खुलासे से। फिर हम ने उस को नुत्फा बना कर रखा एक महफूज़

مَكِينٍ ۝ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا

जगह में। फिर हम ने नुत्फे को जमा हुवा खून बनाया, फिर हम ने जमे हुए

الْعَلَقَةَ مَضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمَضْغَةَ عِظًا فَكَسَوْنَا الْعِظَ

खून को गोشت का टुकड़ा बनाया, फिर गोشت के टुकड़े से हम ने हड्डियाँ पैदा कीं, फिर हम ने हड्डियों के ऊपर

لَحْمًا ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ فَتَبَرَّكَ اللَّهُ أَحْسَنُ

गोشت चढ़ाया। फिर हम ने उस को एक दूसरी शकल में बनाया। फिर अल्लाह कितना अच्छा पैदा करने वाला,

الْخَلْقَيْنِ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَمَيِّتُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ

बाबरकत है। फिर तुम उस के बाद ज़रूर मरने वाले हो। फिर यकीनन तुम

يَوْمَ الْقِيَمَةِ تُبْعَثُونَ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ

क़यामत के दिन ज़िन्दा कर के उठाए जाओगे। यकीनन हम ने तुम्हारे ऊपर सात आसमान पैदा किए।

وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ۝ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً

और हम मख़लूक से ग़ाफ़िल नहीं। और हम ने आसमान से पानी एक मिक़दार से

بِقَدَرٍ فَأَسْكَنْتُهُ فِي الْأَرْضِ ۝ وَإِنَّا عَلَى ذَهَابٍ بِهِ

उतारा, फिर हम ने उसे ज़मीन में ठेहराया। और यकीनन हम उस के ले जाने पर भी

لَقَدِرُونَ ۝ فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّتٍ مِّنْ تَخِيلٍ

कादिर हैं। फिर हम ने तुम्हारे लिए उस पानी के ज़रिए खजूर और अंगूर के बागात

وَاعْنَابٍ لَّكُمْ فِيهَا فَوَاكِهِ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝

उगाए। तुम्हारे लिए उन में बहोत सारे मेवे हैं और उन में से तुम खाते भी हो।

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالذَّهْنِ وَصَبْغٍ

और उस दरख़्त को (भी पैदा किया) जो तूरे सीना से खाने वालों के लिए तेल और सालन ले कर

لِّلْأَكْلَيْنِ ۝ وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۝ نُسْقِيكُمْ

उगता है। और यकीनन तुम्हारे लिए चौपाओं में इबरत है, के हम तुम्हें पिलाते हैं

مِمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا

उस चीज़ से जो उन के पेटों में हैं और तुम्हारे लिए उन में और दूसरे बहोत से फाइदे भी हैं और उन में

تَأْكُلُونَ ۝ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ۝ وَلَقَدْ

से बाज़ों को तुम खाते भी हो। और तुम उन चौपाओं पर और कशतियों पर सवारी करते हो। यकीनन हम ने

أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا

रसूल बना कर भेजा नूह (अलैहिस्सलाम) को उन की क़ौम की तरफ़, फिर नूह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की

وقل لا

٤٢

لَكُمْ مِّنَ إِلَهِ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿۱۸﴾ فَقَالَ الْهَلَاؤُا الَّذِينَ

इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं। क्या फिर तुम डरते नहीं हो? तो सरदारों ने कहा

كَفَرُوا مِّنْ قَوْمِهِ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ يُرِيدُ

जो काफिर थे आप की कौम में से के ये नूह नहीं है मगर तुम जैसा इन्सान। वो ये चाहता है

أَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً ۚ

के तुम पर फज़ीलत पाए। और अगर अल्लाह चाहता तो फ़रिशतों को उतारता। हम

مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿۱۹﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ

ने ये बात हमारे पेहले बाप दादाओं में नहीं सुनी। यकीनन ये नूह तो सिर्फ़ एक ऐसा आदमी है जिसे

بِهِ جَنَّةٌ فَنَتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿۲۰﴾ قَالَ رَبِّ انصُرْنِي

जुनून है, तो तुम उस के मुतअल्लिक इन्तिज़ार करो एक वक़्त तक। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरे रब! तू मेरी

بِمَا كَذَّبُونِ ﴿۲۱﴾ فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنْ اصْنَعْ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا

नुसरत फ़रमा उस पर जो उन्होंने ने मुझे झुठलाया। तो हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) की तरफ़ वही की के आप कशती बनाएं हमारी

وَوَحَيْنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ ۖ فَاسْلُكْ فِيهَا

आँखों के सामने और हमारे हुक्म से, फिर जब हमारा हुक्म आ जाए और तन्नूर जोश मारने लगे, तो उस में दाखिल

مِّنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ

कर लो हर चीज़ का जोड़ा (यानी) दो दो और अपने मानने वालों को मगर वो जिन के बारे

عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تَحَاطَبَيْنِ فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ

में पेहले से बात साबित हो चुकी है। और तुम मुझ से बात न करो उन लोगों के बारे में जो मुशरिक हैं।

إِنَّهُمْ مُّعْرَقُونَ ﴿۲۲﴾ فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ

इस लिए के ये ग़र्क किए जाएंगे। फिर जब आप और वो जो आप के साथ हैं कशती पर बराबर सवार

عَلَى الْفُلْكَ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّيْنَا مِنَ الْقَوْمِ

हो जाएं तो यूं कहिए तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें ज़ालिम कौम से

الظَّالِمِينَ ﴿۲۳﴾ وَقُلْ رَبِّ انزِلْنِي مُنزَلًا مُّبْرَكًا وَأَنْتَ

नजात दी। और यूं कहिए ऐ मेरे रब! तू मुझे बरकत वाली जगह उतार और तू

خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ﴿۲۴﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ وَإِنْ كُنَّا

बेहतरीन उतारने वाला है। यकीनन इस में निशानियाँ हैं और यकीनन

لَمَبْتَلَيْنَ ۝ ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝	हम आजमाने वाले हैं। फिर उन के बाद हम ने दूसरी कौमें पैदा की।
فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ	फिर हम ने उन में भी उन्हीं में से रसूल भेजा के तुम अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए
مِّنْ إِلَهِ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ	उस के अलावा कोई माबूद नहीं। क्या फिर तुम डरते नहीं हो? और उन की कौम के सरदारों ने कहा
الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِإِلْقَاءِ الْآخِرَةِ وَاتَّرفَهُمْ	जो काफिर थे और जिन्होंने ने आखिरत की मुलाकात को झुठलाया था और हम ने उन्हें दुन्यवी ज़िन्दगी में
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۖ يَأْكُلُ	आसूदा बना रखा था। उन्होंने ने कहा के ये तो नहीं है मगर तुम जैसा एक इन्सान। वो खाता है
مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ۝	उस में से जो तुम खाते हो और पीता है उस में से जो तुम पीते हो।
وَلَئِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَسِرُونَ ۝ أَيْعِدُكُمْ	और अगर तुम केहना मान लोगे अपने जैसे एक इन्सान का तो यकीनन तुम खसारा उठाने वाले हो। क्या वो तुम से
أَنْتُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَنْتُمْ مُّخْرَجُونَ ۝	वादा करता है के तुम जब मर जाओगे और मिट्टी हो जाओगे और हड्डियाँ हो जाओगे तो तुम ज़िन्दा कर के निकाले
هِيَ هَاتِ هَيْهَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ۝ إِنَّ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا	जाओगे। दूर है दूर है वो जिस का तुम्हें वादा किया जा रहा है। ये ज़िन्दगी नहीं है मगर हमारी दुन्यवी ज़िन्दगी के
الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۝ إِنَّ هُوَ	हम मरते हैं और हम ज़िन्दा होते हैं और हम दोबारा ज़िन्दा कर के कब्रों से उठाए नहीं जाएंगे। ये नबी
إِلَّا رَجُلٌ إِفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ۝	नहीं है मगर एक शख्स जिस ने अल्लाह पर झूठ घड़ लिया है और हम उस पर ईमान लाने वाले नहीं हैं।
قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونَ ۝ قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ	नबी ने कहा के ऐ मेरे रब! तू मेरी नुसरत फरमा इस वजह से के उन्होंने ने मुझे झुठलाया। अल्लाह ने फरमाया के
لَيُصِيبَنَّ نَذِيبَيْنِ ۝ فَآخَذَتْهُمْ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ	थोड़े ही दिनों में ये ज़ख़र नादिम होंगे। फिर उन को एक चीख ने पकड़ लिया सच्चे वादे पर, फिर हम ने उन्हें

عُنَاءٌ ۚ فَبَعْدًا لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿۳۱﴾ ثُمَّ أَنشَأْنَا कूड़ा करकट बना दिया। फिर नास हो ज़ालिम कौम के लिए। फिर हम ने
مِّنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ﴿۳۲﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا उन के बाद दूसरी कौमों में पैदा कीं। कोई उम्मत अपने मुक़र्ररा वक़्त से न आगे जा सकती है
وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿۳۳﴾ ثُمَّ أَرْسَلْنَا رَسُولَنَا تَتْرَاطُ كَلَمًا और न पीछे हट सकती है। फिर हम ने अपने रसूल लगातार भेजे। जब कभी किसी उम्मत के
جَاءَ أُمَّةٌ رَسُولُهَا كَذَّبُوهُ فَاتَّبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا पास उन का रसूल आता तो वो उसे झुठलाते, फिर हम भी उन में से एक के बाद दूसरे को हलाक करते
وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ ۚ فَبَعْدًا لِّلْقَوْمِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿۳۴﴾ चले गए, और हम ने उन को कहानियाँ बना दिया। फिर नास हो ऐसी कौम के लिए जो ईमान नहीं लाती।
ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ ۚ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ फिर हम ने मूसा और उन के भाई हारून (अलैहिस्सलाम) को रसूल बना कर भेजा अपने मोअजिज़ात दे कर और रोशन
مُبِينٍ ﴿۳۵﴾ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا दलील दे कर। फिर औन और उस की जमाअत की तरफ़, तो उन्होंने ने तकबुर किया और वो बड़ाई मारने वाले
عَالِينَ ﴿۳۶﴾ فَقَالُوا أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا लोग थे। फिर उन्होंने ने कहा क्या हम ईमान लाएं अपने जैसे दो इन्सानों पर हालांकि उन की कौम
لَنَا عِبْدُونَ ﴿۳۷﴾ فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ﴿۳۸﴾ हमारी गुलाम है। फिर उन्होंने ने उन दोनों को झुठलाया, चुनांचे वो हलाक किए जाने वालों में से हो गए।
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿۳۹﴾ यकीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी, शायद वो लोग हिदायत पाएं।
وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّةً آيَةً ۖ وَأَوَيْنَهُمَا إِلَىٰ رَبْوَةٍ और हम ने मरयम (अलैहिस्सलाम) के बेटे और उन की माँ को मोअजिज़ा बनाया और हम ने उन दोनों को ठिकाना दिया एक
ذَاتِ قَرَائِرٍ ۖ وَمَعِينٍ ﴿۴۰﴾ يَأَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُّوا टीले के पास जो ठेहरने के लाइक और चशमे वाला था। ऐ पैग़म्बरो! तुम खाओ
مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۚ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿۴۱﴾ पाकीज़ा चीज़ों में से और आमाले सालिहा करो। यकीनन मैं तुम्हारे आमाल खूब जानता हूँ।

وَإِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ﴿۵۲﴾

और यकीनन ये तुम्हारी उम्मत एक ही उम्मत है और मैं तुम्हारा रब हूँ, तो तुम मुझ से डरो।

فَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ

फिर वो अपने (दीन के) मुआमले में जमाअतें बन कर टुकड़े टुकड़े हो गए। हर गिरोह उस पर खुश है

فَرِحُونَ ﴿۵۳﴾ فَذَرَهُمْ فِي غَمَرَتِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿۵۴﴾ أَيْحَسِبُونَ

जो उन के पास है। इस लिए आप उन को उन की गुमराही में एक वक़्त तक छोड़ दीजिए। क्या ये गुमान कर रहे हैं

أَنَّا نُمِدُّهُمْ بِهِ مِنْ مَّالٍ وَبَنِينَ ﴿۵۵﴾ نُسَارِعُ لَهُمْ

के जो हम माल और बेटे उन्हें दे रहे हैं, तो हम उन के लिए भलाइयों में जल्दी कर रहे हैं? बल्के

فِي الْخَيْرِ ۚ بَلْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿۵۶﴾ إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشِيَةِ

ये लोग समझते नहीं, यकीनन वो जो अपने रब के खौफ़ से

رَبِّهِمْ مُّشْفِقُونَ ﴿۵۷﴾ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿۵۸﴾

डरते हैं। और जो अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿۵۹﴾ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ

और जो अपने रब के साथ शरीक नहीं करते। और देते हैं वो जो भी देते हैं इस हाल में के

مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ﴿۶०﴾

उन के दिल डर रहे होते हैं के उन्हें अपने रब की तरफ लौट कर जाना है।

أُولَٰئِكَ يُسْرِعُونَ فِي الْخَيْرِ ۖ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ﴿۶१﴾

यही लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और वही उस की तरफ सबक़्त करने वाले हैं।

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنْطِقُ

हम किसी शख्स पर बोझ नहीं डालते मगर उस की ताक़्त के मुताबिक़ और हमारे पास किताब (आमालनामा) है जो

بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿۶۲﴾ بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمَرَةٍ

सच्चाई के साथ (हर बात) बतला देगी और उन पर जुल्म नहीं होगा। बल्के उन के दिल इस से ग़फ़लत

مِّنْ هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِّنْ دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَمَلُونَ ﴿۶۳﴾

मैं हैं और उन के इस के अलावा और भी आमाल हैं जो वो कर रहे हैं।

حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيَهُمْ بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْعَرُونَ ﴿۶۴﴾

यहां तक के जब हम उन के खुशहाल लोगों को अज़ाब में पकड़ेंगे, तो फौरन वो चिल्लाने लगेंगे।

لَا تَجْرُوا الْيَوْمَ اتَّكُم مِّمَّا لَا تَنْصُرُونَ ﴿۱۵﴾ قَدْ كَانَتْ

(कहा जाएगा के) आज मत चिल्लाओ। यकीनन तुम्हारी हम से (बचाने के लिए) मदद नहीं की जाएगी। इस लिए

إِيتَى تَتْلَى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ تَنْكُصُونَ ﴿۱۶﴾

के हमारी आयतें तुम पर तिलावत की जाती थीं, तो तुम अपनी एड़ियों के बल उल्टे भागते थे।

مُسْتَكْبِرِينَ ۖ بِهِ سِرًّا تَهْجُرُونَ ﴿۱۷﴾ أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا

तकबुर करते हुए, रात में कुरआन के खिलाफ किस्सागोई करते, उस को छोड़ते हुए। क्या उन्होंने ने इस

الْقَوْلِ أَمْ جَاءَهُمْ مَّا لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿۱۸﴾

बात में गौर नहीं किया या उन के पास आई वो चीज़ जो उन के पेहले बाप दादा के पास नहीं आई?

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿۱۹﴾

या उन्होंने ने अपने रसूल को पहचाना नहीं, फिर वो उसे अजनबी समझते हैं?

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلْ جَاءَهُمُ بِالْحَقِّ وَ أَكْثَرُهُمْ

या वो केहते हैं के इस नबी को जुनून है? बल्के वो उन के पास हक ले कर आया है और उन में से अक्सर

لِلْحَقِّ كَرِهُونَ ﴿۲۰﴾ وَلَوْ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ

हक को नापसन्द करते हैं। और अगर हक उन की ख्वाहिशात के ताबेअ होता तो आसमान

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ بَلْ أَكْتَنَّهُمْ بِذِكْرِهِمْ

और ज़मीन और जो उन में हैं सब तबाह हो जाते। बल्के हम उन के पास उन की नसीहत लाए हैं,

فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُونَ ﴿۲۱﴾ أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا

फिर वो अपनी नसीहत से ऐराज़ कर रहे हैं। क्या आप उन से खर्च का सवाल करते हैं?

فَخَرَجَ رَبُّكَ خَيْرٌ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿۲۲﴾ وَإِنَّكَ

फिर आप के रब का दिया हुआ खर्च बेहतर है। और वो बेहतरीन रोज़ी देने वाला है।

لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿۲۳﴾ وَإِنَّ الَّذِينَ

और यकीनन आप उन्हें बुलाते हैं सीधे रास्ते की तरफ। और जो

لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنُكَيِّبُنَّ ﴿۲۴﴾

आखिरत पर ईमान नहीं रखते वो सीधे रास्ते से मुंह मोड़ रहे हैं।

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ ضُرٍّ لَلَجُّوا فِي طُغْيَانِهِمْ

और अगर हम उन पर रहम करें और उन से उस तकलीफ को दूर कर दें जो उन को है तो ज़रूर वो लगे रहें अपनी

يَعْمَهُونَ ﴿۴۵﴾ وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا	
शरारत में बेहेकते हुए। यकीनन हम ने उन को अज़ाब में पकड़ा, फिर उन्होंने ने अपने रब के सामने	
لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ﴿۴۶﴾ حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا	
न आजिज़ी की और न गिड़गिड़ाए। यहां तक के जब हम ने उन पर सख्त अज़ाब के	
ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿۴۷﴾ وَهُوَ الَّذِي	२८
दरवाज़े खोल दिए तो अचानक वो उस में मायूस हो कर रह गए। और वही अल्लाह है	
أَنْشَأَ لَكُمْ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۖ قَلِيلًا	
जिस ने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए। बहोत कम	
مَّا تَشْكُرُونَ ﴿۴۸﴾ وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ	
तुम शुक्र अदा करते हो। और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया	
وَالِيهِ تَحْشَرُونَ ﴿۴۹﴾ وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ وَلَهُ	
और उसी की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे। और वही ज़िन्दा करता है और मारता है और उसी के लिए	
اِخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿۵०﴾ بَلْ قَالُوا	
रात और दिन का आना जाना है। क्या फिर तुम अक्ल नहीं रखते? बल्के उन्होंने ने कही	
مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ﴿۵१﴾ قَالُوا إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا	
उसी जैसी बात जो पेहलों ने कही थी। उन्होंने ने कहा के क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे और	
وَعِظَامًا ءَاِنَّا لَبَعُوثُونَ ﴿۵२﴾ لَقَدْ وَعَدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا	
हड्डियाँ हो जाएंगे, तब हम क़ब्रों से उठाए जाएंगे? यकीनन हम से और हमारे बाप दादाओं से भी इस का	
هَذَا مِنْ قَبْلُ ۚ إِنَّ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿۵३﴾ قُلْ	
इस से पेहले वादा किया गया, यकीनन ये पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ हैं। आप फरमा दीजिए के किस	
لِّبَنِ الْأَرْضِ وَمَنْ فِيهَا ۚ إِنْ كُنْتُمْ تَعْمُونَ ﴿۵४﴾ سَيَقُولُونَ	
की मिल्क है ज़मीन और वो चीज़ें जो ज़मीन में हैं अगर तुम्हें मालूम है? अनकरीब वो कहेंगे के अल्लाह	
بِئْسَ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿۵५﴾ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ	
की। आप फरमा दीजिए क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? आप फरमा दीजिए कौन सातों आसमानों का	
وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿۵६﴾ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُلْ أَفَلَا	
रब है और अर्शे अज़ीम का रब है? अनकरीब वो कहेंगे के अल्लाह। आप फरमा दीजिए के क्या फिर तुम	

تَتَّقُونَ ﴿۸۵﴾ قُلْ مَنْ بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ

डरते नहीं हो? आप फरमा दीजिए के किस के कब्जे में है हर चीज़ की सल्तनत और जो पनाह देता है

وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿۸۶﴾ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ

और उस पर किसी को पनाह नहीं दी जा सकती अगर तुम्हें मालूम है? अनकरीब वो कहेंगे के अल्लाह के लिए।

قُلْ فَأَنِّي تُسْحَرُونَ ﴿۸۷﴾ بَلْ أَتَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ

आप फरमा दीजिए के फिर तुम कहाँ से जादूज़दा हो जाते हो? बल्के हम उन के पास हक़ को लाए हैं और यकीनन

لَكَذِبُونَ ﴿۸۸﴾ مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ

वो झूठे हैं। अल्लाह ने औलाद नहीं बनाई और उस के साथ कोई

مِنْ إِلَهِ إِذَا لَذَهَبَ كُلُّ إِلَهِ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَّ بَعْضُهُمْ

माबूद नहीं। तब तो हर माबूद अपनी मखलूक को ले कर अलग हो जाता और उन में से एक

عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿۸۹﴾ عَلِيمُ الْغَيْبِ

दूसरे पर चढ़ाई करता। अल्लाह पाक है उन बातों से जो वो बयान कर रहे हैं। जो पोशीदा और ज़ाहिर को

وَالشَّهَادَةِ فَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿۹۰﴾ قُلْ رَبِّ إِنَّمَا تُرِيدُنِي

जानने वाला है, फिर बरतर है इस से जो ये शरीक बनाते हैं। आप फरमा दीजिए ऐ मेरे रब! अगर तू मुझे

مَا يُوْعَدُونَ ﴿۹۱﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿۹۲﴾

दिखाए वो जिस से उन्हें डराया जा रहा है। ऐ मेरे रब! तू मुझे ज़ालिम लोगों में शामिल मत करना।

وَإِنَّا عَلَىٰ أَنْ تَرْيِكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَدَرُونَ ﴿۹۳﴾ اذْفَعْ بِالَّتِي

और यकीनन हम इस पर क़ादिर हैं के आप को दिखा दें वो अज़ाब जिस से हम उन्हें डरा रहे हैं। आप दफा कीजिए

هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةِ ۚ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ﴿۹۴﴾

बुराई को उस तरीके से जो बेहतर हो। हम खूब जानते हैं जो कुछ वो बयान कर रहे हैं।

وَقُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَزْبِ الشَّيْطَانِ ﴿۹۵﴾ وَأَعُوذُ

और आप फरमा दीजिए ऐ मेरे रब! मैं शैतान के वसाविस से तेरी पनाह मांगता हूँ। और मैं तेरी पनाह मांगता

بِكَ رَبِّ أَنْ يُحْضِرُونِ ﴿۹۶﴾ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ

हूँ इस से के वो मेरे पास हाज़िर हों। यहां तक के जब उन में से किसी एक की मौत आएगी वो कहेगा ऐ

قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ﴿۹۷﴾ لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ

मेरे रब! तू मुझे (दुनिया में) वापस लौटा दे। शायद मैं नेक अमल करूँ उस दुनिया में जिस को मैं छोड़ कर आया हूँ।

كَلَّا ۚ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا ۚ وَمِنْ وَرَائِهِمْ

हरगिज़ नहीं। यकीनन ये (बे मअना) कलाम है जो वो कहे जा रहा है। और उन के पीछे

بَرْزَخٌ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۚ فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ

बरज़ख है उस दिन तक जिस दिन (क़ब्रों से) मुर्दे उठाए जाएंगे। फिर जब सूर में फूंक मारी जाएगी

فَلَا أُنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ۚ فَمَنْ

तो उन के दरमियान उस दिन न रिश्तेदारियाँ होंगी और न वो एक दूसरे को पूछेंगे। फिर जिन के

ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۚ وَمَنْ

वज़न के पलड़े भारी होंगे तो ये फ़लाह पाने वाले हैं। और जिन के

خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا

वज़न के पलड़े हलके होंगे ये वो लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों को

أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَلَدُودًا ۚ تَلْفَحُ وُجُوهُهُمْ

खसारे में डाला, वो जहन्नम में हमेशा रहेंगे। आग उन के चेहरे झुलसा

النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ۚ أَلَمْ تَكُنْ آيَتِي تُنذِرُ

देगी और वो उस में बदशकल हो कर पड़े रहेंगे। (कहा जाएगा) क्या मेरी आयतें तुम पर तिलावत नहीं

عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۚ قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ

की जाती थीं, फिर तुम उन आयतों को झुठलाते थे? वो कहेंगे ऐ हमारे रब! हम पर

عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ۚ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا

हमारी बदबख्ती ग़ालिब आ गई और हम गुमराह लोग थे। ऐ हमारे रब! तू हमें जहन्नम से निकाल,

مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۚ قَالَ اخْسُوا فِيهَا

फिर अगर हम दोबारा ऐसा करें तो यकीनन हम कुसूरवार हैं। अल्लाह फरमाएंगे के तुम उस में ज़लील हो कर

وَلَا تُكَلِّمُونَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي

पड़े रहो और तुम मुझ से बात मत करो। इस लिए के मेरे बन्दों की एक जमाअत केहती

يَقُولُونَ رَبَّنَا أَمَّا فَأَعُفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ

थी के ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, तू हमारी मग़फ़िरत कर दे और तू हम पर रहम फरमा और तू बेहतरीन

الرَّحِيمِينَ ۚ فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سَخِرِيًّا حَتَّىٰ أَنسَوَكُمُ

रहम करने वाला है। तो तुम ने उन्हें मज़ाक बनाया था यहां तक के उन्होंने ने तुम से मेरी

ذِكْرِي وَكُنْتُمْ مِنْهُمْ تَضْحَكُونَ ﴿۱۰﴾ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ

याद को भुला दिया था और तुम उन से हंसते रहे। यकीनन मैं ने आज उन्हें बदला दिया

بِمَا صَبَرُوا ۚ إِنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿۱۱﴾ قُلْ كَمْ لَبِئْتُمْ

उन के सब्र का के वही कामयाब हैं। अल्लाह पूछेंगे के तुम ज़मीन

فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ﴿۱۲﴾ قَالُوا لَبِئْنَا يَوْمًا

में सालों की गिन्ती के ऐतेबार से कितना रहे? वो कहेंगे के एक दिन

أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسَلِّ الْعَادِينَ ﴿۱۳﴾ قُلْ إِنْ لَبِئْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا

या एक दिन से भी कम, फिर आप गिनने वालों से पूछ लीजिए। अल्लाह फ़रमाएंगे के तुम नहीं रहे मगर थोड़ा,

لَوْ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿۱۴﴾ أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ

काश के तुम जानते। या फिर तुम ने ये गुमान कर रखा है के हम ने तुम्हें बेकार

عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿۱۵﴾ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ

पैदा किया है और ये के तुम हमारी तरफ वापस नहीं लाए जाओगे? फिर अल्लाह जो बरहक बादशाह है,

الْحَقُّ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿۱۶﴾ وَمَنْ

वो बरतर है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। वो अर्शे अज़ीम का रब है। और जो

يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۚ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ ۚ فَأَنسَا

अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को पुकारे जिस की उस के पास कोई दलील नहीं, तो उस का हिसाब सिर्फ

حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿۱۷﴾

उस के रब के यहां होगा। यकीनन काफिर लोग फलाह नहीं पाएंगे।

وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِيمِينَ ﴿۱۸﴾

और आप केह दीजिए ऐ मेरे रब! तू मग़फ़िरत फरमा और रहम कर और तू बेहतरीन रहम करने वाला है।

رُؤُوسُهَا ۹ (۲۳) سُورَةُ النُّورِ مَكِّيَّةٌ (۱۰۲) ۶۴ آيَاتُهَا ۱

और ९ स्कूअ हैं सूरह नूर मदीना में नाज़िल हुई उस में ६४ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سُورَةٌ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ

ये एक सूरत है जिस को हम ने उतारा है और जिस को हम ने फर्ज़ किया है और इस सूरत में हम ने रोशन आयतें

لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ	उतारी हैं ताके तुम नसीहत हासिल करो। ज़िना करने वाली औरत और ज़िना करने वाला मर्द, तो तुम उन में से
وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةً جَلْدَةٍ وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ	हर एक को सौ कोड़े मारो। और तुम्हें उन पर रहम न आए
فِي دِينِ اللَّهِ إِنَّ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ	अल्लाह के हुक्म की तामील में अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और आखिरी दिन पर।
وَلْيَشْهَدْ عَذَابُهُمَا طَائِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ الزَّانِي	और चाहिए के उन को सज़ा देते वक़्त ईमान वालों की एक जमाअत मौजूद रहे। ज़िना करने वाला मर्द
لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَا	निकाह नहीं करता मगर ज़िनाकार औरत से या मुशरिक औरत से। और ज़िनाकार औरत से निकाह नहीं करता
إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ وَحُرِّمَ ذَلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝	मगर ज़िना करने वाला मर्द या मुशरिका। और ये ईमान वालों पर हराम कर दिया गया है।
وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ	और जो पाकदामन औरतों पर तोहमत लगाएं, फिर वो चार गवाह
شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ	न लाएं, तो तुम उन को अस्सी कोड़े मारो और उन की गवाही कभी भी
شَهَادَةً أَبَدًا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ	कबूल न करो। और ये लोग नाफरमान हैं। मगर वो लोग
تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ	जिन्होंने ने तौबा की उस के बाद और इस्लाह कर ली। तो यकीनन अल्लाह बख़्शने वाला,
رَحِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَرْوَاحَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ	निहायत रहम वाला है। और जो अपनी बीवियों पर तोहमत लगाएं और उन के पास गवाह
شُهَدَاءُ إِلَّا أَنفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَدَاتٍ	न हों सिवाए अपने आप के तो उन में से एक की गवाही चार मरतबा अल्लाह की क़सम खा कर गवाही
بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِينَ ۝ وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ	देना है के यकीनन वो सच्चा है। और पांचवीं (गवाही में ये कहे) के अल्लाह की

	اللَّهُ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَذِبِينَ ۝ وَيَذَرُوا عَنْهَا लानत है मेरे ऊपर अगर मैं झूठों में से हूँ और औरत से सज़ा
	الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ टल सकती है के वो चार मरतबा अल्लाह की क़सम खा कर गवाही दे के यकीनन ये मर्द
	لِمَنِ الْكَذِبِينَ ۝ وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا झूठों में से है। और पांचवीं गवाही (में यूँ कहे) के मेरे ऊपर अल्लाह का गज़ब हो
	إِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ अगर वो मर्द सच्चों में से है। और अगर अल्लाह का तुम पर फज़ल और उस की महरबानी न होती (तो
۱ ۶۰	وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا अज़ाब आ जाता) और ये के अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला, हिक्मत वाला है। यकीनन वो लोग जो बदतरीन
	بِإِلْفِكَ عُصْبَةٍ مِّنْكُمْ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم بَلْ هُوَ झूठ लाए हैं वो तुम ही में से एक जमाअत है। तुम उस को अपने हक़ में बुरा मत समझो। बल्के वो
	خَيْرٌ لَّكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ ۖ तुम्हारे लिए बेहतर है। उन में से हर शख्स के लिए वो गुनाह है जो उस ने कमाया।
	وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ और उन में से जो इस झूठ के बड़े हिस्से का ज़िम्मेदार है उस के लिए भारी अज़ाब है।
	لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ जब तुम ने उस को सुना तो ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों ने अपने आप के मुतअल्लिक अच्छा गुमान
	خَيْرًا ۖ وَقَالُوا هَذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ۝ لَوْلَا جَاءُوا क्यूँ नहीं किया? और यूँ क्यूँ नहीं कहा के ये तो साफ़ झूठ है? वो उस पर
	عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةٍ شَهَادَةٍ ۖ فَإِذَا لَمْ يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ चार गवाह क्यूँ न लाए? फिर जब वो गवाह नहीं लाए
	فَأُولَٰئِكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكَذِبُونَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ तो यही लोग अल्लाह के नज़दीक झूठे हैं। और अगर तुम पर अल्लाह का फज़ल
	عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا और उस की महरबानी न होती दुनिया और आखिरत में तो तुम्हें उस की वजह से जिस

أَفْضَتْمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ ۱۷ إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِالسِّنِّتِمْ	में तुम लगे रहे भारी अज़ाब पहुँचता। जब के तुम उसे अपनी ज़बानों से नक़ल करते थे
و تَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَ تَحْسِبُونَهُ	और तुम अपने मुंह से ऐसी बात केहते थे जिस की तुम्हारे पास कोई दलील नहीं और तुम उसे हल्का
هَيِّنًا ۖ وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ۝ ۱۸ وَلَوْ لَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ	समझते थे। हालांकि वो अल्लाह के नज़दीक बहोत भारी है। और जब तुम ने उस को सुना तो तुम ने यूँ
قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا ۖ سُبْحَنَكَ هَذَا	क्यूँ नहीं कहा के हमारे लिए मुनासिब नहीं के हम ये बात ज़बान पर लाएं। ऐ अल्लाह! तू पाक है, ये
بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ۝ ۱۹ يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا	तो भारी बुहतान है। अल्लाह तुम्हें इस की नसीहत करता है के तुम दोबारा ऐसी हरकत न करना कभी भी
إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ ۲۰ وَيَبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ وَاللَّهُ	अगर तुम ईमान वाले हो। और अल्लाह तुम्हारे लिए साफ़ साफ़ आयतें बयान करता है। और अल्लाह
عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ ۲۱ إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ	इल्म वाला, हिक्मत वाला है। यकीनन वो लोग जो ये चाहते हैं के ईमान वालों में
فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ	बेहयाई फैले, उन के लिए दुनिया और आखिरत में दर्दनाक अज़ाब है।
وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ ۲۲ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ	और अल्लाह जानता है और तुम जानते नहीं हो। और अगर अल्लाह का फज़ल और उस की महरबानी
عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝ ۲۳ يَأَيُّهَا	तुम पर न होती (तो अज़ाब आता) और ये के अल्लाह निहायत शफ़क़त वाला, रहमत वाला है। ऐ
الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوتِ الشَّيْطَانِ ۖ وَمَنْ يَتَّبِعْ	ईमान वालो! तुम शैतान के क़दम बक़दम मत चलो। और जो शैतान
خُطُوتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ	के क़दम बक़दम चलेगा तो यकीनन शैतान बेहयाई और बुरी बातों का हुक्म देता है।
وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَا مِنْكُمْ مِّنْ	और अगर अल्लाह का फज़ल और उस की महरबानी तुम पर न होती तो तुम में से कोई कभी भी पाक न होता

أَحَدٍ أَبَدًا ۖ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَيِّدُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ سَمِيعٌ
(तौबा कर के), लेकिन अल्लाह पाक बना देता है जिसे चाहता है (तौबा कबूल कर के)। और अल्लाह सुनने वाला,

عَلِيمٌ ۖ وَلَا يَأْتِلُ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ
इल्म वाला है। और तुम में से बुजुर्गी वाले और वुस्अत वाले इस की कसम न खाएं

أَنْ يُؤْتُوا أُولِيَ الْقُرْبَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْمُهَاجِرِينَ
के वो माल नहीं देंगे रिश्तेदारों को और मिसकीनों को और अल्लाह के रास्ते में हिजरत करने

فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۚ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ
वालों को। बल्के उन्हें चाहिए के वो मुआफ करें और दरगुज़र करें। क्या तुम पसन्द नहीं करते के अल्लाह

اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ
तुम्हारी मग़फिरत कर दे। और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। यकीनन वो लोग जो तोहमत

الْمُحْصَنَاتِ الْغُفْلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لَعُنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ
लगाते हैं पाकदामन बेखबर ईमान वाली औरतों पर, उन पर लानत है दुनिया और आखिरत में।

وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ
और उन के लिए भारी अज़ाब है। उस दिन जिस दिन उन के ख़िलाफ़ गवाही देगी उन की ज़बानें

وَآيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ يَوْمَئِذٍ
और उन के हाथ और उन के पैर उन आमांल की जो वो करते थे। जिस दिन

يُوقَفِيهِمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقُّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ
अल्लाह उन्हें इन्साफ के तकाज़े के मुताबिक़ पूरी सज़ा देगा और वो जान लेंगे के अल्लाह

الْحَقُّ الْمُبِينُ ۚ الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ
बरहक़ है, साफ़ साफ़ बयान करने वाला है। बुरी औरतें बुरे मर्दों के लिए हैं और बुरे मर्द

لِلْخَبِيثَاتِ ۚ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۚ
बुरी औरतों के लिए हैं। और अच्छी औरतें अच्छे मर्दों के लिए हैं और अच्छे मर्द अच्छी औरतों के लिए हैं।

أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ
ये लोग बरी हैं उन बातों से जो वो केह रहे हैं। उन के लिए मग़फिरत है और इज़्ज़त वाली

عُرْ

كَرِيمٌ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ
रोज़ी है। ऐ ईमान वालो! तुम अपने घरों के अलावा घरों में दाख़िल

بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا وَ تَسْلِمُوا عَلَى أَهْلِهَا ۖ ذَلِكُمْ
मत हो जब तक के तुम इजाज़त न ले लो और वहाँ वालों को सलाम न कर लो। ये
خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿۲۴﴾ فَإِنْ لَّمْ تَجِدُوا فِيهَا
तुम्हारे लिए बेहतर है ताके तुम नसीहत हासिल करो। फिर अगर तुम उन घरों में किसी को
أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَإِنْ قِيلَ
न पाओ तो उस में दाखिल मत हो यहां तक के तुम्हें इजाज़त दी जाए। और अगर तुम से कहा जाए
لَكُمْ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا هُوَ أَزْكَى لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ
के तुम वापस लौट जाओ तो तुम वापस लौट जाओ, ये तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़गी वाला है। और अल्लाह
بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿۲۵﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا
तुम्हारे आमाल जानते हैं। तुम पर कोई गुनाह नहीं इस में के तुम दाखिल हो
بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
ऐसे घरों में जिस में रिहाइश न हो, जिस में तुम्हारा सामान हो। और अल्लाह जानता है उन बातों को
مَا تَبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿۲۶﴾ قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا
जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। आप फरमा दीजिए ईमान वालों को के वो अपनी निगाहें
مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ۗ ذَلِكِ أَرْكَى
पस्त रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें। ये उन के लिए पाकीज़गी वाला
لَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿۲۷﴾ وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ
है। यकीनन अल्लाह बाखबर है उन कामों से जो वो कर रहे हैं। और आप ईमान वाली औरतों से
يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَ يَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ
केह दीजिए के वो अपनी निगाहें पस्त रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें और अपनी ज़ीनत
وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ
ज़ाहिर न करें मगर वो जो उस में से ज़ाहिर हो जाती हो, और उन्हें चाहिए के अपनी ओढ़नियों के
بُخُرِهِنَّ عَلَى جُيُوبِهِنَّ ۚ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ
आँचल अपने गिरेबान पर डाल लिया करें। और अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न करें
إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ
मगर अपने शौहरों के सामने या अपने बाप दादा के सामने या अपने शौहरों के बाप दादा के सामने या

ابْنَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءَ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي

अपने बेटों के सामने या अपने शौहरों के बेटों के सामने या अपने भाइयों के सामने या अपने भाइयों

إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ

के बेटों के सामने या अपनी बेहनों के बेटों के सामने या अपनी औरतों के सामने

أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّبِيعِينَ غَيْرِ أُولِي الْأَرْبَةِ

या अपनी ममलूका बांदियों के सामने या उन खादिमों के सामने जो हाजत वाले

مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَى عَوْرَتِ

नहीं हैं, (ये फेहरिस्त बालिग) मर्दों में से (हैं), या उन बच्चों में से जो अब तक औरतों की छुपी हुई चीजों पर

النِّسَاءِ وَلَا يَضُرُّنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ

मुत्तलेअ नहीं हुए। और उन औरतों को चाहिए के वो अपने पैर ज़ोर से न मारें ताके मालूम हो जाए उन की वो

مِنْ زِينَتِهِنَّ ۖ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهُ الْمُؤْمِنُونَ

ज़ीनत जिसे वो छुपा रही हैं। और सब अल्लाह की तरफ़ तौबा करो, ऐ ईमान वालो!

لَعَلَّكُمْ تَفْلَحُونَ ﴿٣١﴾ وَأَنْكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنْكُمْ وَالصَّالِحِينَ

ताके तुम फ़लाह पाओ। और अपने में से बेनिकाहों का निकाह करा दो और तुम्हारे गुलाम

مِنْ عِبَادِكُمْ وَ إِمَائِكُمْ ۖ إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِهِمْ

और तुम्हारी बांदियों में से जो नेक हों उन का निकाह करा दो। अगर वो फ़कीर हैं तो अल्लाह

اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۖ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٢﴾ وَلَيْسَتَعَفِيفَ

उन्हें अपने फज़ल से ग़नी कर देगा। और अल्लाह वुसअत वाले, इल्म वाले हैं। और चाहिए के पाकदामन

الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ

रहें वो जो निकाह की कुदरत नहीं पाते यहां तक के अल्लाह उन्हें अपने फज़ल से

مِنْ فَضْلِهِ ۖ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ

ग़नी कर दे। और जो मुकातब बनना चाहते हैं तुम्हारे गुलाम बांदियों

أَيْمَانِكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۚ وَآتُوهُمْ

में से तो उन्हें मुकातब बना लो अगर तुम उन में भलाई जानो। और उन को दो

مِنْ مَالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ وَلَا تُكْرِهُوا فَتِيلَكُمْ

अल्लाह के उस माल में से जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है। और तुम अपनी बांदियों को ज़िना पर

عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدَنْ تَحْصُنَا لَتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ मजबूर मत करो ताके तुम दुन्यवी ज़िन्दगी का सामान तलाश करो अगर वो पाकदामन रेहना	
الدُّنْيَا وَمَنْ يُكْرِهْنَنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِنْ بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ चाहें। और जो उन को मजबूर करेगा तो यकीनन अल्लाह उन के मजबूर किए जाने के बाद	
غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُبَيِّنَاتٍ बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। यकीनन हम ने तुम्हारी तरफ़ साफ़ साफ़ आयतें उतारी हैं	
وَمَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً और उन लोगों की मिसाल उतारी है जो तुम से पेहले गुज़र चुके और मुत्तकियों के लिए नसीहत	
لِّلْمُتَّقِينَ ۝ اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ مَثَلُ उतारी है। अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर है। उस के नूर	۶۸
نُورِهِ كَمِشْكُوَةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۖ الْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ की मिसाल ऐसी है जैसा के एक ताकचा जिस में चिराग़ हो। चिराग़ एक शीशे में हो।	
الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبَارَكَةٍ शीशा ऐसा जैसा के चमकता हुवा सितारा, उसे ईंधन दिया जाता है बाबरकत जैतून के	
زَيْتُونَةٍ لَا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ ۖ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ दरख्त से जो न मशरिकी है और न मगरिबी। उस का तेल करीब है के रोशनी दे दे	
وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ نُّورٌ عَلَى نُورٍ ۗ يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَنْ अगर्वे उसे आग न छुई हो। नूर के ऊपर नूर। अल्लाह अपने नूर की तरफ़ रहनुमाई देता है जिसे	
يَشَاءُ ۖ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۖ وَاللَّهُ بِكُلِّ चाहता है। और अल्लाह इन्सानों के लिए मिसालें बयान करते हैं। और अल्लाह हर चीज़ को	
شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ فِي بُيُوتٍ أُذِنَ لِلَّذِينَ يُدْخِلُونَ فِيهَا ख़ूब जानने वाले हैं। उन घरों में जिन के बुलन्द किए जाने का अल्लाह ने हुक्म दिया और जिस में अल्लाह का नाम	
فِيهَا اسْمُهُ ۖ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۝ लिए जाने का अल्लाह ने हुक्म दिया। उन घरों में सुबह व शाम उस की तस्बीह पढ़ते हैं	
رِجَالٌ لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَ ऐसे मर्द जिन को न तिजारात गाफिल करती है अल्लाह की याद से, न ख़रीद व फ़रोख़्त,	

إِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ ۖ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ

न नमाज़ के काइम करने से और न ज़कात देने से गाफिल करती है। वो डरते हैं ऐसे दिन से जिस में

فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ۚ لِيَجْزِيََهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ

दिल और निगाहें उलट पलट हो जाएंगी। ताके अल्लाह उन को बदला दे उन अच्छे कामों का जो

مَا عَمِلُوا وَ يَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ

उन्हों ने किए और अपने फज़ल से उन को मज़ीद दे। और अल्लाह बेहिसाब रोज़ी

يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ

देता है जिसे चाहता है। और वो लोग जो काफिर हैं उन के आमाल ऐसे हैं

كَسْرَابٍ بِقِيَعَةٍ يَخْسَبُهُ الظَّمَأُ مَاءً ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ

जैसा के रेगिस्तान की सराब जिसे प्यासा पानी समझता है। यहां तक के जब वो उस के पास आता है

لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ فَوْقَهُ حِسَابَةً ۖ

तो उसे कुछ भी नहीं पाता और अल्लाह को उस के पास पाएगा फिर अल्लाह उसे उस का हिसाब पूरा पूरा देगा।

وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۚ أَوْ كَظُلُمٍ فِي بَحْرٍ لُّجِّيٍّ

और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। या (काफिरों के आमाल का हाल ऐसा है) जैसा के गेहरे समन्दर की

يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ سَحَابٌ ۖ

तारीकियाँ जिन को मौज ढांपे हुए है, उस के ऊपर भी मौज, उस मौज के ऊपर बादल।

ظُلُمْتُ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۖ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ

कई तारीकियाँ उन में से एक दूसरे के ऊपर। जब वो अपना हाथ निकालता है

لَمْ يَكْدِرْهَا ۖ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ

तो करीब भी नहीं है के उस को देख सके। और जिस के लिए अल्लाह ने नूर नहीं बनाया उस के लिए

مِنْ نُورٍ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُسَبِّحُ لَهُ مِنْ فِي السَّمُوتِ

ع ۥ

कोई नूर नहीं। क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह की तस्बीह करते हैं वो सब ही जो आसमानों में हैं

وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرِ طَفَّتْ ۖ كُلُّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ

और ज़मीन में हैं और परिन्दे भी सफ बांध कर। हर एक ने अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह को मालूम

وَتَسْبِيحَهُ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۚ وَبِاللَّهِ مُلْكٌ

कर रखा है। और अल्लाह ख़ूब जानता है वो काम जो वो कर रहे हैं। और अल्लाह के लिए आसमानों

السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٢٣﴾ أَلَمْ تَرَ

और ज़मीन की सल्तनत है। और अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है। क्या आप ने देखा नहीं

أَنَّ اللَّهَ يُزْجِي سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ

के अल्लाह बादलों को चलाते हैं, फिर उन को जोड़ते हैं, फिर उसे तेह बतेह

رُكَّامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۚ وَيُنْزِلُ

करते हैं? फिर तू देखेगा बारिश को के उस के दरमियान से निकलती है। और वो

مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ

आसमान से पहाड़ों को उतारता है जिन में ओला होता है, फिर उसे पहुँचाता है

مَنْ يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ عَنْ مَنْ يَشَاءُ ۚ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِ

जिसे चाहता है और हटाता है उस को जिस से चाहता है। करीब है के उस की बिजली की चमक

يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ۚ يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ

बीनाई को भी सल्ब कर ले। अल्लाह रात और दिन को पलटते हैं।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿٢٤﴾ وَاللَّهُ

यकीनन उस में बसीरत वालों के लिए इबरत है। और अल्लाह ने

خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ مَّاءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي

हर चलने वाले जानवर को पैदा किया पानी से। फिर उन में से कुछ चलते हैं

عَلَىٰ بَطْنِهِ ۚ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَىٰ رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ

अपने पेट के बल। और उन में से कुछ चलते हैं दो पैरों पर। और उन में से कुछ

مَنْ يَمْشِي عَلَىٰ أَرْبَعٍ ۚ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ

चलते हैं चार पैरों पर। अल्लाह पैदा करता है जिसे चाहता है। यकीनन अल्लाह

عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٥﴾ لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ ۚ

हर चीज़ पर कुदरत वाला है। यकीनन हम ने साफ़ साफ़ आयतें उतारी हैं।

وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢٦﴾

और अल्लाह हिदायत देता है जिसे चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़।

وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ

और ये लोग केहते हैं के हम ईमान लाए अल्लाह पर और रसूल पर और हम ने इताअत की, फिर उन में

فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ ۖ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۝

से एक जमाअत उस के बाद ऐराज़ करती है। और ये मोमिन नहीं हैं।

وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ

और जब उन्हें अल्लाह और उस के रसूल की तरफ बुलाया जाता है ताके वो उन के दरमियान फैसला करे

إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝ وَإِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ

तो अचानक उन में से एक जमाअत ऐराज़ करती है। और अगर उन का हक हो

يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ۝ أَفِ قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ

तो वो उस की तरफ तेज़ दौड़ते हुए आएंगे। क्या उन के दिलों में मर्ज़ है

أَمْ ارْتَابُوا أَنْ يَحْفَظُونَ أَنْ يَحِفَّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ

या वो शक करते हैं या वो डरते हैं इस से के अल्लाह और उस का रसूल उन पर जुल्म करेंगे?

بَلْ أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ

बल्के यही लोग ज़ालिम हैं। ईमान वालों का तो केहना ये होता है

إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ

जब उन्हें अल्लाह और उस के रसूल की तरफ बुलाया जाए ताके वो उन के दरमियान फैसला करे के वो

أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

कहे के “ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ” (हम ने सुन लिया और खुशी से मान भी लिया)। और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيُخَشِ اللَّهَ وَيَتَّقْهُ فَأُولَٰئِكَ

और जो अल्लाह और उस के रसूल की बात खुशी से मानेगा और अल्लाह से डरेगा और तक्वा इखतियार करेगा

هُمُ الْفَائِزُونَ ۝ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ

तो यही लोग कामयाब होंगे। और ये अल्लाह की कस्में खाते हैं अपनी कस्मों को मुअक्कद कर के

لَنْ أَمْرَتَهُمْ لِيَخْرُجُنَّ ۖ قُلْ لَا تُقْسِمُوا طَاعَةً

के अगर आप उन को हुक्म दोगे तो ज़रूर वो निकलेंगे। आप फ़रमा दीजिए के तुम कस्में मत खाओ। तुम्हारी

مَعْرُوفَةٌ ۖ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

इताअत जानी पेहचानी है। यकीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाख़बर है। आप फ़रमा दीजिए

أَطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ ۖ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا

के तुम अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर वो ऐराज़ करें तो उस के ज़िम्मे

عَلَيْهِ مَا حُبَلٌ وَ عَلَيْكُمْ مَا حُبِلْتُمْ ۖ وَإِنْ تُطِيعُوهُ

वही है जो उस पर बोझ रखा गया है और तुम पर वो है जिस का तुम्हें मुकल्लफ बनाया गया है। और अगर तुम

تَهْتَدُوا ۖ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلْغُ الْمُبِينُ ۝

उस की इताअत करोगे तो राह पा जाओगे। और रसूल के ज़िम्मे सिवाए साफ साफ पहोंचा देने के कुछ भी नहीं।

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

अल्लाह ने वादा किया है उन लोगों से जो तुम में से ईमान लाए और नेक अमल किए

لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ

के ज़रूर अल्लाह उन्हें ज़मीन में खलीफा बनाएगा जैसा के उन से पेहले वालों को

مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ

खलीफा बनाया। और ज़रूर उन के लिए उन का दीन मज़बूत कर देगा जो उन के लिए अल्लाह ने पसन्द किया है

وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي

और उन के खौफ के बाद उन्हें अमन बदले में देगा। इस लिए के वो मेरी इबादत करते हैं

لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ

और मेरे साथ कोई चीज़ शरीक नहीं ठेहराते। और जो उस के बाद कुफ्र करेगा तो यही

هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝

लोग नाफरमान हैं। और तुम नमाज़ काइम करो और ज़कात दो

وَاطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

और रसूल का केहना मानो ताके तुम पर रहम किया जाए। तू मत समझ काफिरों को

الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَأْوَهُمُ النَّارُ

के ज़मीन में (भाग कर) अल्लाह को आजिज़ कर देंगे। और उन का ठिकाना जहन्नम है।

وَلَيْئَسَ الْمَصِيرُ ۝

और वो बुरी जगह है। ऐ ईमान वालो! चाहिए के तुम से (दाखिल होते वक़्त) इजाज़त तलब करें

الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ

तुम्हारे ममलूक (गुलाम बांदियाँ) और वो बच्चे जो तुम में से बुलूग की उम्र को नहीं पहोंचे

ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ۖ مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ

तीन मरतबा (इजाज़त तलब करें)। फज्र की नमाज़ से पेहले और जिस वक़्त तुम अपने

ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيرَةِ وَمِن بَعْدِ صَلَوةِ الْعِشَاءِ ۖ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَّكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَ هُنَّ ط	कपड़े उतारते हो दोपहर के वक़्त और इशा की नमाज़ के बाद। ये तीन तुम्हारे सतर के औकात हैं। तुम पर और उन पर इन तीन औकात के बाद कोई गुनाह नहीं है।
طُوفُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ ۖ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝	इस लिए के वो तुम्हारे पास बार बार आने जाने वाले हैं, तुम में से एक दूसरे के पास। इसी तरह तुम्हारे लिए अल्लाह आयतों को साफ़ साफ़ बयान करते हैं। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं।
وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا ۚ كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝	और जब तुम में से बच्चे बुलूग की उम्र को पहुँच जाएं, तो उन्हें भी चाहिए के इजाज़त लें जिस तरह के वो इजाज़त लेते थे जो उन से पेहले थे। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें साफ़ साफ़ बयान करते हैं। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और औरतों में से
مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ ۖ وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ۖ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝	वो बैठी हुई औरतें जो निकाह की उम्मीद नहीं रखतीं तो उन पर कोई गुनाह नहीं है के वो अपने कपड़े उतारें इस हाल में के वो ज़ीनत को ज़ाहिर करने वाली न हों। और ये के वो पाकदामन बन कर रहें ये उन के लिए बेहतर है। और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं।
لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى أَنْفُسِكُمْ ۚ وَأَنْ تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ	अन्धे पर कोई हरज नहीं और लंगड़े पर कोई हरज नहीं और बीमार पर कोई हरज नहीं और तुम्हारे अपने ऊपर कोई हरज नहीं इस में के तुम खाओ अपने घरों से या अपने बाप दादाओं के घरों से या अपनी माओं के

أَمْهَاتِكُمْ أَوْ بِيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بِيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ	घरों से या अपने भाइयों के घरों से या अपनी बेहनों के घरों से
أَوْ بِيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بِيُوتِ عَمَّتِكُمْ أَوْ بِيُوتِ	या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामुओं के
أَخْوَالِكُمْ أَوْ بِيُوتِ خَلَتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكَتُمْ مَفَاتِحَهُ	घरों से या अपनी खालाओं के घरों से या उन घरों से जिन की कुन्जियों के तुम मालिक हो
أَوْ صَدِيقِكُمْ ۖ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا	या अपने दोस्तों के घरों से। तुम पर कोई गुनाह नहीं है इस में के तुम खाओ
بِمَيْعَةٍ أَوْ أَشْتَاتٍ ۖ فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا	इकट्ठे या अलग अलग। फिर जब तुम घरों में दाखिल हो तो तुम
عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبَرَكَةٌ	अपने आप पर सलाम करो अल्लाह की तरफ से बरकत वाले उम्दा तहिये
طَيِّبَةً ۖ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ	के तौर पर। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें साफ़ साफ़ बयान करते हैं ताके तुम
تَعْقِلُونَ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ	समझो। ईमान वाले तो वही हैं के जो ईमान लाए हैं अल्लाह पर
وَرَسُولِهِ ۖ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ	और उस के रसूल पर, और जब वो रसूल के साथ होते हैं किसी इज्तिमाई काम पर
لَمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ ۖ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ	तो वो नहीं जाते जब तक के वो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इजाज़त न मांग लें। यकीनन जो आप से इजाज़त मांगते
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ	हैं, यही हैं जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस के रसूल पर। फिर जब वो आप से इजाज़त
فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأَذَنْ لِّمَن شِئْتَ	तलब करें अपने किसी काम के लिए तो आप इजाज़त दे दीजिए उन में से जिसे आप चाहें,
مِّنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝	और उन के लिए अल्लाह से मग़फ़िरत तलब कीजिए। यकीनन अल्लाह बख़्शाने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ

तुम अपने दरमियान रसूल के बुलाने को तुम्हारे एक दूसरे के बुलाने की तरह

بَعْضَاءُ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنْكُمْ

मत बनाओ। यकीनन अल्लाह जानता है उन लोगों को जो तुम में से चुपके से सरक कर

لِوَاذَاءٍ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ

निकल जाते हैं। तो जो अल्लाह के हुक्म की मुखालफ़त करते हैं उन्हें डरना चाहिए

أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ١٣

इस से के उन पर कोई आफ़त आ जाए या उन्हें दर्दनाक अज़ाब पहोंचे।

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ قَدْ يَعْلَمُ

सुनो! यकीनन अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं। यकीनन अल्लाह जानता है

مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ ۚ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُم

उस को जिस पर तुम हो। और जिस दिन वो उस की तरफ़ लौटाए जाएंगे तो वो उन्हें उन के आमाल की ख़बर देगा

بِمَا عَمِلُوا ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ١٤

जो उन्होंने ने किए। और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है।

رُؤُوسُهَا ١

(١٥) سُورَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ (٢٢)

آيَاتُهَا ٤٤

और ६ सूकूअ हैं

सूरह फुरकान मक्का में नाज़िल हुई

उस में ७७ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ

बुलन्द शान वाला है वो अल्लाह जिस ने हक़ और बातिल के दरमियान फैसला करने वाली किताब उतारी अपने बन्दे

لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ۝ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمُوتِ

पर ताके वो तमाम जहान वालों के लिए डराने वाला बने। वो अल्लाह जिस के लिए आसमानों और ज़मीन की

وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ

सल्तनत है और उस ने कोई औलाद नहीं बनाई और उस का सल्तनत में कोई

فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَرَهُ تَقْدِيرًا ۝

शरीक नहीं और उस ने हर चीज़ पैदा की, फिर सब की मिक्दार मुतअय्यन कर रखी है।

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا	और ये अल्लाह के सिवा कई माबूद करार देते हैं, जिन्होंने ने कुछ भी पैदा नहीं किया
وَهُمْ يُخْلُقُونَ وَلَا يَمْلِكُونَ لِأَنْفُسِهِمْ ضَرًّا	बल्के वो खुद पैदा किए गए हैं और अपने जानों के लिए भी किसी नफ़ा नुक़सान के
وَلَا نَفْعًا وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَوَةً	मालिक नहीं हैं और मौत और हयात के भी मालिक नहीं हैं
وَلَا تُشُورًا ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا	और न ज़िन्दा हो कर उठने के मालिक हैं। और काफ़िर लोग केहते हैं के ये तो नहीं है
إِلَّا إِفْكٌ يُفْتَرَىٰ وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ ۝	मगर झूठ जिस को इस नबी ने घड़ लिया है और उस पर दूसरे लोगों ने उस की मदद की है।
فَقَدْ جَاءُوا ظُلْمًا وَ زُورًا ۝ وَقَالُوا آسَاطِيرُ	यकीनन वो जुल्म और झूठी बात लाए हैं। और ये लोग केहते हैं के ये तो अगलों की घड़ी हुई
الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلَىٰ عَلَيْهِ بُكْرَةً	कहानियाँ हैं जिन्हें इस नबी ने लिख लिया है, फिर वही उस पर सुबह व शाम पढ़ी
وَأَصِيلًا ۝ قُلْ أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ	जाती हैं। आप फरमा दीजिए के ये उस ने उतारा है जो छुपे हुए भेद जानता है
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا	आसमानों में और ज़मीन में। यकीनन वो बख़्शने वाला, निहायत रहम
رَحِيمًا ۝ وَقَالُوا مَا لَ هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ	वाला है। और ये कुफ़र केहते हैं के ये कैसा रसूल है के वो खाना
الطَّعَامَ وَ يَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ ۖ لَوْلَا أَنْزَلَ	भी खाता है और बाज़ारों में भी चलता है? उस पर कोई फ़रिशता
إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونُ مَعَهُ نَذِيرًا ۖ أَوْ يُلْقَىٰ	क्यूं नहीं उतारा गया जो उस के साथ डराने वाला होता? या उस की
إِلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ۖ	तरफ़ खज़ाना डाल दिया जाता या उस के लिए कोई बाग़ होता जिस में से वो खाता।

وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ۝ और ज़ालिमों ने कहा के तुम तो एक मसहूर शख्स के पीछे चल पड़े हो।
أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا आप देखिए के उन्होंने ने आप के लिए कैसी मिसालें बयान की हैं, फिर वो गुमराह हो गए,
فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝ تَبَارَكَ الَّذِي अब राह नहीं पा सकते। ऊँची शान वाला है वो अल्लाह
إِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذَلِكَ جَدَّتْ अगर वो चाहे तो आप के लिए इस से बेहतर बागात बना दे
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَ يَجْعَلُ لَكَ जिन के नीचे से नेहरें बेहती हों और आप के लिए महल
قُصُورًا ۝ بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ۖ وَأَعْتَدْنَا बना दे। बल्के उन्होंने ने क़यामत को झुठलाया। और हम ने
لِمَن كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ۝ إِذَا رَأَتْهُمْ उस शख्स के लिए जो क़यामत को झुठलाए आग तय्यार कर रखी है। जब ये आग
مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَبَعُوا لَهَا تَغِيْطًا उन को दूर जगह से देखेगी, तो वो उस आग का गुस्सा और चिल्लाना
وَ زَفِيرًا ۝ وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَبِّقًا مُّقْرَنَيْنِ सुनेंगे। और जब वो उस जहन्नम में तंग जगह में डाले जाएंगे हाथ पैर जकड़े हुए
دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ۝ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا तो वहां मौत की दुआ करेंगे। तो (फ़रिश्ते कहेंगे के) तुम आज एक मौत
وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ۝ قُلْ أَذِلَّكَ خَيْرٌ को न पुकारो, बल्के बहोत सी मौतों को पुकारो। आप फ़रमा दीजिए क्या ये बेहतर है
أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ كَانَتْ या हमेशा की वो जन्नत बेहतर है जिस का मुत्तकियों से वादा किया गया है? जो
لَهُمْ جَزَاءٌ وَاصِرًا ۝ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ उन का बदला और ठिकाना है। उन के लिए उस जन्नत में वो तमाम चीज़ें होंगी जो वो चाहेंगे

خُلِدَيْنِ ۖ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُولًا ۝

हमेशा रहेंगे। अल्लाह के ज़िम्मे ये लाज़िम है ऐसे वादे के तौर पर जिस का सवाल किया जा सकता है।

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ

और जिस दिन अल्लाह उन्हें और जिन चीज़ों की ये इबादत करते हैं अल्लाह को छोड़ कर उन को इकट्ठा करेगा

فَيَقُولُ ءَأَنْتُمْ أَضَلَلْتُمْ عِبَادِي هَؤُلَاءِ

फिर अल्लाह कहेगा क्या तुम ने मेरे इन बन्दों को गुमराह कर रखा था

أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ۚ قَالُوا سُبْحَنَكَ مَا كَانَ

या वो खुद रास्ते से भटक गए थे? माबूद कहेंगे के आप पाक हैं! हमारे लिए

يَنْبَغِي لَنَا أَنْ نَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ

मुनासिब नहीं था के हम आप के अलावा कोई हिमायती

مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا

बनाते, लेकिन आप ने उन को और उन के बाप दादा को आसूदगी अता की यहां तक के वो ये

الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ۝ فَقَدْ كَذَّبُوكُمْ

ज़िक्र भुला बैठे। और वो हलाक होने वाली कौम थी। अब इन माबूदों ने तुम्हारी बातों में तुम्हें झूठा

بِمَا تَقُولُونَ ۚ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا ۚ

ठेहराया, इस लिए अज़ाब हटाने और अपनी नुसरत करने की तुम ताकत नहीं रख सकोगे।

وَمَنْ يَظْلِمْ مِّنْكُمْ نَذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ۝

और जो तुम में से जुल्म करेगा तो हम उसे बड़ा अज़ाब चखाएंगे।

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ

और हम ने आप से पेहले जितने रसूल भेजे

إِلَّا أَنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ

वो सब खाना खाते थे और बाज़ारों में

فِي الْأَسْوَاقِ ۚ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۚ

चलते थे। और हम ने तुम में से एक को दूसरे के लिए आजमाइश (का ज़रिया) बनाया है।

أَتَصْبِرُونَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ۝

क्या तुम सब्र करते हो? और आप का रब सब देख रहा है।

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا

और उन लोगों ने कहा जो हमारी मुलाकात की उम्मीद नहीं रखते के हम पर फरिशते क्यूं नहीं उतारे जाते

الْمَلَكَةِ أَوْ نَرَى رَبَّنَا لَقَدْ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنْفُسِهِمْ

या (फिर ऐसा क्यूं नहीं होता) के हम खुद अपने रब को देख लेते? यकीनन उन्होंने ने अपने आप को बहोत बड़ा समझा

وَعَتَوْا عُتُوًّا كَبِيرًا ۖ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَىٰ

और बहोत बड़ी सरकशी की। जिस दिन वो फरिशतों को देखेंगे तो उस दिन मुजरिमों को खुशी

يَوْمَئِذٍ لِلْمُجْرِمِينَ وَ يَقُولُونَ جَزَاءُ مَحْجُورًا ۖ وَقَدْ مَنَا

नहीं होगी बल्के वो कहेंगे के (खुदाया!) हमें ऐसी पनाह दे के ये हम से दूर हो जाएं। और हम मुतवज्जेह होंगे

إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَنْثُورًا ۖ أَصْحَابُ

उन आमाल की तरफ जो उन्होंने ने किए, फिर हम उस को उड़ता हुवा गुबार (की तरह बेकीमत) बना देंगे। जन्नत

الْحِجَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَ أَحْسَنُ مَقِيلًا ۖ وَيَوْمَ

वाले उस दिन अच्छे होंगे ठिकाने के एतेबार से और ख्वाबगाह के एतेबार से भी अच्छे होंगे। और जिस दिन

تَشَقَّقُ السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلَائِكَةُ تَنْزِيلًا ۖ

आसमान बादल पर से फट जाएगा और लगातार फरिशते उतारे जाएंगे।

الْمَلِكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ لِلرَّحْمَنِ ۖ وَكَانَ يَوْمًا

हकीकी हुकूमत उस दिन रहमान तआला के लिए होगी। और वो दिन काफिरों

عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا ۖ وَيَوْمَ يَعْصُ الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ

पर बड़ा सख्त होगा। और उस दिन ज़ालिम अपने हाथ काटेगा

يَقُولُ يَلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ۖ يُؤْيَلَتِي

कहेगा के काश के मैं रसूल के साथ (दीन की) राह पर लग जाता। हाए अफसोस!

لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ۖ لَقَدْ أَضَلَّنِي

काश के फुलान को मैं दोस्त न बनाता। उस ने तो मुझ को नसीहत के

عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ

मेरे पास पहुँच चुकने के बाद उस से बेहका दिया। और शैतान तो है ही इन्सान को वक़्त पर

خَذُولًا ۖ وَقَالَ الرَّسُولُ يَرَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا

दगा देने वाला। और रसूल कहेंगे ऐ मेरे रब! यकीनन मेरी कौम इस

هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ۝ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ

कुरआन को बिल्कुल ही छोड़ बैठी थी। और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए

عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِينَ ۖ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا ۝

मुजरिम लोगों को दुश्मन बनाया है। और आप का रब हिदायत देने और मदद करने के लिए काफी है।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً

और काफिरों ने कहा के इस नबी पर कुरआन इकट्ठा एक ही मरतबा क्यों नहीं उतारा

وَاحِدَةً ۚ كَذَلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنَاهُ

गया? इसी तरह (हम ने उतारा है) ताके हम उस के ज़रिए आप के दिल को मज़बूत करें और हम ने उस को

تَرْتِيلًا ۝ وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ

ठेहर ठेहर कर पढ़वाया है। और वो आप के पास कोई मिसाल नहीं लाते मगर हम आप को उस का ठीक ठीक जवाब

وَإَحْسَنَ تَفْسِيرًا ۝ الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ

और ज़्यादा वज़ाहत के साथ इनायत कर देते हैं। वो लोग जिन को अपने चेहरों के बल जहन्नम की तरफ

إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝ وَلَقَدْ

ले जाया जाएगा। ये लोग जगह में भी बदतर और रास्ते से भी ज़्यादा भटके हुए हैं। यकीनन

آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ أَخَاهُ هَارُونَ

हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी और हम ने उन के साथ उन के भाई हारून को मददगार

وَزِيرًا ۖ فَقُلْنَا اذْهَبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا

बनाया था। फिर हम ने कहा के तुम दोनों जाओ उस कौम की तरफ जिन्होंने ने हमारी आयतों को

بِآيَاتِنَا فَدَمَرْنَاهُمْ تَدْمِيرًا ۖ وَقَوْمَ نُوحٍ لَّمَا كَذَّبُوا

झुठलाया है। फिर हम ने उन्हें मलयामेट कर दिया। और कौमे नूह को जब उन्होंने ने पैगम्बरों को

الرُّسُلَ أَغْرَقْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ لِلنَّاسِ آيَةً ۖ وَاعْتَدْنَا

झुठलाया, तो हम ने उन को गर्क कर दिया और हम ने उन को इन्सानों के लिए एक निशाने (इबरत) बना दिया। और हम ने

لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ وَعَادًا وَثَمُودًا وَأَصْحَابَ

ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर रखा है। और कौमे आद और समूद और रस वालों को और

الرَّسِّ وَ قُرُونًا بَيْنَ ذَلِكَ كَثِيرًا ۝ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ

उस के दरमियान बहोत सी कौमों को हलाक किया। और हम ने उन में से हर एक को समझाने के लिए मिसालें

عند التّٰميين ۱۲

۲۵

الْأَمْثَالِ ۚ وَكَلَّا تَبَرَّنَا تَتَبِيرًا ﴿۱۹﴾ وَلَقَدْ أَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ

बयान की। और (जब वो न माने तो) हम ने सब को बिल्कुल ही बरबाद कर दिया। और ये (कुम्भारे मक्का) उस बस्ती पर

الَّتِي أُمْطِرَتْ مَطَرِ السَّوْءِ ۖ أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرُونَهَا ۚ

गुजरते रहे हैं जिस पर बहोत बुरी तरह (पथ्थरों की) बारिश बरसाई गई थी। क्या फिर ये उस को देखते नहीं रहे?

بَلْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ نُشُورًا ﴿۲۰﴾ وَإِذَا رَأَوْكَ إِن يَتَّخِذُونَكَ

बल्के ये कब्रों से ज़िन्दा हो कर उठने की उम्मीद नहीं रखते। और जब ये आप को देखते हैं तो आप का मज़ाक़ ही

إِلَّا هُزُوءًا ۚ أَهَذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ﴿۲۱﴾ إِن كَادَ

बनाते हैं। (और केहते हैं) क्या यही वो शख्स है जिस को अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा है? ये शख्स तो करीब था

لِيُضِلَّنَا عَنْ الْهَيْتِنَا لَوْلَا أَن صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۖ وَسَوْفَ

के हमें हमारे माबूदों से गुमराह कर देता अगर हम उस पर मज़बूत न रहते। और अनक़रीब

يَعْلَمُونَ حِينَ يَرُونَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿۲۲﴾

उन्हें मालूम हो जाएगा जब वो अज़ाब देखेंगे के कौन ज़्यादा गुमराह है?

أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ ۖ أَفَأَنْتَ تَكُونُ عَلَيْهِ

क्या आप ने देखा उस शख्स को जिस ने अपना माबूद अपनी ख्वाहिश को बना लिया है? क्या फिर आप उस के

وَكِيلًا ﴿۲۳﴾ أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ۖ

ज़िम्मेदार रह सकते हैं? क्या आप ये समझते हैं के उन में से अक्सर सुनते या समझते हैं?

إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿۲۴﴾ أَلَمْ تَرَ

ये तो सिर्फ चौपाओं की तरह हैं, बल्के उन से भी ज़्यादा गुमराह हैं। क्या आप ने देखा नहीं अपने रब को

إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ۚ

के उस ने साए को कैसे लम्बा किया? अगर वो चाहता तो उस को एक हालत पर ठेहराया हुवा रखता।

ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسُ عَلَيْهِ دَلِيلًا ﴿۲۵﴾ ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا

फिर हम ने उस का रहनुमा सूरज बनाया। फिर हम ने उस को अपनी तरफ

قَبْضًا يَسِيرًا ﴿۲۶﴾ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا

आहिस्ता आहिस्ता समेट लिया। और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिए रात को लिबास (परदे की चीज़)

وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ﴿۲۷﴾ وَهُوَ الَّذِي

और नींद को आराम की चीज़ बनाया और दिन को दोबारा उठ खड़े होने का ज़रिया बनाया। और वही अल्लाह है जो

أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۖ وَأَنْزَلْنَا

खुशखबरी देने के लिए अपनी रहमत (की बारिश) से पेहले हवाएं भेजता है। और हम ने आसमान

مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ۖ لِّنُنْجِيَ بِهِ بَلْدَةً مَّيِّتًا وَنُسْقِيَهُ

से पाक करने वाला पानी उतारा। ताके हम उस के ज़रिए मुर्दा इलाका ज़िन्दा कर दें और वो पानी हम पिलाते हैं

مِمَّا خَلَقْنَا أَنْعَامًا وَأَنَاسِيَّ كَثِيرًا ۖ وَلَقَدْ صَرَّفْنَاهُ

अपनी मखलूक में से चौपाओं को और बहोत से इन्सानों को। यकीनन वो पानी कई तरीकों से उन के दरमियान

بَيْنَهُمْ لِيَذْكُرُوا ۖ فَابَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ۖ

हम ने तकसीम किया ताके वो नसीहत पकड़ें। फिर भी अक्सर लोग नाशुकरी किए बगैर न रहे।

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ تَذِيرًا ۖ فَلَا تُطِيعُ الْكَافِرِينَ

और अगर हम चाहते तो हम हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। तो आप काफिरों का केहना न मानिए

وَجَاهِدْهُمْ بِهِ جِهَادًا كَبِيرًا ۖ وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ

और उन के साथ आप बड़ा जिहाद कीजिए। और वही अल्लाह है जिस ने दो समन्दर मिला कर चलाए,

هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۖ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا

ये मीठा प्यास बुझाने वाला है और ये नमकीन कड़वा है। और हम ने उन दोनों के दरमियान

بَرْزَخًا وَحِجْرًا مَّحْجُورًا ۖ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ

एक आड़ बना दी है और एक मज़बूत रोक रख दी है। और वही अल्लाह है जिस ने पानी से

بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ۖ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ۖ

इन्सान पैदा किया, फिर उस को खानदान वाला और सुसराल वाला बनाया। और तेरा रब कुदरत वाला है।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۖ وَكَانَ

और ये अल्लाह के अलावा ऐसी चीज़ें पूजते हैं जो उन को न नफ़ा दे सकती हैं और न उन को ज़रर पहुँचा सकती हैं

الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ۖ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا

और काफिर अपने रब के खिलाफ मदद करने वाला है। और हम ने आप को सिर्फ़ बशारत देने वाला और डराने

وَنَذِيرًا ۖ قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنْ شَاءَ

वाला बना कर भेजा है। आप फ़रमा दीजिए के मैं तुम से इस पर कोई उजरत नहीं मांगता मगर वो जो चाहे

أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۖ وَتَوَكَّلْ عَلَىٰ الْحَيِّ الَّذِي

के अपने रब की तरफ़ रास्ता पकड़ ले। और आप तवक्कुल कीजिए उस ज़िन्दा ज़ात पर जिसे

لَا يَمُوتُ وَسَيَحْيِيهِمْ ۖ وَكَفَىٰ بِهِ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا ۝۵۸

मौत नहीं आएगी और उस की हम्द के साथ तस्बीह बयान कीजिए। और वो अपने बन्दों के गुनाहों की खबर रखने

الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ

वाला काफी है। वो अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन और वो चीज़ें जो उन के दरमियान में हैं छे दिन में

إَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَنُ فَسَلَّ بِهِ

पैदा कीं, फिर वो अर्श पर मुस्तवी हुवा। जो रहमान है, इस लिए उस के मुतअल्लिक किसी बाखबर से

خَبِيرًا ۝۵۹ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا

पूछ लें। और जब उन से कहा जाता है के रहमान को सज्दा करो तो वो केहते हैं के रहमान क्या चीज़

وَمَا الرَّحْمَنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۝۶۰ تَبَارَكَ

है? क्या हम सज्दा करें उसे जिस का आप हमें हुक्म दें और ये चीज़ उन्हें नफ़रत में और बढ़ाती है। बरतर है

الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا

वो अल्लाह जिस ने आसमान में बुर्ज बनाए और जिस ने आसमान में सूरज

وَقَمَرًا مُنِيرًا ۝۶۱ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً

और रोशन चाँद बनाया। और अल्लाह ही ने रात और दिन को एक दूसरे के पीछे आने जाने वाला बनाया

لِّمَن أَرَادَ أَنْ يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ۝۶۲ وَعِبَادُ الرَّحْمَنِ

उस के लिए जो ग़ौर करना चाहे या शुक्र अदा करना चाहे। और रहमान तआला के बन्दे

الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ

वो हैं जो ज़मीन पर चलते हैं आहिस्तगी से और जब उन से जाहिल लोग मुखातब

الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ۝۶۳ وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ

होते हैं तो वो केह देते हैं अस्सलामु अलैकुम। और जो अपने रब के सामने सज्दा और क़याम की हालत

سُجَّدًا وَقِيَامًا ۝۶۴ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا

में रात गुज़ारते हैं। और जो यूँ केहते हैं के ऐ हमारे रब! हम से जहन्नम का

عَذَابَ جَهَنَّمَ ۚ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝۶۵ إِنَّهَا سَاءَتْ

अज़ाब हटा दे। यकीनन उस का अज़ाब चिमट जाने वाला है। यकीनन जहन्नम ठेहेरने और

مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝۶۶ وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا

रेहने की बुरी जगह है। और (रहमान तआला के बन्दे वो हैं के) जब वो खर्च करते हैं तो इसराफ नहीं करते

وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ﴿۱۷﴾ وَالَّذِينَ

और तंगी नहीं करते और उन का खर्च उस के दरमियान ऐतेदाल से होता है। और जो

لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي

अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद नहीं पुकारते और उस जान को क़त्ल नहीं करते जिसे

حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ

अल्लाह ने हराम करार दिया मगर हक़ में और जो ज़िना नहीं करते। और जो ऐसा करेगा तो वो गुनाह

أَثَامًا ۖ يُضَعَّفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَيَخْلُدُ

पाएगा। उस के लिए अज़ाब क़यामत के दिन दुगना किया जाएगा और वो उस अज़ाब में

فِيهِ مُهَانًا ۖ إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا

ज़लील हो कर पड़ा रहेगा। मगर जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किए

فَأُولَٰئِكَ يَبْدِلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ۖ وَكَانَ اللَّهُ

तो अल्लाह उन की बुराइयाँ नेकियों से बदल देगा। और अल्लाह बहोत ज़्यादा

غَفُورًا رَحِيمًا ۖ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ

बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और जो तौबा करे और नेक अमल करे तो यक़ीनन वो अल्लाह

إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ۖ وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ ۚ وَإِذَا مَرُّوا

की तरफ़ तौबा कर रहा है। और (रहमान के बन्दे वो हैं) जो बुराई में शरीक नहीं होते और जब वो लगविय्यात पर

بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ۖ وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ

गुज़रते हैं तो वक़ार के साथ गुज़र जाते हैं। और जब उन्हें अपने रब की आयतों के साथ नसीहत की जाती है

لَمْ يَخْرُؤْا عَلَيْهَا ضُمًّا وَعُيُيَانًا ۖ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ

तो उस पर बेहरे और अन्धे हो कर नहीं गिरते। और जो केहते हैं के

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ

ऐ हमारे रब! हमारे लिए अपनी बीवियों और अपनी औलाद की तरफ से आँखों की ठन्डक अता फ़रमा

وَأَجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ۖ أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ

और हमें मुत्तकियों का पेशवा बना। ये वो हैं जिन्हें उन के सब्र के इवज़ (जन्नत की) बालाई मन्ज़िलें

بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ۖ خُلِدِينَ

मिलेंगी और वहाँ तहीय्या और सलाम के साथ सब उन्हें मिलने आएंगे। वो उन में हमेशा

فِيهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿۷۹﴾ قُلْ مَا يَعْبُؤُا بِكُمْ رَبِّي

रहेगो। वो जन्नत ठेहरने और रेहने कि लिए कितनी अच्छी है। आप फ़रमा दीजिए के मेरे रब को तुम्हारी कोई

لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ﴿۸۰﴾

परवाह नहीं अगर तुम न भी पुकारो। अब तुम तो झुठला चुके, फिर अनक़रीब ये अज़ाब चिपक कर रहेगा।

رُكُوعًا ۱۱

(۲۶) سُورَةُ الشُّعَرَاءِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ۲۲

और ११ रूकूअ हैं

सूरह शुअरा मक्का में नाज़िल हुई

उस में २२७ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

طَسَمَ ۝ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿۱﴾ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ

ता सीन मीमा। ये साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब की आयतें हैं। शायद आप अपने को हलाक

نَفْسِكَ إِلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿۲﴾ إِنْ نَشَأْ نُذِرْ عَلَيْهِمْ

कर बैठें इस वजह से के वो ईमान नहीं लाते। अगर हम चाहें तो उन पर

مِّنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خَاضِعِينَ ﴿۳﴾

आसमान से कोई मोअजिज़ा उतार दें, फिर उन की गर्दनें उस के सामने झुकी रेह जाएं।

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ ذِكْرِ مِّنَ الرَّحْمَنِ مُحْدَثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ

और उन के पास रहमान की तरफ से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वो उस से

مُعْرِضِينَ ﴿۴﴾ فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنْتَبُوا مَا كَانُوا بِهِ

ऐराज़ करते हैं। फिर उन्होंने ने झुठलाया, फिर उन के पास उस की हकीकत आ जाएगी जिस का वो इस्तिहज़ा

يَسْتَهْزِءُونَ ﴿۵﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنْبَتْنَا

किया करते थे। क्या उन्होंने ने देखा नहीं ज़मीन की तरफ़ के हम ने ज़मीन

فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ﴿۶﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۚ وَمَا

में कितने खूबसूरत जोड़े उगाए। यकीनन उस में निशानी है। और

كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿۷﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ

उन में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं। और यकीनन आप का रब वो ज़बर्दस्त है,

الرَّحِيمُ ﴿۸﴾ وَإِذْ نَادَى رَبُّكَ مُوسَىٰ إِنَّ اتِّ الْقَوْمِ

निहायत रहम वाला है। और जब आप के रब ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को पुकारा के आप ज़ालिम कौम के पास

الظَّالِمِينَ ۝ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۖ أَلَا يَتَّقُونَ ۝ قَالَ رَبِّ

जाइए। फिरऔन की कौम के पास। क्या वो डरते नहीं हैं? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब!

إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝ وَيَضِيقُ صَدْرِي

यकीनन मैं डरता हूँ इस से के वो मुझे झुठलाएं। और मेरा सीना तंग होता है

وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَرُونَ ۝ وَلَهُمْ عَلَىٰ

और मेरी ज़बान चलती नहीं, इस लिए हाखून की तरफ रिसालत भेजिए। और उन का मुझ पर

ذَنْبٌ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۝ قَالَ كَلَّا ۚ فَادْهَبَا

एक गुनाह है, तो मैं डरता हूँ के वो मुझे क़त्ल कर देंगे। अल्लाह ने फरमाया के हरगिज़ नहीं। फिर आप दोनों

بَايْتِنَا إِنَّا مَعَكُمْ مُسْتَمِعُونَ ۝ فَاتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا

जाओ हमारे मोअजिज़ात ले कर, यकीनन हम तुम्हारे साथ सुन रहे हैं। फिर तुम जाओ फिरऔन के पास, फिर उस से

إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَنْ أَرْسِلَ مَعَنَا بَنِي

कहो के हम रब्बुल आलमीन के भेजे हुए पैग़म्बर हैं। तो तू हमारे साथ बनी इस्राईल को

إِسْرَءِيلَ ۝ قَالَ أَلَمْ تُرَبِّكْ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ

भेज दे। फिरऔन बोला क्या हम ने तुझे अपने यहाँ बचपन में नहीं पाला और तू

فِينَا مِنْ عُمَرِكَ سِنِينَ ۝ وَفَعَلْتَ فَعَلْتَكَ الْبَنَىٰ

हमारे अन्दर अपनी उम्र के कई साल नहीं रहा? और तू ने की वो हरकत जो

فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝ قَالَ فَعَلْتُهَا إِذَا وَأَنَا

की और तू नाशुकरी करने वालों में से था? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं ने वो हरकत की उस वक्त

مِنَ الصَّابِرِينَ ۝ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ

जब के मैं नावाक़िफ़ था। फिर मैं तुम से भाग गया जब मैं तुम से डरा तो मुझे

لِي رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ وَتِلْكَ

मेरे रब ने नुबूव्वत अता की और मुझे रसूलों में से बना दिया। और ये कोई

نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَىٰ أَنْ عَبَّدَتْ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۝

एहसान है जो तू मुझ पर जतला रहा है उस के मुक़ाबले में के तू ने बनी इस्राईल को गुलाम बना रखा है?

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ

फिरऔन पूछने लगा और तमाम जहानों की परवरिश करने वाली चीज़ क्या है? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के वो आसमानों

وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ إِنَّ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ﴿٢٣﴾ قَالَ لِنَنْ

और ज़मीन और उन चीज़ों का रब है जो उन के दरमियान में हैं, अगर तुम यकीन रखते हो। फिरऔन ने उन से

حَوْلَهُ إِلَّا تَسْتَمِعُونَ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمْ

कहा जो उस के इर्द गिर्द थे, क्या तुम सुनते नहीं हो? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया वो तुम्हारा और तुम्हारे पेहले

الْأَوَّلِينَ ﴿٢٥﴾ قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ

बाप दादाओं का रब है। फिरऔन बोला के यकीनन तुम्हारा ये पैग़म्बर जो तुम्हारी तरफ रसूल बना कर भेजा गया है

لَجُنُودٌ ﴿٢٦﴾ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ

पागल है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के वो तो मशरिफ और मगरिब और उन दो के दरमियान की तमाम चीज़ों का

إِنَّ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٧﴾ قَالَ لِنِ اتَّخَذَتِ الْهَآ غَيْرِي

रब है, अगर तुम अक़ल रखते हो। फिरऔन बोला के अगर तुम मेरे अलावा किसी को माबूद बनाओगे तो

لَجَعَلْتُكَ مِنَ الْمَسْجُونِينَ ﴿٢٨﴾ قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ

मैं तुम्हें कैदियों में से बना दूंगा। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के क्या अगर मैं तेरे पास कोई रोशन दलील

مُبِينٌ ﴿٢٩﴾ قَالَ فَاتِّبِعْهُ ۖ إِنَّ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٣٠﴾

लाऊँ, तब भी? फिरऔन बोला के फिर तू उस को पेश कर अगर तू सच्चा है।

فَأَلْقَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿٣١﴾ وَ نَزَعَ يَدَهُ

फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपना असा डाला, तो फौरन वो साफ़ अज़दहा बन गया। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपना हाथ खींचा

فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّظَرِ ﴿٣٢﴾ قَالَ لِلْمَلَأِ حَوْلَهُ

तो उसी वक़्त वो देखने वालों के सामने रोशन बन गया। फिरऔन ने दरबारियों से कहा जो उस के इर्द गिर्द थे,

إِنَّ هَذَا السَّحَرُ عَلِيمٌ ﴿٣٣﴾ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِّنْ أَرْضِكُمْ

यकीनन ये शख्स ज़रूर माहिर जादूगर है। जो चाहता है के तुम्हें तुम्हारे मुल्क से अपने जादू के ज़ोर से निकाल

بِسِحْرِهِ ۚ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿٣٤﴾ قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَبْعَثْ

दे। फिर तुम क्या मशवरा देते हो? दरबारियों ने कहा के उसे और उस के भाई को मुहलत दो और शहरों

فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿٣٥﴾ يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَابٍ عَلِيمٍ ﴿٣٦﴾

में जादूगरों को इकट्ठा करने वाले भेज दो। जो तुम्हारे पास हर माहिर जादूगर को ले आएँ।

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٣٧﴾ وَقِيلَ

फिर जादूगर जमा किए गए मुकर्ररा दिन के मुकर्ररा वक़्त पर। और लोगों से

لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُجْتَمِعُونَ ﴿۲۸﴾ لَعَلَّنا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ	कहा गया, क्या तुम जमा हो गए? ताके हम जादूगरों का इत्तिबा करें
إِنْ كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿۲۹﴾ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا	अगर वो ग़ालिब रहें। फिर जब जादूगर आए तो उन्होंने ने
لِفِرْعَوْنَ أَیْنَ لَنَا لَاجِرًا إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿۳۰﴾	फिरऔन से कहा क्या हमें मज़दूरी मिलेगी अगर हम ग़ालिब रहेंगे?
قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذَا لَبِثَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿۳۱﴾ قَالَ لَهُمْ مُوسَى	फिरऔन बोला के जी हैं! और तुम उस वक़्त मुक़र्रबिन में शामिल कर दिए जाओगे। उन से मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया
اَلْقُوا مَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ ﴿۳۲﴾ فَالْقُوا حِبَالَهُمْ وَعَصِيَّهُمْ	के तुम डालो जो तुम डालने वाले हो। तो उन्होंने ने अपनी रस्सियों और अपनी लाठियों को डाला
وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ﴿۳۳﴾ فَالْقَى	और उन्होंने ने कहा के फिरऔन की इज़ज़त की क़सम! यकीनन हम ही ग़ालिब रहेंगे। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपना
مُوسَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿۳۴﴾ فَالْقَى	असा डाला, तो अचानक वो निगलने लगा उन चीज़ों को जो वो झूठ बना कर लाए थे। फिर
السَّحَرَةُ سَجِدِينَ ﴿۳۵﴾ قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿۳۶﴾	जादूगर सज्दे में गिर गए। केहने लगे, हम ईमान लाए तमाम जहानों के रब पर।
رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ﴿۳۷﴾ قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ	मूसा और हारून के रब पर। फिरऔन ने पूछा क्या तुम उस पर ईमान लाए इस से पेहले के मैं तुम्हें
أَنْ أَدْنَى لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمْ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ	इजाज़त दूँ? यकीनन मूसा तुम में सब से बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखलाया।
فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ لَا قُطْعَانَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ	तो अनक़रीब तुम्हें पता चल जाएगा। मैं तुम्हारे हाथ और पैर जानिबे मुख़ालिफ़ से काट
مَنْ خَلَا فِي وَلَا وَصَلَبَّكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿۳۸﴾ قَالُوا لَا ضَيْرَ	दूँगा और तुम सब को सूली पर चढ़ाऊँगा। उन्होंने ने कहा के नुक़सान कोई नहीं।
إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ﴿۳۹﴾ إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لَنَا	यकीनन हम तो अपने रब की तरफ पलट कर जाएँगे। यकीनन हम तो इस का लालच रखते हैं के हमारा रब हमारी

٢٦

رَبَّنَا خَطِيئَتَا أَنْ كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَأَوْحَيْنَا

ख़ताएं बख़्शा दे के हम सब से पेहले ईमान लाने वाले हैं। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम)

إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي إِنَّكَ مُتَّبَعُونَ ۝

को हुक्म दिया के मेरे बन्दों को ले कर रात के वक़्त निकल जाइए, इस लिए के तुम्हारा पीछा किया जाएगा।

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۝ إِنَّ هَؤُلَاءِ

चुनांचे फिरऔन ने शहरों में जमा करने वालों को भेजा। के यकीनन ये तो

لَشَرَذِمَةٌ قَلِيلُونَ ۝ وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَائِظُونَ ۝

एक छोटा सा गिरोह है। और उन्होंने ने हमें गुस्सा दिलाया है।

وَ إِنَّا لَجَمِيعٌ حَذِرُونَ ۝ فَأَخْرَجْنَاهُمْ مِنْ جَدَّتِ

और यकीनन हम इकट्ठे हो कर ही डरा देंगे। फिर हम ने उन्हें बागात से और चशमों

وَعُيُونٍ ۝ وَكُنُوزٍ وَ مَقَامٍ كَرِيمٍ ۝ كَذَلِكَ

से निकाला। और खज़ानों से और उम्दा रहने की जगहों से। इसी तरह। और हम

وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ۝ فَاتَّبَعُوهُمْ مُشْرِقِينَ ۝

ने उन चीज़ों का वारिस बनी इस्राईल को बनाया। फिर फिरऔनियों ने उन का पीछा किया सूरज निकलते हुए।

فَلَمَّا تَرَاءَ الْجَمْعَيْنِ قَالَ أَصْحَابُ مُوسَىٰ إِنَّا لَنَدْرُكُونَ ۝

फिर जब दोनों जमाअतों ने एक दूसरे को देखा तो मूसा (अलैहिस्सलाम) के साथी केहने लगे यकीनन हम तो पकड़ लिए गए।

قَالَ كَلَّاهُ ۝ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۝ فَأَوْحَيْنَا

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया हरगिज़ नहीं। यकीनन मेरे साथ मेरा रब है, अनक़रीब वो मुझे रास्ता दिखाएगा। तो हम ने

إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ ۖ فَانْفَلَقَ فَكَانَ

मूसा (अलैहिस्सलाम) को हुक्म दिया के अपना असा समन्दर पर मारिए। तो समन्दर फट गया और हर

كُلٌّ فِرْقٍ كَالظُّودِ الْعَظِيمِ ۝ وَأَرْزَلْنَا ثَمَّ الْآخَرِينَ ۝

हिस्सा अज़ीम पहाड़ की तरह हो गया। और हम ने वहाँ दूसरों को क़रीब पहोंचा दिया।

وَأَنْجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ۝ ثُمَّ أَغْرَقْنَا

और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) और उन तमाम को जो आप के साथ थे नजात दी। फिर हम ने दूसरों को

الْآخَرِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ

ग़र्क़ कर दिया। यकीनन उस में इबरत है। और उन में से अक्सर ईमान लाने वाले

مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ وَاتْلُ

नहीं थे। और यकीनन तेरा रब वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। और उन के सामने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَاهِيمَ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ۝

का किस्सा तिलावत कीजिए। जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने अब्बा और अपनी कौम से पूछा किन चीज़ों की तुम इबादत

قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظْلُ لَهَا عَافِينَ ۝ قَالَ هَلْ

करते हो? वो बोले के हम इबादत करते हैं बुतों की, फिर हम उस पर जमे रहते हैं। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ۝ أَوْ يَنْفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ۝

क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारते हो? या तुम्हें नफ़ा दे सकते हैं या ज़रर पहुँचा सकते हैं?

قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ۝ قَالَ

वो बोले बल्के हम ने हमारे बाप दादा को इसी तरह करते पाया। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम

أَفَرَأَيْتُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ۝ أَنْتُمْ وَأَبَاؤُكُمْ

ने देखा जिन चीज़ों की इबादत करते थे। तुम और तुम्हारे गुज़श्ता

الْأَقْدَمُونَ ۝ فَاتَّهَمُ عَدُوٌّ لِّي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝

आबा व अजदादा। तो यकीनन ये मेरे दुश्मन हैं सिवाए तमाम जहानों के रब के।

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ۝ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي

जिस ने मुझे पैदा किया, वो मुझे रास्ता दिखाता है। और वही अल्लाह मुझे खाना

وَيَسْقِينِي ۝ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِي ۝ وَالَّذِي

पीना देता है। और जब मैं बीमार होता हूँ तो वो मुझे शिफा देता है। और वही मुझे मौत

يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِيَنِي ۝ وَالَّذِي أَطْعَمُنِي أَنْ يَقْبَلَنِي

देगा, फिर मुझे ज़िन्दा करेगा। और वही अल्लाह है जिस से मुझे तवक्कुअ है के वो मेरी ख़ताएं

خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ۝ رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَالْحَقُّنِي

हिसाब के दिन बख़्श देगा। ऐ मेरे रब! मुझे हुक्म अता फरमा और मुझे सुलहा

بِالصَّالِحِينَ ۝ وَاجْعَلْ لِّي لِسَانَ صِدْقٍ

के साथ मिला दे। और मेरा ज़िक्र खैर पीछे आने वालों में

فِي الْآخِرِينَ ۝ وَاجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ۝

रख दे। और मुझे जन्नते नईम के वुरसा में से बना दे।

وَأَغْفِرْ لِرَبِّي إِنَّهُ كَانَ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٨٦﴾ وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ

और तू मेरे अब्बा की मग़फ़िरत कर दे, यकीनन वो गुमराह लोगों में से था। और तू मुझे उस दिन ख़ुश न करना

يُبْعَثُونَ ﴿٨٧﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ﴿٨٨﴾ إِلَّا مَنْ

जिस दिन मुर्दे क़ब्रों से ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे। जिस दिन माल और बेटे नफ़ा नहीं देंगे। मगर वो शख्स

أَتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٩﴾ وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٩٠﴾

जो अल्लाह के पास क़ल्बे सलीम ले कर आया। और जन्नत मुत्तकियों के करीब कर दी जाएगी।

وَبَرَزَتِ الْجَحِيمُ لِلْغَوِينَ ﴿٩١﴾ وَقِيلَ لَهُمْ أَيُّمَا كُنْتُمْ

और जहन्नम गुमराहों के सामने कर दी जाएगी। और उन से कहा जाएगा के कहाँ हैं वो माबूद

تَعْبُدُونَ ﴿٩٢﴾ مِنْ دُونِ اللَّهِ هَلْ يَنْصُرُونَكُمْ

जिन की तुम अल्लाह के अलावा इबादत करते थे? क्या वो तुम्हारी मदद या अपना बचाव कर

أَوْ يَنْتَصِرُونَ ﴿٩٣﴾ فَكَبِكُوا فِيهَا هُمْ وَالْغَاوُونَ ﴿٩٤﴾ وَجُنُودُ

सकते हैं? फिर उस में औंधे मुँह डाल दिए जाएंगे, वो भी और तमाम सरकश भी। और इबलीस

إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ﴿٩٥﴾ قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ﴿٩٦﴾

के तमाम लशकर भी। वो कहेंगे इस हाल में के वो जहन्नम में आपस में झगड़ रहे होंगे।

تَاللَّهِ إِنْ كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٩٧﴾ إِذْ نُسَوِّكُمْ بِرَبِّ

अल्लाह की कसम! यकीनन हम खुली गुमराही में थे। जब के हम रब्बुल आलमीन के साथ (शुरका को) बराबर

الْعَالَمِينَ ﴿٩٨﴾ وَمَا أَضَلَّنَا إِلَّا الْمَجْرُمُونَ ﴿٩٩﴾ فَمَا لَنَا

करार देते थे। और हमें तो उन मुजरिमों ने ही गुमराह किया है। फिर हमारा न कोई

مِنْ شَافِعِينَ ﴿١٠٠﴾ وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَوْ أَنَّ لَنَا

सिफारिश करने वाला है। और न कोई गुमख़्वार दोस्त है। तो काश के हमारे लिए दुनिया में पलट कर

كَرَّةً فَكَوْنُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٢﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ط

जाना हो तो हम ईमान लाने वालों में से हो जाएं। यकीनन उस में इबरात है।

وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ

और उन (कुफ़र) में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं। और यकीनन तेरा रब वो ज़बर्दस्त है,

الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾ إِذْ قَالَ

निहायत रहम वाला है। इसी तरह नूह (अलैहिस्सलाम) की कौम ने रसूलों को झुठलाया। जब उन से

لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ

उन के भाई नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम डरते नहीं हो? यकीनन मैं तुम्हारा अमानतदार

أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ

रसूल हूँ। तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। और मैं तुम से इस पर किसी उजरत का

مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٨﴾ فَاتَّقُوا

सवाल नहीं करता। मेरी उजरत तो सिर्फ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। तो तुम अल्लाह

اللَّهِ وَأَطِيعُوا ﴿١٠٩﴾ قَالُوا أَنْتُمْ لَكُمْ وَاتَّبَعَكَ

से डरो और मेरा कहना मानो। वो बोले क्या हम आप पर ईमान लाएं हालांकि रज़ील लोगों ने आप का

الْأَرْدَلُونَ ﴿١١٠﴾ قَالَ وَمَا عَلَيَّ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١१﴾

इत्तिबा किया है? नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के और मुझे क्या मालूम वो काम जो वो करते थे।

إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَى رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١२﴾ وَمَا أَنَا

उन का हिसाब तो सिर्फ मेरे रब के ज़िम्मे है, काश तुम समझो। और मैं ईमान लाने वालों

بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١३﴾ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١١४﴾ قَالُوا

को धुतकारने वाला नहीं हूँ। मैं तो सिर्फ साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। उन्होंने ने कहा

لَيْنَ لَمْ تَنْتَهُ يَنْوُحْ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١५﴾ قَالَ

के ऐ नूह! अगर तुम बाज़ न आए, तो तुम्हें पथर मार मार कर हलाक कर दिया जाएगा। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

رَبِّ إِنْ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١६﴾ فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا

ऐ मेरे रब! यकीनन मेरी कौम ने मुझे झुठलाया। अब तू मेरे और उन के दरमियान फैसला कर दे

وَوَجِّئْ وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١७﴾ فَانْجَيْنَهُ

और बचा ले मुझे और उन को जो मेरे साथ ईमान लाए हैं। फिर हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को नजात दी

وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلِكِ السَّحُونَ ﴿١١८﴾ ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدَ

और उन लोगों को जो आप के साथ भरी हुई कशती में थे। फिर हम ने बाकी लोगों को उस के बाद

الْبَقِيَّةِ ﴿١١٩﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ

ग़र्क़ कर दिया। यकीनन उस में इबरत है। और उन (कुफ़ार) में से अक्सर ईमान लाने

مُؤْمِنِينَ ﴿١२०﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١२१﴾ كَذَّبَتْ

वाले नहीं हैं। और यकीनन तेरा रब अलबत्ता वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। कौमे आद

عَادُ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ هُودُ	ने पैगम्बरों को झुठलाया। जब उन के भाई हूद (अलैहिस्सलाम) ने उन से फरमाया
أَلَا تَتَّقُونَ ۝ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ	क्या तुम डरते नहीं हो? यकीनन मैं तुम्हारा अमानतदार रसूल हूँ। तो अल्लाह से डरो
وَاطِيعُونَ ۝ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ	और मेरा केहना मानो। और मैं तुम से इस पर किसी उजरत का सवाल नहीं करता। मेरी उजरत तो
إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً	सिर्फ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। क्या तुम हर टीले पर निशान तामीर करते हो अबस काम करते
تَعْبُونَ ۝ وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَكُمْ تَخْلُدُونَ ۝	हुए? और तुम कारखाने बनाते हो, शायद तुम्हें हमेशा रहेना है।
وَإِذَا بَطِشْتُمْ بَطِشْتُمْ جَبَّارِينَ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ	और जब किसी को पकड़ते हो तो ज़ालिम बन कर पकड़ते हो। अब अल्लाह से डरो
وَاطِيعُونَ ۝ وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ ۝	और मेरा केहना मानो। और उस अल्लाह से डरो जिस ने तुम्हारी इमदाद की उन चीज़ों से जो तुम जानते हो।
أَمَدَّكُمْ بِالنَّعَامِ وَبَنِينَ ۝ وَجَنَّتِ وَعُيُونٌ ۝ إِنِّي	उस ने तुम्हारी चौपाओं और बेटों, और बागात और चशमों के ज़रिए इमदाद की। यकीनन मैं
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قَالُوا سَوَاءٌ	तुम पर एक भारी दिन के अज़ाब से डरता हूँ। वो बोले हम पर
عَلَيْنَا أَوْعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَعَّيْنِ ۝ إِنْ هَذَا	बराबर है आप हमें नसीहत करें या न करें। ये तो
إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ ۝ فَكَذَّبُوهُ	सिर्फ़ पेहले लोगों की आदतें हैं। और हम पर तो अज़ाब आएगा नहीं। तो उन्होंने ने हूद (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया,
فَاهْلَكْنَاهُمْ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ	फिर हम ने उन्हें हलाक कर दिया। यकीनन उस में इबरत है। और उन (कुफ़ार) में से अक्सर ईमान लाने
مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ كَذَّبَتْ	वाले नहीं हैं। और यकीनन तेरा रब अलबत्ता वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। कौमे समूद

ثُمَّ الْوَسْلَيْنِ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ صَالِحٌ

ने पैगम्बरों को झुठलाया। जब उन से उन के भाई सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

أَلَا تَتَّقُونَ ۚ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ

क्या तुम डरते नहीं हो? यकीनन मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। तो अल्लाह से डरो

وَاطِيعُونَ ۚ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ

और मेरी इताअत करो। और मैं तुम से इस पर किसी उजरत का सवाल नहीं करता।

إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ أَتُتْرَكُونَ فِي

मेरी उजरत तो सिर्फ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। क्या तुम छोड़ दिए जाओगे

مَا هُنَا أَمِينٌ ۚ فِي جَنَّتٍ وَعُيُونٍ ۚ وَ زُرُوعٍ

यहाँ की नेअमतों में अमन से? बागात और चशमों में और खेतियों

وَ نَخْلٍ طَلْعَهَا هَاضِمٌ ۚ وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا

और खजूर के दरख्तों में जिन के ताज़ा फल मुलायम (नर्म) हैं। और तुम महारत से पहाड़ तराश कर

فَرِهِينَ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَ اطِيعُونَ ۚ وَلَا تُطِيعُوا

घर बनाते हो। फिर अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। और हद से तजावुज़ करने

أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ۚ الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ

वालों का केहना मत मानो। जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं और इस्लाह

وَلَا يُصْلِحُونَ ۚ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۚ مَا أَنْتَ

नहीं करते। वो बोले के तुम पर तो जादू कर दिया गया है। तुम नहीं हो

إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَأْتِ بَآيَةٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۚ

मगर हम जैसे एक इन्सान। इस लिए तुम मोअजिज़ा ले आओ अगर तुम सच्चों में से हो। सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

قَالَ هَذِهِ نَاقَةٌ لَّهَا شَرْبٌ وَلَكُمْ شَرْبٌ يَوْمَ مَعْلُومٍ ۚ

के ये ऊँटनी है, इस के लिए एक पीने की बारी है और तुम्हारे लिए एक मुक़र्रर दिन की पीने की बारी है।

وَلَا تَسُوْهَا بِسُوْءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۚ

और उसे बुराई से मत छूना, वरना तुम्हें भारी दिन का अज़ाब पकड़ लेगा।

فَعَقَرُوهَا فَاصْبَحُوا نَدِيمِينَ ۚ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۖ

फिर उन्होंने ने उस के पैर काट दिए, फिर वो नादिम हुए। फिर उन को अज़ाब ने पकड़ लिया।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿۱۵۸﴾

यकीनन उस में इबरत है। और उन (कुपफार) में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

۱۵۸

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿۱۵۹﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ

और यकीनन आप का रब अलबल्ला वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। कौमे लूत ने पैगम्बरों को

الْمُرْسَلِينَ ﴿۱۶۰﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطُ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿۱۶۱﴾

झुठलाया। जब उन से उन के भाई लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम डरते नहीं हो?

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿۱۶۲﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا

यकीनन मैं तुम्हारा अमानतदार रसूल हूँ। तो अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ

और मैं तुम से इस पर किसी उजरत का सवाल नहीं करता। मेरी उजरत तो सिर्फ रब्बुल आलमीन के जिम्मे

الْعَالَمِينَ ﴿۱۶۳﴾ أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿۱۶۴﴾

है। क्या तुम मर्दों के पास आते हो? तमाम जहान वालों में से (किसी को ऐसा करते देखा?)

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَرْوَاحِكُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ

अपनी बीवियाँ छोड़ कर, जो तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए पैदा की हैं। बल्के तुम

قَوْمٌ عَادُونَ ﴿۱۶۵﴾ قَالُوا لَيْنَ لَمْ تَنْتَهُ يَلُوطُ لَتَكُونَنَّ

ऐसी कौम हो जो हद से तजावुज़ करती है। वो बोले ऐ लूत! अगर तुम बाज़ न आए तो निकाल दिए

مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿۱۶۶﴾ قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ﴿۱۶۷﴾ رَبِّ

जाओगे। लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यकीनन मैं तुम्हारे इस अमल से शदीद नफरत रखने वालों में से हूँ। ऐ मेरे

يَحْيَىٰ وَاهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿۱۶۸﴾ فَخَيَّنَهُ وَاهِلُهُ أَجْمَعِينَ ﴿۱۶۹﴾

रब! तू नजात दे मुझे और मेरे मानने वालों को इस हरकत से जो वो कर रहे हैं। फिर हम ने उन्हें और उन के

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَيْرِينَ ﴿۱۷۰﴾ ثُمَّ دَمَرْنَا الْآخَرِينَ ﴿۱۷१﴾

मानने वालों को, सब को नजात दी। मगर बुढ़िया जो हलाक होने वालों में रहे गई। फिर हम ने दूसरों को मलयामेट

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ﴿۱७२﴾

कर दिया। और हम ने उन पर पथ्थर बरसाए। फिर उन की बारिश बुरी थी जिन को डराया गया था।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿۱७३﴾ وَإِنَّ

यकीनन इस में इबरत है। और उन (कुपफार) में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं। और यकीनन

رَبِّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿۱۴۵﴾ كَذَّبَ أَصْحَابُ لَيْكَةِ

तेरा रब अलबत्ता वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। अयका वालों ने पैगम्बरों को

الْمُرْسَلِينَ ﴿۱۴۶﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿۱४६﴾

झुठलाया। जब उन से शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम डरते नहीं हो?

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿۱४७﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا

यकीनन मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। तो अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجَرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ

और मैं तुम से इस पर किसी उजरत का सवाल नहीं करता। मेरी उजरत तो सिर्फ़ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे

الْعَالَمِينَ ﴿۱४८﴾ أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ﴿۱४८﴾

है। कैल (व साअ) पूरा भर कर दो और खसारा पहुँचाने वालों में से मत बनो।

وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ﴿۱४९﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ

और सीधी तराजू से तोलो। और लोगों को उन की चीज़ें कम कर के

أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿۱५०﴾ وَاتَّقُوا

मत दो और ज़मीन में फसाद फैलाते हुए मत फिरो। और डरो तुम

الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأُولِينَ ﴿۱५१﴾ قَالُوا إِنَّمَا

उस अल्लाह से जिस ने तुम्हें और पेहली कौमों को पैदा किया। वो बोले बस

أَنْتَ مِنَ الْمُسْحَرِينَ ﴿۱५२﴾ وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

तुम पर तो जादू कर दिया गया है। और तुम भी तो हम जैसे एक इन्सान ही हो

وَإِنْ نَظُنُّكَ لَمِنَ الْكَذِبِينَ ﴿۱५३﴾ فَاسْقِطْ عَلَيْنَا كِسْفًا

और यकीनन हम तुम्हें झूठों में से समझते हैं। इस लिए हम पर आसमान के टुकड़े

مِّنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿۱५४﴾ قَالَ رَبِّ

आप गिरा दीजिए अगर तुम सच्चों में से हो। शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मेरा रब

أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿۱५५﴾ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابٌ

ख़ूब जानता है जो तुम करते हो। फिर उन्होंने ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया, तो उन को सायबान के दिन

يَوْمِ الظُّلَّةِ إِنَّهُ كَانَ عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿۱५६﴾ إِنَّ

के अज़ाब ने आ पकड़ा। यकीनन वो भारी दिन का अज़ाब था। यकीनन

فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿۱۸﴾

उस में इबारत है। और उन (कुपफार) में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

ع ۱۸

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿۱۹﴾ وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ

और यकीनन तेरा रब अलबत्ता वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। और यकीनन ये कुरआन रब्बुल आलमीन

رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿۲۰﴾ نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ﴿۲۱﴾

की तरफ़ से उतारा गया है। उस को ले कर रूहुल अमीन उतरे हैं।

عَلَى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنْذِرِينَ ﴿۲۲﴾ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ

आप के दिल पर (उतारा) ताके आप डराने वालों में से हों। जो सलीस अरबी ज़बान

مُبِينٍ ﴿۲۳﴾ وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿۲۴﴾ أَوَلَمْ يَكُنْ

में है। और यकीनन ये पेहलों की किताबों में भी था। क्या उन के लिए ये

لَهُمْ آيَةٌ أَنْ يَعْلَمَهُ عُلَمَاؤُا بَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿۲۵﴾

निशानी नहीं है के उसे बनी इस्राईल के उलमा भी जानते हैं?

وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ﴿۲۶﴾ فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ

और अगर हम इसे अजमियों में से किसी एक पर उतारते, फिर वो उसे उन के सामने पढ़ता,

مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿۲۷﴾ كَذَلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ

तब भी वो उस पर ईमान न लाते। इसी तरह ये इन्कार मुजरिमों के दिलों में हम ने

الْمُجْرِمِينَ ﴿۲۸﴾ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ

दाखिल कर दिया। के वो उस पर ईमान नहीं लाते यहां तक के दर्दनाक अज़ाब देख

الْأَلِيمَ ﴿۲۹﴾ فَيَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿۳०﴾

लेते हैं। फिर अज़ाब इस तरह अचानक उन्हें आ लेता है के उन्हें पता भी नहीं होता।

فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُونَ ﴿۳१﴾ أَفَبِعَذَابِنَا

फिर वो कहेंगे के क्या हमें मुहलत मिलेगी? क्या ये हमारा अज़ाब जल्दी

يَسْتَعْجِلُونَ ﴿۳२﴾ أَفَرَأَيْتَ إِنْ مَتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ﴿۳३﴾

तलब कर रहे हैं? क्या राए है अगर हम उन्हें सालहा साल सामाने ऐश देते रहें।

ثُمَّ جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿۳४﴾ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا

फिर उन पर वो अज़ाब आ जाए जिस से उन्हें डराया जा रहा है। तो जिन नेअमतों से वो लुफ़ उठा रहे हैं वो उन्हें

يُسْتَعُونُ ۚ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ۝

अज़ाब से बचाने में काम आ सकेंगे? और हम ने किसी बस्ती को हलाक नहीं किया मगर उस के डराने वाले ज़रूर थे।

ذِكْرِي ۚ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ وَمَا تَنْزَلَتْ بِهِ الشَّيْطَانُ ۝

नसीहत के लिए। और हम ज़ालिम नहीं हैं। और शयातीन ये कुरआन ले कर नहीं उतरे।

وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ۝ إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ

और न उन के मुनासिबे (हाल) है और न वो कर सकते हैं। यकीनन वो तो उस के सुनने से दूर

لَبْعَرُؤُلُونَ ۝ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَكُونُ

रखे जाते हैं। इस लिए आप अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को न पुकारिए, वरना आप

مِنَ الْمُعَذِّبِينَ ۝ وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ۝

मुअज़्ज़बीन में से हो जाओगे। और आप अपने करीबी रिश्तेदारों को डराइए।

وَاحْفَظْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

और अपना बाजू पस्त रखिए उन ईमान वालों के सामने जिन्होंने आप का इत्तिबा किया। फिर अगर ये

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَتَوَكَّلْ

आप की मुख़ालफ़त करें तो आप फरमा दीजिए के मैं बरी हूँ उन कामों से जो तुम करते हो। और आप

عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝ الَّذِي يَرِيكَ حِينَ تَقُومُ ۝

तवक्कूल कीजिए ज़बर्दस्त, निहायत रहम वाले अल्लाह पर। जो आप को देखता है जिस वक़्त आप क़याम करते हो।

وَتَقَلُّبِكَ فِي السُّجْدِينَ ۝ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

और देखता है आप के चलने फिरने को सज्दा करने वालों के दरमियान। यकीनन वो सुनने वाला, इल्म वाला है।

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَنْ تَنْزَلُ الشَّيْطَانُ ۝ تَنْزَلُ عَلَىٰ كُلِّ

क्या मैं तुम्हें ख़बर दूँ उस शख्स की जिस पर शयातीन उतरते हैं? शयातीन हर झूठे

أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۝ يُلْقُونَ السَّعْءَ وَكَثُرُهُمْ كَذِبُونَ ۝

गुनेहगार पर उतरते हैं। वो सुनी हुई बात को डालते हैं और उन में से अक्सर झूठे हैं।

وَالشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ۝ أَلَمْ تَرَأَهُمْ فِي كُلِّ

और गुमराह लोग शुअरा का इत्तिबा करते हैं। क्या आप ने देखा नहीं के वो हर वादी में

وَادٍ يَّهِيْمُونَ ۝ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ۝

हैरान घूमते हैं? और वो केहते हैं वो बात जो वो खुद करते नहीं हैं।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ

मगर जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे और अल्लाह को बहोत ज़्यादा

كَثِيرًا وَّانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ

याद किया और जिन्होंने ने बदला लिया इस के बाद के उन पर जुल्म किया गया। और अनकरीब

الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ۚ

जालिम जान लेंगे के वो कैसी जगह पलट कर जाते हैं।

= ۱۱۱

رُكُوعَاتِهَا ۷

(۲۷) سُورَةُ الْبَقَرَةِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ۹۳

और ७ स्कूअ हैं

सूरह नम्ल मक्का में नाज़िल हुई

उस में ९३ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

طَسَّ تِلْكَ آيَةُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ مُبِينٍ ۝

तौ सीन। ये कुरआन और साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब की आयतें हैं।

هُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ

हिदायत और बशारत के तौर पर ईमान वालों के लिए। जो नमाज़ काइम करते हैं

وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝

और ज़कात देते हैं और जो आखिरत का भी यकीन रखते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّاتٌ لَهُمْ أَعْمَالُهُمْ فَهُمْ

यकीनन जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते हम ने उन के सामने उन के आमाल मुज़य्यन बना दिए हैं, फिर

يَعْمَهُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ

वो हैरान हैं। यही हैं जिन के लिए बदतरीन अज़ाब है और

فِي الْآخِرَةِ هُمْ الْآخَسَرُونَ ۝ وَإِنَّكَ لَتَلْقَى الْقُرْآنَ

आखिरत में सब से ज़्यादा ख़सारे वाले वही हैं। और यकीनन आप को ये कुरआन हिक्मत वाले,

مَنْ لَدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ۝ إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِ

जानने वाले अल्लाह की तरफ से दिया जा रहा है। जब के मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी बीवी से फ़रमाया के

إِنِّي أَنَسْتُ نَارًا سَأَتِيكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ بَشِيرٍ

यकीनन मैं ने आग देखी है। मैं अभी तुम्हारे पास आग की ख़बर या सुलगता

= ۱۱۱

بِشَهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٤﴾ فَلَمَّا جَاءَهَا

अंगारा लाता हूँ ताके तुम तापो। फिर जब मूस (अलैहिस्सलाम) आग के पास आए

نُودِيَ أَنَّ بُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۖ

तो आवाज़ दी गई के बाबरकत है वो ज़ात जो आग में है और जो उस आग के इर्द गिर्द है।

وَسُبْحَنَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٥﴾ يٰمُوسَى إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ

और अल्लाह रब्बुल आलमीन पाक है। ऐ मूसा! यकीनन मैं ही अल्लाह हूँ,

الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦﴾ وَأَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَلَمَّا رَأَاهَا تَهْتَزُّ

ज़बर्दस्त, हिकमत वाला। और आप अपना असा डाल दीजिए। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उस को देखा के वो

كَانَهَا جَانٌّ وَلَّى مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ۖ يٰمُوسَى

हरकत कर रहा है गोया के बारीक सांप है, तो पुश्त फेर कर भागे और पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा। (कहा गया) ऐ मूसा!

لَا تَخَفْ ۚ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُونَ ﴿٧﴾

आप न डरिए। इस लिए के मेरे पास पैग़म्बर डरा नहीं करते।

إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا ۖ بَعْدَ سُوءٍ فَإِنِّي غَفُورٌ

मगर जो ज़्यादती कर बैठे, फिर बुराई के बदले में नेकी करे तो यकीनन मैं बख़्शने वाला,

رَحِيمٌ ﴿٨﴾ وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضًا

निहायत रहम वाला हूँ। और अपना हाथ अपने गिरेबान में दाख़िल कीजिए, जो बग़ैर किसी बुराई के चमकता हुवा

مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۚ فِي تِسْعِ آيَاتٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ ۖ

निकलेगा। (ये मोअजिज़े के तौर पर है) नौ मोअजिज़ात में शामिल कर के ले जाइए फिरऔन और उस की क़ैम की तरफ।

إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِقِينَ ﴿٩﴾ فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ آيَاتُنَا

इस लिए के वो नाफरमान क़ौम है। फिर जब उन के पास हमारे रोशन

مُبْصِرَةً قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١٠﴾ وَجَحَدُوا بِهَا

मोअजिज़ात आए तो बोले के ये तो साफ़ जादू है। और उन्होंने ने उन

وَأَسْتَيْقَنَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا ۖ فَانْظُرْ

मोअजिज़ात का इन्कार किया जुल्म और तकबुर की बिना पर हालांकि उन के दिल यकीन कर चुके थे। फिर आप

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١١﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ

देखिए के फ़साद फैलाने वालों का अन्जाम कैसा हुवा। यकीनन हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम)

وَسُلَيْمَنَ عِلْمَاءَ ۖ وَقَالَ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا

और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) को इल्म दिया। और उन दोनों ने कहा के तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने

عَلَى كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَوَرِثَ سُلَيْمَنُ

हमें अपने मोमिन बन्दों में से बहोत सों पर फज़ीलत दी। और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) दावूद (अलैहिस्सलाम)

دَاوُدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ عَلِمْنَا مَنُطَقَ الطَّيْرِ

के वारिस हुए और उन्होंने ने कहा के ऐ इन्सानो! हमें परिन्दों की बोली का इल्म दिया गया है

وَأَوْتَيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۖ إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَضْلُ

और हमें हर चीज़ में से दिया गया है। यकीनन ये खुला फज़ल

الْبَيْتِ ۝ وَحُشِرَ لِسُلَيْمَنَ جُنُودُهُ مِنَ الْجِنِّ

है। और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए उन के लशकर इकट्ठे किए गए जिन्नात

وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا

और इन्सानों और परिन्दों में से, फिर उन की जमाअतें बनाई जा रही थीं। यहां तक के जब वो

عَلَىٰ وَادِ النَّبْلِ ۖ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَا أَيُّهَا النَّبْلُ ادْخُلُوا

गुज़रे च्यूंटियों के मैदान पर, तो एक च्यूटी ने कहा ऐ च्यूंटियो! अपने घरों

مَسْكَنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَنُ وَجُنُودُهُ ۖ وَهُمْ

में घुस जाओ, कहीं तुम्हें सुलैमान और उन के लशकर कुचल न डालें इस हाल में के उन को

لَا يَشْعُرُونَ ۝ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ

पता न हो। तो च्यूटी की बात से सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने हंसते हुए तबस्सुम फरमाया और कहा के

رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ

ऐ मेरे रब! तू मुझे इस की तौफ़ीक़ दे के तेरी नेअमत का शुक्र अदा करूँ जो तू ने मुझ पर

عَلَىٰ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ

और मेरे वालिदैन पर की है और इस की के मैं नेक अमल करूँ जिसे तू पसन्द कर ले

وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ۝ وَتَفَقَّدَ

और मुझे अपनी रहमत से अपने नेक बन्दों में दाख़िल कर दे। और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने

الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدْهُدَ ۖ أَمْ كَانَ مِنَ

परिन्दों की ख़बर ली तो फरमाया के क्या बात है के मैं हुदहुद को नहीं देख रहा। या वो ग़ैरहाज़िर

الْغَائِبِينَ ﴿۱۰﴾ لَعَذَابُكَ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَا أَذْبَحُكَ	डालूंगा
है? ज़रूर मैं उसे सख्त सज़ा दूंगा या ज़बह कर	
أَوْ لِيَأْتِيَنِي بِسُلْطَنِ مُبِينٍ ﴿۱۱﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ	ने
या वो मेरे सामने वाज़ेह दलील पेश करो। थोड़ी ही देर बाद हुदहुद ने	
فَقَالَ أَحْطُ بِمَا لَمْ تَحْطُ بِهِ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَأٍ	कहा के मैं ने ऐसी चीज़ मालूम की है जो आप को मालूम नहीं और मैं आप के पास सबा से यकीनी ख़बर ले कर
يَقِينٍ ﴿۱۲﴾ إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ	आया हूँ। ये के मैं ने एक औरत को पाया है जो उन पर हुकमरान है और उसे हर
مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ﴿۱۳﴾ وَجَدْتُهَا وَ قَوْمَهَا	चीज़ मिली है और उस के पास एक अज़ीम तख्त है। मैं ने उसे और उस की कौम को पाया के
يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَرَبِّ لَهُمُ الشَّيْطَانُ	अल्लाह को छोड़ कर सूरज को सज्दा करते हैं और शैतान ने उन के आमाल उन्हें उम्दा
أَعْمَالُهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ﴿۱۴﴾	बताए हैं, और रास्ते से उन्हें रोक दिया है, इस लिए वो हिदायत पर नहीं चलते।
أَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمُوتِ	के सज्दा नहीं करते उस अल्लाह को जो निकालता है आसमानों और ज़मीन में छुपी हुई
وَالْأَرْضِ وَ يَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿۱۵﴾ اللَّهُ	चीज़ और जानता है जो तुम छुपाते और ज़ाहिर करते हो। अल्लाह के सिवा
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿۱۶﴾ قَالَ سَنُنْظُرُ	कोई माबूद नहीं, वो अर्शे अज़ीम का रब है। सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया अभी हम देखेंगे
أَصَدَقْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ الْكَذِبِينَ ﴿۱۷﴾ إِذْ هَبْ بِكِتَابِي	कर
هَذَا فَالْقَهْ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَأَنْظُرْ	जा और उसे उन की तरफ डाल दे, फिर तू उन से हट कर देख
مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿۱۸﴾ قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ إِنِّي أُلْقِيَ إِلَىٰ كِتَابِ	के वो क्या जवाब देते हैं? बिलक़ीस बोली के ऐ दरबारियो! यकीनन मेरी तरफ़ एक क़ाबिले तकरीम ख़त

۲
۱۷

كَرِيمٌ ۱۸ إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ

डाला गया है। ये ख़त सुलैमान की तरफ़ से है और ये के अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरमान, निहायत

الرَّحِيمِ ۱۹ أَلَا تَعْلَمُونَ عَلَىٰ وَأَتُونِي مُسْلِمِينَ ۲۰ قَالَتْ

रहम वाला है। ये के मुझ पर बरतरी की कोशिश न करो और मेरे पास ताबेदार बन कर आ जाओ। बिलक़ीस केहने लगी

يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي أَمْرِي ۲۱ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً

के दरबारियो! मुझे मशवरा दो मेरे मुआमले में। मैं किसी मुआमले का कतई फैसला नहीं

أَمْرًا حَتَّىٰ تَشْهَدُونِ ۲۲ قَالُوا نَحْنُ أَوْلُوا قُوَّةٍ وَأُولُوا

करती जब तक के तुम मौजूद न हो। उन्होंने ने कहा के हम कूब्त वाले और सख़्त

بَأْسٍ شَدِيدٍ ۲۳ وَالْأَمْرُ إِلَيْكَ فَانْظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ ۲۴

जंगजू हैं और मुआमला आप के सुपुर्द है, आप ग़ौर कीजिए जो हुक्म देना हो।

قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا

बिलक़ीस ने कहा के यकीनन बादशाह जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे वीरान कर देते हैं

وَجَعَلُوا أَعْرَآةَ أَهْلِهَا آذِلَّةً ۲۵ وَكَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ۲۶

और उस के मुअज़्ज़ बाशिन्दों को ज़लील बना देते हैं। और ये लोग भी ऐसा ही करेंगे।

وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنْظُرَ ۲۷ بِمَ يَرْجِعُ

और मैं उन की तरफ़ हदीया दे कर भेज रही हूँ, फिर देखती हूँ के एलची क्या जवाब ले कर

الْمُرْسَلُونَ ۲۸ فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانَ قَالَ أَتُمَدُّونَ

आते हैं। फिर जब सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के पास कासिद पहुँचा, सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया क्या तुम माल से

بِمَالٍ ۲۹ فَمَا أَتَيْنَ اللَّهُ خَيْرٌ مِّمَّا أَتَيْتُمْ ۳۰ بَلْ أَنْتُمْ

मेरी इमदाद करते हो? फिर अल्लाह ने जो मुझे दिया है वो बेहतर है उस से जो तुम्हें दिया है। बल्के तुम्हें

بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ ۳۱ اِرْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَنَّهُمْ

अपने हदिये पर खुशी है? (नियाज़मन्दी नहीं)। (कासिद!) तू उन की तरफ़ वापस जा, फिर हम उन के पास आएंगे

بِجُنُودٍ لَا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِنْهَا آذِلَّةً

ऐसे लशकर ले कर के जिन का उन से मुक़ाबला नहीं हो सकेगा और हम उन्हें वहां से ज़लील व ख़्वार

وَهُمْ ضَعُفُونَ ۳۲ قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَيُّكُمْ

कर के निकाल दूँगा। सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ दरबारियो! तुम में से कौन

يَأْتِيَنِي بِعَرْشِهَا قَبْلَ أَنْ يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣٨﴾ قَالَ

मेरे पास बिलक़ीस का अर्श लाता है इस से पेहले के वो मेरे पास मुसलमान हो कर आएंगे। जिन्नात

عَفَرِيَّتٍ مِّنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ تَقُومَ

में से एक बड़े जिन ने कहा के मैं आप के पास उसे ले आऊँगा इस से पेहले के आप

مِّنْ مَّقَامِكَ ۖ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ﴿٣٩﴾ قَالَ

अपनी जगह से उठें। और मैं यकीनन उस पर अमानतदार, कुव्वत वाला हूँ। उस ने कहा

الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ

के जिस के पास किताब का इल्म था के मैं उस अर्श को आप के पास लाता हूँ इस से पेहले के आप की

أَنْ يَّرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَآهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهُ

नज़र आप की तरफ वापस लौटे। फिर जब सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने अर्श अपने सामने रखा हुवा देखा

قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي ۖ لِيَبْلُوَنِي ۖ أَشْكُرُ

तो फ़रमाया के ये मेरे रब का फ़ज़ल है। ताके मुझे आज़माए के क्या मैं शुक्र करता हूँ या

أَمْ أَكْفُرُ ۚ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ كَفَرَ

नाशुकरी? और जो शुक्र अदा करेगा तो सिर्फ अपनी ज़ात के फ़ाइदे के लिए करेगा। और जो नाशुकरी करेगा

فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ كَرِيمٌ ﴿٤٠﴾ قَالَ نَكُرُّوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ

तो यकीनन मेरा रब बेनियाज़ है, इज़ज़त वाला है। सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के तुम उस के लिए अर्श की

اتَّهْتَدِي ۖ أَمْ تَكُونُ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٤١﴾

सूरत बदल दो, देखें उसे पता लगता है या नहीं?

فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهَكَذَا عَرْشُكِ ۖ قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ ۖ

फिर जब बिलक़ीस आई तो कहा गया के क्या तेरा अर्श ऐसा ही है? बिलक़ीस ने कहा ये तो गोया वही है।

وَأَوْتَيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ﴿٤٢﴾ وَصَدَّهَا

और हमें इस से पेहले इल्म दिया गया था और हम इस्लाम ले आए थे। और उसे रोक रखा था

مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ

उन चीज़ों ने जिन की अल्लाह के सिवा वो इबादत करती थी। यकीनन बिलक़ीस काफ़िर कौम

كَافِرِينَ ﴿٤٣﴾ قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۖ فَلَمَّا رَأَتْهُ

में से थी। उस से कहा गया के तुम महल में चली जाओ। फिर जब उस ने महल देखा

حَسِبْتُهُ لُجَّةً وَكَشَفْتُ عَنْ سَاقِيهَا ۖ قَالَ إِنَّهُ

तो उसे पानी से भरा हुवा पाया और अपनी पिंडलियाँ खोल दीं। सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के यकीनन ये

صَرَحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيرِهِ ۖ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ

ऐसा महल है जो शीशे से बनाया गया है। बिलकीस केहने लगी ऐ मेरे रब! यकीनन मैं ने अपनी जान

نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

पर जुल्म किया और मैं सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के साथ अल्लाह रब्बुल आलमीन पर इस्लाम ले आई।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ شُؤْدَ أَخَاهُمْ طَلْحًا

यकीनन हम ने कौमे समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह (अलैहिस्सलाम) को भेजा

إِنْ أَعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَتَيْنِ يَخْتَصِمُونَ ۝

के तुम अल्लाह की इबादत करो, तो अचानक वो दो जमाअतें बन गईं, आपस में झगड़ने लगीं।

قَالَ يَقُومُ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ

सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी कौम! तुम बुराई को क्यूं जल्दी तलब कर रहे हो भलाई

الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

से पेहले? तुम अल्लाह से मग़फ़िरत क्यूं तलब नहीं करते ताके तुम पर रहम किया जाए?

قَالُوا أَطِيعْنَا بَكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۖ قَالَ طَاعْتَكُمْ

उन्हों ने कहा के हम तुम्हें और तुम्हारे साथियों को मनहूस समझते हैं। सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के

عِنْدَ اللَّهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ۝

तुम्हारी नहूसत अल्लाह के पास है, बल्के तुम ऐसी कौम हो जो अज़ाब में मुबतला किए जाओगे। और

فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ

शहर में एक जमाअत के नौ आदमी थे जो उस इलाके में फ़साद फैलाते थे

وَلَا يُصْلِحُونَ ۝ قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ

और इस्लाह नहीं करते थे। वो बोले सब अल्लाह की क़सम खाओ के ज़रूर हम रात को सालेह (अलैहिस्सलाम)

وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ

और उन के मानने वालों पर हमला करेंगे, फिर हम उन के वारिस से केह देंगे के हम उन के घर वालों की हलाकत

أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝ وَمَكَرُوا مَكْرًا وَمَكَرْنَا

के वक़्त मौजूद नहीं थे और यकीनन हम सच्चे हैं। और उन्हों ने एक मक्र किया और हम ने भी एक तदबीर

مَكْرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٠﴾ فَاَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ

की और उन्हें पता नहीं था। फिर आप देखिए के उन के मक़ का

عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۖ أَنَا دَمَرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥١﴾

अन्जाम क्या हुआ? ये के हम ने उन्हें भी और उन की कौम सब को मलयामेट कर दिया।

فَتِلْكَ بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةٌ بِمَا ظَلَمُوا ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ

फिर ये उन के मकानात उन के जुल्म की वजह से वीरान पड़े हुए हैं। यकीनन उस में

لَايَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٥٢﴾ وَأَنْجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا

इबरत है ऐसी कौम के लिए जो जानती है। और हम ने नजात दी उन लोगों को जो ईमान लाए थे

وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٣﴾ وَلَوْطَا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ

और मुत्तकी थे। और लूत (अलैहिस्सलाम) को भेजा जब उन्होंने ने अपनी कौम से फरमाया क्या तुम बेहयाई का इरतिकाब

الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٥٤﴾ أَيْتَكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ

करते हो और तुम देखते भी हो? क्या शहवत के लिए तुम औरतों

شَهْوَةً مِّنْ دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ بِجَهْلُونَ ﴿٥٥﴾

को छोड़ कर के मर्दों के पास आते हो? बल्के तुम ऐसी कौम हो जो जहालत के काम करते हो।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوا آلَ لُوطٍ

फिर उन की कौम का जवाब नहीं था मगर ये के उन्होंने ने कहा के तुम आले लूत को तुम्हारी बस्ती से

مِّنْ قَرَبَتِكُمْ ۚ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ يَّتَطَهَّرُونَ ﴿٥٦﴾ فَأَجْبَيْنَاهُ

निकाल दो। इस लिए के ये ऐसे लोग हैं जो पाकबाज़ बनना चाहते हैं। फिर हम ने लूत (अलैहिस्सलाम) को और

وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۖ قَدَّرْنَاهَا مِنَ الْغَيْرِينَ ﴿٥٧﴾

उन के मानने वालों को नजात दी मगर उन की बीवी। जिस को हम ने मुक़द्दर कर दिया था हलाक होने वालों में से।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٥٨﴾

और हम ने उन पर बारिश बरसाई। फिर उन लोगों की बारिश कितनी बुरी थी जिन्हें डराया गया था?

قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَ سَلَّمَ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ

आप फ़रमा दीजिए के तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं और सलामती हो अल्लाह के उन बन्दों पर जो उस ने

أَصْطَفَىٰ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

मुन्तख़ब किए। क्या अल्लाह बेहतर है या वो जिन को ये लोग शरीक ठेहराते हैं?

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَأَنْزَلَ لَكُمْ

भला किस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और किस ने तुम्हारे लिए आसमान

مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَانْتَبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ

से पानी उतारा, फिर उस से रौनक वाले बाग़ात को उगाया? तुम्हारी ताक़त

لَكُمْ أَنْ تُنْبِتُوا شَجَرَهَا ۗ ءَالَهُ مَعَ اللَّهِ ۖ بَلْ هُمْ قَوْمٌ

नहीं थी के उस के दरख्त तुम उगाते। क्या अल्लाह के साथ और भी माबूद हैं? बल्के वो ऐसी कौम है जो अल्लाह

يَعْدِلُونَ ۚ أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَالَهَا

के साथ शरीक ठेहराती है। भला किस ने ज़मीन को ठेहरने की जगह बनाया और उस के दरमियान नेहरें

أَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ

बनाई और ज़मीन के लिए लंगर रख दिए और दो समन्दर के दरमियान आड़

حَاجِزًا ۗ ءَالَهُ مَعَ اللَّهِ ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۚ أَمَّنْ

बना दी? क्या अल्लाह के साथ और भी माबूद हैं? बल्के उन में से अक्सर जानते नहीं। भला कौन

يُجِيبُ الْبُضْطَرَ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَ يُجْعَلُكُمْ

परेशानहाल की दुआ को क़बूल करता है जब वो उस से दुआ करता है और तकलीफ़ दूर करता है और तुम्हें

خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ۗ ءَالَهُ مَعَ اللَّهِ ۖ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۚ

ज़मीन में जानशीन बनाता है? क्या अल्लाह के साथ और भी माबूद हैं? बहोत कम तुम नसीहत हासिल करते हो।

أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ

भला कौन है जो तुम्हें रास्ता दिखाता है खुशकी और समन्दर की तारीकियों में और कौन

يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۗ ءَالَهُ

हवाओं को बशारत देने के लिए अपनी रहमत से आगे भेजता है? क्या अल्लाह के साथ और भी माबूद हैं?

مَعَ اللَّهِ ۖ تَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۚ أَمَّنْ يَبْدَأُ الْخُلُقَ

बरतर है अल्लाह उन चीज़ों से जिन्हें ये शरीक ठेहराते हैं। भला कौन है जो मख़लूक को पेहली मरतबा

ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ ءَالَهُ

पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा और कौन तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है? क्या अल्लाह

مَعَ اللَّهِ ۖ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ

के साथ और भी माबूद हैं? आप फरमा दीजिए के तुम अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبُ

आप फरमा दीजिए जो आसमानों और ज़मीन में हैं वो ग़ैब नहीं जानते सिवाए

إِلَّا اللَّهُ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿١٥﴾ بَلِ ادْرَكْ عَلَيْهِمُ

अल्लाह के। और उन्हें ये भी पता नहीं के कब (कब्रों से मुर्दे) उठाए जाएंगे? बल्के उन का इल्म आखिरत

فِي الْآخِرَةِ ۚ بَلْ لَهُمْ فِي شَكٍّ مِّنْهَا ۖ بَلْ لَهُمْ مِّنْهَا عَمُونَ ﴿١٦﴾

का हाल जानने से आजिज़ है। बल्के वो उस से शक में हैं। बल्के वो उस से अन्धे हैं।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاءُنَا أَيْتًا

और काफिर लोग केहते हैं के क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे हम और हमारे बाप दादा, तब हम ज़िन्दा कर के

لَهُمْ خُرُوجُونَ ﴿١٧﴾ لَقَدْ وَعَدْنَا هَذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۖ

निकाले जाएंगे। यकीनन हम से और हमारे बाप दादा से इस से पेहले इस का वादा किया गया,

إِنْ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٨﴾ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ

ये तो पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ हैं। आप फरमा दीजिए के तुम ज़मीन में चलो फिरो,

فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْجَارِمِينَ ﴿١٩﴾ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ

फिर देखो के मुजरिमों का अन्जाम कैसा हुवा? और आप उन पर ग़म न कीजिए

وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَكُرُّونَ ﴿٢٠﴾ وَ يَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا

और उन की मक्कारियों से तंगी में न रहिए। और ये केहते हैं के ये वादा

الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢١﴾ قُلْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ رَدِفٌ

कब है अगर तुम सच्चे हो? आप फरमा दीजिए शायद तुम्हारे करीब आ पहुँचा हो

لَكُمْ بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٢٢﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ

उस का कुछ हिस्सा जिस को तुम जल्दी तलब कर रहे हो। और यकीनन तुम्हारा रब तो इन्सानों पर

عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ

फ़ज़ल वाला है, लेकिन उन में से अक्सर शुक्र अदा नहीं करते। और यकीनन तुम्हारा रब तो

لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٢٤﴾ وَمَا مِنْ غَافِلَةٍ

जानता है वो चीज़ें जो उन के सीने छुपाते हैं और जिन्हें वो ज़ाहिर करते हैं। और आसमान और ज़मीन

فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٢٥﴾ إِنَّ هَذَا

की हर मख़फ़ी चीज़ साफ़ बयान करने वाली किताब (लौहे महफूज़) में है। यकीनन ये

اَلْقُرْآنَ يَقْصُصُ عَلٰی بَنِيْ اِسْرَآءِیْلَ اَكْثَرَ الَّذِیْ هُمْ فِیْهِ

कुरआन बनी इस्राईल के सामने बयान करता है वो अक्सर बातें जिन में वो इखतिलाफ

يَخْتَلِفُونَ ۝ وَاِنَّهٗ لَهْدٰی وَّرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِیْنَ ۝

कर रहे हैं। और यकीनन ये ईमान वालों के लिए हिदायत और रहमत है।

اِنَّ رَبَّكَ یَقْضِیْ بَیْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْعَلِیْمُ ۝

यकीनन तेरा रब अपने हुक्म से उन के दरमियान फैसला करेगा। और वो ज़बर्दस्त है, इल्म वाला है।

فَتَوَكَّلْ عَلٰی اللّٰهِ اِنَّكَ عَلٰی الْحَقِّ الْبَیِّنِ ۝ اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ

इस लिए आप अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए। यकीनन आप वाज़ेह हक़ पर हो। यकीनन आप मुद्दों को नहीं

اَلْمَوْتٰی وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِیْنَ ۝

सुना सकते और आप बेहरों को पुकार नहीं सुना सकते जब के वो पुश्त फेर कर भागते भी हों।

وَمَا اَنْتَ بِهٰدِی الْعُمْیَ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ اِنْ تُسْمِعُ

और आप अन्धों को रास्ता नहीं दिखा सकते उन की गुमराही से। आप तो सिर्फ़ उसी को सुना सकते हैं

اِلَّا مَنْ یُّؤْمِنُ بِآٰیٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُونَ ۝ وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ

जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं और ताबेदारी करते हैं। और जब (क़यामत का) अम्र उन पर वाक़ेअ

عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ

होने वाला होगा, तो हम उन के लिए ज़मीन से एक चौपाया निकालेंगे जो उन से बात करेगा,

اِنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِآٰیٰتِنَا لَا یُوقِنُوْنَ ۝ وَیَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ

के ये लोग हमारी आयतों पर यकीन नहीं रखते थे। और जिस दिन हम हर उम्मत में से

اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ یُّكْذِبُ بِآٰیٰتِنَا فَهُمْ یُوزَعُونَ ۝

उस जमाअत को इकट्ठा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाती थी, फिर उन्हें तक्सीम किया जाएगा।

حَتّٰی اِذَا جَآءُ وَقَالَ اٰكْذَبْتُمْ بِآٰیٰتِیْ وَلَمْ تُحِیْطُوْا بِهَا عَلَمًا

यहां तक के जब वो हाज़िर होंगे, तो अल्लाह पूछेंगे क्या तुम ने मेरी आयतों को झुठलाया हालांके उन आयात का तुम ने

اَمَّا ذٰلِكَ كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَیْهِمْ

इल्म से इहाता नहीं किया था, या तुम क्या अमल करते थे? और उन पर बात साबित हो जाएगी

بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا یَنْطِقُوْنَ ۝ اَلَمْ یَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا اللَّیْلَ

उन के जुल्म की वजह से, फिर वो बोल नहीं सकेंगे। क्या उन्होंने ने देखा नहीं के हम ने रात बनाई

لَيْسَ كُنُوزًا فِيهِ وَالتَّهَارَ مُبْصَرًا ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ

ताके वो उस में आराम करें और दिन को रोशन बनाया। यकीनन उस में निशानियाँ हैं

لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَنُفِخَ مَنْ

ऐसी कौम के लिए जो ईमान लाती है। और जिस दिन सूर फूँका जाएगा तो घबरा जाएंगे वो जो

فِي السَّمُوتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ۝

आसमानों और ज़मीन में हैं मगर जिन को अल्लाह चाहे।

وَكُلُّ أُنثَىٰ ذَخِيرٍ ۝ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً

और सब के सब आजिज़ बन कर उस के पास चले आएंगे। और तू पहाड़ों को देखता है तो खयाल करता है के जमे

وَهِيَ تَمْزُجُ مَرَّ السَّحَابِ ۝ صُنِعَ اللَّهُ الَّذِي أَتَقَنَ كُلَّ

हुए हैं और यही पहाड़ बादल के चलने की तरह तेज़ चलेंगे। ये अल्लाह की कारीगरी है जिस ने हर चीज़ मज़बूत

شَيْءٍ ۝ إِنَّهُ خَيْرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ۝ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ

बनाई। यकीनन वो बाख़बर है उन कामों से जो तुम करते हो। जो नेकी ले कर आएगा

فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۝ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَوْمَئِذٍ ۝

तो उस के लिए उस से बेहतर मिलेगा। और वो उस दिन की घबराहट से अमन में होंगे।

وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وَجُوهُهُمْ فِي النَّارِ

और जो बुराई को ले कर आएंगे, तो औँधे मुँह वो दोज़ख में डाले जाएंगे।

هَلْ تَجْزُونَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ

तुम्हें सज़ा नहीं दी जाएगी मगर उन ही कामों की जो तुम करते थे। मुझे तो सिर्फ़ यही हुक्म है के मैं इबादत करूँ

رَبِّ هَذِهِ الْبَلَدَةِ ۝ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ ۝

इस शहर के पैदा करने वाले की जिस ने उस को हरम बनाया और हर चीज़ उस की मिल्क है।

وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ وَأَنْ أَتْلُوا الْقُرْآنَ ۝

और मुझे इस का हुक्म है के मैं मुसलमानों में से रहूँ। और ये के मैं कुरआन की तिलावत करूँ। तो जो

فَمَنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۝ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ

हिदायत पाएगा तो सिर्फ़ अपनी ज़ात के लिए हिदायत पाएगा। और जो गुमराह होगा तो आप फ़रमा दीजिए

إِنَّمَا أَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سِيرَتُكُمْ

के मैं तो सिर्फ़ डराने वालों में से हूँ। और आप फ़रमा दीजिए के तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, जल्द ही वो

اٰتِيهِ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۶

तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएगा, तो तुम उन को पहचान लोगे। और तेरा रब बेखबर नहीं है उन कामों से जो तुम करते हो।

رُكُوْعَاتُهَا ۹

(۲۸) سُورَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ كَثِيْرًا

اٰيَاتُهَا ۸۸

और ९ रूकूअ हैं

सूरह क़सस मक्का में नाज़िल हुई

उस में ८८ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

طَسَمَ ۝۱ تِلْكَ اٰیَةُ الْكِتٰبِ الْبَيِّنِ ۝۲ نَتْلُوْا عَلَيْكَ

ता सीम मीमा। ये साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब की आयतें हैं। हम आप के सामने

مِّنْ تَّبٰٓءِ مُّوْسٰٓی وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ۝۳

मूसा (अलैहिस्सलाम) और फिरऔन का कुछ हाल हकाइक़ समेत तिलावत करते हैं ऐसी कौम के लिए जो ईमान लाए।

اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلٰٓی فِی الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِیْعًا

यकीनन फिरऔन को बरतरी हासिल थी उस मुल्क में और उस ने वहां वालों के कई गिरोह बना दिए थे, उन में से

یَسْتَضِعُّ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ یُذَبِّحُ اَبْنَاءَهُمْ وَیَسْتَحْیِ نِسَاءَهُمْ ۚ

एक जमाअत को वो कमज़ोर करना चाहता था के उन के बेटों को ज़बह करता था और उन की औरतों को ज़िन्दा

اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِیْنَ ۝۴ وَ نُرِیدُ اَنْ نَّمُنَّ

रेहने देता था। यकीनन वो फ़साद फैलाने वालों में से था। और हम चाहते थे के हम एहसान करें

عَلٰی الَّذِیْنَ اسْتَضَعُّوْا فِی الْاَرْضِ وَنَجَعَلَهُمْ اٰیَةً وَنَجَعَلَهُمْ

उन पर जिन को उस मुल्क में कमज़ोर बना कर रखा गया था और उन्हें पेशवा बनाएं और हम उन्हें

اٰوْرَثِیْنَ ۝۵ وَنُبَکِّنْ لَهُمْ فِی الْاَرْضِ وَنُرِیْ فِرْعَوْنَ

वारिस बनाएं। और हम उन्हें उस मुल्क में हुकूमत दें और हम दिखाएं फिरऔन

وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا یَحْذَرُوْنَ ۝۶

और हामान और उन के लशक़रों को उन की तरफ से वो जिस से वो डरते थे।

وَ اَوْحٰیْنَا اِلٰی اُمِّ مُوْسٰٓی اَنْ اَرْضِعِیْهِ ۚ فَاِذَا خَفَتْ

और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की माँ की तरफ वही की के तुम उस को दूध पिलाती रहो। फिर जब तुम उस के

عَلِیْهِ فَاَلْقِیْهِ فِی الْیَمِّ وَلَا تَخَافِیْ وَلَا تَحْزَنِ ۚ اِنَّا

बारे में ख़ौफ़ करो तो उसे समन्दर में डाल देना और न ख़ौफ़ करना, न ग़म। यकीनन हम

رَادُّوْهُ اِلَيْكَ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝۷۰ فَالْتَقَطَهُ

उसे आप की तरफ वापस लौटाएंगे और हम उसे पैगम्बरों में से बना देंगे। फिर उस को आले फिरऔन

اَلْ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۚ اِنَّ فِرْعَوْنَ

ने उचक लिया ताके वो उन का दुश्मन और ग़म का बाइस बने। यकीनन फिरऔन और

وَ هَامَانَ وَ جُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِيْنَ ۝۷۱ وَقَالَتِ امْرَاَتُ

हामान और उन का लशकर ग़लती पर थे। और फिरऔन की बीवी

فِرْعَوْنَ قَرَّتْ عَيْنٌ لِّيْ وَلَكَ ۚ لَا تَقْتُلُوْهُ ۚ عَسٰى

ने कहा के ये मेरी और तेरी आँखों की ठंडक है। तुम उसे क़त्ल मत करो। हो सकता है

اَنْ يَنْفَعَنَا اَوْ نَتَّخِذْهُ وَلَدًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۷۲ وَاَصْبَحَ

वो हमें नफा दे या हम उसे बेटा बना लें और वो (अन्जाम से) बेखबर थे। और मूसा

فُوَادُ امْرِ مُوسٰى فِرْعَاۗءَ ۚ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدٰى بِهٖ

(अलैहिस्सलाम) की माँ का दिल बेकरार हो गया। करीब थी के बेकरारी ज़ाहिर कर देती

لَوْلَا اَنْ رَّبَّنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۷۳

अगर हम उस के दिल को (सब्र से) मज़बूत न करते ताके वो वादे के तसदीक करने वालियों में से रहे।

وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِيْهِ ۚ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنْبٍ وَهُمْ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) की माँ ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की बेहेन से कहा के तू उस के पीछे पीछे जा। फिर वो दूर से मूसा (अलैहिस्सलाम) को देख

لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۷۴ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ

रही थी इस हाल में के फिरऔनियों को पता नहीं था। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) पर दूध पिलाने वालियों को हराम कर दिया

فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَہٗ لَكُمْ

इस से पहले, तो मूसा (अलैहिस्सलाम) की बेहेन ने कहा क्या मैं तुम्हें पता बतलाऊँ ऐसे घराने का जो उस की किफालत करें तुम्हारे

وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ۝۷۵ فَرَدَدْنٰہٗ اِلٰى اُمِّہٖ کٰی تَقَرَّ

लिए और वो सब उस के खैरखाह हों। चुनांचे हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को उस की माँ की तरफ वापस लौटा दिया

عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ

ताके उस की आँखें ठन्डी रहें और ग़मगीन न रहे और ये जान ले के अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन उन में से

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۷۶ وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّہٗ وَاسْتَوٰى

अक्सर जानते नहीं। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) अपनी जवानी को पहुँचे और (जिस्म व अक्ल के एतेबार से)

۝۷۶

اَتَيْنَهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۖ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿۱۳﴾

मुकम्मल हो गए तो हम ने उन्हें नुबूवत (शरीअत) दी और इल्म दिया। और इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينٍ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) शहर में वहां वालों की ग़फ़लत के वक़्त में दाख़िल हुए, तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उस में दो

فِيهَا رَجُلَيْنِ يَفْتَنِلْنِ هَذَا مِنْ شَيْعَتِهِ وَهَذَا

आदमियों को पाया जो आपस में लड़ रहे थे। ये मूसा (अलैहिस्सलाम) की जमाअत में से था और ये उन के दुश्मनों में से

مِنْ عَدُوٍّ ۖ فَاسْتَعَاثَهُ الَّذِي مِنْ شَيْعَتِهِ عَلَى الَّذِي

था। तो मूसा (अलैहिस्सलाम) से मदद तलब की उस ने जो आप की जमाअत में से था उस के ख़िलाफ़ जो आप के

مِنْ عَدُوٍّ ۖ فَوَكَرَهُ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ ۖ قَالَ هَذَا

दुश्मनों में से था। तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उस को एक धूँसा मारा तो उस को मार दिया। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ये शैतानी

مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ ۖ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ﴿۱۴﴾ قَالَ رَبِّ

हरकत से हुवा। यकीनन वो खुला गुमराह करने वाला दुश्मन है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की के ऐ मेरे रब!

إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَ لَهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ

यकीनन मैं ने मेरी जान पर जुल्म किया, इस लिए तू मेरी मग़फ़िरत कर दे, तो अल्लाह ने उन्हें मुआफ़ कर दिया। यकीनन वो

الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿۱۵﴾ قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ

बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की ऐ मेरे रब! इस वजह से के तू ने मुझ पर इन्आम फरमाया है,

فَلَن أَكُونَ ظَهِيرًا لِلْمُجْرِمِينَ ﴿۱۶﴾ فَاصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ

तो मैं मुजरिमों का मददगार हरगिज़ नहीं बनूंगा। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने शहर में डरते हुए (पकड़े जाने के)

خَائِفًا يَتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ

इन्तिज़ार में सुबह की, तो अचानक वही शख्स जिस ने आप से कल को मदद तलब की थी वो आप से फिर

يَسْتَصْرِخُهُ ۖ قَالَ لَهُ مُوسَىٰ إِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِينٌ ﴿۱۷﴾

मदद का तालिब है। उस से मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया यकीनन तू ही खुला गुमराह है।

فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۖ

फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने इरादा किया के पकड़ें उसे जो उन दोनों का दुश्मन है,

قَالَ يَوْمُسَىٰ اتْرِيدُ أَنْ تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا

तो वो बोला ऐ मूसा! क्या तुम चाहते हो के तुम मुझे क़त्ल कर दो जैसा तुम ने कल एक शख्स को क़त्ल

بِالْأَمْسِ ۖ إِنَّ تَرْيِدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ

कर दिया था। तुम नहीं चाहते मगर ये के दूसरों पर ज़बर्दस्त बन कर इस इलाके में रहो

وَمَا تَرْيِدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ۝ وَجَاءَ رَجُلٌ

और तुम नहीं चाहते के इस्लाह करने वालों में से बनो। और एक आदमी आया

مِّنْ أَقْصَا الْمَدْيَنَةِ يَسْعَىٰ ۚ قَالَ يُمُوسَىٰ إِنَّ الْمَلَأَ

शेहर के किनारे से दौड़ता हुवा। केहने लगा ऐ मूसा! यकीनन दरबारी आप के मुतअल्लिक मशवरा कर रहे

يَاتِبُرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَخُجِّ إِلَيَّ لَكَ مِنَ النَّصِيحِينَ ۝

हैं के आप को क़त्ल कर दें, इस लिए आप निकल जाइए, यकीनन मैं आप के खैरख्वाहों में से हूँ।

فَخَجَّ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ ۚ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي

फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) उस शेहर से निकल गए पकड़े जाने के खौफ से। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की ऐ मेरे रब! मुझे

مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تَلَقَّاهُ مَدْيَنَ قَالَ

ज़ालिम कौम से बचा ले। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) मदन की जानिब मुतवज्जेह हुए तो केहने लगे

عَسَىٰ رَبِّي أَنْ يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ وَلَمَّا وَرَدَ

उम्मीद है के मेरा रब मुझे सीधे रास्ते की रहनुमाई करेगा। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) मदन के पानी

مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةٌ مِّنَ النَّاسِ يَسْقُونَ ۚ

पर उतरे तो वहां पर लोगों की एक जमाअत को पाया जो जानवरों को पानी पिला रही थी। और उन के पीछे दो

وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا

औरतों को पाया जो (अपने जानवर पानी से) हटा रही थीं। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने पूछा के तुम दोनों का क्या हाल है?

قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّىٰ يُصْدِرَ الرِّعَاءُ سَنَ ۚ وَأَبُونَا شَيْخٌ

तो दोनों केहने लगीं के हम पानी नहीं पिलाते यहां तक के चरवाहे पिला कर चले जाएं। और हमारे बाप बहोत

كَبِيرٌ ۝ فَسَقَىٰ لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰ إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ

बूढ़े हैं। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उन के जानवरों को पानी पिला दिया, फिर वो साए की तरफ वापस लौटे और दुआ की

إِنِّي لِمَا أَنْزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ۝ فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا

ऐ मेरे रब! यकीनन मैं मोहताज हूँ उस खैर का जो तू मेरी तरफ उतारे। फिर उन में से एक मूसा (अलैहिस्सलाम) के

تَشْتَقِي عَلَى اسْتِحْيَاءٍ ۚ قَالَتْ إِنَّ ابْنِي يَدْعُوكَ لِيَجْزِيَكَ

पास आई जो शरमाती हुई चल रही थी। केहने लगी मेरे अब्बा आप को बुला रहे हैं ताके आप को उजरत दें इस के

اَجَرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ

सिले में के आप ने हमारे जानवरों को पानी पिलाया। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) शूऐब (अलैहिस्सलाम) के पास पहुँचे और उन के सामने

اَلْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۖ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢٥﴾

किस्सा बयान किया तो शूऐब (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया आप खौफ़ न कीजिए, आप ने ज़ालिम क़ौम से नजात पा ली।

قَالَتْ اِحْدَاهُمَا يَابَتِ اِسْتَاْجِرُهُ ۚ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ

उन में से एक ने कहा ऐ मेरे अब्बा! आप इन्हें नौकरी पर रख लीजिए। यकीनन उन में सब से बेहतर जिन्हें आप मज़दूर

اَلْقَوِيُّ اَلْاَمِينُ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنِّىۤ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكَحَكَ

रखें वो है जो कूब्त वाला भी हो और अमानत वाला भी हो। शूऐब (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के मैं चाहता हूँ के आप के निकाह

اِحْدَى ابْنَتَى هَتَيْنِ عَلَى اَنْ تَاْجُرْنِى ثَمْنِى حَبْجَ ۚ

में हूँ मेरी इन दो बेटियों में से एक इस शर्त पर के आप मेरे यहाँ नौकरी करोगे आठ साल।

فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَا اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ

फिर अगर आप दस साल पूरे कर दो तो ये आप की तरफ से होगा। और मैं ये नहीं चाहता के आप पर मशक्कत

عَلَيْكَ ۖ سَتَجِدُنِى اِنْ شَاءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾

डालूँ। अनक़रीब आप मुझे सुलहा में से पाएंगे अगर अल्लाह ने चाहा।

قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِىۤ وَبَيْنَكَ ۖ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتَ

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ये मेरे और आप के दरमियान मुआहदा है। दोनों मुद्दतों में से जो मैं पूरी करूँ

فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ۖ وَاللّٰهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٢٨﴾

तो मेरे ऊपर कोई ज़्यादती नहीं की जाएगी। और अल्लाह वकील है उन बातों पर जो हम केह रहे हैं।

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهِ اُنْسَ

फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने मुद्दत पूरी कर ली और अपनी बीवी को ले कर चले तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने

مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْا

कोहे तूर की जानिब से आग देखी। अपनी बीवी से फ़रमाया के तुम ठेहरो,

اِنِّىۤ اَنْتُمْ نَارًا لَّعَلِّىۤ اَتِيْكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ

यकीनन मैं ने आग देखी है, शायद मैं आग की कोई खबर या आग का एक अंगारा

مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَلَمَّا اَتْهٰهَا نُودِىۤ مِنْ

ले आऊँ ताके तुम तापो। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) आग के पास पहुँचे तो बरकत वाले मैदान में

شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبْرَكَةِ	वादी	के	दाहने	किनारे	से	एक	दरख्त	से	आवाज़
مَنْ الشَّجَرَةِ اَنْ يُّمُوْسَىٰ اِىَّ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝	दी	गई	ऐ	मूसा!	यकीनन	मैं	ही	अल्लाह	हूँ, तमाम जहानों का रब हूँ।
وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَلَمَّا رَاَهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّىٰ	और	ये	के	आप	अपना	असा	डाल	दीजिए।	फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने असा को देखा के हरकत कर रहा है गोया के वो सांप
مُذِبِّرًا وَّلَمْ يُّعَقِّبْ ۚ يُّمُوْسَىٰ اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۚ	है	तो	आप	पुश्त	फेर	कर	भागें	और	पीछे मुड़ कर नहीं देखा। (अल्लाह ने फरमाया) ऐ मूसा! आप आगे आइए और खौफ न
اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ۝ اَسْلٰكَ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجُ	कीजिए।	यकीनन	आप	अमन	पाने	वालों	में	से	हैं। आप अपना हाथ अपने गिरेबान में दाखिल कीजिए, वो रोशन हो कर
بِضَآءٍ مِّنْ غَيْرِ سُوْءٍ ۚ وَّاضْمُمُ الْيَدِ الْاٰمِنِيْنَ ۝	निकलेगा	बगैर	किसी	बुराई	के।	और	अपनी	तरफ	अपना बाजू खौफ की वजह से
مِنَ الرَّهْبِ فَذٰلِكَ بُرْهٰنُكَ مِنْ رَبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ	मिला	लीजिए,	ये	दोनों	दलीलें	हैं,	इन्हें	आप	के रब की तरफ से फिरऔन और उस के दरबारियों के पास
وَمَلٰٓئِهٖ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ	ले	कर	जाइए।	इस	लिए	के	वो	नाफरमान	कौम है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज किया ऐ मेरे रब!
اِنِّیْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ یَّقْتُلُوْنَ ۝ وَاِخِی	यकीनन	मैं	ने	उन	में	से	एक	शख्स	को क़त्ल किया है, तो मैं डरता हूँ के वो मुझे क़त्ल कर देंगे। और मेरा
هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّیْ لِسٰنًا فَاَرْسِلْهُ مَعِیْ رَدًّا	भाई	हारून	वो	मुझ	से	ज्यादा	फसीह	ज़बान	वाला है तो आप उन को मेरे साथ मददगार बना कर भेज दीजिए
یُّصَدِّقُنِیْ ۚ اِنِّیْ اَخَافُ اَنْ یُّكَذِّبُوْنَ ۝ قَالَ سَنَشُدُّ	ताके	वो	मेरी	तसदीक	करें।	इस	लिए	के	मैं डरता हूँ के वो मुझे झुठलाएंगे। अल्लाह ने फरमाया के
عَضْدَكَ بِاِخِیْكَ وَنَجْعَلُ لَّکُمَا سُلْطٰنًا	अनक़रीब	हम	आप	का	बाजू	मज़बूत	करेंगे	आप	के भाई के ज़रिए और तुम दोनों को ग़लबा देंगे के वो
فَلَا یَصِلُوْنَ اِلَیْکُمَا ۚ بِاٰیٰتِنَا ۚ اَنْتُمَا وَمِنْ اَتْبَاعِکُمَا	तुम	तक	नहीं	पहोंच	सकेंगे।	हमारे	मोअजिज़ात	ले	कर जाओ। तुम दोनों और जिन्हों ने तुम्हारा इत्तिबा किया

اَلْغَلِبُوْنَ ﴿۵۵﴾ فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُّوسَىٰ بِآيَاتِنَا بَيِّنٰتٍ

तुम ही ग़ालिब रहोगे। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) उन के पास आए हमारे रोशन मोअजिज़ात ले कर,

قَالُوْا مَا هٰذَا اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرٰى وَمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا

उन्हों ने कहा ये तो महज़ एक घड़ा हुवा जादू है और हम ने इस को

فِى الْاَبَاۤئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿۵۶﴾ وَقَالَ مُّوسٰى رَبِّىْۤ اَعْلَمُ

अपने पेहले बाप दादा में नहीं सुना। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा के मेरा रब खूब जानता है

بِئْسَ جَآءَ بِالْهٰدِىْ مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ

उस को जो हिदायत ले कर आया है उस के पास से और उसे भी जिस के लिए

عَاقِبَةُ الدَّارِ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ

आखिरत का घर है। यकीनन ज़ालिम लोग फलाह नहीं पाएंगे। और फिरऔन ने कहा

يَاۤئِيهَا الْمَلَاۤءُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِنْ اِلٰهٍ غَيْرِىْۤ فَاَوْقِدْ

ऐ दरबारियो! मैं तुम्हारे लिए मेरे अलावा कोई माबूद नहीं जानता। ऐ हामान!

لِىْ يُّهَامِنُ عَلٰى الطِّينِ فَاجْعَلْ لِىْ صَرْحًا

तू मेरे लिए मिट्टी पर आग जला, फिर तू मेरे लिए एक ऊँची इमारत तय्यार कर

لَعَلِّىْۤ اَطْلُعُ اِلٰى اِلٰهٍ مُّوسٰى ۙ وَاِنِّىْ لَاطْمِنُۥ

ताके मैं मूसा के माबूद को झांक कर देखूँ। और मैं यकीनन उसे झूठा

مِّنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۵۸﴾ وَاَسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِى الْاَرْضِ

समझता हूँ। और फिरऔन और उस के लशकर ने उस मुल्क में नाहक़ बड़ा

بَغْيٍ الْحَقِّ وَظَنُوْۤا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ﴿۵۹﴾

बनना चाहा और समझा के वो हमारे पास वापस लाए नहीं जाएंगे।

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّۙ فَاَنْظَرْ كَيْفَ

फिर हम ने उसे और उन के लशकरों को पकड़ लिया, फिर हम ने उन्हें समन्दर में फेंक दिया। फिर आप देखिए के

كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۰﴾ وَجَعَلْنٰهُمْ اٰيَةًۭ يَّدْعُوْنَ

ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुवा? और हम ने उन्हें सरदार बनाया जो आग की तरफ़

اِلَى النَّارِ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنصَرُوْنَ ﴿۶۱﴾ وَاتَّبَعْنٰهُمْ

बुलाते थे। और कयामत के दिन उन की नुसरत नहीं की जाएगी। और हम ने

فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۖ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ هُمْ इस दुनिया में उन के पीछे लानत लगा दी। और कयामत के दिन वो
مِّنَ الْمَقْبُوحِينَ ۚ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنۢ بَعْدِ ۲ ۶۳ ۷ बुरों में से होंगे। यकीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को पेहली कौमों को हलाक
مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بِصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهَدَىٰ करने के बाद किताब दी, इन्सानों के लिए बसीरतों के तौर पर और हिदायत
وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ और रहमत के तौर पर ताके वो नसीहत हासिल करें। और आप मगरिबी किनारे में
الْغُرَبَىٰٓ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ नहीं थे जब हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की तरफ अम्रे (रिसालत) भेजा और आप वहाँ देखने वालों
مِنَ الشَّٰهِدِينَ ۚ وَلَكِنَّا أَنشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ में नहीं थे। लेकिन हम ने पैदा किया कौमों को फिर उन की उमरें तवील
الْعُمُرُ ۖ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِیٓ أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوَا हो गई। और आप ठेहरे हुए नहीं थे मदयन वालों में के उन पर
عَلَيْهِمْ أٰیٰتِنَا ۚ وَلَكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ۝ وَمَا كُنْتَ हमारी आयतें तिलावत करते, लेकिन हम ही रसूल भेजने वाले हैं। और आप मौजूद नहीं थे
بِجَانِبِ الطُّوْرِ إِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّن رَّبِّكَ कोहे तूर के किनारे पर जब हम ने पुकारा, लेकिन ये आप के रब की तरफ से रहमत है
لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتٰهُمْ مِّن نَّذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ ताके आप डराएं ऐसी कौम को जिन के पास कोई डराने वाला आप से पेहले नहीं आया
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَلَوْ لَا أَن تُصِيبَهُم مُّصِيبَةٌ ताके वो नसीहत हासिल करें। और अगर ये बात न होती के उन्हें मुसीबत पहींचे
بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ उन आमाल की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे, फिर वो कहें ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ
إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيٰتِكَ وَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ रसूल क्यूं नहीं भेजा के हम तेरी आयतों का इत्तिबा करते और हम ईमान लाने वालों में से हो जाते।

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ

फिर जब उन के पास हमारी तरफ से हक आया तो उन्होंने ने कहा के इस नबी को क्यूं नहीं दिया गया उस जैसा

مِثْلَ مَا أُوتِيَ مُوسَى ۖ أَوَلَمْ يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ مُوسَى

मोअजिजा जो मूसा (अलैहिस्सलाम) को दिया गया? क्या उन्होंने ने कुफ्र नहीं किया उस मोअजिजे के साथ जो मूसा (अलैहिस्सलाम) को दिया गया

مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوا سِحْرُنِ تَظَاهَرَا ۖ وَ قَالُوا إِنَّا بِكُلِّ

इस से पेहले? उन्होंने ने कहा के दो जादूगर हैं जिन्होंने ने एक दूसरे की मदद की है। और उन्होंने ने कहा के हम किसी मोअजिजे

كَفْرُونَ ۚ قُلْ فَاتُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ

को नहीं मानते। आप फरमा दीजिए के तुम अल्लाह की तरफ से किताब लाओ जो

أَهْدَىٰ مِنْهُمَا أَتَّبَعُهُ ۚ إِنَّ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ فَإِنْ

उन दोनों से ज्यादा रास्ता बतलाने वाली हो के मैं उस के पीछे चलूँ अगर तुम सच्चे हो। फिर अगर

لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا يُتَّبَعُونَ أَهْوَاءَهُمْ ۖ

वो आप की बात का जवाब न दें तो जान लो के यकीनन वो अपनी ख्वाहिशात के पीछे चल रहे हैं।

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوَاهُ ۖ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللَّهِ ۚ

और उस से ज्यादा गुमराह कौन होगा जो अपनी ख्वाहिश के पीछे चले अल्लाह की तरफ से हिदायत के बगैर।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۚ وَلَقَدْ وَصَّلْنَا

बेशक अल्लाह ज़ालिम कौम को हिदायत नहीं देते। यकीनन हम ने उन के लिए

لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۚ الَّذِينَ آتَيْنَهُمْ

ये कलाम (कुरआन) लगातार भेजा ताके वो नसीहत हासिल करें। वो जिन को हम ने इस से पेहले

الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ۚ وَإِذَا يُتْلَىٰ

किताब दी वो उस पर ईमान लाते हैं। और जब उन पर उसे तिलावत

عَلَيْهِمْ قَالُوا آمَنَّا بِهِ ۖ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّنَا ۖ إِنَّا كُنَّا

किया जाता है, तो केहते हैं के हम इस पर ईमान लाए, यकीनन ये हक है हमारे रब की तरफ से, यकीनन हम

مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ۚ أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ

इस से पेहले भी मुसलमान थे। यही हैं जिन्हें उन का अज़्र दुगना मिलेगा इस वजह से के

بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا

उन्होंने ने सब्र किया और वो भलाई के ज़रिए बुराई को दफा करते हैं और उन चीज़ों में से जो

رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿٥٢﴾ وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلِّمُوا عَلَيْهِمْ لَا تَبْتَغِي الْجَاهِلِينَ ﴿٥٣﴾ إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٥٤﴾ وَقَالُوا إِن تَتَّبِعِ الْهْدَىٰ مَعَكَ تَتَخَطَّفُ مِنْ أَرْضِنَا أَوَلَمْ نُبْنِ لَهُمْ حَرَمًا آمِنًا يُجْبَىٰ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ بَطَرَتْ مَعِيشَتَهَا ۖ فَتِلْكَ مَسْكِنُهُمْ لَمَّا تُوَسَّدَوْا عَنْ قَرْيَتِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۖ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ﴿٥٦﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمَمٍ رُّسُولًا يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۖ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ﴿٥٧﴾ وَمَا أُوتِيتُمْ مِّن شَيْءٍ مَّغْرُورًا ۚ إِنَّكُمْ ظَالِمُونَ لِنَفْسِكُمْ ۖ وَمَا أُولَٰئِكَ بِمُعْجِزِينَ ۚ وَمَا أُولَٰئِكَ بِبَارِعِينَ ۚ إِنَّكُمْ أَعْرَضْتُمْ عَنْ إِلَٰهِكُمْ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٥٨﴾ وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ لِلْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ إِنَّمَا جَعَلْتُمَا شُرَكَاءَ ۖ وَكَذَلِكَ تَبَيَّنَ لَكُمُ الْآيَاتُ لِقَوْمٍ ذَوِّ عِلْمٍ لَّعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٩﴾ وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ لِلْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ إِنَّمَا جَعَلْتُمَا شُرَكَاءَ ۖ وَكَذَلِكَ تَبَيَّنَ لَكُمُ الْآيَاتُ لِقَوْمٍ ذَوِّ عِلْمٍ لَّعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٦٠﴾ وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ لِلْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ إِنَّمَا جَعَلْتُمَا شُرَكَاءَ ۖ وَكَذَلِكَ تَبَيَّنَ لَكُمُ الْآيَاتُ لِقَوْمٍ ذَوِّ عِلْمٍ لَّعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٦١﴾ وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ لِلْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ إِنَّمَا جَعَلْتُمَا شُرَكَاءَ ۖ وَكَذَلِكَ تَبَيَّنَ لَكُمُ الْآيَاتُ لِقَوْمٍ ذَوِّ عِلْمٍ لَّعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٦٢﴾	हम ने उन्हें दीं खर्च करते हैं। और जब वो लगव बात सुनते हैं तो उस से ऐराज करते हैं और कहते हैं के हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं। अस्सलामु अलैकुम। जाहिल हमें नहीं चाहिए। बिल्कुल आप हिदायत नहीं दे सकते उस को जिसे आप चाहें लेकिन अल्लाह हिदायत देता है जिसे वो चाहता है। और अल्लाह हिदायत पाने वालों को खूब जानता है। और उन्होंने ने कहा के अगर हम इस हिदायत के पीछे चलेंगे तेरे साथ तो हमें हमारे मुल्क से उचक लिया जाएगा। क्या हम ने उन को जगह नहीं दी अमन वाले हरम में जिस की तरफ हर किस्म के फल खींच कर लाए जाते हैं हमारी तरफ से रोज़ी के तौर पर? लेकिन उन में से अक्सर जानते नहीं। और कितनी बस्तियाँ हम हलाक कर चुके हैं जो अपनी मईशत पर इतराती थी। तो ये उन के मकानात हैं जिन में रहा नहीं गया मِّن بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۖ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ﴿٥٦﴾ उन के बाद मगर बहोत थोड़ा। और हम ही वारिस हुए।	وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمَمٍ رُّسُولًا يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۖ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ﴿٥٧﴾ وَمَا أُوتِيتُمْ مِّن شَيْءٍ	और आप का रब बस्तियों को हलाक नहीं कर देता जब तक के उन में से बड़ी बस्ती में रसूल नहीं भेजता जो उन पर हमारी आयतें तिलावत करे। और हम बस्तियों को हलाक नहीं करते मगर जब ही के वहाँ वाले ज़ालिम होते हैं। और जो कुछ भी तुम्हें दिया गया है
--	---	---	--

فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَزِينَتُهَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ

वो दुन्यवी ज़िन्दगी का थोड़ा सा नफ़ा और उस की ज़ीनत है। और जो अल्लाह के पास है वो ज़्यादा बेहतर

خَيْرٌ وَأَبْقَى ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝۶۹ أَفَمَنْ وَعَدْنَاهُ

है और ज़्यादा बाकी रहने वाला है। क्या फिर तुम अक्ल नहीं रखते? क्या फिर वो शख्स जिस से हम ने

وَعَدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيهِ كَمَنْ مَتَّعْنَاهُ مَتَاعًا

अच्छा वादा कर रखा है फिर वो उसे पाएगा, उस शख्स की तरह हो सकता है के जिस को हम ने दुन्यवी

الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝

ज़िन्दगी में मुतमत्तेअ किया, फिर वो क़यामत के दिन (पकड़ कर) हाज़िर किए जाने वालों में से होगा?

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيُّ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ

और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकार कर कहेगा कहाँ हैं मेरे वो शुरका जिन का तुम दावा किया

تَزْعُمُونَ ۝۷۰ قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا

करते थे? वो लोग कहेंगे जिन पर अज़ाब का कलिमा साबित हो गया ऐ हमारे रब!

هَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا ۖ أَغْوَيْنَاهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۖ تَبَرَأْنَا

ये हैं वो जिन को हम ने बेहकाया। जिस तरह हम बेहके हुए थे हम ने उन्हें बेहकाया। हम तेरी तरफ बराअत

إِلَيْكَ مَا كَانُوا إِلَّا نَا يَعْبُدُونَ ۝۷۱ وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ

करते हैं के ये हमारी इबादत नहीं करते थे। और कहा जाएगा के तुम पुकारो तुम्हारे शुरका को,

فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ ۖ

फिर वो उन को पुकारेंगे, तो वो उन को जवाब नहीं देंगे, इसी दौरान वो अज़ाब देख लेंगे।

لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ۝۷۲ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ

काश के वो हिदायत पाते। और जिस दिन वो उन्हें पुकारेगा फिर कहेगा

مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ۝۷۳ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ

के तुम ने रसूलों को क्या जवाब दिया था? फिर उन पर खबरें उस दिन बन्द हो

يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ۝۷۴ فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ

जाएंगी, फिर वो एक दूसरे से भी सवाल नहीं करेंगे। हाँ, जिस ने तौबा की और ईमान लाया

وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ۝

और नेक अमल किए, तो उम्मीद है के वो फलाह पाने वालों में से हो।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۚ مَا كَانَ لَهُمُ

और तेरा रब पैदा करे जिसे चाहे और चुने जिसे चाहे। उन लोगों के पास

الْخَيْرَةُ ۚ سُبْحَنَ اللَّهِ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٩﴾

इन्तिखाब का इखतियार नहीं। अल्लाह पाक है और बरतर है उन चीजों में से जो ये शरीक ठेहराते हैं।

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٢٠﴾

और तेरा रब खूब जानता है उस को जो उन के सीने छुपाते और ज़ाहिर करते हैं।

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ

और वही अल्लाह है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं। उसी के लिए तमाम तारीफें हैं दुनिया में

وَالْآخِرَةِ ۚ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢١﴾ قُلْ

और आखिरत में। और उसी के लिए हुक्मत है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। आप पूछिए

أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا

तुम्हारी क्या राह है अगर अल्लाह तुम पर रात हमेशा रखे क़यामत

إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَاءٍ ۚ

के दिन तक, तो कौन माबूद है अल्लाह के अलावा जो तुम्हारे पास रोशनी लाए?

أَفَلَا تَسْمَعُونَ ﴿٢٢﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ

क्या फिर तुम सुनते नहीं हो? आप पूछिए तुम्हारी क्या राह है अगर अल्लाह तुम पर दिन हमेशा

النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ

रखे क़यामत के दिन तक, तो कौन माबूद है अल्लाह के अलावा

يَأْتِيكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٢٣﴾

जो तुम्हारे पास रात को लाए जिस में तुम सुकून हासिल करो? क्या फिर तुम बसीरत नहीं रखते?

وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا

और अपनी रहमत से अल्लाह ने तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए ताके तुम उस में सुकून

فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٢٤﴾

हासिल करो और ताके तुम अल्लाह का फज़ल तलाश करो और ताके तुम शुक्र अदा करो।

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ

और जिस दिन अल्लाह उन को पुकार कर कहेगा, कहाँ हैं मेरे शुरका जिन का तुम

كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿۴۷﴾ وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا

दावा किया करते थे? और हम हर उम्मत में से एक गवाह को निकालेंगे,

فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ

फिर हम कहेंगे के तुम्हारी दलील तुम लाओ, फिर वो जान लेंगे के हक अल्लाह ही के लिए है

وَصَلَّ عَنْهُمْ مِمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿۴۸﴾ إِنَّ قَارُونَ

और खो जाएंगे उन से वो जो वो झूठ घड़ा करते थे। यकीनन कांरून

كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ

मूसा (अलैहिस्सलाम) की कौम में से था, फिर उन पर बड़ाई मारने लगा। और हम ने उसे

مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوزَ بِالْعُصْبَةِ

खज़ानों में से इतना दिया था के उस की कुन्जियाँ ताकतवर जमाअत को

أُولَى الْقُوَّةِ ۚ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ

थका देती थी। जब के उस से उस की कौम ने कहा तू मत इतरा, यकीनन अल्लाह

لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ﴿۴۹﴾ وَابْتَغَ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ

इतराने वालों से महबबत नहीं करता। और तू उस माल में जो अल्लाह ने तुझे दिया

الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا

दारे आखिरत को तलाश कर और तू दुनिया में से अपना हिस्सा (आखिरत के लिए लेना) मत भूल

وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفُسَادَ

और तू एहसान कर जैसा के अल्लाह ने तेरी तरफ एहसान किया और तू ज़मीन में फसाद

فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُبْسِدِينَ ﴿۵۰﴾ قَالَ

मत फैला। यकीनन अल्लाह फसाद फैलाने वालों से महबबत नहीं करते। कांरून बोला

إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي ۖ أَوَلَمْ يَعْلَمْ

के मुझे ये माल मिला है उस इल्म की वजह से जो मेरे पास है। क्या वो ये जानता नहीं के

أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ

अल्लाह ने उस से पेहले कौमों को हलाक किया है जो

أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَ أَكْثَرُ جَمْعًا ۖ وَلَا يُسْأَلُ

उस से ज़्यादा कूबत वाली और उस से ज़्यादा माल जमा करने वाली थीं? और गुनाहों के मुतअल्लिक

عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿۵۸﴾ فَخَرَجَ عَلَى قَوْمِهِ

मुजरिमों से सवाल नहीं किया जाएगा (आमालनामे में मौजूद ही होंगे)। फिर कासून अपनी कौम के सामने

فِي زِينَتِهِ ۖ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا

अपनी ज़ीनत में निकला। तो कहने लगे जो दुन्यवी ज़िन्दगी चाहते थे

يَلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ ۖ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ

के काश के हमें मिलता जैसा कासून को दिया गया है। यकीनन कासून बड़ी किस्मत

عَظِيمٍ ﴿۵۹﴾ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ

वाला है। और उन लोगों ने कहा जिन को इल्म दिया गया के तुम्हारे लिए हलाकत हो!

ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنۢ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۖ

अल्लाह का सवाब बेहतर है उस के लिए जो ईमान लाया और नेक अमल किए।

وَلَا يُلْقِيهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ﴿۶۰﴾ فَخَسَفْنَا بِهِ وَبَدَارِهِ

और उसे नहीं पाएंगे मगर सब्र करने वाले ही। फिर हम ने कासून और उस का घर ज़मीन में

الْأَرْضَ ۖ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُونَهُ

धंसा दिया। फिर उस के लिए कोई जमाअत नहीं थी जो उस की नुसरत करती

مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِينَ ﴿۶۱﴾

अल्लाह के सिवा। और खुद भी वो अपनी मदद न कर सका।

وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ

और वो लोग जो कल को उस की जगह पर होने की तमन्ना करते थे वो कहने लगे

وَيُكَانَ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنۢ يَّشَاءُ

के तेरे लिए हलाकत हो! यकीनन अल्लाह रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए चाहता है

مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَوْلَا أَن مَّنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ

अपने बन्दों में से और तंग करता है जिस के लिए चाहता है। अगर अल्लाह हम पर एहसान न करता तो हमें भी ज़मीन

بِنَاءٍ وَيُكَانَ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿۶۲﴾ تِلْكَ الدَّارُ

में धंसा देता। तेरे लिए हलाकत हो, यकीनन काफिर लोग फलाह नहीं पाएंगे। ये दारे आखिरत

الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي

हम उसे बनाते हैं उन लोगों के लिए जो ज़मीन में बरतरी

اَلْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۝ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿۸۴﴾ اور فساد نهی چاہتے اور اچھا انجام ملنے کے لیے ہے۔
مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۚ وَمَنْ جَاءَ جو بھلائی لے کر آئے گا تو اس کو اس سے بہتر بدلہ ملے گا اور جو بُرائی لے کر
بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ آئے گا تو گناہ کرنے والوں کو سزا کے
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿۸۵﴾ إِنَّ الَّذِي فَرَضَ آمال ہی کی سزا ملے گا۔ یقیناً وہ اللہ جس نے
عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ ۖ قُلْ رَبِّي قرآن آپ پر فرض کیا، وہ یقیناً آپ کو مآد کی طرف لوٹانے والا ہے۔ آپ فرما دیجیے میرا رب
أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلٰلٍ بہت جانتا ہے کہ کون ہدایت لے کر آیا اور کون خلی گمراہی
مُبِينٍ ﴿۸۶﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَن يُلْقَىٰ إِلَيْكَ میں ہے؟ اور آپ کو تو یقیناً نہیں تھا کہ آپ کی طرف کتاب اترے گی
الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا آئے گی مگر تیرے رب کی رحمت کی وجہ سے (ناجیل ہوئی)، اس لیے آپ کافروں کے
لِلْكَافِرِينَ ﴿۸۷﴾ وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ مددگار نہ بنے۔ اور آپ کو اللہ کی آیات سے یہ نہ روکے اس کے بعد
إِذْ أُنزِلَتْ إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ کہ وہ آپ کی طرف اتر گئی اور آپ اپنے رب کی طرف دعوے دیجیے اور مشرکین
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ میں سے نہ ہوں۔ اور اللہ کے ساتھ کسی دوسرے مآبود کو نہ پکاریں۔
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ کوئی مآبود نہیں مگر وہی۔ سوا اس کی ذات کے ہر چیز ہلاک ہونے والی ہے۔
لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿۸۸﴾ اسی کے لیے حکم ہے اور اسی کی طرف تم لوٹاے جاؤ گے۔

رُكُوعُهَا ٤ और ७ रुकूअ हैं	(२९) سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ تَمَكِّيَّةٌ (٨٥) सूरह अन्कबूत मक्का में नाज़िल हुई	آيَاتُهَا १९ उस में ६६ आयतें हैं
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।		
اَلَمْۤ اَحْسِبِ النَّاسَ اَنْ يُّتْرَكُوْا اَنْ يَقُوْلُوْا		
अलिफ लाम मीम। क्या इन्सानों ने ये समझ रखा है के उन्हें छोड़ दिया जाएगा इतना केह देने पर के		
اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ۝ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ		
“अमना” और उन को आजमाया नहीं जाएगा? यकीनन हम ने आजमाया था उन लोगों को जो		
مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ		
उन से पेहले थे, फिर अल्लाह ज़रूर मालूम कर के रहेगा उन लोगों को जो सच्चे हैं और झूठों को ज़रूर		
الْكَٰذِبِيْنَ ۝ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاَتِ		
मालूम करेगा। क्या उन लोगों ने जो बुरे अमल करते हैं ये समझ रखा है के वो हम से भाग कर आगे		
اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ۚ سَآءَ مَا يَخْكُمُوْنَ ۝ مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَآءَ		
निकल सकते हैं? बुरा है जो वो फैसला कर रहे हैं। जो अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखता		
اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاۤيۡتُ ۚ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ۝		
है तो यकीनन अल्लाह का मुक़र्रर किया हुवा वक़्त ज़रूर आने वाला है। और वो सुनने वाला, इल्म वाला है।		
وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ		
और जो मुजाहदा करता है तो सिर्फ अपनी ही ज़ात के लिए मुजाहदा करता है। यकीनन अल्लाह तमाम		
عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ		
जहान वालों से बेनियाज़ है। और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे		
لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاَتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِیْ		
तो हम उन से उन की बुराइयाँ दूर कर देंगे और हम उन्हें बदला देंगे उन अच्छे कामों का जो		
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَ وَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ		
वो करते थे। और हम ने इन्सान को उस के वालिदैन् के साथ भलाई का हुक्म		
حُسْنًا ۚ وَاِنْ جَاهَدَكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ		
दिया। और अगर वो तुझे मजबूर करें ताके तू मेरे साथ शरीक ठेहराए ऐसी चीज़ को जिस की तेरे पास		

بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطْعَمُهُمَا إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأَنْتَبِئُكُمْ

कोई दलील नहीं तो उन का केहना मत माना। मेरी ही तरफ तुम्हें वापस आना है, फिर मैं तुम्हें खबर दूँगा

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

उन कामों की जो तुम करते थे। और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे

لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ

हम उन्हें ज़रूर नेक लोगों में दाखिल करेंगे। और लोगों में से कुछ वो हैं जो केहते हैं के

أَمَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةً لِلنَّاسِ

“अमّا باللّٰह”। फिर जब उसे अल्लाह की वजह से ईज़ा दी जाती है तो इन्सानों की ईज़ारसानी को अल्लाह के अज़ाब

كَعَذَابِ اللَّهِ ۖ وَلَئِنْ جَاءَ نَصْرٌ مِّن رَّبِّكَ لَيَقُولُنَّ

के मानिन्द करार देता है। और अगर तेरे रब की तरफ से नुसरत आए तो वो ज़रूर कहेगा के

إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۖ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ

यकीनन हम तुम्हारे साथ थे। क्या अल्लाह बखूबी नहीं जानता जो जहान वालों के सीनों में (छुपा हुआ)

الْعَالَمِينَ ۝ وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ

है? और अल्लाह ज़रूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और अल्लाह मुनाफ़िकीन को ज़रूर मालूम

الْمُنَافِقِينَ ۝ وَ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا

करेगा। और काफ़िरों ने ईमान वालों से कहा के तुम हमारे

اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطِيئَتَكُمْ وَمَا هُمْ بِحَامِلِينَ

रास्ते पर चलने लग जाओ और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेते हैं। हालांकि वो उन के गुनाहों में से

مِّنْ خَطِيئَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۖ إِنَّهُمْ لَكَذِبُونَ ۝ وَلَيَحْمِلُنَّ

कुछ भी उठाने वाले नहीं हैं। यकीनन वो झूठे हैं। और वो ज़रूर अपने बोझ

أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَّعَ أَثْقَالِهِمْ ۖ وَلَيُسْأَلُنَّ يَوْمَ

उठाएंगे और अपने बोझ के साथ दूसरों के बोझ भी उठाएंगे। और उन से क़यामत के दिन ज़रूर सवाल

الْقِيَمَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا

किया जाएगा उस के मुतअल्लिक जो वो झूठ घड़ा करते थे। यकीनन हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को रसूल बना कर भेजा

إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا ۖ

उन की क़ौम की तरफ, फिर वो उन में ठेहरे एक हज़ार साल मगर पचास साल (यानी साढ़े नौ सौ बरस)।

فَاخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٣﴾ فَأَنْجَيْنَاهُ

फिर उन को तूफान ने पकड़ लिया इस हाल में के वो ज़ालिम थे। फिर हम ने उन्हें और कशती वालों को

وَ أَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾ وَإِبْرَاهِيمَ

नजात दी और हम ने उसे तमाम जहान वालों के लिए निशानी बनाया। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ۖ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ

जब के उन्होंने ने अपनी कौम से फरमाया के अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो। ये तुम्हारे लिए बेहतर है

إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٦﴾ إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ

अगर तुम जानते हो। अल्लाह के सिवा तुम सिर्फ बुतों को

أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ أَفْكَاطَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ

पूजते हो और तुम सिर्फ झूठ घड़ते हो। यकीनन वो जिन की तुम अल्लाह के सिवा इबादत

مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِنْدَ اللَّهِ

करते हो वो तुम्हें रोज़ी देने के मालिक नहीं हैं, तो तुम अल्लाह के पास रोज़ी

الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٧﴾

तलब करो और उसी की इबादत करो और उसी का शुक्र अदा करो। उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

وَإِنْ تَكْذِبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن قَبْلِكُمْ وَمَا

और अगर तुम झुठलाओ तो तुम से पेहले कई उम्मतों ने झुठलाया। और रसूल के

عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٨﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ

ज़िम्मे सिवाए साफ़ साफ़ पहोँचा देने के कुछ भी नहीं। क्या उन्होंने ने देखा नहीं के अल्लाह

يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ

कैसे मखलूक को पेहली मरतबा पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा। यकीनन ये अल्लाह पर

يَسِيرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ

आसान है। आप फरमा दीजिए के तुम ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो के कैसे

بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ

उस ने मखलूक को पेहली मरतबा पैदा किया, फिर अल्लाह आखिरी बार ज़िन्दा कर के उठाएगा।

إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ

यकीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। वो अज़ाब दे जिसे चाहे

	وَيَرْحَمُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ۝ وَمَا أَنْتُمْ
	और रहम करे जिस पर चाहे। और उसी की तरफ तुम्हें पलट कर जाना है। और तुम ज़मीन में
	بِمُعْجِزَيْنِ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۚ وَمَا لَكُمْ
	(भाग कर) अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते और न आसमान में (चढ़ कर)। और तुम्हारे लिए
۲۹	مَنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
	अल्लाह के अलावा कोई दोस्त और मददगार नहीं। और जो अल्लाह की
	بَالَيْتِ اللَّهُ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَكْفُرُونَ ۖ مِنْ رَحْمَتِي
	आयतों के और उस की मुलाक़ात के मुन्किर हैं वो मायूस हैं मेरी रहमत से
	وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ
	और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। फिर उन की कौम का जवाब नहीं था
	إِلَّا أَنْ قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنجَاهُ اللَّهُ
	मगर ये के उन्होंने ने कहा के तुम उसे क़त्ल कर दो या जला दो, फिर अल्लाह ने उन्हें आग से
	مِنَ النَّارِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَقَالَ
	बचा लिया। यकीनन उस में कई निशानियाँ हैं ऐसी कौम के लिए जो ईमान लाती है। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)
	إِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا ۚ مَّوَدَّةَ
	ने फरमाया के तुम ने अल्लाह के सिवा सिर्फ़ बुत बना रखे हैं, आपस की
	بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ يَكْفُرُ
	दोस्ती की बिना पर दुन्यवी ज़िन्दगी में। फिर क़यामत के दिन तुम में से
	بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۚ وَمَأْوَاكُمُ
	एक दूसरे का इन्कार करोगे और तुम में से एक दूसरे पर लानत करोगे। और तुम्हारा ठिकाना
۲९	النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نَّصِيرِينَ ۝ فَأَمَّنَ لَهُ لُوطٌ ۖ
	दोज़ख होगा और तुम्हारे लिए कोई मददगार नहीं होगा। फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) पर ईमान लाए लूत (अलैहिस्सलाम)।
	وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّي ۖ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ
	और कहा के मैं अपने रब की तरफ हिजरत कर रहा हूँ। यकीनन वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत
	الْحَكِيمُ ۝ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا
	वाला है। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इसहाक और याकूब अता किए और हम ने

فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ وَآتَيْنَاهُ أَجْرَهُ

उन की औलाद में नुबूवत और किताब रख दी। और हम ने उन्हें उन का अज़्र दिया

فِي الدُّنْيَا ۖ وَإِنَّا فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٤﴾

दुनिया में। और यकीनन वो आखिरत में सुलहा में से होंगे।

وَلَوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ ۚ

और लूत (अलैहिस्सलाम) को (भी) जब उन्होंने ने अपनी कौम से फरमाया के यकीनन तुम ऐसी बेहयाई करते हो

مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾ أَيَّتَكُمْ

जो तमाम जहान वालों में से किसी ने तुम से पेहले नहीं की। क्या तुम

لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ ۚ وَتَأْتُونَ

मर्दों के पास आते हो और तुम डाका डालते हो? और तुम

فِي نَادِيكُمُ الْمُنْكَرَ ۚ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ

अपनी मजलिसों में बुरी हरकतें करते हो? फिर उन की कौम का जवाब नहीं हुवा

إِلَّا أَنْ قَالُوا اتُّبْنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِنْ كُنْتَ

मगर ये के उन्होंने ने कहा के तुम हमारे पास अल्लाह का अज़ाब ले आओ अगर तुम

مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٦﴾ قَالَ رَبِّ انصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ

सच्ची में से हो। लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ऐ मेरे रब! इस मुफसिद कौम के खिलाफ तू मेरी

الْمُفْسِدِينَ ﴿١٧﴾ وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ

नुसरत फरमा। और जब हमारे भेजे हुए फरिशते इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास बशारत

بِالْبُشْرَى ۖ قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ

ले कर आए, तो उन्होंने ने कहा के हम इस बस्ती वालों को हलाक करने वाले हैं।

إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿١٨﴾ قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا ۖ

इस लिए के यहाँ वाले ज़ालिम हैं। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के उस में लूत (अलैहिस्सलाम) भी हैं।

قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَن فِيهَا ۖ لَنَنْجِيَنَّهُ وَأَهْلَهُ

फरिशते केहने लगे हम खूब जानते हैं उन को जो उस बस्ती में है। हम लूत (अलैहिस्सलाम) और उन के मानने

إِلَّا امْرَأَتَهُ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿١٩﴾ وَلَمَّا أَنْ

वालों को बचा लेंगे मगर उन की बीवी। ये हलाक होने वालों में से होगी। और जब

جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سَيِّئًا بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا

हमारे भेजे हुए फरिश्ते लूत (अलैहिस्सलाम) के पास आए तो उन की वजह से वो ग़मगीन और तंगदिल हुए

وَقَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۖ إِنَّا مُنْجُوكَ وَأَهْلَكَ

और उन फरिश्तों ने कहा के आप न डरिए, न ग़म कीजिए। हम आप को और आप के मानने वालों को बचा लेंगे

إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ۖ إِنَّا مُنْزِلُونَ

मगर आप की बीवी को, ये हलाक होने वालों में से होगी। यकीनन हम इस बस्ती वालों पर

عَلَىٰ أَهْلِ هَذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا

आसमान से अज़ाब उतारेंगे इस वजह से के वो (फासिक हैं)

يَفْسُقُونَ ۖ وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ

नाफरमान हैं। यकीनन हम ने उस बस्ती की कुछ वाज़ेह निशानी अक्ल वालों के लिए

يَعْقِلُونَ ۖ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ فَقَالَ

रेहने दी है। और मद्यन की तरफ भेजा उन के भाई शुऐब (अलैहिस्सलाम) को। शुऐब (अलैहिस्सलाम)

يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْتَوْا

ने फरमाया ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की इबादत करो और तुम आखिरी दिन की उम्मीद रखो और तुम ज़मीन में

فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۖ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ

फसाद फैलाते हुए मत फिरो। फिर उन्होंने ने उन को झुठलाया, फिर उन को ज़लज़ले ने पकड़ लिया,

فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جُثَثِينَ ۖ وَعَادًا وَشُرُودًا

फिर वो अपने घरों में घुटने के बल औन्धे पड़े रेह गए। और आद और समूद को हलाक किया

وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسْكِنِهِمْ ۖ وَرَيْنَ لَهُمْ

और तुम्हारे सामने उन के घरों में से कुछ साफ नज़र आते हैं। और शैतान ने उन

الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ

के लिए उन के आमाल मुज़य्यन किए, फिर उन को रास्ते से रोक दिया

وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ۖ وَ قَارُونَ وَ فِرْعَوْنَ

हालांके वो होशियार थे। और कारून और फिरऔन

وَهَامَانَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُّوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ

और हामान को हलाक किया। यकीनन मूसा (अलैहिस्सलाम) उन के पास मोअजिज़ात ले कर आए,

فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سَبْقِينَ ۝

फिर उन्होंने ने ज़मीन में बड़ा बनना चाहा और वो (भाग कर) न निकल सके।

فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنْبِهِ ۖ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ

फिर सब को हम ने उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया। फिर उन में से किसी पर हम ने कंकर का तूफान

حَاصِبًا ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۖ وَمِنْهُمْ

भेजा। और उन में से किसी को चीख ने पकड़ लिया। और उन में से

مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ ۖ وَ مِنْهُمْ مَّنْ أَغْرَقْنَا ۖ

किसी को हम ने ज़मीन में धंसा दिया। और उन में से वो भी थे जिन को हम ने ग़र्क़ किया।

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ

और अल्लाह ऐसा नहीं है के उन पर जुल्म करे लेकिन वो खुद अपनी जानों पर जुल्म

يُظْلِمُونَ ۝ مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ

करते थे। उन लोगों का हाल जिन्होंने ने अल्लाह के सिवा हिमायती

اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوتِ ۖ إِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ

बना लिए हैं मकड़ी की तरह है, जिस ने जाला बनाया।

وَإِنْ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوتِ ۖ لَوْ كَانُوا

और यकीनन घरों में सब से कमज़ोर (बूदा) मकड़ी का जाला है। काश के वो

يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ

जानते। यकीनन अल्लाह जानता है जिन चीज़ों को अल्लाह के

مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

सिवा ये पुकारते हैं। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَا

और ये मिसालें हैं जिन को हम इन्सानों के लिए बयान करते हैं। और सिर्फ इल्म वाले

إِلَّا الْعَالِمُونَ ۝ خَلَقَ اللَّهُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ

ही उसे समझते हैं। आसमानों और ज़मीन को अल्लाह ने हक़ के खातिर पैदा

بِالْحَقِّ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

किया। यकीनन उस में ईमान लाने वालों के लिए निशानी है।

اُنزلَ مَا اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَاَقِمِ الصَّلَاةَ ط

आप उस किताब की तिलावत करते रहिए जो आप की तरफ वही की गई है और नमाज़ काइम कीजिए।

اِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ

यकीनन नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है। और अल्लाह का जिक्र

اَكْبَرُ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ﴿۲۵﴾ وَلَا تُجَادِلُوْا اَهْلَ

सब से बड़ी चीज़ है। और अल्लाह जानता है वो जो तुम करते हो। और बेहतर अन्दाज़ के सिवा

الْكِتَابِ اِلَّا بِالَّتِي هِيَ اَحْسَنُ ۚ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ

एहले किताब से झगड़ा मत करो। मगर वो जो उन में से ज़ालिम हैं

وَقَوْلُوْا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ

और यूँ कहो हम ईमान लाए हैं उस किताब पर जो हमारी तरफ उतारी गई और जो तुम्हारी तरफ उतारी गई

وَالِهٰنَا وَاِلَهُكُمْ وَاٰحِدٌ وَّ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۲۶﴾

और हमारा और तुम्हारा माबूद एक ही है और हम उसी के ताबेदार हैं।

وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنَا اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ۚ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمْ الْكِتٰبَ

और इसी तरह हम ने आप की तरफ ये किताब उतारी। फिर वो जिन को हम ने किताब दी

يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهٖ ۚ وَمَا يَجْحَدُ

वो उस पर ईमान रखते हैं। और उन लोगों में से कुछ उस पर ईमान रखते हैं। और हमारी आयतों का

بِاٰیٰتِنَا اِلَّا الْكَافِرُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ

इन्कार नहीं करते मगर जो काफिर हैं। और आप इस से पेहले न कोई किताब तिलावत

مِّنْ كِتٰبٍ وَلَا تَخْطُّهٖ بِيَمِيْنِكَ اِذَا لَارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۲۸﴾

करते थे और न अपने दाहने हाथ से लिखते थे, तब तो ज़रूर बातिलपरस्त शक में पड़ते।

بَلْ هُوَ اٰیٰتُ بَيِّنٰتٍ فِیْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوْا الْعِلْمَ

बल्के ये रोशन आयतें हैं उन लोगों के सीनों में जिन को इल्म दिया गया।

وَمَا يَجْحَدُ بِاٰیٰتِنَا اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۹﴾ وَقَالُوْا

और हमारी आयात का ज़ालिम लोग ही इन्कार करते हैं। और केहते हैं

لَوْلَا اُنْزِلَ عَلَیْهِ اٰیٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ قُلْ اِنَّمَا الْاٰیٰتُ

उस पर उस के रब की तरफ से मोअजिज़ात क्यूँ नहीं उतारे गये? आप फरमा दीजिए के मोअजिज़ात तो सिर्फ

عِنْدَ اللَّهِ ۖ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٠﴾ أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا अल्लाह के पास हैं। और मैं तो सिर्फ साफ साफ डराने वाला हूँ। क्या उन के लिए ये काफी नहीं है	
أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ के हम ने आप की तरफ़ ये किताब उतारी जो उन पर तिलावत की जाती है। यकीनन उस में	
لَرَحْمَةٍ وَذِكْرَىٰ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ بَيْنِي रहमत है और नसीहत है ऐसी कौम के लिए जो ईमान लाती है। आप फरमा दीजिए अल्लाह मेरे	ع
وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۖ और तुम्हारे दरमियान काफी गवाह है। अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है।	
وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ और जो बातिल पर ईमान रखते हैं और अल्लाह के साथ कुफ़र करते हैं, यही लोग ख़सारा उठाने	
الْخَسِرُونَ ﴿٥٢﴾ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۖ वाले हैं। और ये लोग आप से अज़ाब जल्दी तलब कर रहे हैं।	
وَلَوْلَا أَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاءَهُمُ الْعَذَابُ ۖ وَلِيَأْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً और अगर वक़्त मुक़र्रर किया हुवा न होता तो उन के पास अज़ाब आ जाता। और अलबत्ता उन के पास वो अचानक ही	
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٣﴾ يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ आ जाएगा और उन्हें मालूम भी नहीं होगा। ये आप से अज़ाब जल्दी तलब कर रहे हैं।	
وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٥٤﴾ يَوْمَ يُغَشَّاهُمُ الْعَذَابُ और यकीनन जहन्नम काफ़िरों को घेरने वाली है। जिस दिन उन को अज़ाब ढांप लेगा	
مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ ۖ وَ يَقُولُ ذُوقُوا उन के ऊपर से और पैरों के नीचे से और कहेगा के तुम	
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٥﴾ يُعْبَادِي الَّذِينَ آمَنُوا अपने आमाल के मज़े लो। ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो!	
إِنَّ أَرْضِي وَاسِعَةٌ ۖ فَإِيَّايَ فَاعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾ كُلُّ نَفْسٍ यकीनन मेरी ज़मीन वसीअ है, तो तुम मेरी ही इबादत करो। हर जानदार को	
ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا मौत का मज़ा चखना है। फिर हमारी तरफ़ तुम्हें वापस आना है। और जो ईमान लाए	

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لِنُبَوِّئَنَّهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا يُجْرَى

और नेक अमल करते रहे, हम उन्हें ज़रूर जन्नत में से ठिकाना देंगे ऐसे बालाखानों (ऊपर वाली मन्ज़िलों)

مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ نِعْمَ أَجْرُ الْعَمِلِينَ ۝۵۸

में जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। अमल करने वालों का बदला कितना अच्छा है?

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝۵۹

वो लोग जिन्होंने ने सब्र किया और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं।

وَكَأَيِّنْ مِنْ دَابَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِمْقَهَا ۗ اللَّهُ يَرَزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۖ

और कितने जानवर हैं जो अपनी रोज़ी उठा कर नहीं रखते। अल्लाह ही उन्हें और तुम्हें भी रोज़ी देता है।

وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝۶۰ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ

और अल्लाह सुनने वाला, इल्म वाला है। और अगर आप उन से पूछें किस ने आसमान

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ

और ज़मीन पैदा किए और किस ने चाँद और सूरज को काम में लगा रखा है, तो ज़रूर वो बोलेंगे के

اللَّهُ ۖ فَإِنِّي يُؤْفَكُونَ ۝۶۱ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ

अल्लाह ने। फिर कहाँ वो लौटाए जाते हैं? अल्लाह रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए

يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

चाहता है अपने बन्दों में से और तंग करता है जिस के लिए चाहता है। यकीनन अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब

عَلِيمٌ ۝۶۲ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً

जानने वाला है। और अगर आप उन से सवाल करें के किस ने आसमान से पानी उतारा,

فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ

फिर उस के ज़रिए ज़मीन को उस के खुश्क हो जाने के बाद ज़िन्दा किया, तो ज़रूर वो जवाब देंगे के अल्लाह ने।

قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝۶۳

आप फ़रमा दीजिए के तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। लेकिन उन में से अक्सर समझते नहीं।

وَمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُوٌّ وَلَعِبٌ ۖ وَإِنَّ الدَّارَ

और ये दुन्यवी ज़िन्दगी नहीं है मगर दिल्लगी और खेला। और यकीनन आख़िरत

الْآخِرَةُ لَهِىَ الْحَيَاةُ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝۶۴

वाला घर वही (अस्ल) ज़िन्दगी है। काश ये समझते।

فَاِذَا رَكِبُوْا فِى الْفُلِكِ دَعَوْا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ

फिर जब वो सवार होते हैं कशती में तो अल्लाह को पुकारते हैं उसी के लिए इबादत को ख़ालिस करते

الدِّيْنَ ۝ فَلَمَّا نَجَّيْنَاهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ۝

हुए। फिर जब अल्लाह उन्हें खुशकी की तरफ़ बचा कर ले आता है, तो फौरन ही वो शिर्क करने लगते हैं।

لِيَكْفُرُوْا بِمَا اٰتَيْنَاهُمْ ۙ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝

ताके नाशुकरी करें उन नेअमतों में जो हम ने उन्हें दी। और ताके वो मजे उड़ा लें। फिर आगे उन्हें पता चलेगा।

اَوْ لَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَيَتَخَطَّفُ النَّاسُ

क्या उन्होंने ने देखा नहीं के हम ने अमन वाला हरम बनाया हालांकि लोग उस के अतराफ़ से उचक

مِنْ حَوْلِهِمْ ۚ اَفِى الْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ

लिए जाते हैं? क्या फिर वो बातिल पर ईमान रखते हैं और अल्लाह की नेअमतों की नाशुकरी

يَكْفُرُوْنَ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ

करते हैं? और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ

كَذَبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ ۚ اَلَيْسَ

घड़े या हक़ को झुठलाए जब वो उस के पास आए? क्या

فِىْ جَهَنَّمَ مَثْوٰى لِّلْكَافِرِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِىْنَا

जहन्नम काफ़िरों का ठिकाना नहीं? और वो लोग जिन्होंने ने मुजाहदा किया हमारी खातिर तो हम उन्हें

لِنَهْدِيْهُمْ سُبُلَنَا ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَ الْبٰحْسِنِيْنَ ۝

हमारे रास्तों की ज़रूर रहनुमाई करेंगे। और यकीनन अल्लाह एहसान करने वालों के साथ है।

ۙ اٰیٰتُهَا ۶۰ (۳۰) سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ (۸۴) رُكُوْعَاتُهَا ۶

और ६ रूकूअ हैं सूरह रूम मक्का में नाज़िल हुई उस में ६० आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الْم ۝ غُلِبَتِ الرُّومُ ۝ فِىْ اَدْنٰى الْاَرْضِ وَهُمْ

अलिफ लाम मीमा। रूमी उस ज़मीन के करीबी इलाके में मग़लूब हुए। और वो

مِّنْۢ بَعْدِ غَلِبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ۝ فِىْۢ بَضْعِ سِنِيْنَ ۝ اللّٰهُ

मग़लूब होने के बाद जल्द ही ग़ालिब होंगे। चन्द साल में। तमाम

الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ ۖ وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ

उमूर अल्लाह ही के कब्जे में हैं इस से पेहले भी और इस के बाद भी। और उस दिन ईमान वाले अल्लाह की

الْمُؤْمِنُونَ ۖ يَنْصَرُ اللَّهُ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ

नुसरत पर खुश हो जाएंगे। अल्लाह नुसरत करता है जिस की चाहता है। और वो ज़बर्दस्त है,

الرَّحِيمُ ۖ وَعَدَ اللَّهُ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ

निहायत रहम वाला है। ये अल्लाह के वादे के तौर पर है। अल्लाह अपने वादे के खिलाफ़ नहीं करेगा,

وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۖ يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا

लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। वो दुन्यवी ज़िन्दगी के ज़ाहिर का इल्म

مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَفْلُونَ ۖ

रखते हैं। और वो आखिरत से गाफिल हैं।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ

क्या उन्होंने ने सोचा नहीं अपने दिल में के अल्लाह ने आसमान और ज़मीन और उन के

وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ

दरमियान की चीज़ें पैदा नहीं कीं मगर हक़ के साथ और एक मुक़रर वक़्त तक के लिए?

وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ لَكَافِرُونَ ۖ

और यकीनन इन्सानों में से बहोत से अपने रब की मुलाकात का इन्कार करते हैं।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ

क्या वो ज़मीन में चले (फिरे) नहीं के देखते के उन लोगों का अन्जाम

عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً

कैसा हुवा जो उन से पेहले थे। जो उन से ज़्यादा कूवत वाले थे

وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا

और उन्होंने ने ज़मीन को जोता और आबाद किया था उस से ज़्यादा जितना इन्होंने ने आबाद किया है

وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ

और उन के पास उन के पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए थे? फिर अल्लाह ऐसा नहीं था के उन पर जुल्म करता,

وَلَكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۖ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةُ

लेकिन वो अपनी जानों पर जुल्म करते थे। फिर बुरा करने वालों

الَّذِينَ اسَاءُوا السُّوْاى اَنْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللّٰهِ وَكَانُوا का अन्जाम बहोत ही बुरा हुवा, इस वजह से के उन्होंने ने अल्लाह की आयात को झुठलाया और वो उन	ع
بِهَا يَسْتَهْزِءُونَ ۝ اللّٰهُ يَبْدُؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ के साथ मज़ाक करते थे। अल्लाह पेहली बार मख़लूक पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा,	
ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ फिर उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। और जिस दिन क़यामत का़िम होगी तो मुजरिम लोग	ع
الْمُجْرِمُونَ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِّنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاؤُا मायूस रह जाएंगे। और उन के लिए उन के शुरका में से सिफ़ारिश करने वाले भी नहीं होंगे	
وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كَافِرِينَ ۝ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ और वो अपने शुरका का इन्कार कर देंगे। और जिस दिन क़यामत का़िम होगी	ع
يَوْمَئِذٍ يَتَفَرَّقُونَ ۝ فَاَمَّا الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا उस दिन सब अलग अलग हो जाएंगे। फिर जो लोग ईमान लाए और नेक काम	
الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يَّخْبَرُونَ ۝ وَاَمَّا الَّذِينَ करते रहे तो वो बाग़ में होंगे, उन्हें खुश कर दिया जाएगा। और जिन्हों ने	ع
كَفَرُوا وَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ कूफ़ किया और हमारी आयतों को और आखिरत के मिलने को झुठलाया, तो वो	
فِي الْعَذَابِ مُحَضَّرُونَ ۝ فَسَبِّحْنِ اللّٰهَ حِينَ अज़ाब में हाज़िर किए जाएंगे। तो अल्लाह की तस्बीह करो जब	ع
تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ۝ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ शाम करो और जब सुबह करो। और उसी के लिए तमाम तारीफें हैं आसमानों और ज़मीन	
وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَ حِينَ تُظْهِرُونَ ۝ يُخْرِجُ الْحَيَّ में और सेपेहर के वक़्त और जिस वक़्त तुम दोपहर करो। वही ज़िन्दा को मुर्दा	ع
مِّنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ يُحْيِ से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है और ज़मीन को उस के खुश्क	
الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۝ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُونَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है। और इसी तरह तुम निकाले जाओगे। और अल्लाह की निशानियों में से	ع

اَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَا اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ﴿۲۰﴾

ये है के उस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर अब तुम बशर हो, फैल रहे हो।

وَمِنْ اٰیٰتِهٖ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا

और अल्लाह की निशानियों में से ये भी है के उस ने तुम्हारे लिए तुम ही (मियाँ बीवी) से जोड़ों को पैदा किया

لِتَسْكُنُوْا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَرَحْمَةً ۚ

ताके तुम उन के पास सुकून पाओ और तुम्हारे दरमियान महबबत और शफक़त रख दी।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَمِنْ اٰیٰتِهٖ خَلْقُ

यकीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो सोचती है। और अल्लाह की निशानियों में से आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ الَّسِّنِّتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ۚ

और ज़मीन को पैदा करना है और तुम्हारी बोलियों और तुम्हारे रंगों का अलग अलग होना है।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۲۲﴾ وَمِنْ اٰیٰتِهٖ مَنَاقِبُكُمْ

यकीनन उस में समझने वालों के लिए निशानियाँ हैं। और अल्लाह की निशानियों में से तुम्हारा सोना है

بَاللَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ اِنَّ

रात में और दिन में और तुम्हारा तलाश करना है उस की रोज़ी को। यकीनन

فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّسْمَعُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَمِنْ اٰیٰتِهٖ یُرِیْكُمْ

उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो सुनती है। और अल्लाह की निशानियों में से ये भी है के वो तुम्हें

الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَآءً فِیْهِ

बिजली दिखाता है डराने के लिए और लालच के लिए, और वो आसमान से पानी बरसाता है, फिर उस के ज़रिए

بِهٖ الْاَرْضَۤ اٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَمِنْ اٰیٰتِهٖ اَنْ تَقُومَ

ज़मीन को उस के खुश्क हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है। यकीनन उस में अलबत्ता निशानियाँ हैं

السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ بِاَمْرِهٖ ۚ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۚ

के हुक्म से काइम हैं। फिर जब वो तुम्हें पुकारेगा एक ही पुकार

مِّنَ الْاَرْضِ ۚ اِذَا اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿۲۵﴾ وَلَهُۥ مَنْ فِی

ज़मीन से तो उसी वक़्त तुम (ज़मीन से) निकल आओगे। और उस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ كُلُّ لَهٗ قَنَاطُونَ ﴿۳۰﴾ وَهُوَ الَّذِي

आसमानों और ज़मीन में हैं। तमाम उस के ताबेदार हैं। और वही अल्लाह है जो मख़लूक

يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۖ وَلَهُ

पेहली बार पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा और ये उस पर आसान है। और

الْبَثْلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ

सब से ऊँची शाने (वहदानीयत) उसी के लिए है आसमानों और ज़मीन में। और वो ज़बर्दस्त है,

الْحَكِيمُ ۚ ضَرَبَ لَكُمْ مَثَلًا مِّنْ أَنْفُسِكُمْ ۖ هَلْ لَّكُمْ

हिक्मत वाला है। उस ने तुम्हारे लिए मिसाल बयान की तुम्हारी जानों से। क्या तुम्हारे

مِّن مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاءَ فِي مِمَّا رَزَقَكُم

ममलूक तुम्हारे शरीक हैं उस रोज़ी में जो हम ने तुम्हें दी

فَأَنْتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ

के तुम (और वो ममलूक) बराबर हो जाओ, के तुम उन से डरो तुम्हारे अपने से डरने की तरह?

كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿۳۱﴾ بَلِ اتَّبَعَ

इसी तरह हम आयतें तफ़सील से बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल रखते हैं। बल्के ये

الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَهْدِي

ज़ालिम अपनी ख़्वाहिशात के पीछे बग़ैर दलील के चल पड़े हैं। फिर कौन उस को रास्ता

مَّنْ أَضَلَّ اللَّهُ ۖ وَمَا لَهُمْ مِّنْ تَصْرِيَةٍ ﴿۳۲﴾ فَأَقِمْ

दिखा सकता है जिसे अल्लाह गुमराह कर दे? और उन के लिए कोई मददगार नहीं होगा। तो आप अपना चेहरा हर

وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ

तरफ़ से फेर कर इसी दीन की तरफ़ रखिए, अल्लाह की फ़ितरत (दीन) की तरफ़ जिस पर अल्लाह ने इन्सानों को पैदा

عَلَيْهَا ۚ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ ۚ

किया है। बदलना नहीं है अल्लाह के बनाए हुए को। ये सीधा दीन है।

وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۳۳﴾ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ

लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। उसी की तरफ़ ख़ुजूअ करने वाले बनो

وَاتَّقُوا ۚ وَاقِيمُوا الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿۳۴﴾

और उसी से डरो और नमाज़ काइम करो और मुशरिकीन में से मत बनो।

مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِيْنَهُمْ وَكَانُوا شِيعًا ۚ كُلُّ حِزْبٍ

उन में से जिन्होंने ने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया और वो कई गिरोह बन गए। हर फ़िरका

بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۚ وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا

उसी पर खुश है जो उस के पास है। और जब इन्सानों को ज़रूर पहोंचता है तो वो अपने रब को

رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا اَذَقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً

पुकारते हैं उसी की तरफ़ ख़जूअ करते हुए, फिर जब वो उन्हें अपनी तरफ़ से रहमत चखाता है

اِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۚ لِيَكْفُرُوا

तो फ़ौरन उन में से एक जमाअत अपने रब के साथ शरीक ठेहराने लगती है। ताके वो नाशुकरी करें

بِمَا اٰتَيْنَهُمْ فَتَمْتَعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۚ اَمْ اَنْزَلْنَا

उन चीज़ों की जो हम ने उन्हें दी। फिर तुम मज़े उड़ा लो, फिर तुम्हें मालूम हो जाएगा। या हम ने उन

عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُوْنَ ۚ

पर कोई दलील उतारी है, जो ताईद करती हो उन के इरतिकाबे शिर्क की?

وَاِذَا اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۚ وَاِنْ تُصْبِحُمْ

और जब हम इन्सानों को रहमत चखाते हैं तो वो उस पर खुश होने लगते हैं। और जब उन्हें मुसीबत

سَيِّئَةً ۚ بِمَا قَدَّمْتَ اَيْدِيَهُمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ۚ

पहोंचती है उन आमाल की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे हैं तो फ़ौरन वो मायूस हो जाते हैं।

اَوْ لَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيَقْدِرُ

क्या उन्होंने ने देखा नहीं के अल्लाह रोज़ी कुशादा और तंग करते हैं जिस के लिए चाहते हैं?

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُوْنَ ۚ فَاتِ

यकीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी कौम के लिए जो ईमान लाती है। तो तुम

ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهُ ۚ وَالْمَسْكِيْنَ وَاَبْنَ السَّبِيْلِ ۚ ذٰلِكَ

रिश्तेदारों को और मस्कीन और मुसाफिर को उस का हक़ दो। ये

خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۚ وَاُوْلٰٓئِكَ هُمُ

बेहतर है उन लोगों के लिए जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं। और यही लोग

الْمُفْلِحُوْنَ ۚ وَمَا اٰتَيْتُمْ مِّنْ رَّبًّا لِّيَرْبُوْا فِيْ اَمْوَالِ

फलाह पाने वाले हैं। और जो सूद तुम देते हो ताके वो बढ़े लोगों के मालों

النَّاسِ فَلَا يَرْبُوا عِنْدَ اللَّهِ ۖ وَمَا آتَيْتُمْ مِّنْ مَّرْكُوتٍ में, तो वो अल्लाह के नज़दीक तो बढ़ता नहीं। और जो ज़कात देते हो	تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ ﴿٢٩﴾ اللَّهُ अल्लाह की रज़ा तलब करते हुए तो यही लोग दुगना करने वाले हैं। अल्लाह
الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۖ ने तुम्हें पैदा किया, फिर उस ने तुम्हें रोज़ी दी, फिर वो तुम्हें मौत देगा, फिर वो तुम्हें ज़िन्दा करेगा।	هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذَلِكُمْ क्या तुम्हारे शुरका में से कोई है जो इस में से कुछ भी कर
مِّنْ شَيْءٍ ۖ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ सकते हों? अल्लाह पाक है और बरतर है उन चीज़ों से जिन्हें वो शरीक ठेहराते हैं। फ़साद फैल गया	فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ ख़ुशकी और तरी में उन आमाल की बदौलत जो इन्सान की हाथों ने किए, ताके अल्लाह
بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٣١﴾ قُلْ سِيرُوا उन के कुछ आमाल की उन्हें सज़ा चखाए ताके वो बाज़ आ जाएं। आप फरमा दीजिए के तुम	فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ ज़मीन में चलो, फिर देखो के उन लोगों का अन्जाम कैसा हुवा जो उन से
مِّن قَبْلُ ۖ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِينَ ﴿٣٢﴾ فَأَقِمْ وَجْهَكَ पेहले थे। उन में से अक्सर मुशरिक थे। तो आप अपना चेहरा सीधा रखिए	لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِن قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ उस सीधे दीन की तरफ इस से पेहले के वो दिन आ जाए जिस के टलने का कोई इम्कान नहीं
مِّنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ يَصَّدَّعُونَ ﴿٣٣﴾ مَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ अल्लाह की तरफ से, उस दिन वो सब अलग अलग हो जाएंगे। जो कुफ़ करेगा तो उसी के ज़िम्मे उस के	كُفْرُهُ ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلَا نَفْسَهُ يَمْهَدُونَ ﴿٣٤﴾ कुफ़ का वबाल पड़ेगा। और जो नेक अमल करेगा तो अपनी ही ज़ात के फ़ाइदे के लिए वो तय्यारी कर रहे हैं।
لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ ۖ ताके अल्लाह ईमान वालों को और उन को जिन्होंने ने नेक अमल किए अपने फज़ल से बदला दे।	

اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۵﴾ وَمِنْ اٰیٰتِهٖ اَنْ يُرْسِلَ

यकीनन अल्लाह काफिरों से महब्वत नहीं करते। और अल्लाह की निशानियों में से ये है के वो हवाएं

الرِّیَّاحِ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِیْدٰتِكُمْ مِّنْ رَّحْمٰتِهٖ وَّلِتَجْرِیْ

भेजता है बशारत देने वाली बना कर और ताके वो तुम्हें अपनी कुछ रहमत का मज़ा चखाए और ताके

الْفُلْکِ بِاَمْرِهٖ وَّلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ

कशती चले अल्लाह के हुक्म से और ताके तुम उस का फज़ल तलब करो और ताके तुम

تَشْكُرُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا

शुक्र करो। यकीनन हम ने आप से पेहले पैग़म्बर भेजे

اِلٰی قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَیِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِیْنَ

उन की कौम की तरफ, फिर वो उन के पास रोशन मोअजिज़ात ले कर आए, फिर हम ने मुजरिमों से

اَجْرُمُوْا ۚ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۳۷﴾ اَللّٰهُ الَّذِیْ

इन्तिक़ाम लिया। और हम पर लाज़िम है ईमान वालों की मदद करना। अल्लाह ही है जो

یُرْسِلُ الرِّیَّاحَ فَتُثَوِّرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِی السَّمَآءِ کَیْفَ

हवाएं भेजता है, फिर वो बादलों को उड़ाती हैं, फिर उस को आसमान में फैलाता है जैसे

یَشَآءُ ۚ وَیَجْعَلُهٗ كِسْفًا فَاَترٰی الْوَدَقَ یَخْرُجُ

चाहता है, और उस को अलग अलग टुकड़े बना देता है, फिर तुम मेंह को देखोगे जो उस के दरमियान से

مِّنْ خَلَلِهٖ ۚ ۚ فَاِذَا اَصَابَ بِهٖ مِّنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادٍ ۚ

निकलती है। फिर जब वो उस को पहुँचाता है जिसे चाहता है अपने बन्दों में से

اِذَا هُمْ یَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ

तब वो खुश हो जाते हैं। और यकीनन इस से पेहले के

اَنْ یُّنَزَّلَ عَلَیْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِیْنَ ﴿۳۹﴾ فَاَنْظُرْ

उन के ऊपर ये बारिश बरसाई जाए वो बिलकुल नाउम्मीद थे। फिर आप देखिए अल्लाह

اِلٰی اَشْرِ رَّحْمٰتِ اللّٰهِ کَیْفَ یُحِی الْاَرْضَۢ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ

की रहमतों के निशानात की तरफ के कैसे अल्लाह ज़मीन को उस के खुशक हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है।

اِنَّ ذٰلِكَ لَمُبْحٰی الْمَوْتِ ۚ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۴۰﴾

यकीनन वो मुर्दों को भी ज़िन्दा करने वाला है। और वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

وَلَيْنَ اَرْسَلْنَا رِجًا فَرَاوُهُ مُصَفَّرًا لَّا ظُلُّوا مِنْ بَعْدِهِ

और अगर हम तूफानी हवा भेजें, फिर वो खेती को ज़र्द देख लें, तो ज़रूर उस के बाद वो नाशुकरी

يَكْفُرُونَ ﴿۵۱﴾ فَإِنَّكَ لَا تَسْمَعُ الْوَوْتَى وَلَا تَسْمَعُ الصَّمَمَ

करने लगे। यकीनन आप मुर्दों को नहीं सुना सकते और आप बेहरे को पुकार नहीं

الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿۵۲﴾ وَمَا أَنْتَ بِهَادٍ الْعُنَى

सुना सकते जब के वो पुश्त फेर कर भागे भी। और आप अन्धों को उन की गुमराही से रास्ता

عَنْ ضَلَلَتِهِمْ ۚ إِنَّ تَسْمِعَ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا

नहीं दिखा सकते। आप तो सिर्फ उसी को सुना सकते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाए हैं,

فَهُمْ مُسْلِمُونَ ﴿۵۳﴾ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ

फिर वो ताबेदारी करते हैं। अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें पैदा किया कमजोरी से,

ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ

फिर उस ने कमजोरी के बाद कूवत दी, फिर कूवत के

مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَهُوَ

बाद कमजोरी और बुढ़ापा दिया। अल्लाह पैदा करता है जो चाहता है। और वो

الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ﴿۵۴﴾ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ

इल्म वाला, कुदरत वाला है। और जिस दिन क़यामत काइम होगी तो मुजरिम लोग

الْمُجْرِمُونَ ۚ مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ ۚ كَذَلِكَ كَانُوا

क़स्में खाएंगे के वो एक घड़ी से ज़्यादा नहीं ठेहरे। इसी तरह ये हक़ से

يُؤْفَكُونَ ﴿۵۵﴾ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ

लौटाए जाते थे। और उन लोगों ने कहा जिन को इल्म और ईमान दिया गया के

لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ ۚ فَهَذَا يَوْمُ

यकीनन तुम अल्लाह की किताब के एतेबार से ठेहरे हो क़ब्रों से उठाए जाने के दिन तक। तो ये क़ब्रों से

الْبَعْثِ وَلَكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿۵۶﴾ فَيَوْمَئِذٍ

उठाए जाने का दिन है, लेकिन तुम जानते नहीं थे। फिर उस दिन

لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعَذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿۵۷﴾

उन ज़ालिमों को उन की माज़िरत नफ़ा नहीं देगी और न उन से मुआफी तलब की जाएगी।

۳۰

فِي حَفْصِ نَصْرِ الضَّادِ وَقَدْ لَكَ الْفَتْحُ بِحَذَائِ

وَلَقَدْ صَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ

यकीनन हम ने इन्सानों के लिए इस कुरआन में हर मिसाल बयान की है।

وَلَيْنِ جُثَّتْهُمْ بَايَةً لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا

और अगर आप उन के पास मोअजिजा ले भी आएंगे तब भी काफिर लोग कहेंगे

إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ۝ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ

बस! तुम तो झूठे हो। इसी तरह अल्लाह मुहर लगा देता है उन

عَلَى قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ

लोगों के दिलों पर जो समझते नहीं। इस लिए आप सब्र कीजिए, यकीनन अल्लाह का वादा

اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفُّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ۝

सच्चा है और आप से सब्र का दामन न छुड़ा दें (आपे से बाहर न करें) वो लोग जो यकीन नहीं रखते।

۳۴ آيَاتُهَا (۳۱) سُورَةُ لُقْمَنِ مَكِّيَّةٌ (۵۷) رُكُوعَاتُهَا ۴

और ४ रूकूअ हैं सूरह लुकमान मक्का में नाज़िल हुई उस में ३४ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الْم ۝ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ۝ هُدًى

अलिफ लाम मीम। ये हिकमत वाली किताब की आयतें हैं। हिदायत

وَرَحْمَةً ۝ لِلْمُحْسِنِينَ ۝ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ

और रहमत है उन नेकी करने वालों के लिए जो नमाज़ काइम करते हैं

وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝

और ज़कात देते हैं और जो आखिरत पर भी यकीन रखते हैं।

أُولَئِكَ عَلَى هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ

ये अपने रब की तरफ से हिदायत पर हैं और यही लोग

الْمُفْلِحُونَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ

फलाह पाने वाले हैं। और उन लोगों में से एक वो भी है जो अल्लाह से गाफिल करने वाली कहानियाँ

الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۝

खरीदता है ताके वो बेसमझे अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे।

وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۚ اُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿۷﴾

और वो राहे खुदा को मज़ाक बनाता है। यही हैं जिन के लिए रस्वा करने वाला अज़ाब है।

وَإِذَا تُلِيَّ عَلَيْهِ اٰیٰتُنَا وَلِيَ مُّسْتَكْبِرًا ۚ كَانَ

और जब हमारी आयतें उस पर तिलावत की जाती हैं तो वो तकबुर से मुंह फेर लेता है गोया के

لَمْ يَسْمَعْهَا ۚ كَانَ فِیْ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشَّرَهُ بِعَذَابٍ

उस ने सुना ही नहीं गोया उस के कान में डाट है। तो आप उसे दर्दनाक अज़ाब की बशारत

اَلِیْمٍ ﴿۸﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ

सुना दीजिए। यकीनन वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए

جَنَّتِ النَّعِیْمُ ﴿۹﴾ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ۚ وَعَدَ اللّٰهُ حَقًّا ۚ

जन्नाते नईम हैं। जिन में वो हमेशा रहेंगे। अल्लाह ने सच्चा वादा फरमाया है।

وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۱۰﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَیْرِ عَمَدٍ

और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। उस ने आसमान पैदा किए बगैर सुतून के

تَرَوْنَهَا ۚ وَالْاُفْقٰی فِی الْاَرْضِ رَوٰسِیْ اَنْ تَمِیْدَ بِكُمْ

जिन को तुम देख सको और उस ने ज़मीन में पहाड़ रख दिए के वो तुम्हें ले कर हिलने न लगे

وَبَثَّ فِیْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ

और उस ने ज़मीन में हर किस्म के जानवर फैला दिए। और हम ने आसमान से पानी

مَآءٍ فَاَنْبَتْنَا فِیْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ کَرِیْمٍ ﴿۱۱﴾ هٰذَا خَلْقٌ

उतारा, फिर हम ने उस में नबातात के खूबसूरत जोड़े उगाए। ये अल्लाह की मखलूक

اللّٰهِ فَارْءَوْیْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِیْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ۚ

है, तो मुझे दिखाओ के जो अल्लाह के अलावा हैं उन लोगों ने क्या पैदा किया?

بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِی ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۱۲﴾ وَلَقَدْ اَتَيْنَا لُقْمٰنَ

बल्के ये ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। यकीनन हम ने लुकमान को हिक्मत

الْحِکْمَةَ اَنْ اَشْكُرَ لِلّٰهِ ۚ وَمَنْ یَّشْكُرْ فَاِنَّمَا یَشْكُرُ

दी के अल्लाह का शुक्र अदा करो। जो शुक्र करेगा तो सिर्फ अपने ज़ाती फाइदे के लिए

لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ کَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ حَمِیْدٌ ﴿۱۳﴾ وَاِذْ

करेगा। और जो नाशुकरी करेगा तो यकीनन अल्लाह बेनियाज़ है, क़बिले तारीफ है। और जब

قَالَ لُقْمَنُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ يَبْنَىٰ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ

लुकमान (अलैहिस्सलाम) ने अपने बेटे से कहा जब वो उसे नसीहत कर रहे थे ऐ मेरे बेटे! तू अल्लाह के साथ शरीक मत ठेहरा।

اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ۝۳ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ

यकीनन शिर्क बहोत बड़ा जुल्म है। और हम ने इन्सान को उस के वालिदैन के मुतअल्लिक

بِوَالِدَيْهِۖ حَمَلَتْهُ اُمُّهُ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَفُصِّلَتْهُ

हुकम दिया के उस की माँ ने उस को पेट में उठाया है कमजोरी दर कमजोरी, और उस का दूध छुड़ाना

فِيۡ عَامَيْنِ اِنْ اَشْكُرْ لِيۡ وَلِوَالِدَيْكَ ۖ اِلَى الْمَصِيْرِ ۝۴

दो साल के अन्दर होता है, के तू मेरा और अपने वालिदैन का शुक्रगुज़ार रेह। मेरी ही तरफ लौटना है।

وَاِنْ جَاهَدَكَ عَلٰى اَنْ تُشْرِكَ بِيۡ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِۦ

और अगर वालिदैन तुझे मजबूर करें इस पर के तू मेरे साथ शरीक ठेहराए ऐसी चीज़ को जिस की तेरे पास कोई

عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبُهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا ۖ

दलील नहीं, तो तू उन का केहना न मानना, लेकिन उन के साथ रेहना दुन्या में उर्फ के मुताबिक।

وَاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّْ ۚ ثُمَّ اِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ

और उन लोगों के रास्ते पर चलना जो मेरी तरफ रुजूअ होते हैं, फिर मेरी ही तरफ तुम्हें लौट कर आना है,

فَاَنْتَبِهُنَّۤ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۵ يٰبْنٰى اِنَّهَا اِنْ تَكُ

फिर मैं तुम्हें बताऊँगा जो अमल तुम करते थे। ऐ मेरे बेटे! यकीनन अगर राई

مُثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيۡ صَخْرَةٍ

के दाने के बराबर भी कोई चीज़ हो, फिर वो किसी चटान में हो

اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يٰٓاْتِ بِهَا اللّٰهُ ۚ

या आसमानों या ज़मीन में हो, तब भी अल्लाह उस को ले आएगा।

اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝۶ يٰبْنٰى اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ

यकीनन अल्लाह बारीकबीन, बाखबर है। ऐ मेरे बेटे! तू नमाज़ काइम कर और नेकी का

بِالْمَعْرُوْفِ وَاَنْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاَصْبِرْ عَلٰى

हुकम कर और बुराई से रोक और सब्र कर उन मुसीबतों पर

مَاۤ اَصَابَكَ ۚ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝۷ وَلَا تَصْعَقْ

जो तुझे पड़ोचो। यकीनन ये ऐसे उमूर में से है जिन का अज़म किया जाता है। और तू अपना ख़ुबसार लोगों

خَذَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَبْشِ فِي الْأَرْضِ مَرْحًا ط	से मत फेर और ज़मीन में अकड़ कर मत चला।
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝۱۸ وَاقْصِدْ	यकीनन अल्लाह हर तकबुर करने वाले, फख्र करने वाले से महबबत नहीं करता। और दरमियानी
فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ط إِنَّ أَنْكَرَ	चाल इखतियार कर और अपनी आवाज़ पस्त रख। यकीनन सब से
الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ۝۱۹ أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ	बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है। क्या तुम ने देखा नहीं के अल्लाह ने
سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ	तुम्हारे ताबेअ कर दी वो चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं
وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ط	और तुम पर अपनी ज़ाहिरी और बातिनी नेअमतों की वुस्अत फरमा दी है।
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى	और लोगों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं इल्म और हिदायत
وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ ۝۲۰ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا	और रोशन किताब के बग़ैर। और जब उन से कहा जाता है के तुम उस हिदायत की
مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ	पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारी है, तो केहते हैं के बल्के हम तो उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने हमारे
أَبَاءَنَا أَوْ لَوْ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ	बाप दादा को पाया। क्या अगर्चे शैतान उन को बुला रहा हो दोज़ख के अज़ाब की
السَّعِيرِ ۝۲۱ وَمَنْ يُسَلِّمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ	तरफ? और जो अपना चेहरा अल्लाह के ताबेअ कर देगा और वो
مُحْسِنٌ فَقَدْ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَى ط	नेकोकार हो, तो उस ने मज़बूत कड़ा थाम लिया।
وَالِلَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ۝۲۲ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ	और अल्लाह ही की तरफ तमाम उमूर का अन्जाम है। और जो कुफ्र करता है तो उस का कुफ्र आप को ग़मगीन

كُفْرُهُ ۖ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۗ اِنَّ اللّٰهَ

न करे। हमारी ही तरफ उन को लौटना है, फिर हम उन्हें बता देंगे जो अमल उन्होंने ने किए थे। यकीनन अल्लाह

عَلِيمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ

दिलों का हाल खूब जानते हैं। हम उन्हें थोड़ा फ़ाइदा उठाने देंगे, फिर ज़बर्दस्ती ले जाएंगे

اِلٰى عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ

सख्त अज़ाब की तरफ। और अगर आप उन से सवाल करें के किस ने आसमान

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۗ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۗ

और ज़मीन पैदा किए, तो ज़रूर कहेंगे के अल्लाह ने। आप फरमा दीजिए के तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं।

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ اللّٰهُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

बल्के उन में से अक्सर जानते नहीं। अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन

وَالْاَرْضِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ وَلَوْ اَنَّ مَا

में हैं। यकीनन अल्लाह बेनियाज़ है, काबिले तारीफ है। और अगर वो दरख्त जो

فِى الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ

ज़मीन में हैं वो क़लम बन जाएं और समन्दर उस के लिए रौशनाई बन जाए, उस के बाद

بَعْدِهِ سَبْعَةُ اَبْحُرٍۭ مَا نَفَدَتْ كَلِمَتُ اللّٰهِ ۗ اِنَّ

सात समन्दर और भी हों, तब भी अल्लाह के कलिमात खत्म नहीं होंगे। यकीनन

اللّٰهُ عَزِيزٌۢ حَكِيْمٌ ۝ مَا خَلَقَكُمْ وَلَا بَعَثَكُمْ اِلَّا

अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। तुम्हारा पैदा किया जाना और तुम्हारा कब्रों से उठना नहीं है मगर

كُنُفٍۭ وَّاحِدَةٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيعٌۢ بَصِيْرٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ

एक जान (पैदा करने) के मानिन्द। यकीनन अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। क्या आप ने देखा नहीं के

اللّٰهُ يُوَلِّجُ اللَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوَلِّجُ النَّهَارَ فِى اللَّيْلِ وَ

अल्लाह रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है और

سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۚ كُلٌّ يَّجْرِيْ اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى

उस ने चाँद और सूरज को काम में लगा रखा है। सब के सब चलते रहेंगे एक वक़्ते मुक़र्ररा तक

وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ

और ये के अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है। ये इस वजह से के अल्लाह

هُوَ الْحَقُّ وَإِنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ ۚ

ही हक़ है और ये के अल्लाह के सिवा जिन को ये पुकारते हैं वो बातिल हैं

وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ

और ये के अल्लाह बरतर है, बड़ा है। क्या आप ने देखा नहीं के कशती

تَجْرَىٰ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُريَكُمْ مِنْ آيَاتِهِ ۖ

चलती है समन्दर में अल्लाह की नेअमत से ताके वो तुम्हें अपनी कुछ निशानियाँ दिखाए।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ وَإِذَا

यकीनन इस में अलबत्ता निशानियाँ हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। और जब उन्हें मौज

غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوْا اللَّهَ مُخْلِصِينَ

ढांप लेती है सायबानों की तरह, तो वो अल्लाह को पुकारने लगते हैं उस के लिए इबादत को खालिस करते हुए।

لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَبِهِمْ مَّقْتَصِدُ ۖ

फिर जब वो उन को बचा कर खुशकी की तरफ ले आता है तो उन में से कुछ मयानारवी इखतियार करने वाले होते हैं।

وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ۝ يَأَيُّهَا

और हमारी आयतों का इन्कार नहीं करता मगर जो गदार, नाशुकरा है। ऐ

النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ وَاحْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِي

इन्सानो! तुम अपने रब से डरो और तुम डरो उस दिन से जिस दिन कोई वालिद

وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ ۚ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَارٍ عَنْ

अपनी औलाद के काम नहीं आएगा और न औलाद अपने वालिद के कुछ भी काम

وَالِدِهِ شَيْئًا ۚ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ

आ सकेगी। यकीनन अल्लाह का वादा सच्चा है, फिर तुम्हें दुन्यवी ज़िन्दगी

الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ وَلَا يَغُرَّنَّكُمُ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۝

धोके में न डाले। और तुम्हें अल्लाह से धोके में न रखे धोकेबाज़ (शैतान)।

إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۖ وَيُنْزِلُ الْغَيْثَ ۚ

यकीनन अल्लाह के पास क़यामत का इल्म है। और वही बारिश को उतारता है।

وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ ۖ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا

और जानता है उसे जो बच्चादानियों में है। और कोई शख्स नहीं जानता के

٢١

تَكْسِبُ غَدًا ۖ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ

कल क्या करेगा? और कोई शख्स नहीं जानता के किस ज़मीन में

تَبَوَّتْ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝

मरेगा? यकीनन अल्लाह इल्म वाला, बाखबर है।

رُؤُوسُهَا ٣

(٣٢) سُورَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ (٤٥)

آيَاتُهَا ٣٠

और ३ रूकूअ हैं सूरह सजदा मक्का में नाज़िल हुई उस में ३० आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الْم ۖ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ

अलिफ लाम मीमा। इस किताब का उतारा जाना रब्बुल आलमीन की तरफ से है, इस में कोई

الْعَالَمِينَ ۖ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ

शक नहीं। क्या ये केहते हैं के इस नबी ने खुद इस को घड़ लिया है? बल्के ये हक है तेरे रब

رَبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَهُمْ مِنْ نَذِيرٍ مِّنْ قَبْلِكَ

की तरफ से ताके आप डराएं ऐसी कौम को जिन के पास आप से पेहले कोई डराने वाला नहीं आया

لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ

ताके वो राह पाएं। अल्लाह ही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को

وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ

और उन चीज़ों को जो उन के दरमियान में हैं छे दिन में पैदा किया है, फिर वो

عَلَى الْعَرْشِ ۖ مَا لَكُمْ مِّنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا

अर्श पर मुस्तवी हुवा। तुम्हारे लिए उस के सिवा कोई मददगार और सिफारिशी

شَفِيعٌ ۖ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِّنْ

नहीं है। क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? वो तमाम उमूर की तदबीर करता है आसमान

السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ

से ज़मीन तक, फिर वो उस की तरफ चढ़ते हैं ऐसे दिन में

كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ۝ ذَلِكَ

जिस की मिक़दार तुम्हारी गिन्ती के ऐतेबार से एक हज़ार साल है। वो

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ الَّذِي

ग़ाइब और हाज़िर का जानने वाला है, ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। वो अल्लाह

أَحْسَنَ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ

जिस ने हर चीज़ को अच्छा बनाया जो भी उस ने पैदा किया, और इन्सान को पेहले मिट्टी से

مِنْ طِينٍ ۝ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ مَّاءٍ

पैदा किया। फिर उस ने उस की नस्ल को एक हकीर पानी के खुलासे से

مَّهِينٍ ۝ ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُّوحِهِ وَجَعَلَ

बनाया। फिर उस को पूरा पूरा बनाया, फिर उस में अपनी रूह फूंक दी और

لَكُمْ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۖ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝

उस ने तुम्हारे कान, आँख और दिल बनाए। बहोत कम तुम शुक्र अदा करते हो।

وَقَالُوا ءِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ ءَأِنَّا لَفِي خَلْقٍ

और ये केहते है क्या जब हम गुम हो जाएंगे ज़मीन में, तब हम नई पैदाइश में ज़िन्दा कर के उठाए

جَدِيدٍ ۚ بَلْ هُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ كَفِرُونَ ۝ قُلْ

जाएंगे? बल्के वो अपने रब की मुलाक़ात ही का इन्कार कर रहे हैं। आप फरमा दीजिए

يَتَوَفَّكُم مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ

के तुम्हें वफात देगा मौत का वो फरिशता जो तुम पर मुतअय्यन है, फिर

إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ۝ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْبُحْرُومُونَ

तुम अपने रब की तरफ लौटाए जाओगे। और काश के आप देखते जब ये मुजरिम

نَاكِسُوا رُءُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ ۖ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا

अपने सर अपने रब के सामने झुकाए हुए होंगे। (वो कहेंगे) ऐ हमारे रब! हम ने

وَسَمِعْنَا فَأَرْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ۝

देख लिया और सुन लिया, तो तू हमें (दुनिया में) वापस भेज दे के हम नेक अमल करें, हमें यकीन आ गया।

وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًى وَلَكِنْ حَقَّ

और अगर हम चाहते तो हर शख्स को उस की हिदायत दे देते, लेकिन मेरी जानिब से कौले सादिक

الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

सादिर हो चुका है के मैं जिन्नात और इन्सानों, दोनों से जहन्नम को ज़रूर

	اجْمَعِينَ ﴿١٣﴾ فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا भरूँगा। तो तुम अज़ाब चखो इस वजह से के तुम ने अपने इस दिन की मुलाकात को भुला दिया था।
	اِنَّا نَسِينَكُمْ وَ ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ हम ने भी तुम्हें भुला दिया और अपने करतूत के इवज़ हमेशा का अज़ाब
	تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾ اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِرُوا चखो। हमारी आयतों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं के जब उन्हें उन आयात के ज़रिए नसीहत
	بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا की जाती है, तो सजदे में गिर जाते हैं और अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते हैं और वो
السَّجْدَةُ ٣٢	يَسْتَكْبِرُونَ ﴿١٥﴾ تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ बड़ाई नहीं चाहते। उन के पेहलू ख्वाबगाहों से अलग रहते हैं,
	يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿١٦﴾ वो अपने रब को खौफ व उम्मीद से पुकारते हैं। और हमारी दी हुई रोज़ी में से खर्च करते हैं।
	فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ ؕ फिर कोई शख्स नहीं जानता के आँखों की ठन्डक में से क्या उस के लिए छुपाया गया है,
	بِجَزَاءٍ ۖ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾ أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا उन के आमाल के बदले में। क्या फिर वो शख्स जो मोमिन हो
السَّجْدَةُ ٣٢	كَمَن كَانَ فَاسِقًا ۚ لَا يَسْتَوُونَ ﴿١٨﴾ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا उस शख्स की तरह हो सकता है जो बदकार है? दोनों बराबर नहीं हो सकते। अलबत्ता जो लोग ईमान लाए
	وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ لَمٍّ ۖ और नेक अमल करते रहे, उन के लिए रहने की जन्नतें हैं। मेहमानी के खातिर उन आमाल के
	كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ बदले में जो वो करते थे। और अलबत्ता जो बदकार हैं तो उन का ठिकाना दोज़ख है।
	كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا जब कभी वहाँ से निकलने का इरादा करेंगे तो उस में दोबारा लौटा दिए जाएंगे
	وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ فِيهَا और उन से कहा जाएगा के उस आग के अज़ाब को चखो जिस को तुम झुठलाया

تُكَذِّبُونَ ﴿۵۰﴾ وَلَنَذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰی	करते थे। और हम उन्हें करीबी अज़ाब में से चखाएंगे
دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۵۱﴾ وَمَنْ	बड़े अज़ाब से पेहले शायद वो बाज़ आ जाएं। और उस से ज़्यादा
اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيٰتِ رَبِّهِ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ۖ	ज़ालिम कौन होगा जिसे उस के रब की आयात के ज़रिए नसीहत की जाए, फिर वो उस से ऐराज़ करे?
اِنَّا مِنَ الْبُجُرْمِيْنَ مُتَّقِمُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَلَقَدْ اَتَيْنَا مُوسٰی	यकीनन हम मुजरिमों से इन्तिकाम लेने वाले हैं। यकीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को
الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهِ وَجَعَلْنٰهُ	किताब दी, तो आप उस की मुलाक़ात के बारे में शक में न रहिए, और हम ने
هُدًى لِّبَنِيْ اِسْرَآءِیْلَ ﴿۵۳﴾ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اِیْمَةً	उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया। और हम ने उन में से पेशवा बनाए
يَهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ۖ وَكَانُوْا بِآيٰتِنَا	जो हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे जब उन्होंने ने सब्र किया। और वो हमारी आयतों पर यकीन
يُوقِنُوْنَ ﴿۵۴﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ	रखते थे। यकीनन तेरा रब उन के दरमियान क़यामत के दिन फेसला करेगा
فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۵۵﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ	उन बातों में से जिन में वो इख़तिलाफ कर रहे थे। क्या उन के लिए ये चीज़ हिदायत का बाइस नहीं हुई के
كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ	हम ने उन से पेहले कितनी कौमों को हलाक किया जिन के मकानात में
فِيْ مَسْكِنِهِمْ ۖ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَآيٰتٍ ۖ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۵۶﴾	ये चलते हैं? यकीनन उस में अलबत्ता निशानियाँ हैं। क्या फिर वो सुनते नहीं?
اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرْنِی	क्या उन्होंने ने देखा नहीं के हम पानी को चलाते हैं बन्जर ज़मीन की तरफ,
فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَانْفُسُهُمْ ۖ	फिर हम उस के ज़रिए खेती निकालते हैं जिस से उन के चौपाए और खुद वो भी खाते हैं।

النَّاسِ

اَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿۲۷﴾ وَ يَقُولُونَ مَتَىٰ هٰذَا الْفَتْحُ
क्या फिर वो देखते नहीं? और ये पूछते हैं के ये फत्ह कब है

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۲۸﴾ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ
अगर तुम सच्चे हो? आप फरमा दीजिए के फत्ह के दिन काफिरों को उन का ईमान लाना

كَفَرُوْا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿۲۹﴾ فَاَعْرَضْ
नफा नहीं देगा और न उन्हें मुहलत दी जाएगी। इस लिए उन से आप ऐराज कीजिए

۳۰﴾

عَنْهُمْ وَاَنْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنتَظَرُونَ ﴿۳۰﴾
और मुन्तज़िर रहिए। यकीनन ये भी मुन्तज़िर हैं।

اَيَّاهَا ۴۳ ﴿۳۳﴾ سُورَةُ الْاَحْزَابِ مَدِيْنًا (۹۰) رَوَّعَاهَا ۹
उस में ७३ आयतें हैं सूरह अहज़ाब मदीना में नाज़िल हुई और ६ रूकूअ हैं
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اَتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِيعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ
ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप अल्लाह से डरिए और काफिरों और मुनाफिकों का केहना न मानिए।

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَاَتَّبِعْ مَا يُوْحٰى اِلَيْكَ
यकीनन अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। और उस की पैरवी कीजिए जो आप की तरफ आप के रब की

مِّنْ رَّبِّكَ ۖ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝
तरफ से वही किया जा रहा है। यकीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है।

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۖ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِیْلًا ۝ مَا جَعَلَ
और आप अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए। और अल्लाह कारसाज़ काफी है। अल्लाह ने किसी

اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِیْ جَوْفِهِ ۚ وَمَا جَعَلَ
शख्स के सीने में दो दिल नहीं बनाए। और तुम्हारी

اَزْوَاجَكُمْ الّٰی تَظْهَرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهَاتِكُمْ ۚ
बीवियों को जिन से तुम ज़िहार करते हो उन को तुम्हारी माँ नहीं बनाया।

وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَاءَكُمْ اَبْنَاءَكُمْ ۚ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ
और तुम्हारे मुंह बोले बेटों को तुम्हारे हकीकी बेटे नहीं बनाया। ये तुम्हारी अपने मुंह से कही हुई

بِأَفْوَاهِكُمْ وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ۝	बातें हैं। और अल्लाह हक़ केहता है और उसे सीधे रास्ते की रहनुमाई करता है।
أَدْعُوهُمْ لِأَبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ فَإِنْ	तुम उन को उन के बाप दादा की तरफ मन्सूब कर के पुकारो, ये अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इन्साफ़ वाली चीज़ है। फिर
لَمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ ۖ	अगर तुम उन के बाप दादा को नहीं जानते, तो वो दीन में तुम्हारे भाई हैं और तुम्हारे आज़ादकरदा गुलाम हैं।
وَ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ ۚ	और तुम पर कोई हरज नहीं है उस में जो तुम ग़लती कर बैठो,
وَلَكِنْ مَا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا	लेकिन वो जिस का तुम दिल से इरादा करो। (ये ग़लत है।) और अल्लाह बख़्शने वाला,
رَحِيمًا ۝ النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ	निहायत रहम वाला है। ये नबी ईमान वालों पर उन की जानों से भी ज़्यादा हक़ रखते हैं,
وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ ۖ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ	और नबी की बीवियाँ उन की माँ हैं। और रिश्तेदार उन में से एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार
بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ	हैं अल्लाह की किताब में ईमान वालों से और मुहाजिरीन से,
إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُمْ مَعْرُوفًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ	मगर ये के तुम अपने दोस्तों के साथ उर्फ़ के मुताबिक़ कोई मुआमला करो। ये
فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۝ وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ	किताब में लिखा हुआ है। और जब हम ने अम्बिया से उन का
مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَ مُوسَىٰ	अहद लिया और आप से और नूह और इब्राहीम और मूसा
وَ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۖ وَآخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ۝	और ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमुस्सलाम) से। और हम ने उन से पुख्ता अहद लिया।
لِيَسْأَلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صٰدِقِهِمْ ۚ وَاعِدْ لِّلْكَافِرِيْنَ	ताके अल्लाह सच्चों से उन की सच्चाई के मुतअल्लिक़ सवाल करो। और अल्लाह ने काफ़िरों के लिए दर्दनाक

۱
۱۴

عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ

अज़ाब तय्यार कर रखा है। ऐ ईमान वालो! तुम याद करो अल्लाह की उस नेअमत को

عَلَيْكُمْ اِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا

जो तुम पर है जब तुम्हारे पास लशकर आए, फिर हम ने उन पर तूफानी हवा

وَجُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۝

और ऐसे लशकर भेजे जिन को तुम ने नहीं देखा। और अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे थे।

اِذْ جَاءُوكُم مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ

जब वो तुम्हारे पास आए तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे से

وَاِذْ زَاغَتْ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ

और जब के आँखें फटी की फटी रेह गई और दिल हलक तक पहुँच गए और तुम ने अल्लाह के

بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَ ۝ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا

साथ तरह तरह के गुमान किए। उस वक़्त ईमान वाले आजमाए गए और

زُلْزَالًا شَدِيْدًا ۝ وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ

उन्हें सख्त हिला दिया गया। और जब मुनाफ़ि़क़ मर्द और वो जिन के दिलों में

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۚ مَا وَعَدْنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهُ

मर्ज़ है, केहने लगे हम से अल्लाह ने और उस के रसूल ने जो वादा किया था

اِلَّا غُرُوْرًا ۝ وَاِذْ قَالَتْ طٰٓئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ

वो धोका ही था। और जब उन में से एक जमाअत केह रही थी के ऐ यसरब

يَثْرَبَ لَا مَقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَيَسْتٰذِنُ فَرِيْقٌ

वालो! तुम्हारे लिए ठेहेरने की जगह नहीं है, तो वापस लौट जाओ। और उन में से एक जमाअत नबीए अकरम

مِّنْهُمْ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۚ وَمَا هِيَ

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इजाज़त तलब कर रही थी, वो केह रही थी के यकीनन हमारे घर खाली पड़े हैं, हालांके वो

بِعَوْرَةٍ ۚ اِنْ يَّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ۝ وَلَوْ دُخِلَتْ

खाली नहीं थे। वो सिर्फ भागना चाहते थे। और अगर (ये लशकर)

عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُلُوْا الْفِتْنَةَ لَا تَوْهَا

मदीना के अतराफ से उन पर दाखिल हो कर उन से कुफ़ का मुतालबा करें तो वो कुफ़ कर लेंगे,

۱۴
عَذَابًا اَلِيْمًا

وَمَا تَلَبَّثُوا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا ﴿۱۴﴾ وَلَقَدْ كَانُوا عَاهِدُوا

और उस में सिर्फ थोड़ी ही देर करेंगे। यकीनन उन्होंने ने अल्लाह से इस

اللَّهِ مِنْ قَبْلُ لَا يُؤْلَوْنَ الْإِدْبَارَ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ

से पेहले भी वादा किया था के पीठ फेर कर नहीं भागेंगे। और अल्लाह के अहद का

مَسْئُولًا ﴿۱۵﴾ قُلْ تَنْ يَنْفَعَكُمْ الْفِرَارُ إِنْ فَرَرْتُمْ

ज़रूर सवाल किया जाएगा। आप फरमा दीजिए के तुम्हें भागना हरगिज़ नफ़ा नहीं देगा अगर तुम भागोगे

مِنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذَا لَا تَسْتَعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿۱۶﴾

मौत से या क़त्ल से और उस वक़्त तो फ़ाइदा नहीं उठा सकोगे मगर थोड़ा।

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُمْ مِنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ

आप फ़रमा दीजिए के कौन है जो तुम्हें बचाएगा अल्लाह से अगर अल्लाह तुम्हारे साथ बुराई का

سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۖ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ

इरादा करे या तुम पर महरबानी का इरादा करे? और वो अपने लिए अल्लाह के अलावा

مَنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿۱۷﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ

कोई कारसाज़ और मददगार नहीं पाएंगे। यकीनन अल्लाह ने मालूम कर लिया है तुम में से रोकने

مِنْكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا ۚ

वालों को और अपने भाइयों से केहने वालों को के तुम हमारे पास आ जाओ।

وَلَا يَأْتُونَ الْبَاسَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿۱۸﴾ أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۚ

और वो खुद लड़ाई में नहीं आते मगर थोड़ा। तुम पर बखीली करते हुए।

فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ

फिर जब खौफ आता है, तो आप उन को देखोगे के वो आप की तरफ तक रहे हैं, उन की आँखें

أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ

घूम रही हैं उस शख्स की तरह जिस पर मौत की ग़शी तारी हो।

فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُمْ بِالسِّنَةِ حِدَادٍ أَشِحَّةً

फिर जब खौफ चला जाता है तो वो आप को तेज़ ज़बानों से ताने देते हैं माल पर

عَلَى الْخَيْرِ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ

लालच करते हुए। ये ईमान ही नहीं लाए, फिर अल्लाह ने उन के आमाल हब्त कर दिए।

وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٩﴾ يَحْسِبُونَ الْاَحْزَابَ और ये अल्लाह पर आसान है। वो समझते हैं के लशकर अभी
لَمْ يَذْهَبُوا ۚ وَإِنْ يَأْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنْتَهُمْ गए नहीं। और अगर लशकर आ जाएं तो वो चाहेंगे के काश के वो
بَادُونَ فِي الْاَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ اَنْبِيَائِكُمْ ۚ (बाहर) देहातियों में रहते, तुम्हारी खबरों के मुतअल्लिक पूछते रहते।
وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ مَا قَتَلُوْا اِلَّا قَلِيْلًا ۚ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ और अगर वो तुम में होते भी तो किताल न करते मगर थोड़ा। यकीनन अल्लाह के
فِي رَسُوْلِ اللَّهِ اُسُوَّةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ रसूल में बेहतरीन नमूना है उस शख्स के लिए जो अल्लाह और आखिरी दिन से
وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللَّهُ كَثِيْرًا ۚ وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ उम्मीद रखता है और अल्लाह को बहोत ज्यादा याद करता है। और जब ईमान वालों ने
الْاَحْزَابَ ۚ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُوْلُهُ लशकर देखे, तो उन्होंने ने कहा के ये वो है जिस का अल्लाह और उस के रसूल ने हम से वादा किया था
وَ صَدَقَ اللَّهُ وَ رَسُوْلُهُ ۚ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّا اِيْمَانًا और अल्लाह और उस के रसूल ने सच्चा वादा किया था। और इस चीज़ ने उन को ईमान और ताबेदारी में
وَتَسْلِيْمًا ۚ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا बढ़ा दिया है। ईमान वालों में से ऐसे मर्द हैं जिन्होंने ने सच कर दिखाया
مَا عَاهَدُوْا اِلٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ वो अहद जो उन्होंने ने अल्लाह से किया था। फिर उन में से कुछ वो हैं जिन्होंने ने अपना ज़िम्मा पूरा कर दिया और उन में
مَّن يَنْتَظِرُ ۚ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ۚ لِّيَجْزِيَ اللَّهُ से कुछ वो हैं जो मुन्तज़िर हैं। और उन्होंने ने कोई तबदीली नहीं की। ताके अल्लाह सच्यों को
الصّٰدِقِيْنَ بِصَدَقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنْفِقِيْنَ اِنْ شَاءَ उन की सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़ीकीन को अगर वो चाहे तो अज़ाब दे
اَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ اِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۚ या उन की तौबा कबूल करे। यकीनन अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا خَيْرًا وَكَفَى

और अल्लाह ने काफ़िरो को फेर दिया अपने गुस्से में भरे हुए, वो कोई खैर न ले जा सके। और अल्लाह

اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا ۝

ईमान वालों की तरफ़ से क़िताल के लिए काफ़ी हो गया। और अल्लाह कूबत वाला, ज़बर्दस्त है।

وَأَنْزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُمْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ

और एहले किताब में से जिन्होंने उन की मदद की थी उन के क़िलों से उन को

مِنْ صِيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ

नीचे उतारा और उन के कुलूब में रौब डाल दिया, एक जमाअत को तुम क़त्ल कर रहे थे

وَتَأْسِرُونَ فَرِيقًا ۖ وَأَوْرَثَكُمُ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ

और एक जमाअत को तुम कैदी बना रहे थे। और अल्लाह ने तुम्हें उन की ज़मीन का वारिस बनाया और उन के घरों

وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَّمْ تَطُوهَا ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ

और उन के मालों का वारिस बनाया, और ऐसी ज़मीन का तुम्हें वरिस बनाया जिस को तुम ने अभी रौंदा नहीं। और अल्लाह

شَيْءٍ قَدِيرًا ۝ يَأَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ

हर चीज़ पर कुदरत वाला है। ऐ नबी! आप फरमा दीजिए आप की बीवियों से के अगर

إِنْ كُنْتُمْ تُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنِ

तुम दुन्यवी जिन्दगी और उस की ज़ीनत चाहती हो तो तुम आओ,

أُمِّعَنَّ وَأَسْرَحَنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۝ وَإِنْ كُنْتُمْ

मैं तुम्हें मताउे दुन्या दे दूँ और मैं तुम्हें अच्छी तरह छोड़ दूँ। और अगर तुम

تُرِيدُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالذَّارَ الْآخِرَةَ فَإِنَّ اللَّهَ

अल्लाह और उस के रसूल और दारे आख़िरत चाहती हो तो यकीनन अल्लाह ने

أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنْكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ يٰنِسَاءَ النَّبِيِّ

तुम में से नेकी करने वालियों के लिए अज़्रे अज़ीम तय्यार कर रखा है। ऐ नबी की बीवियो!

مَنْ يَأْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ يُضَعَفْ لَهَا

तुम में से जो भी खुली बेहयाई करेगी, तो उसे दोहरा

الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۖ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

अज़ाब दिया जाएगा। और ये अल्लाह पर आसान है।

وَمَنْ يَقْنُتْ مِنْكُمْ إِلَهُ وَرَسُولَهُ وَتَعْمَلْ صَالِحًا

और जो तुम में से अल्लाह और उस के रसूल की इताअत और आमाले सालिहा करेगी

تُؤْتِيَهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا ۝

तो हम उसे उस का अन्न दुगना देंगे और हम ने उस के लिए बाइज्जत रिज्क तय्यार कर रखा है।

يُنِسَاءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِنَ النِّسَاءِ إِنِ اتَّقَيْتُنَّ

ऐ नबी की बीवियो! तुम दूसरी आम औरतों में से किसी एक की तरह नहीं हो अगर तुम मुत्तकी बन कर रहो,

فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ

तो बोलने में आवाज़ पस्त मत करो के कहीं लालच करने लगे वो शख्स जिस के दिल में बीमारी हो

وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۝ وَقرن في بيوتكن

और बात वो करो जो भलाई वाली हो। और अपने घरों में ठेहरी रहो

وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ

और पेहली वाली जाहिलीयत के तर्ज पर बनाव सिंघार को खुला मत रहने दो और नमाज़ काइम करो

وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ إِنَّمَا يُرِيدُ

और ज़कात दो और अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो। अल्लाह तो सिर्फ ये

اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ

चाहता है के तुम से गन्दगी को दूर रखे ऐ एहले बैत! और तुम्हें पाक

تَطْهِيرًا ۝ وَادْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ

साफ़ रखे। और याद करो उस को जो तिलावत किया जाता है तुम्हारे घरों में

مِنْ آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ۝

अल्लाह की आयात और हिक्मत में से। यकीनन अल्लाह बारीकबीन, बाखबर है।

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

यकीनन मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें

وَالْقَنَاتِ وَالْقَنَاتِ وَالصَّدِيقِينَ وَالصَّدِيقَاتِ

और आजिजी करने वाले मर्द और आजिजी करने वाली औरतें और सच बोलने वाले मर्द और सच बोलने वाली औरतें

وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَشِيعِينَ وَالْخَشِيعَاتِ

और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें और खुशूअ करने वाले मर्द और खुशूअ करने वाली औरतें

وَالْبَتِّصِدِّقِينَ وَالْبَتِّصَدِّقَاتِ وَالصَّامِرِينَ وَالصَّامِرَاتِ

और सद्का देने वाले मर्द और सद्का देने वाली औरतें और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें

وَالْحَفِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَفِظَاتِ وَالذَّكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا

और जो मर्द अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाले हैं और जो औरतें अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाली हैं और जो मर्द अल्लाह को बहोत ज़्यादा याद करने वाले हैं

وَالذَّكِرَاتِ ۚ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿٥٥﴾

और जो औरतें अल्लाह को बहोत ज़्यादा याद करने वाली हैं। अल्लाह ने उन के लिए मग़फ़िरत और अज़्रे अज़ीम तय्यार कर रखा है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ

और किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत के लिए जाइज़ नहीं है के जब अल्लाह और उस का रसूल किसी मुआमले का

أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ

फ़ैसला कर दे तो उन के लिए अपने मुआमले में कुछ भी इख़्तियार हो। और जो अल्लाह और

اللَّهُ وَرَسُولُهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلًّا مُبِينًا ﴿٥٦﴾

उस के रसूल की नाफरमानी करेगा तो वो खुली गुमराही में भटक गया।

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ

और जब आप फरमा रहे थे उस शख्स को के जिस पर अल्लाह ने इन्आम फरमाया और आप ने भी उस पर इन्आम फरमाया

عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ

के तू अपनी बीवी अपने पास रेहने दे और अल्लाह से डर हालांकि आप अपने जी में छुपा रहे थे वो जिस को अल्लाह

مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ ۖ

ज़ाहिर करने वाला था और आप इन्सानों से डरते थे। और अल्लाह उस का ज़्यादा हक़दार है के आप उस से डरें।

فَلَمَّا قَضَىٰ زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ

फिर जब ज़ैद इब्ने हारिसा ने ज़ैनब से हाजत पूरी कर ली तो हम ने ज़ैनब आप के निकाह में दे दी, ताके ईमान

عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا

वालों पर कोई हरज न रहे उन के मुंह बोले बेटों की बीवियों के बारे में जब वो उन से

مِنْهُمْ وَطَرًا ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿٥٧﴾ مَا كَانَ

गर्ज पूरी कर लें। और अल्लाह के हुक्म को तो पूरा होना ही था। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर कोई

عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ ۖ سُنَّةَ اللَّهِ

तंगी नहीं उस में जो (खुद) अल्लाह ने उन के लिए मुक़द्दर कर दिया। अल्लाह का दस्तूर रहा है

فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۖ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا

उन (पैगम्बरों) में भी जो पेहले गुज़र चुके हैं। और अल्लाह का अम्रे कज़ा व क़दर पूरा

مَقْدُورًا ۚ الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ

हो कर ही रेहता है। पैग़म्बर वो लोग हैं जो अल्लाह के पैग़ामात पहुँचाते हैं

وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ

और अल्लाह से डरते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते। और अल्लाह हिसाब लेने वाला

حَسِيبًا ۚ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ

काफ़ी है। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हारे मर्दों में से किसी एक के बाप नहीं,

وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ

लेकिन वो अल्लाह के रसूल हैं और तमाम अम्बिया के ख़ातम हैं। और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने

عَلِيمًا ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا

वाले हैं। ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह की याद बहोत ज़्यादा

كَثِيرًا ۚ وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۚ هُوَ الَّذِي

किया करो। और उस की तस्बीह करो सुबह व शाम। वही अल्लाह है जो

يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ

तुम पर रहमत भेजता है और उस के फरिशते भी ताके अल्लाह तुम्हें अन्धेरों से नूर

إِلَى النُّورِ ۚ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۚ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ

की तरफ़ निकाले। और वो ईमान वालों पर बहोत शफ़क़्त वाला है। उन का तहीया जिस दिन

يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ۚ يَا أَيُّهَا

वो उस से मिलेंगे सलाम होगा। और अल्लाह ने उन के लिए इज़्ज़त वाला सवाब तय्यार कर रखा है। ऐ

النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۚ

नबी! यकीनन हम ने आप को रसूल बना कर भेजा गवाही देने वाला और बशारत सुनाने वाला और डराने वाला।

وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ۚ وَبَشِّرِ

और अल्लाह की तरफ़ उस के हुक्म से दावत देने वाला और नूर फैलाने वाला चिराग़ बना कर भेजा है। और ईमान

الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُم مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ۚ وَلَا

वालों को बशारत दीजिए इस बात की के उन के लिए अल्लाह की तरफ़ से बड़ा फज़ल है। और

تُطْعِ الْكُفْرَيْنِ وَالْمُنْفِقِينَ وَدَعُ أَذْيَهُمْ وَتَوَكَّلْ

काफिरों और मुनाफिकों का केहना न मानिए और उन की तरफ से जो तकलीफ पहुँचे उस की परवा न कीजिए और

عَلَى اللَّهِ ۖ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए। और अल्लाह काफी कारसाज़ है। ऐ ईमान वालो!

إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ

जब तुम निकाह करो ईमान वाली औरतों से, फिर तुम उन को तलाक़ दो इस से पेहले

أَنْ تَمْسُوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُونَهَا ۚ

के तुम उन को छुओ तो तुम्हारे लिए उन पर कोई इद्दत नहीं जिस को तुम शुमार करो।

فَبَتَّعُوهُنَّ وَسَرَّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٩﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا

तो तुम उन को कुछ मताअ दे दो और अच्छी तरह रुखसत कर दो। ऐ नबी! हम ने

أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ الَّتِي أَتَيْتَ أَجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ

आप के लिए आप की बीवियां हलाल की हैं जिन को आप महर दे चुके हैं और आप की ममलूका बांदियाँ भी जो अल्लाह

بِمَيْمَنِكَ مِمَّا آفَاءَ اللَّهِ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِّكَ وَبَنَاتِ

ने आप को ग़नीमत में से दिलवाई हैं और हलाल की हैं आप के चचा की बेटियाँ और आप की फूफियों की बेटियाँ

وَبَنَاتِ خَالَكَ وَبَنَاتِ خَلَّتِكَ الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ ۚ

और आप के मामू की बेटियाँ, और आप की खालाओं की बेटियाँ, जिन्होंने आप के साथ हिजरत की।

وَامْرَأَةً مُؤْمِنَةً إِنْ وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ

और वो मोमिन औरत जो अपनी ज़ात नबी को हिबा कर दे अगर नबी उन को निकाह

أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ

में लेना चाहें। ये सिर्फ आप ही के लिए है, न के आम मोमिनीन के लिए।

قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ

यकीनन हमें मालूम है जो हम ने उन पर फ़र्ज़ किया है उन की बीवियों और उन की बांदियों के

أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا

बारे में ताके आप पर कुछ भी तंगी न रहे। और अल्लाह बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला,

رَحِيمًا ﴿١٠﴾ تَرْجَىٰ مَنْ تَشَاءُ مِنْهُمْ وَتُؤَيِّ إِلَيْكَ مَنْ

निहायत रहम वाला है। आप दूर रखें जिसे चाहें उन में से और अपने पास रखें जिसे

تَشَاءُ ۖ وَمَنْ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۖ चाहें। और जिस को आप चाहें उन में से जिन को आप ने अलग रखा था तो आप पर कोई गुनाह नहीं।
ذَلِكَ أَذَىٰ أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَ وَيَرْضَيْنَ ये इस के ज़्यादा करीब है के उन की आँखें ठन्डी रहें और वो ग़मगीन न हों और वो सब खुश रहें
بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلَّهُنَّ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۖ उस पर जो आप ने उन को दिया। और अल्लाह ख़ूब जानता है उस को जो तुम्हारे दिलों में है।
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ۝ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدِ और आल्लाह इल्म वाले, हिल्म वाले हैं। आप के लिए इस के बाद औरतें हलाल नहीं
وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَجَبَكَ حُسْنُهُنَّ और न ये के आप उन के बदले में और दूसरी बीवियाँ लाएं अगरचें उन का हुस्न आप को अच्छा लगे,
إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ मगर आप की ममलूका बाँदियाँ। और अल्लाह हर चीज़ पर
رَقِيبًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ निगरान है। ऐ ईमान वालो! दाखिल मत हो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के हुजरो
النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرِ نَبْزِ में मगर ये के तुम्हें खाने की तरफ इजाज़त दी जाए इस हाल में के तुम उस के पकने का इन्तिज़ार करने
إِنَّهُ ۖ وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ वाले न हो, लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तब तुम दाखिल हो, फिर जब तुम खा चुको
فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ ۖ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ तो मुन्तशिर हो जाओ और बातों में दिल लगा कर के मत बैठो। यकीनन ये चीज़ नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि
يُؤْذَى النَّبِيُّ فَيَسْتَنْبِحُ مِنْكُمْ ۖ وَاللَّهُ لَا يَسْتَنْبِحُ वसल्लम) को ईज़ा पहुँचाती है, फिर वो तुम से हया करते हैं। और अल्लाह हक़ से हया
مِنَ الْحَقِّ ۖ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ नहीं करता। और जब उम्माहातुल मोमिनीन से तुम्हें कोई चीज़ मांगनी हो, तो परदे के पीछे से उन से
حِجَابٍ ۖ ذَلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۖ وَمَا كَانَ सवाल करो। ये चीज़ तुम्हारे दिलों के लिए और उन के दिलों के लिए ज़्यादा पाकीज़गी वाली है। और

لَكُمْ أَنْ تَوَدُّوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ

तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं है के तुम अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ईज़ा दो और जाइज़ नहीं है ये के तुम आप (सल्लल्लाहु

مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ۝

अलैहि वसल्लम) की बीवियों से निकाह करो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद कभी भी। यकीनन ये अल्लाह के नज़दीक बड़ी चीज़ है।

إِنْ تُبَدُّوا شَيْئًا أَوْ تُخْفَوْهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ

अगर तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करो या उस को छुपाओ तो यकीनन अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाले

عَلِيمًا ۝ لَا جُنَاحَ عَلَيْهِمْ فِي آبَائِهِمْ وَلَا أَبْنَائِهِمْ

हैं। औरतों पर कोई गुनाह नहीं (बेहिजाब आने में) उन के बाप दादा के बारे में और न उन के बेटों के बारे में

وَلَا إِخْوَانِهِمْ وَلَا أَبْنَاءَ إِخْوَانِهِمْ وَلَا أَبْنَاءَ

और न उन के भाइयों के बारे में और न उन के भाइयों के बेटों के बारे में और न उन की बेहनों के बेटों के

أَخَوْتِهِمْ وَلَا نِسَائِهِمْ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ ۚ

बारे में और न उन की (मेल जोल की) औरतों के बारे में और न उन के बारे में जिन के उन के हाथ मालिक हैं।

وَاتَّقِينَ اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝

और तुम अल्लाह से डरो। यकीनन अल्लाह हर चीज़ को देख रहे हैं।

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

यकीनन अल्लाह और उस के फरिश्ते रहमत भेजते हैं नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर। ऐ ईमान

أَمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ

वालो! तुम भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर दुस्ख और सलाम कसरत से पढ़ो। यकीनन वो लोग

يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا

जो अल्लाह और उस के रसूल को ईज़ा पहुँचाते हैं अल्लाह ने उन पर दुन्या और आखिरत में लानत

وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُهِينًا ۝ وَالَّذِينَ

की है और उन के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है। और जो लोग

يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا

ईज़ा पहुँचाते है ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को इस के बग़ैर के उन्होंने ने कुसूर किया हो,

فَقَدْ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ

तो यकीनन उन्होंने ने बुहतान और खुले गुनाह का बोझ उठाया। ऐ नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप अपनी अज़वाजे

لَا تَزُولُ جَنَاحُكَ وَبَنَتِكَ وَنِسَاءَ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ

मुतद्हरात से और अपनी बेटियों और मोमिनीन की औरतों से फरमा दीजिए के वो अपने चेहरे पर अपनी चादर का

مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذِينَ ۚ

कुछ हिस्सा लटकाए रखें। ये इस के ज़्यादा करीब है के उन्हें पहचान लिया जाए, फिर उन्हें ईज़ा न दी जाए।

وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝ لِّئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنَافِقُونَ

और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। अगर मुनाफ़िक़ मर्द और वो लोग

وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ فِي الْمَدِينَةِ

जिन के दिलों में बीमारी है और वो लोग जो मदीना मुनव्वरा में अफवाहें फैलाने वाले हैं बाज़ नहीं आएंगे

لَنُغَرِّبَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ۚ

तो हम आप को उन के खिलाफ़ भड़का देंगे, फिर वो मदीना मुनव्वरा में आप के पड़ोसी बन कर ठेहेर नहीं सकेंगे मगर थोड़ा।

مَلْعُونِينَ ۖ أَيُّهَا ثَقِفُوا اخْذُوا وَقْتَكُمْ تَقْتِيلًا ۝

उन पर फिटकार हो। जहाँ कहीं मिलेंगे, पकड़ लिए जाएंगे और उन्हें एक एक कर के क़त्ल कर दिया जाएगा।

سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ

अल्लाह का दस्तूर रहा है उन के बारे में जो पेहले गुज़र चुके हैं। और अल्लाह की सुन्नत में आप कोई तबदीली

اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝ يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۖ قُلْ

हरगिज़ नहीं पाएंगे। ये लोग आप से क़यामत के बारे में सवाल करते हैं। आप फ़रमा दीजिए के

إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ

उस का इल्म तो सिर्फ़ अल्लाह के पास है। और आप को मालूम नहीं के शायद क़यामत करीब

قَرِيبًا ۝ إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ۝

ही हो। यकीनन अल्लाह ने काफ़िरों पर लानत फरमाई है और उन के लिए देहेकती आग तय्यार कर रखी है।

خُلْدَيْنِ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

जिस में वो हमेशा रहेंगे। वो कोई मददगार और दोस्त नहीं पाएंगे।

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَلَيْتَنَّا أَطَعْنَا

जिस दिन उन के चेहरे आग में उलट पलट किए जाएंगे, वो कहेंगे ऐ काश के हम अल्लाह की इताअत

اللَّهِ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ ۝ وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا

करते और हम रसूल की इताअत करते। और वो कहेंगे ऐ हमारे रब! हम ने अपने सरदारों और

و كِبْرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَ ﴿٦٦﴾ رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ अपने बड़ों की इताअत की, तो उन्होंने ने हमें गुमराह किया रास्ते से। ऐ हमारे रब! तू उन्हें दुगना	٤٠
مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنَهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا ﴿٦٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ अज़ाब दे और तू उन पर बड़ी लानत फ़रमा। ऐ ईमान वालो! तुम	
أَمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَّاهُ اللَّهُ उन जैसे मत बनो जिन्होंने ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को ईज़ा दी, फिर अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को बरी फ़रमा	٤०
مِمَّا قَالُوا وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا ﴿٦٨﴾ يَا أَيُّهَا दिया उस से जो उन्होंने ने कहा। और मूसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के नज़दीक वजाहत वाले थे। ऐ	
الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَ قُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ﴿٦٩﴾ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो।	٤०
يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ वो तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल की इस्लाह कर देगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह बख्श देगा।	
وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٧٠﴾ और जो अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करेगा तो यकीनन वो भारी कामयाबी से कामयाब हो गया।	٤०
إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ यकीनन हम ने अमानत पेश की आसमानों और ज़मीन	
وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا और पहाड़ों पर, तो उन सब ने इन्कार किया उस के उठाने से और वो डरे उस से	٤०
وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ ۖ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧١﴾ और उस को इन्सान ने उठा लिया। यकीनन वो बड़ा ज़ालिम और बड़ा जाहिल है।	
لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ ताके अल्लाह अज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को	٤०
وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ और अल्लाह ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों की तौबा क़बूल करे।	
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٧٢﴾ और अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।	٤०
مَنْزِل ٥	

رُؤُوسُهَا ۶

(۳۲) سُورَةُ سَبَا مَكِّيَّةٌ (۵۸)

آيَاتُهَا ۵۲

और ६ रूकूअ हैं सूरह सबा मक्का में नाज़िल हुई उस में ५४ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ

तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं

الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ ۖ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ

और उस के लिए तमाम तारीफें हैं आखिरत में। और वो हिक्मत वाला, बाखबर है। वो जानता है उन चीज़ों को जो

فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ

ज़मीन में दाखिल होती हैं और जो ज़मीन से निकलती हैं और जो आसमान से उतरती हैं

وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ

और जो आसमान में चढ़ती हैं। और वो निहायत रहम वाला, बख्शाने वाला है। और काफिर लोग केहते

كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۖ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ ۙ

हैं हम पर क़यामत नहीं आएगी। आप फरमा दीजिए, क्यूं नहीं? मेरे रब की क़सम जो ग़ैब का इल्म रखता है

عِلْمِ الْغَيْبِ ۖ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمُوتِ

वो तुम पर ज़रूर आएगी। उस से ज़री बराबर कोई चीज़ मखफ़ी नहीं आसमानों में और न ज़मीन में

وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ

और न उस से छोटी कोई चीज़ और न उस से बड़ी कोई चीज़ मगर वो साफ़ साफ़ बयान करने वाली

الْأَفْ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

किताब (लोहे महफूज़) में है। ताके अल्लाह बदला दे उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ سَعَوْا

उन के लिए मग़फ़िरत है और इज़्ज़त वाली रोज़ी है। और जो लोग हमारी आयतों में

فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رَّجْزٍ أَلِيمٌ ۝

कोशिश करते हैं हराने वाले बन कर उन के लिए बला का दर्दनाक अज़ाब होगा।

وَيَذَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ

और वो लोग जिन को इल्म दिया गया वो समझ रहे हैं के वो कुरआन जो आप की तरफ़ आप के रब की तरफ से

مَنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقُّ ۖ وَ يَهْدِي إِلَى صِرَاطِ الْعَزِيزِ उतारा गया, वो हक़ है। और ये कुरआन ज़बर्दस्त काबिले तारीफ अल्लाह के रास्ते की तरफ रहनुमाई	
الْحَمِيدِ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ करता है। और काफिर केहते हैं क्या हम तुम्हें पता बतलाएं ऐसे शख्स का जो	
يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُرِّقْتُمْ كُلَّ مُمَرِّقٍ ۖ إِنَّكُمْ لَفِي तुम्हें खबर देता है के जब तुम पूरे तौर पर टुकड़े टुकड़े (रेज़ा रेज़ा) कर दिए जाओगे तब तुम नए सिरे	
خَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ ۚ से ज़िन्दा किए जाओगे? या तो उस ने अल्लाह पर झूठ घड़ा है या उसे जुनून है।	
بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ बल्के वो लोग जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते वो अज़ाब में और दूर वाली गुमराही	
الْبَعِيدِ ۝ أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ में हैं। क्या उन्होंने ने देखा नहीं उन चीज़ों को जो उन के आगे और उन के पीछे हैं	
مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ نَسْأَ نَخْشِفُ بِهِمُ الْأَرْضَ आसमान और ज़मीन! अगर हम चाहें तो हम उन्हें ज़मीन में धंसा दें	
أَوْ نُسْقِطُ عَلَيْهِمْ كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ या हम उन पर आसमान से टुकड़े गिरा दें। यकीनन उस में अलबत्ता	
لَايَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۚ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ निशानी है हर तौबा करने वाले बन्दे के लिए। हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम) को हमारी तरफ़ से फ़ज़ल (नुबूव्वत व	۱ ۶
مِّنَّا فَضْلًا ۚ يُجِبَالُ أَوْبَىٰ مَعَهُ وَالطَّيْرُ ۚ وَالنَّارُ لَهُ हुकूमत) दिया। (हम ने कहा) ऐ पहाड़ो! तुम उन के साथ तस्बीह करो और परिन्दों को भी हुक्म दिया। और हम ने उन के लिए	
الْحَدِيدَ ۚ إِنَّ أَعْمَلَ سِغْتٍ وَقَدَّرُ فِي السَّرْدِ وَأَعْمَلُوا लोहे को नर्म किया। के आप चौड़ी ज़िरहें बनाइए और मेखें लगाने में मिक्दार मुतअय्यन रखिए और तुम सब नेक अमल	
صَالِحًا ۚ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ करते रहो। यकीनन मैं तुम्हारे कामों को देख रहा हूँ। और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए हवा को ताबेअ किया, हवा का सुबह के	
عُدُوَّهَا شَهْرٌ وَرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَأَسَلْنَا لَهُ عَيْنَ वक्त्त का सफर एक महीने की मसाफ़त और उस का शाम के वक्त्त का सफर एक महीने की मसाफ़त तै करता था। और हम ने	

الْقَطْرِ ۚ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۚ

उन के लिए तांबे का चशमा बहाया। और जिन्नात में से वो भी थे जो उन के सामने उन के रब के हुक्म से काम करते थे।

وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ۚ

और उन में से जो हमारे हुक्म से टेढ़ा चलेगा तो हम उसे देहेकती आग का अज़ाब चखाएंगे।

يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَحَارِبٍ وَ تَمَاثِيلَ وَ جِفَانٍ

वो सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए बनाते थे वो चीज़ें जो सुलैमान (अलैहिस्सलाम) चाहते, यअनी किलअे और मूर्तियाँ और तालाब

كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ رُسِيَّتٍ ۚ إِعْمَلُوا آلَ دَاوُدَ شُكْرًا ۚ

जैसे लगन और एक ही जगह साबित रहेने वाली ऊँची ऊँची देंगे। ऐ आले दावूद! शुक्रिये के तौर पर अमल करो।

وَقَلِيلٍ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّاكُورِ ۚ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ

और मेरे बन्दों में से कम शुक्रगुज़ार हैं। फिर जब हम ने उन की मौत का फैसला कर दिया

الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ

तो जिन्नात को सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की मौत का पता नहीं बतलाया मगर ज़मीन के कीड़े (घुन) ने जो आप की

مِنْسَاتِهِ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَن لَّو كَانُوا يَعْلَمُونَ

लाठी को खा रहा था। फिर जब सुलैमान (अलैहिस्सलाम) गिर पड़े, तब जिन्नात ने जाना के अगर वो (जिन) ग़ैब

الْغَيْبِ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۚ لَقَدْ كَانَ

जानते होते तो वो रुस्वा करने वाले अज़ाब में न रहेते। तहकीक के कौमे सबा के लिए

لِسَبَاٍ فِي مَسْكِنِهِمْ آيَةٌ ۚ جَنَّتٍ عَنْ يَمِينٍ وَ شِمَالٍ ۚ

उन के वतन में निशानी थी। दो बागात थे दाएं और बाएं।

كُلُوا مِن رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ

तो तुम खाओ अपने रब की रोज़ी में से और उस का शुक्र अदा करो। शहर भी उम्दा

وَرَبُّ غَفُورٌ ۚ فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ

और रब भी बख्शने वाला। फिर उन्होंने ने ऐराज़ किया, तो हम ने उन पर बन्द का सैलाब छोड़ दिया,

وَبَدَّلْنَاهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتِ أُكُلٍ خَمْطٍ وَأَثَلٍ

और हम ने उन को उन दो बाग के इवज़ बदमज़ा फल वाले दूसरे दो बाग दिए और झाव के दरख्त

وَوَشْيَءٍ مِّن سِدْرٍ قَلِيلٍ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ بِمَا كَفَرُوا ۚ

और थोड़ी सी बेरी के दरख्त। हम ने उन्हें उन के कुफ़ की वजह से ये सज़ा दी।

وَهَلْ نُجْزِي إِلَّا الْكَفُورَ ﴿۱۷﴾ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ

और हम सज़ा नहीं देते मगर नाशकरी करने वाले को। और हम ने एहले सबा और उन बस्तियों के दरमियान

الْقُرَى الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا فُرى ظَاهِرَةً وَقَدَرْنَا فِيهَا

जिन में हम ने बरकतें रखी थीं ऐसी बस्तियाँ बना दी थीं जो नज़र आती थीं, और हम ने उन में सफर की

السَّيْرِ سَيْرُوا فِيهَا لِيَالِي وَأَيَّامًا آمِنِينَ ﴿۱۸﴾ فَقَالُوا

मन्ज़िलें मुतअय्यन कर दी थीं। के तुम उन में रात में और दिन में अमन से चलो। तो उन्होंने ने कहा

رَبَّنَا بَعْدَ بَيْنِ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنَاهُمْ

ऐ हमारे रब! हमारे सफरों के दरमियान दूरी कर दे और उन्होंने ने अपनी जानों पर जुल्म किया, फिर हम ने उन्हें कहानियाँ

أَحَادِيثَ وَمَزَّقْنَاهُمْ كُلَّ مُمَرِّقٍ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ

बना दिया और हम ने उन्हें मुकम्मल तौर पर टुकड़े टुकड़े कर दिया। बेशक उस में अलबत्ता निशानियाँ हैं

لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿۱۹﴾ وَلَقَدْ صَدَقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ

हर सन्न करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। यकीनन उन पर इबलीस ने अपना गुमान सच कर

ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿۲۰﴾ وَمَا كَانَ

दिखाया, फिर वो इबलीस के पीछे चले सिवाए ईमान वालों के गिरोह के। और इबलीस का

لَهُ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ

ईमान वालों पर जो तसल्लुत है, सिर्फ इस लिए है ताके हम मालूम करें के कौन आखिरत पर ईमान रखता है,

مِّنْ هُوَ مِنْهَا فِي شَكٍّ ۚ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِیْظٌ ﴿۲۱﴾

उस से जो उस की तरफ से शक में है। और आप का रब हर चीज़ पर निगराँ है।

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ

आप फ़रमा दीजिए के तुम पुकारो उन को जिन का तुम गुमान करते हो अल्लाह के सिवा। वो न आसमान

مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ

में ज़रा बराबर के मालिक हैं और न ज़मीन में, और न उन की आसमान और ज़मीन

فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ ۚ وَمَا لَهُ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيرٍ ﴿۲۲﴾ وَلَا تَنْفَعُ

(के बनाने) में कोई शिरकत है और उन में से कोई अल्लाह का मददगार नहीं। और सिफारिश अल्लाह के

الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ ۖ حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ عَن

नज़दीक नफा नहीं देगी मगर उसी की जिस को अल्लाह इजाज़त दे। यहाँ तक के जब उन के दिलों से घबराहट

قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا الْحَقُّ ۖ وَهُوَ الْعَلِيُّ दूर हो जाती है तो पूछते हैं के तुम्हारे रब ने क्या कहा? वो केहते हैं के हक बात कही। और वो बरतर है,	
الْكَبِيرُ ۚ قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَوتِ وَالْأَرْضِ ۚ बड़ा है। आप पूछिए कौन तुम्हें रोज़ी देता है आसमानों से और ज़मीन से?	
قُلِ اللّٰهُ ۖ وَآتَا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلِّي هُدًى أَوْ فِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ۚ आप ही फ़रमा दीजिए अल्लाह। और हम या तुम ज़रूर या हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में हैं। आप फरमा	
قُلْ لَا تَسْأَلُونَنَا عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نَسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۚ दीजिए के तुम से हमारे जराइम का सवाल नहीं होगा और तुम्हारे आमाल के मुतअल्लिक हम से नहीं पूछा जाएगा।	
قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبَّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ۖ وَهُوَ الْفَتّٰحُ आप फ़रमा दीजिए के हमारा रब हमें इकट्ठा करेगा, फिर हमारे दरमियान हक को खोल देगा। और वो बहोत ज़्यादा खोलने वाला है,	
الْعَلِيمُ ۚ قُلْ أَرُونِي الَّذِينَ أَلْحَقْتُمْ بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا ۚ ख़ूब जानने वाला है। आप फरमा दीजिए के तुम मुझे दिखाओ जिन को तुम अल्लाह के साथ शरीक ठेहरा कर मिलाते हो।	
بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۚ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً हरगिज़ नहीं। बल्के वो अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। और हम ने आप को तमाम इन्सानों के लिए बशारत	
لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۚ देने वाला और डराने वाला रसूल बना कर भेजा है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं।	
وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هٰذَا الْوَعْدُ ۖ إِن كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ۚ और ये केहते हैं के ये वादा कब है अगर तुम सच्चे हो।	
قُلْ لَّكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ ۖ لَا تَسْتَخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً आप फरमा दीजिए के तुम्हारे लिए एक दिन का वादा है जिस से न एक घड़ी तुम पीछे रेह सकते हो और न एक घड़ी	
وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ۚ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تَأْمُرَنَا بِهٰذَا आगे जा सकते हो। और काफिरों ने कहा के हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे इस	
الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ ۖ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ कुरआन पर और उन किताबों पर जो इस से पेहले थीं। और काश के आप देखें जब के ज़ालिम	
مَوْقُوفُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ खड़े किए जाएंगे अपने रब के सामने। उन में से एक दूसरे की तरफ बात को डाल	

إِلْقَوْلَ ۚ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا	रहा होगा। कमज़ोर लोग कहेंगे उन से जो बड़े बन कर रहे
لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿۳۱﴾ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا	के अगर तुम न होते तो हम ईमान वाले होते। जो बड़े बन कर रहे वो कमज़ोरों
لِلَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا أَنْحُنْ صَدَدْنَكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ	से कहेंगे क्या हम ने तुम्हें हिदायत से रोका था
بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُجْرِمِينَ ﴿۳۲﴾ وَقَالَ الَّذِينَ	इस के बाद के वो तुम्हारे पास आई? बल्के तुम ही मुजरिम थे। और कमज़ोर लोग
اسْتَضَعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ الْيَلِ وَالنَّهَارِ	कहेंगे उन से जो बड़े बन कर रहे बल्के रात और दिन के मक्र (ने रोका),
إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَنْ نَكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَنْدَادًا	जब तुम हमें हुक्म देते थे इस का के हम अल्लाह के साथ कुफ़ करें और हम उस के लिए शरीक ठेहराएं।
وَاسْرُوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۖ وَجَعَلْنَا الْأُغُلَّ	और वो नदामत को छुपाएंगे जब वो अज़ाब देखेंगे। और हम तौक रख देंगे
فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا	काफ़िरों की गरदनोँ में। उन्हें सज़ा नहीं दी जाएगी मगर उन्हीं कामों की जो वो
يَعْمَلُونَ ﴿۳۳﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ	करते थे। और हम ने किसी बस्ती में डराने वाला रसूल नहीं भेजा मगर वहाँ के खुशहाल
مُتْرَفُوهُمْ إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿۳۴﴾ وَقَالُوا نَحْنُ	लोगों ने कहा के यकीनन हम तो कुफ़ करते हैं उस के साथ जिस को दे कर तुम भेजे गए हो। और कहा के हम
أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا ۖ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ ﴿۳۵﴾ قُلْ إِنَّ رَبِّي	ज़्यादा माल और औलाद वाले हैं। और हमें अज़ाब नहीं होगा। आप फ़रमा दीजिए यकीनन मेरा रब
يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ	रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए चाहता है और तंग करता है जिस के लिए चाहता है, लेकिन अक्सर लोग
لَا يَعْلَمُونَ ﴿۳۶﴾ وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِآلَتِي	जानते नहीं। और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद ऐसी चीज़ नहीं जो तुम्हें हमारा ज़्यादा

تُقَرَّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۖ فَأُولَٰئِكَ	मुकर्रब बना दें, मगर जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, तो उन के
لَهُمْ جَزَاءُ الضَّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ﴿۳۷﴾	लिए उन के अमल की दुगनी जज़ा होगी और वो बालाखानों में अमन से होंगे।
وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ ۖ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ	और जो कोशिश कर रहे हैं हमारी आयतों में हराने वाले बन कर, ये लोग अज़ाब में हाज़िर
مُحْضَرُونَ ﴿۳۸﴾ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ	किए जाएंगे। आप फरमा दीजिए यकीनन मेरा रब रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए चाहता है
مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۖ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ	अपने बन्दों में से और तंग करता है जिस के लिए चाहता है। और जो चीज़ भी तुम खर्च करो तो वो
يُخْلِفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿۳۹﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا	उस का बदल देता है। और वो बेहतरीन रोज़ी देने वाला है। और जिस दिन वो सब को इकट्ठा करेगा,
ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهُولَاءِ ۖ إِنِّي كُنْتُ بِكُمْ كَافٍ ۚ يَعْبُدُونِ ﴿۴۰﴾	फिर फरिशतों से कहेगा क्या ये लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे?
قَالُوا سُبْحَنَكَ أَنْتَ وَلِيِّنَا مِنْ دُونِهِمْ ۖ بَلْ كَانُوا	तो वो कहेंगे के आप पाक हैं, आप हमारे कारसाज़ हैं न के वो। बल्के ये लोग
يَعْبُدُونَ الْجِنَّ ۖ أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُؤْمِنُونَ ﴿۴۱﴾ فَالْيَوْمَ	तो जिन्नात की इबादत करते थे। उन में से अक्सर जिन्नात पर ईमान भी रखते थे। तो आज
لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفَعًا وَلَا ضَرًّا ۚ وَنَقُولُ لِلَّذِينَ	तुम में से एक दूसरे के लिए नफ़ा और ज़रर के मालिक नहीं। और हम कहेंगे ज़ालिमों
ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿۴۲﴾	से के तुम उस आग का अज़ाब चखो जिस को तुम झुठलाया करते थे।
وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ	और जब उन पर हमारी साफ साफ आयतें तिलावत की जाती हैं, तो वो केहते हैं के ये पैग़म्बर नहीं है मगर एक आदमी
يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُكُمْ ۚ وَقَالُوا	जो चाहता है के तुम्हें रोक दे उन माबूदों से जिन की तुम्हारे बाप दादा इबादत करते थे। और ये केहते हैं

مَا هَذَا إِلَّا إِفْكٌ مُّفْتَرًى ۖ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ

के ये कुरआन नहीं है मगर झूठ जो घड़ लिया गया है। और काफिर लोग हक के मुतअल्लिक केहते हैं जब हक

لَنَا جَاءَهُمْ ۚ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٣٦﴾ وَمَا آتَيْنَهُمْ

उन के पास आया के ये तो महज साफ जादू है। और हम ने उन्हें

مِّنْ كُتُبٍ يَّذُرُوهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ

किताबें नहीं दीं जिन को वो पढ़ें और हम ने उन की तरफ आप से पेहले कोई डराने वाला रसूल

مِّنْ نَّذِيرٍ ﴿٣٧﴾ وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا بَلَّغُوا مَعْشَارَ

नहीं भेजा। और उन लोगों ने भी झुठलाया जो उन से पेहले थे। और ये उन के दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचे

مَا آتَيْنَهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٣٨﴾ قُلْ

जो हम ने अगलों को दिया था, फिर उन्होंने ने मेरे पैगम्बरों को झुठलाया। फिर मेरा अज़ाब कैसा था? आप फरमा

إِنَّمَا أَعْطَكُم بَوَاحِدَةٍ ۚ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ مِثْلِي وَفَرَادَى

दीजिए मैं तुम्हें सिर्फ एक चीज़ की नसीहत करता हूँ। ये के तुम खड़े हो जाओ अल्लाह के लिए दो दो और तन्हा तन्हा,

ثُمَّ تَتَفَكَّرُونَ ۚ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِنْ جِنَّةٍ ۚ إِنَّ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَّكُمْ

फिर तुम सोचो के तुम्हारे साथी (नबी) को कुछ जुनून नहीं है। वो तो सिर्फ तुम्हारे लिए एक सख्त

بَيْنَ يَدَيَّ عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٣٩﴾ قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرِ

अज़ाब से पेहले डराने वाला है। आप फरमा दीजिए मैं ने जो अज़्र तुम से मांगा हो

فَهُوَ لَكُمْ ۚ إِنَّ أَجْرِي إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

वो भी तुम्हारे लिए है। मेरा अज़्र तो सिर्फ अल्लाह के ज़िम्मे है। और वो हर चीज़ पर

شَهِيدٌ ﴿٤٠﴾ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَٰمُ الْغُيُوبِ ﴿٤١﴾

निगराँ है। आप फरमा दीजिए के मेरा रब हक को डालता है। वो छुपी हुई चीज़ें खूब जानता है।

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِي الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ﴿٤٢﴾ قُلْ

आप फरमा दीजिए के हक आ गया और बातिल न पेहले कुछ कर सकता था और न दोबारा कुछ कर सकेगा। आप

إِنْ ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي ۚ وَإِنِ اهْتَدَيْتُ

फरमा दीजिए अगर मैं गुमराही पर हूँ तो मेरी ज़ात ही पर मेरी गुमराही है। और अगर मैं हिदायत पर हूँ

فَبِمَا يُوحِي إِلَيَّ رَبِّي ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فَرَغُوا

तो उस की वजह से है जो मेरी तरफ मेरा रब वही कर रहा है। यकीनन वो सुनने वाला, क़रीब है। और काश आप देखते

فَلَا فُوتَ وَأُخِذُوا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۖ وَقَالُوا آمَنَّا

जब ये घबराएंगे तो फिर छूट नहीं सकेंगे और करीबी जगह से पकड़ लिए जाएंगे। और कहेंगे के हम कुरआन पर

بِهِ ۖ وَأَنَّى لَهُمُ التَّنَاقُشُ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۚ

ईमान ले आए। और उन के हाथ (ईमान तक) दूर जगह से कहाँ पहुँच सकते हैं?

وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ

हालांके वो उस के साथ इस से पेहले कुफ़ करते रहे। और वो बेतहकीक बातें दूर ही दूर से

بَعِيدٍ ۚ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ

हांका करते थे। और उन के दरमियान और उन की ख्वाहिशात के दरमियान आड़ कर दी जाएगी जैसा के उन

بِأَشْيَاءِهِمْ مِنْ قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُرِيبٍ ۚ

के हममस्लकों के साथ इस से पेहले किया गया। बेशक वो बड़े भारी शक में थे।

ۚ
ۚ
ۚ

رُكُوعًا ۝ ٥

(३५) سُورَةُ فَاطِرٍ مَكِّيَّةٌ (३३)

آيَاتُهَا ३५

और ५ रूकूअ हैं

सूरह फातिर मक्का में नाज़िल हुई

उस में ४५ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَكِ

तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिए हैं जो आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला है और फरिशतों को पैग़ाम पहुँचाने वाला

رُسُلًا أُولَىٰ أَجْنَحَةٍ مَّتَنَّى وَثَلَثَ وَرُبْعٌ ۖ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ

बना कर भेजने वाला है जो फरिशते दो दो और तीन तीन और चार चार पर वाले होते हैं। पैदाइश में ज़्यादाती करता है

مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ مَا يَفْتَحُ اللَّهُ

जितनी चाहता है। यकीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। अल्लाह इन्सानों के

لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۖ وَمَا يُمْسِكُ

लिए रहमत खोल दे तो उसे कोई रोक नहीं सकता। और जो रोक दे

فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ بَعْدِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

तो अल्लाह के बाद उस को कोई भेज नहीं सकता। और वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا اللَّهَ نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۖ هَلْ مِنْ

ऐ इन्सानो! याद करो अल्लाह की उस नेअमत को जो तुम पर है। क्या अल्लाह के सिवा

خَالِقِ غَيْرِ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ

कोई पैदा करने वाला है जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता हो? कोई माबूद नहीं

إِلَّا هُوَ ۚ فَإِنِّي تُؤْفَكُونَ ۝ وَإِنِّي يُكَذِّبُوكَ

मगर वही। फिर तुम कहाँ उलटे फिरे जा रहे हो? और अगर ये आप को झुठलाएं

فَقَدْ كَذَّبْتَ رَسُولٌ مِّن قَبْلِكَ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝

तो आप से पेहले पैगम्बरों को झुठलाया गया। और अल्लाह ही की तरफ़ तमाम उमूर लौटाए जाएंगे।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ

ऐ इन्सानो! यकीनन अल्लाह का वादा सच्चा है, फिर तुम्हें दुन्यवी ज़िन्दगी धोके में

الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۝ إِنَّ الشَّيْطَانَ

न डाले। और तुम्हें अल्लाह से धोकेबाज़ (शैतान) धोके में न डाले। यकीनन शैतान

لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ لِيَكُونُوا

तुम्हारा दुश्मन है, तो तुम उसे दुश्मन समझते रहो। वो अपनी जमाअत को बुलाता है ताके वो

مِّنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝ الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ

दोज़खियों में से हो जाएं। वो जिन्होंने ने कुफ़ किया उन के लिए सख्त

شَدِيدٌ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ

अज़ाब है। और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए मग़फ़िरत है और बड़ा अज़

وَاجِرٌ كَبِيرٌ ۝ أَفَمَن زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ فَرَآهُ حَسَنًا

है। क्या फिर वो शख्स जिस के लिए उस की बदअमली मुज़य्यन की गई, फिर वो उस को अच्छा समझता है (ये और मोमिन जो उसे बुरा

فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَن يَشَاءُ ۚ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ

समझता है दोनों बराबर हो सकते हैं?) तो यकीनन अल्लाह गुमराह करते हैं जिसे चाहते हैं और हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं।

فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسْرَتٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ

फिर उन पर अफ़सोस के बाइस आप की जान न निकल जाए। बेशक अल्लाह को मालूम है

بِمَا يَصْنَعُونَ ۝ وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ فَتُثِيرُ

जो हरकतें ये कर रहे हैं। और अल्लाह वो है जिस ने हवाओं को भेजा, फिर वो बादलों को

سَحَابًا فَسُقْنَهُ إِلَىٰ بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاحْيَيْنَا بِهِ الْأَرْضَ

उड़ाती हैं, फिर हम उस को हांक कर ले जाते हैं खुशक ज़मीन की तरफ, फिर हम उस से ज़मीन को ज़िन्दा करते हैं

بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ كَذَلِكَ النُّشُورُ ﴿٩﴾ مَنْ كَانَ يُرِيدُ

उस के खुश्क हो जाने के बाद। इसी तरह कब्रों से उठना भी होगा। जो इज्जत चाहता

الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا ۖ إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ

है तो अल्लाह ही के लिए है सारी इज्जत। उसी की तरफ पाकीज़ा कलिमे

الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ۚ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ

चढ़ते हैं और नेक अमल उन को बुलन्द करते हैं। और जो बुरी तदबीरें

السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَمَكْرُ أُولَٰئِكَ هُوَ

करते हैं उन के लिए सख्त अज़ाब है। और उन का मक्र नाकाम

يَبْوَرُ ﴿١٠﴾ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِّنْ نُطْفَةٍ

होगा। और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया है मिट्टी से, फिर नुत्फे से,

ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ

फिर तुम्हें जोड़े जोड़े बनाया। और कोई मादा हामिला नहीं होती और न जनती है

إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَلَا يُنْقَصُ

मगर अल्लाह के इल्म में होता है। और किसी उम्र वाले को उम्र नहीं दी जाती और न उस की उम्र में से कम

مِنْ عُمُرٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١١﴾

किया जाता है मगर वो लौहे महफूज़ में है। और ये अल्लाह पर आसान है।

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ ۚ هَٰذَا عَذْبٌ فَرَاتٌ سَائِغٌ شَرَابُهُ

और दो समन्दर बराबर नहीं हैं। ये मीठा, प्यास बुझाता है, उस का पीना खुशगवार है,

وَهَٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۚ وَمِن كُلِّ تَاكُوتٍ لَّحْمٌ طَرِيًّا

और ये नमकीन कड़वा है। और हर एक में से तुम खाते हो ताज़ा गोश्त

وَأَسْتَخْرِجُونَ حُلِيَّةً تَلْبَسُونَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ

और तुम निकालते हो ज़ेवर जिस को तुम पेहेनते हो। और आप कशती को देखोगे उस में

مَوَآخِرَ لِّتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلِعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾

मौजों को फाड़ती हुई चलती हैं, ताके तुम अल्लाह का फज़ल तलाश करो और ताके तुम शुक्र अदा करो।

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ يُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَ

वो रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है। और

سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي لِإِجَالٍ مُّسَمًّى ۖ

उस ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है। सब के सब चलते रहेंगे वक़्त मुक़रर तक के लिए।

ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۖ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ

यही अल्लाह तुम्हारा रब है, उसी के लिए सल्लत है। और जिन को तुम पुकारते हो

مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ ۚ إِنَّ تَدْعُوهُمْ

उस के सिवा वो खजूर की गुठली के ग़िलाफ़ के भी मालिक नहीं हैं। अगर तुम उन को पुकारो

لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ ۖ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۖ

तो वो तुम्हारी पुकार सुनते नहीं। और अगर वो सुनें भी तो तुम्हें जवाब नहीं दे सकेंगे।

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بَشِرْكُمْ ۖ وَلَا يُنَبِّئُكَ

और क़यामत के दिन वो तुम्हारे शिर्क का इन्कार करेंगे। और तुम्हें बाख़बर की तरह कोई

مِثْلُ خَيْرٍ ۚ يَأَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ

खाबर नहीं दे सकता। ऐ इन्सानो! तुम मोहताज हो

إِلَى اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۚ إِنَّ يَشَاءُ يُذْهِبْكُمْ

अल्लाह की तरफ़। और अल्लाह बेनियाज़ है, क़बिले तारीफ़ है। अगर वो चाहे तो तुम्हें हलाक कर दे

وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۚ

और नई मखलूक को ले आए। और ये अल्लाह पर कुछ मुश्किल नहीं।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۖ وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ

और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और अगर कोई बोझ लदा हुआ उस के उठाने को

إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يُمْكِلُ مِنْهُ شَيْءٌ ۖ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ

(किसी को) बुलाए तो कुछ बोझ भी उस में से उठाया नहीं जा सकता अगर्चे वो करीबी रिश्तेदार ही क्यूं न हो।

إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا

आप तो सिर्फ़ उन को डराते हैं जो अपने रब से बेदेखे डरते हैं और नमाज़ काइम

الصَّلَاةَ ۖ وَمَنْ تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۖ

करते हैं। और जो तज़किया करेगा तो सिर्फ़ अपनी ही ज़ात के फ़ाइदे के लिए तज़किया करेगा।

وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۚ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۚ

और अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है। और अन्धा और बीना बराबर नहीं हो सकते।

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ

وَلَا الظُّلُمْتُ وَلَا النُّورُ ۚ وَلَا الظَّلُّ وَلَا الْحُرُورُ ۚ

और अन्धेरे और नूर बराबर नहीं हो सकते। और साया और धूप बराबर नहीं हो सकती।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ

और ज़िन्दे और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते। यकीनन अल्लाह सुनाते हैं

مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُورِ ۚ إِنَّ أَنْتَ

जिसे चाहते हैं। और आप उन को नहीं सुना सकते जो कब्रों में हैं। आप तो सिर्फ

إِلَّا نَذِيرٌ ۚ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا

डराने वाले हैं। हम ने आप को हक़ दे कर बशारत देने वाला, डराने वाला रसूल बना कर भेजा है।

وَأَنَّ مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ۚ وَإِنْ يَكْذِبُوكَ فَقَدْ

और कोई उम्मत ऐसी नहीं जिस में डराने वाला न आया हो। और अगर ये आप को झुठलाएं तो उन

كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ

लोगों ने भी झुठलाया जो उन से पेहले थे। जिन के पास उन के पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात

وَبِالزُّبُرِ ۚ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ۚ ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ

और लिखी हुई किताबें और रोशन किताब ले कर आए थे। फिर मैं ने काफ़िरों को

كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرٌ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ

पकड़ लिया, फिर मेरा अज़ाब कैसा था? क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह ने आसमान

مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ فَآخَرَجْنَا بِهِ شَجَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا

से पानी उतारा। फिर हम ने उस से फलों को निकाला जिन के रंग

أَلْوَانُهَا ۚ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بَيَضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ

मुखतलिफ हैं। और पहाड़ों में सफेद और सुर्ख घाटियाँ हैं जिन के रंग

أَلْوَانُهَا ۚ وَغَرَابِيبُ سُودٌ ۚ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ

मुखतलिफ होते हैं और कुछ गेहरे सियाह होते हैं। और इन्सानों में से और चौपाओं में से

وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ ۚ كَذَلِكَ ۚ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ

और जानवरों में भी इसी तरह मुखतलिफ रंग के (पैदा किए)। अल्लाह से उस के बन्दों में से

مَنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ۚ إِنَّ

सिर्फ इल्म वाले डरते हैं। बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त है, बख़्शने वाला है। यकीनन

الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَانْفَقُوا

जो लोग अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं और नमाज़ काइम करते हैं और खर्च करते हैं

مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً

उस में से जो हम ने उन्हें रोज़ी के तौर पर दिया है चुपके और अलानिया, वो उम्मीद रखते हैं ऐसी तिजारत की

لَنْ تَبُورَ ۚ لِيُوفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَ يَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۗ

जो बरबाद नहीं होगी। ताके अल्लाह उन्हें उन के सवाब दे और उन्हें अपने फज़ल से मज़ीद दे।

إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝ وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ

यकीनन वो बख़्शने वाला, क़दरदान है। और वो किताब जो हम ने आप की तरफ

مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ

वही की वो हक़ है, सच्चा बतलाने वाली है उन किताबों को जो उस से पेहले थीं। यकीनन अल्लाह

بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ۝ ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ

अपने बन्दों से बाख़बर है, वो देख रहा है। फिर हम ने किताब का वारिस बनाया उन को जिन्हें

اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۖ فِيهِمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ وَمِنْهُمْ

हम ने मुन्तख़ब किया हमारे बन्दों में से। फिर उन में से कोई तो अपने ऊपर जुल्म करने वाला है। और उन में से

مُقْتَصِدٌ ۖ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ ۖ بإِذْنِ اللَّهِ ۚ ذَلِكَ

कोई मयानारव है। और उन में से कोई नेकियों में सबक़त करने वाला है अल्लाह के हुक्म से। ये

هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝ جَنَّتٌ عَدْنٌ يَدْخُلُونَهَا

बड़ा फज़ल है। जन्नाते अद्न में वो दाखिल होंगे,

يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ

वहाँ उन्हें सौने के कंगन और मोती पेहनाए जाएंगे। और उन का लिबास

فِيهَا حَرِيرٌ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا

उन में रेशम का होगा। और वो कहेंगे के तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम से ग़म

الْحَزْنَ ۚ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ۝ الَّذِي أَحَلَّنَا

दूर कर दिया। यकीनन हमारा रब बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला, क़दरदान है। वो अल्लाह जिस ने हमें

دَارَ الْمَقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ ۖ لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نُصَبٌ وَلَا

हमेशा के घर में अपने फज़ल से उतारा। जिस में न हमें रंज पहोंचेगा और न

يَمْسُنَا فِيهَا لُغُوبٌ ﴿۲۱﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ

थकावट पहुँचेगी। और वो लोग जो काफिर हैं उन के लिए जहन्नम की आग है।

لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ

उन के मुतअल्लिक़ फैसला नहीं होगा के वो मर जाएं, और न उन से आग का अज़ाब हलका

مِّنْ عَذَابِهَا ۚ كَذَلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ﴿۲۲﴾ وَهُمْ يَصْطَرِحُونَ

किया जाएगा। इसी तरह हम हर नाशुकरे को सज़ा देंगे। और वो उस में चीख

فِيهَا ۚ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا

रहे होंगे। ऐ हमारे रब! तू हमें निकाल के हम नेक अमल करें उस के अलावा जो हम

نَعْمَلُ ۚ أَوَلَمْ نَعْبُدْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَن تَذَكَّرُ وَ

करते थे। (तो कहा जाएगा) क्या हम ने तुम्हें उमरें नहीं दी थीं जिस में नसीहत हासिल कर सकता था जो नसीहत

جَاءَكُمْ النَّذِيرُ ۚ فَذُوقُوا فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ﴿۲۳﴾

हासिल करता और तुम्हारे पास डराने वाला भी आया था? फिर तुम चखो। फिर ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ

यकीनन अल्लाह आसमान और ज़मीन की पोशीदा चीज़ें जानने वाला है। यकीनन उसे दिलों

بِذَاتِ الصُّدُورِ ۚ هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ

के हाल का भी इल्म है। उस ने तुम्हें ज़मीन में जानशीन

فِي الْأَرْضِ ۚ فَمَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۚ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ

बनाया। फिर जो कुफ़ करेगा, तो उसी पर उस के कुफ़ का वबाल पड़ेगा। और काफिरों का कुफ़ उन के

كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ

रब के यहाँ गुस्से ही को बढ़ाता है। और काफिरों को उन का कुफ़

كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ۚ قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَكُمُ الَّذِينَ

खसारे ही में बढ़ाता है। आप फरमा दीजिए क्या तुम ने देखा अपने शुरका को अल्लाह

تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ ۚ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا

के सिवा जिन को तुम पुकारते हो? मुझे दिखाओ उन्होंने ने क्या पैदा किया

مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ ۚ أَمْ آتَيْنَهُم كِتَابًا

ज़मीन में से या उन की शिराकत है आसमानों में? या हम ने उन्हें किताब दी है

فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ إِن يَبْدُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُمْ

के वो उस की वजह से रोशन रास्ते पर हैं? बल्के ये ज़ालिम उन में से एक दूसरे से वादा

بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا ۚ إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ

नहीं करते मगर धोके ही का। बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन को गिरने से थामे

أَنْ تَرْوَاهُ وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ

हुए है। और अगर वो गिर जाएं तो उन्हें अल्लाह के बाद कौन

مِّنْ بَعْدِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝۱۱ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ

थाम सकता है? यकीनन वो हिल्म वाला, बहोत ज़्यादा बख्शने वाला है। और ये अल्लाह की कस्में खाते थे पक्की

إِيمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَىٰ

कस्में के अगर उन के पास डराने वाला आएगा तो ज़रूर सारी उम्मतों में सब से ज़्यादा हिदायत वाले बन

الْأُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۝۱۲

जाएंगे। लेकिन जब उन के पास डराने वाला आया तो उन की नफरत और बढ़ी।

إِسْتَكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ

ज़मीन में तकबुर करने और बुरी तदबीरें करने की बिना पर। और बुरा मक्र उस के करने

السَّيِّئِ إِلَّا بِأَهْلِهِ ۚ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ

वालों ही को हलाक करता है। क्या फिर पेहले लोगों के दस्तूर के वो मुन्तज़िर हैं?

فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ

फिर आप अल्लाह के दस्तूर में कोई तबदीली हरगिज़ नहीं पाओगे। और अल्लाह के दस्तूर में तग़य्युर हरगिज़

تَحْوِيلًا ۝۱۳ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ

न पाओगे। क्या वो ज़मीन में चले फिरे नहीं के देखते के उन

كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ

लोगों का अन्जाम कैसा हुवा जो उन से पेहले थे और उन से ज़्यादा कूब्वत

قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَوَاتِ

वाले थे? और अल्लाह ऐसा नहीं है के उसे कोई चीज़ आजिज़ कर सके आसमानों में

وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ۝۱۴ وَلَوْ يُؤَاخِذُ

और न ज़मीन में। यकीनन वो इल्म वाला, कुदरत वाला है। और अगर अल्लाह

اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَى ظَهْرِهَا

इन्सानों को पकड़े उन के आमाल की वजह से तो ज़मीन की पुश्त पर किसी जानदार को

مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ

न छोड़े, लेकिन अल्लाह उन्हें मुहलत दे रहा है एक वक़्त मुक़र्ररा तक।

فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ۝

फिर जब उन का आखिरी वक़्त आ जाएगा तो यकीनन अल्लाह अपने बन्दों को ख़ूब देख रहा है।

الْأَيَّهَا ۸۳ (۳۶) سُورَةُ يُسُفِ الْمَكِّيَّةُ (۴۱) رُؤُوءَئَهَا ۵

उस में ८३ आयतें हैं सूरह यासीन मक्का में नाज़िल हुई और ५ स्कूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يَسَ ۝ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ۝ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

या सीन। हिक्मत वाले कुरआन की कसम। यकीनन आप भेजे हुए पैग़म्बरों में से हैं।

عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝ لَتُنذِرَ قَوْمًا

सीधे रास्ते पर हैं। ये कुरआन ज़बर्दस्त रहमत वाले अल्लाह की तरफ से उतारा गया है। ताके आप डराएं ऐसी कौम को

مَا أَنْذَرَ آبَاؤُهُمْ قَوْمٌ غَفُورُونَ ۝ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ

जिन के बाप दादा को नहीं डराया गया है, इस लिए वो ग़ाफ़िल हैं। यकीनन उन में से अक्सर पर कौले हक़

عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ أَعْنَاقِهِمْ أَغْلًا

साबित हो गया के वो ईमान नहीं लाएंगे। यकीनन हम ने उन की गर्दनो में तौक रख दिए हैं,

فَهِيَ إِلَىٰ الْأَذْقَانِ قَوْمٌ مُّقْمَحُونَ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ

फिर वो ठोड़ियों तक पहुँच गए हैं और उन के सर ऊँचे हो रहे हैं। और हम ने उन के आगे

أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ قَوْمٌ

दीवार बना दी है और उन के पीछे दीवार बना दी है, फिर हम ने उन को ढांप लिया है, इस लिए वो

لَا يُبْصِرُونَ ۝ وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنْذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ

देख नहीं सकते। और उन पर बराबर है चाहे आप उन्हें डराएं या न डराएं,

لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنَ

वो ईमान नहीं लाएंगे। आप उसी को डरा सकते हैं जो इस नसीहत का इत्तिबा करे और रहमान से बेदेखे

بِالْغَيْبِ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ۝ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي डरे। फिर आप उसे बशारत दीजिए मग़फ़िरत और इज्जत वाले सवाब की। हम ही मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे	
الْمَوْتِ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ और हम लिख रहे हैं उन के आगे भेजे हुए आमाल और उन के निशानाते क़दम। और हर चीज़ हम ने महफूज़ कर रखी है	وَقُلْ
فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ۝ وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ ۚ लौहे महफूज़ में। और आप उन के लिए मिसाल बयान कीजिए एक बस्ती वालों की,	وَقُلْ
إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ۝ إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ जब उन के पास भेजे हुए आदमी आए। जब हम ने उन की तरफ दो रसूल भेजे, तो उन्होंने ने उन को	
فَكَذَّبُوهُمَا فَعَبَّزْنَاهَا بِثَلَاثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ ۝ झुठलाया, फिर हम ने तीसरे को तकवियत के लिए भेजा, फिर उन तीनों ने कहा हम तुम्हारी तरफ भेजे गए हैं।	
قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ वो बोले के तुम नहीं हो मगर हम जैसे एक इन्सान और रहमान तआला ने कुछ भी	
مِنْ شَيْءٍ ۚ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ۝ قَالُوا رَبَّنَا يَعْلَمُ नहीं उतारा। तुम तो सिर्फ झूठ बोलते हो। उन्होंने ने कहा के हमारा रब जानता है के	
إِنَّا إِلَيْكُم لَمُرْسَلُونَ ۝ وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلْغُ الْبَيِّنُ ۝ बेशक हम तुम्हारी तरफ भेजे गए हैं। और हमारे ज़िम्मे तो सिर्फ साफ़ साफ़ पहोँचा देना है।	
قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ वो बोले के हम तुम्हें मन्हूस समझते हैं। अगर तुम बाज़ नहीं आओगे तो हम तुम्हें रज्म कर देंगे	
وَلَيَمَسَّنَّكُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالُوا طَائِرُكُم مَّعَكُمْ ۚ और तुम्हें हमारी तरफ से दर्दनाक सज़ा मिलेगी। तो वो तीनों केहने लगे तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है।	
إِنْ دُكِّرْتُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝ وَجَاءَ क्या अगर्चे तुम्हें नसीहत की जाए तब भी? बल्के तुम ऐसी कौम हो जो हद से तजावुज़ करते हो। और शेहर के किनारे	
مِّنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَّسْعَىٰ قَالَ يَاقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ से एक आदमी आया दौड़ता हुवा, उस ने कहा के ऐ मेरी कौम! तुम उन रसूलों का इत्तिबा कर लो।	
اتَّبِعُوا مَن لَّا يَسْأَلْكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُّهْتَدُونَ ۝ तुम उन का इत्तिबा कर लो जो तुम से बदला नहीं मांगते और जो हिदायतयाफ़ता हैं।	

وَمَالٍ لَا أَعْبُدُ الذِّی فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿۳۱﴾

और मुझे क्या हुवा के मैं इबादत न करूँ उस अल्लाह की जिस ने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।

ءَاتَّخِذْ مِنْ دُونِهِ إِلَهَةً إِنْ يَرِدَْنَّ الرَّحْمَنُ بِضُرٍّ

क्या मैं उसे छोड़ कर दूसरे माबूद बना लूँ के अगर रहमान तआला मुझे ज़रूर पहुँचाना चाहे

لَا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنْقِذُونِ ﴿۳۲﴾ إِنِّي

तो उन की सिफ़ारिश मेरे कुछ भी काम नहीं आ सकती और न वो मुझे बचा सकते हैं। यकीनन तब तो मैं

إِذَا لَفِيَ ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿۳۳﴾ إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ﴿۳۴﴾

खुली गुमराही में पड़ गया। मैं तो ईमान ले आया तुम्हारे रब पर, तो तुम मेरी बात सुनो।

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۖ قَالَ يَلَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ﴿۳۵﴾

कहा गया के तू जन्नत में दाखिल हो जा। उस ने कहा ऐ काश के मेरी कौम जान लेती।

بِمَا عَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿۳۶﴾ وَمَا أَنْزَلْنَا

जो मेरे रब ने मेरी मग़फ़िरत की है और मुझे मुअज़्ज़ज़ लोगों में से बना दिया। और हम ने उस की कौम पर

عَلَى قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا

उस के बाद आसमान से लशकर नहीं उतारे और न हम उतारने

مُنْزِلِينَ ﴿۳۷﴾ إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ

वाले हैं। वो तो सिर्फ़ एक ही चिंघाड़ थी, तब ही वो बुझ कर

خَبَدُونَ ﴿۳۸﴾ يُحْسِرَةٌ عَلَى الْعِبَادَةِ مَا يَأْتِيهِمْ مِّن رَّسُولٍ

रेह गए। हाए अफ़सोस बन्दों पर! उन के पास कोई रसूल नहीं आता

إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿۳۹﴾ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا

मगर वो उस का मज़ाक उड़ाते हैं। क्या उन्होंने ने देखा नहीं के उन से पेहले कितनी

قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿۴۰﴾

कौमों को हम ने हलाक किया जो उन की तरफ़ वापस नहीं आते?

وَإِنْ كُلُّ لَبَّاءٍ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿۴۱﴾ وَآيَةٌ لَهُمُ الْأَرْضُ

और वो सब के सब इकट्ठे हमारे सामने ज़रूर हाज़िर किए जाएंगे। और उन के लिए बन्जर ज़मीन एक

الْمَيْتَةُ ۖ أَحْيَيْنَاهَا وَ أَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ

निशानी है। जिस को हम ने ज़िन्दा किया और उस से हम ने अनाज निकाला, फिर उस में से

يَاكُلُونَ ﴿٣٢﴾ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّتٍ مِّنْ نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ

वो खाते भी हैं। और हम ने उस में खजूर और अंगूर के बागात बनाए

وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ﴿٣٣﴾ لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِۦٓ

और हम ने उस में चशमे जारी कर दिए। ताके वो उस के फल में से खाएं

وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٤﴾ سُبْحَنَ الَّذِي

और उन के हाथों ने ये फल नहीं बनाए। क्या फिर वो शुक्र अदा नहीं करते? पाक है वो अल्लाह जिस ने

خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُثْبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ

तमाम जोड़े पैदा किए उस में से जिस को ज़मीन उगाती है और खुद उन की जानों से भी और उन चीज़ों से

وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٥﴾ وَآيَةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ ۖ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ

भी जिन का उन्हें इल्म नहीं। और उन के लिए एक निशानी रात है। के हम उस से दिन को खींच लेते हैं,

فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ ﴿٣٦﴾ وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا

तो अचानक वो तारीकी में रह जाते हैं। और सूरज चलता रहता है अपने मुस्तकर तक के लिए।

ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٣٧﴾ وَالْقَمَرَ قَدَرْنَاهُ مَنَازِلَ

ये ज़बर्दस्त इल्म वाले अल्लाह की मुतअय्यन की हुई मिकदार है। और चाँद की हम ने मन्ज़िलें मुतअय्यन की हैं,

حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ﴿٣٨﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا

यहाँ तक के वो पुरानी शाख की तरह हो जाता है। न सूरज के लिए मुनासिब है

أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ

के वो चाँद को पकड़ ले और न रात दिन से आगे जा सकती है। और

فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٣٩﴾ وَآيَةٌ لَهُمْ أَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمُ

सब के सब फ़लक में तैर रहे हैं। और उन के लिए एक निशानी ये है के हम ने उन की जुरीयत को भरी हुई

فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿٤٠﴾ وَخَلَقْنَا لَهُمُ مِن مِّثْلِهِ

कशती में सवार कराया। और हम ने उन के लिए कशती के मानिन्द चीज़ें पैदा कीं जिन पर वो सवारी

مَا يَرْكَبُونَ ﴿٤١﴾ وَإِنْ نَشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ

करते हैं। और अगर हम चाहें तो उन्हें ग़र्क कर दें, फिर न उन का कोई फरयादरस हो

وَلَا هُمْ يُنْقَذُونَ ﴿٤٢﴾ إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٤٣﴾

और न उन्हें बचाया जा सके। मगर हमारी रहमत से और एक वक़्त तक फ़ाइदा देने के लिए (हम ने ग़र्क नहीं किया)।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ

और जब उन से कहा जाता है के डरो उस से जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है

لَعَلَّكُمْ تَرْحَمُونَ ﴿۳۵﴾ وَمَا تَأْتِيهِمْ مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ

ताके तुम पर रहम किया जाए। और उन के पास कोई निशानी नहीं आती उन के रब की निशानियों

رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿۳۶﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ

में से मगर वो उस से ऐराज़ करते हैं। और जब उन से कहा जाता है के

أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۖ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ

खर्च करो उस में से जो अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दिया है, तो काफ़िर ईमान वालों से

أَمْنُوا أَنْطَعِمُ مَنْ لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطَعَمَهُ ۖ إِنَّ أَنْتُمْ

केहते हैं के क्या हम उन को खिलाएं जिन को अगर अल्लाह चाहता तो खिला देता? तुम तो

إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿۳۷﴾ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ

सिर्फ़ खुली गुमराही में हो। और वो केहते हैं के ये वादा कब है अगर

إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿۳۸﴾ مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً

तुम सच्चे हो? वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर एक चिंघाड़ के,

تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿۳۹﴾ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً

जो उन को पकड़ लेगी जिस वक़्त वो झगड़ रहे होंगे। फिर वो न वसीयत कर सकेंगे

وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿۴۰﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ

और न अपने घर वालों की तरफ वापस लौट सकेंगे। और सूर फूँका जाएगा

فَإِذَا هُمْ مِنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ ﴿۴۱﴾ قَالُوا

तब ही वो कब्रों से निकल कर अपने रब की तरफ दौड़ रहे होंगे। वो कहेंगे

يُؤْيِلَنَا مَنْ بَعَثَنَا مِنْ مَرْقَدِنَا ۚ هَذَا مَا وَعَدَ

हाए अफसोस हम पर! किस ने हमें हमारी सोने की जगह से उठा दिया? ये वो है जिस का रहमान तआला ने

الرَّحْمَنِ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿۴۲﴾ إِنْ كَانَتْ

वादा किया था और रसूलों ने सच कहा था। वो तो सिर्फ़

إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿۴۳﴾

एक जोरदार आवाज़ होगी, तो फौरन ही वो इकट्ठे हमारे सामने सब हाज़िर किए जाएंगे।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ

फिर आज किसी शख्स पर ज़रा भी जुल्म नहीं होगा और उन्हें बदला नहीं मिलेगा

إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿۵۳﴾ إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ

मगर उन आमाल का जो वो करते थे। यकीनन जन्नती आज दिल्लगी की चीज़ों

فِي شُغْلٍ فَكِهِونَ ﴿۵۴﴾ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ

में मज़े कर रहे हैं। वो और उन की बीवियाँ सायों में तख्तों

عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَكِونَ ﴿۵۵﴾ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ

पर टेक लगाए हुए हैं। उन के लिए उस में मेवे हैं और वो

مَا يَدْعُونَ ﴿۵۶﴾ سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ ﴿۵۷﴾ وَامْتَاَزُوا

चीज़ें हैं जो वो मांगें। महरबान रब की आवाज़ में सलाम आएगा। (और कहा जाएगा के) ऐ मुजरिमो!

الْيَوْمَ آيَّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿۵۸﴾ أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَبْنَیَّ

आज तुम अलग हो जाओ। क्या मैं ने तुम्हें हुक्म नहीं दिया था ऐ आदम

أَدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ

की औलाद! के तुम शैतान की इबादत न करो? यकीनन वो तुम्हारा खुला

مُبِينٌ ﴿۵۹﴾ وَإِنْ اعْبُدُونِي ۚ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿۶۰﴾

दुशमन है। और ये के तुम मेरी ही इबादत करो। यही सीधा रास्ता है।

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا ۖ أَفَلَمْ تَكُونُوا

यकीनन उस ने तुम में से बहोत सी मखलूक को गुमराह किया है। क्या फिर तुम अक्ल नहीं

تَعْقِلُونَ ﴿۶۱﴾ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿۶۲﴾

रखते थे? ये वो जहन्नम है जिस का तुम से वादा किया जा रहा था।

إِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿۶۳﴾ الْيَوْمَ نَخْتِمُ

तुम उस में आज दाखिल हो जाओ इस वजह से के तुम कुफ्र करते थे। आज हम मुहर लगा देंगे

عَلَى أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ

उन के मुंह पर और हम से बोलेंगे उन के हाथ और गवाही देंगे उन के पैर

بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿۶۴﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ

उन आमाल की जो वो करते थे। और अगर हम चाहें तो उन की आँखें मिटा कर

	أَعْيُنُهُمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنَّى يُبْصِرُونَ ﴿۳۶﴾ انڈھا کر دے، فیر वो راسے पर दौड़े, फिर वो कहाँ देख पाते हैं?
	وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا और अगर हम चाहें तो उन की सूरतें मसख कर दें उन की जगह ही पर, फिर वो न आगे चलने की ताकत
۴۰۲	مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿۳۷﴾ وَمَنْ نُعَبِّرْهُ نُؤْنِثْهُ रख सकें और न पीछे लौट सकें। और जिसे हम (लम्बी) उम्र देते हैं तो उसे जिस्मानी कूवत में औंधा
	فِي الْخَلْقِ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿۳۸﴾ وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ कर देते हैं। क्या ये अक्ल नहीं रखते? और हम ने इस नबी को शेअर नहीं सिखलाया
	وَمَا يَتَّبِعِي لَهُ إِنِّ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ﴿۳۹﴾ لِيُنْذِرَ और न शेअर उन के लिए मुनासिब है। ये तो सिर्फ नसीहत है और साफ साफ बयान करने वाला कुरआन है। ताके
	مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقُّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿۴۰﴾ वो डराए उस शख्स को जो ज़िन्दा है और ताके काफिरों पर हुज्जत साबित हो जाए।
	أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا क्या उन्होंने ने देखा नहीं के हम ने उन के लिए पैदा किए चौपाए अपने हाथों की बनाई हुई चीजों में से,
	فَهُمْ لَهَا مَلِكُونَ ﴿۴۱﴾ وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ फिर वो उन के मालिक हैं। और हम ने चौपाए उन के ताबेअ किए, फिर उन में से बाज़ उन की सवारियाँ हैं
	وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ﴿۴۲﴾ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۖ और उन में से बाज़ को वो खाते हैं। और उन के लिए उन चौपाओं में और भी मनाफेअ हैं और पीने की चीज़ें हैं।
	أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿۴۳﴾ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً क्या फिर ये शुक्र अदा नहीं करते? और उन्होंने ने अल्लाह के अलावा कई माबूद बना लिए हैं
	لَعَلَّهُمْ يُنْصَرُونَ ﴿۴۴﴾ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ ۖ وَهُمْ के शायद उन की नुसरत की जाए। वो उन की नुसरत की ताकत नहीं रखते, बल्के वो
۴۰۳	لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُونَ ﴿۴۵﴾ فَلَا يَخْزِنَكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا उन के लिए लशकर बना कर हाज़िर किए जाएंगे। इस लिए उन का कौल आप को ग़मगीन न करे। यकीनन हम
	نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿۴۶﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا जानते हैं उसे जिसे वो छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं। क्या इन्सान ने ये देखा नहीं

الْإِنْسَانُ أَنَا خَلَقْتُهُ مِنْ تُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ के हम ने उसे एक नुत्फे से पैदा किया, तो अचानक वो खुला झगड़ालू	
مُبِينٌ ۞ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۞ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا बन गया। और वो हमारे लिए मिसालें बयान करता है और अपनी पैदाइश को भूल जाता है। वो केहता है के कौन इन	
أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ۞ الَّذِي جَعَلَ لَكُم हड्डियों को ज़िन्दा करेगा जब के वो रेज़ा रेज़ा हो चुकी होंगी? आप फरमा दीजिए के उन को ज़िन्दा करेगा वही अल्लाह	
مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِّنْهُ تُوقَدُونَ ۞ जिस ने उन को पेहली मरतबा पैदा किया है। और वो अल्लाह हर मख़लूक को ख़ूब जानने वाला है। वो अल्लाह जिस ने	
أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ तुम्हारे लिए सब्ज दरख़्त से आग को बनाया, फिर अब तुम उस से आग सुलगाते हो।	
عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ ۚ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۞ إِنَّمَا أَمْرُهُ क्या वो अल्लाह जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया वो इस पर कादिर नहीं के	وقف غفران
أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ ۚ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۞ إِنَّمَا أَمْرُهُ उन के जैसों को पैदा कर दे? क्यूं नहीं? यकीनन वो बहोत ज़्यादा पैदा करने वाला, इल्म वला है। उस का तो हुक्म करना	
إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۞ فَسُبْحَنَ होता है जब वो किसी चीज़ का इरादा करता है के केहता है के हो जा, तो वो हो जाती है। फिर वो अल्लाह पाक है	
الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۞ जिस के कब्जे में हर चीज़ की सलतनत है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।	وقف ۵
وَالصَّفَّتِ صَفًّا ۖ فَالزَّجْرَاتِ زَجْرًا ۖ فَالتَّلِيلِ जिस के कब्जे में हर चीज़ की सलतनत है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।	
وَالصَّفَّتِ صَفًّا ۖ فَالزَّجْرَاتِ زَجْرًا ۖ فَالتَّلِيلِ उन फरिशतों की क़सम जो सफ़ बनाने वाले हैं। फिर उन फरिशतों की क़सम जो बादलों को ज़ोर से झिड़कने वाले हैं। फिर उन	
ذُكْرًا ۖ إِنَّ إِلَهُكُمْ لَوَاحِدٌ ۖ رَبُّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ फरिशतों की क़सम जो ज़िक्र की तिलावत करने वाले हैं। यकीनन तुम्हारा रब यकता है। वो आसमानों और ज़मीन का रब	الْمَنْزِلُ السَّادِسُ (۶)

وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا

है और उन चीजों का जो उन के दरमियान में है और तमाम मशरिकों का रब है। यकीनन हम ने आसमाने दुन्या को ज़ीनत

بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ۝

के लिए सितारों से मुजय्यन किया। और हर सरकश शैतान से हिफाज़त के लिए।

لَا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَىٰ وَ يُقَدِّفُونَ مِّنْ كُلِّ

जो मलअे आला की तरफ़ कान नहीं लगा सकते, और उन्हें हर जानिब से धुत्कार कर

جَانِبٍ ۝ دُحُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝ إِلَّا مَن

फेंका जाता है। और उन के लिए दाइमी अज़ाब है। मगर जो

خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاتَّبَعَهُ شَهَابٌ ثَاقِبٌ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ

छुप कर कुछ उचक ले, तो उस का पीछा करता है एक चमकता अंगारा। फिर आप उन से पूछिए

أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مِّنْ خَلْقٍ ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِّنْ طِينٍ

के क्या उन की तखलीक ज़्यादा मुश्किल है या हमारी दूसरी मखलूक़ात की? बेशक हम ने उन्हें पैदा किया चिपकने वाली

لَازِبٍ ۝ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۝ وَإِذَا ذُكِّرُوا

मिट्टी से। बल्के आप तअज्जुब कर रहे हैं और ये मज़ाक़ उड़ा रहे हैं। और जब भी उन्हें नसीहत की जाए

لَا يَذْكُرُونَ ۝ وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخَرُونَ ۝ وَقَالُوا

तो नसीहत नहीं मानते। और जब कोई मोअजिज़ा देखते हैं तो मज़ाक़ उड़ाते हैं। और केहते हैं के

إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا

ये नहीं है मगर खुला जादू। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएंगे,

ءَاِنَّا لَبَعُوثُونَ ۝ أَوْ آبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۝ قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ

तो क्या हम ज़िन्दा किए जाएंगे? और क्या हमारे अगले बाप दादा भी? आप फ़रमा दीजिए के जी हाँ! और तुम ज़लील भी

دَاخِرُونَ ۝ فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ۝

होगे। वो तो सिर्फ़ एक झड़कना होगा तो अचानक वो देखने लगेंगे।

وَقَالُوا يُوَيْلَنَا هَذَا يَوْمُ الدِّينِ ۝ هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ

और कहेंगे के हाए हमारी खराबी! ये तो हिसाब का दिन आ गया। ये फैसले का वो दिन है

الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝ أَحْشَرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا

जिस को तुम झुठलाया करते थे। तुम ज़ालिमों और उन के हममस्तकों को

وَأَنزَوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿۳۱﴾ مِنْ دُونِ اللَّهِ	
इकट्ठा करो और उन को जिन की ये इबादत करते थे। अल्लाह के अलावा।	
فَاهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ ﴿۳۲﴾ وَقِفُوهُمْ إِنَّهُمْ	۱۱
फिर तुम उन को रास्ता दिखाओ आग के रास्ते की तरफ। और उन को ठेहराओ इस लिए के उन से	
مَسْئُولُونَ ﴿۳۳﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ﴿۳۴﴾ بَلْ هُمْ الْيَوْمَ	
सवाल किया जाएगा। तुम्हें क्या हुवा के तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते? बल्के वो आज	
مُسْتَسْلِمُونَ ﴿۳۵﴾ وَأَقْبَلْ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿۳۶﴾	
ताबेदार बने हुए हैं। और उन में से एक दूसरे के सामने आ कर सवाल करेंगे।	
قَالُوا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ﴿۳۷﴾ قَالُوا	
वो कहेंगे के तुम थे जो हम पर बड़े ज़ोरों से चढ़ चढ़ कर आते थे। वो कहेंगे	
بَلْ لَمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿۳۸﴾ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ	
बल्के तुम ही ईमान नहीं लाए थे। और हमारा तुम पर कुछ ज़ोर	
مِّنْ سُلْطَانٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طَٰغِينَ ﴿۳۹﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ	
नहीं था। बल्के तुम खुद ही गुमराह थे। फिर हम पर हमारे रब का कहा साबित	
رَبِّنَا ۚ إِنَّآ لَذَٰبِقُونَ ﴿۴۰﴾ فَأَغْوَيْنَكُمْ إِنَّا كُنَّا غُٰوِينَ ﴿۴۱﴾	
हो गया के हम अज़ाब चखने वाले हैं। फिर हम ने तुम्हें गुमराह किया इस लिए के हम खुद गुमराह थे।	
فَاتَّهَمُ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿۴۲﴾ إِنَّا كَذٰلِكَ	
फिर वो सब उस दिन अज़ाब में शरीक होंगे। बेशक हम मुजरिमों के	
نَفَعُلُ بِالْجُرْمِينَ ﴿۴۳﴾ إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلٰهَ	
साथ ऐसा ही करते हैं। इस लिए के जब उन्हें कहा जाता था के कोई माबूद नहीं	
إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿۴۴﴾ وَيَقُولُونَ إِنَّا لَنَارِكُوا إِلٰهَتَنَا	
सिवाए अल्लाह के, तो वो तकबुर करते थे। और केहते थे के क्या हम अपने माबूदों को छोड़ दें	
لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ ﴿۴۵﴾ بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ﴿۴۶﴾	
एक मजनून शाइर की वजह से? बल्के वो तो हक ले कर आया है और उस ने तमाम पैगम्बरों की तस्दीक की है।	
إِنَّكُمْ لَذَٰبِقُوا الْعَذَابِ الْإِلِيمِ ﴿۴۷﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ	
यकीनन तुम दर्दनाक अज़ाब चखने वाले हो। और तुम्हें सज़ा नहीं मिलेगी	

إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿۳۹﴾ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ ﴿۴۰﴾

मगर उन्ही आमाल की जो तुम करते थे। मगर अल्लाह के खालिस किए हुए बन्दे।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿۴۱﴾ فَوَاكِهِ ۖ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ﴿۴۲﴾

के ये वो हैं जिन के लिए मालूम रोज़ी है। मेवे होंगे। और उन्हें पैज़ाज़ दिया जाएगा।

فِي جَنَّتِ النَّعِيمِ ﴿۴۳﴾ عَلَى سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿۴४﴾ يُطَافُ

जन्नाते नईम में। वो तख्तों पर आमने सामने बैठे हुवे होंगे। उन को (बारी बारी)

عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِينٍ ﴿۴५﴾ بَيضَاءِ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ ﴿۴६﴾

सफेद चशमए साफ़ी से भरे जाम पेश किए जाएंगे, जो पीने वालों के लिए सरापा लज़्ज़त होंगे।

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ﴿۴७﴾ وَعِنْدَهُمْ

जिस में न सर चकराना होगा और न उस की वजह से नशा आएगा। और उन के पास

قَصْرٌ الطَّرْفِ عَيْنٍ ﴿۴८﴾ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ﴿۴९﴾

नीची निगाहों वाली, बड़ी आँखों वाली हूरें होंगी। गोया के छुपा कर रखे हुए अन्डे हैं।

فَاقْبَلْ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿۵०﴾ قَالَ

फिर उन में से एक दूसरे से खबर हो कर सवाल करेंगे। उन में से

قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ﴿۵१﴾ يَقُولُ أَبِنَّكَ

एक केहने वाला कहेगा के मेरा एक साथी था। जो कहा करता था के क्या तू भी तस्दीक

لِإِنِّ الْبُصْدَقَيْنِ ﴿۵२﴾ إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا

करने वालों में से है? के जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएंगे

ءَا إِنَّا لَمَدِينُونَ ﴿۵३﴾ قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُّطْلَعُونَ ﴿۵४﴾

क्या तब हम से हिसाब लिया जाएगा? तो वो कहेगा के क्या तुम झांक कर देखोगे?

فَاطْلَعْ فَرَأَاهُ فِي سَوَاءٍ الْجَحِيمِ ﴿۵५﴾ قَالَ تَاللَّهِ

फिर वो झांकेगा, तो उस साथी को जहन्नम के बीच में देखेगा। कहेगा के अल्लाह की कसम!

إِنْ كَذَّبْتَ لِتَرْدِينِ ﴿۵६﴾ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ

यकीनन तू तो करीब था के मुझे भी हलाक कर देता। और अगर मेरे रब की नेअमत न होती तो मैं भी

مِّنَ الْمُحْضَرِّينَ ﴿۵७﴾ أَفَبَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ﴿۵८﴾ إِلَّا مَوْتَتَنَا

पकड़े जाने वालों में होता। क्या फिर ये सच नहीं के हम (जन्नतियों) को मरना नहीं? मगर हमारी

الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ ﴿۵۹﴾ إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَوْزُ	पेहली मौत और हमें अज़ाब नहीं होगा। यकीनन ये भारी
الْعَظِيمُ ﴿۶۰﴾ لِيُثْلَ هَذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَمِلُونَ ﴿۶۱﴾ أَذَلِكِ	कामयाबी है। उसी जैसे के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए। क्या ये
خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ﴿۶۲﴾ إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً	मेहमानी के एतेबार से बेहतर है या ज़क्कूम का दरख्त? यकीनन हम ने उसे ज़ालिमों के लिए
لِلظَّالِمِينَ ﴿۶۳﴾ إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ﴿۶۴﴾	आज़माइश का ज़रिया बनाया है। यकीनन वो एक दरख्त है, जो क़अरे जहन्नम से निकलता है।
طَلَعَهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيْطَانِ ﴿۶۵﴾ فَإِنَّهُمْ	उस के खोशे ऐसे हैं गोया वो शयातीन के सर हैं। फिर वो
لَا يَكُونُونَ مِنْهَا فَمَا يَتَّخِذُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿۶۶﴾ ثُمَّ إِنَّ لَكُمْ	उस से खाएंगे, फिर उसी से पेट भरेंगे। फिर उन को
عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ ﴿۶۷﴾ ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَآ	उस पर गर्म पानी से पीना होगा। फिर उन को ज़रूर दोज़ख की तरफ
إِلَى الْجَحِيمِ ﴿۶۸﴾ إِنَّهُمْ أَفْوَا أَبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ﴿۶۹﴾ فَهُمْ	लौटना होगा। उन्होंने ने अपने बाप दादा को गुमराह पाया। फिर वो
عَلَىٰ أَثَرِهِمْ يُهْرَعُونَ ﴿۷۰﴾ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ	उन के निशानाते क़दम पर तेज़ दौड़ रहे हैं। और यकीनन उन से पेहले वालों की अक्सरीयत
الْأَوَّلِينَ ﴿۷۱﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُّنْذِرِينَ ﴿۷۲﴾	गुमराह थी। और हम ने उन में भी डराने वाले रसूल भेजे।
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ﴿۷۳﴾ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ	फिर आप देखिए के उन लोगों का अन्जाम कैसा हुवा जिन्हें डराया गया था? मगर अल्लाह के खालिस किए
الْمُخْلِصِينَ ﴿۷۴﴾ وَلَقَدْ نَادَيْنَا نُوْحَ فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ﴿۷۵﴾	हुए बन्दे। और तहकीक के हमें नूह (अलैहिस्सलाम) ने पुकारा, फिर हम कितने अच्छे दुआ कबूल करने वाले हैं।
وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿۷۶﴾ وَجَعَلْنَا	और हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को और उन के मानने वालों को भारी मुसीबत से नजात दी। और हम ने

ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝ سَلَامٌ

उन की जुरीयत ही को बाकी रहने वाला बनाया। और हम ने उन का तज़क़िरा पीछे आने वालों में छोड़ दिया। सलामती हो

عَلَى نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ ۝ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

नूह (अलैहिस्सलाम) पर तमाम जहान वालों में। इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝ ثُمَّ أَغْرَقْنَا

वो हमारे मोमिन बन्दों में से थे। फिर हम ने दूसरों को

الْآخِرِينَ ۝ وَإِنَّ مِنْ شِيعَتِهِ لِبَرْهِيمَ ۝ إِذْ جَاءَ

وَقَالَ

ग़र्क़ किया। और उन के हममस्लकों में से अलबत्ता इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) थे। जब वो अपने रब के

رَبِّهِ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَ قَوْمِهِ

पास क़ल्बे सलीम ले कर आए। जब के उन्होंने ने अपने बाप और अपनी कौम से फरमाया के

مَاذَا تَعْبُدُونَ ۝ أَفَبِكَا إِلَهَةٍ دُونَ اللَّهِ تُشْرِكُونَ ۝

किन चीज़ों की तुम इबादत करते हो? क्या अल्लाह के सिवा झूठे माबूदों को तुम चाहते हो?

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ فَظَرَّ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ۝

फिर रब्बुल आलमीन के मुतअल्लिक़ तुम्हारा क्या गुमान है? फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने सितारों में एक निगाह की।

فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ۝ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ۝ فَرَاغَ

और फरमाया के मैं बीमार हूँ। चुनांचे वो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को छोड़ कर पुश्त फेर कर चले गए। फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

إِلَىٰ آلِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ۝ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ۝

उन के माबूदों के पास चुपके से जा पहोंचे, और फरमाया क्या तुम खाते नहीं हो? तुम्हें क्या हुवा तुम बोलते नहीं हो?

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ۝ فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزْفُونَ ۝

फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) कूवत से उन को मारने लगे। फिर वो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के सामने आए तेज़ दौड़ते हुए।

قَالَ اتَّعْبُدُونَ مَا تَنْجِتُونَ ۝ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने पूछा क्या तुम इबादत करते हो ऐसी चीज़ों की जिन को खुद तराशते हो? हालांकि अल्लाह ने तुम्हें भी

وَمَا تَعْمَلُونَ ۝ قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ۝

पैदा किया और उन को भी जो तुम बनाते हो। वो बोले तुम इस के लिए एक इमारत तामीर करो, फिर उस को आतिशकदे

فَارَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ۝ وَقَالَ إِنِّي

में डाल दो। फिर उन्होंने ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के साथ बुरे मक़्र का इरादा किया, तो हम ने उन्ही को ज़लील बना दिया। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

ذَاهِبْ إِلَىٰ رَبِّكَ سَيَهْدِيكَ ۖ رَبُّكَ هَبُّ لِي

ने फरमाया मैं अपने रब की तरफ जा रहा हूँ, अनकरीब वो मुझे रास्ता दिखाएगा। ऐ मेरे रब! तू मुझे

مِّنَ الصَّالِحِينَ ۖ فَبَشِّرْنَاهُ بِعُلْمٍ حَلِيمٍ ۖ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ

सुलहा में से औलाद अता कर। तो हम ने उन्हें बशारत दी हिल्म वाले लड़के की। फिर जब वो लड़का इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के

السَّعْيِ قَالَ يَبْنِيَّ إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ

साथ दौड़ने की उम्र को पहुँच गया, तो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरे बेटे! मैं ख्वाब देख रहा हूँ के मैं तुझे ज़बह कर

فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۖ قَالَ يَآبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ

रहा हूँ, इस लिए तू देख ले, तेरी क्या राय है? बेटे ने कहा के ऐ मेरे अब्बा! आप कर गुज़रिए जिस का आप को हुक्म दिया

سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ ۖ فَلَمَّا أَسْلَمَا

जा रहा है। अगर अल्लाह ने चाहा तो अनकरीब आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे। फिर जब दोनों ने हुक्म मान लिया और

وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ۖ وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا بُرْهِيمُ ۖ قَدْ

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने बेटे को पेशानी के बल लिटा दिया। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को आवाज़ दी के ऐ इब्राहीम! यकीनन

صَدَقْتَ الرَّءْيَا ۖ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ

आप ने ख्वाब सच कर दिखाया। इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۖ وَقَدَيْنَاهُ بِذَبْحٍ

अलबत्ता ये खुला इमतिहान था। और हम ने एक अजीम ज़बीहा उन्हें फिदये में

عَظِيمٍ ۖ وَتَرْكُنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۖ سَلَّمَ

दिया। और हम ने उन का तज़क़िरा पीछे आने वालों में छोड़ दिया। सलामती हो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۖ كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ إِنَّهُ

पर। इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं। बेशक वो

مِّنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَبَشِّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا

हमारे मोमिन बन्दों में से थे। और हम ने उन्हें बशारत दी इसहाक़ (अलैहिस्सलाम) की जो नबी होंगे,

مِّنَ الصَّالِحِينَ ۖ وَبَرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ ۖ

सुलहा में से होंगे। और हम ने उन पर और इसहाक़ (अलैहिस्सलाम) पर बरकतें नाज़िल फरमाईं।

وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ مُبِينٌ ۖ وَلَقَدْ مَنَّا

और दोनों की औलाद में से कुछ नेक हैं और कुछ अपनी जान पर खुला जुल्म करने वाले हैं। और यकीनन हम ने

عَلَىٰ مُوسَىٰ وَ هَارُونَ ۖ وَ نَجَّيْنَاهُمَا وَ قَوْمَهُمَا

मूसा (अलैहिस्सलाम) और हारून (अलैहिस्सलाम) पर एहसान किया। और हम ने उन दोनों को और उन की कौम को भारी

مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۖ وَ نَصَرْنَاهُمْ فَكَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ۖ

मुसीबत से नजात दी। और हम ने उन की नुसरत की, फिर वही ग़ालिब रहे।

وَآتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ ۖ وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ

और हम ने उन दोनों को साफ साफ बयान करने वाली किताब दी। और हम ने उन दोनों को सीधे रास्ते की

الْمُسْتَقِيمَ ۖ وَتَرْكُنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ۖ سَلَامٌ

रहनुमाई की। और हम ने उन का तज़क़िरा पीछे आने वालों में छोड़ दिया। सलामती हो

عَلَىٰ مُوسَىٰ وَ هَارُونَ ۖ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ

मूसा और हारून (अलैहिस्सलाम) पर। यकीनन हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

إِنَّهُمْ مِّنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ الْيَاسَ

वो हमारे मोमिन बन्दों में से थे। और यकीनन इलयास (अलैहिस्सलाम)

لَبِنَ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَلَا تَتَّقُونَ ۖ أَتَدْعُونَ

पैग़म्बरों में से थे। जब उन्होंने ने अपनी कौम से फरमाया क्या तुम डरते नहीं हो? क्या तुम पुकारते हो

بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ۖ اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبَّ

बअल बुत को और तुम छोड़ देते हो बनाने वालों में सब से बेहतरीन बनाने वाले अल्लाह को, अपने रब को और अपने

آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۖ فَكَذَّبُوهُ فَأَتَاهُمُ لَمُحْضَرُونَ ۖ

पेहले बाप दादाओं के रब को। फिर उन्होंने ने उन को झुठलाया, फिर वो ज़रूर पकड़े जाएंगे।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۖ وَتَرْكُنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۖ

मगर अल्लाह के खालिस किए हुए बन्दे। और हम ने उन का तज़क़िरा पीछे आने वालों में छोड़ दिया।

سَلَامٌ عَلَىٰ آلِ يَاسِينَ ۖ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ

सलामती हो इलयासीन पर। इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

إِنَّهُ مِّنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ لُوطًا

यकीनन वो हमारे मोमिन बन्दों में से थे। और यकीनन लूत (अलैहिस्सलाम) पैग़म्बरों

لَبِنَ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۖ إِلَّا عَجُوزًا

में से थे। जब के हम ने उन्हें और उन के घर वालों को, सब को नजात दी। मगर बुढ़िया

فِي الْغَابِرِينَ ۝ ثُمَّ دَمَرْنَا الْآخَرِينَ ۝ وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ جو हलाक होने वालों में हो गई। फिर हम ने दूसरों को हलाक कर दिया। और यकीनन तुम उन पर सुबह	
عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِينَ ۝ وَبِالْأَيْلِ ۝ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ और रात के वक्त गुज़रते हो। क्या फिर तुम अक्ल नहीं रखते?	۶۲۵
وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلِ الْكَاشِحِ ۝ और यकीनन यूनस (अलैहिस्सलाम) पैगम्बरों में से थे। जब वो भरी हुई कशती की तरफ भागे।	
فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ۝ فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ फिर कशती वालों ने कुरआअन्दाज़ी की, पस वो समन्दर में डाले जाने वाले हो गए। फिर उन को मछली ने लुकमा बना लिया	
وَهُوَ مُلِيمٌ ۝ فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ۝ لَلَبِثَ इस हाल में के ये अपने को मलामत कर रहे थे। फिर अगर वो तस्बीह करने वाले न होते। तो ज़रूर वो कब्रों	
فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ से मुर्दे उठाए जाने के दिन तक मछली के पेट में रहेते। फिर हम ने उन्हें फेंक दिया खुले मैदान में इस हाल	۶۲۶
سَقِيمٌ ۝ وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَقْطِينٍ ۝ में के वो बीमार थे। और हम ने उन पर एक बेलदार दरख्त उगा दिया।	
وَ أَرْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ۝ فَآمَنُوا और हम ने उन को एक लाख या ज़्यादा इत्सानों की तरफ रसूल बना कर भेजा। पस वो ईमान लाए,	
فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۝ فَاسْتَفْتِهِمَ الرِّبِّكَ الْبَنَاتِ तो हम ने उन्हें मुतमत्तेअ किया एक वक्त तक के लिए। फिर आप उन से पूछिए क्या आप के रब के लिए बेटियाँ और	
وَلَهُمُ الْبَنُونَ ۝ أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ उन के लिए बेटे? या हम ने फरिशतों को बेटियाँ बनाया इस हाल में के वो	
شَاهِدُونَ ۝ إِلَّا إِنَّهُمْ مِّنْ أَفْكَهِمْ لَيَقُولُونَ ۝ देख रहे थे? सुनो! यकीनन वो अपने पास से घड़ा हुवा झूठ बक रहे हैं।	
وَلَدَ اللَّهُ ۖ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ أَصْطَفَى الْبَنَاتِ के अल्लाह ने औलाद बनाई है। और यकीनन ये झूठे हैं। क्या अल्लाह ने बेटियाँ चुन कर खुद लीं	
عَلَى الْبَنِينَ ۝ مَا لَكُمْ ۖ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ बेटों के मुकाबले में? तुम्हें क्या हुवा, तुम कैसे फैसले करते हो? क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते?	

أَمْ لَكُمْ سُلْطَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾ فَاتُوا بِكِتَابِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٦﴾

या तुम्हारे पास रोशन दलील है? तो अपनी किताब लाओ अगर तुम सच्चे हो।

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ نِجَالًا وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ

और ये अल्लाह और जिन्नात के दरमियान नसब बयान करते हैं। हालांकि जिन्नात को पक्का यकीन है

أَنَّهُمْ لَبَحْضَرُونَ ﴿١٧﴾ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿١٨﴾

के वो हाज़िर किए जाएंगे। अल्लाह पाक है उन चीज़ों से जो ये बयान करते हैं।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْخَالِصِينَ ﴿١٩﴾ فَاتَّكُمُ وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿٢٠﴾ مَا أَنْتُمْ

मगर अल्लाह के खालिस किए हुए बन्दे। फिर तुम और वो जिन की तुम इबादत करते हो, अल्लाह के खिलाफ

عَلَيْهِ بِفِتْنَيْنِ ﴿٢١﴾ إِلَّا مَنْ هُوَ صَالٍ الْجَحِيمِ ﴿٢٢﴾ وَمَا مَنَّا

गुमराह नहीं कर सकते, मगर उसी को जो जहन्नमरसीद होने वाला है। (मुशरिकीन के बरअक्स फरिशते तो केहते हैं)

إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ﴿٢٣﴾ وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّاقُونَ ﴿٢٤﴾

और हम में से हर एक का मक़ाम मुतअय्यन है। और हम तो सफ बनाते हैं।

وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ﴿٢٥﴾ وَإِنْ كَانُوا لَيَقُولُونَ ﴿٢٦﴾ لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا

और हम तो तस्बीह करने वाले हैं। हालांकि ये मुशरिक केहते थे के अगर हमारे पास

ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٧﴾ لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْخَالِصِينَ ﴿٢٨﴾

पेहले लोगों की नसीहत होती, तो ज़रूर हम अल्लाह के खालिस किए हुए बन्दे हो जाते।

فَكَفَرُوا بِهِ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا

फिर उन्होंने ने उसी के साथ कुफ़ किया, फिर जल्द ही उन्हें पता चल जाएगा। और यकीनन हमारे भेजे हुए

لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٠﴾ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ ﴿٣١﴾

पैगम्बरों के मुतअल्लिक हमारा पेहले से हुक्म हो चुका है, के उन की ज़रूर नुसरत की जाएगी।

وَإِنْ جُنَدْنَا لَهُمُ الْغَلَبُونَ ﴿٣٢﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٣٣﴾

और हमारा लशकर ही ग़ालिब रहेगा। इस लिए आप उन से एक वक्त तक मुंह फेर लीजिए।

وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصَرُونَ ﴿٣٤﴾ أَفَبِعَدَابِنَا يُسْتَعْجِلُونَ ﴿٣٥﴾

और आप उन को देखते रहिए, फिर वो भी देख लेंगे। क्या हमारा अज़ाब ये जल्दी तलब कर रहे हैं?

فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٣٦﴾ وَتَوَلَّىٰ

फिर जब अज़ाब उन के आंगन में उतरेगा, तो उन लोगों की सुबह बुरी होगी जिन्हें डराया गया था। और आप

عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۚ وَأَبْصُرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿۱۷۹﴾

उन से एक वक़्त तक ऐराज़ कीजिए। और आप देखते रहिए, फिर वो भी देख लेंगे।

سُبْحَنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلَامٌ

आप का रब पाक है, इज्जत वाला रब है, पाक है उन बातों से जो ये बयान कर रहे हैं। और सलामती हो

عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿۱۸۲﴾

पैगम्बरों पर। और तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं।

۱۸۱

۸۸ آیاتہا ﴿۳۸﴾ سُوْرَةُ صٰحٰۃٓ مَكِّيَّةٌ ﴿۳۸﴾ رُوْعًا ۵

और ۵ स्कूअ हैं सूरह सौद मक्का में नाज़िल हुई उस में ۷۷ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ص وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ ۚ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا

सौद, नसीहत वाले कुरआन की कसम! बल्के वो लोग जो काफिर हैं

فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ﴿۱﴾ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ

वो ज़बर्दस्ती और मुखालफत में हैं। उन से पेहले बहोत सी कौमों को हम ने हलाक किया,

فَنَادَوْا وَلَا تَحِينَ مَنَاصٍ ۚ وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ

फिर उन्होंने ने पुकारा, और वो छुटकारे का वक़्त नहीं था। और उन को तअज्जुब हुवा इस बात से के उन के पास

مُنْذِرٌ مِنْهُمْ ۚ وَقَالَ الْكَافِرُونَ هَذَا سَجَرٌ كَذَابٌ ﴿۲﴾

उन्ही में से एक डराने वाला आया। और काफिरों ने कहा के ये झूठा जादूगर है।

أَجَعَلَ الْإِلَهَةَ الْإِلَٰهًا وَاحِدًا ۚ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ﴿۳﴾

क्या उस ने तमाम माबूदों का एक माबूद बना दिया? यकीनन ये बड़ी अजीब बात है।

وَانْطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنْ امْشُوا وَاصْبِرُوا عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ ۖ

और उन के सरदार ये केहते हुए चले गए के तुम भी चलो और अपने माबूदों ही के साथ चिपके रहो।

إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ يُرَادُّ ۚ مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي الْإِلَٰهَةِ

ये तो कोई गर्ज वाली बात है। इस को हम ने पिछले दीन में

الْآخِرَةِ ۚ إِنَّ هَذَا إِلَّا اخْتِلَافٌ ۚ ءَأَنْزَلَ عَلَيْهِ الذِّكْرَ

नहीं सुना। यकीनन ये तो सिर्फ घड़ी हुई बात है। हमारे दरमियान में से क्या इसी पर ये कुरआन

مِنْ بَيْنِنَا ۖ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِي ۚ

हैं। में शक से तरफ की ज़िक्र मेरे वो बल्के गया? उतारा

بَلْ لَّهَا يَذُوقُوا عَذَابًا ۖ أَمْ عَنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ

हैं? खज़ाने के रहमत की रब तेरे पास उन के मेरा अज़ाब चखा नहीं। बल्के अब तक उन्होंने ने

الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۖ أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

की दरमियान उन के ज़मीन और आसमानों और ज़मीन और उन के लिए देने वाला है। जो ज़बर्दस्त है, बहुत

وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ ۚ جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ

हैं उन गिरोहों है एक फौज ये जाएं ऊपर ज़रिए के रस्सियों के चाहिए उन्हें तो है, सल्लतनत

مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ۖ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ

आद कौमे और नूह कौमे पहले से उन हैं। चुके खा शिकस्त यहाँ जो से में

وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ۖ وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ

लूत और पैका वालों और समूद और कौमे और और फ़िरऔन ने मेखों और

لَيْكَةٍ ۖ أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ ۖ إِنَّ كُلًّا إِلَّا كَذَّبَ

को रसूलों ने सब ही हैं। गिरोह यही की। तकज़ीब भी ने

الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابٌ ۖ وَمَا يَنْظُرُ هَؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً

۱۶

लम्बी मगर हैं नहीं मुन्तज़िर और ये हुवा। नाज़िल मेरा फिर झुठलाया,

وَاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ۖ وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا

लिए हमारे तू हमारे रब! के ए कहा के उन्होंने और है। नहीं वक्फ़ा दरमियानी लिए के, आवाज़ के,

قَطْنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ۖ إصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ

हमारे और हैं रहे के ये जो पर बातों उन कीजिए सब आप ले ले। जल्दी हिसाब हमारा पहले से दिन हिसाब के

وَإِذْ كُرَّ عِبْدَنَا دَاوُدَ ذَا الْأَيْدِ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۖ إِنَّا سَخَّرْنَا

उन ने हम ने थे। थे होने ख़जूअ तरफ अल्लाह की थे। वाले कूवत जो कीजिए तज़क़िरा (अलैहिस्सलाम) दावूद बन्दे उन

الْجِبَالِ مَعَهُ يُسَبِّحُنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ۖ وَالطَّيْرِ

भी परिन्दे और वक्ता के सुबह और शाम थे करते तस्बीह जो था किया मुख़र मुस पहाड़ों के साथ

مَحْشُورَةً ۖ كُلٌّ لَّهِ أَوَّابٌ ۖ وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَأَتَيْنَهُ

ने हम और था किया मज़बूत को सल्लतनत की उन ने हम और थे। होते ख़जूअ के आगे अल्लाह के सब मिल कर हो कर। इकट्ठे

الْحِكْمَةَ وَفَصَلَ الْخِطَابِ ۝ وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَضِصِ

उन्हें हिक्मत और फ़स्ले खिताब दिया था। और क्या आप के पास मुद्दईयों की खबर पहुँची,

إِذْ تَسَوَّرُوا الْحِرَابَ ۝ إِذْ دَخَلُوا عَلَى دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا

जब वो दीवार फलांग कर मेहराब में आए। दावूद (अलैहिस्सलाम) पर जब वो दाखिल हुए तो वो उन से घबराए, उन्होंने

لَا تَخَفْ ۚ خَضَمِينَ بَغَىٰ بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُم بَيْنَنَا

ने कहा के आप न डरिए। हम दो मुद्दई हैं, हम में से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है, इस लिए आप हमारे

بِالْحَقِّ وَلَا تَشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ۝

दरमियान हक के मुताबिक़ फैसला कीजिए और ज़्यादती न कीजिए और हमारी सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई कीजिए।

إِنِّ هَذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَجْعَةً وَلِي نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ ۖ

ये मेरा भाई है। उस की निनाने भेड़े थीं और मेरी एक भेड़ थी।

فَقَالَ أَكْفَلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ۝ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ

तो ये केहता है के वो एक भी तू मुझे दे दे और बात में मुझ पर ज़बर्दस्ती करता है। दावूद (अलैहिस्सलाम) ने

بِسُؤَالٍ نَجَّيْتَكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْخُلَطَاءِ

फ़रमाया उस ने तेरी भेड़ अपनी भेड़ों में मिलाने के लिए मांग कर तुझ पर जुल्म किया। और अक्सर शरीक

لِيَبْغِيَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا

एक दूसरे पर ज़्यादती ही करते हैं, मगर जो ईमान लाए और नेक काम

الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَّا هُمْ ۖ وَظَنَّ دَاوُدُ أَنَّمَا فَتَتْهُ

करते रहे और ऐसे लोग थोड़े हैं। और दावूद (अलैहिस्सलाम) ने गुमान किया के हम ने उन का इमतिहान लिया

فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ۝ فَغَفَرْنَا لَهُ ذَلِكَ ۖ

तो उन्होंने ने अपने रब से इस्तिग़फ़ार किया और सज्दे में गिर पड़े और तौबा की। तो हम ने उन की ये खता मुआफ़ कर दी।

وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَّآبٍ ۝ يٰدَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ

और उन का हमारे नज़दीक बड़ा मरतबा है और अच्छा ठिकाना है। ऐ दावूद! हम ने आप को जानशीन

خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ

बनाया ज़मीन में, इस लिए आप इन्सानों के दरमियान इन्साफ़ के साथ फैसला कीजिए और ख्वाहिश के पीछे

الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَظْلُمُونَ

न चलिए, वरना ये ख्वाहिश आप को अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर देगी। यकीनन जो अल्लाह के रास्ते से

۶۱۲

عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا يَوْمَ	भटकते हैं, उन के लिए सख्त अज़ाब है इस वजह से के उन्होंने ने हिसाब के दिन को
الْحِسَابِ ۖ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا	भुला दिया। और हम ने आसमान और ज़मीन और उन के दरमियान की चीज़ें बेकार नहीं
بِاطِلًا ۚ ذَلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا	बनाई। ये तो काफिरों का गुमान है। फिर काफिरों के लिए दोज़ख से
مِنَ النَّارِ ۚ أَمْ يَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ	हलाकत है। क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे
كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ أَمْ يَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ۚ	ज़मीन में फसाद फैलाने वालों के मानिन्द कर देंगे? या हम मुत्तकियों को फाजिरों की तरह कर देंगे?
كُتِبَ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِّيَذَّبَ رُوحًا أَيْتَهُ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُوا	ये मुबारक किताब है जो हम ने आप की तरफ उतारी है ताके ये उस की आयतों में गौर करें और ताके अक्ल वाले
الْأَلْبَابِ ۚ وَوَهَبْنَا لِذَاوُدَ سُلَيْمَانَ ۖ نَعْمَ الْعَبْدُ ۚ إِنَّهُ	नसीहत पकड़ें। और हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम) को सुलैमान (अलैहिस्सलाम) अता किए। कितने अच्छे बन्दे थे! यकीनन वो अल्लाह की
أَوَّابٌ ۚ إِذْ عَرَضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصُّفْتُ الْحِيَادِ ۚ	तरफ ख़जूअ करने वाले थे। जब उन के सामने शाम के वक़्त तीन पैरों पर खड़े रहने वाले उम्दा घोड़े पेश किए गए।
فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي ۖ	तो सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने कहा के मैं ने रब की याद छोड़ कर माल से महबबत कर ली
حَتَّى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۚ رَدُّوهُمَا عَلَيَّ ۖ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ	यहाँ तक के सूरज पर्दे में छुप गया। वो घोड़े मेरे सामने पेश करो। फिर वो उन की पिंडलियों और गर्दनो पर तलवार
وَالْأَعْنَاقِ ۚ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ ۖ وَالْقَيْنَا عَلَى كُرْسِيِّهِ	चलाने लगे। तहक़ीक के हम ने सुलैमान (अलैहिस्सलाम) का इम्तिहान लिया और हम ने उन की कुर्सी पर एक धड़ को डाल दिया, फिर
جَسَدًا ثُمَّ أَنَابَ ۚ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا	वो अल्लाह की तरफ मुतवज्जेह हुए। केहने लगे ऐ मेरे रब! तू मेरी मग़फ़िरत कर दे और मुझे ऐसी सल्तनत अता फरमा
لَّا يَنْبَغِي لِإِحْدٍ مِّنْ بَعْدِي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۚ فَسَخَرْنَا	जो मेरे बाद किसी के लिए सज़ावार न हो। यकीनन तू बहोत ज़्यादा अता करने वाला है। फिर हम ने

لَهُ الرِّجْ تَجْرِي بِأَمْرِ رُخَاءٍ حَيْثُ أَصَابَ ۝ وَالشَّيْطَانُ

उन के लिए हवा को ताबेअ किया जो चलती थी सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के हुक्म से नर्मी से जहाँ वो चाहते। और हर तामीर करने

كُلِّ بَنَاءٍ وَغَوَاصٍ ۝ وَآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝

वाले और गोता लगाने वाले शयातीन को ताबेअ किया। और दूसरे ज़न्जीरों में जकड़े हुए होते थे।

هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

ये हमारी अता है, फिर आप एहसान कीजिए या रोके रखिए, कुछ हिसाब न होगा।

وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَّآبٍ ۝ وَادْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ ۝

और उन का हमारे हाँ बड़ा मरतबा और अच्छा ठिकाना है। और याद कीजिए हमारे बन्दे अय्यूब (अलैहिस्सलाम) को।

إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ ۝

जब के उन्होंने ने अपने रब को पुकारा के मुझे शैतान ने तकलीफ और अज़ीयत पहुँचाई है।

أَرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هَذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ۝

(अल्लाह ने फरमाया) आप अपना पैर ज़मीन से रगड़िए। ये ठंडा पीने और नहाने का पानी है।

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرَىٰ

और हम ने उन को उन के घर वाले और उन के जैसे उन के साथ और भी अता किए अपनी रहमत से और अक्ल वालों के

لِأُولَى الْأَلْبَابِ ۝ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْتًا فَاضْرِبْ بِهِ

लिए नसीहत के तौर पर। और (हम ने कहा) आप अपने हाथ में (तिन्कों का) एक गठुर लीजिए, फिर उसे मारिए

وَلَا تَحْنُطْ ۚ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ ۚ إِنَّهُ

और क़सम न तोड़िए। हम ने उन को साबिर पाया। कितने अच्छे बन्दे थे! वो अल्लाह की तरफ

أَوَّابٌ ۝ وَادْكُرْ عَبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ أُولَى

रुजूअ होने वाले थे। और आप हमारे बन्दे इब्राहीम और इस्हाक और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) का तज़क़िरा कीजिए जो

الْيَدَيَّ وَالْأَبْصَارِ ۝ إِنَّا أَخْلَصْنَاهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَىٰ

हाथों और आँखों वाले थे। यकीनन हम ने उन्हें दारे आखिरत की याद के लिए खालिस

الدَّارِ ۝ وَإِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنِ الْأَخْيَارِ ۝

किया था। और वो हमारे नज़दीक अलबत्ता अच्छे मुन्तखब किए हुए बन्दों में से थे।

وَادْكُرْ إِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۚ وَكُلٌّ مِنَ الْأَخْيَارِ ۝

और आप तज़क़िरा कीजिए इस्माईल और अलयसअ और जुलकिफ़ल (अलैहिमुस्सलाम) का। और सब के सब अच्छे लोगों में से थे।

وَمَا لِي ۲३

هَذَا ذِكْرٌ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَآبٍ ۖ جَدَّتْ

ये नसीहत है। और मुत्तकियों के लिए अच्छा अन्जाम ज़रूर है। जन्नाते अद्न

عَدْنٍ مُّفْتَحَةٍ لَّهُمُ الْآبَوَابُ ۖ مُتَكِّينَ فِيهَا يَدْعُونَ

हैं, जिन के दरवाजे उन के लिए खुले होंगे। उन में वो टेक लगाए हुए होंगे,

فِيهَا بِفَاكِهِةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ۖ وَ عِنْدَهُمْ قَصْرٌ

उन में वो मांगेंगे बहोत से मेवे और शराब। और उन के पास नीची निगाहों वाली

الْظَّرْفِ أَتْرَابٍ ۖ هَذَا مَا تُوْعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ

हमउम्र हूरें होंगी। (कहा जाएगा) ये वो नेअमते हैं जिन का हिसाब के दिन के लिए तुम से वादा किया जाता था।

إِنَّ هَذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِنْ تَفَادٍ ۖ هَذَا ۖ وَإِنَّ لِلطَّغِينَ

ये हमारी ऐसी रोज़ी है जिस के लिए खत्म होना नहीं। ये तो होगा। और सरकशों का अलबत्ता

لَشَرِّ مَآبٍ ۖ جَهَنَّمُ ۖ يَصْلَوْنَهَا ۖ فَيَنْسُ الْإِهَادُ ۖ هَذَا ۖ

बुरा ठिकाना है। जहन्नम है। जिस में वो दाखिल होंगे। फिर वो बुरी आरामगाह है। ये अज़ाब है,

فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ۖ وَآخِرُ مِنْ شَكْلَةٍ ۖ أَزْوَاجٌ ۖ

फिर उन्हें चाहिए के उस को चखें गर्म पानी और पीपा। और उसी शक्ल के दूसरे अज़ाब भी होंगे।

هَذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۖ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۖ إِنَّهُمْ صَالُوا

(दोज़खी कहेंगे) ये एक और जमाअत तुम्हारे साथ घुस रही है। उन के लिए मरहबा न हो। वो आग में दाखिल

النَّارِ ۖ قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۖ أَنْتُمْ قَدْ مَتَّوْهُ

होने वाले हैं। वो बोलेंगे बल्के तुम्हारे लिए मरहबा न हो। तुम ही ने उस को हमारे लिए पेहले से तय्यार किया,

لَنَا ۖ فَيَنْسُ الْقَرَارُ ۖ قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هَذَا

फिर ये बुरी ठेहरने की जगह है। वो कहेंगे ऐ हमारे रब! जिस ने भी इस को हमारे लिए पेहले से तय्यार किया हो,

فَرِذَّةٌ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ۖ وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ

तो तू उसे दोज़ख में दुगना अज़ाब दे। और वो कहेंगे के क्या हुवा के हम नहीं

رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِنَ الْأَشْرَارِ ۖ أَتَّخَذْنَاهُمْ سَخَرِيًّا

देखते उन मदों को जिन को हम बुरा समझते थे? क्या उन को हम ने मज़ाक बनाया था

أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمْ الْبَصَارُ ۖ إِنَّ ذَلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ

या उन से हमारी निगाहें चूक गई हैं? बेशक ये हक है, दोज़खियों का

أَهْلِ النَّارِ ۖ قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ ۚ وَمَا مِنِّ إِلَهِ

आपस में झगड़ना। आप फरमा दीजिए के मैं तो सिर्फ डराने वाला हूँ। और कोई माबूद नहीं

إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۚ رَبُّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ

मगर अल्लाह जो यकता है, ग़ालिब है। आसमानों और ज़मीन और उन के दरमियान की चीज़ों का रब है,

وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۚ قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ۖ أَنْتُمْ عَنْهُ

जबर्दस्त है, बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला है। आप फरमा दीजिए के ये अज़ीम खबर है। जिस से तुम

مُعْرَضُونَ ۖ مَا كَانَ لِي مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَأِ الْأَعْلَى

ऐराज़ कर रहे हो। मुझे मलअे आला का इल्म नहीं था

إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۖ إِنَّ يَوْمَئِذٍ إِلَىٰ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ

जब वो झगड़ रहे थे। मेरी तरफ तो सिर्फ वही किया जा रहा है के मैं साफ साफ डराने

مُبِينٌ ۖ إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا

वाला हूँ। जब आप के रब ने फरिशतों से फरमाया के यकीनन मैं मिट्टी से इन्सान को पैदा करने

مِّنْ طِينٍ ۖ فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُّوحِي فَقَعُوا

वाला हूँ। फिर जब मैं उस को पूरा बना लूँ और मैं उस में अपनी रूह फूंक दूँ

لَهُ سَجْدِينَ ۖ فَسَجَدَ الْمَلَكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۖ

तो तुम उस के सामने सज्दे में गिर जाना। फिर सब ही फरिशतों ने इकट्ठे सज्दा किया।

إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۖ قَالَ يَا بَلِيسُ

मगर इबलीस ने। जिस ने तकबुर किया और वो काफिरों में से हो गया। अल्लाह ने फरमाया के ऐ इबलीस!

مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِإِيْدِي ۖ اسْتَكَبَرْتَ

तुझे किस चीज़ ने रोका इस से के तू सज्दा करे उस को जिस को मैं ने अपने हाथों से बनाया? क्या तू ने बड़ा बनना चाहा

أَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِينَ ۖ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۖ خَلَقْتَنِي

या तू बुलन्द मर्तबा वालों में से है? इबलीस ने कहा के मैं इस से बेहतर हूँ। तू ने मुझे पैदा किया है

مِّنْ نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ۖ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ

आग से और तू ने इस को मिट्टी से पैदा किया है। अल्लाह ने फरमाया के तू जन्नत से निकल, यकीनन तू

رَجِيمٌ ۖ وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ۖ

मरदूद है। और तुझ पर हिसाब के दिन तक मेरी लानत है।

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿۷۸﴾ قَالَ فَإِنَّكَ

इबलीस ने कहा मेरे रब! फिर तू मुझे मुहलत दे उस दिन तक जिस दिन कब्रों से मुर्दे ज़िन्दा किए जाएंगे। अल्लाह ने

مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿۷۹﴾ إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿۸۰﴾ قَالَ

फरमाया के यकीनन तू उन में से है जिन्हें मुहलत दी गई। मुकर्ररा वक्त के दिन तक। इबलीस ने कहा

فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿۸۱﴾ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ

के फिर तेरी इज्जत की कसम! मैं ज़रूर उन तमाम को गुमराह करूंगा। मगर तेरे बन्दे उन में से जो खालिस

الْمُخْلِصِينَ ﴿۸۲﴾ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ﴿۸۳﴾ لَأَمْلَأَنَّ

किए हुए हैं। अल्लाह ने फरमाया के ये हक़ है। और हक़ ही मैं केहता हूँ। के मैं जहन्नम

جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿۸۴﴾ قُلْ

ज़रूर भरूंगा तुझ से और उन तमाम से जो उन में से तेरे पीछे चलेंगे। आप फरमा दीजिए

مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ﴿۸۵﴾

मैं तुम से इस पर कोई उजरत नहीं मांगता और मैं तकल्लुफ़ करने वालों में से नहीं हूँ।

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿۸۶﴾ وَلِتَعْلَمَنَّ نَبَأَ بَعْدَ حِينٍ ﴿۸۷﴾

ये तो सिर्फ़ तमाम जहानों के लिए नसीहत है। और एक वक्त के बाद तुम्हें उस की खबर ज़रूर मालूम होगी।

أَيَّاهَا ۴۵ (۳۹) سُورَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ (۵۹) رُكُوعَاتُهَا ۸

उस में ७५ आयतें हैं सूरह जुमर मक्का में नाज़िल हुई और ८ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿۱﴾ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ

इस किताब का उतारा जाना ज़बर्दस्त, हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ से है। यकीनन हम ने आप की तरफ

إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ﴿۲﴾

ये किताब हक़ के साथ उतारी है, पस आप अल्लाह की इबादत कीजिए उसी के लिए इबादत को खालिस करते हुए।

أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ۖ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا

सुनो! अल्लाह के लिए खालिस इबादत है। और वो जिन्होंने ने अल्लाह के सिवा हिमायती

مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ

बना लिए हैं, (केहते हैं) हम उन की इबादत नहीं करते मगर इस लिए ताके वो हमें अल्लाह के कुछ करीब कर दें।

إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۚ

यकीनन अल्लाह उन के दरमियान फैसला करेगा जिस में वो इखतिलाफ कर रहे हैं।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَذِبٌ كَفَّارٌ ۚ لَوْ أَرَادَ

यकीनन अल्लाह उस को हिदायत नहीं देता जो झूठा है, बहोत ज़्यादा नाशुकरी करने वाला है। अगर अल्लाह

اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَأَصْطَفِي مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ

औलाद बनाना चाहता तो ज़रूर अपनी मखलूक में से मुन्तखब करता जिसे चाहता।

سُبْحَنَهُ ۚ هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۚ خَلَقَ السَّمَوَاتِ

अल्लाह औलाद से पाक है। यकीनन वो यकता है, ग़ालिब है। उस ने आसमान और ज़मीन

وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ

हिक्मत से पैदा किए। वो रात को दिन पर लपेटता है और दिन

النَّهَارَ عَلَى اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۚ كُلٌّ

को रात पर लपेटता है और उस ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है। सब के सब

يَجْرِي لِإِجَالٍ مُّسَمًّى ۚ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۚ خَلَقَكُمْ

वक़्ते मुक़र्ररा तक के लिए चलते रहेंगे। सुनो! वो ज़बर्दस्त है, बहोत ज़्यादा बख्शने वाला है। उस ने

مِّنْ نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَانزَلَ

तुम्हें एक जान से पैदा किया, फिर उसी जान से उस की बीवी को बनाया, और उस ने

لَكُمْ مِّنَ الْأَنْعَامِ ثَمَنِيَةَ أَزْوَاجٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ

तुम्हारे लिए चौपाओं में से आठ जोड़े बनाए। वो तुम्हें पैदा करता है तुम्हारी माओं के

أُمَهْتِكُمْ خَلْقًا مِّنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَاتٍ ثَلَاثٍ ۚ

पेट में एक शक्ल के बाद दूसरी शक्ल में, तीन तारीकियों में।

ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ

यही अल्लाह तुम्हारा रब है, उसी के लिए सल्तनत है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं।

فَإِنِّي تُصْرِفُونَ ۚ إِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۖ

फिर तुम कहाँ फेरे जा रहे हो? अगर तुम कुफ़ करोगे तो यकीनन अल्लाह तुम से बेनियाज़ है। और अल्लाह अपने

وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ ۚ

बन्दों के लिए कुफ़ पसन्द नहीं करता। और अगर तुम शुक्र अदा करो तो उस को तुम्हारे लिए वो पसन्द करता है।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى ۖ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم

और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर अपने रब की तरफ

مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ

तुम्हें लौटना है, फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों की जो तुम करते थे। बेशक वो

عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ

दिलों का हाल खूब जानने वाला है। और जब इन्सान को ज़रूर पहोंचता है

دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا حَوَالَهُ نِعْمَةٌ مِّنْهُ

तो वो अपने रब को पुकारता है उसी की तरफ तौबा करते हुए, फिर जब अल्लाह उसे अपनी नेअमत अता करता है

نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوًا إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ

तो जिस काम के लिए पेहले उस को पुकारता था उसे भूल जाता है, और अल्लाह के लिए शरीक ठेहराने

أَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَتَّبِعْ بِكُفْرِكَ

लगता है ताके वो अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे। आप फरमा दीजिए के तू मज़ा उड़ा ले अपने कुफ्र के साथ

قَلِيلًا ۚ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۝ أَمَّنْ هُوَ قَانِثٌ

थोड़ा सा। यकीनन तू दोज़खियों में से है। भला वो शख्स जो इबादत करने वाला है

أَنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُوا

रात के औक़ात में सज्दे में और क़याम में, आखिरत से डरता है और अपने रब की रहमत का

رَحْمَةً رَبِّهِمْ ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ

उम्मीदवार है? (ये शुक्रगुज़ार अच्छा या नाशुकरा?) आप फरमा दीजिए क्या वो लोग जो इल्म रखते हैं और जो इल्म

وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۝

नहीं रखते दोनों बराबर हो सकते हैं? सिर्फ अक्ल वाले ही नसीहत हासिल करते हैं।

قُلْ يُعْبَادُ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمُ لِلَّذِينَ

आप फरमा दीजिए ऐ मेरे वो बन्दो जो ईमान लाए हो! तुम अपने रब से डरो। इस दुन्या

أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَأَرْضُ اللَّهِ

में जिन्हों ने नेकी की उन के लिए अच्छा बदला है। और अल्लाह की ज़मीन

وَاسِعَةٌ ۚ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

वसीअ है। सब्र करने वालों को उन का सवाब गिने बग़ैर पूरा पूरा (अस्ल और कई गुना ज़ाइद) दिया जाएगा।

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ

आप फरमा दीजिए के मुझे हुक्म है के मैं अल्लाह की इबादत करूँ उसी के लिए इबादत को खालिस

الدِّينَ ۝ وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ۝

करते हुए। और मुझे हुक्म है के मानने वालों में से सब से पहला मानने वाला बनूँ।

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ

आप फरमा दीजिए अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूँ, तो मैं डरता हूँ भारी दिन के

عَظِيمٍ ۝ قُلْ اللَّهُ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَهُ دِينِي ۝

अज़ाब से। आप फरमा दीजिए के मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ उसी के लिए इबादत को खालिस रखते हुए।

فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ ۖ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ

अब तुम अल्लाह को छोड़ कर जिस की चाहो इबादत करो। आप फरमा दीजिए यकीनन खसारा उठाने वाले वो हैं

الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ

जिन्होंने ने अपनी जानों और अपने घर वालों को खसारे में डाला क़यामत के दिन।

إِلَّا ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۝ لَهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ

सुनो! यही खुला खसारा है। उन के लिए उन के ऊपर से

ظُلُلٌ مِنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلُلٌ ۖ ذَلِكَ يُخَوِّفُ

आग के सायबान होंगे, और उन के नीचे से भी आग के सायबान होंगे। इस से अल्लाह

اللَّهُ بِهِ عِبَادَةُ ۖ يُعْبَادُ فَاتَّقُونَ ۝ وَالَّذِينَ

अपने बन्दों को डराते हैं। ऐ मेरे बन्दो! तुम मुझ से डरो। और वो लोग जो

اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَنْ يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا

शैतान से (यानी) उस की परसतिश से दूर रहेते हैं और अल्लाह की तरफ मुतवज्जेह

إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَى ۖ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۝ الَّذِينَ

रेहते हैं उन के लिए बशारत है। तो आप बशारत सुना दीजिए, मेरे उन बन्दों को

يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۖ أُولَٰئِكَ

जो इस कलाम को सुनते हैं, फिर सब से अच्छे कलाम की पैरवी करते हैं। उन को

الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۝

अल्लाह ने हिदायत दी है और यही अक्ल वाले हैं।

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۖ أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ

क्या फिर वो शख्स जिस पर अज़ाब का कलिमा साबित हो गया, क्या फिर आप बचा सकते हैं

مَنْ فِي النَّارِ ۚ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ

उसे जो आग में है? लेकिन वो जो अपने रब से डरते हैं, उन के लिए ऊपर वाली मन्ज़िलें होंगी

مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

जिन के ऊपर भी मन्ज़िलें बनी हुई हैं। उन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी।

وَعَدَ اللَّهُ ۖ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ الْبِعَادَ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ

अल्लाह का वादा है। अल्लाह वादे के खिलाफ नहीं करेंगे। क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह ने

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَسَلَكَهُ يَنَابِيعٌ فِي الْأَرْضِ

आसमान से पानी उतारा, फिर उसे ज़मीन में चशमों में चलाया,

ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مَّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ

फिर वो उस के ज़रिए खेती निकालता है जिस के रंग मुखतलिफ होते हैं, फिर वो बिल्कुल खुश्क हो जाती है, फिर तुम उसे

مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرًا

पीला देखते हो, फिर अल्लाह उसे कूड़ा करकट बना देते हैं। यकीनन उस में नसीहत है

عَلَىٰ

أُولَى الْأَلْبَابِ ۚ أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ

अक़ल वालों के लिए। क्या फिर जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया,

فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّنْ رَبِّهِ ۖ فَوَيْلٌ لِلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ

फिर वो अपने रब की तरफ से नूर पर है। फिर हलाकत है उन के लिए जिन के

مِّنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۖ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۚ اللَّهُ نَزَّلَ

दिल अल्लाह की याद से सख्त हैं। ये लोग खुली गुमराही में हैं। अल्लाह ने बातों में से सब से अच्छी बात

أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۚ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ

(यानी) किताब को उतारा है, जिस के मज़ामीन एक दूसरे के मुशाबेह हैं जो बार बार दोहराए गए हैं। जिस से अपने

جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ

रब से डरने वालों के रौंगटे खड़े हो जाते हैं। फिर उन की खालें और उन

وَ قُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ۖ ذَلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ

के दिल अल्लाह की याद के लिए नर्म हो जाते हैं। ये अल्लाह की हिदायत है, उस से अल्लाह हिदायत देता है

مَنْ يَشَاءُ ۖ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝

जिसे चाहता है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं।

أَفَمَنْ يَتَّقِ بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ

क्या फिर वो शख्स जो क़यामत के दिन अपने चेहरे के ज़रिए बदतरीन अज़ाब से बचेगा। (क्या गुमराह व मुत्तकी बराबर?)

وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ كَذَّبَ

और ज़ालिमों से कहा जाएगा के तुम चखो उन आमाल को जो तुम करते थे। उन लोगों

الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَآتَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ

ने झुठलाया जो उन से पेहले थे, फिर उन के पास अज़ाब आया जहाँ से

لَا يَشْعُرُونَ ۝ فَاذْقَاهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ

उन को गुमान भी नहीं था। फिर अल्लाह ने उन्हें रुस्वाई का अज़ाब दुन्यवी ज़िन्दगी में चखा दिया।

وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ

और अलबत्ता आखिरत का अज़ाब तो सब से बड़ा है। काश के उन्हें इल्म होता। यकीनन

ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ

हम ने इन्सानों के लिए इस कुरआन में हर मिसाल बयान की,

لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ

शायद वो नसीहत हासिल करें। उस को अरबी वाला कुरआन (बना कर उतारा), जो

ذِي عَوَجٍ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلًا

कजी वाला नहीं है ताके वो डरें। अल्लाह ने मिसाल बयान की के एक आदमी है

فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَكِّسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِرَجُلٍ ۖ

जिस में कई आपस में झगड़ने वाले शरीक हैं और एक शख्स है जो सालिम एक ही शख्स का है।

هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا ۖ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ

क्या दोनों मिसाल के एतेबार से बराबर हो सकते हैं? तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं। बल्के उन में से अक्सर

لَا يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ ۝

जानते नहीं। यकीनन आप को भी मरना है और उन्हें भी मरना है।

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ۝

फिर क़यामत के दिन अपने रब के सामने तुम झगड़ोगे।

وَقُلُوبُهُمْ

۳
۱۲

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ

फिर उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े और सच्चाई को झुठलाए

إِذْ جَاءَهُ ۖ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ﴿۳۷﴾ وَالَّذِي

जब वो उस के पास पहुँची? क्या जहन्नम में काफिरों के लिए ठिकाना नहीं है? और जो

جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿۳۸﴾

सच को ले कर आया और उस की तस्दीक की तो वही लोग मुत्तकी हैं।

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿۳۹﴾

उन के लिए वो नेअमतेँ होंगी जो वो चाहेंगे उन के रब के पास। ये नेकी करने वालों का बदला है।

لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ

ताके अल्लाह उन से उन के बुरे आमाल दूर कर दे और उन को अच्छे

بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿۴۰﴾ أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ

आमाल का सवाब दे। क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफी नहीं हैं? और ये आप को डराते

وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ وَمَنْ يُضِلِّ اللَّهُ فَمَا لَهُ

हैं उन माबूदों से जो अल्लाह के अलावा हैं। और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस के लिए कोई हिदायत

مِنْ هَادٍ ۚ وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُّضِلٍّ ۚ أَلَيْسَ

देने वाला नहीं। और जिस को अल्लाह हिदायत दे उस के लिए कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या

اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ﴿۴۱﴾ وَلَٰئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ

अल्लाह ब़ेज़िज़, इन्तिकाम लेने वाला नहीं है? और अगर आप उन से पूछेंगे के किस ने आसमानों और ज़मीन

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ

को पैदा किया, तो ज़रूर कहेंगे के अल्लाह ने। आप फरमा दीजिए क्या फिर तुम ने देखा उन को जिन को तुम पुकारते हो

مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ إِنَّ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ

अल्लाह के अलावा अगर अल्लाह मुझे ज़रर पहुँचाने का इरादा करे तो क्या वो अल्लाह के ज़रर को दूर

ضُرِّيَّ أَوْ أَرَادَنِيَ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَتُ رَحْمَتِهِ ۚ

कर सकते हैं या अल्लाह मुझ पर महरबानी का इरादा करे तो क्या वो अल्लाह की रहमत को रोक सकते हैं?

قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۚ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿۴۲﴾ قُلْ يٰٓأَيُّهَا

आप फरमा दीजिए के अल्लाह मुझे काफी है। और उसी पर तवक्कुल करने वाले तवक्कुल करते हैं। आप फरमा दीजिए ऐ मेरी क़ैम!

اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿۳۹﴾ مَنْ

तुम अपनी जगह पर अमल करते रहो, मैं भी अमल कर रहा हूँ। फिर अनकरीब तुम्हें मालूम हो जाएगा, के किस

يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿۴۰﴾ إِنَّا

पर ऐसा अज़ाब आता है जो उसे रुस्वा कर देगा और किस पर दाइमी अज़ाब उतरता है? यकीनन हम

أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدَىٰ

ने आप पर ये किताब उतारी इन्सानों के लिए हक के साथ। फिर जो हिदायत पाएगा तो अपनी ज़ात

فَلِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّا يَضِلُّ عَلَيْهِمَا ۚ وَمَا أَنْتَ

के नफे के लिए। और जो गुमराह होगा तो उसी पर गुमराही का वबाल पड़ेगा। और आप

عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ﴿۴۱﴾ اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنْفُسَ حِينَ مَوْتِهَا

उन पर मुसल्लत नहीं हैं। अल्लाह हर जानदार की जान निकालता है उस के मरने के वक्त,

وَالَّتِي لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا ۚ فِيمِمْسِكَ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا

और उस की भी जो सोने की हालत में नहीं मरा। फिर अल्लाह रोक लेता है उस को जिस पर मौत का फैसला

الْمَوْتِ وَيُرْسِلُ الْآخِرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ

कर देता है और दूसरी को छोड़ देता है एक वक़्ते मुक़र्रर तक के लिए। यकीनन उस में

لَايَتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿۴۲﴾ أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ

निशानियाँ हैं ऐसी कौम के लिए जो सोचती है। क्या उन्होंने ने अल्लाह के अलावा सिफारिशी बना

شُفَعَاءَ ۚ قُلْ أَوَلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿۴۳﴾

लिए हैं? आप फरमा दीजिए के क्या अगर्चे वो किसी चीज़ के भी मालिक न हों और कुछ भी अक्ल न रखते हों?

قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۚ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही के लिए सारी सिफारिश है। उसी के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है।

ثُمَّ إِلَيْهِ تَرْجَعُونَ ﴿۴۴﴾ وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ

फिर उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। और जब तन्हा अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उन लोगों

قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۚ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ

के दिल सुकड़ जाते हैं जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते। और जब उन का ज़िक्र किया जाता है

مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿۴۵﴾ قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ

जो अल्लाह के अलावा हैं तो यकायक वो खुश हो जाते हैं। आप फरमा दीजिए के ऐ अल्लाह! ऐ आसमानों और ज़मीन

ع.

وَالْأَرْضِ عِلْمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ

के पैदा करने वाले! ऐ मख़फ़ी और ज़ाहिर के जानने वाले! तू ही अपने बन्दों के दरमियान फैसला

عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٣٩﴾ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ

करेगा जिस में वो इख़तिलाफ़ कर रहे थे। और अगर उन ज़ालिमों के

ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ

पास वो सब हो जो ज़मीन में है और उस के जैसा उस के साथ और भी हो (दुगना) तब भी उस को अज़ाब की मुसीबत

مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَبَدَأَ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ

से बचने के लिए क़यामत के दिन फ़िदये में दे देंगे। और उन के सामने ज़ाहिर होगा अल्लाह की तरफ से

مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ﴿٤٠﴾ وَبَدَأَ لَهُمْ سَيِّئَاتُ

वो जिस का वो गुमान (अन्दाज़ा) भी नहीं करते थे। और उन के सामने अपने अमल की बुराइयाँ ज़ाहिर हो

مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٤١﴾ فَإِذَا مَسَّ

जाएंगी और उन को घेर लेगा वो अज़ाब जिस का वो इस्तिहज़ा किया करते थे। फिर जब इन्सान को ज़रूर

الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۚ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّثْلًا قَالَ

पहोँचता है तो वो हमें पुकारता है। फिर जब हम उसे अपनी तरफ से नेअमत अता करते हैं तो केहता है

إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَى عِلْمٍ ۚ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ

के मुझे तो ये सिर्फ अपने हुनर की वजह से मिली है। बल्के ये आजमाइश है, लेकिन उन में से अक्सर

لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾ قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ

जानते नहीं। यकीनन उस को उन लोगों ने भी कहा जो उन से पेहले थे, फिर उन के कुछ काम

عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٤٣﴾ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۚ

नहीं आया वो जो वो किया करते थे। फिर उन को उन के आमाले बद की मुसीबतें पहोँचीं।

وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۚ

और उन में से जो ज़ालिम हैं उन्हें जल्द ही उन की बदअमली की सज़ा मिलेगी।

وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٤٤﴾ أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ

और ये (भाग कर) अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकेंगे। क्या ये जानते नहीं के अल्लाह रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए

لَنْ يَشَاءَ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٤٥﴾

चाहता है और तंग करता है जिस के लिए चाहता है। यकीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाती है।

قُلْ يُعَادِي الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا

आप फरमा दीजिए ऐ मेरे बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़्यादती की है! तुम अल्लाह की रहमत से

مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ

मायूस मत हो। यकीनन अल्लाह तमाम गुनाह बख्श देगा। यकीनन वो बहोत ज़्यादा

الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلُمُوا لَهُ

बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और रूजूअ करो अपने रब की तरफ और उसी के ताबेदार बन कर रहो

مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصِرُونَ ۝ وَاتَّبِعُوا

इस से पेहले के तुम पर अज़ाब आ जाए, फिर तुम्हारी नुसरत न की जाए। और सब से बेहतर कलाम की

أَحْسَنَ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ

पैरवी करो जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी तरफ उतारा गया है इस से पेहले के तुम पर

الْعَذَابُ بَغْتَةً وَآنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۝ أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ

अचानक अज़ाब आ जाए और तुम्हें पता भी न हो। कहीं कोई शख्स केहने लगे

يُحَسِّرُنِي عَلَىٰ مَا فَرَطْتُ فِي جَنْبِ اللَّهِ وَإِنْ كُنْتُ

हाए अफसोस उस कोताही पर जो मैं ने अल्लाह के मुआमले में की और मैं मज़ाक करने वालों

لِإِنِ السَّخِرِينَ ۝ أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ

में रेह गया। या वो यूँ कहे के अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं मुत्तकियों

مِنَ الْمُتَّقِينَ ۝ أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَىٰ الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي

में से बनता। या यूँ कहे जब अज़ाब को देखे के अगर मेरे लिए दुनिया में पलट कर

كَرَّةً فَأَكُونُ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝ بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي

जाना हो तो मैं नेकी करने वालों में से बन जाऊँगा। क्यूँ नहीं! यकीनन तेरे पास मेरी आयतें आईं,

فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ وَيَوْمَ

फिर तू ने उन को झुठलाया और तू ने तकबुर किया और तू काफिरों में से था। और क़यामत

الْقِيَامَةِ تَرَىٰ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ اللَّهِ وُجُوهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ

के दिन आप देखोगे जिन्हों ने अल्लाह पर झूठ बोला उन के चेहरे सियाह होंगे।

أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ۝ وَيُنَبِّئُ اللَّهُ الَّذِينَ

क्या जहन्नम में तकबुर करने वालों के लिए ठिकाना नहीं? और अल्लाह नजात देगा उन की

اتَّقُوا مَفَازَهُمْ ۚ لَا يَسُئُهُمُ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝۳۱ कामयाबी के साथ उन को जो मुत्तकी हैं। उन को मुसीबत नहीं पहुँचेगी और वो ग़मगीन नहीं होंगे। अल्लाह
خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝۳۲ हर चीज़ को पैदा करने वाला है। और वो हर चीज़ का कारसाज़ है। उसी के पास आसमानों
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ और ज़मीन की कुन्जियाँ हैं। और जिन्होंने ने अल्लाह की आयात के साथ कुफ़ किया वो खसारे वाले
هُمُ الْخَسِرُونَ ۝۳۳ हैं। आप फरमा दीजिए क्या अल्लाह के अलावा के मुतअल्लिक़ तुम मुझे हुक्म देते हो के मैं उस की इबादत करूँ,
الْجَاهِلُونَ ۝۳۴ ऐ जाहिलो? यकीनन आप की तरफ और उन की तरफ जो आप से पेहले थे वही की गई।
لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝۳۵ के अगर तुम शिर्क करोगे तो तुम्हारा अमल हब्त हो जाएगा और तुम खसारा उठाने वालों में से बन जाओगे।
بَلِ اللَّهِ فَاعْبُدْ ۖ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝۳۶ बल्के अल्लाह ही की तुम इबादत करो और शुक्रगुज़ारों में से रहो। और उन्होंने ने अल्लाह की क़दर नहीं की
حَقَّ قَدْرُهُ ۖ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ जैसा के उस की क़दर करने का हक़ है। और ज़मीन सारी की सारी उस की मुठ्ठी में होगी क़यामत के दिन और
وَالسَّمَوَاتُ مَطْوِيَّتٌ بِيَمِينِهِ ۖ وَسُبْحَنَهُ تَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝۳۷ आसमान लिपटे हुए होंगे उस के दाएं हाथ में। अल्लाह पाक है और बरतर है उन चीज़ों से जिन्हें वो शरीक ठेहराते हैं।
وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ और सूर फूँका जाएगा, फिर बेहोश हो जाएंगे वो जो आसमानों में हैं और जो
فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ۖ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ ज़मीन में हैं मगर जिन को अल्लाह चाहे। फिर दूसरी मरतबा सूर फूँका जाएगा तो फौरन ही वो खड़े हो
قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ۝۳۸ जाएंगे, देखने लग जाएंगे। और ज़मीन रोशन हो जाएगी अपने रब के नूर से और नामअे आमाल
الْكُتُبُ وَجِئَاءٌ بِالتَّبَيِّنِ وَالشَّهَادَةِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ रख दिया जाएगा, और अम्बिया और शुहदा को लाया जाएगा, और उन के दरमियान हक़ के साथ फैसला

بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٩﴾ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ

किया जाएगा, और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा। और हर शख्स को पूरे पूरे मिलेंगे वो अमल जो उस ने किए,

وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٧٠﴾ وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا

और वो उन के अमल खूब जानता है। और काफिरों को हांका जाएगा जहन्नम की तरफ

إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فَتَحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ

जमाअत दर जमाअत। यहाँ तक के जब वो उस के पास आएंगे तो उस के दरवाजे खोले जाएंगे और उन से

لَهُمْ حَزَنَتُهُمْ ۖ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ

उस के मुहाफिज़ फरिशते पूछेंगे क्या तुम्हारे पास तुम में से पैग़म्बर नहीं आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब की

آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا

आयतें तिलावत करते और तुम्हें डराते थे तुम्हारे इस दिन की मुलाकात से? वो कहेंगे

بَلَىٰ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧١﴾

क्यूँ नहीं! लेकिन काफिरों पर अज़ाब का कलिमा साबित हो गया।

قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبُئْسَ

कहा जाएगा के तुम जहन्नम के दरवाजों में दाखिल हो जाओ उस में हमेशा रहने के लिए। फिर ये

مَثْوًى الْمَتَكَبِّرِينَ ﴿٧٢﴾ وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ

तकबुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। और जो अपने रब से डरते रहे उन को लाया जाएगा जन्नत की तरफ जमाअत

إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ

दर जमाअत। यहाँ तक के जब वो उस के पास आएंगे इस हाल में के उस के दरवाजे खुले हुए होंगे, और उस के

حَزَنَتُهُمْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ﴿٧٣﴾

मुहाफिज़ फरिशते उन से कहेंगे के तुम पर सलामती हो, तुम अच्छे रहे, फिर तुम उस में हमेशा के लिए दाखिल हो जाओ।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا

और वो कहेंगे के तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम से अपना वादा सच कर दिखाया और उस ने हमें

الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۖ فَنِعْمَ أَجْرُ

इस ज़मीन का वारिस बनाया के हम जन्नत में रहें जहाँ हम चाहें। फिर ये अमल करने वालों का

الْعَمَلِينَ ﴿٧٤﴾ وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِينَ مِنْ حَوْلِ

कितना अच्छा बदला है! और तुम फरिशतों को देखोगे के सफ बांधे हुए होंगे अर्श के चारों

الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ

तरफ, वो अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कर रहे होंगे। और लोगों के दरमियान हक के मुताबिक

بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

फेसला किया जाएगा, और कहा जाएगा तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं।

رُؤُوسُهَا ۙ

(۴۰) سُورَةُ الْمُؤْمِنِينَ مَكِّيَّةٌ (۶۰)

آيَاتُهَا ۙ

और ८ खूब हैं

सूरह मोमिन मक्का में नाज़िल हुई

उस में ८५ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حَمِّ ۝ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝

हों मीमा। इस किताब का उतारा जाना ज़बर्दस्त, इल्म वाले अल्लाह की तरफ से है।

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِي

जो गुनाहों को बख्शने वाला और तौबा कबूल करने वाला, सख्त सज़ा देने वाला, कुदरत

الطَّوْلِ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ إِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝ مَا يُجَادِلُ

वाला है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। उसी की तरफ लौटना है। अल्लाह की आयात में झगड़ा

فِي آيَاتِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَا يَغْرُرُكَ تَقْلُبُهُمْ

नहीं करते मगर वो जिन्होंने ने कुफ्र किया, इस लिए उन का मुल्कों में आना जाना आप को

فِي الْبِلَادِ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ

धोके में न डाले। उन से पेहले झुठलाया कौमे नूह ने और उन के बाद आने वाले

مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ وَهَبَتْ كُلُّ أُمَّةٍ رَّسُولَهُمْ لِيَأْخُذُوهُ

गिरोहों ने। और हर उम्मत ने अपने रसूल के साथ इरादा किया के उस को पकड़ लें,

وَجَدُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ

और उन्होंने ने बातिल के ज़रिए झगड़ा किया ताके उस के ज़रिए हक को मिटा दें, फिर मैं ने उन को पकड़ लिया।

فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝ وَكَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ

फिर मेरी सज़ा कैसी रही? और इसी तरह तेरे रब के कलिमात

عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۚ الَّذِينَ يَحْمِلُونَ

काफिरों पर साबित हो गए के वो दोज़खी हैं। वो फरिशते जो अर्श को उठाए

الْعَرْشِ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ

हुए हैं और जो उस के इर्द गिर्द हैं वो अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते हैं और उस पर ईमान रखते

بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ

हैं और ईमान वालों के लिए मग़फ़िरत तलब करते है। ऐ हमारे रब! तेरी रहमत और तेरा इल्म

رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ

हर चीज़ पर हावी है, तो तू मग़फ़िरत कर दे उन की जिन्हों ने तौबा की और तेरा रास्ता अपनाया

وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۚ رَبَّنَا وَادْخُلْهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ

और उन को दोज़ख के अज़ाब से तू बचा ले। ऐ हमारे रब! और तू उन को जन्नाते अदन में दाखिल कर दे

إِلَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ

जिस का तू ने उन से वादा किया है, और उन को भी जो लाइक हों उन के बाप दादा और उन की बीवियों

وَدَّرَيْتَهُمْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ

और उन की औलाद में से। यकीनन तू ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। और तू उन को बुराइयों से बचा ले।

وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ ۚ وَذَلِكَ هُوَ

और जिस को तू बुराइयों से बचा लेगा उस दिन यकीनन तू ने उस पर रहम किया। और ये भारी

الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادُونَ لِمَقْتُ اللَّهِ

कामयाबी है। यकीनन वो लोग जो काफिर हैं उन के लिए ऐलान होगा के अल्लाह का गुस्सा

أَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ

तुम्हारे अपनी जानों पर गुस्से से ज़्यादा बड़ा है जब के तुम्हें बुलाया जाता था ईमान की तरफ,

فَتَكْفُرُونَ ۝ قَالُوا رَبَّنَا آمَنَّا أَشْتَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا

फिर तुम कुफ़र करते थे। वो कहेंगे ऐ हमारे रब! तू ने हमें दो मरतबा मौत दी और तू ने दो मरतबा

أَشْتَتَيْنِ فَأَعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى خُرُوجٍ

हमें ज़िन्दा किया, अब हम ने अपने गुनाहों का ऐतेराफ़ कर लिया, फिर क्या निकलने का कोई

مِّن سَبِيلٍ ۝ ذَلِكُمْ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ ۚ

रास्ता है? ये इस वजह से के जब तुम्हारे सामने एकता अल्लाह को पुकारा जाता था तो तुम कुफ़र करते थे।

وَإِنْ يُشْرَكَ بِهِ تُؤْمِنُوا ۚ فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ۝

और अगर उस के साथ शिर्क किया जाता तो तुम मान लेते थे। फिर हुक्मत बरतर बुलन्द अल्लाह ही के लिए है।

هُوَ الَّذِي يُرِيكُم آيَاتِهِ وَيُنَزِّل لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا

वो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से रोज़ी उतारता है।

وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَن يُنِيبُ ۚ فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ

और नसीहत हासिल नहीं करते मगर जो ख़ुद अल्लाह करते हैं। तो तुम अल्लाह को पुकारो, उसी के लिए

لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۚ رَفِيعَ الدَّرَجَاتِ

इबादत खालिस करते हुए अगर्चे काफिर नापसन्द करें। वो दरजात बुलन्द करने वाला है,

ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ

अर्श वाला है। वो रूह डालता है अपने अम्र से जिस पर चाहता है

مِّنْ عِبَادِهِ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۚ يَوْمَ هُمْ بَرْزُورُونَ ۚ

अपने बन्दों में से ताके मुलाकात के दिन से वो डराए। जिस दिन वो बाहर निकले हुए होंगे।

لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لِّمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ

अल्लाह पर उन की कोई चीज़ मखफ़ी नहीं। (अल्लाह फरमाएंगे के) आज किस की सल्तनत है?

لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۚ الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ

(जवाब होगा) ग़ालिब यकता अल्लाह ही की है। उस दिन हर शख्स को बदला दिया जाएगा उन आमाल का जो

بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۚ

उस ने किए। आज किसी पर जुल्म नहीं होगा। यकीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

وَأَنذَرُهم يَوْمَ الْأَرْزَاقِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ

और आप उन को क़यामत के दिन से डराइए जब दिल गले तक आ जाएंगे, ग़म से घुट

كُظْمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ

रहे होंगे। ज़ालिमों के लिए न कोई दोस्त होगा और न सिफारिशी

يُطَاعُ ۚ يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ۚ

जिस की बात मानी जाए। वो जानता है आँखों की खयानत को और उसे जो सीने छुपाते हैं।

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۚ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ

और अल्लाह हक़ के साथ फैसला करेगा। और वो जिन को ये पुकारते हैं अल्लाह के अलावा

لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۚ

वो किसी चीज़ का फैसला नहीं कर सकते। यकीनन अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ	क्या वो ज़मीन में चले नहीं के देखते के उन लोगों का अन्जाम
الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً	कैसा हुवा जो उन से पेहले थे? जो उन से भी ज़्यादा कूबत वाले
وَ أَثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۖ وَمَا كَانَ	और ज़मीन में निशानात वाले थे, फिर अल्लाह ने उन को उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया। और उन को
لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ	अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं था। ये इस वजह से के उन के पास उन के पैग़म्बर रोशन
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ ۖ إِنَّهُ قَوِيٌّ	मोअजिज़ात ले कर आए थे, तो उन्होंने ने कुफ़ किया, फिर अल्लाह ने उन को पकड़ लिया। यकीनन वो कूबत वाला,
شَدِيدُ الْعِقَابِ ۚ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا	सख्त सज़ा देने वाला है। यकीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को अपने मोअजिज़ात
وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۚ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا	और रोशन दलील दे कर भेजा। फिरऔन और हामान और कारून की तरफ, तो उन्होंने ने कहा के
سِحْرٌ كَذَابٌ ۚ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا	ये जादूगर है, झूठा है। फिर जब उन के पास वो हक़ ले कर आए हमारी तरफ से तो उन्होंने ने कहा
اَقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۖ	के क़त्ल कर दो उन के बेटों को जो उन के साथ ईमान लाए हैं और उन की औरतों को ज़िन्दा रहने दो।
وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلٰلٍ ۚ وَقَالَ فِرْعَوْنُ	और काफ़िरोँ का मक्र तो ज़लालत ही का था। और फिरऔन ने कहा के
ذُرُونِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۚ إِنِّي أَخَافُ	तुम मुझे छोड़ दो के मैं मूसा को क़त्ल कर दूँ, और उसे चाहिए के वो अपने रब को पुकारे। मैं डरता हूँ
أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ۚ	कहीं वो तुम्हारा मज़हब बदल दे या इस मुल्क में फ़साद बरपा करे।
وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ	और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं ने पनाह ली है अपने रब और तुम्हारे रब की हर तकबुर करने वाले से

۳
۴۸

لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۚ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ

जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता। और एक मोमिन मर्द ने कहा

مَنْ أَلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا

आले फिरऔन में से जो अपना ईमान छुपा रहा था, क्या तुम क़त्ल करते हो एक शख्स को इस बिना पर के

أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ ۖ

वो केहता है के मेरा रब अल्लाह है, हालांके वो तुम्हारे पास रोशन मोअजिज़ात तुम्हारे रब की तरफ से ले कर आया है?

وَأِنْ يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۖ وَإِنْ يَكُ صَادِقًا

और अगर वो झूठा है तो उसी पर उस के झूठ का वबाल पड़ेगा। और अगर वो सच्चा है तो तुम्हें

يُصِيبُكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ

उस अज़ाब का कुछ हिस्सा पहुँचेगा जिस से वो तुम्हें डरा रहा है। यकीनन अल्लाह उस को हिदायत नहीं देते जो

هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ۝ يَقُومُ لَكُمْ الْمَلِكُ الْيَوْمَ

हद से बढ़ने वाला, झूठा है। ऐ मेरी कौम! तुम्हारे लिए आज सल्तनत है,

ظَهْرَيْنَ فِي الْأَرْضِ ۚ فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنْ بَأْسِ اللَّهِ

तुम इस मुल्क में ग़ालिब हो। फिर कौन हमारी नुसरत करेगा अल्लाह के अज़ाब से

إِنْ جَاءَنَا ۖ قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ

अगर हमारे पास अज़ाब आ जाए? फिरऔन ने कहा के मैं तुम्हें नहीं दिखाता मगर वही जो मैं देख रहा हूँ,

وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝ وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَقُومُ

और मैं तुम्हारी रहनुमाई करता हूँ भलाई ही के रास्ते की तरफ। और उस शख्स ने कहा जो ईमान लाया था के

إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۚ مِثْلَ دَابِ

ऐ मेरी कौम! मुझे डर है के तुम पर वैसा ही दिन न आ जाए जैसा बहोत से गिरोहों पर आ चुका है। कौमे नूह और

قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۖ

कौमे आद और कौमे समूद और उन के बाद वालों के जैसे हाल का।

وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۚ وَيَقُومُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ

और अल्लाह बन्दों पर जुल्म का इरादा भी नहीं करते। और ऐ मेरी कौम! मैं तुम पर एक दूसरे को पुकारने के दिन

يَوْمَ النَّارِ ۚ يَوْمَ تُؤْلَوْنَ مُدْبِرِينَ ۖ مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ

का खौफ करता हूँ। जिस दिन तुम पुश्त फेर कर भागोगे। तुम्हारे लिए अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं

مَنْ عَاصِيٍّ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝

होगा। और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं।

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا زِلْتُمْ

और तहकीक के तुम्हारे पास यूसुफ (अलैहिस्सलाम) इस से पेहले रोशन मोअजिज़ात ले कर आए, फिर तुम बराबर शक में

فِي شَكٍّ مِمَّا جَاءَكُمْ بِهِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ

रहे उस से जो तुम्हारे पास वो ले कर आए। यहाँ तक के जब वो वफात पा गए, तो तुम ने कहा

لَنْ يَبْعَثَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا ۚ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ

अल्लाह इस के बाद किसी पैग़म्बर को हरगिज़ नहीं भेजेगा। इसी तरह अल्लाह गुमराह करता है

مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ ۝ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ

उस को जो हद से बढ़ने वाला, शक में पड़ा होता है। उन लोगों को जो झगड़ा करते हैं

فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ ۚ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ

अल्लाह की आयात में किसी दलील के बग़ैर जो उन के पास आई हो। ये झगड़ा अल्लाह और ईमान वालों के नज़दीक

وَ عِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبٍ

बहोत ही गुस्सा दिलाने वाली चीज़ है। इस तरह अल्लाह हर तकब्बुर करने वाले ज़ालिम के दिल पर मुहर

مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَهْمُنُ ابْنُ لِي

लगा देते हैं। और फिरऔन बोला के ऐ हामान! तू मेरे लिए एक ऊँची

صَرْحًا تَعْلَىٰ أَبْلُغِ الْأَسْبَابَ ۝ أَسْبَابَ السَّمُوتِ

इमारत तामीर कर ताके मैं उन रास्तों तक पहुँचूँ। आसमान के रास्तों तक,

فَاطْلِعْ إِلَىٰ إِلَهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ كَاذِبًا ۚ وَكَذَلِكَ

फिर मैं मूसा के रब को झांक कर देखूँ, और यकीनन मैं उसे झूठा गुमान करता हूँ। और इसी तरह

زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوءُ عَمَلِهِ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۚ

फिरऔन के लिए उस की बदअमली मुज़य्यन की गई और उसे रास्ते से रोका गया।

وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ۝ وَقَالَ الَّذِي آمَنَ

और फिरऔन का मक्र नहीं था मगर तबाही का। और उस शख्स ने कहा जो ईमान लाया था

يَقَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِيكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝ يَقَوْمِ إِنَّمَا

ऐ मेरी कौम! तुम मेरा इत्तिबा करो, मैं तुम्हें नेकी के रास्ते की रहनुमाई करूँगा। ऐ मेरी कौम! ये दुन्यवी

هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۚ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ

ज़िन्दगी तो सिर्फ़ थोड़ा सा नफ़ा उठाना है। और यकीनन आखिरत वो हमेशा रहने का

الْقَرَارِ ۚ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا ۚ

घर है। जो बुरे अमल करेगा तो उसे बदला नहीं दिया जाएगा मगर उसी के बक़दर।

وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ اُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ

और जो नेक अमल करे, मर्दों में से हो या औरतों में से बशर्ते वो मोमिन हो,

فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ

तो वो लोग जन्नत में दाखिल होंगे और उन को उस में बेहिसाब रोज़ी दी

حِسَابٍ ۚ وَيَقُولُ مَا لِىَ اَدْعُوكُمْ اِلَىٰ

जाएगी। और ऐ मेरी कौम! मुझे क्या हुवा के मैं तुम्हें बुला रहा हूँ नजात

النَّجْوَةِ وَتَدْعُونَنى اِلَى النَّارِ ۚ تَدْعُونَنى لِكُفْرٍ بِاللّٰهِ

की तरफ और तुम मुझे बुला रहे हो आग की तरफ। तुम मुझे बुलाते हो ताके मैं अल्लाह के साथ कुफ़ कर्सूँ

وَأَشْرِكُ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ ۚ وَأَنَا اَدْعُوكُمْ

और मैं उस के साथ शरीक ठेहराऊँ ऐसी चीज़ जिस की मेरे पास कोई दलील नहीं। और मैं तुम्हें बुला रहा हूँ

اِلَى الْعَزِيزِ الْغَفَّارِ ۚ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُونَنى اِلَيْهِ

ज़बर्दस्त, बहोत ज़्यादा बख़्शाने वाले अल्लाह की तरफ। यकीनी बात है के तुम मुझे जिस की तरफ बुलाते हो

لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِى الدُّنْيَا وَلَا فِى الْآخِرَةِ

उस की तरफ दावत नहीं दी जा सकती दुन्या में और न आखिरत में,

وَاَن مَّرَدَّنَا اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ السُّرْفِيْنَ هُمْ اَصْحَابُ النَّارِ ۚ

और ये के हम सब को लौटना है अल्लाह की तरफ और ये के हद से आगे बढ़ने वाले ही दोज़खी हैं।

فَسَتَذْكُرُونَ مَا اَقُولُ لَكُمْ ۚ وَافْوَضْ اَمْرِي

फिर अनक़रीब तुम याद करोगे उस को जो मैं तुम से केह रहा हूँ। और मैं अपना मुआमला अल्लाह के

اِلَى اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ بِصِيْرٍ بِالْعِبَادِ ۚ فَوَقَّهُ اللّٰهُ سَيِّئَاتِ

सुपुर्द करता हूँ। यकीनन अल्लाह बन्दों को ख़ूब देख रहे हैं। फिर अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को बचा लिया

مَا مَكَرُوا وَحَاقَ بِالْاِلٰهِ فِرْعَوْنُ سُوءَ الْعَذَابِ ۚ

उन की बुरी तदबीरों से और आले फिरऔन को बुरे अज़ाब ने घेर लिया।

النَّارِ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا ۖ وَيَوْمَ تَقُومُ

आग पर उन्हें पेश किया जाता है सुबह व शाम। और जिस दिन कयामत

السَّاعَةِ ۖ أَدْخِلُوهَا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ۖ

काइम होगी, (कहा जाएगा) आले फिरऔन को सख्ततरीन अज़ाब में दाखिल कर दो।

وَإِذْ يَتَحَاوُونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ

और जब वो आग में झगड़ रहे होंगे, फिर कमज़ोर लोग कहेंगे बड़े बन कर

اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ

रेहने वालों से के यकीनन हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे, तो क्या तुम इस

عَنَّا نَصِيبًا مِّنَ النَّارِ ۖ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا

आग का कुछ हिस्सा हम से हटा दोगे? तो कहेंगे जो बड़े बन कर रहे के हम

كُلٌّ فِيهَا ۚ إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۖ وَقَالَ

सब उसी आग में हैं। यकीनन अल्लाह ने बन्दों के दरमियान फैसला कर दिया है। और वो

الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخِزْنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ

लोग जो दोज़ख में होंगे जहन्नम के फरिशतों से कहेंगे के तुम अपने रब से मांगो के एक दिन तो

عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ۖ قَالُوا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمُ

अज़ाब हम से कुछ हल्का कर दे। वो कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर रोशन

رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۖ قَالُوا فَادْعُوا

मोअजिज़ात ले कर नहीं आए थे? वो कहेंगे क्यूं नहीं। वो फरिशते कहेंगे फिर तुम पुकारते रहो।

وَمَا دُعَاؤُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۖ إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا

और काफिरों की दुआ महज़ बेअसर है। हम मदद करते हैं अपने पैग़म्बरों की

وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الشُّهَادُ ۖ

और उन की जो ईमान लाए, दुन्यवी ज़िन्दगी में भी और उस दिन भी जिस दिन गवाह खड़े होंगे।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ مَعَذَرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ

जिस दिन ज़ालिमों को उन की माज़िरत नफ़ा नहीं देगी और उन के लिए लानत है

وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۖ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ

और उन के लिए बुरा घर है। यकीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को हिदायत दी

وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ الْكِتَابَ ۚ هُدًى	और बनी इस्राईल को किताब दी। जो हिदायत है
وَذِكْرَىٰ لِرَءُولِي الْكِتَابِ ۚ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ	और नसीहत है अक्ल वालों के लिए। इस लिए आप सब्र कीजिए, यकीनन अल्लाह का वादा सच्चा है
وَأَسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ	और अपने गुनाहों के लिए इस्तिगफार करते रहिए और अपने रब की हम्द के साथ सुबह व शाम
وَالْبُكْرِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ	तस्बीह कीजिए। जो लोग अल्लाह की आयात में झगड़ा करते हैं किसी दलील
سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ ۖ إِنَّ فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ	के बगैर जो उन के पास आई हो, उन के सीनों में सिवाए तकबुर के कुछ भी नहीं है, जिस को वो पहुँचने
بِبَالِغِيهِ ۖ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۚ	वाले नहीं। इस लिए आप अल्लाह की पनाह तलब कीजिए। यकीनन वो सुनने वाला, देखने वाला है।
لَخَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ	अलबत्ता आसमानों और ज़मीन का पैदा करना ये ज़्यादा बड़ा है इन्सानों के पैदा करने से,
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۚ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ	लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। और अन्धा और देखने वाला बराबर नहीं
وَالْبَصِيرُ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا الْمُسِيءُ	हो सकते। और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे वो और बदकार बराबर नहीं हो सकते।
قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ ۚ إِنَّ السَّاعَةَ لَأْتِيَةٌ	बहुत कम तुम नसीहत हासिल करते हो। कयामत ज़रूर आने वाली ही है
لَا رَيْبَ فِيهَا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ	जिस में कोई शक नहीं, लेकिन लोगों में से अक्सर ईमान नहीं लाते।
وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ	और तेरे रब ने कहा के तुम मुझ से मांगो, मैं तुम्हारी दुआ कबूल करूँगा। जो
يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دُخْرَيْنَ ۚ	मेरी इबादत से तकबुर करते हैं, अनकरीब वो जहन्नम में ज़लील हो कर दाखिल होंगे।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए रात बनाई ताके तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन	
مُبْصِرًا إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ रोशन बनाया। यकीनन अल्लाह इन्सानों पर फज़ल वाला है, लेकिन अक्सर	
النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿١١﴾ ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ लोग शुक्र अदा नहीं करते। वही अल्लाह तुम्हारा रब है, जो हर चीज़ का पैदा करने	
شَيْءٍ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَآلِي تُوَفَّكُونَ ﴿١٢﴾ كَذَلِكَ वाला है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। फिर तुम कहाँ लौटाए जा रहे हो? इसी तरह	فَتَنَزَّلُ
يُؤْفِكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿١٣﴾ اللَّهُ लौटाया गया उन लोगों को भी जो अल्लाह की आयात का इन्कार करते थे। अल्लाह	
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को ठेहरने की जगह और आसमान को छत बनाया	
وَصَوَّرَكُمُ فَاَحْسَنَ صُورَكُمْ ۚ وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ और तुम्हारी सूरतें बनाई, फिर तुम्हारी सूरतें बहोत अच्छी बनाई और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ें खाने को दीं।	
ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۚ فَتَبَرَّكُ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿١٤﴾ هُوَ यही अल्लाह तुम्हारा रब है। फिर अल्लाह बाबरकत है जो तमाम जहानों का रब है। वही	
الْحَيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ ज़िन्दा है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम उसी को पुकारो उसी के लिए इबादत को खालिस करते हुए।	
الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾ قُلْ إِنِّي نُهَيْتُ أَنْ أَعْبُدَ तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं। आप फरमा दीजिए के मुझे इस से मना किया गया है के मैं इबादत करूं	
الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَنَا جَاءَنِيَ الْبَيِّنَاتُ उन की जिन को तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा जब के मेरे पास रोशन आयतें पहींचीं मेरे रब की तरफ से।	
مِنْ رَبِّي ۚ وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ هُوَ और मुझे हुक्म है के मैं रब्बुल आलमीन का फरमांबरदार रहूँ। वही	
الَّذِي خَلَقَكُمْ مِّن تَرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ अल्लाह है जिस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर नुत्फे से, फिर जमे हुए खून	

عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشَدَّكُمْ

से, फिर तुम्हें वो बच्चा बना कर निकालता है, फिर (तुम को ज़िन्दा रखता है) ताके तुम अपनी जवानी को पहोंचो,

ثُمَّ لَتَكُونُوا شُيُوخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفَّى مِنْ قَبْلُ

फिर (तुम को और ज़िन्दा रखता है) ताके तुम बूढ़े हो जाओ। और तुम में से बाज़ों को वफ़ात दी जाती है उस से पेहले

وَلِتَبْلُغُوا أَجَلَ مُّسَيِّ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٤﴾ هُوَ

और ताके तुम मुकर्रर की हुई आखिरी मुदत को पहोंचो, और ताके तुम अक्ल से काम लो। वही

الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّا يَقُولُ

अल्लाह है जो ज़िन्दा रखता है और मौत देता है। फिर जब वो किसी मुआमले का फैसला करता है, तो सिर्फ उस से केहता है

لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٢٥﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ

के हो जा, तो वो हो जाता है। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों को जो अल्लाह की

فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنِّي يُضَرِّفُونَ ﴿٢٦﴾ الَّذِينَ كَذَّبُوا

आयात में झगड़ा करते हैं? वो कहाँ फिरे जा रहे हैं? जिन्हों ने किताब को

بِالْكِتَابِ وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

और उस को भी झुठलाया जिस को दे कर हम ने अपने पैगम्बरों को भेजा। फिर अनकरीब उन्हें मालूम हो जाएगा।

إِذَا الْغُلُّ فِي الْأَعْنَاقِ وَالسَّلْسِلُ يُسْحَبُونَ ﴿٢٨﴾

जब के तौक और ज़न्जीरें उन की गर्दनो में होंगी। उन को गर्म पानी

فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿٢٩﴾ ثُمَّ قِيلَ

में घसीटा जाएगा। फिर आग में झोंक दिए जाएंगे। फिर उन से पूछा

لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٣٠﴾ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا

जाएगा के कहाँ हैं वो जिन को अल्लाह के सिवा तुम शरीक ठेहराते थे? वो बोलेंगे के

صَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ نَدْعُوا مِنْ قَبْلُ شَيْئًا ۚ

वो हम से खो गए, बल्के उस से पेहले किसी चीज़ को हम पुकारते नहीं थे।

كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ﴿٣١﴾ ذَلِكَ بِمَا كُنْتُمْ

इसी तरह अल्लाह काफिरों को गुमराह करेंगे। ये सज़ा इस वजह से है के

تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ

ज़मीन में नाहक तुम इतराते थे, और इस लिए के तुम

تَمْرَحُونَ ﴿٥٥﴾ اَدْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ	अकड़ते थे। जहन्नम के दरवाज़ों में तुम दाखिल हो जाओ, उस में हमेशा
فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوًى لِّلتَّكَبِّرِينَ ﴿٥٦﴾ فَاصْبِرْ	रेहने के लिए। ये तकबुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। इस लिए आप सब कीजिए,
إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَإِمَّا نُرَبِّتْكَ بِبَعْضِ الَّذِي	यकीनन अल्लाह का वादा सच्चा है। फिर अगर आप को हम दिखा दें उस अज़ाब का कुछ हिस्सा जिस से हम उन्हें
نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَقَّيْتَكَ ۖ فَالَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٥٧﴾ وَلَقَدْ	डरा रहे हैं या हम आप को वफ़ात दे दें, तब भी वो हमारी तरफ लौटाए जाएंगे। और
أَرْسَلْنَا رَسُولًا مِّن قَبْلِكَ مِّنْهُمْ مَّن قَصَصْنَا	हम ने आप से पेहले भी पैग़म्बर भेजे, उन में से बाज़ के किस्से हम ने आप के सामने बयान
عَلَيْكَ وَ مِنْهُمْ مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۖ وَمَا كَانَ	किए हैं और उन में से बाज़ वो हैं जिन के किस्से हम ने आप के सामने बयान नहीं किए। और किसी
لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ فَإِذَا جَاءَ	पैग़म्बर की ये ताक़त नहीं थी के वो कोई मोअजिज़ा ले आए मगर अल्लाह की इजाज़त से। फिर जब अल्लाह
أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْبَاطِلُونَ ﴿٥٨﴾	का हुक्म आया तो हक़ के साथ फैसला कर दिया गया और वहाँ पर एहले बातिल खसारे में रहे।
اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا مِنْهَا	अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए ताके तुम उन में से बाज़ पर सवारी करो
وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٥٩﴾ وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا	और उन में से बाज़ को तुम खाते हो। और तुम्हारे लिए उन में और भी मनाफेअ हैं और ताके
عَلَيْهَا حَاجَةٌ فِي صُدُورِكُمْ وَ عَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ	उन पर सवार हो कर तुम अपने दिलों की हाजत तक पहुँच जाओ और उन चौपाओं पर और कशतियों पर तुम्हें सवार
تَحْمِلُونَ ﴿٦٠﴾ وَ يُرِيكُمْ آيَاتِهِ ۖ فَآيَ آيَاتِ اللَّهِ	कराया जाता है। और अल्लाह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है। फिर अल्लाह की निशानियों में से किस
تَنْكُرُونَ ﴿٦١﴾ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا	किस निशानी का तुम इन्कार करोगे? क्या वो ज़मीन में चले फिरे नहीं के देखते

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ كَانُوا أَكْثَرَ

के उन लोगों का अन्जाम कैसा हुवा जो उन से पेहले थे? जो तादाद में उन से ज़्यादा थे

مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَعْنَى

और कूवत में उन से मज़बूत थे और उन्होंने ने ज़मीन में निशानात भी सब से ज़्यादा (छोड़े), फिर

عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾ فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ

भी उन के कुछ काम नहीं आई उन की कमाई। फिर जब उन के पास उन के

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِمَا عِنْدَهُمْ مِنَ الْعِلْمِ

पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए तो वो इतराने लगे उस इल्म पर जो उन के पास था,

وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٨٣﴾ فَلَمَّا رَأَوْا

और उन को घेर लिया उस अज़ाब ने जिस का वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे। फिर जब उन्होंने ने हमारा अज़ाब

بِأَسْنَاءٍ قَالُوا 'أَمَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ

देखा तो बोल उठे के हम यकता अल्लाह पर ईमान ले आए, और हम ने कुफ़ किया उस के साथ जिस को हम शरीक

مُشْرِكِينَ ﴿٨٤﴾ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا

ठेहराते थे। तो उन को उन का ईमान लाना नाफेअ नहीं हुवा जब उन्होंने ने हमारा

بِأَسْنَاءٍ سُنَّتِ اللَّهُ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ ۚ

अज़ाब देख लिया। यही अल्लाह की सुन्नत है जो उस के बन्दों में पेहले रही है।

وَاخْسَرَ هَٰذَاكَ الْكَافِرُونَ ﴿٨٥﴾

और उस जगह काफिर खसारे में रहे।

رُكُوعًا ۶

(२१) سُورَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ (१)

آيَاتُهَا ५४

और ६ रुकूअ हैं

सूरह सजदा मक्का में नाज़िल हुई

उस में ५४ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حَمِّ ۝ تَنْزِيلٌ مِنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ كِتَابٌ

हों मीमा। इस का उतारा जाना बड़े महरबान, निहायत रहम वाले अल्लाह की तरफ से है। ये किताब है

فُصِّلَتْ آيَاتُهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

जिस की आयतें तफसील से बयान की गई हैं जो अरबी ज़बान वाला कुरआन है ऐसी कौम के लिए जो इल्म रखती है।

بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿۲۱﴾

बशारत सुनाने वाली और डराने वाली है। फिर उन में से अक्सर ने ऐराज़ किया, फिर वो नहीं सुनते।

وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِيْ أَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ

और कहते हैं के हमारे दिल पर्दे में हैं उस से जिस की तरफ तुम हमें बुलाते हो,

وَفِيْٓ أَذَانِنَا وَقْرٌ وَمِنْ بَيْنِنَا وَبَيْنَكَ حِجَابٌ

और हमारे कानों में डाट है, और हमारे और तुम्हारे दरमियान हिजाब है,

فَاعْمَلْ إِنَّا عَمِلُونَا ۚ قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ

तो तुम अपना काम करो, हम अपना काम करेंगे। आप फरमा दीजिए के मैं भी बशर हूँ जैसे तुम,

يُوحَىٰٓ إِلَىٰٓ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ وَاحِدٌ فَاسْتَقِيمُوا

मेरी तरफ वही की जाती है के तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, तो उसी की तरफ

إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوهُ ۚ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ ۚ

मुतवज्जेह रहो और उसी से मग़फिरत मांगो। और मुशरिकीन के लिए हलाकत है।

الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ

जो ज़कात नहीं देते और आखिरत के भी

كَافِرُونَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

मुन्किर हैं। यकीनन जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे

لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۚ قُلْ أَبِئْكُمْ لَتَكْفُرُونَ

उन के लिए सवाब है जो कभी खत्म न होगा। आप फरमा दीजिए क्या तुम कुफ़र करते हो

بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ

उस अल्लाह के साथ जिस ने ज़मीन पैदा की दो दिन में और उस के लिए

لَهُٗٓ أَنْدَادًا ۚ ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۚ وَجَعَلَ فِيْهَا

तुम शरीक बनाते हो। वो तमाम जहानों का रब है। और उसी ने ज़मीन में

رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبَرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَا

उस के ऊपर से पहाड़ रख दिए और उस के अन्दर बरकतें रखी हैं और ज़मीन में ज़मीन वालों

أَقْوَاتَهَا فِيْ أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ ۖ سَوَاءً لِّلسَّائِلِينَ ۚ

की खाने की चीज़ें मिक्दारे मुअय्यन के साथ रख दीं चार दिन में। पूछने वालों का (जवाब) पूरा हुवा।

ثَلَاثَةٌ

عَلَىٰ

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ

फिर वो आसमान की तरफ मुतवज्जेह हुवा इस हाल में के वो धुवां था, तो उस ने

لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۖ قَالَتَا

आसमान से और ज़मीन से कहा के तुम दोनों आओ खुशी से या मजबूरी से। दोनों ने कहा के

اَتَيْنَا طَائِعِينَ ﴿١١﴾ فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ

हम खुशी से आते हैं। फिर अल्लाह ने उन को सात आसमान बनाने का फैसला किया

فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۖ

दो दिन में, और हर आसमान में उस का हुक्म दे दिया।

وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ ۖ وَحِفْظًا ۖ

और हम ने आसमाने दुनिया को मुजय्यन किया चिरागों से और हिफाज़त के खातिर।

ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿١٢﴾ فَإِنْ أَعْرَضُوا

ये ज़बर्दस्त इल्म वाले अल्लाह की मुतअय्यन की हुई मिक्दार है। फिर अगर वो ऐराज़ करें

فَقُلْ أَنْذَرْتُكُمْ صُغْرَةً ۚ مِّثْلَ صُغْرَةِ عَادَ

तो आप फरमा दीजिए के मैं तुम्हें डराता हूँ ऐसे अज़ाब से जो कौमे आद व कौमे समूद के अज़ाब

وَتَمُودَ ﴿١٣﴾ إِذْ جَاءَتْهُمْ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ

जैसा होगा। जब उन के पास पैग़म्बर आए उन के सामने से

وَمِنْ خَلْفِهِمْ إِلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ قَالُوا لَوْ شَاءَ

और उन के पीछे से के तुम इबादत मत करो मगर अल्लाह ही की। तो बोले के अगर हमारा

رَبُّنَا لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ

रब चाहता तो वो फरिशतों को उतारता। यकीनन हम उस दीन के साथ भी कुफ़ करते हैं जिसे दे कर तुम

كُفْرُونَ ﴿١٤﴾ فَأَمَّا عَادُ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ

भेजे गए हो। अलबत्ता कौमे आद तो उस ने ज़मीन में नाहक

الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا

तकबुर किया, और उन्होंने ने कहा के हम से कौन ज़्यादा कूव्वत वाला है? क्या उन्होंने ने देखा नहीं

أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۖ وَكَانُوا

के जिस अल्लाह ने उन्हें पैदा किया है, वो उन से भी ज़्यादा कूव्वत वाला है। और वो

بَايْتَنَا يَجْحَدُونَ ﴿٥﴾ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيًّا صَرَصًا	हमारी आयतों का इन्कार करते थे। फिर हम ने उन पर सर्द तूफानी हवा
فِي أَيَّامٍ نَّحْسَاتٍ لِّنَذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ	मन्दूस दिनों में भेजी ताके उन्हें दुन्यवी ज़िन्दगी में
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ	ज़िल्लत का अज़ाब हम चखाएं। और आखिरत का अज़ाब तो और ज़्यादा रुस्वाई वाला है
وَهُمْ لَا يُنْصَرُونَ ﴿٦﴾ وَأَمَّا شَمُودُ فَوَهَدْنَاهُمْ فَأَسْتَخَبُوا	और उन की नुसरत भी नहीं की जाएगी। और जो कौमे समूद थी, तो हम ने उन को रास्ता बतलाया, फिर उन्होंने ने
الْعَمَىٰ عَلَى الْهُدَىٰ فَآخَذَتْهُمْ سَعْيًا الْعَذَابِ	अन्धा रेहने को हिदायत के मुक़ाबले में पसन्द किया, फिर उन्हें उन के करतूत की वजह से
الْهُونَ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٧﴾ وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ	ज़िल्लत वाले अज़ाब की कड़क ने पकड़ लिया। और हम ने बचा लिया उन को जो
أَمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٨﴾ وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ	ईमान लाए थे और मुत्तकी थे। और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन दोज़ख की तरफ इकट्ठे किए जाएंगे
إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا	फिर उन्हें (जमाअतों में) तकसीम किया जाएगा। यहाँ तक के जब वो दोज़ख के पास पहुँचेंगे
شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ	तो उन के खिलाफ गवाही देंगे उन के कान और उन की आँखें और उन की खालें
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٠﴾ وَقَالُوا لِمَ لُجُودُهُمْ لِمَ شَهِدْتُمْ	उन आमाँल की जो वो करते थे। और वो अपनी खालों से कहेंगे के तुम ने हमारे खिलाफ गवाही
عَلَيْنَا قَالُوا أَنْطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ	क्यूं दी? वो कहेंगी के हम से बुलवाया उस अल्लाह ने जिस ने हर चीज़ को गोयाई दी है
وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾	और उसी ने तुम्हें पेहली मरतबा पैदा किया और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।
وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا	और तुम छुपा नहीं सकते थे के तुम्हारे खिलाफ गवाही दें तुम्हारे कान और

أَبْصَارَكُمْ وَلَا جُلُودَكُمْ وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें, लेकिन तुम ने गुमान किया था के अल्लाह
لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿۲۲﴾ وَذَلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي नहीं जानता बहोत से आमाल जो तुम करते हो। और यही तुम्हारा गुमान था जो
ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَلَكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿۲۳﴾ तुम ने अपने रब के साथ रखा जिस ने तुम्हें हलाक कर दिया, फिर तुम खसारा उठाने वालों में से बन गए।
فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ۖ وَإِنْ يَسْتَعْتَبُوا फिर अगर वो सब्र करें तो दोज़ख उन का ठिकाना है। और अगर वो मुआफी मांगना चाहें
فَمَا هُمْ مِنَ الْبُعْتَبِينَ ﴿۲۴﴾ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ तो उन से मुआफी कबूल नहीं की जाएगी। और हम ने उन के लिए करीन मुतअय्यन किए हैं,
فَرَيْنَا لَهُمْ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ फिर उन्होंने ने उन के लिए मुज़य्यन किया है जो कुछ उन के आगे और उन के पीछे है,
وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمِّ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ और कौल साबित हो गया उन पर मअ उन उम्मतों के जो उन से पेहले गुज़र चुकी हैं
مِّنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿۲۵﴾ जिन्नात और इन्सानों की। यकीनन वो खसारे वाले हैं।
وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَذَا الْقُرْآنِ और काफिरों ने कहा के तुम इस कुरआन की तरफ कान मत लगाओ
وَالْعَوَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ﴿۲۶﴾ فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ और उस के बीच में शोर करो, शायद तुम ग़ालिब रहो। फिर उन काफिरों को हम
كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا ۖ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي ज़रूर सख्त अज़ाब चखाएंगे। और हम उन्हें ज़रूर सज़ा देंगे
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿۲۷﴾ ذَلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ उन के बुरे आमाल की। ये दोज़ख अल्लाह के दुश्मनों की सज़ा है।
لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ ۖ جَزَاءُ ۖ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا उन का उसी में हमेशा का घर है। उस की सज़ा में के वो हमारी आयतों का इन्कार

يَجْحَدُونَ ﴿٢٨﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرَنَا	करते थे। और काफिर कहेंगे ऐ हमारे रब! तू हमें दिखा
الَّذِينَ أَضَلَّنَا مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلُهَا تَحْتَ	वो जिन्नात और इन्सान जिन्हों ने हमें गुमराह किया के हम उन्हें हमारे पैरों के
أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ﴿٢٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ	नीचे डाल दें ताके वो सब से ज्यादा नीचे वालों में से हो जाएं। तहकीक के जिन्हों ने
قَالُوا رَبَّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ	कहा के हमारा रब अल्लाह है, फिर उसी पर काइम रहे उन पर फरिशते उतरते हैं (केहते हुए के)
أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي	तुम खौफ न करो और ग़म न करो और बशारत सुन लो उस जन्नत की जिस का
كُنْتُمْ تُوْعَدُونَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ أَوْلِيَائُكُمْ فِي الْحَيَاةِ	तुम से वादा किया जाता था। हम तुम्हारे साथी हैं दुनिया
الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهَى	और आखिरत में। और तुम्हारे लिए आखिरत में वो नेअमते होंगी जो तुम्हारे जी चाहेंगे
أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدْعُونَ ﴿٣١﴾ نَزَّلْنَا مِنْ غَفْوِرٍ	और तुम्हारे लिए उस में वो नेअमते होंगी जो तुम मांगोगे। बहोत ज्यादा मगफिरत करने वाले, निहायत
رَحِيمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ	रहम वाले अल्लाह की तरफ से मेहमानी है। और उस से ज्यादा अच्छी बात वाला कौन हो सकता है जो अल्लाह की तरफ
وَعَمَلٍ صَالِحًا وَقَالَ إِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾ وَلَا تَسْتَوِ	बुलाए और नेक अमल करे और कहे के मैं मुसलमानों में से हूँ। और भलाई
الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۖ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ	और बुराई बराबर नहीं हो सकती। दफा कीजिए उस के ज़रिए जो बेहतर हो,
فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ	तो फौरन वो शख्स के आप के और उस के दरमियान अदावत थी, वो ऐसा हो जाएगा गोया के वो पक्का
حَمِيمٌ ﴿٣٤﴾ وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا ۖ وَمَا	दोस्त है। और ये मरतबा सिर्फ सब्र करने वालों ही को दिया जाता है। और

يُلْقِيهَا إِلَّا دُوَّ حَظٍّ عَظِيمٍ ۝ وَإِنَّمَا يَنْزَعُكَ

वही उस को पाते हैं जो बड़े नसीब वाले हैं। और अगर आप को शैतान की तरफ

مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ

से कोई वसवसा आए तो अल्लाह की पनाह मांगिए। यकीनन वो सुनने वाला,

الْعَلِيمُ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ

इल्म वाला है। और अल्लाह की निशानियों में से रात और दिन हैं और सूरज

وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا

और चाँद हैं। सूरज और चाँद को सज्दा मत करो, और सज्दा करो

لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝

उस अल्लाह को जिस ने उन्हें पैदा किया अगर तुम उसी की इबादत करते हो।

فَإِنْ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ

फिर अगर वो तकबुर करें, तो यकीनन वो फरिशते जो तेरे रब के पास हैं वो उस की तस्बीह करते

لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَوْنَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ

रेहते हैं रात और दिन में और वो उकताते नहीं। और अल्लाह की निशानियों में से

أَنَّكَ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا

ये है के तू ज़मीन को खुशक देखेगा, फिर जब हम उस के ऊपर पानी बरसाते हैं

الْمَاءِ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ۚ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُحْيٍ

तो वो हिलने लगती है और उभर आती है। यकीनन वो अल्लाह जिस ने ज़मीन को ज़िन्दा किया वो जरूर मुर्दों को ज़िन्दा

الْمُوتَى ۚ إِنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ

करने वाला है। यकीनन वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है। जो

يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ۚ أَفَمَنْ

हमारी आयतों में इल्हाद करते है वो हम पर मक्फी नहीं हैं। क्या फिर वो

يُلْقَى فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمْ مَنْ يَأْتِيَ آمِنًا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ

जो आग में डाला जाएगा वो बेहतर है या वो जो बेखौफ हो कर क़यामत के दिन आएगा?

اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ ۚ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ إِنَّ

जो चाहो कर लो, बेशक वो तुम्हारे आमाल को खूब देख रहा है। जिन

الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۚ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ

लोगों ने इस कुरआन के साथ कुफ्र किया जब के वो उन के पास आया। और ये तो मुअज्जज़

عَزِيزٌ ۚ لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ

किताब है। उस में न उस के आगे से बातिल आ सकता है और न उस के

وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۚ تَنْزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۝ مَا يُقَالُ

पीछे से। हिक्मत वाले क़बिले तारीफ अल्लाह की तरफ से उतारी गई है। आप से वही

لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ

कहा जाता है जो आप से पेहले पैग़म्बरों से कहा गया। बेशक आप का रब

لَدُوْكَ مَغْفِرَةٌ وَذُوْ عِقَابٍ ۖ اَلْيَوْمِ ۝ وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا

मुआफ करने वाला भी है और अलमनाक सज़ा देने वाला भी है। और अगर हम उस को अजमी कुरआन

أَعْجَبِيَّا لَّقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۚ ءَأَعْجَمِيٌّ

बनाते तो ज़रूर ये केहते के उस की आयतें तफ़सील से बयान क्यूं नहीं की गई? क्या ये (कुरआन) तो अजमी

وَعَرَبِيٌّ ۚ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ۚ

और (नबी) अरबी? आप फरमा दीजिए के ये कुरआन ईमान वालों के लिए हिदायत और शिफ़ा है।

وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِيْٓ أَذَانِهِمْ وَقُرْ وَهُوَ عَلَيْهِمْ

और जो ईमान नहीं लाते उन के कानों में डाट है, और ये कुरआन उन पर

عَسَىٰ ۚ أُولَٰئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۝

अन्धापा है। उन को पुकारा जाता है दूर जगह से।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ ۚ

हम ने ही मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी थी, फिर उस में इखतिलाफ किया गया।

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ

और अगर एक कलिमा तेरे रब की तरफ़ से पेहले से न होता तो उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता। और ये लोग

لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۚ

उस की तरफ़ से बहोत बड़े शक में हैं। जिस ने भला काम किया तो अपनी ही ज़ात के लिए।

وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝

और जिस ने बुरा काम किया तो वबाल उसी पर है। और तेरा रब बन्दों पर ज़रा भी जुल्म करने वाला नहीं।

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۖ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ شَرَاتٍ

अल्लाह ही की तरफ क़यामत का इल्म लौटाया जाता है। जो फल भी अपने खौलों से

مِنْ أَكْبَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَى وَلَا تَضَعُ

निकलते हैं और जो कोई मादा हामिला होती है और वज़अे हमल करती है वो सब ही

إِلَّا بِعِلْمِهِ ۖ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ إَيْنَ شُرَكَائِيَ ۖ قَالُوا

अल्लाह के इल्म से होता है। और जिस दिन अल्लाह उन को पुकारेगा के कहाँ हैं मेरे शुरका? तो वो कहेंगे

أَذْنُكَ ۖ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيدٍ ۖ وَصَلَّ عَنْهُمْ

हम आप से यही अर्ज़ करते हैं के हम में कोई मुद्दई नहीं। और उन से खो जाएंगे

مَا كَانُوا يَدْعُونَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُوا مَا لَهُمْ

वो जिन को इस से पेहले वो पुकारा करते थे और वो जान लेंगे के उन के लिए कोई बचने की

مِنْ مَّحِيصٍ ۖ لَا يَسْأَلُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ

राह नहीं है। इन्सान भलाई मांगने से थकता नहीं है।

وَإِنْ مَسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ۖ وَلَئِنْ أَدْقَنَهُ

और अगर उस को मुसीबत पहुँचे तो मायूस और नाउम्मीद हो जाता है। और अगर हम उसे चखाँ

رَحْمَةً مِّنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَسَتْهُ لَيَقُولَنَّ هَذَا

हमारी तरफ से मेहरबानी किसी तकलीफ के बाद जो उस को पहुँची थी, तो ज़रूर कहेगा के ये तो मेरे

لِيَ ۖ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً ۖ وَلَئِنْ رُجِعْتُ

लाइक़ है। और मैं क़यामत काइम होने वाली गुमान नहीं करता। और अगर मैं मेरे रब की तरफ लौटाया

إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِنْدَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۖ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا

भी गया तो मेरे लिए उस के पास भलाई ही होगी। फिर हम ज़रूर काफ़िरों को उन के

بِمَا عَمِلُوا ۖ وَلَنُذِيقَهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۖ

अमल बतलाएंगे। और हम उन्हें सख्त अज़ाब चखाँएंगे।

وَإِذَا أُنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَا بِجَانِبِهِ ۖ

और जब हम इन्सान पर इन्आम करते हैं तो वो पैराज़ करता है और अपना पेहलू दूर हटा लेता है।

وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ عَرِيضٍ ۖ قُلْ

और जब उसे तकलीफ पहुँचती है तो वो लम्बी दुआ करने वाला बन जाता है। आप फरमा दीजिए

أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ

के भला ये बतलाओ अगर ये कुरआन अल्लाह की तरफ़ से हो, फिर तुम उस के साथ कुफ़

بِهِ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ ۖ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾

करो तो उस से ज़्यादा गुमराह कौन है जो दूर वाली गुमराही में है?

سَأُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْأَفَاقِ وَفِي أَنْفُسِهِمْ

अनक़रीब हमारी आयतें हम उन्हें दिखाएंगे अतराफ़े आलम में, और खुद उन की ज़ात में,

حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّ الْحَقَّ ۖ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ

ताके उन के सामने वाज़ेह हो जाए के यही हक़ है। क्या आप के रब के लिए ये काफी नहीं है के वो

عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٥٣﴾ أَلَا إِنَّهُمْ فِي مَرِئَةٍ

हर चीज़ पर निगरान है? सुनो! यकीनन वो अपने रब की

مِنْ لِقَاءِ رَبِّهِمْ ۖ أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ﴿٥٤﴾

मुलाक़ात की तरफ़ से शक़ में हैं। सुनो! यकीनन वो हर चीज़ का इहाता किए हुवे है।

رُؤُوسُهَا ٥٣

(٢٢) سُورَةُ الشُّورَى مَكِّيَّةٌ (٦٢)

آيَاتُهَا ٥٣

और ५ रूकूअ हैं सूरह शूरा मक्का में नाज़िल हुई उस में ५३ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حَمِّ ۖ عَسَقٌ ۖ كَذَلِكَ يُوحَىٰ إِلَيْكَ

हों मीमा। ऐन सीन काफ़। इसी तरह अल्लाह वही भेजता है आप की तरफ

وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ ۖ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٥٥﴾ لَهُ

और उन (अम्बिया) की तरफ़ जो आप से पेहले थे। वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। उस की

مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَلِيُّ

मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में और ज़मीन में हैं। और वो बरतर है,

الْعَظِيمُ ۖ تَكَادُ السَّمُوتُ يَتَفَطَّرْنَ

बड़ा है। करीब है के आसमान फट जाएं

مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلَائِكَةُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ

उन के ऊपर से और फरिशते तस्बीह पढ़ रहे हैं अपने रब की हम्द के साथ

وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ ۗ إِلَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ
और ज़मीन वालों के लिए इस्तिगफार करते हैं। सुनो! यकीनन अल्लाह

هُوَ الْعَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا
बहुत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और वो लोग जिन्होंने अल्लाह के सिवा

مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِیْظٌ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَا أَنْتَ
हिमायती बना लिए हैं, तो अल्लाह उन की निगरानी कर रहा है। और आप

عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝ وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ
उन के ज़िम्मेदार नहीं। और हम ने इसी तरह आप पर कुरआने अरबी वही के ज़रिए से

قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّنُنذِرَ أُمَّ الْقُرَى وَمَنْ حَوْلَهَا
नज़िल किया है ताके आप डराएं मक्का वालों को और उन को जो उस के इर्द गिर्द हैं,

وَنُنذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ
और आप डराएं जमा होने के दिन से जिस में कोई शक नहीं। एक जमाअत जन्नत में होगी

وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ۝ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً
और एक जमाअत दोज़ख में होगी। और अगर अल्लाह चाहता तो उन को एक ही उम्मत

وَاحِدَةً وَلَٰكِنْ يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ
बना देता, लेकिन अल्लाह अपनी रहमत में दाखिल करता है जिसे चाहता है।

وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝
और ज़ालिमों के लिए कोई हिमायती और मददगार नहीं होगा।

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۚ فَاللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ
क्या उन्होंने ने अल्लाह के अलावा हिमायती बना लिए हैं? फिर अल्लाह वही कारसाज़ है

وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
और वो मुर्दों को ज़िन्दा करता है। और वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ۚ
और जिस चीज़ में भी तुम इखतिलाफ करो तो उस का फैसला अल्लाह के सुपुर्द है।

ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝
यही अल्लाह मेरा रब है, उसी पर मैं ने तवक्कुल किया। और उसी की तरफ मैं मुतवज्जेह होता हूँ।

فَاطَرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۖ جَعَلَ لَكُمْ

वो अल्लाह आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला है। उस ने तुम्हारे लिए खुद तुम्हीं

مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَرْوَاجًا وَمِنَ الْاَنْعَامِ اَرْوَاجًا ؕ

में से जोड़े बनाए और चौपाओं के जोड़े बनाए।

يَذَرُوْكُمْ فِيْهِ ۖ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ؕ وَهُوَ السَّمِيعُ

वो तज़वीज से तुम्हारी नस्लें चलाता है। कोई चीज़ उस की मिस्ल नहीं। और वो सुनने वाला,

الْبَصِيْرُ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ

देखने वाला है। उस के पास आसमानों और ज़मीन की कुन्जियाँ हैं। वो रोज़ी

الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ۚ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ

कुशादा करता है जिस के लिए चाहता है और तंग करता है जिस के लिए चाहता है। यकीनन वो हर चीज़ को खूब

عَلِيْمٌ ۝ شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصٰى بِهٖ

जानता है। अल्लाह ने तुम लोगों के वास्ते वही दीन मुकर्रर किया जिस का उस ने हुक्म दिया था नूह (अलैहिस्सलाम)

نُوْحًا وَّ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَا اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖ

को और जिस को हम ने आप के पास वही के ज़रिए भेजा है और जिस का हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

اِبْرٰهِيْمَ وَ مُوسٰى وَ عِيْسٰى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) और ईसा (अलैहिस्सलाम) को हुक्म दिया था के इसी दीन को काइम रखना

وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ۚ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ

और उस में तुम तफरका मत डालना। मुशरिकीन पर भारी है वो जिस की

مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ۚ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَن يَّشَآءُ

तरफ आप उन को बुलाते हैं। अल्लाह अपनी तरफ मुन्तखब करते हैं जिसे चाहते हैं

وَ يَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَن يُّنِيبُ ۝ وَمَا تَفَرَّقُوْا

और अपनी तरफ हिदायत देते हैं उसी को जो मुतवज्जेह होता है। और वो अलग अलग फिरके नहीं बने

اِلَّا مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۚ بَيْنَهُمْ

मगर इस के बाद के उन के पास इल्म आया उन की आपस की ज़िद की वजह से।

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّفُضِيَ

और अगर एक बात तेरे रब की तरफ से पेहले से न हो चुकी होती एक मुकर्रर किए हुए आखिरी वक़्त तक की तो उन के

بَيْنَهُمْ ۖ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكِتَابَ

दरमियान फेसला कर दिया जाता। और वो जो किताब के वारिस बनाए गए

مِنْ بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٌ ۝ فَلِذَلِكَ فَادْعُ

उन के बाद अलबत्ता वो उस की तरफ से बड़े शक में हैं। तो उसी दीन की तरफ आप दावत दीजिए।

وَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ ۚ وَقُلْ

और आप इस्तिqामत इख्तियार कीजिए जैसा आप को हुक्म दिया गया है। और उन की ख्वाहिशत के पीछे न चलिए। और

أَمَنْتُ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ كِتَابٍ ۚ وَأُمِرْتُ لِإِعْدِلَ

यूँ कहिए के मैं ईमान लाया उस किताब पर जो अल्लाह ने उतारी है। और मुझे हुक्म दिया गया है के मैं तुम्हारे

بَيْنَكُمْ ۚ اللَّهُ رَبُّنَا وَ رَبُّكُمْ ۚ لَنَا أَعْمَالُنَا

दरमियान इन्साफ करूँ। अल्लाह हमारा और तुम्हारा रब है। हमारे लिए हमारे आमाल हैं

وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۚ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ ۚ اللَّهُ

और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं। हमारे और तुम्हारे दरमियान कोई बहस नहीं है। अल्लाह

يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَالِيهِ الْبَصِيرُ ۝ وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ

हमें इकट्ठा करेगा। और उसी की तरफ लौटना है। और जो हुज्जतबाज़ी करते हैं

فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتُجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ

अल्लाह के बारे में इस के बाद के अल्लाह को मान लिया गया, उन की हुज्जत

دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ ۚ وَلَهُمْ

उन के रब के यहाँ बातिल है, और उन पर गज़ब है और उन के लिए

عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝ اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ

सख्त अज़ाब है। अल्लाह ही ने किताब उतारी

بِالْحَقِّ وَالْبَيْزَانِ ۚ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ

हक के साथ और मीज़ान को उतारा। और आप को क्या खबर, अजब नहीं के क़्यामत

قَرِيبٌ ۝ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۚ

क़रीब हो। उस को जल्दी तलब कर रहे हैं वो जो क़्यामत पर ईमान नहीं रखते।

وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا ۚ وَ يَعْلَمُونَ أَنَّهَا

और जो ईमान वाले हैं वो उस से डरते हैं। और समझते हैं के वो

الْحَقُّ ۖ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ हक है। सुनो! यकीनन वो जो कयामत के बारे में झगड़ा कर रहे हैं
لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝ اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ अलबत्ता वो दूर की गुमराही में हैं। अल्लाह अपने बन्दों पर महरबान है, रोज़ी देता है
مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝ مَنْ كَانَ जिस को चाहता है। और वो कूबत वाला, ज़बर्दस्त है। जो आखिरत
يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ ۚ وَمَنْ की खेती चाहेगा तो हम उस के लिए उस की खेती में ज़्यादती करेंगे। और जो
كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا ۖ وَمَا لَهُ दुनिया की खेती चाहेगा तो हम उस को उस में से कुछ दे देंगे। और उस के लिए
فِي الْآخِرَةِ مِنْ تَصِيَّبٍ ۝ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا आखिरत में कोई हिस्सा नहीं होगा। क्या उन के लिए शुरका हैं जिन्होंने उन के
لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنُ بِهِ اللَّهُ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةُ लिए दीन में कोई शरीअत बनाई है वो जिस का अल्लाह ने हुक्म नहीं दिया? और अगर कौले फैसल
الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۖ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ न हुवा होता तो उन के दरमियान फैसला कर दिया जाता। और यकीनन ज़ालिम लोगों के लिए
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ दर्दनाक अज़ाब है। आप ज़ालिम लोगों को देखोगे के डर रहे होंगे
مِمَّا كَسَبُوا وَهُوَ وَاقِعٌ بِهِمْ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا अपने करतूत से और वो उन पर पड़ कर रहेगा। और जो ईमान लाए और नेक काम
الصَّالِحَاتِ فِي رَوْضَتِ الْجَنَّةِ ۚ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ करते रहे वो जन्नतों के बागात में होंगे। उन के रब के पास उन के लिए वो नेअमते
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝ ذَلِكَ الَّذِي होंगी जो वो चाहेंगे। ये बड़ा भारी फज़ल है। उसी की
يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ अल्लाह अपने बन्दों को खुशखबरी देता है, उन को जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे।

قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ

आप फरमा दीजिए के मैं तुम से उस पर सिवाए रिश्तेदारी की महबूत के किसी अज्र का सवाल नहीं करता।

وَمَنْ يَفْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيهَا حُسْنًا إِنَّ اللَّهَ

और जो नेकी करेगा तो हम उस की नेकी में खूबी ज़्यादा कर देंगे। यकीनन अल्लाह

غَفُورٌ شَكُورٌ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا

बहुत ज़्यादा बख्शने वाला, कदरदान है। क्या ये केहते हैं के इस नबी ने अल्लाह पर झूठ घड़ा?

فَإِنْ يَشَأْ اللَّهُ يُخْتِمْ عَلَىٰ قَلْبِكَ ۖ وَيَبْحُ اللَّهُ

फिर अगर अल्लाह चाहता तो आप के दिल पर मुहर लगा देता। और अल्लाह बातिल को

الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ

मिटाते हैं और हक को अपने अहकाम से साबित किया करते हैं। यकीनन वो दिलों के हाल को

بِذَاتِ الصُّدُورِ ۖ وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ

खूब जानने वाले हैं। और वही अल्लाह अपने बन्दों की तौबा

عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ

कबूल करता है और गुनाह मुआफ करता है और जानता है वो जो

مَا تَفْعَلُونَ ۝ وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا

तुम करते हो। और अल्लाह उन की दुआ कबूल करता है जो ईमान लाए और नेक काम

الصَّالِحَاتِ وَ يَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۖ وَالْكَافِرُونَ

करते रहे और उन को अपने फज़ल से मज़ीद देता है। और काफ़िरों के

لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ

लिए सख्त अज़ाब होगा। और अगर अल्लाह रोज़ी कुशादा कर दे अपने सब बन्दों के लिए

لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ يُنْزِلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ ۖ

तो वो ज़मीन में बागी बन जाएं, लेकिन अल्लाह एक मिक़दार से उतारता है जितनी चाहता है।

إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ۖ وَهُوَ الَّذِي يُنْزِلُ

यकीनन वो अपने बन्दों से बाख़बर है, देखने वाला है। और वही अल्लाह है जो बारिश

الْغَيْثِ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَ يَنشُرُ رَحْمَتَهُ ۖ وَهُوَ

उतारता है इस के बाद के वो मायूस हो जाते हैं और वो अपनी रहमत फैलाता है। और वो

الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٨﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمُوتِ

काबिले तारीफ कारसाज़ है। और अल्लाह की आयात में से आसमानों और ज़मीन और

وَالْأَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيهِمَا مِنْ دَابَّةٍ ۖ وَهُوَ

उन जानदारों का पैदा करना है जो उस ने ज़मीन व आसमान में फैलाए हैं। और वो

عَلَى جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾ وَمَا أَصَابَكُمْ

उन के इकठ्ठा करने पर जब चाहे कादिर है। और तुम्हें जो मुसीबत पहोंचे तो वो

مِّن مَّقْصِيْبَةٍ فِيمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٠﴾

तुम्हारे उन आमाल की वजह से है जो तुम्हारे हाथों ने किए और बहोत से गुनाह अल्लाह मुआफ़ कर देते हैं।

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَا لَكُمْ

और तुम ज़मीन में (भाग कर) अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते। और तुम्हारे लिए अल्लाह

مِّن دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٣١﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ

के सिवा कोई कारसाज़ और मददगार नहीं। और अल्लाह की आयात में से समन्दर में चलने वाली

فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٣٢﴾ إِنْ يَشَأْ يُسْكِنِ الرِّيحَ فَيَظْلَلْنَ

पहाड़ों जैसी कशतियाँ हैं। अगर अल्लाह चाहे तो हवा को ठेहरा दे, फिर वो (कशतियाँ) समन्दर

رَوَاكِدَ عَلَى ظُهُرِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّكُلِّ صَبَّارٍ

की पुश्त पर ठेहरी रेह जाएं। यकीनन उस में हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए अलबत्ता

شَكُورٍ ﴿٣٣﴾ أَوْ يُوقِفَهُنَّ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ

निशानियाँ हैं। या उन को उन के करतूत की बिना पर हलाक कर दे, और बहोत सों को अल्लाह मुआफ़

عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٤﴾ وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا

कर देते हैं। और अल्लाह जानता है उन को जो झगड़ा करते हैं हमारी आयतों में।

مَا لَهُمْ مِنْ مَّحِيصٍ ﴿٣٥﴾ فَمَا أُوتِيتُمْ مِّن شَيْءٍ فَمَتَّاعٌ

उन के लिए कोई छूटने का रास्ता नहीं। सो जो कुछ तुम को दिया दिलाया गया है वो महज़ दुन्यवी ज़िन्दगी के

الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى لِلَّذِينَ

बरतने के लिए है। और जो अल्लाह के पास है वो बेहतर है और ज़्यादा बाकी रेहने वाला है उन लोगों के लिए

أَمَنُوا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٣٦﴾ وَالَّذِينَ يَحْتَبِرُونَ

जो ईमान लाए और अपने रब पर तवक्कूल करते हैं। और जो गुनाहों में से बड़े गुनाहों से

كَبِيرِ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشِ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ﴿۶۷﴾

और बेहयाई के कामों से बचते हैं और जब उन्हें गुस्सा आता है तो मुआफ कर देते हैं।

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۖ وَأَمْرُهُمْ

और जो अपने रब की बात मान लेते हैं और नमाज़ काइम करते हैं। और उन का काम आपस के

شُورَى بَيْنَهُمْ ۖ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿۶۸﴾ وَالَّذِينَ

मशवरे से होता है। और हम ने जो कुछ उन को दिया है वो उस में से खर्च करते हैं। और जो ऐसे हैं

إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ ﴿۶۹﴾ وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ

के जब उन पर जुल्म वाकेअ होता है तो वो बराबर का बदला लेते हैं। और एक बुराई का बदला

سَيِّئَةٍ مِّثْلُهَا ۖ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ

उसी जैसी एक बुराई है। लेकिन जो मुआफ कर दे और इस्लाह कर ले तो उस का सवाब

عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿۷۰﴾ وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ

अल्लाह के ज़िम्मे है। यकीनन अल्लाह ज़ालिमों से महबबत नहीं करता। और जो अपने ऊपर जुल्म हो चुकने के बाद

ظُلْمِهِ فَأُولَٰئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيلٍ ﴿۷۱﴾ إِنَّمَا السَّبِيلُ

बराबर का बदला ले लें, सो ऐसे लोगों पर कोई इलज़ाम नहीं है। इलज़ाम तो सिर्फ

عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ

उन पर है जो इन्सानों पर जुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक सरकशी

بِغَيْرِ الْحَقِّ ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿۷۲﴾ وَلَمَنِ صَبَرَ

करते हैं। उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। और जो शख्स सब्र करे

وَغَفَرَ إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿۷۳﴾ وَمَنْ يُضْلِلِ

और मुआफ कर दे ये अलबत्ता हिम्मत के कामों में से है। और जिस को अल्लाह गुमराह

اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْ بَعْدِهِ ۖ وَتَرَى الظَّالِمِينَ

कर दे उस के लिए उस के बाद कोई कारसाज़ नहीं। और आप ज़ालिमों को देखोगे

لَمَّا سَأَوْا الْعَذَابَ يَقُولُونَ هَلْ إِلَىٰ مَرَدٍّ

के जब वो अज़ाब को देखेंगे तो कहेंगे के क्या कोई पलटने का

مِّنْ سَبِيلٍ ﴿۷۴﴾ وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خَشِيعِينَ مِّنْ

रास्ता है? और तुम उन को देखोगे के वो दोज़ख पर पेश किए जाएंगे, आजिजी कर रहे होंगे ज़िल्लत

الَّذِلَّ يَنْظُرُونَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ وَقَالَ الَّذِينَ

की वजह से, आँखों के किनारों से देख रहे होंगे। और ईमान वाले

أَمَنُوا إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ

कहेंगे के यकीनन खसारे वाले वही लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों और

وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ

अपने घर वालों को क़यामत के दिन खसारे में डाला। सुनो! यकीनन ज़ालिम लोग

فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ ۝ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ أَوْلِيَاءَ

दाइमी अज़ाब में होंगे। और उन के लिए कोई हिमायती नहीं होंगे

يَنْصُرُونَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ

जो अल्लाह के सिवा उन की नुसरत करें। और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे

فَمَا لَهُ مِنْ سَبِيلٍ ۚ ۝ اسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُمْ

उस के लिए कोई रास्ता नहीं। तुम अपने रब की बात मान लो

مَنْ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ ۖ مَا لَكُمْ

इस से पेहले के अल्लाह की तरफ से वो दिन आ जाए जिस को लौटाया नहीं जा सकेगा। तुम्हारे लिए

مَنْ مَلَجَا يَوْمَئِذٍ ۖ وَمَا لَكُمْ مِنْ تَكْوِينٍ ۚ

उस दिन कोई पनाह लेने की जगह नहीं होगी और तुम्हारे लिए कोई रोकने वाला नहीं होगा।

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَفِظًا ۖ إِنْ عَلَيْكَ

फिर अगर वो ऐराज़ करें तो हम ने आप को उन पर निगराँ बना कर नहीं भेजा। आप के ज़िम्मे तो

إِلَّا الْبَلَاغُ ۖ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً

सिर्फ़ पहुँचा देना है। और जब हम इन्सान को अपनी तरफ़ से रहमत (का लुफ़) चखाते हैं तो वो उस पर

فَرِحَ بِهَا ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۖ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ

इतराने लगता है। और अगर उन्हें मुसीबत पहुँचती है उन आमाँल की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे

فَإِنَّ الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ۝ لِلَّهِ مُلْكُ السَّمُوتِ

तो यकीनन इन्सान नाशुकरा बन जाता है। अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की

وَالْأَرْضِ ۖ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۖ يَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ إِنَّا

सल्लतनत है। वो पैदा करता है जो चाहता है। जिसे चाहता है बेटियाँ देता है

وَيَهَبُ لِمَن يَشَاءُ الذُّكُورَ ۖ أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا

और जिसे चाहता है बेटे देता है। या उन के लिए बेटे और बेटियाँ दोनों इकठ्ठे कर

وَإِنَّا نَآءٌ وَيَجْعَلُ مَنْ يَشَاءُ عَقِيمًا ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝

देता है। और जिसे चाहता है बांझ बनाता है। यकीनन वो इल्म वाला, कुदरत वाला है।

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ

और किसी इन्सान की ताकत नहीं के वो अल्लाह से कलाम करे मगर वही से या

مِنْ وَرَآئِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ

पर्दे के पीछे से या पैगाम पहुँचाने वाले (फ़रिश्ते) को भेजे, फिर वो अल्लाह के हुक्म से वही लाता है

مَا يَشَاءُ ۖ إِنَّهُ عَلَىٰ حَكِيمٍ ۝ وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا

जो अल्लाह चाहता है। यकीनन वो बरतर है, हिक्मत वाला है। और इसी तरह हम ने आप के पास वही

إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۖ مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ

यअनी अपना हुक्म भेजा। आप नहीं जानते थे के किताब क्या है

وَلَا الْإِيمَانُ وَلَكِنْ جَعَلْنَاهُ نُورًا تَهْدِي بِهِ مَنْ

और न ईमान (जानते थे), लेकिन हम ने उस को नूर बनाया, हम उस के ज़रिए हिदायत देते हैं

نَشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا ۖ وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطٍ

जिसे हमारे बन्दों में से चाहते हैं। और यकीनन आप सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई

مُسْتَقِيمٍ ۖ صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ

कर रहे हैं। उस अल्लाह के रास्ते की तरफ जिस की मिल्क हैं वो तमाम चीजें जो

وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ آلَا إِلَى اللَّهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ ۝

आसमानों में और ज़मीन में हैं। सुनो! अल्लाह ही की तरफ तमाम उमूर लौटते हैं।

رُكُوعًا ۚ (٢٣) سُورَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ (٦٣) وَإِلَآئِهَا ٨٩

और ७ रुकूअ हैं सूरह जुखरुफ़ मक्का में नाज़िल हुई उस में ८६ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حَمْدٌ ۝ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْءَانًا

हों मीमा। साफ साफ बयान करने वाली किताब की कसम! यकीनन हम ने उसे अरबी वाला कुरआन

عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ وَإِنَّهُ فِي أُمِّ الْكِتَابِ

बनाया है ताके तुम अक्ल से काम लो। यकीनन ये हमारे पास लौहे महफूज़ में है,

لَدَيْنَا لَعَلِّي حَكِيمٌ ۝ أَفَنَضْرِبُ عَنْكُمْ الذِّكْرَ صَفْحًا

बहोत ही बुलन्द मर्तबा, हिक्मत वाली किताब है। क्या हम तुम से इस ज़िक्र (कुरआन) को हटा देंगे

أَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ۝ وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ نَبِيِّ

इस वजह से के तुम हद से आगे बढ़ने वाली कौम हो? और हम ने पेहले लोगों में बहोत से

فِي الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ نَبِيِّ إِلَّا كَانُوا بِهِ

नबी भेजे। और कोई नबी उन के पास नहीं आता था मगर वो उस के साथ मज़ाक

يَسْتَهْزِءُونَ ۝ فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَوَضَعْنَا

करते थे। फिर हम ने हलाक कर दिया उन से भी मज़बूत पकड़ वालों को, और पेहले लोगों

مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

का हाल पीछे गुज़र चुका है। और अगर आप उन से पूछें के किस ने आसमानों और ज़मीन को

وَالْأَرْضِ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ الَّذِي

पैदा किया, तो वो ज़रूर कहेंगे के उन को पैदा किया उस अल्लाह ने जो ज़बर्दस्त है, इल्म वाला है। वो अल्लाह

جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا

जिस ने ज़मीन को फर्श बनाया और जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन में रास्ते बनाए

لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً

ताके तुम राह पाओ। और वो जिस ने आसमान से एक मिक्दार से पानी

بِقَدَرٍ فَأَنْشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيِّتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُونَ ۝

उतारा। फिर हम उस से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करते हैं। इसी तरह तुम भी कब्रों से निकाले जाओगे।

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمُ

और वही है अल्लाह जिस ने तमाम जोड़े पैदा किए और जिस ने तुम्हारे लिए कशतियों में

مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ۚ لِتَسْتَوُوا عَلَى ظُهُورِهِ

और चौपाओं में से वो बनाए जिन पर तुम सवारी करते हो। ताके तुम उन की पीठों पर बराबर सवार हो जाओ,

ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَ

फिर तुम अपने रब की नेअमत को याद करो जब तुम उस पर बराबर बैठ जाओ और

تَقُولُوا سُبْحَنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ

कहो वो अल्लाह पाक है जिस ने हमारे लिए इस को ताबेअ किया और हम उस को काबू में कर नहीं

مُقَرَّنِينَ ۝ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ۝ وَجَعَلُوا لَهُ

सकते थे। और यकीनन हम अपने रब की तरफ लौट कर जाने वाले हैं। और उन्होंने ने अल्लाह के लिए

۝

مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا ۝ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ۝

उस के बन्दों में से जुजुअ (औलाद) करार दिए। यकीनन इन्सान अलबत्ता खुला नाशुकरा है।

أَمْ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَكُمْ بِالْبَنِينَ ۝

क्या उस ने (खुद) अपनी मखलूक में से बेटियाँ लीं और तुम्हें बेटे मुन्तखब कर के दिए?

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَنِ مَثَلًا ظَلَّ

हालांके जब उन में से किसी एक को बशारत दी जाती है उस की जिस के साथ वो रहमान के लिए मिसाल बयान करता है (लड़की),

وَجْهَهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝ أَوْ مِنْ يُنْشَأُ

तो उस का चेहरा सियाह हो जाता है और वो दिल में घुटने लगता है। क्या वो बच्ची जो परवरिश पाती है

فِي الْحُلِيِّ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ۝ وَجَعَلُوا

जेवर में और आपस के झगड़े में वो साफ बोल नहीं सकती। और उन्होंने ने उन

الْبَلَايَةِ الَّذِينَ هُمْ عَبْدُ الرَّحْمَنِ إِنَّا ۝ أَشْهَدُوا

फरिशतों को जो रहमान के बन्दे हैं औरतें बना दिया। क्या वो उन की पैदाइश के वक्त

خَلَقَهُمْ ۝ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ۝ وَقَالُوا

मौजूद थे? अनकरीब उन की शहादत लिखी जाएगी और उन से सवाल किया जाएगा। और ये केहते हैं

لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ ۝ مَا لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ

के अगर रहमान चाहता तो हम उन की इबादत न करते। उन की उस पर कोई दलील नहीं।

إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ أَمْ اتَّيْنَهُمْ كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ

वो तो सिर्फ अटकल से बातें कर रहे हैं। क्या हम ने उन को किताब दी इस से पेहले,

فَهُمْ بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ۝ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا

फिर वो उस को मज़बूती से पकड़े हुए हैं? बल्के उन्होंने ने कहा के यकीनन हम ने हमारे बाप दादा

عَلَىٰ أُمَمٍ ۝ وَإِنَّا عَلَىٰ أَثَرِهِمْ مُهْتَدُونَ ۝ وَكَذَلِكَ مَا

को पाया एक तरीके पर और हम उन्ही के निशानाते क़दम पर राह पा रहे हैं। और इसी तरह हम

أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّنْ تَذِيرٍ إِلَّا قَالَ

ने आप से पेहले किसी बस्ती में कोई डराने वाला नहीं भेजा, मगर वहाँ के खुशहाल

مُتْرَفُوهُمْ ۖ إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا

लोगों ने कहा के यकीनन हम ने हमारे बाप दादा को एक तरीके पर पाया और हम उन के निशानाते कदम

عَلَىٰ أَثَرِهِمْ مُّقْتَدُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ أَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِأَهْدَىٰ

की पैरवी कर रहे हैं। नबी ने कहा क्या अगर्चे मैं तुम्हारे पास इस से ज़्यादा हिदायत वाली चीज़ ले कर

مِمَّا وَجَدْتُمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ ۖ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ

आया हूँ जिस पर तुम ने तुम्हारे बाप दादा को पाया? उन्होंने ने कहा के हम यकीनन उस के साथ कुफ़ करते हैं जिस को

كُفْرُونَ ﴿٢٤﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَنْظَرُ كَيْفَ كَانَ

दे कर तुम भेजे गए हो। फिर हम ने उन से इन्तिकाम लिया, तो आप देखिए के झुठलाने वालों का

عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٥﴾ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ

अन्जाम कैसा हुवा? और जब के इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अपने बाप से

وَقَوْمِهِ إِنِّي أَبْرَأُ مِمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٢٦﴾ إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي

और अपनी कौम से के मैं बरी हूँ उन चीज़ों से जिन की तुम इबादत करते हो। मगर वो अल्लाह जिस ने मुझे पैदा किया,

فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ﴿٢٧﴾ وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً

यकीनन वही अनकरीब मुझे रास्ता दिखाएगा। और उस को अल्लाह ने बाकी रहेने वाला कलिमा बनाया

فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾ بَلْ مَتَّعْتُ هَؤُلَاءِ

उन की जुरीयत में ताके वो रूजूअ करें। बल्के मैं ने उन्हें और उन के बाप दादा को

وَ آبَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿٢٩﴾

मुतमत्तेअ किया यहाँ तक के उन के पास हक़ आया और साफ़ साफ़ बयान करने वाला पैग़म्बर आया।

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٠﴾

और जब उन के पास हक़ आया तो उन्होंने ने कहा के ये जादू है और हम उस के साथ कुफ़ करते हैं।

وَ قَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ

और उन्होंने ने कहा के ये कुरआन उन दो बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर

مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ ﴿٣١﴾ أَهَمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۖ

क्यूं नहीं उतारा गया? क्या ये तेरे रब की रहमत तक़सीम करते हैं?

وَقَوْمِهِ

نَحْنُ قَسَمًا بَيْنَهُمْ مَعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

हम ने उन के दरमियान उन की रोज़ी दुन्यवी ज़िन्दगी में तक्सीम की है,

وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ

और हम ने उन में से एक को दूसरे पर दरजात के एतेबार से बुलन्द किया है ताके एक

بَعْضًا سَخِرَآءٌ وَرَحِمْتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٣١﴾

दूसरे से काम लेता रहे। और तेरे रब की रहमत बेहतर है उस से जिसे ये जमा कर रहे हैं।

وَلَوْلَا أَن يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ

और अगर ये बात न होती के तमाम इन्सान एक ही तरह के बन जाएंगे तो रहमान के साथ जो

بِالرَّحْمَنِ لِبُيُوتِهِمْ سُقْفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا

क़ुफ़ करते हैं हम उन के घर की छतें चाँदी की और सीढ़ियाँ चाँदी की बना देते, जिन पर

يُظْهِرُونَ ﴿٣٢﴾ وَلِبُيُوتِهِمْ أَبْوَابًا وَسُرُورًا عَلَيْهَا

वो चढ़ते हैं। और उन के घरों के दरवाज़े और तख्त जिन पर

يَتَكُونُونَ ﴿٣٣﴾ وَزُحُرْفًا وَإِن كُنتَ لَبِأَمْتًا مَّتَاعُ الْحَيَاةِ

वो टेक लगाते हैं चाँदी के बना देते। और (ये सब चीज़ें) सौने की बना देते। और ये तमाम तो सिर्फ दुन्यवी ज़िन्दगी का

الدُّنْيَا وَالْآخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾ وَمَن

थोड़ा नफ़ा उठाने की चीज़ें हैं। और आखिरत तेरे रब के नज़दीक मुत्तकियों के लिए बेहतर है। और जो

يَعِشْ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نُقِصْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ

रहमान के ज़िक्र से अन्धा बनता है तो हम उस के लिए एक शैतान मुक़रर कर देते हैं, फिर वो उस का

قَرِينٌ ﴿٣٥﴾ وَإِنَّهُمْ لَيَصُدُّونَهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ

साथी बन जाता है। और ये उन्हें रास्ते से रोकते हैं और ये लोग समझते

أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٣٦﴾ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ يَلَيْتَ بَيْنِي

हैं के हम हिदायत पर हैं। यहाँ तक के जब वो हमारे पास आएगा तो कहेगा काश के मेरे

وَ بَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِينُ ﴿٣٧﴾

और तेरे दरमियान मशरिक व मगरिब की दूरी होती, तू कितना बुरा साथी है!

وَلَن يَنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ إِذ ظَلَمْتُمْ أَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ

और आज तुम्हें हरगिज़ नफ़ा नहीं देगी जब तुम ने शिर्क किया ये बात के तुम अज़ाब में

مُشْتَرِكُونَ ﴿٢٩﴾ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْىَ

शरीक हो। क्या आप बेहरे को सुना सकते हो या अन्धे को रास्ता दिखा सकते हो

وَمَنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾ فَأَمَّا نَذَاهِبَنَّ بِكَ

और उस शख्स को जो खुली गुमराही में है? फिर अगर हम आप को (दुनिया से) ले जाएं

فَأَنَا مِنْهُمْ مُنتَقِمُونَ ﴿٣١﴾ أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ

फिर भी हम उन से इन्तिकाम लेने वाले हैं। या हम आप को दिखा दें वो जिस का हम ने उन से वादा किया है,

فَأَنَا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُونَ ﴿٣٢﴾ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ

तो हमें उन पर कुदरत है। फिर आप मजबूत थामे रहिए उस को जो आप की तरफ वही

إِلَيْكَ ۚ إِنَّكَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٣٣﴾ وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ

किया गया। यकीनन आप सीधे रास्ते पर हैं। और ये आप के लिए और आप की कौम

وَ لِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ ﴿٣٤﴾ وَسَّأَلَ مَنْ أَرْسَلْنَا

के लिए नसीहत है। और आगे तुम से सवाल किया जाएगा। और आप हमारे पैगम्बरों से पूछ लीजिए

مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا ۚ أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ

जिन को हम ने आप से पेहले भेजा। क्या हम ने रहमान के सिवा माबूद बनाए हैं

الِهَةَ يُعْبَدُونَ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا

जिन की इबादत की जाए? यकीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को हमारे मोअजिजात दे कर भेजा फिरऔन

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٦﴾

और उस के सरदारों की जानिब तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं रब्बुल आलमीन का भेजा हुवा पैगम्बर हूँ।

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا يَضْحَكُونَ ﴿٣٧﴾ وَمَا نُرِيهِمْ

फिर जब वो उन के पास हमारे मोअजिजात ले कर आए तो वो उस से हंसने लगे। और हम उन्हें कोई मोअजिजा

مِّنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهِنَّ ۚ وَآخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ

नहीं दिखाते थे मगर वो उन के साथ वाले मोअजिजे से बड़ा होता था। और हम ने उन्हें अज़ाब में पकड़ लिया

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٣٨﴾ وَقَالُوا يَا أَيُّهُ السَّجْرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ

ताके वो रूजूअ करें। और उन्होंने ने कहा के ऐ जादूगर! तू हमारे लिए अपने रब से दुआ कर

بِمَا عَاهَدَ عِنْدَكَ ۚ إِنَّنَا لَمُهْتَدُونَ ﴿٣٩﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا

उस का वास्ता दे कर जो अहद उस ने तुझ से कर रखा है। हम हिदायत कबूल कर लेंगे। फिर जब हम

عَمَّهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُتُونَ ﴿٥٠﴾ وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ

उन से वो अज़ाब हटा देते तो उस वक़्त वो अहदशिकनी करने लगते। और फिरऔन ने अपनी कौम

فِي قَوْمِهِ قَالَ يَقَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَذِهِ

में आवाज़ लगाई, उस ने कहा के ऐ मेरी कौम! क्या मेरे लिए मिस्र की सल्तनत

الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾ أَمْ أَنَا

और ये नेहरें नहीं हैं जो मेरे नीचे से बेहती हैं? क्या फिर तुम देखते नहीं हो? बल्के मैं

خَيْرٌ مِّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَرِيئٌ ۚ وَلَا يَكَادُ يُبَيِّنُ ﴿٥٢﴾

बेहतर हूँ उस शख्स से जो ज़लील है और साफ बोल भी नहीं सकता?

فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ

फिर उस पर सौने के कंगन क्यों नहीं डाले गए या उस के साथ फरिशते सफ बांध कर

الْمَلَائِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَطَاعُوهُ ۖ

क्यों नहीं आए? गर्ज उस ने अपनी कौम को मग़लूब कर दिया, फिर भी उन्होंने ने उस की इताअत कर ली।

إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِقِينَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّا اسْفُوتَا اتَّقَمْنَا

इस लिए के वो नाफरमान कौम थी। फिर जब उन्होंने ने हमें गुस्सा दिलाया तो हम ने उन से

مِّنْهُمْ فَأَعْرِفْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾ فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا

इन्तिक़ाम लिया, फिर हम ने उन तमाम को गर्क कर दिया। फिर हम ने उन को गुज़श्ता कौम और पीछे वालों के लिए

لِّلْآخَرِينَ ﴿٥٦﴾ وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ

۞

इबरत बना दिया। और जब ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) की मिसाल बयान की गई, तो अचानक आप की कौम

مِّنْهُ يَصِدُّونَ ﴿٥٧﴾ وَقَالُوا ۖ آلِهَتُنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ

उस से शोर मचाने लगी। और वो बोले के क्या हमारे माबूद बेहतर हैं या ईसा?

مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۖ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ﴿٥٨﴾

वो आप के सामने सिर्फ झगड़े के लिए ये मिसाल बयान करते हैं। बल्के वो झगड़ालू कौम ही है।

إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِّبَنِي

ईसा (अलैहिस्सलाम) तो एक बन्दा है, जिस पर हम ने इन्आम किया और जिस को हम ने बनी इस्राईल के

إِسْرَآئِيلَ ﴿٥٩﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلَآئِكَةً فِي

लिए मिसाल बनाया। और अगर हम चाहते तो हम तुम में से फरिशते बनाते के

الْأَرْضِ يَخْلُقُونَ ﴿١٠﴾ وَإِنَّهُ لَعَلُّمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَ

वो ज़मीन पर यके बाद दीगरे रहा करते। और यकीनन ईसा इब्ने मरयम (अलैहस्सलाम) ये क़यामत की निशानी हैं, इस लिए

بِهَا وَاتَّبِعُونِ هَذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿١١﴾ وَلَا يَصُدَّنَّكُمْ

तुम लोग क़यामत के बारे में शक न करो और तुम मेरे हुक्म पर चलो। ये सीधा रास्ता है। और तुम्हें शैतान न

الشَّيْطَانُ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿١٢﴾ وَ لَمَّا جَاءَ عِيسَى

रोके, यकीनन वो तुम्हारा खुला दुश्मन है। और जब ईसा (अलैहस्सलाम) रोशन मोअजिज़ात ले कर आए

بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُمْ

तो ईसा (अलैहस्सलाम) ने फरमाया के यकीनन मैं तुम्हारे पास हिक्मत ले कर आया हूँ और ताके मैं तुम्हारे सामने

بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا

साफ़ बयान करूँ उस का कुछ हिस्सा जिस में तुम इखतिलाफ़ कर रहे हो। तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۖ هَذَا صِرَاطٌ

यकीनन अल्लाह वही मेरा और तुम्हारा रब है, तो तुम उसी की इबादत करो। ये सीधा

مُسْتَقِيمٌ ﴿١٣﴾ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۚ

रास्ता है। तो उन में से गिरोह अलग अलग हो गए।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابٍ يَوْمِ الْيَوْمِ ﴿١٤﴾ هَلْ

फिर ज़ालिमों के लिए दर्दनाक दिन के अज़ाब से हलाकत है। वो

يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ

मुन्तज़िर नहीं हैं मगर क़यामत के के एक दम उन के पास आ जाए और उन्हें

لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٥﴾ الْإِخْلَاءَ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ

पता भी न हो। सिवाए मुत्तकियों के उस दिन दोस्त एक दूसरे के दुश्मन

إِلَّا الْمُتَّقِينَ ﴿١٦﴾ يُعْبَادُ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ

होगे। ऐ मेरे बन्दो! आज तुम पर कोई खौफ नहीं है और न तुम

تَحْزَنُونَ ﴿١٧﴾ الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿١٨﴾

ग़मगीन होंगे। वो जो ईमान लाए हमारी आयतों पर और जो मुसलमान थे।

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَ أَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ﴿١٩﴾ يُطَافُ

(कहा जाएगा) तुम और तुम्हारी बीवियाँ शादां व फरहां जन्नत में दाखिल हो जाओ। उन पर

عَلَيْهِمْ بِصَحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ۚ وَفِيهَا	और उस में
سौने के लगन और प्यालों का दौर चलेगा।	
مَا تَشْتَهِيهِ الْإِنْفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۚ وَأَنْتُمْ فِيهَا	और तुम उस में
वो चीज़ें होंगी जिस की नफ्स खाहिश करेंगे और जिस से आँखें लज्जत पाएंगी।	
خُلِدُونَ ۖ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ	हमेशा रहोगे। और ये वो जन्नत है जिस का तुम्हें अपने अमल की बदौलत वारिस बनाया
تَعْمَلُونَ ۖ لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِّمَّا تَأْكُلُونَ ۖ	गया है। तुम्हारे लिए यहाँ बकस्रत मेवे हैं, जिन में से तुम खाओ।
إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ جَهَنَّمَ خُلِدُونَ ۖ	यकीनन मुजरिम लोग जहन्नम के अज़ाब में हमेशा रहेंगे।
لَا يُفْتَرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ۖ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ	वो उन से हल्का नहीं किया जाएगा और वो उस में मायूस पड़े रहेंगे। और हम ने उन पर जुल्म नहीं किया
وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ۖ وَنَادُوا يٰمَالِكُ لِيَقْضِ	लेकिन वो खुद ही ज़ालिम थे। और वो पुकारेंगे ऐ मालिक! तेरे रब को
عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُمْ مِّكْثُونَ ۖ لَقَدْ جِئْتُمْ	हमारा खातमा कर देना चाहिए। मालिक कहेंगे के तुम्हें ठेहरना ही है। हम तुम्हारे पास हक को
بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَرِهُونَ ۖ أَمْ أَبْرَمُوا	लाए थे, लेकिन तुम में से अक्सर हक को नापसन्द करते थे। क्या उन्होंने ने हत्मी
أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ۖ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سَرَّهُمْ	फैसला कर लिया है? तो हम भी हत्मी फैसला करने वाले हैं। या वो समझते हैं के हम उन की चुपके से कही हुई बात
وَنَجْوِيهِمْ ۖ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ۖ قُلْ	या उन की सरगोशी सुनते नहीं? क्यूं नहीं! और हमारे भेजे हुए फ़रिशते उन के पास लिख रहे हैं।
إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَلَدٌ ۖ فَإِنَّا أَوَّلُ الْعَبْدِينَ ۖ سُبْحٰنَ	आप फ़रमा दीजिए के अगर रहमान की औलाद होती, तो सब से पेहले मैं उस की बन्दगी करने वाला होता। आसमानों
رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ۖ	और ज़मीन का रब, अर्श का रब पाक है उन बातों से जो वो बयान करते हैं।

فَذَرَهُمْ يَخُوضُوا وَ يَلْعَبُوا حَتَّى يُلْقُوا يَوْمَهُمُ

पस आप उन को छोड़ दीजिए के वो लगे रहें और खेलते रहें यहाँ तक के वो पा लें उन का वो दिन

الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿۸۳﴾ وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَهُ

जिस से उन्हें डराया जा रहा है। और वही अल्लाह आसमान में भी माबूद है

وَفِي الْأَرْضِ إِلَهُ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿۸۴﴾ وَتَبَرَّكَ

और ज़मीन में भी माबूद है। और वो हिकमत वाला, इल्म वाला है। और बाबरकत है

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ

वो अल्लाह जिस के लिए आसमानों और ज़मीन और उन दोनों के दरमियान की तमाम चीज़ों की सल्तनत है।

وَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿۸۵﴾

और उसी के पास क़यामत का इल्म है। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ

और वो लोग जिन को ये अल्लाह के सिवा पुकारते हैं सिफारिश के मालिक नहीं हैं,

إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿۸۶﴾ وَلَئِنْ سَأَلْتُمْ

मगर जिस ने हक़ की गवाही दी और वो जानते हैं। और अगर आप उन से पूछें

مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ ﴿۸۷﴾

किस ने उन को पैदा किया तो ज़रूर कहेंगे के अल्लाह ने। सो ये लोग किधर उल्टे चले जाते हैं?

وَقِيلَ لَهُ يَرْبِّ إِنَّ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿۸۸﴾

और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिकायत के इलाही! ये तो ऐसी कौम है जो ईमान नहीं लाती।

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿۸۹﴾

(कहा गया) फिर आप उन से दरगुज़र कीजिए और यूँ कहिए ‘अस्सलामु अलैकुम’। फिर आगे उन्हें पता चलेगा।

﴿۸۹﴾ ۝ ۵۹ ﴿۹۰﴾ سُوْرَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ ﴿۹۱﴾ رُكُوْعَاتُهَا ۳

और ३ रूकूअ हैं

سَمِ اللّٰهُ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حَمْدٌ ۝ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ

हों मीमा। साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब की क़सम! हम ने उस को बरकत वाली रात में

منزل ۶

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَ جَاءَهُمْ رَسُولٌ हम ने उन से पेहले फिरऔन की कौम को आजमाया और उन के पास मुअज़्ज़ज़	كَرِيمٌ ۚ اِنْ اَدُّوْا اِلَىٰ عِبَادِ اللّٰهِ ۖ اِنِّى لَكُمْ रसूल आया। के अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले कर दो। मैं तुम्हारे लिए
رَسُولٌ اٰمِيْنٌ ۚ وَاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّى अमानतदार रसूल हूँ। और ये के अल्लाह पर सरकशी मत करो। मैं	اَتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۚ وَاِنِّى عٰذْتُ بِرَبِّى तुम्हारे पास रोशन मोअजिज़ा ले कर आया हूँ। और मैं मेरे और तुम्हारे रब की
وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْهُ ۚ وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِىْ पनाह लेता हूँ इस से के तुम मुझे रज्म करो। और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते	فَاعْتَرِلُوْهُ ۚ فَدَعَا رَبَّهٗ اَتَّ هٰؤُلَاءِ قَوْمٌ तो तुम मुझ से दूर रहो। फिर उन्होंने ने अपने रब से दुआ की के ये ऐसी कौम है
مُّجْرِمُوْنَ ۚ فَاسْرِ بِعِبَادِى لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبِعُوْنَ ۚ जो मुजरिम है। तो (ऐ मूसा!) आप मेरे बन्दों को रात के वक़्त ले कर निकल जाइए, तुम्हारा पीछा किया जाएगा।	وَاشْرٰكُ الْبَحْرِ رَهْوًا ۚ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّعْرَقُوْنَ ۚ और आप समन्दर को ठेहरा हुवा छोड़ दीजिए। इस लिए के ये ऐसा लशकर है जिसे गर्क किया जाएगा।
كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَدَّتٍ وَّعِيُوْنَ ۚ وَزُرُوعٍ वो कितने बागात और चशमे और खेतियाँ और अच्छी रहने की जगहें	وَمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۚ وَ نَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ۚ छोड़ कर गए। और ऐसी नेअमते छोड़ी जिन में वो मजे कर रहे थे।
كَذٰلِكَ ۖ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۚ इसी तरह। और हम ने दूसरी कौम को उन चीज़ों का वारिस बनाया।	فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا फिर उन पर न आसमान रोया और न ज़मीन रोई और न उन्हें
مُنْظَرِيْنَ ۚ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيۤ اِسْرَءٰىلَ مِنْ मुहलत दी गई। हम ने बनी इस्राईल को रुस्वा करने वाले अज़ाब से	

النَّارِ الْمُهَيَّنِ ۝۳۰ مِنْ فِرْعَوْنَ ۖ إِنَّهُ كَانَ	نجات दी। (जो था) फिरऔन से, वो सरकश, हद से
عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ۝۳۱ وَلَقَدْ اخْتَرْنَاهُمْ	आगे बढ़ने वालों में से था। हम ने उन को इल्म के साथ तमाम
عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝۳۲ وَآتَيْنَاهُمْ مِّنَ الْآلِيتِ	जहान वालों पर मुन्तख़ब किया। और हम ने उन (बनी इस्राईल) को वो मोअजिज़ात दिए
مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ۝۳۳ إِنَّ هَؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ۝۳۴	जिन में सरीह आज़्माइश/इन्आम था। यकीनन ये लोग केहते हैं।
إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِينَ ۝۳۵	ये हमारा पेहली दफ़ा ही मरना है, और हम कब्रों से उठाए नहीं जाएंगे।
فَاتُّوا بِآبَائِنَا إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝۳۶ أَهُمْ	फिर हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो। क्या ये
خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ	बेहतर हैं या कौमे तुब्बअ और वो जो उन से पेहले थे?
أَهْلَكْنَاهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ۝۳۷	जिन को हम ने हलाक किया। यकीनन वो भी मुजरिम थे।
وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لِعِبَادٍ ۝۳۸	और हम ने आसमानों और ज़मीन और उन के दरमियान की चीज़ों को खेल के लिए पैदा नहीं किया।
مَا خَلَقْنَاهُمْ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ	हम ने उन को पैदा नहीं किया मगर हक़ के साथ लेकिन उन में से अक्सर
لَا يَعْلَمُونَ ۝۳۹ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ۝۴۰	जानते नहीं। बेशक फैसले का दिन उन तमाम का मुक़र्ररा वक़्त है।
يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَنْ مَّوْلَىٰ شَيْئًا وَلَا هُمْ	जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ भी काम नहीं आएगा और न उन की
يُنْصَرُونَ ۝۴۱ إِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللَّهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ	नुसरत की जाएगी। मगर वो जिस पर अल्लाह रहम करे। यकीनन वो

الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۳۳ إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۳۴ طَعَامُ	जबर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। यकीनन जक्कूम का दरख्त, वो गुनेहगार
الْأَثِيمِ ۳۵ كَالْمُهْلِ ۳۶ يُغْلَى فِي الْبُطُونِ ۳۷ كَغَلِي	का खाना है। जो तेल की तलछट जैसा होगा, (उन के) पेट में गर्म पानी के खौलने की तरह
الْحَمِيمِ ۳۸ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَى سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۳۹	खौलेगा। (हुक्म होगा) इस को पकड़ो और इस को धकेल कर दोज़ख के बीच में ले जाओ।
ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۴۰	फिर उस के सर पर खौलते हुए पानी का अज़ाब उंडेल दो।
ذُقْ ۴۱ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۴۲	तू इस अज़ाब को चखा तू बड़ा इज्जत वाला और मुकर्रम बनता था।
إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۴۳ إِنَّ الْمُتَّقِينَ	ये वो अज़ाब है जिस में तुम शक कर रहे थे। मुत्तकी लोग
فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۴۴ فِي جَنَّتٍ وَعُيُونٍ ۴۵	अमन वाली जगह में होंगे। बागात में और चशमों में होंगे।
يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ۴۶	वो बारीक और मोटा रेशम पहने हुए होंगे, आमने सामने बैठे होंगे।
كَذَلِكَ ۴۷ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۴۸ يَدْعُونَ	इसी तरह। और बड़ी आँखों वाली हूरें उन के निकाह में हम देंगे। वो
فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ۴۹ لَا يَذُقُونَ	उन में बेखौफ हो कर तमाम मेवे मांगेंगे। वो सिवाए
فِيهَا الْمَوْتِ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَى ۵۰ وَوَقَّعَهُمْ	पेहली मौत के उस में मौत को नहीं चखेंगे। और अल्लाह ने
عَذَابَ الْجَحِيمِ ۵۱ فَضَلَّ مَنْ رَّبِّكَ ۵۲ ذَلِكَ	उन्हें दोज़ख के अज़ाब से बचा लिया। ये सब कुछ आप के रब के फज़ल से होगा। यही
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۵۳ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ	भारी कामयाबी है। सो हम ने इस कुरआन को आप की ज़बान में आसान कर दिया

٢٥٧

لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٧﴾ فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُرْتَقِبُونَ ﴿٥٨﴾

ताके वो नसीहत हासिल करें। इस लिए आप मुन्तज़िर रहिए, यकीनन वो भी मुन्तज़िर हैं।

رُؤُوسُهَا ٣

(٢٥) سُورَةُ الْاِنشِيطَةِ مَكِّيَّةٌ (٦٥)

اَيَاتُهَا ٣٤

और ४ रूकूअ हैं

सूरह जासिया मक्का में नाज़िल हुई

उस में ३७ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حَمْدٌ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿٦٠﴾

हों मीमा। इस किताब का उतारा जाना ज़बर्दस्त, हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ़ से है।

إِنَّ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٦١﴾

यकीनन आसमानों और ज़मीन में अलबत्ता ईमान लाने वालों के लिए निशानियाँ हैं।

وَفِي خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُتُّ مِنْ دَابَّةٍ آيَةٌ

और तुम्हारे पैदा करने में और उन जानवरों में भी जिन को अल्लाह फैलाता है निशानियाँ हैं

لِقَوْمٍ يُوَفِّقُونَ ﴿٦٢﴾ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ

ऐसी कौम के लिए जो यकीन रखती है। और रात और दिन के आने जाने में

وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ رِزْقٍ فَأَحْيَا

और उस रोज़ी में जो अल्लाह ने आसमान से उतारी, फिर उस

بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ

के ज़रिए ज़मीन को उस के खुश्क हो जाने के बाद ज़िन्दा किया, और हवाओं के चलाने में

آيَةٌ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٦٣﴾ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا

निशानियाँ हैं ऐसी कौम के लिए जो अक्ल रखती है। ये अल्लाह की आयतें हैं, जिन्हें हम आप

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَ اللَّهِ

के सामने हक़ के साथ तिलावत करते हैं। फिर अल्लाह के बाद और अल्लाह की आयतों के बाद कौन सी बात पर

وَآيَاتِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٦٤﴾ وَيُلْ لِكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٦٥﴾

ये ईमान लाएंगे? हलाकत है हर झूठे गुनेहगार के लिए।

يَسْمَعُ آيَاتِ اللَّهِ تُثْلَىٰ عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا

जो अल्लाह की आयतों को सुनता है जो उस पर तिलावत की जाती हैं, फिर वो अड़ा रेहता है मुतकब्बिर बन कर

كَأَنَّ لَمْ يَسْمَعَهَا فَبَشَّرَهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

गोया के उस ने उस को सुना ही नहीं। इस लिए आप उसे दर्दनाक अज़ाब की बशारत सुना दीजिए।

وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۖ

और जब वो हमारी आयतों में से कुछ मालूम कर लेता है तो उसे मज़ाक बनाता है।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ مِنْ وَرَائِهِمْ

उन लोगों के लिए रुखा करने वाला अज़ाब है। उन के आगे

جَهَنَّمُ ۖ وَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ مَا كَسَبُوا شَيْئًا

जहन्नम है। और उन के कुछ काम नहीं आएगा जो उन्होंने ने कमाया था

وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ

और न वो जो उन्होंने ने अल्लाह के सिवा हिमायती बनाए हैं। बल्के उन के लिए भारी

عَظِيمٌ ۝ هَذَا هُدًى ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ

अज़ाब होगा। ये हिदायत है। और जिन्होंने ने अपने रब की आयात के साथ

رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رَّجَزِ أَلِيمٍ ۝ اللَّهُ

कुफ़्र किया उन के लिए दर्दनाक अज़ाब में से अज़ाब होगा। अल्लाह

الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لَتَجْرِيَ الْفُلُكُ

ही ने तुम्हारे लिए समन्दर को ताबेअ किया, ताके कशती चले

فِيهِ بِأَمْرِهِ ۖ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ

उस में अल्लाह के हुक्म से और ताके तुम अल्लाह का फ़ज़ल तलब करो और ताके

تَشْكُرُونَ ۝ وَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ

शुक्र अदा करो। और उस ने तुम्हारे लिए अपनी तरफ से काम में लगा रखी हैं वो तमाम चीज़ें

وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ ۖ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ

जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। बेशक उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम

لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُونَ ۝ قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا

के लिए जो सोचती है। आप फरमा दीजिए उन लोगों से जो ईमान लाए हैं के वो मुआफ़ कर दें

لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا

उन को जो अल्लाह के अज़ाब की उम्मीद नहीं रखते ताके अल्लाह क़ौम को

بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٧﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا	उन के करतूत की सज़ा दे। जिस ने नेक अमल किया
فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلِيَهَا ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ	तो अपने लिए (किया)। और जिस ने बुरा अमल किया तो उसी पर वबाल है। फिर तुम्हारे रब की तरफ़
تُرْجَعُونَ ﴿١٨﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ	तुम लौटाए जाओगे। और यकीनन हम ने बनी इस्राईल को
الْكِتَابَ وَ الْحُكْمَ وَ التَّوْبَةَ وَ رَزَقْنَاهُمْ	किताब दी और हुकूमत और नुबूवत दी और हम ने उन्हें रोज़ी दी उम्दा चीज़ों में
مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَ فَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٩﴾ وَآتَيْنَاهُمْ	से और हम ने उन्हें तमाम ज़हान वालों पर फज़ीलत दी। और हम ने उन को
بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْأَمْرِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ	दीन के बारे में खुली खुली दलीलें दीं। फिर उन्होंने ने इख़तिलाफ़ नहीं किया, मगर इस के बाद के
مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ۖ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۖ إِنَّ رَبَّكَ	उन के पास इल्म आया आपस की ज़िद की वजह से। यकीनन तेरा रब
يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ فِيمَا كَانُوا فِيهِ	उन के दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा उस में जिस में वो इख़तिलाफ़
يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ شَرِيعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ	कर रहे हैं। फिर हम ने आप को इस अग्रे दीन की एक शरीअत पर रखा है,
فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢١﴾	इस लिए आप इस शरीअत का इत्तिबा कीजिए और उन की ख्वाहिशात के पीछे न चलिए जो इल्म नहीं रखते।
إِنَّهُمْ لَن يَغْنَوْا عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ	यकीनन ये अल्लाह से आप के कुछ भी काम नहीं आ सकेंगे।
وَإِنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۖ وَاللَّهُ وَلِيٌّ	और यकीनन ये ज़ालिम लोग उन में से एक दूसरे के हिमायती हैं। और अल्लाह मुत्तकियों का
لِلْمُتَّقِينَ ﴿٢٢﴾ هَذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى	हिमायती है। ये कुरआन लोगों के लिए बसीरतों का हामिल है और हिदायत

وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿١٥﴾ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ	और रहमत है ऐसी कौम के लिए जो यकीन रखती है। क्या उन लोगों ने जिन्होंने
اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ	बुराइयाँ कमाई हैं ये गुमान कर रखा है के हम उन्हें उन की तरह बनाएंगे जो
أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۖ سَوَاءٌ مَّحْيَاهُمْ	ईमान लाए और नेक अमल करते रहे हैं? के उन की ज़िन्दगी और उन की मौत
وَمَمَاتِهِمْ ۖ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿١٦﴾ وَخَلَقَ اللَّهُ	बराबर हो जाए? बुरा है जिस का वो फैसला कर रहे हैं। और अल्लाह ने
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزَىٰ كُلُّ	आसमानों और ज़मीन को हक के साथ पैदा किया, और इस लिए ताके हर शख्स को
نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٧﴾ أَفَرَأَيْتَ	उन के अमल का बदला दिया जाए और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा। क्या फिर आप ने उस शख्स को
مَنْ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ	देखा जिस ने अपनी खाहिश को अपना माबूद बना लिया है, और जिसे अल्लाह ने इल्म के बावजूद गुमराह कर दिया है,
وَوَحَّمَ عَلَىٰ سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ	और जिस के कान और दिल पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है, और जिस की आँखों पर पर्दा
غَشَاةٌ ۖ فَمَنْ يَهْدِيهِ مِنْ بَعْدِ اللَّهِ ۖ	रख दिया है। फिर उस को अल्लाह के बाद कौन हिदायत देगा?
أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٨﴾ وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا	क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? और उन्होंने ने कहा के ये ज़िन्दगी नहीं है मगर हमारी दुन्यवी
الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا	ज़िन्दगी के हम मरते हैं और हम ज़िन्दा होते हैं और हमें हलाक नहीं करता
إِلَّا الدَّهْرُ ۖ وَمَا لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ	मगर ज़माना। और उन के पास इस की कोई दलील नहीं। ये सिर्फ
إِلَّا يُظُنُّونَ ﴿١٩﴾ وَإِذَا تُثْلَىٰ عَلَيْهِمْ إِيْتِنَا بَيِّنَاتٍ	गुमान कर रहे हैं। और जब उन पर हमारी साफ साफ आयतें तिलावत की जाती हैं

مَا كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا اتُّتُوا

तो उन की हुज्जत नहीं होती मगर ये के वो केहते हैं के तुम हमारे पास हमारे बाप

بَابَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٥﴾ قُلِ اللَّهُ

दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो। आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही

يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَى يَوْمِ

तुम्हें ज़िन्दा रखता है, फिर तुम्हें मौत देगा, फिर तुम्हें कयामत के दिन इकट्ठा

الْقِيَمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ

करेगा जिस में कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग

لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٦﴾ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

जानते नहीं। और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है।

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُحْسِرُ الْمُبْطِلُونَ ﴿١٧﴾

और जिस दिन कयामत काइम होगी उस दिन बातिलपरस्त खसारा उठाएंगे।

وَتَرَى كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَى

और आप देखोगे हर उम्मत को घुटनों के बल बैठी हुई। हर उम्मत अपने नामअे आमाल की तरफ

إِلَى كِتَابِهَا الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

बुलाई जाएगी। (कहा जाएगा के) आज तुम्हें तुम्हारे आमाल का बदला दिया जाएगा।

هَذَا كِتَابُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ إِنَّا

ये हमारा दफ्तर है जो तुम्हारे खिलाफ ठीक बोल रहा है। यकीनन हम

كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

लिखवा लिया करते थे जो तुम अमल करते थे।

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ

फिर जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे तो उन को उन का रब

رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْبَیِّنُ ﴿٢٠﴾

अपनी रहमत में दाखिल करेगा। ये खुली कामयाबी है।

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ آيَتِي تَتْلَى

और जिन्होंने ने कूफ़ किया तो (उन्हें कहा जाएगा के) क्या मेरी आयतें तुम पर तिलावत नहीं

عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٣١﴾	की जाती थीं, फिर तुम तकबुर करते थे और तुम मुजरिम कौम थे?
وَ إِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ	और जब कहा जाता है के यकीनन अल्लाह का वादा सच्चा है और क़यामत
لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُمْ مَا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ ۚ	में कोई शक नहीं, तो तुम ने कहा के हम नहीं जानते के क़यामत क्या चीज़ है?
إِنْ نَّظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُتَّقِينَ ﴿٣٢﴾	हम तो गुमान करते हैं थोड़ा सा और हमें यकीन नहीं।
وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ	और उन के सामने उन के आमाल की बुराई खुल जाएगी, और उन को घेर लेगा
مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٣﴾ وَقِيلَ الْيَوْمَ نُنَسِّكُمْ	वो अज़ाब जिस का वो इस्तिहज़ा किया करते थे। और कहा जाएगा के आज हम तुम्हें भुला देंगे,
كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَذَا وَمَأْوَهُمُ النَّارُ	जिस तरह तुम ने अपने इस दिन के मिलने को भुला रखा था और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख है
وَمَا لَكُمْ مِّنْ تَصَرُّينَ ﴿٣٤﴾ ذَلِكُمْ بِأَنكُمْ اتَّخَذْتُمْ	और तुम्हारे लिए कोई मददगार नहीं होगा। ये इस वजह से के तुम ने
آيَاتِ اللَّهِ هُزُوا وَ غَرَّتْكُمْ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ	अल्लाह की आयतों को मज़ाक बनाया और तुम्हें दुन्यवी ज़िन्दगी ने धोके में डाले रखा।
فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُونَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٣٥﴾	फिर आज वो वहाँ से निकाले नहीं जाएंगे और न उन से मुआफी तलब की जाएगी।
فَلِلَّهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمُوتِ وَرَبِّ الْأَرْضِ رَبِّ	फिर अल्लाह ही के लिए तमाम तारीफें हैं जो आसमानों का रब है और ज़मीन का रब है, तमाम जहानों
الْعَالَمِينَ ﴿٣٦﴾ وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمُوتِ	का रब है। और उसी के लिए बड़ाई है आसमानों में
وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٣٧﴾	और ज़मीन में। और वो अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

رُكُوعَاتُهَا ۴

(۳۶) سُورَةُ الْأَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ۳۵

और ४ रूकूअ हैं

सूरह अहक़ाफ मक्का में नाज़िल हुई

उस में ३५ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حَمِّ ۖ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝

हौ मीमा। इस किताब का उतारा जाना ज़बर्दस्त, हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ़ से है।

مَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا

हम ने आसमानों और ज़मीन और उन चीज़ों को जो उन दोनों के दरमियान में हैं पैदा नहीं किया

إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا

मगर मस्लहत के खातिर और ऐक मुकर्रर किए हुए वक़्त तक के लिए। और काफिर लोग

عَمَّا أَنْذَرُوا مُعْرِضُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ

जिस से उन को डराया जाता है पैराज़ करते हैं। आप फ़रमा दीजिए भला बतलाओ वो जिन को तुम पुकारते हो

مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ

अल्लाह को छोड़ कर मुझे दिखलाओ के उन्होंने ने कौन सी ज़मीन पैदा की

أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ ۖ إِيْتُونِي بِكِتَابٍ

या उन की शराक़त है आसमानों में? मेरे सामने इस कुरआन से पेहले

مِنْ قَبْلِ هَذَا أَوْ أَثَرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

की कोई किताब लाओ या कोई मन्कूल इल्म ले आओ अगर तुम सच्चे हो।

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَنْ

और उस से ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह को छोड़ कर पुकारे उस को

لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ وَهُمْ

जो क़्यामत के दिन तक उसे जवाब नहीं दे सकता। और वो उन के

عَنْ دُعَائِهِمْ غَفُلُونَ ۖ وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ

पुकारने से भी बेखबर हैं। और जब लोगों का हशर होगा तो ये उन के दुश्मन

أَعْدَاءٌ وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ۖ وَإِذَا تُتْلَىٰ

बन जाएंगे और उन की इबादत का भी इन्कार करेंगे। और जब उन पर

عَلَيْهِمْ 'إِنَّا بَيَّنَّتْ قَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ

हमारी साफ साफ आयतें तिलावत की जाती हैं तो काफिर लोग हक के मुतअल्लिक जब हक उन के

لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۚ أَمْ يَقُولُونَ

पास आया केहते हैं के ये तो खुला जादू है। क्या ये केहते हैं के

افْتَرَاهُ ۚ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي

इस नबी ने उस को घड़ लिया है? आप फरमा दीजिए के अगर मैं ने उस को घड़ लिया है तो तुम अल्लाह के मुकाबले में मेरे

مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ كَفَىٰ بِهِ

कुछ भी काम नहीं आ सकोगे। अल्लाह खूब जानता है जिस में तुम लगे रेहते हो। अल्लाह की शहादत

شَهِيدًا ۚ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

मेरे और तुम्हारे दरमियान काफी है। और वो बहोत ज़्यादा बख्शाने वाला, निहायत रहम वाला है।

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي

आप फरमा दीजिए के मैं रसूलों में से कोई नया नहीं आया, और मुझे क्या ख़बर के

مَا يَفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ۚ إِنِ اتَّبِعَ إِلَّا مَا يُوحَىٰ

मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा? मैं तो सिर्फ उसी का इत्तिबा करता हूँ जो मेरी तरफ

إِلَىٰ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ

वही किया जा रहा है और मैं सिर्फ साफ साफ डराने वाला हूँ। आप फरमा दीजिए बतलाओ

إِنْ كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ وَكَفَرْتُمْ بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ

अगर ये कुरआन अल्लाह की तरफ से हो और तुम ने उस के साथ कुफ्र किया और बनी इस्राईल में

مِّنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَأَمَنَ

से एक गवाह ने गवाही दी उसी जैसी किताब की, फिर वो ईमान ले आया,

وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

और तुम तकबुर करते रहे। यकीनन अल्लाह ज़ालिम कौम को हिदायत नहीं देते।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا

और काफिरों ने ईमान वालों के मुतअल्लिक कहा के अगर ये दीन बेहतर होता

مَا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ

तो ये उस की तरफ हम से सबक़त न करते। और जब उन्होंने ने उस के ज़रिए हिदायत न पाई तो अब ये कहेंगे

هَذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ۝ وَمِنْ قَبْلِهِ كِتَابٌ مُوسَىٰ

के ये तो पुराना झूठ है। हालांकि उस से पहले मूसा (अलैहिस्सलाम) की किताब

إِمَامًا وَرَحْمَةً ۖ وَهَذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا

रहनुमा और रहमत थी। और ये किताब है जो तसदीक करने वाली है, अरबी

عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ۝

जबान वाली है ताकि वो ज़ालिमों को डराए और एहसान करने वालों के लिए बशारत हो।

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ

बेशक जिन लोगों ने कहा के हमारा रब अल्लाह है, फिर वो जमे रहे तो उन पर न खौफ

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ

हैं, और न वो ग़मगीन होंगे। ये जन्नती हैं,

خَالِدِينَ فِيهَا ۖ جَزَاءٌ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

उस में वो हमेशा रहेंगे। उन आमाल के बदले के तौर पर जो वो करते थे।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ

और हम ने इन्सान को हुक्म दिया उस के वालिदेन के साथ भलाई करने का। उस की माँ ने उस को पेट में

أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمَلُهُ وَفِطْلُهُ

उठाया तकलीफ से और उस को जना तकलीफ से। और उस का पेट में रहेना और उस का दूध छुड़ाना

ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ

तीस महीनों में होता है। यहाँ तक के जब वो अपनी जवानी को पहुँच जाता है और चालीस साल की उम्र

سَنَةً ۖ قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ

को पहुँचता है, तो केहता है के ऐ मेरे रब! तू मुझे इस की तौफ़ीक दे के मैं तेरी नेअमत का शुक्र अदा करूँ

الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا

जो तू ने मुझ पर और मेरे वालिदेन पर की और इस की के मैं नेक अमल करूँ

تَرْضَاهُ ۖ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۚ إِنِّي تُبْتُ

जो तू पसन्द करे, और तू मेरे लिए मेरी औलाद में सलाह (व तक्वा) रख दे। यकीनन मैं तेरी तरफ तौबा

إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ

करता हूँ और मैं मुसलमानों में से हूँ। यही लोग हैं के जिन से

نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ	हम उन के नेक अमल कबूल करते हैं और हम उन की ख़ताओं से दरगुज़र
عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ وَعَدَ الصِّدْقِ الَّذِي	करते हैं, वो जन्नतियों में होंगे। उस सच्चे वादे की बिना पर जो
كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٧﴾ وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَا	उन से वादा किया जाता था। और जिस ने अपने वालिदैन से कहा के उफ है तुम पर,
أَتَعِدْنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي ۚ	क्या तुम मुझे डराते हो इस से के मैं कब्र से निकाला जाऊँगा हालांके मुझ से पेहले उम्मतें गुज़र चुकी हैं?
وَهُمَا يَسْتَغِيثَنِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ ۖ إِنَّ وَعْدَ	और वो दोनों अल्लाह से फरयाद कर रहे हैं के तेरा नास हो! तू ईमान ले आ। यकीनन अल्लाह का
اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَيَقُولُ مَا هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٨﴾	वादा सच्चा है, फिर भी वो केहता है के ये तो महज़ पेहले लोगों के अफसाने हैं।
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمِّ قَدْ خَلَتْ	यही लोग हैं जिन पर अज़ाब का कौल साबित हो चुका बशुमूल उन उम्मतों के जो जिन्नात
مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا	और इन्सानों की उन से पेहले गुज़र चुकी हैं, के यकीनन ये खसारे
خَسِرِينَ ﴿١٩﴾ وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِمَّا عَمِلُوا ۖ وَلِيُوفيَهُمْ	वाले हैं। और सब के दरजात उन के आमाल के मुताबिक हैं। और ताके अल्लाह
أَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٠﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ	उन को उन के आमाल का बदला पूरा पूरा दे और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा। और जिस दिन काफिरों
الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ ۖ أَذْهَبَتْكُمْ طَبِيبَتُكُمْ	को आग पर पेश किया जाएगा, (कहा जाएगा) के तुम ने अपने मज़े उड़ा लिए
فِي حَيَاتِكُمْ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۖ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ	अपनी दुन्यवी ज़िन्दगी में और तुम ने उस से फ़ाइदा उठा लिया। तो आज तुम्हें सज़ा दी जाएगी
عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي	ज़िल्लत के अज़ाब की इस वजह से के तुम ज़मीन में

۶۰

الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿۱۰﴾ وَاذْكُرُوا

नाहक तकबुर करते थे और इस वजह से के तुम नाफरमान थे। और तुम याद करो

أَخَا عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتْ

कौमे आद के भाई को। जब के उन्होंने ने अपनी कौम को डराया अहकाफ में और उन से पेहले

النُّذُرِ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا

और उन के बाद भी डराने वाले गुजर चुके हैं के इबादत मत करो

إِلَّا اللَّهَ ۚ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿۱۱﴾

मगर अल्लाह ही की। यकीनन मुझे तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है।

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَأْفِكَنَا عَنِ الْهِتَاءِ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا

तो उन्होंने ने कहा क्या हमारे पास तुम इस लिए आए हो ताके हमें हमारे माबूदों से हटा दो? तो ले आओ वो अज़ाब जिस से

إِنْ كُنْتُمْ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿۱۲﴾ قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ

तुम हमें डरा रहे हो अगर तुम सच्चों में से हो। नबी ने कहा के इल्म तो सिर्फ अल्लाह ही के

اللَّهِ ۚ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَكِنِّي أَرٰكُمْ قَوْمًا

पास है। और मैं तुम्हें वही पहोचाता हूँ जिसे दे कर मैं भेजा गया हूँ, लेकिन मैं तुम्हें ऐसी कौम देख रहा हूँ

تَجْهَلُونَ ﴿۱۳﴾ فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَّتِهِمْ

जो जहालत करती हो। फिर जब उन्होंने ने वो अज़ाब देखा के बादल है जो उन की वादियों की तरफ आ रहा है

قَالُوا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ۚ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ

तो बोले ये बादल है जो हम पर बारिश बरसाएगा। (कहा गया) बल्के ये वो अज़ाब है जिस को तुम जल्दी तलब कर रहे थे।

رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿۱۴﴾ تَدْمِرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ

ये एक तूफानी हवा है जिस में दर्दनाक अज़ाब है। जो हर चीज़ को अपने रब के हुक्म से मलयामेट

رَبِّهَا فَاصْبَحُوا لَا يَرٰى إِلَّا مَسْكِنُهُمْ ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِي

कर देगी, अब वो ऐसे हो गए के उन के रहने के मकानात के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं देता। इसी तरह हम

الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿۱۵﴾ وَلَقَدْ مَكَّنَّهُمْ فِيمَا

मुजरिम लोगों को सज़ा देते हैं। और हम ने उन को वो कुदरत दी थी जो हम

إِنْ مَكَّنَّاكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَابْصَارًا وَ

ने तुम्हें नहीं दी, और हम ने उन के लिए कान और आँखें और दिल

فَأَفِدَّتْۙ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ	बनाए थे। फिर उन के कान और उन की आँखें और उन के दिल
وَلَا أَفْدَتْهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۚ إِذْ كَانُوا يَمْجَدُونَ ۚ بِأَيِّتِ	कुछ भी काम न आए, इस लिए के वो अल्लाह की आयात का इन्कार
اللَّهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ	करते थे, और उन को घेर लिया उस अज़ाब ने जिस का वो मज़ाक उड़ाया करते थे। यकीनन
أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرَىٰ وَصَرَّفْنَا الْآيَاتِ	हम ने हलाक किया उन बस्तियों को जो तुम्हारे इर्द गिर्द हैं और हम ने निशानियों को फेर फेर कर बयान किया
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٧﴾ فَلَوْلَا نَصْرُهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا	ताके वो ख़जूअ करें। तो जिन को उन लोगों ने अल्लाह के सिवा तकरूब के लिए
مِّنْ دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً ۚ بَلْ ضَلُّوا عَنْهُمْ ۚ	माबूद बना रखा था, उन्होंने ने उन की मदद क्यों नहीं की? बल्के वो उन से खो गए।
وَذَلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٨﴾	और ये उन का झूठ था और उन की घड़ी हुई बातें थीं।
وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ ۚ	और जब के हम ने आप की तरफ कई एक जिन्नात को मुतवज्जेह किया के कुरआन सुनें।
فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا أَنْصِتُوا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا	फिर जब वो लोग कुरआन के पास आ पहुँचे तो केहने लगे के चुप रहो। फिर जब क़िराअत ख़त्म हो गई तो वो अपनी
إِلَىٰ قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِينَ ﴿٢٩﴾ قَالُوا يَقَوْمُنَا إِنَّا سَمِعْنَا	कौम की तरफ़ डराने के लिए वापस आए। केहने लगे ऐ हमारी कौम! हम ने एक किताब
كِتَابًا أُنْزِلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ	सुनी है जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के बाद उतारी गई है, जो सच्चा बतलाने वाली है उन किताबों को
يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَى طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٣٠﴾	जो इस से पेहले थी जो हक़ की तरफ और सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई करती है।
يَقَوْمُنَا أَحْيُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ يَغْفِرَ لَكُمْ	ऐ हमारी कौम! तुम अल्लाह के दाई का केहना मान लो और उस पर ईमान ले आओ, अल्लाह तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह

مَنْ دُنُوۡبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابِ ٱلۡيَمِّ ﴿۳۱﴾	बछ्श देगा और तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचा लेगा।
وَمَنْ لَا يُحِبُّ دَاعِيَ ٱللَّهِ فَلَئِيسَ بِمُعۡجِزٍۭ فِى ٱلۡأَرۡضِ	जो अल्लाह के दाई की बात नहीं मानेगा, तो वो ज़मीन में (भाग कर) अल्लाह को थका नहीं सकेगा
وَلَئِيسَ لَهُۥ مِنْ دُونِهِۦ أَوْلِيَآءُ ۖ أَوَلَيْكَ فِى ضَلٰلٍۭ	और उस के लिए अल्लाह के सिवा कोई हिमायती भी नहीं होंगे। यही लोग खुली गुमराही
مُبِينٍۭ ﴿۳۲﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا۟ أَنَّ ٱللَّهَ ٱلَّذِى خَلَقَ السَّمٰوٰتِ	में हैं। क्या उन्होंने ने देखा नहीं के अल्लाह जिस ने आसमान और ज़मीन पैदा
وَٱلۡأَرۡضَ وَلَمْ يَغۡيَ بِخَلۡقِهِنَّ بِقَدِيرٍۭ عَلىٰ	किए और वो उन के पैदा करने की वजह से थका नहीं, वो इस पर कादिर है के मुद्दों
أَنۡ يُّغۡيَ ٱلۡمَوۡتِ ۖ بَلَىٰ ۚ إِنَّهُۥ عَلىٰ كُلِّ شَىۡءٍۭ قَدِيرٌۭ ﴿۳۳﴾	को ज़िन्दा करे। क्यों नहीं! यकीनन वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।
وَيَوْمَ يُعۡرَضُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ عَلى ٱلنَّارِ ۖ أَلَيْسَ	और जिस दिन काफिरों को आग पर पेश किया जाएगा। (कहा जाएगा) क्या
هَٰذَا بِٱلْحَقِّ ۖ قَالُوا۟ بَلَىٰ ۖ وَرَبِّنَا ۖ قَالَ فَذُوقُوا	ये सच नहीं है? तो वो बोलेंगे क्यों नहीं! हमारे रब की क़सम! अल्लाह फ़रमाएँगे के फिर तुम अज़ाब
ٱلْعَذَابِ بِمَا كُنۡتُمْ تَكۡفُرُونَ ﴿۳४﴾ فَاصۡبِرْ	चखो इस वजह से के तुम कुफ़र करते थे। फिर आप सब्र कीजिए जैसा के
كَمَا صَبَرَ أُوۡلُوا۟ ٱلۡعِزۡمِ مِنَ ٱلرُّسُلِ وَلَا تَسۡتَعۡجِلْ	पैग़म्बरों में से ऊलुल अज़्म पैग़म्बरों ने सब्र किया और उन के लिए आप जल्दी
لَّهُمۡ ۖ كَانَتۡهُمۡ يَوۡمَ يَرَوۡنَ مَا يُوۡعَدُونَ ۖ	न कीजिए। जिस दिन वो देखेंगे वो अज़ाब जिस से उन्हें डराया जा रहा है (तो वो समझेंगे)
لَمۡ يَلۡبَثُوۡا۟ إِلَّا سَاعَةً مِّنۢ نَّهَارٍۭ ۖ بَلٰغٌۭ	के वो ठेहरे नहीं मगर दिन की एक घड़ी। ये (कुरआन) पहोंचा देना है।
فَهَلۡ يَهۡلِكُ يَهۡلَكَ إِلَّا ٱلۡقَوۡمُ ٱلۡفٰسِقُونَ ﴿۳۵﴾	अब सिर्फ़ नाफ़रमान ही हलाक होंगे।

آيَاتُهَا ٣٨

उस में ३८ आयतें हैं

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका अल्लाह ने उन के

अमल कलअदम कर दिए। और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और ईमान लाए

उस पर जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उन के रब की तरफ से उतारा गया है और वो हक है, तो अल्लाह ने

उन से उन की बुराइयाँ दूर कर दीं, और उन के हाल की इस्लाह कर दी। ये इस वजह से के जिन्होंने ने कफ़ किया

वो बातिल के पीछे चले हैं और ये के जो ईमान लाए हैं उन्होंने ने उस हक की पैरवी की है जो उन के

रब की तरफ से है। इसी तरह अल्लाह इन्सानों के लिए उन की मिसालें बयान करते हैं।

फिर जब तुम काफिरों से मिलो तो उन की गर्दनें मारो। यहाँ तक के

जब तम उन का खून बहा चको, तो मजबूत बांध लो। फिर या तो (कैदियों को) उस के बाद एहसान कर के (छोड़ देना है),

या फिदया ले कर (छोड़ना है), जब तक के लड़ने वाले अपने हथियार न रख दें। ये तो हवा।

और अगर अल्लाह चाहता तो उन से इन्तिकाम लेता, लेकिन इस लिए ताके तम में से एक को दूसरे के

जरिए अल्लाह आजमाए। और वो जो कत्ल किए गए अल्लाह के रास्ते में उन के

يُضِلُّ أَعْمَالَهُمْ ۚ سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝

आमाल अल्लाह हरगिज़ कलअदम नहीं करेगा। जल्द ही उन की रहनुमाई करेगा और उन के हाल की इस्लाह करेगा।

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَفَهَا لَهُمْ ۖ يَأْتِيهَا الَّذِينَ

और उन को जन्नत में दाखिल करेगा जिस का उन के सामने अल्लाह ने तआरुफ़ करा दिया है। ऐ ईमान

أَمَنُوا إِن تَنْصُرُوا اللَّهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ۝

वालो! अगर तुम अल्लाह की नुसरत करोगे तो वो तुम्हारी नुसरत करेगा और तुम्हारे कदम जमा देगा।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعَسَا لَهُمْ وَأَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ۝

और जो काफ़िर हैं तो उन के लिए बरबादी है और अल्लाह ने उन के अमल हब्त कर दिए हैं।

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أُنْزِلَ اللَّهُ فَاحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۝

ये इस वजह से के उन्होंने ने नापसन्द किया जो अल्लाह ने उतारा, फिर अल्लाह ने उन के आमाल कलअदम कर दिए।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

क्या फिर वो ज़मीन में चले फिरे नहीं के देखते के उन लोगों का अन्जाम कैसा हुवा

الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ

जो उन से पेहले थे? जिन को अल्लाह ने मलयामेट कर दिया और काफ़िरो के लिए उन की

أَمْثَالُهَا ۝ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا

मिसालें हैं। ये इस वजह से के अल्लाह ईमान वालों का कारसाज़ है

وَأَنَّ الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَى لَهُمْ ۝ إِنَّ اللَّهَ يَدْخُلُ الَّذِينَ

۝

और जो काफ़िर हैं उन का कोई कारसाज़ नहीं। यकीनन अल्लाह उन लोगों को जो ईमान

أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا

लाए और नेक अमल करते रहे उन को ऐसी जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से नेहरे बेहती

الْأَنْهَارُ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ

होंगी। और जो काफ़िर हैं वो मज़े कर रहे हैं और खाते हैं जैसा के

كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ۝ وَكَأَيِّنْ

चौपाए खाते हैं, हालांके आग उन का ठिकाना है। और कितनी बस्तियाँ

مِنْ قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِنْ قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجَتْكَ ۚ

थी जो तुम्हारी इस बस्ती से जिस ने आप को निकाला उस से ज़्यादा कूवत वाली थी?

أَهْلَكْتَهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۝ أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ

उन को हम ने हलाक किया, फिर उन का कोई मददगार भी नहीं हुआ। क्या वो शख्स जो अपने रब की तरफ से रोशन रास्ते

مَنْ رَبِّهِ كَمَنْ رُئِيَ لَهُ سُوءٌ عَلَيْهِ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۝

पर है उस शख्स की तरह हो सकता है जिस के लिए उस की बदअमली मुज़य्यन की गई और जो अपनी ख्वाहिशात के

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَا أَنْهَارٌ

पीछे चलते हैं। उस जन्नत का हाल जिस का मुत्तकियों से वादा किया गया है, ये है के उस में नेहरें हैं

مِنْ مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ ۖ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ ۖ

पानी की जो बदबूदार नहीं। और नेहरें हैं दूध की जिस का मज़ा बदला नहीं।

وَأَنْهَارٌ مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ ۖ وَأَنْهَارٌ

और नेहरें हैं शराब की जो पीने वालों के लिए लज़ीज़ है। और नेहरें हैं

مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ

सुथरे शहद की। और उन के लिए उन में हर किस्म के मेवे हैं

وَمَغْفِرَةٌ ۖ مَنْ رَبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ

और उन के रब की तरफ से मग़फ़िरत है। क्या ये शख्स उस शख्स की तरह हो सकता है जो आग में हमेशा रहेगा

وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ

और जिन्हें गर्म पानी पिलाया जाएगा, फिर वो पानी उन की अंतड़ियाँ काट देगा? और उन में से कुछ वो हैं

يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۖ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا

जो आप की तरफ कान लगाते हैं। यहाँ तक के जब वो आप के पास से निकलते हैं तो उन

لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ أَنْفَاكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ

से केहते हैं जिन को इल्म दिया गया के पैग़म्बर ने अभी क्या कहा? ये वो हैं के जिन

طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۝

के दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और ये लोग अपनी ख्वाहिशात के पीछे चले हैं।

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَآتَاهُمْ تَقْوَاهُمْ ۝

और जो हिदायत पर हैं अल्लाह ने उन को मज़ीद हिदायत दी है और उन को उन का तक्वा अता किया है।

فَهُلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ ۖ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۖ

वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर क़यामत के के उन के पास अचानक आ जाए।

فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا ۖ فَأَنَّى لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ तो उस की अलामतें तो आ ही चुकी हैं। फिर उन के लिए अपनी नसीहत हासिल करने का वक़्त कहाँ रहेगा जब
ذِكْرُهُمْ ۝ فَأَعْلَمَ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرُ क़यामत उन के पास आ पहुँचेगी? तो आप यकीन रखिए के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप अपने और
لِذُنُوبِكُمْ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के गुनाह के लिए इस्तिग़फ़ार कीजिए। और अल्लाह तुम्हारे
مُتَقَلِّبِكُمْ وَ مَثُوبِكُمْ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا चलने फिरने और रहने सेहने की खबर रखता है। और ईमान वाले कहते हैं के
لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ ۚ فَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ مُحْكَمَةٌ कोई सूरात क्यों नहीं उतारी जाती? फिर जब कोई मुहकम सूरात उतारी जाती है
وَذُكِرَ فِيهَا الْقِتَالُ ۖ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ और उस में क़िताल का ज़िक्र होता है, तो आप देखोगे उन लोगों को जिन के दिलों में
مَرَضٌ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشَىٰ عَلَيْهِ बीमारी है के वो आप की तरफ़ देखते हैं उस शख्स के देखने की तरह के जिस पर मौत की ग़शी
مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ ۝ طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ ۚ तारी हो। तो उन के लिए हलाकत है। उन की ताअत और बात चीत मालूम है।
فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا फिर जब मुआमला पुख्ता हो जाए, फिर अगर ये अल्लाह के साथ सच्चे रहें तो ये उन के लिए
لَهُمْ ۝ فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا बेहतर है। तुम से तवक्कुअ ये है के अगर तुम हाकिम बन जाओ तो मुल्क में
فِي الْأَرْضِ وَتَقَطَّعُوا أَرْحَامَكُمْ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ फसाद बरपा करो और क़तारहमी करो। यही लोग हैं
لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعَمَّى أَبْصَارَهُمْ ۝ जिन पर अल्लाह ने लानत फ़रमाई है, फिर उन को बेहरा कर दिया है और उन की आँखों को अन्धा कर दिया है।
أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ۝ क्या फिर वो कुरआन में तदब्बुर नहीं करते या उन के दिलों पर ताले पड़े हुए हैं? यकीनन

الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ	जो लोग पुश्त फेर कर हट गए इस के बाद के उन के सामने हिदायत
لَهُمُ الْهُدَىٰ ۖ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ۝	वाज़ेह हो चुकी थी, शैतान ने ये काम उन के लिए मुज़य्यन किया और उन को मुहलत दिखाई।
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ	ये इस वजह से के उन्होंने ने कहा उन लोगों से जो नापसन्द करते हैं उस कुरआन को जो अल्लाह ने उतारा है
سَطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأُمْرِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ۝	के मुस्तक़बिल में हम बाज़ उमूर में तुम्हारी बात मानेंगे। हालांकि अल्लाह जानता है उन के चुपके से कही हुई बात को।
فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ	फिर क्या हाल होगा जब के फरिश्ते उन की जान निकाल रहे होंगे, मार रहे होंगे उन के चेहरों पर
وَأَدْبَارَهُمْ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اتَّبَعُوا مَا أَصْحَبَ اللَّهُ	और उन की पीठों पर? ये अज़ाब इस वजह से के उन्होंने ने अल्लाह को नाराज़ करने वाली चीज़ों को अपनाया
وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَاحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۝ أَمْ حَسِبَ	और उस की खुशनूदी को नापसन्द किया, फिर अल्लाह ने उन के आमाल हब्त कर दिए। क्या वो लोग
الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ أَن لَّنْ يُخْرِجَ اللَّهُ	जिन के दिलों में मर्ज़ है उन्होंने ने ये समझ रखा है के अल्लाह उन का कीना हरगिज़ नहीं निकालेगा (यानी ज़ाहिर नहीं
أَضْغَانَهُمْ ۝ وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ	करेगा)? और अगर हम चाहें तो आप को हम वो मुनाफिक़ीन दिखा दें, फिर आप उन को पेहचान लें
بِسِيمَتِهِمْ ۖ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۗ وَاللَّهُ	उन की अलामत से। और आप उन को बात के लेहजे में ज़रूर पेहचान लोगे। और अल्लाह को
يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ۝ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجْتَهِدِينَ	तुम्हारे आमाल का इल्म है। और हम तुम्हें ज़रूर आजमाएंगे ताके हम तुम में से जिहाद करने
مِّنْكُمْ وَالصَّابِرِينَ ۖ وَنَبْلُوَنَّكُمْ أَخْبَارَكُمْ ۝	वालों और सब्र करने वालों को मालूम कर लें, और ताके तुम्हारे अन्दरूनी हाल को आजमाएं।
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا	यकीनन वो लोग जिन्होंने ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका और रसूल

الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ

की मुखालफ़त की इस के बाद के उन के लिए हक़ वाज़ेह हो गया

لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۖ وَسَيُحِطُ أَعْمَالُهُمْ ۖ يَا أَيُّهَا

वो अल्लाह को ज़रा भी ज़रूर हरगिज़ नहीं पहुँचा सकेंगे। और अनक़रीब अल्लाह उन के आमाल हब्त कर देगा। ऐ

الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ

ईमान वालो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो

وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا

और अपने अमल बातिल मत करो। यकीनन वो लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया और अल्लाह

عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَغْفِرَ

के रास्ते से रोका, फिर वो मर गए इस हाल में के वो काफ़िर थे तो अल्लाह उन की हरगिज़

اللَّهُ لَهُمْ ۚ فَلَا تَرْهَبُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلَامِ ۖ وَأَنْتُمْ

मग़फ़िरत नहीं करेगा। फिर तुम कमज़ोर मत बनो और तुम सुलह की तरफ़ मत बुलाओ। और तुम ही

الْأَعْلَوْنَ ۖ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتَرَكَمُ أَعْمَالَكُمْ ۚ

ग़ालिब रहोगे। और अल्लाह तुम्हारे साथ है और तुम्हारे अमल कम भी नहीं करेगा।

إِنَّا الْحَيَوَةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَإِنْ تُؤْمِنُوا

दुन्यवी ज़िन्दगी तो महज़ खेल और तमाशा है। और अगर तुम ईमान लाओगे

وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أَجُورَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ۚ

और मुत्तक़ी बनोगे तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारा अज़्र देगा और तुम से तुम्हारे माल नहीं माँगेगा।

إِنْ يَسْأَلْكُمْ مَالًا فَيُحْفِكُمْ تَبْخُلُوا وَيُخْرِجْ

अगर वो तुम से माल का सवाल करे, फिर वो तुम से इसरार से सवाल करे, तो तुम बुख़ल करने लगो और वो तुम्हारे

أَصْغَانَكُمْ ۚ هَآئِنُمُ هَؤُلَاءِ تَدْعُونَ لِتُنْفَقُوا

कीने खोल कर रहे। सुनो! तुम वो लोग हो के तुम्हें बुलाया जाता है ताके अल्लाह के रास्ते में

فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَبَيْنَكُمْ مَن يَبْخُلُ ۖ وَمَن يَبْخُلْ فَإِنَّا

तुम खर्च करो। फिर तुम में से बाज़ बुख़ल करते हैं। और जो भी बुख़ल करेगा तो सिर्फ़

يَبْخُلُ عَنْ نَفْسِهِ ۖ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ ۗ

अपने आप से बुख़ल करेगा। और अल्लाह बेनियाज़ है और तुम मुहताज़ हो।

وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۖ ثُمَّ

और अगर तुम पैराज करोगे तो अल्लाह तुम्हारे अलावा कौम को बदले में ले आएगा, फिर

لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُمْ ۚ

वो तुम जैसे नहीं होंगे।

٢٦
٤

رُؤُوسُهُمَا ٢

(٢٨) سُورَةُ الْفَتْحِ مَكِّيَّةٌ (١١١)

آيَاتُهَا ٢٩

और ४ रूकूअ हैं

सूरह फत्ह मदीना में नाज़िल हुई

उस में २६ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ۚ لِيُغْفِرَ لَكَ اللَّهُ

यकीनन हम ने आप को फत्हे मुबीन के साथ कामयाबी अता की। ताके अल्लाह आप के लिए

مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ

आप के अगले और पिछले गुनाह बख्श दे, और अल्लाह अपनी नेअमत आप पर इतमाम तक पहुँचाए,

وَيَهْدِيكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۚ وَيُضْرِكَ اللَّهُ

और आप को सीधे रास्ते की रहनुमाई करे। और आप की अल्लाह ज़बर्दस्त

نَصْرًا عَزِيزًا ۚ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ

नुसरत करे। वही है जिस ने सकीना उतारा ईमान

فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَعَ إِيمَانِهِمْ ۖ

वालों के दिलों में ताके वो अपने मौजूदा ईमान के साथ ईमान में और बढ़ जाएं।

وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا

और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन के लश्कर हैं। और अल्लाह इल्म वाला,

حَكِيمًا ۚ لِيَدْخُلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ

हिक्मत वाला है। ताके अल्लाह ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को जन्नतों में दाखिल करे

تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفَّرُ

जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे और अल्लाह उन

عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۖ وَكَانَ ذَلِكَ عِنْدَ اللَّهِ فُورًا

से उन की बुराइयाँ दूर कर दे। और ये अल्लाह के नज़दीक बहोत बड़ी

عَظِيمًا ۖ وَيُعَذِّبُ الْمُنْفِقِينَ وَالْمُنْفِقَاتِ	कामयाबी है। और ताके अल्लाह मुनाफिक मदी और मुनाफिक औरतों
وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ الظَّالِمِينَ بِاللَّهِ	और मुशरिक मदी और मुशरिक औरतों को अज़ाब दे जो अल्लाह के साथ बुरा गुमान
ظَنَّ السَّوْءَ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۖ وَغَضِبَ اللَّهُ	करने वाले हैं। उन पर मसाइब का चक्कर घूमता रहा। और अल्लाह उन पर गज़बनाक
عَلَيْهِمْ ۖ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ	है और उस ने उन पर लानत फ़रमाई है और उन के लिए जहन्नम तय्यार की है। और वो बुरी
مَصِيرًا ۖ ۝ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ	जगह है। और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन के लशकर हैं।
وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ	और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। यकीनन हम ने आप को
شَاهِدًا ۖ وَمُبَشِّرًا ۖ وَنَذِيرًا ۝ لِّتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ	शहादत देने वाला, बशारत देने वाला, डराने वाला बना कर भेजा है। ताके तुम ईमान लाओ अल्लाह पर
وَ رَسُوْلِهِ ۖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ۖ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً	और उस के रसूल पर और तुम उन की नुसरत करो और उन की ताज़ीम करो। और तुम अल्लाह की सुबह व शाम
وَآصِيًا ۝ ۙ إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ	तस्बीह करो। जो लोग आप से बैअत करते हैं वो अल्लाह ही से बैअत कर रहे
اللَّهِ ۖ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۖ فَمَنْ تَكَثَّرَ	हैं। अल्लाह का हाथ उन के हाथों के ऊपर है। फिर जो बैअत तोड़ेगा
فَإِنَّمَا يَنْكُثْ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عٰهَدَ	तो खुद अपने नुकसान के लिए तोड़ेगा। और जो पूरा करेगा उस को जिस पर
عَلَيْهِ اللَّهُ فَسِيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ سَيَقُولُ	उस ने अल्लाह से मुआहदा किया, तो अनकरीब अल्लाह उन्हें भारी अज़्र देगा। अनकरीब कहेंगे
لَكَ الْبَخْلَفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا	आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से वो लोग जो अअराब में से पीछे रेहने वाले हैं के हमारे माल और हमारे

وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۖ يَقُولُونَ بِالسِّنْتِهِمْ

घर वालों ने हमें मशगूल कर दिया, इस लिए आप हमारे लिए इस्तिगफार कीजिए। अनकरीब वो अपनी ज़बान से कहेंगे

مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۖ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ

वो जो उन के दिलों में नहीं है। आप फरमा दीजिए फिर कौन मालिक है तुम्हारे लिए

مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ

अल्लाह के मुकाबले में किसी चीज़ का अगर वो तुम्हें ज़रूर पहुँचाने या तुम्हें नफा पहुँचाने का

بِكُمْ نَفْعًا ۚ بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝

इरादा करे? बल्के अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है।

بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَّنْ يَنْقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ

बल्के तुम ने गुमान किया के रसूल और ईमान वाले अपने घर वालों के पास कभी भी

إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزُيِّنَ ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ

वापस पलट कर नहीं आएंगे, और उस को तुम्हारे दिलों में मुज़य्यन किया गया

وَ ظَنَنْتُمْ ظَنًّا سَوْءًا ۚ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ۝

और तुम ने बुरा गुमान किया। और तुम हलाक होने वाली क़ौम थी।

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا

और जो ईमान नहीं लाएगा अल्लाह और उस के रसूल पर, तो हम ने काफ़िरों के लिए

لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ۝

दहकती आग तय्यार कर रखी है। और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है।

يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ

अल्लाह जिस की चाहे मग़फ़िरत कर दे और अज़ाब दे जिसे चाहे। और अल्लाह बहुत ज़्यादा

عَفُورًا رَّحِيمًا ۝ سَيَقُولُ الْبَخِلُّونَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ

बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। अनकरीब पीछे रेहने वाले कहेंगे जब ग़नीमतें

إِلَىٰ مَعَانِمَ لِنَتَّخِذْهُنَّ ذُرُوعًا وَنَحْنُ نَتَّبِعُكُمْ ۚ

लेने के लिए तुम चलोगे के हमें छोड़ दो के तुम्हारे पीछे पीछे हम भी आएंगे।

يُرِيدُونَ أَنْ يُبَدِّلُوا كَلِمَ اللَّهِ ۚ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُونَا

वो चाहते हैं के अल्लाह का कलाम बदल दें। आप फरमा दीजिए के तुम हमारे पीछे पीछे हरगिज़ नहीं आ सकते,

كَذَلِكَ قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلُ ۖ فَسَيَقُولُونَ इसी तरह अल्लाह ने इस से पहले फरमा दिया है। तब वो कहेंगे	
بَلْ تَحْسُدُونَنَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ बल्के तुम हम से हसद करते हो। बल्के वो नहीं समझते मगर थोड़ा सा।	
قُلْ لِلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُدْعُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ आप फरमा दीजिए अअराब में से पीछे रहने वालों से के अनकरीब तुम्हें बुलाया जाएगा	
أُولَىٰ بِأَسِ شَدِيدٍ ثِقَاتٍ لَّوْنَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ ۚ सख्त जंग करने वाली कौम की तरफ, उन से तुम क़िताल करोगे या वो सुलह कर लेंगे।	
فَإِنْ تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا ۚ फिर अगर तुम इताअत करोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अज़्र देगा।	
وَإِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا और अगर तुम रुगरदानी करोगे जैसा के तुम ने इस से पहले रुगरदानी की है, तो अल्लाह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब	
أَلِيمًا ۝ لَّيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ देगा। अन्धे पर कोई हरज नहीं और लंगड़े पर कोई हरज	
حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ ۚ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ नहीं और बीमार पर कोई हरज नहीं। और जो अल्लाह और उस के रसूल की	
وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا इताअत करेगा तो वो उसे ऐसी जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से नेहरें बेहती	
الْأَنْهَارِ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ होंगी। और जो ऐराज़ करेगा तो उसे अल्लाह दर्दनाक अज़ाब देंगे।	
لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ यकीनन अल्लाह राज़ी हुवा ईमान वालों से जब वो बैअत कर रहे थे आप से	
تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ दरख्त के नीचे, फिर अल्लाह ने मालूम कर लिया जो उन के दिलों में है, फिर अल्लाह ने	
السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ۝ وَمَعَائِمَ उन पर सकीना उतारा और उन को करीबी फ़त्ह बदले में दी। और बदले में	

كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٩﴾

दी बहोत सी ग़नीमतें जो वो लेंगे। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

وَعَدَكُمْ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَعَجَّلَ

अल्लाह ने तुम से बहोत सी ग़नीमतों का वादा किया है जिन को तुम लोगे, फिर उस ने

لَكُمْ هَذِهِ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُونَ

तुम्हें ये जल्दी दे दी, और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए। और ताके ये

آيَةً لِلْمُؤْمِنِينَ ۚ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ﴿٢٠﴾

ईमान वालों के लिए निशानी बने और अल्लाह तुम्हें सीधे रास्ते की रहनुमाई करे।

وَأُخْرَى لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا ۚ

और एक दूसरी ग़नीमत जिस पर तुम क़ादिर नहीं हुए जिस का अल्लाह ने इहाता किया है।

وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ﴿٢١﴾ وَلَوْ قُتِلَكُمْ

और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। और अगर तुम से क़िताल करते

الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوْا الْأَذْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا

ये काफिर तो वो पुश्त फेर कर भागते, फिर वो कोई मददगार और

وَلَا نَصِيرًا ﴿٢٢﴾ سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ

हिमायती न पाते। ये अल्लाह की सुन्नत है जो इस से पेहले गुज़र

مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٢٣﴾ وَهُوَ

चुकी है। और अल्लाह की सुन्नत में आप कोई तबदीली हरगिज़ नहीं पाओगे। और वही

الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ

अल्लाह है जिस ने उन के हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उन से रोक दिए

بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ

मक्का की वादी में इस के बाद के उस ने तुम्हें उन पर फ़्तह दी।

وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿٢٤﴾ هُمُ الَّذِينَ

और अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं। ये वही हैं जो

كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيِ

काफिर हैं और जिन्होंने ने तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका और कुरबानी के

مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ مَجَلَّهُ ۖ وَلَوْلَا رِجَالُ مُؤْمِنُونَ

जानवर को जो रुका हुआ रह गया उस मौके में पहुँचने से रोका। और अगर ईमान वाले मर्द

وَنِسَاءٌ مُؤْمِنَاتٌ لَّمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَّوُّهُمْ

और ईमान वाली औरतें न होतीं जिन को तुम नहीं जानते के तुम उन को रौंद डालोगे

فَتُصِيبُكُمْ مِنْهُمْ مَعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ لِيُدْخَلَ

तो तुम को उन से बेखबरी में नुकसान पहुँच जाता। ताके अल्लाह अपनी रहमत में

اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا

दाखिल करे जिसे चाहे। अगर ये मुसलमान कुफ़ार से अलग हो गए होते, तो हम उन में से

الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ اِذْ جَعَلَ

काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब देते। जब के काफ़िरों ने

الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَبِيَّةَ حَمِيَّةً

अपने दिल में ज़िद की ठान ली, वो भी जाहिलीयत

الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ

की ज़िद, तो अल्लाह ने अपना सकीना उतारा अपने रसूल पर

وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَى وَكَانُوا

और ईमान वालों पर और उस ने तक्वे का कलिमा उन से चिपका दिया और वही

أَحَقُّ بِهَا وَأَهْلُهَا ۖ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

उस के ज़्यादा मुस्तहिक् और उस के अहल थे। और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं।

لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ

यकीनन अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा ख्वाब दिखाया था के वाक़ेअ

الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ أَمِينٌ ۚ مُحَلِّقِينَ

में मस्जिदे हराम में इनशाअल्लाह तुम ज़रूर दाखिल होंगे अमन से, अपने सरो को

رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ ۚ لَا تَخَافُونَ ۖ فَعَلِمَ

मुंडाए हुए और क़स्त्र कराए हुए बेखौफ हो कर। फिर अल्लाह ने मालूम कर लिया वो जो तुम

مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ۝

नहीं जानते, फिर उस ने उस के अलावा करीबी फ़्तह दे दी।

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَ دِينِ الْحَقِّ

वही अल्लाह है जिस ने अपना रसूल हिदायत और दीने हक दे कर भेजा

لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝

ताके वो उसे तमाम अदयान पर गालिब कर दे। और अल्लाह गवाह काफी है।

مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ ۚ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के भेजे हुए पैगम्बर हैं। और वो सहाबा जो आप के साथ हैं वो कुफ़ार पर सब

عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ

से ज़्यादा सख्त, आपस में रहमदिल हैं, आप उन को देखोगे रुकूअ सज्दा करते हुए, वो अल्लाह का

فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا ۚ سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ

फज़ल और अल्लाह की खुशनूदी तलब करते हैं। उन की अलामत सज्दे के निशान की

مِّنْ أَثَرِ السُّجُودِ ۚ ذَٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ ۚ

उन के चेहरों पर है। ये उन की सिफ़त तौरात में भी है।

وَ مَثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ ۚ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ

और उन की सिफ़त इन्जील में भी है उस खेती की तरह जिस ने अपनी सुई निकाली, फिर उस को मज़बूत किया,

فَاسْتَعْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سُوقِهِ يُعْجِبُ الرُّعَا

फिर वो सख्त हो गई है, फिर वो अपने तने पर खड़ी हो गई जो खुश करती है किसानों को

لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۚ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا

ताके अल्लाह उन के ज़रिए काफ़िरों को गुस्सा दिलाए। अल्लाह ने उन से जो उन में से ईमान लाए

وَ عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝

और नेक अमल करते रहे मग़फ़िरत का और भारी अज़्र का वादा किया है।

رُكُوعَاتِهَا ۲

(१९) سُورَةُ الْحُجُرَاتِ مَدَنِيَّةٌ (۱-۴)

آيَاتُهَا ۱۸

और २ रुकूअ हैं

सूरह हुजुरात मदीना में नाज़िल हुई

उस में १८ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْدِمُوا بَيْنَ يَدَيِ اللَّهِ

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और उस के रसूल के सामने पेशदस्ती

وَرَسُولِهِ وَأَتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَبِيْعٌ عَلِيْمٌ ①

न करो और अल्लाह से डरो। यकीनन अल्लाह सुनने वाला, इल्म वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ

ऐ ईमान वालो! तुम अपनी आवाज़ें नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आवाज़

صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ

पर बुलन्द मत करो, और उन के सामने ज़ोर से बात न करो तुम में से एक के दूसरे

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ أَن تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنتُمْ

से बात करने की तरह कहीं तुम्हारे आमाल हब्त न हो जाएं, इस हाल में के

لَا تَشْعُرُونَ ② إِنَّ الَّذِينَ يَغْضُّونَ أَصْوَاتَهُمْ

तुम्हें पता भी न हो। यकीनन जो लोग अपनी आवाज़ अल्लाह के रसूल

عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ

के सामने पस्त रखते हैं यही लोग हैं जिन के दिलों के तकवे का

قُلُوبُهُمْ لِلتَّقْوَىٰ ۖ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ③

अल्लाह ने इम्तिहान लिया है। उन के लिए मग़फिरत है और बड़ा अज्र है।

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِنْ وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ

यकीनन वो लोग जो आप को हुज्रों के बाहर से पुकारते हैं, उन में से अक्सर

لَا يَعْقِلُونَ ④ وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ

अक्ल नहीं रखते। और अगर वो सब्र करते यहाँ तक के आप उन की

إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑤

तरफ निकलते तो ये उन के लिए बेहतर होता। और अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ

ऐ ईमान वालो! अगर तुम्हारे पास कोई फासिक कोई खबर ले कर आए

فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْحَبُوا

तो तुम अच्छी तरह तहकीक़ कर लो के कहीं नावाक़िफ़ीयत से किसी कौम को तुम मुसीबत पहुँचा दो,

عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَذِيرٌ ⑥ وَأَعْلَمُوا أَن فِيكُمْ رَسُولٌ

फिर अपने किए पर नादिम बनो। और जान लो के तुम में अल्लाह के

اللَّهُ ۖ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُمْ	
रसूल हैं। अगर वो तुम्हारा केहना मान लें बहोत से उमूर में तो तुम मशक्कत में पड़ जाओ,	
وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ	
लेकिन अल्लाह ने तुम्हारी तरफ ईमान को महबूब बना दिया और उस को मुज़य्यन किया	
فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ ۗ	
तुम्हारे दिलों में और तुम्हारे लिए कुफ्र और नाफरमानी और बदअमली को नापसन्दीदा बना दिया।	
أُولَٰئِكَ هُمُ الرُّشْدُونَ ۚ فَضَّلًا مِّنَ اللَّهِ وَنِعْمَةً ۗ	
यही लोग अल्लाह के फज़ल और इन्आम से सीधे रास्ते वाले हैं।	
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِنْ طَائِفَتَيْنِ	
और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और अगर ईमान वालों में से दो	
مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلَحُوا بَيْنَهُمَا ۚ	
जमाअतें आपस में लड़ पड़ें तो तुम उन के दरमियान सुल्ह करा दो।	
فَإِنْ بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَاتِلُوا الَّتِي	
फिर अगर उन में से एक जमाअत दूसरी पर ज़्यादती करे तो तुम सब क़िताल करो उस से जो ज़्यादती	
تَبَغَّىٰ حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ فَاءَتْ	
कर रही है, यहाँ तक के वो अल्लाह के हुक्म की तरफ वापस लौट आए। फिर अगर वो वापस लौट जाए	
فَأَصْلَحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا ۚ	
तो तुम उन के दरमियान सुल्ह करा दो इन्साफ से और तुम इन्साफ करो।	
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ	
यकीनन अल्लाह इन्साफ करने वालों को पसन्द करते हैं। ईमान वाले तो भाई भाई ही हैं,	
فَأَصْلَحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ	
तो तुम अपने भाइयों के दरमियान सुल्ह कर दिया करो। और अल्लाह से डरते रहो ताके तुम पर	
تُرْحَمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرُ قَوْمٌ	تُرْحَمُونَ ۝
रहम किया जाए। ऐ ईमान वाले! कोई कौम किसी कौम से तमस्खुर	
مِّن قَوْمٍ عَسَىٰ أَنْ يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا	
न करे, हो सकता है के वो उन से बेहतर हों और न	

نِسَاءٌ مِّنْ نِّسَاءٍ عَسَىٰ أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ	औरतें दूसरी औरतों से, शायद वो उन से बेहतर हों।
وَلَا تَلْبِسُوا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَرُوا بِالْأَلْقَابِ ۖ	और तुम अपनी ज़ात पर ऐब न लगाओ। और एक दूसरे को बुरे अलकाब से न पुकारो।
بِئْسَ الْإِسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۚ وَمَنْ	ईमान के बाद फिस्क बुरा नाम है। और जो
لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝	तौबा नहीं करेगा तो ये लोग ज़ालिम हैं। ऐ
الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ ۖ	ईमान वालो! बहोत से गुमानों से बचो।
إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبَ	यकीनन बाज़ गुमान गुनाह होते हैं, और तजस्सुस मत करो, और तुम में से एक
بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۖ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ	दूसरे की ग़ीबत न करो। क्या तुम में से कोई एक पसन्द करेगा के अपने मुर्दार भाई का
أَخِيهِ مَيْتًا فُكِرَ مَوْتُهُ ۖ وَاسْتَفْؤُا اللَّهَ ۖ	गोश्त खाए? तो यकीनन तुम उस को नापसन्द करोगे। और अल्लाह से डरो।
إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ۝ يَأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ	यकीनन अल्लाह तौबा कबूल करने वाला, रहम करने वाला है। ऐ इन्सानो! यकीनन हम ने तुम्हें एक
مِّنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ	मर्द और एक औरत से पैदा किया, और हम ने तुम्हें खानदान और कबीले बनाया ताके तुम एक दूसरे को
لِتَعَارَفُوا ۖ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ ۖ	पेहचानो। यकीनन तुम में से सब से ज़्यादा इज्ज़त वाला अल्लाह के नज़दीक वो है जो तुम में सब से ज़्यादा तक्वे वाला हो।
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝ قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا ۖ	यकीनन अल्लाह इल्म वाला, बाखबर है। देहाती केहते हैं के हम ईमान लाए हैं।
قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوا وَلَكِنْ قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا	आप फरमा दीजिए के तुम ईमान नहीं लाए, लेकिन तुम कहो के हम इस्लाम लाए हैं और अब तक

يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ ۖ وَإِنْ تُطِيعُوا	ईमान तुम्हारे कुलूब में दाखिल नहीं हुवा। और अगर तुम अल्लाह और उस
اللَّهُ وَرَسُولَهُ لَا يَلِتْكُمْ مِنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا ۗ	के रसूल की इताअत करोगे तो वो तुम्हारे आमाल में ज़रा सी भी कमी नहीं करेगा।
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٣﴾ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ	यकीनन अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। ईमान वाले तो सिर्फ वही हैं जो
آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ شَمَّ لَمْ يَزْتَابُوا وَجْهَهُدُوا	अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लाए हैं, फिर उन्होंने ने शक नहीं किया और जिन्होंने ने
بَأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ أُولَٰئِكَ	अपने मालों और जानों से अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया। यही
هُمْ الصَّادِقُونَ ﴿١٥﴾ قُلْ اتَّعْلَمُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ ۖ	लोग सच्चे हैं। आप फरमा दीजिए क्या तुम अल्लाह को अपना दीन बतला रहे हो?
وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ	हालांके अल्लाह खूब जानता है उस को जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है।
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٦﴾ يَسْتُونَ عَلَيْكَ	और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं। वो आप पर एहसान जताते हैं
أَنْ أَسْلَمُوا ۖ قُلْ لَا تَتَّبِعُوا عَلَيَّ إِسْلَامَكُمْ ۚ	के वो इस्लाम लाए हैं। आप फरमा दीजिए के एहसान मेरे ऊपर मत जतलाओ अपने इस्लाम का।
بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ	बल्के अल्लाह तुम पर एहसान जतलाता है के उस ने तुम्हें ईमान की हिदायत दी,
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٧﴾ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ	अगर तुम सच्चे हो। यकीनन अल्लाह आसमानों
غَيْبِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَاللَّهُ	की और ज़मीन की छुपी हुई चीज़ें जानता है। और अल्लाह
بَصِيرٌ ﴿١٨﴾ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾	देख रहा है उन कामों को जो तुम करते हो।

۲۵ آیاتہا	(۵۰) سُورَةُ قُوفٍ مَكِّيَّةٌ (۳۳)	رُوعَاتُهَا ۳
وہ ۸۶ آیتوں میں	سورہ کوہ مکہ میں نازل ہوئی	ہیں ۳ رکوع ہیں
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ پڑھتا ہوں اللہ کا نام لے کر جو بڑا مہربان، نہایت رحم والا ہے۔		
قَدْ وَالْقُرْآنِ الْبَجِيدِ ۝ بَلْ عَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ کوہ! بوجورگی والے کورآن کی قسم! بلکہ یہ تاجزب کرتے ہیں کہ ان کے پاس		
مُنْذِرٌ مِنْهُمْ فَقَالَ الْكُفْرُونَ هَذَا شَيْءٌ انہیں میں سے ڈرانے والا آیا، فیر کافروں نے کہا کہ یہ کابیلے		
عَجِيبٌ ۝ إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذَلِكَ رَجْعٌ تاجزب چیز ہے۔ کہ کیا جب ہم مر جائیں اور میٹھی ہو جائیں؟ یہ واپس لوتنا		
بَعِيدٌ ۝ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ ۚ بہوت دूर ہے۔ یقینان ہمیں مالوم ہے وہ جو زمین ان سے کم کر رہی ہے۔		
وَ عِنْدَنَا كِتَابٌ حَفِیْظٌ ۝ بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ اور ہمارے پاس مہفوز رکھنے والا دفتار ہے۔ بلکہ انہوں نے حق کو جھوٹلایا		
لَمَّا جَاءَهُمْ فَفِي أَمْرِ مَرِیْحٍ ۝ أَفَلَمْ يَنْظُرُوا جب وہ ان کے پاس آیا، بلکہ وہ خلل ملل مواملے میں ہیں۔ کیا انہوں نے نجر نہیں کی		
إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا اپنے اور آسمان کی طرف کسا ہم نے اسے بنا یا اور سجا یا اور جس میں		
مِنْ فُرُوجٍ ۝ وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا کوئی فٹن نہیں؟ اور زمین ہم نے फैلائی اور اس میں پھاڑ		
رَوَاسِيَ وَ أُنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِیْجٍ ۝ ڈال دیے اور اس میں ہم نے تمام خوبسورت جوڑے اگاے۔		
تَبَصَّرَةٌ وَ ذِكْرَى لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِیْبٍ ۝ وَ نَزَّلْنَا اللہ کی طرف رجوأ کرنے والے ہر بندے کی بسیرت اور نسیहत کے لیے۔ اور ہم نے		
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُبْرَكًا فَانْبَتْنَا بِهِ جَنَّتٍ وَ حَبٍّ آسمان سے برکت والا پانی اٹارا، فیر اس سے باغات اگاے اور اناج		

الْحَصِيدِ ۙ وَالنَّخْلَ بَسِقَتٍ لَهَا طَلْعٌ تَضِيدٌ ۝ जो काटा जाता है। और ऊँचे ऊँचे खजूर के दरख्त, जिस के लिए तरतीब से लगे हुए खोशे होते हैं।
رَزَقًا لِلْعِبَادِ ۖ وَآحَيْنَا بِهِ بِلْدَةً مَّيِّتًا ۖ كَذَلِكَ बन्दों की रोजी के तौर पर। और हम ने उस से मुर्दा ज़मीन ज़िन्दा की। इसी तरह
الْخُرُوجِ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ कब्रों से निकलना होगा। उन से पेहले कौमे नूह ने और रस्स वालों ने
وَتَمُودُ ۚ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ۚ وَأَصْحَابُ और कौमे समूद, और कौमे आद और फिरऔन और लूत के भाइयों ने, और ऐका
الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُيُوعٍ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ۝ वालों ने और तुब्बअ की कौम ने झुठलाया। सब ने पैगम्बरों को झुठलाया, फिर मेरी धमकी हकीकत बन गई।
أَفَعَيَّنَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ क्या हम पेहली मरतबा पैदा कर के थक गए हैं? (नहीं) बल्के वो अज़ सरे नौ पैदा होने से शक
جَدِيدٍ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسُّوْسُ में हैं। यकीनन हम ने इन्सान को पैदा किया और उस के नफसानी खतरात हम खूब
بِهِ نَفْسُهُ ۚ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝ जानते हैं। और रगे जान से भी ज़्यादा हम उस के करीब हैं।
إِذْ يَتَلَفَّى الصُّلَاقَيْنِ عَنْ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ जब के दाई और बाई तरफ से दो बैठे हुए लेने वाले ले रहे
قَعِيدٌ ۝ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ होते हैं। वो कोई बात नहीं निकालता मगर उस के सामने एक निगराँ
عَتِيدٌ ۝ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۚ ذَلِكَ तय्यार होता है। और मौत की सख्ती सच मुच आ गई। (काफिर से कहा जाएगा के) ये
مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ ذَلِكَ वो है जिस से तू किनारा किया करता था। और सूर फूँका जाएगा। ये
يَوْمَ الْوَعِيدِ ۝ وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ अज़ाब का दिन है। और हर शख्स आएगा उस के साथ एक हांकने वाला

وَّ شَهِيدٌ ۚ لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا فَكَشَفْنَا

और एक गवाह होगा। (कहा जाएगा) यकीनन तू इस से ग़फ़लत में था, फिर हम ने

عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ۚ وَقَالَ

तुझ से तेरा परदा हटा दिया, फिर तेरी नज़र आज कितनी तेज़ है? और उस का

قَرِينُهُ هَذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ۚ أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ

साथी कहेगा के जो मेरे पास था वो ये हाज़िर है। (हुक़्म होगा) हर सरकश काफ़िर को

كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيذٌ ۚ مَّتَاعٌ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٌ ۚ

जहन्नम में डाल दो। जो खैर से बहोत ज़्यादा रोकने वाला, जुल्म करने वाला, शक करने वाला था।

الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَأَلْقِيهِ فِي الْعَذَابِ

जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा माबूद बनाया, तो उस को सख़्त अज़ाब में

السَّيِّدِ ۚ قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْعَيْتُهُ

फैंक दो। उस का साथी कहेगा के ऐ हमारे रब! मैं ने इस को सरकश नहीं बनाया,

وَلَكِنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۚ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ

लेकिन वो खुद ही दूर वाली गुमराही में था। अल्लाह फरमाएंगे मेरे सामने झगड़ा मत करो, मैं ने

قَدَّمْتُ إِلَيْكُم بِالْوَعِيدِ ۚ مَا يُبَدِّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ

तुम्हारी तरफ पेहले वईद भेज दी थी। मेरे यहाँ कौल में तबदीली नहीं

وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۚ يَوْمَ نَقُولُ لِّجَهَنَّمَ

और मैं बन्दों पर ज़रा भी जुल्म नहीं करता। जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे

هَلْ أُمْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَّزِيدٍ ۚ وَأُزْلِفَتْ

क्या तू भर गई? और वो पूछेगी क्या कुछ और भी है? और जन्नत

الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ۚ هَذَا مَا تُوْعَدُونَ

मुत्तकियों के करीब लाई जाएगी, दूर नहीं होगी। (कहा जाएगा) ये वो है जिस का तुम से वादा किया जाता था

لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيفٍ ۚ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ

हर तौबा करने वाले, हिफाज़त करने वाले कि लिए। जो भी रहमान से डरे बग़ैर देखे

وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ۚ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ذَٰلِكَ يَوْمُ

और तौबा करने वाला दिल ले कर आए। (तो उस से कहा जाएगा) तुम उस में सलामती के साथ दाखिल हो जाओ। ये हमेशा

الْخُلُودِ ۳۳ لَّهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۳۴
रेहने का दिन है। उन के लिए उस में वो नेअमतेँ होंगी जो वो चाहेंगे और हमारे पास और मज़ीद भी है।
وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ
और कितनी कौमें हम ने उन से पेहले हलाक कीं जो कूवत में उन से बढ़ कर
بَطْشًا فَتَقَبُّوا فِي الْبِلَادِ ۳۵ هَلْ مِنْ مَّحِيصٍ ۳۶
थीं, फिर वो शहरों में नक़बज़नी करने लगे। के कहीं भागने की जगह है?
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرٍ لِمَنْ كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى
यकीनन इस में अलबत्ता नसीहत है उस शख्स के लिए जिस के पास दिल हो, या वो कान
السَّمْعِ وَهُوَ شَهِيدٌ ۳۷ وَلَقَدْ خَلَقْنَا
लगाए इस हाल में के वो दिल से मुतवज्जेह भी हो। यकीनन हम ने आसमानों और ज़मीन
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا
और उन चीज़ों को जो उन के दरमियान में हैं छे दिन में पैदा किया। और हमें कुछ भी
مِنْ لُغُوبٍ ۳۸ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ
थकावट नहीं पहेँची। इस लिए आप उन की बातों पर सब्र कीजिए, और सूरज के
رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۳۹
तुलूअ होने से और सूरज के ग़ुसूब होने से पेहले अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए।
وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ۴۰ وَاسْتَمِعْ
और रात के वक्त उस की तस्बीह कीजिए और सज्दों (नमाज़) के बाद भी। और सुन
يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادُ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۴۱ يَوْمَ يَسْمَعُونَ
जिस दिन मुनादी करीबी जगह से आवाज़ देगा। जिस दिन वो वाकेअ
الصَّيْحَةِ بِالْحَقِّ ۴۲ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ۴۳ إِنَّا نَحْنُ
में चिंघाड़ सुनेंगे। (कहा जाएगा के) ये क़ब्रों से निकलने का दिन है। यकीनन हम ही
نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ۴۴ يَوْمَ تَشَقَّقُ
जिन्दा करते है और हम ही मारते हैं और हमारी ही तरफ लौटना है। जिस दिन ज़मीन
الْأَرْضُ عَنْهُمْ سَرَاعًا ۴۵ ذَلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ۴۶
उन से फटेगी इस हाल में के वो दौड़ रहे होंगे। ये क़ब्रों से उठाना हम पर आसान है।

۳
ع
۱۲

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ

हम खूब जानते हैं जो वो केह रहे हैं और आप उन पर जबर करने वाले नहीं हैं।

فَذِكْرٌ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ وَعِيدِ

इस लिए आप इस कुरआन के ज़रिए नसीहत कीजिए उस को जो मेरे अज़ाब से डरता है।

رُكُوعًا ۳

(۵۱) سُورَةُ الذِّرِّيَّتِ مَكِّيَّةٌ (۶۷)

آيَاتُهَا ۶۰

और ३ रूकूअ हैं

सूरह ज़ारियात मक्का में नाज़िल हुई

उस में ६० आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالذِّرِّيَّتِ ذُرْوَا ۱ ۱ ۱ فَالْحِلَالِ ۱ ۱ ۱ وَقُرْآ ۱ ۱ ۱ فَالْجُرِّيَّتِ

उन हवाओं की क़सम जो बिखेर कर गुबार उड़ाती हैं। फिर उन बादलों की जो बोझ को उठाते हैं। फिर उन कशतियों की जो

يُسْرَا ۳ ۳ ۳ فَالْمُقَسِّمِ ۳ ۳ ۳ أَمْرًا ۳ ۳ ۳ إِنَّمَا تُوْعَدُونَ ۳ ۳ ۳ لَصَادِقٍ ۳ ۳ ۳

नर्मी से चलती हैं। फिर उन फरिशतों की जो चीज़ें तक़सीम करते हैं। जिस का तुम से वादा किया जा रहा है, यकीनन वो

وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ۶ ۶ ۶ وَالسَّمَاءِ ۶ ۶ ۶ ذَاتِ الْحُبِّ ۶ ۶ ۶

सच्चा है। और यकीनन हिसाब ज़रूर होने वाला है। उस आसमान की क़सम जो रास्तों वाला है।

إِنَّكُمْ لَفِي قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۸ ۸ ۸ يُؤْفَكُ عَنْهُ ۸ ۸ ۸ مَنْ

(मक्का वालो!) यकीनन तुम इखतिलाफ वाली बात में हो। उस से फेरा जाता है उस को जो

أَفْكَ ۹ ۹ ۹ قَتَلَ الْخَرْصُونَ ۱० १० १० الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ

फिरता है। अटकल से बातें करने वाले मारे जाएं। वो जो ग़फलत में पड़े हुए,

سَاهُونَ ۱१ ११ ११ يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمُ الدِّينِ ۱२ १२ १२ يَوْمَ

भूले हुए हैं। वो सवाल करते हैं के हिसाब का दिन कब है? जिस दिन

هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ ۱३ १३ १३ ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ ۱४ १४ १४ هَذَا

उन को आग में अज़ाब दिया जाएगा। (कहा जाएगा के) तुम अपने फितने को चखो। ये

الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۱५ १५ १५ إِنَّ السَّاعِثِينَ

वो है जिस को तुम जल्दी तलब कर रहे थे। यकीनन मुत्तकी लोग

فِي جَنَّتٍ وَعُيُونٍ ۱६ १६ १६ اخْذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۱७ १७ १७ إِنَّهُمْ

जन्नतों में और चशमों में होंगे। ले रहे होंगे वो जो उन को उन के रब ने दिया है। (इस

كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُحْسِنِينَ ﴿١٧﴾	كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ
वजह से के) वो इस से पेहले नेकी करने वाले थे। वो रात में कम	
مَا يَهْجَعُونَ ﴿١٨﴾	وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿١٩﴾
सोते थे। और सहर के वक़्त वो इस्तिग़फ़ार किया करते थे।	
وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿٢٠﴾	وَفِي الْأَرْضِ
और उन के मालों में हक़ था सवाल करने वाले के लिए भी और ग़ैर साइल फकीर के लिए भी। और ज़मीन में	
أَيُّ لِّلْمُؤَقِنِينَ ﴿٢١﴾	وَفِي أَنْفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٢٢﴾
यकीन करने वालों के लिए निशानियाँ हैं। और खुद तुम्हारे नुफूस में भी। क्या फिर तुम देखते नहीं?	
وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ﴿٢٣﴾	فَوَرَبِّ السَّمَاءِ
और आसमान में तुम्हारी रोज़ी है और वो भी जिस का तुम से वादा किया जाता है। फिर आसमान और	
وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنْطِقُونَ ﴿٢٤﴾	
ज़मीन के रब की क़सम! यकीनन ये हक़ है उस के मानिन्द जैसा के तुम बोलते हो।	
هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٥﴾	إِذْ
क्या तुम्हारे पास इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मुअज़्ज़ज मेहमानों का क़िस्सा पहोंचा? जब वो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास दाखिल	
دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُّنْكَرُونَ ﴿٢٦﴾	
हुए तो उन्होंने ने कहा अस्सलामु अलैकुम। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमया वअलैकुमुस्सलाम। तुम ऐसे लोग हो जो अजनबी मालूम होते	
فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ﴿٢٧﴾	فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ
हो। फिर वो जल्दी से अपने घर वालों की तरफ गए, फिर वो एक मोटा ताज़ा बछड़ा लाए। फिर उस बछड़े को उन के करीब किया,	
قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٨﴾	فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا
इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया तुम खाते क्यूं नहीं? फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने उन की तरफ से खौफ महसूस किया। उन्होंने ने	
لَا تَخَفْ ۖ وَبَشِّرُوهُ بَعْلِمٍ عَلِيمٍ ﴿٢٩﴾	فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ
कहा आप खौफ न कीजिए। और उन फरिशतों ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इल्म वाले लड़के की बशारत दी। फिर उन की बीवी	
فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ﴿٣٠﴾	
सामने आई, फिर माथे पर हाथ मारा और कहा के मैं तो बुढ़िया हो चुकी हूँ, बाँझ हूँ।	
قَالُوا كَذَلِكَ ۖ قَالَ رَبِّكِ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٣١﴾	
उन्होंने ने कहा के इसी तरह होगा। तेरे रब ने कहा है। यकीनन वो हिक्मत वाला, इल्म वाला है।	

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٢٤﴾ قَالُوا إِنَّا

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया फिर तुम्हें क्या काम सौंपा गया है, ऐ फरिशतो? वो केहने लगे हम

أُرْسِلْنَا إِلَى قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٢٥﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ جَارَةً

मुजरिम कौम की तरफ भेजे गए हैं। ताके हम उन पर मिट्टी

مِّن طِينٍ ﴿٢٦﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٢٧﴾

के पथ्थर बरसाएं। जो तेरे रब के पास हद से आगे बढ़ने वालों के लिए निशानजदा हैं।

فَاخْرَجْنَا مَن كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٨﴾

फिर हम ने ईमान वालों को निकाल लिया जो उस बस्ती में थे।

فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٢٩﴾ وَتَرَكْنَا

फिर हम ने उस बस्ती में मुसलमानों के एक घर के सिवा नहीं पाया। और हम ने

فِيهَا آيَةً لِّلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٠﴾

उस में निशानी छोड़ दी उन लोगों के लिए जो दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं।

وَفِي مُوسَى إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰٓنٍ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) में भी जब के हम ने उन्हें फिरऔन की तरफ रोशन दलील दे कर रसूल

مُّبِينٍ ﴿٣١﴾ فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَحَرُ أَوْ مُجُنُّونَ ﴿٣٢﴾

बना कर भेजा। फिर उस ने अरकाने सल्लतनत के बल पर रूगरदानी की, और बोला के ये तो जादूगर या मजनून है।

فَاخَذْنَاهُ وَجُودًا فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٣٣﴾

फिर हम ने उस को और उस के लशकरो को पकड़ लिया, फिर हम ने उन को फैंक दिया समन्दर में जब के उन पर इल्ज़ाम रखा

وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ﴿٣٤﴾

गया। और कौमे आद में जब के हम ने उन पर बाँझ करने वाली हवा भेजी।

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ ﴿٣٥﴾

जिस चीज़ पर भी वो गुज़रती थी उसे गली हुई चीज़ के मानिन्द कर छोड़ती थी।

وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٣٦﴾ فَعْتَوْا

और कौमे समूद में जब उन से कहा गया के तुम एक वक़्त तक मजे उड़ा लो। फिर उन्होंने ने

عَن أَمْرِ رَبِّهِمْ فَاخَذَتْهُمْ الصَّيْقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٣٧﴾

अपने रब के हुक्म से सरकशी की, फिर उन को कड़क ने पकड़ लिया इस हाल में के वो देख रहे थे।

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنْتَصِرِينَ ۝

फिर उन्हें उठने की भी ताकत नहीं थी और वो बदला भी नहीं ले सकते थे।

وَقَوْمٌ نُّوحٌ مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِقِينَ ۝

और कौमे नूह को इस से पेहले। यकीनन वो नाफरमान कौम थी।

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ۝

और आसमान को हम ने कुदरत से बनाया है, और यकीनन हम ही वसीअ करने वाले हैं। और ज़मीन को

فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمُهْدُونَ ۝ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ

हम ने बिछाया, फिर हम कितना अच्छा बिछाने वाले हैं? और हर चीज़ के

خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ فَفَرُّوا

जोड़े हम ने पैदा किए ताके तुम नसीहत हासिल करो। फिर तुम अल्लाह की तरफ

إِلَى اللَّهِ ۖ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ وَلَا تَجْعَلُوا

भागो। यकीनन मैं तुम्हारे लिए उस की तरफ से साफ साफ डराने वाला हूँ। और तुम अल्लाह के साथ

مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۖ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ كَذَلِكَ

दूसरे माबूद मत बनाओ। यकीनन मैं तुम्हारे लिए उस की तरफ से साफ साफ डराने वाला हूँ। इसी तरह

مَا آتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ

उन लोगों के पास भी जो उन से पेहले थे कोई रसूल नहीं आया, मगर उन्होंने ने कहा के ये तो जादूगर है

أَوْ مَجْنُونٌ ۖ اتَّوَصَوْا بِهِ ۖ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ۝

या पागल है। क्या उन्होंने ने एक दूसरे को इस की वसीयत कर रखी है? बल्के ये शरीर कौम है।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِرٍ ۖ وَذَكَرَ فَإِنَّ الدِّكْرَى

तो आप उन से पैराज़ कीजिए, अब आप पर कोई मलामत नहीं। और आप नसीहत करते रहिए, यकीनन नसीहत

تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ

ईमान वालों को नफा देगी। और मैं ने जिन्नात और इन्सान पैदा नहीं किए मगर इस लिए

إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ۖ مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ

ताके वो मेरी इबादत करें। मैं उन से रोज़ी नहीं चाहता और न मैं ये चाहता हूँ

أَنْ يُطْعَمُونَ ۖ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْبَتِّ ۝

के वो मुझे खाना दें। यकीनन अल्लाह ही रोज़ी देने वाला है, वो मज़बूत कूव्वत वाला है।

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا مِّثْلَ ذُنُوبِ أَصْحَابِهِمْ

फिर उन लोगों के लिए जो ज़ालिम हैं बारी है उन के साथियों की बारी की तरह,

فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ ۝ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا

फिर वो जल्दी न मचाएँ। फिर हलाकत है काफिरों के लिए

مَنْ يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝

उन के उस दिन से जिस से उन्हें डराया जा रहा है।

رُكُوعَاتُهَا ٢

(٥٢) سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ (٤١)

آيَاتُهَا ٢٩

और २ रूकूअ हैं सूरह तूर मक्का में नाज़िल हुई उस में ४६ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالطُّورِ ۝ وَكِتَابٍ مَّسْطُورٍ ۝ فِي رَقٍّ مَّنْشُورٍ ۝

तूर की कसम! और किताब की कसम जो लिखी हुई है। जो फैलाए हुए कागज़ में है।

وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ۝ وَالسَّكْفِ الْمَرْفُوعِ ۝ وَالْبَحْرِ

बैते मामूर की कसम। बुलन्द छत की कसम। और दरयाए शोर की कसम,

الْمَسْجُورِ ۝ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝ مَا لَهُ

जो पुर है। यकीनन तेरे रब का अज़ाब ज़रूर वाक़ेअ होने वाला है। उस को

مَنْ دَافِعٌ ۝ يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ۝ وَتَسِيرُ

कोई दफा नहीं कर सकता। जिस दिन आसमान कपकपा कर लरज़ेगा। और पहाड़

الْجِبَالُ سَيْرًا ۝ فَوَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

चलने लगेंगे। फिर उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।

الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ۝ يَوْمَ يَدْعُونَ

उन के लिए जो दिल्लगी में खेल रहे हैं। जिस दिन उन्हें धक्के

إِلَى نَارِ جَهَنَّمَ دَعَاءٌ ۝ هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا

दे कर जहन्नम की आग की तरफ लाया जाएगा। (कहा जाएगा के) ये वो आग है जिस को तुम

تُكَذِّبُونَ ۝ أَفَسِحْرٌ هَذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ۝

झुठलाते थे। क्या ये जादू है या तुम देखते नहीं हो?

إِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ ۖ	तुम उस में दाखिल हो जाओ, फिर सब्र करो या सब्र न करो, तुम पर बराबर है।
إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ	तुम्हें सज़ा दी जाएगी उन्ही आमाल की जो तुम करते थे। यकीनन मुत्तकी लोग
فِي جَنَّتٍ وَنَعِيمٍ ﴿١٧﴾ فَكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۖ وَوَقَاهُمْ	जन्नतों में और नेअमतों में होंगे। मज़ा कर रहे होंगे उस में जो उन को उन के रब ने दिया है। और उन के
رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿١٨﴾ كَلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا	रब ने उन को आग के अज़ाब से बचा लिया है। (कहा जाएगा के) तुम खाओ, पियो, मुबारकबादी है उन आमाल की
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ مُتَكِبِينَ عَلَىٰ سُرُورٍ مِّمَّنْ صُفُوْفَةٍ ۖ	बिना कृतम् तैमलून मुत्किन ऐल सूरि मसूफ़ै वजह से जो तुम करते थे। वो लोग सफ बसफ रखे हुए तख्तों पर टेक लगाए हुए होंगे।
وَزَوْجَهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ	और हम उन का खूबसूरत बड़ी आँखों वाली हूरों के साथ निकाह कराएंगे। और वो जो ईमान लाए और उन की जुरीयत
ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ	ने ईमान में उन की पैरवी की तो हम उन के साथ उन की जुरीयत को मिला देंगे, और हम उन के अमल में
مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۖ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿٢١﴾	से कुछ भी उन के लिए कम नहीं करेंगे। हर शख्स रुका रहेगा उन आमाल की वजह से जो उस ने किए।
وَأَمْدَدْنَاهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢٢﴾	और हम उन्हें बराबर देते रहेंगे मेवे और उन का मरगूब गोश्त।
يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْتِيْمٌ ﴿٢٣﴾	एक दूसरे से छीना झपटी करेंगे वहाँ ऐसे प्याले में जिस में न बकना है और न गुनाह की बातें हैं।
وَيُطَوَّفُ عَلَيْهِمْ غُلَامٌ لَّهُمْ كَذَاتِهِمْ لَوْلَا مَكْنُونٌ ﴿٢٤﴾	और उन पर उन के ऐसे खिदमतगार लड़के चक्कर लगाते रहेंगे गोया वो छुपाए हुए मोती हैं।
وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾ قَالُوا	और उन में से एक दूसरे की तरफ मुतवज्जेह हो कर पूछेंगे। कहेंगे के
إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا	हम इस से पेहले हमारे घर वालों में डरते रहेते थे। फिर अल्लाह ने हम पर एहसान फरमाया

۷۳۱

وَوَقْنَا عَذَابَ السَّمُومِ ﴿٧٣﴾ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ ۚ

और हमें आग के अज़ाब से बचा लिया। हम इस से पेहले उसी को पुकारते थे।

إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿٧٤﴾ فَذَكَرْ فَمَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ

यकीनन वो लुत्फ करने वाला, बड़ा महरबान है। इस लिए आप नसीहत कीजिए, फिर आप अपने रब की नेअमत

رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ﴿٧٥﴾ أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ

की वजह से न काहिन हो और न पागल हो। क्या ये लोग केहते हैं के ये तो शाइर है?

تَتَرَبَّصُّ بِهِ رَيْبَ الْمُنُونِ ﴿٧٦﴾ قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي

हम उस के मुतअल्लिक मौत के हादसे के मुन्तज़िर हैं। आप फरमा दीजिए के तुम मुन्तज़िर रहो, फिर मैं भी

مَعَكُمْ مِّنَ الْمَتَرَبِّصِينَ ﴿٧٧﴾ أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُمْ

तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ। क्या उन को उन की अक्लें इस का हुक्म

بِهَذَا أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٧٨﴾ أَمْ يَقُولُونَ تَقُولُهُ ۚ

देती हैं या ये लोग शरीर ही हैं? क्या वो केहते हैं के इस नबी ने ये कुरआन खुद कहा है?

بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٧٩﴾ فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا

बल्के ये ईमान नहीं लाते। तो उन्हें चाहिए के उस जैसा कोई कलाम ले आएंग अगर ये

صَادِقِينَ ﴿٨٠﴾ أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ﴿٨١﴾

सच्चे हैं। क्या ये बगैर किसी चीज़ के खुद पैदा हो गए या ये खुद पैदा करने वाले हैं?

أَمْ خَلَقُوا السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ ۚ بَلْ لَا يُوقِنُونَ ﴿٨٢﴾

क्या उन्होंने ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है? बल्के ये यकीन नहीं रखते।

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصِيطَرُونَ ﴿٨٣﴾

या उन के पास तेरे रब के खज़ाने हैं या ये हाकिम हैं?

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۚ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُمْ

या उन के पास कोई सीढ़ी है जिस में (चढ़ कर) वो सुन लेते हैं? तो उन को चाहिए के उन का सुनने वाला

بِسُلْطَنِ مُّبِينٍ ﴿٨٤﴾ أَمْ لَهُ الْبَنُوتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ﴿٨٥﴾

कोई रोशन दलील ले आए। क्या अल्लाह के लिए बेटियाँ और तुम्हारे लिए बेटे हैं?

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ﴿٨٦﴾ أَمْ

या आप उन से मुआवज़े का सवाल करते हैं के ये उस तावान में दबे जा रहे हैं? क्या

عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُوبُونَ ﴿۲۱﴾ أَمْ يُرِيدُونَ

उन के पास ग़ैब का इल्म है के ये लिख लेते हैं? या ये मक्र करना

كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ﴿۲۲﴾ أَمْ لَهُمْ

चाहते हैं? फिर जो काफिर हैं उन्ही के खिलाफ तदबीर की जाएगी। क्या उन का

إِلَهُ غَيْرُ اللَّهِ ۖ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿۲۳﴾

कोई माबूद है अल्लाह के सिवा? अल्लाह पाक है उन से जिन्हें वो शरीक बता रहे हैं।

وَإِنْ يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ

और अगर ये आसमान से गिरता हुवा टुकड़ा देख लें, तो कहेंगे के ये तो तेह बतेह

مَرْكُومٌ ﴿۲۴﴾ فَذَرَهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ

बादल है। फिर आप उन्हें छोड़ दीजिए यहाँ तक के वो मिलें अपने उस दिन से जिस में उन पर

يُصْعَقُونَ ﴿۲۵﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا

साइका पड़ेगी। जिस दिन उन की मक्कारी उन के कुछ भी काम नहीं आएगी

وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿۲۶﴾ وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا

और उन की नुसरत नहीं की जाएगी। और उन ज़ालिमों के लिए इस के अलावा भी

دُونَ ذَلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۲۷﴾ وَاصْبِرْ

अज़ाब होगा, लेकिन उन में से अक्सर जानते नहीं। और आप सब्र कीजिए अपने रब

بِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ

के हुक्म की वजह से, फिर ज़रूर आप हमारी निगाहों के सामने हो और आप अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए

تَقُومُ ﴿۲۸﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿۲۹﴾

जिस वक्त आप उठते हो। और रात में भी उस की तस्बीह कीजिए और सितारों के गुरुब होने पर भी।

رُكُوعَاتُهَا ۳

(۵۳) سُورَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ (۲۳)

آيَاتُهَا ۶۲

और ३ रुकूअ हैं

सूरह नज्म मक्का में नाज़िल हुई

उस में ६२ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ۚ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ۚ

सितारे की कसम जब वो गिरे। के तुम्हारे साथी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) न भूले हैं, न भटके हैं।

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۖ

और वो अपनी ख्वाहिश से नहीं बोलते। ये तो सिर्फ वही है जो उन की तरफ वही की जाती है।

عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ۖ ذُو مِرَّةٍ ۖ فَاسْتَوَىٰ ۖ وَهُوَ

उन को सख्त कूवतों वाले फरिश्ते ने सिखाया है। जो ताक़तवर है, फिर वो पूरा नमूदार हुवा। इस हाल में

بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ۖ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ۖ فَكَانَ قَابَ

के वो आसमान के बुलन्द किनारे में था। फिर वो करीब आया, फिर नीचे उतरा। फिर दो कमान के बराबर

قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ۖ فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ۖ

या उस से भी कम फासला रेह गया। फिर अल्लाह ने अपने बन्दे की तरफ वही की जो उस ने वही की।

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ۖ أَفَتُمَرُونَهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ۖ

दिल ने झूठ नहीं बोला जो उस ने देखा। क्या फिर तुम उन से झगड़ते हो उस पर जो वो देख रहे हैं?

وَلَقَدْ رَأَاهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ۖ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَىٰ ۖ

यकीनन उन्होंने ने एक दूसरी मरतबा भी उस (फरिश्ते) को देखा है। सिदरतुल मुन्तहा के पास।

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْبَاوَىٰ ۖ إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ ۖ

जिस के पास जन्नतुल मअवा है। जब के सिदरतुल मुन्तहा को ढांप रही थीं वो चीज़ें जो उस को ढांप रही थीं।

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ ۖ لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ

निगाहे मुबारक न हटी, न (मरई से) आगे बढ़ी। यकीनन आप ने अपने रब की बड़ी निशानियों में से

الْكُبْرَىٰ ۖ أَفَرَأَيْتُمُ اللَّتَ وَالْعُزَّىٰ ۖ وَمَنْوَةَ الثَّالِثَةَ

देखा। क्या फिर तुम ने देखा लात और उज्ज़ा और तीसरे मनात

الْأُخْرَىٰ ۖ أَلَكُمُ الذَّكْرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ ۖ تِلْكَ إِذَا قَسَمَةً

को? क्या तुम्हारे लिए बेटे और अल्लाह के लिए बेटियाँ? यकीनन ये तो बहोत बुरी

ضِيْزَىٰ ۖ إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءُ سَمِيَتْهُمَا

तकसीम है। ये तो सिर्फ नाम हैं जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादाओं ने

أَنْتُمْ وَأَبَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ ۖ إِنْ يَتَّبِعُونَ

रख रखे हैं, जिन पर अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी। वो तो सिर्फ गुमान

إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ

के पीछे चलते हैं और उस के पीछे जिस की नफ्स ख्वाहिश करते हैं। और यकीनन उन के पास उन के रब

رَبِّهِمُ الْهُدَى ۲۳ أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمْتَلِكُ ۚ فَبِئْسَ

ही की तरफ़ से हिदायत आई है। क्या इन्सान को मिलता है जो भी वो चाहे? फिर अल्लाह की मिल्क

الْآخِرَةُ وَالْأُولَى ۚ وَكَمْ مِنْ مَلَكٍ فِي السَّمَوَاتِ

है आखिरत भी और पेहली दुनिया भी। और कितने फरिशते हैं आसमानों में के

لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مَنْ بَعْدَ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ

जिन की सिफारिश कुछ भी काम नहीं आ सकती मगर इस के बाद के अल्लाह इजाज़त दे

لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضَى ۚ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ

जिस के लिए चाहे और पसन्द करे। यकीनन जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते

لَيَسْتَوُونَ أَلْبَلَيْكَ تَسْبِيَةَ الْإِنثَى ۚ وَمَا لَهُمْ بِهِ

वो फरिशतों को लड़कियों का नाम देते हैं। हालाँकि उन के पास उस की कोई

مِنْ عِلْمٍ ۚ إِنَّ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنَّ الظَّنَّ

दलील नहीं। वो सिर्फ़ गुमान के पीछे चलते हैं। और गुमान हक़

لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ فَأَعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّى ۚ

के मुक़ाबले में कुछ भी काम नहीं देता। फिर आप उस से पैराज़ कीजिए जो हमारे ज़िक्र से

عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۚ ذَلِكَ

मुंह मोड़ता है और जो सिर्फ़ दुन्यवी ज़िन्दगी को चाहता है। ये

مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

उन का मबलगे इल्म है। यकीनन तेरा रब वो खूब जानता है उस को जो अल्लाह के

عَنْ سَبِيلِهِ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَى ۚ وَبِاللَّهِ

रास्ते से भटक गया और वो खूब जानता है उस को भी जिस ने हिदायत पाई। और अल्लाह के लिए

مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا

वो तमाम चीज़ें हैं जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं। ताके अल्लाह सज़ा दे उन को जिन्होंने

بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى ۚ الَّذِينَ

बुरे आमाल किए और अल्लाह अच्छा बदला दे उन को जिन्होंने ने नेकियाँ कीं। उन को जो

يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ۚ

बड़े गुनाहों से और बेहयाई के कामों से बचते हैं, सिवाए छोटे गुनाह के।

إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْبُعْدَةِ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِنْ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۚ	यकीनन तेरा रब वसीअ मग़फ़िरत वाला है। वो तुम्हें ख़ूब जानता है जब के उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और जब तुम अपनी माँ के पेटों में जनीन थे।
فَلَا تُزَكُّوْا أَنْفُسَكُمْ ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ ۖ أَفَرَأَيْتَ	६ फिर तुम अपने नुफ़ूस को मुज़क्का मत बताओ। वो ख़ूब जानता है उस को जो मुत्तकी है। क्या आप ने
الَّذِي تَوَلَّىٰ ۖ وَاعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْثَىٰ ۚ أَعِنْدَهُ	देखा उस शख्स को जिस ने ऐराज़ किया? और उस ने थोड़ा सा दिया और हाथ रोक लिया? क्या उस के पास
عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ۚ أَمْ لَمْ يُنَبِّأْ بِمَا فِي صُحُفِ	ग़ैब का इल्म है, फिर वो देख रहा है? क्या उसे खबर नहीं दी गई उन चीज़ों की जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के सहीफों में
مُوسَىٰ ۖ وَابْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ۖ إِلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ	हैं? और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के सहीफों में हैं, जिन्होंने ने (रिसालत का हक़) अदा कर दिया। ये के कोई बोझ उठाने
وَزْرًا أُخْرَىٰ ۖ وَأَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ۖ	वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और ये के इन्सान को वही मिलेगा जो उस ने सई की।
وَأَنْ سَعْيُهُ سَوْفَ يُرَىٰ ۖ ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءُ الْأَوْفَىٰ ۖ	और उस की सई अनकरीब देखी जाएगी। फिर उसे पूरा पूरा बदला दिया जाएगा।
وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْبُنْتَىٰ ۖ وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ۖ	और ये के तेरे रब की तरफ पहोंचना है। और वही हंसाता है और वही रुलाता है।
وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتٌ وَأَحْيَا ۖ وَأَنَّهُ خَلَقَ الزُّوجَيْنِ	और वही मौत देता है और वही ज़िन्दगी देता है। और उसी ने जोड़े पैदा किए,
الدَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ۖ مِنْ تُظْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ۖ وَأَنَّ عَلَيْهِ	मर्द को भी और औरत को भी। एक नुत्फे से जो डाला जाता है। और ये के उसी के ज़िम्मे
النَّشْأَةَ الْاُخْرَىٰ ۖ وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ۖ وَأَنَّهُ	दूसरी मरतबा पैदा करना है। और वही ग़नी करता है और वही मुफलिस बनाता है। और वो
هُوَ رَبُّ الشَّعْرَىٰ ۖ وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ۖ	शिअरा का रब है। और उसी ने पेहले आद को हलाक किया।

وَسُودًا فَمَا أَبْقَى ۝ وَقَوْمَ نُوحٍ مِّنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ

और समूद को हलाक किया, फिर किसी को बाकी नहीं छोड़ा। और उस ने उस से पेहले कौमे नूह को हलाक किया। यकीनन

كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَى ۝ وَالْمُوتِفِكَةَ أَهْوَى ۝

वो सब से ज्यादा जुल्म करने वाले और सब से ज्यादा शरीर थे। और उसी ने उलट दी जाने वाली बस्ती को पटख दिया।

فَعَشَمَهَا مَا عَشَى ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارَى ۝

फिर उस को ढांपा (उन पथ्थरों ने) जिस ने उन को ढांपा। फिर तू अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत पर झगड़ेगा?

هَذَا نَذِيرٌ مِّنَ النَّذْرِ الْأُولَى ۝ أَرَفَتِ الْإِزْفَةَ ۝

ये पेहले डराने वालों में से एक डराने वाला है। करीब आने वाली करीब आ पहोंची।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ۝ أَفِينْ هَذَا

उस को अल्लाह के सिवा कोई दूर नहीं कर सकता। क्या फिर इस

الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ۝ وَ تَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ۝

बात से तुम तअज्जुब करते हो? और हंसते हो और रोते नहीं हो?

وَأَنْتُمْ سَمِدُونَ ۝ فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۝

और तकब्बुर करते हो? तो अल्लाह को सज्दा करो और उस की इबादत करो।

۵५ آیاتها ۵۳ سُورَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ (۳۴) رُكُوعَاتُهَا ۳

उस में ५५ आयतें हैं सूरह क़मर मक्का में नाज़िल हुई और ३ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

إِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ۝ وَإِنْ يَرَوْا آيَةً

क़यामत करीब आ गई और चाँद दो टुकड़े हो गया। और अगर काफिर कोई निशानी देख लें तो

يَعْرِضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُّسْتَمَرٌّ ۝ وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا

ऐराज़ करते हैं और केहते हैं के ये जादू है जो हमेशा से चला आ रहा है। और उन्होंने ने झुठलाया और अपनी

أَهْوَاءَهُمْ وَكُلٌّ أُمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ۝ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ

ख्वाहिश के पीछे चले और हर अम्र ठेहेरने वाला है। यकीनन उन के पास इतनी खबरें आ चुकी हैं

الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ۝ حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا

जिन में (काफी) इबरत है। इन्तिहाई दरजे की हिक्मत है, फिर डराने

وقف الآدم

تُعْنِ التُّدْرُۥ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعُ

वाले भी कुछ काम नहीं आए। इस लिए आप उन से ऐराज कीजिए, जिस दिन एक पुकारने वाला नागवार चीज़ की

إِلَىٰ شَيْءٍ نُّكْرٍ ۖ خُشْعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ

तरफ पुकारेगा। उन की नज़रें झुकी हुई होंगी, वो क़ब्रों से निकल रहे

مِنَ الْجَدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ۖ مُّهْطِعِينَ

होंगे गोया के वो फैली हुई टिड्डियाँ हैं। वो तेज़ दौड़ रहे होंगे

إِلَى الدَّاعِ ۖ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَذَا يَوْمَ عَسْرٍ ۗ كَذَّبَتْ

बुलाने वाले की जानिब। काफिर लोग कहेंगे के ये तो बड़ा सख्त दिन है। उन से पेहले

قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ

कौमे नूह ने भी झुठलाया, फिर उन्होंने ने हमारे बन्दे को झुठलाया और बोले ये तो मजनून है और उस को

وَازْدَجَرَ ۗ فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ ۚ

झिड़क दिया गया। फिर उस ने अपने रब को पुकारा के मैं मगलूब हूँ, तू मेरी नुसरत फरमा।

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَمِرٍ ۖ وَفَجَّرْنَا

फिर हम ने आसमान के दरवाज़े लगातार बरसने वाले पानी के साथ खोल दिए। और हम ने

الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۚ

ज़मीन से चशमे जारी कर दिए, फिर पानी एक हुक़्म पर मिल गया जो पेहले से मुतअय्यन कर दिया गया था।

وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَدُسْرٍ ۖ تَجْرِىٰ بِأَعْيُنِنَا ۖ

और हम ने नूह (अलौहिस्सलाम) को तख्तियों वाली और कीलों वाली कशती पर सवार करा दिया। जो चल रही थी हमारी निगाहों के

جَزَاءٍ لِّمَن كَانَ كُفِرَ ۚ وَلَقَدْ تَرَكْنَاهَا آيَةً

सामने। उस के इन्तिक़ाम के लिए जिस की नाशुकरी की गई। यकीनन हम ने उस को एक निशानी के तौर पर छोड़ दिया,

فَهَلْ مِنْ مُّدْكِرٍ ۚ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ۚ وَلَقَدْ

क्या फिर कोई नसीहत हासिल करने वाला है? फिर मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा रहा? यकीनन

يَسِّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدْكِرٍ ۚ كَذَّبَتْ

हम ने इस कुरआन को याद करने के लिए आसान किया, तो क्या है कोई याद करने वाला? कौमे आद

عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ۚ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ

ने झुठलाया, फिर मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा रहा? यकीनन हम ने उन पर

رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمٍ نَحْسٍ مُسْتَمِرٍّ ۖ تَنْزِعُ	
तूफानी ठन्डी हवा लगातार नहूसत वाले दिन में भेजी। जो इन्सानों को	
النَّاسَ ۖ كَانَتْهُمْ أَعْجَارُ نَخْلٍ مُنْقَعِرٍ ۖ فَكَيْفَ كَانَ	
(उचक) कर फैंक रही थी गोया के वो इन्सान अखड़े हुए खजूर के तने हैं। फिर मेरा अज़ाब	
عَذَابِي وَنُذُرٍ ۖ وَلَقَدْ يَسْرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ	
और मेरा डराना कैसा रहा? यकीनन हम ने इस कुरआन को हिफज़ के लिए (नसीहत के लिए) आसान किया, फिर क्या है कोई	
فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ ۖ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ۖ فَقَالُوا أَبَشْرًا	١
हिफज़ करने वाला (नसीहत हासिल करने वाला)? कौमे समूद ने डराने वालों को झुठलाया। फिर उन्होंने ने कहा के क्या	٨
مِمَّا وَاحِدًا نَتَّبِعُهُ ۖ إِنَّا إِذَا لَفِئَ ضَلِيلٍ وَسُعْرِ ۖ	
हम में से एक इन्सान के हम पीछे चलें? यकीनन हम तब तो गुमराही और दीवानगी में होंगे।	
ءَالَيْقَى الذِّكْرِ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرُّ ۖ	
क्या हमारे दरमियान में से इसी पर ये ज़िक्र डाला गया? बल्के ये तो झूठा है, अकड़ने वाला है।	
سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَنِ الْكَذَّابُ الْإِشْرُ ۖ إِنَّا مُرْسِلُونَ	
जल्द ही कल को ये जान लेंगे के कौन झूठा, अकड़ने वाला है। हम ऊँटनी उन के	
النَّاقَةِ فِتْنَةً لَهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ۖ وَنَبَّيْنَاهُمْ	
इम्तिहान के लिए भेजने वाले हैं, इस लिए आप उन के मुतअल्लिक मुन्तज़िर रहिए और सब्र कीजिए। और उन को	
أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ ۖ كُلُّ شَرِبٍ مُحْتَضَرٌّ ۖ فَنَادَوْا	
खबर दे दीजिए के पानी उन के दरमियान तकसीम है। हर पीने की बारी पर हाज़िर होना है। पस उन्होंने ने	
صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ ۖ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي	
अपने साथी को पुकारा, फिर वो तलवार ले कर आया, फिर उस ने ऊँटनी के पैर काट दिए। फिर मेरा अज़ाब और डराना	
وَ نُنْذِرُ ۖ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا	
कैसा रहा? यकीनन हम ने उन पर एक ही चीख को भेजा, फिर वो बाड़	
كَهَشِيمٍ الْمُحْتَظِرِ ۖ وَلَقَدْ يَسْرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ	
के सूखे भूसे की तरह हो गए। यकीनन हम ने इस कुरआन को नसीहत (याद) के लिए आसान किया,	
فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ ۖ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ۖ	
फिर क्या है कोई नसीहत हासिल (याद) करने वाला? कौमे लूत ने डराने वालों को झुठलाया।	

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ ۖ نَجَّيْنَاهُمْ

यकीनन हम ने उन पर पथ्थर बरसाने वाली तेज़ हवा का अज़ाब भेजा, मगर लूत (अलैहिस्सलाम) के मानने वालों पर। जिन को हम ने

بِسَحَرٍ ۖ تَعْبَةٌ مِّنْ عِنْدِنَا ۖ كَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ

नजात दी रात के पिछले पेहेरे में। हमरी तरफ से नेअमत के तौर पर। इसी तरह हम बदला देते हैं उस को जो

شَكَرَ ۖ وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ۖ

शुक्रगुज़ार होता है। यकीनन उन्होंने ने उन को हमारी पकड़ से डराया, फिर उन्होंने ने डराने वालों के बारे में शक किया।

وَلَقَدْ رَاودُوهُ عَنْ صَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا

और लूत (अलैहिस्सलाम) को फुसलाया उन्होंने ने उन के मेहमानों से, फिर हम ने उन की आँखों को मेट दिया, फिर तुम मेरा अज़ाब

عَذَابِي وَنُذُرِ ۖ وَلَقَدْ صَبَحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ

चखो और मेरे डराने को चखो। यकीनन उन के पास सुबह के वक़्त दाइमी अज़ाब आ चुका सूरज

مُسْتَقِرٌّ ۖ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ۖ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا

निकलते हुए। फिर मेरे अज़ाब को और मेरे डराने को चखो। यकीनन हम ने

الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَكِّرٍ ۖ وَلَقَدْ

कुरआन को हिफज़ कि लिए आसान किया, फिर क्या है कोई हिफज़ करने वाला? यकीनन

جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۖ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا

आले फिरऔन के पास भी डराने वाले आए। जिन्होंने ने हमारी तमाम आयतों को झुठलाया,

فَاخَذْنَاهُمْ أَخَذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ۖ أَكْفَأُكُمْ خَيْرٌ

फिर हम ने उन को एक कुदरत वाले ज़बर्दस्त के पकड़ने की तरह पकड़ लिया। क्या तुम्हारे कुफ़ार उन लोगों से बेहतर

مِّنْ أَوْلِيَّكُمْ أَمْ لَكُمْ بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ ۖ أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ

हैं या तुम्हारे लिए किताबों में बराअत है? या ये केहते हैं के हम इकट्ठे हैं,

جَمِيعٌ مُّنتَصِرُونَ ۖ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ۖ

कामयाब हो जाएंगे? अनकरीब उन इकट्ठे होने वालों को शिकस्त दी जाएगी और ये पुश्त फेर कर भागेंगे।

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَذًى وَآمْرٌ ۖ

बल्के क़यामत उन के वादे का वक़्त है और क़यामत बहोत ज़्यादा खौफनाक और बड़ी कड़वी है।

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۖ يَوْمَ يُسْحَبُونَ

यकीनन मुजरिम गुमराही और आग में होंगे। जिस दिन उन को

فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ۖ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ۝۸

आग में उन के चेहरों के बल घसीटा जाएगा। (कहा जाएगा के) तुम दोज़ख का अज़ाब चखो। यकीनन हम

كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ۝۹ وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ

ने हर चीज़ को मिक्दार से पैदा किया है। और हमारा हुक्म नहीं मगर एक ही मरतबा

كَلْبَحٍ بِالْبَصَرِ ۝۱۰ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاعَكُمْ

आँख के पलक झपकने की तरह। यकीनन हम ने तुम्हारे हममस्लकों को हलाक किया,

فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ۝۱۱ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ۝۱۲ وَكُلُّ

फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? और हर चीज़ जो उन्होंने ने की दफ्तरों में लिखी हुई है। और हर

صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌّ ۝۱۳ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ

छोटी और बड़ी हरकत लिखी हुई है। यकीनन मुत्तकी लोग जन्नतों और नेहरों में

وَنَهْرٍ ۝۱۴ فِي مَقْعَدِ صَدَقٍ عِنْدَ مَلِكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝۱۵

होंगे। सच्चाई की जगह में होंगे कुदरत वाले बादशाह के पास।

۷۴۰:-

رُؤُوسُهُمَا ۙ

(۵۵) سُورَةُ الرَّحْمَنِ الْمَدَنِيَّةُ (۹۷)

آيَاتُهَا ۷۸

और ३ रूकूअ हैं

सूरह रहमान मदीना में नाज़िल हुई

उस में ७८ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الرَّحْمَنُ ۝۱ عَلَّمَ الْقُرْآنَ ۝۲ خَلَقَ الْإِنْسَانَ ۝۳ عَلَيْهِ

रहमान ने कुरआन की तालीम दी। उस ने इन्सान को पैदा किया। उस ने

الْبَيَانَ ۝۴ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝۵ وَالنَّجْمُ

उसे बोलना सिखलाया। चाँद और सूरज एक हिसाब से चल रहे हैं। और बेल

وَالشَّجَرُ يَسْجُدْنَ ۝۶ وَالسَّمَاءُ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ۝۷

और दरख्त अल्लाह को सज्दा करते हैं। और उस ने आसमान बुलन्द किया और उस ने तराजू रख दिया।

أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ۝۸ وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ

(हुक्म दिया) के तुम तोलने में ज़्यादती मत करो। और इन्साफ के साथ ठीक तोला करो

وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ۝۹ وَالْأَرْضُ وَضَعَهَا لِلْأَنَامِ ۝۱۰

और तोलने में कम कर के मत दो। और उस ने मख्लूक के लिए ज़मीन बनाई।

فِيهَا فَارِكُهُ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ۝۱۱ وَالْحَبُّ	जिस में मेवे हैं और खजूर हैं गिलाफ वाले। और अनाज है
ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۝۱۲ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا	भूसे वाला और खुशबूदार फूल हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस
تُكَذِّبِينَ ۝۱۳ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝	नेअमत को झुठलाओगे? उस ने इन्सान को पैदा किया ठीकरी की तरह खनखनाती मिट्टी से।
وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ مِنْ نَارٍ ۝۱۵ فَبِأَيِّ آلَاءِ	और उस ने जिन्नात को पैदा किया आग की लपट से। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की
رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝۱۶ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝	नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? वो दोनों मशरिफ़ का रब है और दोनों मगरिब का रब है।
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝۱۸ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ	फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? उस ने दो समन्दर मिला कर चलाए
يُلْتَقَيْنِ ۝۱۹ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَانِ ۝۲۰ فَبِأَيِّ آلَاءِ	जो बाहम मिलते हैं। हालांकि उन दोनों के दरमियान में एक आड़ है के एक दूसरे से तजावुज़ नहीं करते। फिर (ऐ इन्सानो और
رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝۲۱ يَخْرُجُ مِنْهُمَا الْوُحُوشُ وَالرَّجَاوُ ۝	जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? उन दोनों से निकलते हैं मोती और मूंगे।
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝۲۲ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ	फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? और उस के हैं समन्दर में
فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝۲۳ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝	पहाड़ों जैसे ऊँचे जहाज़। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?
كُلٌّ مِنْ عَلَيْهَا فَإِنَّ ۝۲۴ وَيَبْقَى وَجْهُ رَبِّكَ	हर वो चीज़ जो ज़मीन पर है फना होने वाली है। और तेरे अज़मत और इज़ज़त वाले रब का
ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝۲۵ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا	चेहरा बाकी रहेगा। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को
تُكَذِّبِينَ ۝۲۸ يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝	झुठलाओगे? उसी से माँगते हैं वो जो आसमानों और ज़मीन में हैं।

كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ٢٩ فَبَايَ الْإِلَهِ رَبِّكُمْ تُكَذِّبِينَ ٣٠

हर दिन वो एक शान (हाल) में होता है। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلَيْنِ ٣١ فَبَايَ الْإِلَهِ رَبِّكُمْ

अनकरीब हम तुम्हारे लिए फारिग होंगे ऐ इन्सानों और जिन्नात की दोनों जमाअतो! फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने

تُكَذِّبِينَ ٣٢ يَمْعَشَرُ الْجِنَّ وَالْإِنْسُ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ

रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? ओ इन्सानों और जिन्नात की जमाअत! अगर तुम को ये कुदरत है

أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

के आसमानों और ज़मीन की हुदूद से कहीं बाहर निकल जाओ,

فَأَنْفُذُوا ۚ لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَنِ ٣٣ فَبَايَ الْإِلَهِ

तो तुम सूराख कर के निकल जाओ। तुम निकल नहीं सकते मगर परवानअे इजाज़त से। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!)

رَبِّكُمْ تُكَذِّبِينَ ٣٤ يُرْسَلُ عَلَيْكُمْ شَوَاطِلُ

तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? तुम्हारे ऊपर आग का रोशन शौला और धुवाँ छोड़ा

مِنْ تَارِيٍّ وَنَحَاسٍ فَلَا تَنْتَصِرُونَ ٣٥ فَبَايَ الْإِلَهِ رَبِّكُمْ

जाएगा। फिर तुम मुक़ाबला नहीं कर सकोगे। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से

تُكَذِّبِينَ ٣٦ فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً

किस किस नेअमत को झुठलाओगे? फिर जब आसमान फट पड़ेगा, तो वो गुलाबी हो जाएगा तेल की तलछट की

كَالِدِهَانٍ ٣٧ فَبَايَ الْإِلَهِ رَبِّكُمْ تُكَذِّبِينَ ٣٨ فَيَوْمَئِذٍ

तरह। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? फिर उस दिन उस के

لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ٣٩ فَبَايَ الْإِلَهِ

गुनाहों के मुतअल्लिक सवाल नहीं किया जाएगा किसी इन्सान और किसी जिन से। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम

رَبِّكُمْ تُكَذِّبِينَ ٤٠ يُعْرِفُ الْجَرْمُونَ بِسَيِّئِهِمْ

अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? मुजरिमों को पेहचान लिया जाएगा उन की अलामतों से,

فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ٤١ فَبَايَ الْإِلَهِ

फिर उन्हें पकड़ा जाएगा पेशानी के बालों और कदमों से। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों

رَبِّكُمْ تُكَذِّبِينَ ٤٢ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا

में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? (कहा जाएगा के) ये वो जहन्नम है जिस को मुजरिम

وَقَالَ

فَيَا

الْمُجْرِمُونَ ۚ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ ۚ اِنَّ

झुठलाते थे। वो चक्कर लगा रहे होंगे जहन्नम के दरमियान और खौलते हुए गर्म पानी के दरमियान।

فَيَا اِلٰهَ رَبِّكُمْ تُكَذِّبْنَ ۚ وَلَمَنْ خَافَ مَقَامَ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? और उस शख्स के लिए जो अपने रब

رَبِّهِ جَحْتَنَ ۚ فَيَا اِلٰهَ رَبِّكُمْ تُكَذِّبْنَ ۚ

के सामने खड़ा होने से डरे दो जन्नतें होंगी। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को

ذَوَاتَا اَفْنَانٍ ۚ فَيَا اِلٰهَ رَبِّكُمْ تُكَذِّبْنَ ۚ

झुठलाओगे? वो कसीर शाखों वाले होंगे। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?

فِيهِمَا عَيْنٌ تَجْرِيَنِ ۚ فَيَا اِلٰهَ رَبِّكُمْ

उन दोनों में दो चश्मे चल रहे हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस

تُكَذِّبْنَ ۚ فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَيْنِ ۚ

किस नेअमत को झुठलाओगे? उन दोनों में हर मेवे की दो दो किस्में होंगी।

فَيَا اِلٰهَ رَبِّكُمْ تُكَذِّبْنَ ۚ مُتَكِّيْنَ عَلَىٰ فُرُشٍ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? वो टेक लगाए हुए

بَطَائِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۚ

होंगे तख्तों के ऊपर जिन के अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे। और दोनों जन्नतों के मेवे करीब लटक रहे होंगे।

فَيَا اِلٰهَ رَبِّكُمْ تُكَذِّبْنَ ۚ فِيْهِنَّ قَصْرٌ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? उन में नीची

الظَّرْفِ ۚ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۚ

निगाहों वाली हूँ होंगी, जिन को न किसी इन्सान ने छुवा उन से पेहले और न किसी जिन ने।

فَيَا اِلٰهَ رَبِّكُمْ تُكَذِّبْنَ ۚ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? गोया के वो हूँ याकूत

وَالْمَرْجَانُ ۚ فَيَا اِلٰهَ رَبِّكُمْ تُكَذِّبْنَ ۚ

और मूंगे हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?

هَلْ جَزَاءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۚ فَيَا

नेकी का बदला तो सिवाए नेकी के और क्या होगा? फिर (ऐ इन्सानो

اَلَا رَّبُّكُمْ تُكَذِّبْنَ ﴿٦٠﴾ وَمِنْ دُونِهِنَّ

और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? और उन दोनों जन्नतों के अलावा

جَنَّتَيْنِ ﴿٦١﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبْنَ ﴿٦٢﴾

और भी दो जन्नतें हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?

مُدْهَمَّتَيْنِ ﴿٦٣﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبْنَ ﴿٦٤﴾

दोनों गेहरे सब्ज सियाही माइल हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?

فِيهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاحَتَيْنِ ﴿٦٥﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا

उन में उबलते हुए दो चशमे हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस

تُكَذِّبْنَ ﴿٦٦﴾ فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ﴿٦٧﴾

किस नेअमत को झुठलाओगे? उन दोनों में मेवे हैं और खजूर हैं और अनार।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبْنَ ﴿٦٨﴾ فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? उन में नेक खूबसूरत

حَسَنَاتٌ ﴿٦٩﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبْنَ ﴿٧٠﴾ حُورٌ

औरतें हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? वो हूरें

مَقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧١﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا

हैं जो खैमों में ठेहरी हुई हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस

تُكَذِّبْنَ ﴿٧٢﴾ لَمْ يَطْبُخُنَّ إِسْءُ قَبْلَهُمْ وَلَا جِآنٌ ﴿٧٣﴾

नेअमत को झुठलाओगे? जिन को उन से पेहले किसी इन्सान ने छुवा नहीं और न किसी जिन ने।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبْنَ ﴿٧٤﴾ مُتَكِينِينَ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? वो जन्नती टेक

عَلَى رَفْرَفٍ خُضِرٍ وَ عَبَقَرِيِّ حَسَنِ ﴿٧٥﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ

लगाए हुए होंगे सब्ज अजीब खूबसूरत मस्नदों पर। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने

رَبِّكُمَا تُكَذِّبْنَ ﴿٧٦﴾ تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ

रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? तेरे जलाल और अज़मत

ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٧٧﴾

वाले रब का नाम बड़ा बाबरकत है।

	رُؤُوسُهُمَا ٣	(٥٦) سُورَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ (٣٦)	آيَاتُهَا ٩٦
	और ३ रूकूअ हैं	सूरह वाकिआ मक्का में नाज़िल हुई	उस में ९६ आयतें हैं
	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।		
	إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۚ لَيْسَ لَوْقَعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۖ जब वाक़ेअ होने वाली क़यामत वाक़ेअ होगी। जिस के वाक़ेअ होने में कोई झूठ नहीं।		
	خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۖ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًا ۖ वो पस्त करने वाली, बुलन्द करने वाली है। जब ज़मीन लरज़ उठेगी कपकपाती हुई।		
	وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۖ فَكَانَتْ هَبَاءً مُنْبَثًّا ۖ और पहाड़ टूट कर रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे। फिर वो उड़ता हुवा गुबार बन जाएंगे।		
	وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ۖ فَاصْحَبْ الْيَمِينَةَ ۖ और तुम तीन जमाअतें बन जाओगे। फिर दाईं तरफ वाले,		
	مَا أَصْحَبُ الْيَمِينَةَ ۗ وَ أَصْحَبُ الْمَشْأَمَةِ ۖ दाईं तरफ वाले कितने अच्छे हैं! और बाईं तरफ वाले,		
	مَا أَصْحَبُ الْمَشْأَمَةِ ۗ وَالسَّبْقُونَ السَّبْقُونَ ۖ क्या ही बुरे बाईं तरफ वाले! और सबक़त करने वाले तो सबक़त करने वाले ही हैं।		
	أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۖ فِي جَنَّتِ النَّعِيمِ ۖ ثَلَاثَةٌ यही मुक़र्रबीन हैं। जो जन्नाते नईम में होंगे। वो ज़्यादातर		
	مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۖ وَ قَلِيلٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۖ तो अगले लोगों में से होंगे। और पीछे वालों में से थोड़े होंगे।		
	عَلَىٰ سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ۖ مُّتَكِّينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ ۖ वो ऐसे तख्तों पर टेक लगाए हुए होंगे, जो सौने के तारों से जड़े हुए होंगे। वो उन पर टेक लगाए आमने		
	يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۖ بِأَكْوَابٍ सामने बैठे होंगे। उन पर चक्कर लगा रहे होंगे ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे। प्याले		
	وَأَبَارِيقَ ۖ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۖ لَا يُصَدَّعُونَ और जग और ग्लास ले कर ऐसे चशमे से, जिस से न सरदर्द		

عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ﴿٢٠﴾	وہاں سے نہ نکالیں گے اور نہ وہ پسنندی والی چیزیں لے کر۔
وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢١﴾ وَحَوْرٍ عَيْنٍ ﴿٢٢﴾	اور پرندوں کا گوشت جو ان کو مرغوب ہو اور بڑی آنکھوں والی خوبسूरत ہرے ہوں گی۔
كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ﴿٢٣﴾ جَزَاءُ بِمَا كَانُوا	چھپا ہوا موتیوں کی طرح۔ ان کے اعمال کے बदले
يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ﴿٢٥﴾	میں۔ وہ اس جنت میں نہ لگوانے والی بات سنے گی اور نہ گناہ کی بات سنے گی۔
إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ﴿٢٦﴾ وَ أَصْحَابُ الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾	مگر ایک ہی کلام سنے گی: افسسسلامو افسسسلامو، افسسسلامو افسسسلامو اور دائیں طرف والے۔
مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ﴿٢٨﴾ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ وَطَلْحٍ	دائیں طرف والے کیا (خوب) ہیں! کانٹے سے کیڑے کیڑے کیڑے میں، اور تھکے تھکے
مَنْضُودٍ ﴿٢٩﴾ وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ﴿٣٠﴾ وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٣١﴾	رکھنے والوں میں، اور لمبے سے میں، اور بہتے ہوئے پانی میں،
وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾	اور بکسرت میں وہیں ہوں گے، جو کبھی نہ ختم ہوں گے نہ کبھی ممانعت ہوگی۔
وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ﴿٣٤﴾ إِنَّا أَنشَأْنَهُنَّ إِنِشَاءً ﴿٣٥﴾	اور اونچے اونچے فرشوں میں ہوں گے۔ ہم نے ان کو کھانسی سے بنا دیا ہے۔
فَجَعَلْنَهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٦﴾ عُرُبًا أَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِأَصْحَابِ	پھر ہم نے ان کو باکیرا، بہت زیادہ پیار دلانے والی، ہم عمر بنایا ہے۔ اسباب سے زمین
الْيَمِينِ ﴿٣٨﴾ ثَلَاثَةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٩﴾ وَ ثَلَاثَةٌ	۷۴ کے لیے وہ بڑی جماعت اگلے لوگوں میں سے ہوں گی۔ اور بڑی جماعت پیچھے لوگوں میں
مِّنَ الْآخِرِينَ ﴿٤٠﴾ وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ مَا أَصْحَابُ	سے ہوں گی۔ اور بائیں طرف والے۔ بائیں طرف والے کیا (ہیں)
الشِّمَالِ ﴿٤٢﴾ فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ﴿٤٣﴾ وَظِلٍّ مِّنْ	بुरے) ہیں! وہ لڑ میں ہوں گے اور گرم پانی میں ہوں گے۔ اور دھنوں کے سے میں

يَحْمُومٍ ۚ لَا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا	होंगे। न ठन्डा होगा और न अच्छा होगा। इस लिए के वो
قَبْلَ ذَلِكَ مُتْرَفِينَ ۚ وَكَانُوا يُصِرُّونَ	उस से पहले खुशहाल थे। और बड़े गुनाहों पर
عَلَى الْحِنْتِ الْعَظِيمِ ۚ وَكَانُوا يَقُولُونَ ۚ أَبَدًا	इसरार करते थे। और वो केहते थे के क्या जब हम
مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَ عِظَامًا ؕ إِنَّا لَنَبْعُوْثُوْنَ ۚ	मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे और हड्डियाँ हो जाएंगे तब हम कब्रों से उठाए जाएंगे?
أَوَابَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۚ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ	हम भी और हमारे बाप दादा भी। आप फरमा दीजिए के यकीनन पेहले वाले
وَالْآخِرِينَ ۚ لَجْمُوعُهُنَّ إِلَىٰ مِيقَاتٍ يَوْمٍ	और पीछे आने वाले। सब के सब ज़रूर जमा किए जाएंगे एक मालूम दिन के मुकर्ररा
مَعْلُومٍ ۚ ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيْهَا الضَّالُّونَ الْبُكَدُّونَ ۚ	वक़्त में। फिर तुम ऐ गुमराह लोगो! झुठलाने वालो!
لَا تَكُلُونَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زُقُومٍ ۚ فَكَائِنُونَ	तुम ज़रूर खाओगे ज़क्कूम के दरख्त से। फिर उसी
مِنْهَا الْبُطُونُ ۚ فَشَرِبُونَ عَلَيْهِ	से पेट भरोगे। फिर उस के ऊपर गर्म पानी
مِنَ الْحَمِيمِ ۚ فَشَرِبُونَ شَرَبَ الْهَيْمِ ۚ هَذَا	पियोगे। फिर पियोगे प्यासे ऊँट के पीने की तरह। ये
نَزَّلَهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ۚ نَحْنُ خَلَقْنَكُمْ	उन की मेहमानी होगी हिसाब के दिन। हम ने तुम्हें पैदा किया,
فَلَوْلَا تَصَدَّقُونَ ۚ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تُمْنُونَ ۚ ءَأَنْتُمْ	फिर तुम तस्दीक क्यूं नहीं करते? क्या फिर तुम ने देखा वो मनी जो तुम डालते हो? क्या तुम
تَخْلُقُونَ ۚ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ۚ نَحْنُ قَدَرْنَا	उसे पैदा करते हो या हम पैदा करने वाले हैं? हम ने तुम्हारे दरमियान

بَيْنَكُمْ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۝	हैं। नहीं आजिज़ हम और दी कर मुक़द्दर मौत
عَلَى أَنْ تُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝	इस बात से के हम तुम्हारे जैसे बदले में लाएं और तुम्हें पैदा कर दें उस शक्ल में जो तुम जानते भी नहीं।
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ۝	यकीनन तुम्हें मालूम है पेहली पैदाइश, फिर तुम नसीहत क्यों हासिल नहीं करते?
أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ ۝ ءَأَنْتُمْ تَزْرَعُونَهُ	क्या तुम ने देखा उस को जो तुम बोते हो? क्या तुम उस खेती को उगाते हो
أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ۝ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا	या हम खेती उगाने वाले हैं? अगर हम चाहें तो हम उसे चूरा चूरा बना दें,
فَقُلْتُمْ تَفْكُهُونَ ۝ إِنْآ لَمُغْرَمُونَ ۝ بَلْ نَحْنُ	फिर तुम बातें बनाते रह जाओ। के यकीनन हम तो कर्जदार बन गए। बल्के हम
مَحْرُومُونَ ۝ أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ۝	तो महरूम हो गए। क्या तुम ने देखा वो पानी जो तुम पीते हो?
ءَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ ۝	क्या तुम ने उस को बादल से उतारा या हम उतारने वाले हैं?
لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ۝	अगर हम चाहें तो उसे खारा बना दें, फिर तुम शुक्र अदा क्यों नहीं करते?
أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ۝ ءَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمُ	क्या तुम ने देखा उस आग को जिसे तुम सुलगाते हो? क्या तुम ने उस का
شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُونَ ۝ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا	दरख्त पैदा किया या हम पैदा करने वाले हैं? हम ने उस को
تَذَكُّرًا ۝ وَمَتَاعًا لِلْمُقْوِينَ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ	नसीहत और मुसाफिरों के लिए फाइदे की चीज़ बनाया। फिर अपने अज़मत वाले रब
رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝ فَلَا أُقْسِمُ بِمَوْقِعِ الدُّجُومِ ۝	के नाम की तस्बीह कीजिए। फिर मैं कसम खाता हूँ सितारों के गुरुब की जगहों की।

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لِّوُ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ٤٦ إِنَّهُ لَقُرْآنٌ	और यकीनन ये बड़ी कसम है काश के तुम जानते। ये इज्जत वाला
كَرِيمٌ ٤٧ فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ٤٨ لَا يَمَسُّهُ	कुरआन है। वो महफूज़ रखी हुई किताब में है (लौहे महफूज़ में है)। उस को नहीं छूते
إِلَّا الْمَطَهَّرُونَ ٤٩ تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ٥٠	मगर पाक फरिश्ते। ये रबुल आलमीन की तरफ से उतारा गया है।
أَفِهَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُذْهِبُونَ ٥١ وَتَجْعَلُونَ	सो क्या तुम लोग इस कलाम को सरसरी बात समझते हो? और तुम अपना हिस्सा
رَرْقَكُمْ أَنْتُمْ تَكْذِبُونَ ٥٢ فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ	ये बनाते हो के तुम उसे झुठलाते हो? फिर जब रुह हलक
الْحُلُقُومَ ٥٣ وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ٥٤ وَنَحْنُ	तक पहुँचती है। और तुम उस वक्त का मन्ज़र देखते भी हो। और हम
أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ٥٥	तुम से उस (मरने वाले) के ज़्यादा करीब होते हैं, लेकिन तुम देख नहीं पाते।
فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ٥٦ تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ	फिर अगर तुम से हिसाब लिया जाना नहीं है, तो तुम उस रुह को वापस क्यों नहीं लौटा देते अगर तुम
صَادِقِينَ ٥٧ فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ٥٨	सच्चे हो? फिर अलबत्ता अगर वो मुकर्रबीन में से है,
فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ ٥٩ وَجَنَّتْ نَعِيمٌ ٦٠ وَأَمَّا	तो राहत होगी और खुशबूदार फूल होंगे। और जन्नते नईम होगी। और अलबत्ता
إِنْ كَانَ مِنَ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ٦١ فَسَلَامٌ لَّكَ	अगर वो असहाबे यमीन में से है, सो उस से कहा जाएगा के तेरे लिए अमन व अमान है
مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ٦٢ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمَكْذِبِينَ	के तू असहाबे यमीन (दाहने वालों) में से है। और अलबत्ता अगर वो झुठलाने वाले गुमराहों
الضَّالِّينَ ٦٣ فَتُرِلُ مِنْ حَيْمٍ ٦٤ وَتَصْلِيَةٌ	में से है, तो उस की मेहमानी की जाएगी गर्म पानी से। और आग में

दाखिल करना है।	يَقِينَنَّ ٩٥ ۞ فَسَبِّحْ यकीनन ये अलबत्ता हक्कुल यकीन है।	इस लिए
	بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ٩٦ आप अपने अज़मत वाले रब के नाम की तस्बीह कीजिए।	
और ४ रूकूअ हैं	رُكُوعَاهَا ٢ (٥٤) سُورَةُ الْحَدِيدِ مَكِّيَّةٌ (٩٢) اِيَّاهَا ٢٩ सूरह हदीद मदीना में नाज़िल हुई उस में २९ आयतें हैं	
	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ٩٧ पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।	
अल्लाह के लिए तस्बीह करती हैं वो	سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ٩٨ وَهُوَ الْعَزِيزُ तमाम चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं। और वो ज़बर्दस्त है,	
हिक्मत वाला है।	الْحَكِيمُ ٩٩ لَهُ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ١٠٠ يُحْيِي उस के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है। वो ज़िन्दा करता है	
और मौत देता है।	وَيُيْتِ ١٠١ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ١٠٢ هُوَ الْأَوَّلُ और वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है। वही पेहला है	
और आखिर है	وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ١٠٣ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ और वही ज़ाहिर है और बातिन है। और वो हर चीज़ को खूब जानने	
वाला है।	عَلِيمٌ ١٠٤ هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ उस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया	
छे दिन में,	فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ ١٠٥ يَعْلَمُ फिर वो अर्श पर मुस्तवी हुवा। वो जानता है	
उन चीज़ों को जो ज़मीन में	مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ दाखिल होती हैं और जो ज़मीन से निकलती हैं और जो आसमान	
से उतरती हैं	مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ١٠٦ وَهُوَ مَعَكُمْ में चढ़ती हैं। और वो तुम्हारे साथ होता है	
जहाँ तुम होते हो।	أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ١٠٧ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ١٠٨ और अल्लाह तुम्हारे आमाल को खूब देख रहा है। उस के लिए	

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلٰى اللّٰهِ تُرْجَعُ	आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है। और अल्लाह की तरफ तमाम उमूर लौटाए
الْاُمُورِ ۚ يُوَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوَلِّجُ النَّهَارَ	जाएंगे। वो रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में
فِي اللَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ اٰمِنُوْا	दाखिल करता है। और वो दिलों के हाल को खूब जानता है। ईमान लाओ
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ ۚ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ	अल्लाह पर और उस के रसूल पर और तुम खर्च करो उन चीज़ों में से जिस में अल्लाह ने तुम्हें जानशीन
فِيْهِ ۚ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ	बनाया है। तो वो लोग जो तुम में से ईमान लाए और वो खर्च करते हैं उन के लिए बड़ा
كَبِيْرٌ ۚ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ	अज्र है। और तुम्हें क्या हुवा के तुम ईमान नहीं लाते अल्लाह पर? हालांके रसूल
يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ	तुम्हें बुला रहे हैं ताके तुम अपने रब पर ईमान ले आओ और उस ने तुम से भारी अहद लिया है
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ	अगर तुम मोमिन हो। वही अपने बन्दे पर रोशन
عَلٰى عَبْدٍ اٰتٰى بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ	आयतें उतारता है ताके वो तुम्हें निकाले तारीकियों से
اِلَى النُّوْرِ ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝	नूर की तरफ। और यकीनन अल्लाह तुम पर बहोत ज़्यादा शफकत वाला, निहायत महरबान है।
وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ مِيْرٰثُ	और तुम्हें क्या हुवा के अल्लाह के रास्ते में तुम खर्च नहीं करते? हालांके अल्लाह ही के लिए
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ	आसमानों और ज़मीन की मीरास है। तुम में से बराबर नहीं हैं वो जिन्हों ने खर्च किया
مِّنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَتْلَ ۚ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً	फतह से पेहले और क़िताल किया। ये ज़्यादा भारी दरजात वाले हैं

مِّنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدُ وَقَتَلُوا ۖ وَكُلًّا

उन की बनिस्बत जिन्होंने ने उस के बाद खर्च किया और उस के बाद क़िताल किया। और तमाम से

وَعَدَ اللَّهُ الْحُسَيْنِ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

अल्लाह ने अच्छा वादा कर रखा है। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर हैं।

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضِعَّهُ

कौन है जो अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दे, फिर उस के लिए अल्लाह कई गुना

لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ

बढ़ाए और उस के लिए अच्छा सवाब है। जिस दिन आप देखोगे ईमान वाले मर्दों

وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَى نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ

और ईमान वाली औरतों को के उन का नूर उन के आगे और उन के दाएं चल रहा होगा,

بُشْرِكُمْ الْيَوْمَ الْجَنَّةُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

(कहा जाएगा के) तुम्हें बशारत हो आज ऐसी जन्नतों की जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, जिन में ये

خَالِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ يَوْمَ

हमेशा रहेंगे। ये बड़ी कामयाबी है। जिस दिन

يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا

मुनाफ़िक मर्द और मुनाफ़िक औरतें ईमान वालों से कहेंगे के

انْظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُورِكُمْ ۚ قِيلَ ارْجِعُوا

तुम हमारा इन्तिज़ार करो के हम तुम्हारे नूर से कुछ रोशनी हासिल कर लें। (कहा जाएगा के) तुम अपने पीछे वापस लौट

وَرَاءَكُمْ ۚ فَاتَمِسُوا نُورًا ۖ فَضُرِبَ بَيْنَهُم بِسُورٍ لَهُ

जाओ, वहाँ तुम नूर तलाश करो। फिर उन के दरमियान में एक दीवार काइम कर दी जाएगी, जिस के लिए दरवाज़ा

بَابٌ ۖ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ

होगा। जिस के अन्दर में रहमत होगी और उस के बाहर उस से आगे अज़ाब

الْعَذَابُ ۚ يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ ۚ قَالُوا

होगा। वो उन को पुकारेंगे के क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे? वो कहेंगे

بَلَىٰ وَلَكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ

क्यूं नहीं? लेकिन तुम ने अपने आप को खुद अज़ाब में डाला है और तुम हम पर बला के मुन्तज़िर रहे और तुम शक में रहे

وَعَزَّتْكُمْ الْآمَانِي حَتَّى جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَعَزَّكُمْ

और तुम्हें तमन्नाओं ने धोके में डाले रखा यहाँ तक के अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा और तुम्हें अल्लाह के साथ

بِاللَّهِ الْغُرُورُ ١٧ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ

धोके में डाले रखा धोकेबाज़ शैतान ने। फिर आज न तुम से फिदया लिया जाएगा

وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مَأْوِكُمُ النَّارُ هِيَ

और न काफिरों से। तुम्हारा ठिकाना दोज़ख होगा। यही

مَوْلَاكُمْ ١٨ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ١٩ أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ

तुम्हारा साथी है। और बुरी जगह है। क्या ईमान वालों के लिए इस का वक़्त नहीं

أَمِنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ

आया के उन के दिल डर जाएं अल्लाह के ज़िक्र के सामने और उस हक़ के सामने जो

مِنَ الْحَقِّ ٢٠ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ

उतरा है और ये न हों उन लोगों की तरह जिन को उन से पेहले

مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ ٢١

किताब दी गई, फिर उन पर मुदत लम्बी हुई, फिर उन के दिल सख्त हो गए।

وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ٢٢ إِعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ

और उन में से अक्सर नाफरमान हैं। खूब जान लो के अल्लाह

يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ٢٣ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمْ

ज़मीन को ज़िन्दा करता है उस के खुश्क हो जाने के बाद। यकीनन हम ने तुम्हारे लिए

الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ٢٤ إِنَّ الْمُصَدِّقِينَ

आयतों को खोल खोल कर बयान किया है ताके तुम अक़लमन्द बन जाओ। यकीनन सदक़ा करने वाले मर्द

وَالْمُصَدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَعَفُ

और सदक़ा करने वाली औरतें और जिन्होंने ने अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दिया, तो उन के

لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ٢٥ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ

लिए उस कर्ज़ को दुगना किया जाएगा और उन के लिए अच्छा सवाब होगा। और जो ईमान लाए अल्लाह पर

وَرُسُلِهِ أُولَئِكَ هُمُ الصِّدِّيقُونَ ٢٦ وَالشُّهَدَاءُ

और उस के पैगम्बरों पर, ऐसे ही लोग अपने रब के नज़दीक

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَ نُورُهُمْ ۚ وَالَّذِينَ	सिद्दीक और शहीद हैं। उन के लिए उन का अज्र और उन का नूर होगा। और जिन्होंने ने
كَفَرُوا وَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ	कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वो दोजखी
الْجَحِيمِ ۚ ۞ اَعْلَمُوا أَنَّهَا الْحَيَوَةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ	हैं। जान लो के दुन्यवी ज़िन्दगी तो सिर्फ खेल
وَلَهُمْ وَ زِينَةٌ وَ تَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ	और ग़फ़लत और ज़ीनत और आपस में फखर करना है और आपस में एक दूसरे से
فِي الْأَمْوَالِ وَ الْأَوْلَادِ ۚ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ	बढ़ना है मालों में और औलाद में। उस बारिश की तरह जिस का सब्ज़ा किसानों को खुश
نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ	करता है, फिर वो लेहलेहाने लगता है, फिर तू उस को देखता है पीला, फिर वो चूरा चूरा
حُطَامًا ۚ وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَ مَغْفِرَةٌ	बन जाता है। और आखिरत में सख्त अज़ाब और अल्लाह की
مِّنَ اللَّهِ وَ رِضْوَانٌ ۚ وَمَا الْحَيَوَةُ الدُّنْيَا	तरफ से मग़फ़िरत और खुशनूदी है। और दुन्यवी ज़िन्दगी नहीं है
إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ۚ ۞ سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ	मगर धोके का सामान। तुम दौड़ लगाओ अपने रब की
مِّن رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ	मग़फ़िरत और उस जन्नत की तरफ जिस की चौड़ाई आसमान और ज़मीन के
وَ الْأَرْضِ ۚ ۞ اُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ	बराबर है। जो ईमान वालों के लिए तय्यार की गई है जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर
وَ رُسُلِهِ ۚ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ	और उस के पैग़म्बरों पर। ये अल्लाह का फज़ल है, उस को देता है जिसे चाहता है।
وَ اللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۚ ۞ مَا أَصَابَ مِنْ	और अल्लाह बड़े फज़ल वाला है। कोई मुसीबत नहीं

مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ	में	जानों	तुम्हारी	न	और	में	जमीन	पहोंचती
إِلَّا فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلِ أَنْ تَبْرَاهَا ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ	मगर वो एक किताब (लौहे महफूज़) में लिखी हुई है इस से पेहले के हम उस को पैदा करें। यकीनन ये							
عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۚ لَّكَيْلًا تَأْسَوْا عَلَى	अल्लाह पर आसान है। ताके तुम ग़म न करो उस चीज़ पर							
مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ ۚ وَاللَّهُ	जो तुम से फौत हो गई और न इतराओ उस पर जो अल्लाह ने तुम्हें दिया। और अल्लाह							
لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۚ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ	पसन्द नहीं करता हर इतराने वाले, फखर करने वाले को। जो बुखल करते हैं							
وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّ	और इन्सानों को बुखल का हुक्म देते हैं। और जो रूगरदानी करेगा							
فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۚ لَقَدْ أَرْسَلْنَا	तो यकीनन अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। यकीनन हम ने							
رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ ۚ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ	अपने पैग़म्बर भेजे रोशन मोअजिज़ात दे कर और हम ने उन के साथ किताब उतारी							
وَالْإِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَأَنْزَلْنَا	और तराजू उतारा ताके इन्सान इन्साफ को ले कर खड़े हो जाएं। और हम ने							
الْحَدِيدَ ۚ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ ۚ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ	लोहा उतारा जिस में सख्त कूवत है और इन्सानों के लिए दूसरे मनाफेअ भी हैं							
وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ	और ताके अल्लाह जान ले उस को जो अल्लाह की और उस के पैग़म्बरों की नुसरत करता है बग़ैर देखे।							
إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۚ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا	यकीनन अल्लाह कूवत वाला है, ज़बर्दस्त है। यकीनन हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को रिसालत दे कर भेजा							
وَإِبْرَاهِيمَ ۚ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا التَّبَوَّةَ وَالْكِتَابَ	और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को और हम ने उन की औलाद में नुबूवत रख दी और किताब रख दी							

فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَسِقُونَ ﴿٢٥﴾

तो उन में से कुछ हिदायत पाने वाले हैं। और उन में से अक्सर नाफरमान हैं।

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَىٰ

फिर हम ने उन के पीछे हमारे पैग़म्बर भेजे और हम ने ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम)

ابْنِ مَرْيَمَ ۖ وَآتَيْنَاهُ الْإِنْجِيلَ ۖ وَجَعَلْنَا

को भेजा और हम ने उन को इन्जील दी। और हम ने उन लोगों के

فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَافَةً ۖ وَرَهْبَانِيَّةً

दिलों में जिन्होंने ने उन का इत्तिबा किया नर्मी और महरबानी रख दी। और रहबानीयत को

إِبْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانٍ

उन्होंने ने खुद ईजाद किया था, उस को हम ने उन पर लाज़िम नहीं किया था, मगर अल्लाह की खुशनूदी तलब करने के

اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۖ فَآتَيْنَا الَّذِينَ

लिए, फिर उस रहबानीयत की उन्होंने ने रियायत नहीं की जैसा के उस का हक था। फिर हम ने उन लोगों को

آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَسِقُونَ ﴿٢٦﴾

जो उन में से ईमान लाए थे उन का सवाब दिया। और उन में से अक्सर नाफरमान हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرُسُولِهِ

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और ईमान लाओ उस के पैग़म्बर पर,

يُؤْتِكُمْ كُفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا

वो तुम्हें अपनी रहमत से दोहरा अज़्र देगा और तुम्हारे लिए नूर बना देगा

تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرَ لَكُمْ ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٧﴾

जिस को ले कर तुम चलोगे और तुम्हारी मग़फ़िरत करेगा। और अल्लाह बहोत बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

لِّئَلَّا يَعْلَمَ أَهْلُ الْكِتَابِ إِلَّا يَاقِدُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ

ताके एहले किताब जान लें के वो किसी चीज़ पर कादिर नहीं हैं

مِّنْ فَضْلِ اللَّهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ

अल्लाह के फज़ल में से और ये के फज़ल अल्लाह के हाथ में है, वो उसे देता है

مَنْ يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٨﴾

जिसे चाहता है। और अल्लाह बड़े फज़ल वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ

رُكُوعًا ٣

(٥٨) سُورَةُ الْحَجِّ الْمَكِّيَّةُ (١١٥)

آيَاتُهَا ٢٢

और ३ रूकूअ हैं

सूरह मुजादला मदीना में नाज़िल हुई

उस में २२ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا

यकीनन अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो आप से झगड़ रही थी अपने शौहर के बारे में

وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا إِنَّ اللَّهَ

और अल्लाह से शिकायत कर रही थी। और अल्लाह तुम दोनों की गुफ्तगू सुन रहे थे। यकीनन अल्लाह

سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝ الَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْكُمْ مِنْ نِسَائِهِمْ

सुनने वाले, देखने वाले हैं। तुम में से वो मर्द जो अपनी औरतों से ज़िहार करें

مَا هُنَّ أُمَّهَاتُهُمْ إِنْ أُمَّهُتُهُمْ إِلَّا الْآئِلَةُ وَلَدَنَّهُمْ

तो वो उन की हकीकी माँ नहीं बन जाती। उन की हकीकी माँ तो वही हैं जिन्होंने ने उन को जना है।

وَإِنَّ اللَّهَ

और यकीनन वो बुरी बात और झूठी बात केह रहे हैं। और यकीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा मुआफ

لَعَفُو غَفُورٌ ۝ وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ

करने वाला, बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला है। और जो मर्द अपनी औरतों से ज़िहार करें,

ثُمَّ يَعُودُونَ لَهَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مِنْ قَبْلِ

फिर वो वापस अपने कलाम से रूजूअ करें तो एक गर्दन आज़ाद करना है इस से पेहले के वो एक दूसरे को

أَنْ يَتَمَسَّكَا ۚ ذَلِكُمْ تُوَعُّظُونَ بِهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ

छुवें। इस की तुम्हें नसीहत की जाती है। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से

خَبِيرٌ ۝ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ

बाखबर है। फिर जो (गुलाम) न पाए तो लगातार दो महीनों के रोज़े हैं

مَنْ قَبْلَ أَنْ يَتَمَسَّكَا ۚ فَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَاطْعَامُ سِتِّينَ

इस से पेहले के वो एक दूसरे को छुवें। फिर जो इस की ताक़त न रखता हो तो साठ मिसकीनों को खाना

مُسْكِينًا ۚ ذَلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ

खिलाना है। ये इस लिए है ताके तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल पर। और ये अल्लाह की मुकर्ररा हुदूद

اللَّهُ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ	
हैं। और काफिरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। यकीनन वो लोग जो अल्लाह और उस के	
اللَّهُ وَرَسُولَهُ كُتُّوا كَمَا كُتِيَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ	
रसूल से झगड़ते हैं ज़लील होंगे जैसा के ज़लील हुए वो जो उन से पेहले थे और यकीनन	
أَنْزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝	
हम ने साफ साफ आयतें नाज़िल की हैं। और काफिरों के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब है।	
يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۖ	
जिस दिन उन तमाम को अल्लाह उठाएगा, फिर उन को जतलाएगा वो अमल जो उन्होंने ने किए।	
أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝	٤
अल्लाह ने उस को गिन रखा है और उन्होंने ने उस को भुला दिया है। और अल्लाह हर चीज़ को देख रहे हैं।	
أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ	
क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह जानता है उन चीज़ों को जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।	
مَا يَكُونُ مِنْ نَجْوَى ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ	
तीन आदमियों की कोई सरगोशी नहीं होती मगर अल्लाह उन का चौथा होता है और न पाँच आदमियों की	
إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَىٰ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرُ إِلَّا هُوَ	
मगर अल्लाह उन का छठा होता है, और न उस से कम और न उस से ज़्यादा मगर वो उन के साथ	
مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ	
होता है, जहाँ भी वो हों। फिर अल्लाह उन्हें उन आमाल की जो उन्होंने ने किए क़यामत के दिन खबर देगा।	
إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا	
यकीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जिन को	
عَنِ النَّجْوَىٰ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَجَّوْنَ	
सरगोशी से मना किया गया, फिर भी वो दोबारा करते हैं उसी को जिस से उन को रोका गया था और वो सरगोशी करते हैं	
بِالْأَثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ ۖ وَإِذَا جَاءُوكَ	
गुनाह की और जुल्म की और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नाफरमानी की। और जब वो आप के पास आते हैं तो	
حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ ۖ وَيَقُولُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ	
आप को दुआ देते हैं उन अल्फाज़ से जो अल्लाह ने आप को दुआ देने के लिए मखसूस नहीं फरमाए। और वो केहते हैं अपने दिलों में	

لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ ۖ حَسْبُكُمْ جَهَنَّمُ ۖ يَصَلُّونَهَا ۚ	के अल्लाह हमें अज़ाब क्यों नहीं देता उन बातों की वजह से जो हम केह रहे हैं। उन के लिए जहन्नम काफी है, जिस में वो
فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ	दाखिल होंगे। फिर वो बुरी जगह है। ऐ ईमान वालो! जब तुम आपस में सरगोशी करो
فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ	तो सरगोशी मत करो गुनाह की और जुल्म की और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नाफरमानी की,
وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ	बल्के सरगोशी करो नेकी की और तक्वे की। और अल्लाह से डरो, उस अल्लाह से जिस की तरफ
تُحْشَرُونَ ۝ إِنَّمَا التَّجْوَىٰ مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزَنَ	तुम इकट्ठे किए जाओगे। सरगोशी तो सिर्फ शैतान की तरफ से है ताके वो ग़मगीन करे
الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْءٌ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ	ईमान वालों को हालांकि वो उन को ज़रा भी ज़रर नहीं पहुँचा सकता मगर अल्लाह के हुक्म से।
وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا	और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल करना चाहिए। ऐ ईमान वालो!
إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ	जब तुम से कहा जाए के मजलिस में खुल कर बैठो तो कुशादगी किया करो, अल्लाह तुम्हारे लिए
اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَإِذَا قِيلَ انشُرُوا فَانْشُرُوا يَرْفَعِ اللَّهُ	कुशादगी करेगा। और जब कहा जाए के उठ जाओ तब उठ जाओ, तो अल्लाह तुम में से
الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ ۚ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتُ ۖ	ईमान वालों के और उन के दरजात बुलन्द करेगा जिन को इल्म दिया गया।
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا	और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर हैं। ऐ ईमान वालो!
إِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ	जब तुम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से सरगोशी करो, तो अपनी सरगोशी से पेहले कुछ सदका
صَدَقَهُ ۖ ذَلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَظْهَرُ ۖ فَإِنْ لَّمْ تَجِدُوا	कर लो। ये तुम्हारे लिए बेहतर है और ज़्यादा पाकीज़गी वाला है। फिर अगर तुम (सदका) न पाओ

فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١﴾ ءَأَشْفَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰكُمْ صَدَقْتُمْ ۖ فَاذْكُم تَفْعَلُوا وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ مَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۚ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً ۖ فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٥﴾ لَنْ تَغْنَى عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٦﴾ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ ۖ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٧﴾	तो यकीनन अल्लाह बख्शाने वाले, निहायत रहम वाले हैं। क्या तुम इस से डर गए के अपनी सरगोशी से पेहले सदका कर दिया करो? फिर जब तुम ने ऐसा नहीं किया और अल्लाह ने तुम्हें मुआफ
कर दिया तो नमाज़ काइम करो और ज़कात दो और अल्लाह और उस के रसूल का केहना	मानो। और अल्लाह बाखबर है उन कामों से जो तुम करते हो। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों
की तरफ जिन्हों ने दोस्ती की ऐसी कौम से जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब है? वो तुम में से नहीं हैं	और न उन में से हैं और वो झूठी बात पर क़सम खाते हैं हालांके वो जानते हैं।
अल्लाह ने उन के लिए दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर रखा है। यकीनन बुरे हैं वो काम जो वो कर	रहे हैं। उन्हों ने अपनी क़स्मों को ढाल बना लिया है, फिर उन्हों ने अल्लाह के रास्ते
से रोका, फिर उन के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब है। हरगिज़ उन के कुछ काम नहीं	आएंगे उन के माल और न उन की औलाद अल्लाह से ज़रा भी।
ये दोज़खी हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे। जिस दिन	अल्लाह उन तमाम को क़ब्रों से उठाएगा, फिर वो अल्लाह के सामने क़स्में खाएंगे जैसा के वो तुम्हारे सामने
क़स्में खाते थे और वो समझते हैं के वो (अच्छे) काम पर हैं। सुनो! यकीनन वो झूठे हैं।	منزل

اَسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَانْسَهُمْ ذَكَرَ اللَّهُ اُولَئِكَ حِزْبُ

शैतान उन पर ग़ालिब आ गया है, फिर शैतान ने अल्लाह का ज़िक्र उन से भुला दिया है। ये शैतान का

الشَّيْطَانُ اِلَّا اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۹﴾

गिरोह है। सुनो! यकीनन शैतान का गिरोह वही खसारा उठाने वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَادُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ اُولَئِكَ فِي الْاٰذِلِّيْنَ ﴿۲۰﴾

यकीनन वो लोग जो अल्लाह और उस के रसूल से मुखालफत रखते हैं ये सब से ज़्यादा ज़लील लोगों में हैं।

كَتَبَ اللّٰهُ لَآ غَلْبَانَ اَنَا وَرُسُلِيْ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿۲۱﴾

अल्लाह ने लिख दिया है के मैं और मेरे पैग़म्बर ही ज़रूर ग़ालिब रहेंगे। यकीनन अल्लाह कूब्त वाला, ज़बर्दस्त है।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَادُّوْنَ

आप नहीं पाओगे ऐसी क़ौम को जो ईमान रखती है अल्लाह पर और आखिरी दिन पर के वो दोस्ती रखते हों

مَنْ حَادَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْا اٰبَاءَهُمْ اَوْ اِبْنَاءَهُمْ

उन से जो अल्लाह और उस के रसूल के मुखालिफ हैं, अगरचे वो उन के बाप दादा या उन के बेटे

اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ اُولَئِكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ

या उन के भाई या उन का खानदान ही क्यूं न हो। ये वो लोग हैं के जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख

الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرٰى

दिया है और अपनी तरफ से रूह के ज़रिए उन की ताईद की है। और अल्लाह उन्हें जन्नतों में दाखिल करेगा,

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا

जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। अल्लाह उन से राज़ी हुवा और वो अल्लाह से

عَنْهُ اُولَئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ اِلَّا اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۲۲﴾

राज़ी हो गए। ये अल्लाह का गिरोह है। सुनो! यकीनन अल्लाह का गिरोह ही फ़लाह पाने वाला है।

﴿۲۳﴾ اٰلِآئِهَا ۲۴ سُوْرَةُ الْحٰشِرَةِ لَا مَذٰنِيْعَ لَهَا (۱۰۱) رُكُوْعَاتُهَا ۳

उस में २४ आयतें हैं सूरह हशर मदीना में नाज़िल हुई और ३ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ

अल्लाह के लिए तस्बीह करती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और वो

الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ① هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا

ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। वही है जिस ने एहले किताब में से काफिरों को उन के

مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ

घरों से पेहली बार इकट्ठे करने के वक्त बाहर निकाला। तुम ने गुमान नहीं किया था

أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنُّوا أَنَّهُمْ مَانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ مِنَ اللَّهِ فَأَتَهُمُ

के वो निकलेंगे और वो भी गुमान कर रहे थे के उन को उन के क़िल्अे अल्लाह से बचाने वाले हैं, फिर अल्लाह

اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ

उन के पास आया ऐसी जगह से जिस का उन्होंने ने गुमान भी नहीं किया था और अल्लाह ने उन के दिलों में रौब

الرُّعْبَ يُجْرِبُونَ يُؤْتِمُّمُ بَايَدِهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ ②

डाल दिया के वो अपने घरों को अपने हाथों से और ईमान वालों के हाथों से उजाड़ने लगे।

فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِيَ الْأَبْصَارِ ③ وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ

तो ऐ बसीरत वालो! इबरत पकड़ो। और अगर अल्लाह ने उन पर जिलावतनी न लिख दी

الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ

होती तो अल्लाह उन को दुन्या में अज़ाब देता। और उन के लिए आखिरत में आग का

النَّارِ ④ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ⑤ وَمَنْ

अज़ाब है। ये इस वजह से के उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल की मुखालफत की। और जो भी

يُشَاقِّ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑥ مَا قَطَعْتُمْ

अल्लाह की मुखालफत करेगा तो यकीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने वाला है। जो खजूर का

مِنْ لَّيْنَةٍ أَوْ تَرَكَتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَى أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ

दरख्त तुम ने काटा या उस को अपनी जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया तो वो अल्लाह के हुक्म से

اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ⑦ وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ

था और इस लिए ताके अल्लाह नाफरमानों को रुस्वा करे। और जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उन लोगों से

مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ

(फेअ बना कर) लौटाया, फिर तुम ने उस पर घोड़े और ऊँट नहीं दौड़ाए थे,

وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ ⑧ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ

लेकिन अल्लाह मुसल्लत करता है अपने पैगम्बरों को जिस पर चाहता है। और अल्लाह हर चीज़ पर

وَقَفَّيْنَا عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ مَا آفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ कुदरत वाला है। जो अल्लाह ने अपने रसूल पर माले फैअ लौटाया उन बस्तियों वालों की
الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ तरफ से, तो वो अल्लाह का है और रसूल का है और रिश्तेदारों और यतीमों
وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ كَيْ لَا يَكُونَ دُولَةً بَيْنَ और मस्कीनों और मुसाफिर का है। ताके ये तुम में से मालदारों के दरमियान घूमने वाली
الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ ۚ وَمَا أَتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ ۚ जाएदाद बन कर न रहे जाए। और रसूल तुम्हें जो दे उस को ले लो।
وَمَا نَهَاكُم عَنْهُ فَأْتُوهُ ۚ وَأَتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ और जिस से तुम्हें रोके उस से रुक जाओ। और अल्लाह से डरो। यकीनन अल्लाह सख्त सज़ा
الْعِقَابِ ۝ لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا देने वाला है। उन फुकरा के लिए (माले फैअ) है जिन्होंने ने हिजरत की, जो अपने घरों से
مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ और अपने मालों से निकाल दिए गए हैं, जो अल्लाह का फज़ल और अल्लाह की खुशनूदी तलब
وَرِضْوَانًا وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ करते हैं और जो अल्लाह और उस के रसूल की नुसरत करते हैं। यही लोग
الصَّادِقُونَ ۝ وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ सच्चे हैं। और उन के लिए (माले फैअ) है जो मदीना में मुक़ीम थे ईमान के साथ
مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ मुहाजिरीन के आने से पेहले, जो महब्बत करते हैं उस से जो हिजरत कर के आए उन की तरफ और अपने दिलों में
فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِّمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ कोई तंगी नहीं पाते उस की तरफ से जो उन्हें (मुहाजिरीन को) दिया जाए, और वो अपने आप पर मुहाजिरीन को
عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُوقِ شُحَّ तरजीह देते हैं अगरचे खुद उन के साथ फाका ही क्यूं न हो। और जिसे अपने नफ्स के बुखल से
نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَالَّذِينَ جَاءُوا बचा लिया गया तो यही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो उन के

مَنْ بَعْدَهُمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا	
बाद आए, वो केहते हैं के ऐ हमारे रब! मग़फ़िरत कर दे हमारी और हमारे भाइयों की,	
الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا	
उन की जिन्हों ने ईमान में हम से सबक़त की है और हमारे दिलों में ईमान वालों	
غُلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝	۱۱
के लिए कीना मत रख, ऐ हमारे रब! यकीनन तू बहोत ज़्यादा शफ़क़त वाला, निहायत महरबान है।	
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُوا لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ	
क्या आप ने नहीं देखा मुनाफ़ि़ीन को जो एहले किताब में से	
كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ	
अपने काफ़िर भाइयों से केहते हैं के अगर तुम निकाले गए तो हम भी तुम्हारे साथ निकल	
مَعَكُمْ وَلَا نَطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا ۚ وَإِنْ قُوتِلْتُمْ	
जाएंगे, और हम तुम्हारे बारे में किसी की बात कभी नहीं मानेंगे। और अगर तुम से क़िताल किया गया, तो हम	
لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۖ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝	۱۲
तुम्हारी ज़रूर नुसरत करेंगे। हालांके अल्लाह गवाही देता है के ये बिल्कुल झूठे हैं।	
لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوتِلُوا	
अगर वो निकाले गए तो ये उन के साथ नहीं निकलेंगे। और अगर उन से क़िताल किया गया तो उन की नुसरत	
لَا يَنْصُرُونَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُولَنَّ الْأَدْبَارَ ۚ	
नहीं करेंगे। और अगर वो उन की नुसरत करेंगे भी, तो वो ज़रूर पीठ फेर कर भागेंगे।	
ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ۝ لَأَنَّنَا أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ	
फिर उन की नुसरत नहीं की जाएगी। अलबत्ता तुम्हारा खौफ़ उन के दिलों में अल्लाह से भी	
مِّنَ اللَّهِ ۖ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝	۱۳
ज़्यादा है। ये इस वजह से के ये ऐसी कौम है जो कुछ समझती नहीं।	
لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قَرَىٰ مُحَصَّنَةٍ	
वो सब इकठ्ठे हो कर भी तुम से क़िताल नहीं कर सकते मगर क़िल्आबन्द बस्तियों में	
أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ ۖ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا	
या दीवारों की ओट से। उन की लड़ाई आपस में बड़ी सख़्त है। आप उन्हें इकठ्ठे गुमान करते हैं	

وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ۖ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٣﴾ हालांके उन के दिल अलग अलग हैं। ये इस वजह से के ये ऐसी कौम है जो अकल नहीं रखती।	
كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاتُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ ؕ इन का हाल उन के हाल की तरह है जो उन से पेहले अभी गुज़रे हैं जिन्होंने ने अपनी हरकत का वबाल चख लिया।	
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٤﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। उन का हाल उस शैतान के हाल की तरह है जब वो इन्सान से केहता	
لِلْإِنْسَانِ الْكَفْرِ ۖ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنْكَ إِنِّي है के तू काफिर बन जा। जब वो कुफ़र कर लेता है, तो शैतान केहता है के मैं तुझ से बरी हूँ के मैं	
خَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾ فَكَانَ عَاقِبَتُهُمَا أَنَّهُمَا अल्लाह रब्बुल आलमीन से डरता हूँ। फिर दोनों का अन्जाम ये होगा के वो दोनों	
فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيهَا ۖ وَذَٰلِكَ جَزَاُ الظَّالِمِينَ ﴿١٦﴾ आग में होंगे, उस में वो हमेशा रहेंगे। और ये ज़ालिमों की सज़ा है।	ع
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और चाहिए के हर शख्स देख ले वो	
مَا قَدَّمَتْ لِعَدِيٍّ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ जो उस ने कल के लिए आगे किया भेजा है। और अल्लाह से डरो। यकीनन अल्लाह बाखबर है उन कामों से	
بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَاهُمْ जो तुम करते हो। और उन लोगों की तरह मत बनो जिन्होंने ने अल्लाह को भुला दिया, फिर अल्लाह ने खुद उन को	
أَنفُسَهُمْ ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿١٨﴾ لَا يَسْتَوِي उन की जानों से भुला दिया। यही लोग नाफरमान हैं। दोज़खी और जन्नती	
أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ बराबर नहीं हो सकते। जन्नती ही कामयाब	
الْفَائِزُونَ ﴿١٩﴾ لَوْ أَنزَلْنَا هَٰذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ होने वाले हैं। अगर हम इस कुरआन को उतारते पहाड़ पर	
لَرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۖ तो आप उसे ज़रूर आजिजी करने वाला, अल्लाह के खौफ की वजह से फटने वाला देखते।	

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ لِنَاصِلِ لَعَلَّهُمْ और ये मिसालें हैं जो हम इन्सानों के लिए बयान करते हैं ताके वो
يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ सोचें। वही अल्लाह वो है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं।
عَلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ﴿٢٢﴾ वो ज़ाहिर और छुपी हुई चीज़ों को जानने वाला है। वो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं। वो बादशाह है, सब ऐबों से पाक है,
السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ सलामती वाला है, अमन देने वाला है, निगेहबान है, ज़बर्दस्त है, कूव्वत वाला है, बड़ाई वाला है।
سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ अल्लाह उन के शरीक ठेहराने से पाक है। वही अल्लाह है जो खिल्कत को बनाने वाला,
الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ۚ يُسَبِّحُ لَهُ पैदा करने वाला, सूरतें बनाने वाला है, उस के लिए अच्छे अच्छे नाम हैं। उस की तस्बीह पढ़ती हैं वो
مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٤﴾ तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और वो ज़बर्दस्त है, हिकमत वाला है।
وَأَيُّهَا ١٣ (٦٠) سُورَةُ الْمُنَافِقِينَ مَدَنِيَّةٌ (٩١) رُؤُوسُهَا ٢ और २ स्कूअ हैं सूरह मुमतहिना मदीना में नाज़िल हुई उस में १३ आयतें हैं بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ ऐ ईमान वालो! मेरे और अपने दुश्मन को दोस्त मत
أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِم بِالْمُودَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا बनाओ, तुम उन को दोस्ती से पैग़ाम भेजते हो हालांकि उन्होंने ने कुफ़्र किया
بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ उस हक के साथ जो तुम्हारे पास आया। वो रसूल को और तुम्हें भी निकालते हैं

أَنْ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ ۖ إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا इस वजह से के तुम अपने रब अल्लाह पर ईमान रखते हो। अगर तुम मेरे रास्ते में और मेरी रज़ा	فِي سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي تُسِرُّونَ إِلَيْهِمْ بِالْمُودَةِ ۖ की तलब में जिहाद के लिए निकले हो, फिर तुम उन की तरफ चुपके चुपके महबूत का पैग़ाम भेजते हो।
وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ وَمَنْ يَفْعَلْهُ हालांके मैं खूब जानता हूँ उस को जो तुम ने छुपाया और जो ज़ाहिर किया। और जो तुम में से ऐसा	مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ إِنْ يَشَقُّوْكُمْ करेगा तो यकीनन वो सीधे रास्ते से गुमराह हो गया। अगर वो तुम पर कुदरत पा लें
يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ तो वो तुम्हारे दुश्मन बन जाएं और तुम्हारी तरफ अपने हाथ और अपनी ज़बानें	وَالسِّنَنَهُمْ بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ ۝ لَنْ تَنْفَعَكُمْ बुराई के साथ चलाएं और वो तो चाहते हैं के तुम काफिर बन जाओ। हरगिज़ तुम्हें नफा देगी
أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ ۖ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ तुम्हारी रिश्तेदारियाँ और न तुम्हारी औलाद क़यामत के दिन। वो तुम्हारे दरमियान फैसला करेगा।	وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ और अल्लाह तुम्हारे आमांल देख रहे हैं। तुम्हारे लिए इब्राहीम (अलैहिस्सलाम वस्सलाम)
حَسَنَةٌ فِي آلِ إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ ۖ إِذْ قَالُوا में और उन में जो उन के साथ थे अच्छा नमूना है। जब उन्होंने ने अपनी	لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَءُؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ कौम से कहा के हम तुम से बरी हैं और उन से भी बरी हैं जिन की तुम अल्लाह के
مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ सिवा इबादत करते हो। हम ने तुम्हारे साथ कुफ़ किया और हमारे और तुम्हारे दरमियान अदावत	الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ और बुग़ज़ हमेशा के लिए ज़ाहिर हो गया जब तक के तुम यकता अल्लाह पर ईमान न लाओ,
إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا मगर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का फरमान अपने अब्बा से के मैं ज़रूर तेरे लिए इस्तिग़फ़ार करूँगा, और	

أَمْلِكْ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۖ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا	
मैं तेरे लिए अल्लाह से किसी भी चीज़ का इख्तियार नहीं रखता। ऐ हमारे रब! हम ने तुझ ही पर	
وَإِلَيْكَ أُنَبِّئُكَ وَالْيَاكُوفُ ۖ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا	
तवक्कुल किया और तेरी ही तरफ तौबा करते हैं और तेरी ही तरफ लौटना है। ऐ हमारे रब! हमें काफिरों का	
فِتْنَةً ۚ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاعْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ	
तख्तए मश्क न बना और हमारी मग़फिरत कर दे, ऐ हमारे रब! यकीनन तू	
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ	
ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। यकीनन तुम्हारे लिए उन में अच्छा नमूना है	
لِمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ ۖ وَمَنْ يَتَوَلَّ	
उस शख्स के लिए जो उम्मीद रखता हो अल्लाह की और आखिरी दिन की। और जो खूगारदानी करेगा	
فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۖ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ	ع
तो यकीनन अल्लाह वो बेनियाज़ है, काबिले तारीफ है। उम्मीद है के अल्लाह तुम्हारे	
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوْدَّةً ۖ وَاللَّهُ	
और उन के दरमियान जिन से तुम्हें अदावत है, महबबत पैदा कर दे। और अल्लाह	
قَدِيرٌ ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ لَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ	
कुदरत वाला है। और अल्लाह बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। अल्लाह तुम्हें नहीं रोकता	
عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ	
उन से जिन्होंने ने तुम से दीन में क़िताल नहीं किया और तुम्हें अपने	
مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ ۖ	
घरों से नहीं निकाला, (इस से नहीं रोकता) के तुम उन के साथ एहसान करो और तुम उन के साथ इन्साफ करो।	
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ	
यकीनन अल्लाह इन्साफ करने वालों से महबबत करते हैं। अल्लाह तुम्हें सिर्फ रोकते हैं उन	
عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُمْ	
से जिन्होंने ने तुम से दीन में क़िताल किया और तुम्हें अपने घरों से	
مِنْ دِيَارِكُمْ وَظَهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ	
निकाला और तुम्हारे निकालने पर दूसरों की मदद की, (रोकता है इस से) के तुम उन से दोस्ती करो।	

وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَاُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٦٠﴾ يَٰٓأَيُّهَا	और जो उन से दोस्ती रखेगा तो यही लोग ज़ालिम हैं। ऐ
الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمْ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ	ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें हिजरत कर के आएँ,
فَامْتَحِنُوهُنَّ ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ ۚ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ	तो उन का इम्तिहान ले लो। अल्लाह उन के ईमान को खूब जानता है। फिर अगर तुम उन को मोमिन
مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ۚ لَا هُنَّ حِلٌّ	जान लो तो उन को काफिरों की तरफ वापस मत लौटाओ। न ये मोमिन औरतें उन के लिए हलाल
لَهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۚ وَآتُوهُمْ مَّا أَنْفَقُوا ۚ	हैं और न वो उन के लिए हलाल हैं। और काफिरों को दो वो जो उन्होंने ने खर्च किया है।
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ	और तुम पर कोई गुनाह नहीं है के तुम उन औरतों से निकाह करो जब उन को उन के महर
أُجُورَهُنَّ ۚ وَلَا تُمْسِكُوا بِعَصَمِ الْكُوفَرِ ۚ وَسْئَلُوا	दे दो। और काफिर औरतों के नामूस अपने कब्जे में मत रखो और मांग लो वो जो
مَّا أَنْفَقْتُمْ وَلَيْسَ لَكُمْ أَنْفَقُوا ۚ ذَٰلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ ۚ	तुम ने खर्च किया है और उन्हें भी चाहिए के वो मांग लें जो उन्होंने ने खर्च किया है। ये अल्लाह का हुक्म है।
يُحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٦١﴾ وَإِنْ فَاتَكُمْ	अल्लाह तुम्हारे दरमियान फैसला करता है। और अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। और अगर तुम्हारी
شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقِبْتُمْ فَانُتُوا	बीवियों में से कोई बीवी काफिरों की तरफ चली जाए, फिर तुम सज़ा दो, तो दे दो
الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَا أَنْفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا	उन को जिन की बीवियाँ चली गई हैं उस के मानिन्द जो उन मुसलमान शौहरों ने खर्च किया था। और अल्लाह से
اللَّهِ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٦٢﴾ يَٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ	डरो जिस पर तुम ईमान रखते हो। ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)!
إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعُنَكَ عَلَىٰ أَنْ لَا يُشْرِكْنَ	जब आप के पास मोमिन औरतें आएँ के आप से बैअत करें इस पर के वो अल्लाह के साथ शरीक नहीं

بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقَنَّ وَلَا يَزْنِيَنَّ وَلَا يَقْتُلَنَّ

ठेहराएंगी किसी चीज़ को और चोरी नहीं करेंगी और ज़िना नहीं करेंगी और अपनी औलाद को क़त्ल नहीं

أُولَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِيَنَّ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِيَنَّهُ بَيْنَ أَيْدِيَهُنَّ

करेंगी और बुहतान नहीं बांधेंगी जिस को वो घड़ें अपने हाथों और पैरों

وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيَنَّكَ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعَهُنَّ

के सामने और आप की किसी नेक काम में नाफरमानी नहीं करेंगी, तो आप उन को बैअत फरमा लीजिए

وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يَأَيُّهَا

और उन के लिए अल्लाह से इस्तिग़फ़ार कीजिए। यकीनन अल्लाह बख़्शाने वाला, निहायत रहम वाला है। ऐ

الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَكْسِبُوا

ईमान वालो! दोस्ती मत रखो उस कौम से जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब है जो आखिरत से

مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَبِيسُ الْكَفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ۝

मायूस हो चुके हैं जिस तरह के काफिर क़ब्र वालों से मायूस हो चुके हैं।

يَأَيُّهَا ١٣ (٦١) سُورَةُ الصَّفَةِ لَنَبِيِّهَا (١٠٩) رُكُوعَاتُهَا ٢

और २ रूकूअ हैं सूरह सफ मदीना में नाज़िल हुई उस में १४ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ

अल्लाह की तस्बीह पढ़ती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और वो ज़बर्दस्त है,

الْحَكِيمُ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ

हिक्मत वाला है। ऐ ईमान वालो! क्यूं केहते हो वो बातें जो तुम खुद

مَا لَا تَفْعَلُونَ ۚ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا

करते नहीं? अल्लाह के नज़दीक बेज़ारी के ऐतेबार से बहोत बड़ी है ये बात के तुम कहो

مَا لَا تَفْعَلُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ

वो जो तुम करो नहीं। यकीनन अल्लाह दोस्त रखते हैं उन को जो क़िताल करते हैं

فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَانَتْهُمْ بُنْيَانٌ مَرْصُوصٌ ۝ وَإِذْ

अल्लाह के रास्ते में सफ बांध कर गोया के वो सीसा पिलाई हुई दीवार हैं। और जब

قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يَقَوْمٍ لِمَ تُوذُونَنِي وَقَدْ تَعْلَمُونَ

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी कौम से फरमाया ऐ मेरी कौम! मुझे क्यों ईजा देते हो हालांकि तुम जानते हो के

إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ ۖ فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ

मैं अल्लाह का तुम्हारी तरफ भेजा हुवा पैगम्बर हूँ। फिर जब वो टेढ़े चले तो अल्लाह ने उन के दिल टेढ़े

قُلُوبَهُمْ ۖ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

कर दिए। और अल्लाह नाफरमान कौम को हिदायत नहीं देते।

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَبْنِي إِسْرَءِيلَ إِنِّي رَسُولُ

और जब के ईसा इब्ने मरयम (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ बनी इस्राईल! मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह

اللَّهُ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ

का भेजा हुवा पैगम्बर हूँ उस तौरात को सच्चा बतलाने वाला हूँ जो मुझ से पेहले थी

وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ ۖ

और मैं उस रसूल की बशारत देता हूँ जो मेरे बाद आएंगे जिन का नाम अहमद होगा।

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ وَمَنْ

फिर जब वो उन के पास रोशन मोअजिज़ात ले कर आए तो उन्होंने ने कहा के ये तो खुला जादू है। और उस

أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَى

से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े जब के उसे इस्लाम की

إِلَى الْإِسْلَامِ ۖ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

तरफ दावत दी जा रही हो? और अल्लाह ज़ालिम कौम को हिदायत नहीं देते।

يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ ۖ وَاللَّهُ

वो ये चाहते हैं के वो अल्लाह के नूर को अपने मुंह से बुझा दें। और अल्लाह

مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ

अपने नूर को इत्माम तक पहुँचाने वाला है अगर्चे काफिर नापसन्द करें। वही अल्लाह है जिस ने अपना

رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ

रसूल हिदायत और दीने हक दे कर भेजा ताके वो उसे ग़ालिब कर दे

عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ

तमाम अदयान पर अगर्चे मुशरिक बुरा मानें। ऐ ईमान

أَمِنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَى تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابٍ वालो! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत बतलाऊँ जो तुम को नजात दे दर्दनाक अज़ाब
الْيَمِّ ۝ تُوْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهِ وَ تَجَاهِدُونَ से? ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के पैग़म्बर पर और तुम
فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ۚ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों के ज़रिए ज़िहाद करो। ये तुम्हारे लिए बेहतर
لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ है अगर तुम्हें समझ है। तो वो तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह बख्श देगा
وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهَارُ और वो तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी
و مَسْكَنَ طَيِّبَةً ۚ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ۚ ذٰلِكَ الْفَوْزُ और उम्दा रहेने के मकानात में (दाखिल करेगा) जन्नाते अदन में। ये बड़ी
الْعَظِيْمُ ۝ وَاٰخَرٰى تَحِبُّوْنَهَا ۚ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ कामयाबी है। और एक दूसरी नेअमत मिलेगी जो तुम्हें पसन्द है। वो अल्लाह की तरफ से नुसरत और क़रीबी
قَرِيْبٌ ۚ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا फ़तह है। और ईमान वालों को बशारत सुना दीजिए। ऐ ईमान वालो!
كُوْنُوْا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيسٰى ابْنُ مَرْيَمَ अल्लाह के मददगार बन जाओ जैसा के ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) ने हवारीयीन से
لِلْحَوَارِيْنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۚ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ फरमाया था के कौन हैं मेरे मददगार अल्लाह की तरफ? हवारीयीन ने कहा के
نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاَمَنْتُ طَآئِفَةٌ مِّنْ بَنِيْ हम अल्लाह के मददगार हैं। फिर बनी इस्राईल की एक जमाअत ईमान
اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرْتُ طَآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ लाई और एक जमाअत ने कुफ़ किया। तो हम ने ईमान वालों को
اٰمَنُوْا عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَاصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ۝ उन के दुशमन के खिलाफ कूवत दी, पस वो ग़ालिब रहे।

وَعَاثُهَا ٢	(٦٢) سُورَةُ الْجُمُعَةِ مَكِّيَّةٌ (١١٠)	آيَاتُهَا ١١
और २ सूकूअ हैं	सूरह जुमुआ मदीना में नाज़िल हुई	उस में ११ आयतें हैं
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ		
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।		
يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ		
अल्लाह की तस्बीह करती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में और ज़मीन में हैं, उस अल्लाह की जो बादशाह है,		
الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝ هُوَ الَّذِي بَعَثَ		
तमाम उयूब से पाक है, ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। वही अल्लाह है जिस ने उम्मियों में उन्ही		
فِي الْأَمِينِ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ		
में से एक पैग़म्बर भेजा जो उन पर अल्लाह की आयतें तिलावत करते हैं और उन का तज़किया करते हैं		
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ		
और उन्हें किताब और हिक्मत की तालीम देते हैं। और यकीनन वो इस से पेहले		
لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَنَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ ۚ		
खुली गुमराही में थे। और उन में से दूसरों की तरफ भी भेजा है जो अभी उन से मिले नहीं।		
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ		
और वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। ये अल्लाह का फज़ल है, उसे देता है		
مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝ مَثَلُ		
जिसे चाहता है। और अल्लाह भारी फज़ल वाला है। उन लोगों का		
الَّذِينَ حُمِلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ		
हाल जिन पर तौरात लादी गई, फिर उन्होंने ने उस को नहीं उठाया उस गधे की		
الْجَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا ۚ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ		
तरह है जो दफतरों को उठाए हुए हो। बुरी है उस कौम की मिसाल जिस ने		
كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝		
अल्लाह की आयतों को झुठलाया। और अल्लाह ज़ालिम कौम को हिदायत नहीं देते।		
قُلْ يَٰأَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِنْ زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَاءُ		
आप फरमा दीजिए ऐ यहूदियों! अगर तुम्हारा ये दावा है के तुम अल्लाह के दोस्त		

لِلَّهِ مِنْ دُونِ النَّاسِ فْتَمَنُوا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ	
हो और इत्सानों को छोड़ कर, तो तुम मौत की तमन्ना करो अगर तुम	
صَادِقِينَ ۝ وَلَا يَتَمَنَّوْنَ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۚ	
सच्चे हो। और ये लोग कभी भी मौत की तमन्ना नहीं करेंगे उन आमाल की वजह से जो उन के हाथ आगे भेज चुके हैं।	
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۝ قُلْ إِنْ الْمَوْتَ الَّذِي	
और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानते हैं। फरमा दीजिए यकीनन वो मौत जिस	
تَفَرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلْقِيكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ	
से तुम भागते हो ज़रूर वो तुम से मिल कर रहेगी, फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले	
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝	٤
अल्लाह की जानिब लौटाए जाओगे, फिर वो तुम्हें तुम्हारे आमाल की खबर देगा।	
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمٍ	
ऐ ईमान वालो! जब जुमुआ के दिन नमाज़ की अज़ान दी	
الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۚ	
जाए, तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ दौड़ो और खरीद व फरोख्त को छोड़ दो।	
ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ فَإِذَا قُضِيَتِ	
ये तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। फिर जब नमाज़ खत्म हो	
الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ	
जाए, तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फज़ल तलब	
اللَّهِ وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝	
करो और अल्लाह को बहोत ज़्यादा याद करो ताके तुम फलाह पाओ	
وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا ۖ انفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ	
और जब वो तिजारत या अल्लाह से ग़ाफिल करने वाली कोई चीज़ देखते हैं तो उस की तरफ दौड़ पड़ते हैं और आप को	
قَائِمًا ۚ قُلْ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِنَ اللَّهْوِ	
खड़ा हुवा छोड़ जाते हैं। आप फरमा दीजिए जो अल्लाह के पास है वो अल्लाह से ग़ाफिल करने वाली चीज़ों से बेहतर है	
وَمِنَ التِّجَارَةِ ۚ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝	٥
और तिजारत से बेहतर है। और अल्लाह बेहतरीन रोज़ी देने वाला है।	

رُوعًا ۲ और २ स्कूअ हैं	(५३) سُورَةُ الْمُنْفِقُونَ كَرِئَةً (१०३) सूरह मुनाफिकून मदीना में नाज़िल हुई उस में ११ आयतें हैं بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।	آيَاتُهَا ११
जब मुनाफिक आप के पास आते हैं तो केहते हैं के हम गवाही देते हैं के यकीनन आप अल्लाह के रसूल	إِذَا جَاءَكَ الْمُنْفِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ	अल्लाह के रसूल
हैं। और अल्लाह जानता है के बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह गवाही देता है	اللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ وَاللَّهُ يَشْهَدُ	अल्लाह
के ये मुनाफिक बिल्कुल झूठे हैं। उन्होंने ने अपनी कस्मों को ढाल बना रखा है,	إِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَكَاذِبُونَ ۖ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً	अल्लाह के रसूल
फिर वो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। यकीनन बुरे हैं जो काम वो	فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا	अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। यकीनन बुरे हैं जो काम वो
कर रहे हैं। ये इस वजह से के वो ईमान लाए, फिर काफिर बन गए, तो उन के दिलों पर मुहर	يَعْمَلُونَ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ	अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। यकीनन बुरे हैं जो काम वो
लगा दी गई, अब वो समझते नहीं। और जब आप उन को देखोगे तो उन के जिस्म आप को	عَلَى قُلُوبِهِمْ فَمُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۖ وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ	अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। यकीनन बुरे हैं जो काम वो
अच्छे लगेंगे। और अगर वो बोलेंगे तो आप उन की बात सुनोगे। गोया के वो	أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمَعُ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَانَتْهُمْ	अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। यकीनन बुरे हैं जो काम वो
सहारे से टिकी हुई लकड़ियाँ हैं। वो गुमान करते हैं हर चीख को अपने ऊपर। वही	خُشْبٌ مُسْنَدَةٌ ۖ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۖ هُمُ	अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। यकीनन बुरे हैं जो काम वो
दुश्मन हैं, इस लिए आप उन से बचते रहिए। अल्लाह उन को मारे। कहाँ वो उलटे फिरे जा रहे हैं?	الْعَدُوُّ فَاحْذَرُهُمْ ۖ قَتَلَهُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّهُمْ يُوفِكُونَ ۖ	अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। यकीनन बुरे हैं जो काम वो
और जब उन से कहा जाता है के आओ, तुम्हारे लिए अल्लाह के पैगम्बर मग़फिरत तलब करते हैं, तो वो अपने	وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّوْا	अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। यकीनन बुरे हैं जो काम वो
सर हिलाते हैं और आप उन को देखोगे के वो स्कते हैं और वो तकबुर करते हैं।	رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۝	अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। यकीनन बुरे हैं जो काम वो

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ उन के लिए बराबर है के आप उन के लिए इस्तिगफार करें या उन के लिए इस्तिगफार न करें।
لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ अल्लाह उन की हरगिज़ मग़फिरत नहीं करेगा। बेशक अल्लाह नाफरमान कौम को हिदायत नहीं दिया
الْفَاسِقِينَ ۝ هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَىٰ مَنْ करते। ये वही हैं जो केहते हैं के तुम खर्च मत करो उन पर जो
عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُّوا ۚ وَلِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمٰوٰتِ अल्लाह के पैग़म्बर के पास रहेते हैं ताके वो मुतफर्रिक हो जाएं। और अल्लाह के लिए आसमानों
وَالْأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ۝ और ज़मीन के खज़ाने हैं, लेकिन मुनाफिक समझते नहीं।
يَقُولُونَ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ वो केहते हैं के अगर हम मदीना वापस गए तो इज़्ज़त वाला
الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلُّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ मदीना से ज़लील को निकाल देगा। हालांके इज़्ज़त अल्लाह ही के लिए और उस के रसूल के लिए
وَالِلْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ और ईमान वालों के लिए है, लेकिन मुनाफिक जानते नहीं।
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ ऐ ईमान वालो! तुम्हें तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद
وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफिल न बना दें। और जो ऐसा करेगा तो यही
هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝ وَأَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ खसारे वाले हैं। और हमारी दी हुई रोज़ी में से खर्च करो
مِّن قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ इस से पेहले के तुम में से किसी एक की मौत आ जाए, फिर वो कहे ऐ मेरे रब!
لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۚ فَأَصَّدَّقَ ۚ وَأَكُن مِّن तू ने मुझे करीबी मुद्दत तक मुहलत क्यूं नहीं दी के मैं सद्का करता और नेक लोगों में

الصَّالِحِينَ ۝ وَلَنْ يُؤَخَّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ

से बन जाता। और अल्लाह किसी शख्स को जब उस का आखिरी वक़्त आ जाता है तो उसे हरगिज़ मुहलत

أَجَلُهَا ۖ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

नहीं देता। और अल्लाह तुम्हारे अमल से बाख़बर है।

رُكُوعَاتُهَا ٢

(٦٣) سُورَةُ التَّغَابُنِ مَكِّيَّةٌ (١٠٨)

آيَاتُهَا ١٨

और २ रूकूअ हैं सूरह तगाबुन मदीना में नाज़िल हुई उस में १८ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

मढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ لَهُ

अल्लाह के लिए तस्बीह करती हैं वो सब चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं। उसी के लिए

الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۖ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

सल्तनत है और उसी के लिए तमाम तारीफें हैं। और वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ مُؤْمِنٌ ۖ

उसी ने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम में से कुछ काफिर हैं और तुम में से कुछ मोमिन हैं।

وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ خَلَقَ السَّمُوتِ

और अल्लाह तुम्हारे अमल देख रहा है। उस ने आसमानों और ज़मीन को

وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ ۖ

पैदा किया हक के साथ और उस ने तुम्हारी सूरतें बनाई, फिर उस ने तुम्हारी सूरतें अच्छी बनाई।

وَالِيهِ الْمَصِيرُ ۝ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ

और उसी की तरफ लौटना है। अल्लाह जानता है उन तमाम चीज़ों को जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं

وَيَعْلَمُ مَا تُسْرُونَ وَمَا تَعْلَنُونَ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ

और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छुपा कर करते हो और जो अलानिया करते हो। और अल्लाह दिलों का

بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُا الَّذِينَ كَفَرُوا

हाल खूब जानता है। क्या तुम्हारे पास उन लोगों की खबर नहीं आई जिन्होंने ने

مِنْ قَبْلُ ۚ فَذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ

इस से पेहले कूफ़ किया। फिर उन्होंने ने अपने किए का वबाल चखा और उन के लिए दर्दनाक

الْيَوْمَ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ	अज़ाब है। ये इस वजह से के उन के पास उन के पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर
بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالُوا أَبَشِّرْ يَهْدُونَنَا ۖ فَكَفَرُوا	आते थे, तो वो केहते थे के क्या बशर हमें रास्ता बताएंगे? फिर उन्होंने ने कुफ़ किया
وَتَوَلَّوْا وَاسْتَغْنَىٰ اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝ زَعَمَ	और ख़ुशग़दानी की और अल्लाह ने परवाह नहीं की। और अल्लाह बेनियाज़ है, क़बिले तारीफ़ है। काफ़िरों ने ये गुमान
الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ لَنَا يُبْعَثُونَ ۖ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي	कर रखा है के वो क़ब्रों से हरगिज़ उठाए नहीं जाएंगे। आप फरमा दीजिए क्यूं नहीं! मेरे रब की क़सम!
لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۖ وَذَٰلِكَ	तुम क़ब्रों से ज़ख़र उठाए जाओगे, फिर तुम्हें तुम्हारे अमल की ख़बर दी जाएगी। और ये
عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي	अल्लाह पर आसान है। इस लिए तुम ईमान ले आओ अल्लाह पर और उस के पैग़म्बर पर और उस नूर पर जो हम ने
أَنْزَلْنَا ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ	उतारा है। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाख़बर है। जिस दिन वो तुम्हें इक़ठा करेगा
لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۖ وَمَنْ يُؤْمِنْ	जमा होने के दिन में, वो हार जीत का दिन होगा। और जो अल्लाह पर ईमान
بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ	लाएगा और नेक अमल करता रहेगा, तो अल्लाह उस से उस की बुराइयाँ दूर कर देगा
وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ	और उसे जन्नतों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे से नेहरे बेहती होंगी,
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝	जिन में वो हमेशा रहेंगे। ये अज़ीम कामयाबी है।
وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ	और वो लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही दोज़खी
النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَبِئْسَ الْبَصِيرُ ۝ مَا أَصَابَ	हैं, वो उस में हमेशा रहेंगे। और ये बुरी जगह है। कोई मुसीबत

مَنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ	नहीं पहुँचती मगर अल्लाह के हुक्म से। और जो ईमान लाए अल्लाह पर
يَهْدِ قَلْبَهُ ۖ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝۱۱ وَأَطِيعُوا	तो अल्लाह उस के दिल को हिदायत देगा। और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानते हैं। और अल्लाह
اللَّهِ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا	और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम ख़ुग़रदानी करो तो हमारे
عَلَى رَسُولِنَا الْبَلْغُ الْمُبِينُ ۝۱۲ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ	पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुँचा देना है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।
وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝۱۳ يَأَيُّهَا الَّذِينَ	और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल करना चाहिए। ऐ ईमान
أَمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ	वालो! यकीनन तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी औलाद में से बाज़ तुम्हारे दुश्मन हैं,
فَاَحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِنْ تَعَفَّوْا وَتَصَفَّحُوا وَ تَغْفِرُوا	तो तुम उन से बचते रहो। और अगर मुआफ़ करो और दरगुज़र करो और बख़्श दो
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝۱۴ إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ	तो यकीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तो सिर्फ़
وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۖ وَاللَّهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝۱۵	आज़माइश (का ज़रिया) हैं। और अल्लाह के पास बड़ा अज़्र है।
فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمِعُوا وَأَطِيعُوا	तो अल्लाह से डरो जितना तुम से हो सके और सुनो और खुशी से मानो
وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِّأَنْفُسِكُمْ ۖ وَمَنْ يُوقِ شُحَّ	और खर्च करो, तो तुम्हारे लिए ही बेहतर होगा। और जो अपने नफ़्स के बुख़ल से बचा
نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝۱۶ إِنْ تُقْرِضُوا	लिया जाए, तो वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। अगर तुम अल्लाह को
اللَّهُ قَرْضًا حَسَنًا يُّضَعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۖ	अच्छा कर्ज़ दोगे तो वो उस को कई गुना कर के तुम्हें देगा और तुम्हारी मग़फ़िरत कर देगा।

وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿٤﴾ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ

और अल्लाह कदर करने वाला, हिल्म वाला है। वो ज़ाहिर और पोशीदा जानने वाला है,

الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

२८
१५

رُؤُوسُهَا २

سُورَةُ الطَّلَاقِ وَمَنْ يَرَى (१५)

آيَاتُهَا १२

और २ रूकूअ हैं

सूरह तलाक़ मदीना में नाज़िल हुई

उस में १२ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! जब तुम औरतों को तलाक़ देने लगो तो उन को तुम तलाक़ दो

لِعَدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ ۚ

उन की इद्दत पर और इद्दत शुमार करो। और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है।

لَا تَخْرُجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ

तुम उन को उन के घरों से मत निकालो और वो खुद भी न निकलें

إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفَاحِشَةٍ مُبَيَّنَةٍ ۚ وَتِلْكَ

मगर ये के वो खुली बेहयाई कर लें। और ये

حُدُودُ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ

अल्लाह की मुकर्रर की हुई हुदूद हैं। और जो अल्लाह की मुकर्रर की हुई हुदूद से तजावुज़ करेगा, तो यकीनन

ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ

उस ने अपनी जान पर जुल्म किया। वो नहीं जानता के शायद अल्लाह उस के

بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ۚ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ

बाद कोई नई सूरत ले आए। फिर जब वो अपनी इद्दत की इन्तिहा (के करीब) पहुँच जाएं

فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ

तो उन को रोक लो उर्फ़ के मुताबिक़ या उन को उर्फ़ के मुताबिक़ छोड़ दो

وَأَشْهِدُوا ذَوَى عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَأَقِيمُوا

और अपने में से दो आदिल आदमियों को गवाह बना लो और ठीक

الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ۖ ذَلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَنِ كَانَ	गवाही दो अल्लाह के वास्ते। उस की नसीहत की जाती है उस शख्स को जो
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ	ईमान रखता है अल्लाह पर और आखिरी दिन पर। और जो तक्वा इखतियार करेगा
يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ۚ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ	तो अल्लाह उस के लिए रास्ता बनाएंगे। और उसे रोज़ी देंगे ऐसी जगह से जहाँ से वो गुमान भी
لَا يَحْتَسِبُ ۖ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۖ	नहीं करता था। और जो अल्लाह पर तवक्कुल करे तो अल्लाह उस के लिए काफी है।
إِنَّ اللَّهَ بِأَمْرِهِ ۖ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ	यकीनन अल्लाह अपने हुक्म को इन्तिहा तक पहुँचाने वाला है। यकीनन अल्लाह ने हर चीज़ की एक मिक्दार
قَدَرًا ۚ وَالْأَنَّى يَسِّنْ مِنَ الْبَحِيضِ	मुतअय्यन कर रखी है। और जो औरतें हैज़ आने से मायूस हैं
مِنْ نِّسَائِكُمْ إِنْ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثَةُ أَشْهُرٍ	तुम्हारी बीवियों में से, अगर तुम शक करो तो उन की इद्दत तीन महीने हैं।
وَالْأَنَّى لَمْ يَحْضَنْ ۖ وَأُولَاتُ الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ	और उन औरतों की भी जिन्हें अभी हैज़ नहीं आया (उन की इद्दत भी तीन महीने हैं)। और हमल वाली औरतों की इद्दत
أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۖ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ	ये है के वो अपना हमल वज़अ कर लें। और जो अल्लाह से डरेगा तो अल्लाह उस के लिए
مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ۚ ذَلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ	उस के मुआमले में आसानी रख देंगे। ये अल्लाह का अम्र है जो उस ने तुम्हारी
إِلَيْكُمْ ۖ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ	तरफ उतारा है। और जो अल्लाह से डरेगा, तो अल्लाह उस से उस के गुनाह दूर कर देगा
وَيُعْظِمَ لَهُ أَجْرًا ۚ أَسْكُنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ	और उस को बड़ा अज़्र देगा। मुतल्लक़ा औरतों को घर दो जहाँ तुम
سَكَنْتُمْ مِنْ وَجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا	रहो अपनी कुदरत के मुताबिक़ और तुम उन को ज़रर न पहुँचाओ ताके तुम उन

عَلَيْهِنَّ ۖ وَإِنْ كُنَّ أُولَاتٍ حَمْلٍ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ	पर तंगी करो। और अगर वो हामिला हों तो उन पर खर्च करो
حَتَّى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاتُّوهُنَّ	यहाँ तक के वो अपना हमल वज़अ कर लें। फिर अगर वो तुम्हारे लिए बच्चों को दूध पिलाएं
أُجُورَهُنَّ ۚ وَأُتِمُّوا بِبَيْنِكُمْ بِمَعْرُوفٍ ۚ	तो उन को उन की उजरत दो। (बच्चे के मुताबिक) आपस में उर्फ के मुताबिक ज़िम्मेदारी मुक़रर करो।
وَإِنْ تَعَاَسَرْتُمْ فَمُتْرَضِعٌ لَهَا أُخْرَى ۖ لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ	और अगर तुम बाहम तंगी करो, फिर उस के लिए कोई दूसरी औरत दूध पिलाए। तो चाहिए के वुसअत वाला अपनी वुसअत
مِنْ سَعَتِهِ ۖ وَمَنْ قَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ	के मुताबिक खर्च करो। और जिस पर उस की रोज़ी तंग हो, तो चाहिए के वो खर्च करे उस में से
مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَّا آتَاهَا ۚ سَيَجْعَلُ	जो अल्लाह ने उस को दिया है। अल्लाह किसी शख्स को मुकल्लफ नहीं बनाता मगर उसी के मुताबिक जो उस को दिया है।
اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۖ وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرِيَةٍ	अनक़रीब अल्लाह तंगी के बाद आसानी रख देंगे। और कितनी बस्तियाँ हैं
عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسِبْنَهَا حَسَابًا	जिन्होंने ने सरकशी की अपने रब के हुक्म से और उस के पैग़म्बरों से, फिर हम ने उन से हिसाब लिया
شَدِيدًا ۖ وَعَدَّيْنَهَا عَذَابًا نَكْرًا ۖ فَذَاقَتْ	सख्त हिसाब और हम ने उन्हें सख्त अज़ाब दिया। फिर उन्होंने ने
وَبَالَ أَمْرَهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ۖ	अपने किए का वबाल चखा और उन के मुआमले का अन्जाम खसारे वाला हुवा।
أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا	अल्लाह ने उन के लिए सख्त अज़ाब तय्यार कर रखा है, तो अल्लाह से
اللَّهُ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ۗ الَّذِينَ آمَنُوا ۗ قَدْ	डरते रहो ऐ अक़लमन्दो! जो ईमान ला चुके हो। अल्लाह ने
أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۖ رَسُولًا يَتْلُوا	तुम्हारी तरफ ज़िक्र उतारा है। रसूल भेजा जो

عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِينَ तुम पर अल्लाह की रोशन आयतें तिलावत करते हैं ताके अल्लाह ईमान वालों को
أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ और उन को जो नेक अमल करते रहे तारीकियों से नूर की
إِلَى النُّورِ ۖ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَ يَعْمَلْ तरफ निकाले। और जो ईमान लाएगा अल्लाह पर और नेक अमल
صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا करता रहेगा तो अल्लाह उसे जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से नेहरें बेहती
الْأَنْهَارِ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। यकीनन अल्लाह ने
اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ۖ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ उस को बेहतरीन रोजी दी है। अल्लाह वो है जिस ने पैदा किए सात
سَمَوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۖ يَتَنَزَّلُ आसमान और उतनी ही ज़मीनें। हुक्म उन के
الْأَمْرِ بَيْنَهُنَّ لِيَتَلَعَّبُوا أَنَّ اللَّهُ عَلَى كُلِّ दरमियान उतरता है ताके तुम जान लो के अल्लाह हर चीज़ पर
شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ कुदरत वाला है। और ये के अल्लाह का इल्म हर चीज़ को इहाता किए
شَيْءٍ عِلْمًا ۚ हुए है।
وَأَيُّهَا ۱۲ (۶۶) سُورَةُ التَّحْرِيمِ الْمَكِّيَّةُ (۱۰۷) رُؤُوسُهَا ۲ और २ रूकूअ हैं सूरह तहरीम मदीना में नाज़िल हुई उस में १२ आयतें हैं بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تَحْرِمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ ۚ ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप क्यूँ हराम करते हो उस चीज़ को जो अल्लाह ने आप के लिए हलाल की है?

تَبْتَغِي مَرْضَاتِ أَزْوَاجِكَ ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ	आप अपनी बीवियों की खुशनूदी चाहते हो। और अल्लाह बख्शने वाला,
رَحِيمٌ ۝ قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ ۚ	निहायत रहम वाला है। अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुकर्रर किया है तुम्हारी कस्मों को खोल देना।
وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝	और अल्लाह तुम्हारा मौला है। और वो इल्म वाला, हिक्मत वाला है।
وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا	और जब के नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी एक ज़ौजअे मुतहहरा से चुपके से एक बात कही।
فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ	फिर जब उस उम्मुल मोमिनीन ने उस की खबर दे दी और अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इस पर मुतलेअ कर दिया, तो आप
بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ	(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उस में से कुछ बतला दिया और कुछ बताने से ऐराज़ फरमाया। फिर जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उस
قَالَتْ مَنْ أَنْتَبَاكَ هَذَا ۖ قَالَ نَبَّأَنِي الْعَلِيمُ	उम्मुल मोमिनीन को उस की खबर दी, तो वो केहने लगीं के आप को इस की किस ने खबर दी? तो नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)
الْخَبِيرُ ۝ إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ	ने फरमाया के मुझे इल्म वाले, बाखबर अल्लाह ने खबर दी। अगर तुम दोनों बीवियाँ अल्लाह की तरफ तौबा करोगी (तो बेहतर), तुम दोनों के
قُلُوبُكُمَا ۚ وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ	दिल टेढ़े हो गए हैं। और अगर तुम दोनों आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खिलाफ एक दूसरे की मदद करोगी, तो अल्लाह आप
وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْمَلَائِكَةُ	(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मदद करेगा और ज़िबरील और नेक मुसलमान। और उस के
بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ۝ عَلَىٰ رَبِّهِ إِنْ طَلَّقَكُنَّ	बाद फरिशते भी मददगार हैं। अगर नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हें तलाक़ दे दें
أَنْ يُبْدِلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُمْ مُّسْلِمَاتٍ	तो हो सकता है के उन का रब नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तुम से बेहतर बीवियाँ बदले में दे दे इस्लाम वालियाँ,
مُؤْمِنَاتٍ قَنَاطٍ ثَبَاتٍ سَبِيحَتِ	ईमान वालियाँ, खुशूअ करने वालियाँ, तौबा करने वालियाँ, इबादत करने वालियाँ, रोज़ा रखने वालियाँ हों,

سय्यिबा	और	बाकिरा।	ऐ	ईमान	वालो!
ثَبِّتْ وَ أَبْكَارًا ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا					
قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ					
وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَظٌ شِدَادٌ					
لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُونَ					
مَا يُؤْمَرُونَ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا					
हुक्म	दिया	जाता	है।	ऐ	काफ़िरो! आज उज़्र मत पेश
الْيَوْمَ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝					
करो।	तुम्हें	सिर्फ	सज़ा	दी	जाएगी उन्ही कामों की जो तुम करते थे।
يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً					
ऐ	ईमान	वालो!	अल्लाह	की	तरफ तौबअ नसूह
نَصُوحًا عَلَىٰ رَبِّكُمْ أَنْ يَكْفُرَ عَنْكُمْ					
करो।	उम्मीद	है	के	तुम्हारा	रब तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर
سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرَىٰ					
कर	देगा	और	तुम्हें	जन्नतों	में दाखिल करेगा जिन के नीचे से
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ					
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ					
अल्लाह	रुखा	नहीं	करेंगे।	उन	के आगे और उन की दाई जानिब
أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَتِمِّمْ لَنَا					
نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝					
उन का नूर दौड़ रहा होगा, वो केह रहे होंगे ऐ हमारे रब! तू हमारे लिए हमारे नूर को इत्मांम तक					
पहोंचा और हमारी मग़फ़िरत कर दे। यकीनन तू हर चीज़ पर कुदरत वाला है।					

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ	ऐ नबी! आप काफिरों से और मुनाफिकीन से जिहाद कीजिए
وَاعْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ	और उन पर सख्ती कीजिए। और उन का ठिकाना जहन्नम है। और वो बुरी
الْمَصِيرُ ۝ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتِ	जगह है। अल्लाह ने काफिरों के लिए मिसाल बयान की नूह (अलैहिस्सलाम)
نُوحٍ وَامْرَأَتِ لُوطَ ۖ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ	और लूत (अलैहिस्सलाम) की बीवियों की। जो दोनों हमारे बन्दों में से दो नेक बन्दों की
مِنْ عِبَادِنَا صَالِحِينَ فَخَانَتْهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا	मातहत में थीं, फिर दोनों ने उन दोनों नबियों से खयानत की, फिर वो दोनों नबी अल्लाह के मुकाबले
عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ	में उन दोनों के कुछ काम नहीं आए और कहा गया दोनों बीवियों से के आग में दाखिल हो जाओ
مَعَ الدَّٰخِلِينَ ۝ وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ	(जहन्नम में) दाखिल होने वालों के साथ। और अल्लाह ने मिसाल बयान की ईमान वालों
أَمَنُوا امْرَأَتِ فِرْعَوْنَ ۖ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي	के लिए फिरऔन की बीवी (आसिया) की। जब के उस (आसिया) ने कहा के ऐ मेरे रब! मेरे लिए
عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنْ فِرْعَوْنَ	अपने पास जन्नत में एक घर तामीर कर और तू मुझे फिरऔन और उस के अमल
وَعَمَلِهِ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝	से नजात दे और तू मुझे ज़ालिम कौम से नजात दे।
وَمَرْيَمَ ابْنَتِ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَتُ فَرْجَهَا	और मिसाल बयान की मरयम बिनते इमरान (अलैहिस्सलाम) की, जिस ने अपनी शर्मगाह की हिफाज़त की,
فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُّوحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَاتِ	तो फिर हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी और उस ने अपने रब के
رَبِّهَا وَكَتَبَ وَكَانَتْ مِنَ الْقَانِتِينَ ۝	कलिमात और अल्लाह की किताबों की तस्दीक की और वो फरमांबरदारों में से थीं।

رُكُوعَاتُهَا ۲

(۶۷) سُورَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ (۷۷)

آيَاتُهَا ۳۰

और २ रूकूअ हैं सूरह मुल्क मक्का में नाज़िल हुई उस में ३० आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

تَبَرُّكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

बाबरकत है वो ज़ात जिस के कब्जे में सल्तनत है, और वो हर चीज़ पर कुदरत

قَدِيرٌ ۚ الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ ۚ لِيَبْلُوَكُمْ

वाला है। जिस ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की ताके वो तुम्हें आजमाए

أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ۚ الَّذِي

के तुम में से कौन अच्छे अमल वाला है। और वो ज़बर्दस्त है, बहोत ज़्यादा बख्शने वाला है। वो अल्लाह

خَلَقَ سَبْعَ سَمَوَاتٍ طِبَاقًا ۚ مَا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ

जिस ने ऊपर नीचे सात आसमान बनाए। रहमान के पैदा किए हुए में तुम कोई

مِنْ تَفَوُّتٍ ۖ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۖ هَلْ تَرَىٰ مِنْ فُطُورٍ ۚ

फर्क नहीं पाओगे। फिर आप निगाह को लौटाइए, क्या आप कोई दराड़ देखते हो?

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ

फिर आप निगाह को सेहबारा कीजिए, बार बार निगाह आप की तरफ वापस लौट आएगी

خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ۝ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا

ज़लील हो कर इस हाल में के वो थकी हुई होगी। हम ने ही आसमाने दुनिया को मुज़य्यन किया

بِمَصَابِيحٍ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيْطَانِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ

चिरागों से और हम ने उन चिरागों को शैतानों के मारने का ज़रिया बनाया और हम ने शयातीन के लिए

عَذَابَ السَّعِيرِ ۝ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ

आग का अज़ाब तय्यार कर रखा है। और उन लोगों के लिए जिन्होंने ने अपने रब के साथ कुफ़ किया जहन्नम का

جَهَنَّمَ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا

अज़ाब है। और वो बुरी जगह है। जब वो उस में डाले जाएंगे, तो जहन्नम

لَهَا شَهيقًا وَهِيَ تَفُورٌ ۖ تَكَادُ تَمَيِّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۖ

का शोर सुनेंगे और वो जोश मार रही होगी। करीब है के वो गुस्से की वजह से फट जाए।

كَلَّمَآ اُنْتَىٰ فِيهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَا اَلَمْ يَأْتِكُمْ

जब कभी उस में कोई जमाअत डाली जाएगी, तो जहन्नम के मुहाफिज़ फरिशते उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डराने

نَذِيرٌ ۝ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌۭ فَكَذَّبْنَا

वाला नहीं आया? तो वो कहेंगे क्यूं नहीं! यकीनन हमारे पास डराने वाला आया था। तो हम ने झुठलाया

وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا

और हम ने कहा के अल्लाह ने कुछ नाज़िल नहीं किया। तुम तो बड़ी गुमराही में

فِي ضَلٰلٍۭ كَبِيْرٍ ۙ وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ

पड़े हो। और वो कहेंगे के अगर हम सुनते या समझते

مَا كُنَّا فِيْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۙ فَاعْتَرَفُوا بِذَنْبِهِمْ ۖ

तो हम दोज़खियों में शामिल न होते। फिर वो अपने गुनाह का इक़रार करेंगे।

فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۙ اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ

फिर दोज़खियों पर लानत हो। जो अपने रब से बेदेखे

رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاجْرٌۭ كَبِيْرٌ ۙ وَّاسْرُوْا

डरते हैं उन के लिए मग़फ़िरत है और बड़ा अज़्र है। और तुम बात

قَوْلَكُمْ اَوْ اجْهَرُوْا بِهِ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۭ بِذٰتِ الصُّدُوْرِ ۙ

चुपके से कहो या ज़ोर से कहो। बेशक अल्लाह दिलों का हाल खूब जानता है।

اِلَّا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۖ وَهُوَ اللّٰطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۙ هُوَ

क्या वो नहीं जानता जिस ने (उस को) पैदा किया? और वो भेद जानने वाला, बाखबर है। वही

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذُلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا

अल्लाह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को चलने के काबिल बनाया, फिर तुम उस के रास्तों में चलो

وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ۖ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ۙ ؕ اٰمَنْتُمْ مِّنْ

और अल्लाह की दी हुई रोज़ी खाओ। और उसी की तरफ ज़िन्दा हो कर उठना है। क्या तुम अमन में हो उस से जो

فِي السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرٌ ۙ

आसमान में है के वो ज़मीन में तुम्हें धंसा दे, फिर वो अचानक हरकत करने लगे?

اَمْ اَمَنْتُمْ مِّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ

या तुम आसमान वाले से अमन में हो इस से के वो तुम पर तूफ़ान भेज दे

حَاصِبًا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرٍ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ

पथर का? फिर अनकरीब तुम्हें मालूम हो जाएगा के मेरा डराना कैसा था। यकीनन उन

الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿١٨﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا

लोगों ने भी झुठलाया जो उन से पेहले थे, फिर मेरा इन्कार कैसा था? क्या उन्होंने ने देखा नहीं

إِلَى الظِّيرِ فَوْقَهُمْ صَفَّتْ وَيَقْبِضَنَّ مَا يُمِسُّهُمْ

परिन्दों की तरफ ऊपर, जो पर फैलाए होते हैं और पर कभी सुकेड़ते हैं। उन को कोई सिवाए रहमान

إِلَّا الرَّحْمَنُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ﴿١٩﴾ أَمَّنْ هَذَا

के थाम नहीं रहा। बेशक वो हर चीज़ को खूब देख रहा है। भला ऐसा कौन है

الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ ۚ

जो तुम्हारा लशकर बने, जो तुम्हारी नुसरत करे रहमान के सिवा?

إِنَّ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ﴿٢٠﴾ أَمَّنْ هَذَا الَّذِي

काफिर तो सिर्फ धोके में हैं। भला ऐसा कौन है जो

يَزِرُّكُمْ إِنَّ أَمْسَكَ رِزْقَةٍ ۚ بَلْ لَّجُّوا فِي عُتُوٍّ

तुम्हें रोज़ी दे अगर अल्लाह अपनी रोज़ी रोक ले? बल्के ये शरारत और बिदकने पर अड़े

وَنُفُورٍ ﴿٢١﴾ أَمَّنْ يَمْشِي مَكْبًا عَلَى وَجْهِهِ أَهْدَى

हुए हैं। भला जो शख्स चले औंधा अपने मुंह के बल वो ज़्यादा हिदायतयाफ़ता है

أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾ قُلْ

या वो आदमी जो सीधे रास्ते पर सीधा चले? आप फरमा दीजिए

هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ

के वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें पैदा किया और जिस ने तुम्हारे लिए कान और आँख और दिल

وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِي

बनाए। बहोत कम तुम शुक अदा करते हो। आप फरमा दीजिए के वही अल्लाह है जिस ने

دَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُولُونَ

तुम्हें फैला दिया ज़मीन में और उसी की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे। और ये केहते हैं के

مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلْ

ये वादा कब है अगर तुम सच्चे हो। आप फरमा दीजिए

إِنَّا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿۶۸﴾

के इल्म तो सिर्फ अल्लाह के पास है। और मैं तो सिर्फ साफ साफ डराने वाला हूँ।

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا

फिर जब कुम्फार वादे को करीब आता देखेंगे तो काफिरों के चेहरे बिगड़ जाएंगे

وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدَّعُونَ ﴿۶۹﴾ قُلْ

और कहा जाएगा के ये वो अज़ाब है जिस को तुम मांगा करते थे। आप फरमा दीजिए

أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكْنِي اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا

के तुम ही बताओ के अगर अल्लाह मुझे और उन लोगों को जो मेरे साथ हैं हलाक कर दे या हम पर रहम करे

فَمَنْ يُّجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿۷۰﴾ قُلْ هُوَ

तो काफिरों को कौन दर्दनाक अज़ाब से बचाएगा? आप फरमा दीजिए के वही

الرَّحْمَنُ أَمَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسَتَعْلَمُونَ

रहमान है, उसी पर हम ईमान लाए हैं और उसी पर हम ने तवक्कुल किया। फिर जल्द ही

مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿۷۱﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ

तुम्हें मालूम हो जाएगा के कौन खुली गुमराही में है। आप फरमा दीजिए के तुम्हारी क्या राह है के अगर

مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَعِينٍ ﴿۷۲﴾

तुम्हारा पानी गेहराई में चला जाए तो कौन तुम्हारे पास सुथरा पानी लाएगा?

الْأَنْعَامُ ۵۲ (۶۸) سُورَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ (۲) رُكُوعَاتُهَا ۲

उस में ५२ आयतें हैं सूरह कलम मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ن وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ﴿۷۳﴾ مَا أَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ

नून। कलम की कसम और उस की कसम जिस को फरिशते लिख रहे हैं। आप के रब की नेअमत की वजह से आप

بِسْجُونٍ ﴿۷۴﴾ وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَبْنُونٍ ﴿۷۵﴾

मजनून नहीं है। और बेशक आप के लिए बेइन्तिहा अज़्र है।

وَإِنَّكَ لَعَلَى خُلُقٍ عَظِيمٍ ﴿۷۶﴾ فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُونَ ﴿۷۷﴾

और यकीनन आप अज़ीम अखलाक पर हो। फिर जल्द ही आप भी देख लोगे और ये भी देख लेंगे।

بِأَيِّكُمْ الْمَفْتُونُ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

के तुम में से कौन मचल रहा है। यकीनन तेरा रब उस शख्स को खूब जानता है जो उस के रास्ते

عَنْ سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝ فَلَا تُطِعْ

से भटक गया है। और खूब जानता है हिदायत पाने वालों को। इस लिए आप झुठलाने वालों

الْمُكَذِّبِينَ ۝ وَذُوا لَوْ تَذَهْنُ فَيَذْهَبُونَ ۝

की इताअत न कीजिए। वो तो ये चाहते हैं के अगर आप नरमी करें तो वो भी नरमी करेंगे।

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ ۝ هَمَّازٍ مَشَّاءٍ بِمِمْ ۝

और आप केहना न मानिए हर कसम खाने वाले, ज़लील, ताना देने वाले, चुगली को ले कर चलने वाले,

مَتَّاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝ عُتْلٍ بَعْدَ ذَلِكَ

खैर से रोकने वाले, हद से आगे बढ़ने वाले, गुनहगार, सरकश का, उस के बाद वो बेअस्ल

زَنِيمٍ ۝ أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ۝ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ

भी है। इस वजह से के वो माल वाला और बेटों वाला है। जब उस के सामने हमारी आयतें तिलावत

إِيتْنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ سَنَسِمُهُ

की जाती हैं, तो केहता है के ये पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ हैं। अनकरीब हम उस की नाक को

عَلَى الْخُرُطُومِ ۝ إِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ ۚ

दागेंगे। हम ने उन्हें आजमाया जैसा के हम ने बाग वालों को आजमाया था।

إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ۝ وَلَا يَسْتَشْنُونَ ۝

जब उन्होंने ने कस्में खाई थीं के उस बाग के फल सुबह ज़रूर तोड़ लेंगे। और वो इन्शाअल्लाह नहीं केहते थे।

فُطَافٌ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ۝

फिर उन पर तेरे रब की तरफ से एक बला ने चक्कर लगाया इस हाल में के वो सोए हुए थे।

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ۝ فَتَنَادُوا مُصْبِحِينَ ۝

फिर वो कटे हुए खेत की तरह बन गया। फिर वो आपस में एक दूसरे को सुबह के वक़्त पुकारने लगे।

إِنْ اغْدُوا عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَرِمِينَ ۝

के चलो अपने खेत पर अगर तुम्हें खेती काटना है।

فَانْطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَفَتُونَ ۝ أَنْ لَا يَدْخُلْنَهَا

फिर वो चले और वो चुपके चुपके एक दूसरे को केह रहे थे। के आज तुम पर कोई फकीर

الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مَسْكِينٌ ﴿۲۳﴾ وَعَدُوا عَلَى حَرٍِّ قَدِيرٍ ﴿۲۴﴾

बाग़ में दाखिल न होने पाए। और वो खेती से रोकने पर कादिर बन कर सुबह के वक़्त चले।

فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُّونَ ﴿۲۵﴾ بَلْ نَحْنُ

फिर जब उन्होंने ने वो बाग़ देखा, तो केहने लगे के हम तो रास्ता भूल गए हैं। बल्के हम तो

مَحْرُومُونَ ﴿۲۶﴾ قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ

महरूम हो गए। उन में से मोअतदिल शख्स ने कहा के क्या मैं ने तुम से कहा नहीं था के तुम

لَوْلَا تَسْبِحُونَ ﴿۲۷﴾ قَالُوا سُبْحَنَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿۲۸﴾

तस्बीह क्यूं नहीं करते? वो बोले के हमारा रब पाक है, यकीनन हम ही कुसूरवार हैं।

فَاقْبَلْ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَلَوْمُونَ ﴿۲۹﴾ قَالُوا

फिर उन में से एक दूसरे की तरफ मुतवज्जेह हो कर मलामत करने लगे। वो केहने लगे

يُؤْيِلْنَا إِنَّا كُنَّا طَغِيْنَ ﴿۳۰﴾ عَلَىٰ رَبِّنَا أَنْ يُّبَدِّلَنَا

हाए हमारी खराबी! यकीनन हम ही सरकश थे। उम्मीद है के हमारा रब हमें इस से बेहतर

خَيْرًا مِّنْهَا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا رُغْبُونَ ﴿۳۱﴾ كَذَلِكَ

बदले में दे दे, हम अपने रब की तरफ राग़िब हैं। इसी तरह

الْعَذَابُ ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا

अज़ाब आता है। और आखिरत का अज़ाब इस से भी बड़ा है। काश के वो

يَعْلَمُونَ ﴿۳۲﴾ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّتِ

जानते। यकीनन मुत्तकियों के लिए उन के रब के पास जन्नाते

النَّعِيمِ ﴿۳۳﴾ أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْجُرِمِينَ ﴿۳۴﴾

नईम हैं। क्या हम मुसलमानों को मुजरिमों की तरह बना देंगे?

مَا لَكُمْ وَقَعًا ۖ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿۳۵﴾ أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ

तुम्हें क्या हुवा? तुम कैसे फैसले करते हो? क्या तुम्हारे पास किताब है जिस में

تَذْرُسُونَ ﴿۳۶﴾ إِنْ لَّكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ﴿۳۷﴾ أَمْ لَكُمْ

तुम पढ़ते हो? के तुम्हारे लिए उस में वो है जो तुम पसन्द करोगे? क्या हम से

إِيمَانٌ عَلَيْنَا بِالْغَةِ ۖ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ لَكُمْ

तुम ने कस्में ली हैं जो कयामत के दिन तक चलेंगी? के तुम्हें

لَبَا تَحْكُمُونَ ﴿۳۹﴾ سَلَهُمْ أَيُّهُمْ بِذَلِكَ زَعِيمٌ ﴿۴۰﴾

ज़रूर मिलेगा जिस का तुम हुक्म दोगे। आप उन से सवाल कीजिए के तुम में से कौन उस का ज़िम्मेदार है?

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ ۖ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِنْ كَانُوا

या उन के शुरका हैं? तो उन्हें चाहिए के अपने शुरका को लाएं अगर वो

صَادِقِينَ ﴿۴۱﴾ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ

सच्चे हैं। जिस दिन पिंडली खोली जाएगी और सज्दे

إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿۴۲﴾ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ

के लिए बुलाया जाएगा, तो वो (सज्दा करने की) ताकत नहीं रख सकेंगे। उन की निगाहें झुकी हुई होंगी,

تَرَهْقُهُمْ ذُلٌّ ۖ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ

उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी। हालांकि इस से पेहले उन्हें सज्दे के लिए बुलाया जाता था

وَهُمْ سَلِيمُونَ ﴿۴۳﴾ فَذَرْنِي وَمَنْ يُكَدِّبُ بِهِذَا الْحَدِيثِ ۖ

जब के (सहीह व) सालिम थे। इस लिए आप मुझे और उस शख्स को छोड़ दीजिए जो इस बात को झुठलाता है।

سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۴۴﴾ وَأُمْلِ

अनक़रीब हम उन्हें ढील देंगे इस तरीके से के उन्हें पता नहीं चलेगा। और मैं उन्हें

لَهُمْ ۖ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿۴۵﴾ أَمْ تَسْأَلُهُمْ اجْرًا

ढील दूँगा। यकीनन मेरी तदबीर बहोत मज़बूत है। क्या आप उन से बदले का सवाल करते हैं,

فَهُمْ مِنْ مَّعْرَمٍ مَثْقُلُونَ ﴿۴۶﴾ أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ

फिर वो तावान की वजह से बोझल हो रहे हैं? या उन के पास ग़ैब है

فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿۴۷﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ

के वो लिख लाते हैं? फिर अपने रब के हुक्म की इस्तिफ़लाल के साथ राह देखते रहिए और आप मछली वाले

كَصَاحِبِ الْحُوتِ ۖ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿۴۸﴾

पैग़म्बर की तरह न हों, जब के उन्होंने ने पुकारा इस हाल में के वो गुस्से से पुर थे।

لَوْلَا أَنْ تَدْرَكَهُ نِعْمَةٌ مِنْ رَبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ

अगर उन्हें अपने रब की नेअमत ने सहारा न दिया होता, तो वो फैंक दिए जाते चटयल मैदान में और

مَذْمُومٌ ﴿۴۹﴾ فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿۵۰﴾

वो बदहाल होते। फिर उन को उन के रब ने मुन्तखब कर लिया, फिर उन को सुलहा में से बना दिया।

وَأِنْ يَّكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ

और ये काफिर तो करीब थे के आप को फिसला देते अपनी निगाहों के ज़रिए

لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَ يَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ۝

जब वो ज़िक्र सुनते हैं और कहते हैं के ये तो मजनून है।

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝

हालांके ये कुरआन तो तमाम जहान वालों के लिए नसीहत ही नसीहत है।

رُؤُوسُهُمَا ٢

(٦٩) سُورَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ (٤٨)

آيَاتُهَا ٥٢

और २ स्कूअ हैं सूरह हाक्का मक्का में नाज़िल हुई उस में ५२ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الْحَاقَّةُ ۝ مَا الْحَاقَّةُ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ۝

सचमुच आने वाली। क्या है सचमुच आने वाली? और आप को मालूम भी है के सचमुच आने वाली क्या चीज़ हे?

كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ۝ فَأَمَّا ثَمُودُ

कौमे समूद और कौमे आद ने खड़खड़ाने वाली को झुठलाया। फिर कौमे समूद,

فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ۝ وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ

तो वो हलाक की गई ज़ोर की आवाज़ से। और कौमे आद तो वो हलाक की गई ठन्डी तूफानी

صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۝ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَلَاثَةَ

हवा से जो हद से ज़्यादा थी। जिस को अल्लाह ने उन पर मुसख़र किया सात रात और आठ

أَيَّامٍ ۖ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَى ۖ كَأَنَّهُمْ

दिन तक लगातार, फिर आप उस में उस कौम को देखोगे पछड़ा हुवा, गोया के वो

أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۝ فَهَلْ تَرَى لَهُمْ

उखड़े हुए खजूर के खोखले तने हैं। फिर क्या आप उन में से किसी को बचा हुवा

مِّنْ بَاقِيَةٍ ۝ وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكُ

देख रहे हो? और फिरऔन और जो उन से पेहले थे वो और उलट दी जाने वाली बस्तियाँ गुनाह

بِالْخَاطِئَةِ ۝ فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخَذَةً

ले कर आए। फिर उन्होंने ने अपने रब के पैग़म्बर की नाफरमानी की, फिर उस ने उन को सख़्ती से

رَّابِيَةً ۝ إِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَاءُ حَمَلْنَاكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۝

पकड़ लिया। यकीनन जब पानी तुम्हारी में आया, तो हम ने ही तुम्हें कशती में सवार किया।

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ۝

ताके हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बनाएं और उसे याद रखने वाले कान याद रखें।

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ۝ وَحُمِلَتِ

फिर जब सूर में फूँका जाएगा एक ही मरतबा। और ज़मीन

الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ۝

और पहाड़ उठाए जाएंगे और कूटे जाएं एक ही चोट से।

فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ وَانْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ

तो उस दिन वाकेअ होने वाली वाकेअ हो जाएगी। और आसमान फट जाएगा, फिर वो

يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۝ وَالْمَلِكُ عَلَىٰ أَرْجَائِهَا ۝ وَيَحْمِلُ

उस दिन बिल्कुल बूदा होगा। और फरिश्ते उस के किनारों पर होंगे। और तेरे

عَرْشِ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَةٌ ۝ يَوْمَئِذٍ

रब का अर्श उस दिन अपने ऊपर आठ फरिश्ते उठाए हुए होंगे। उस दिन

تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ

तुम्हारी पेशी होगी, तुम्हारा कोई मख्फी राज़ मख्फी नहीं रह सकेगा। तो जिस को उस का नामअे आमाल उस के

كِتَابُهُ بِيَمِينِهِ ۖ فَيَقُولُ هَٰؤُلَاءِ أَقْرَبُوا ۖ كِتَابِيهِ ۝

दाएं हाथ में दिया जाएगा, तो वो कहेगा के लो! मेरे इस नामअे आमाल को पढ़ो!

إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلْقٍ حِسَابِيهِ ۝ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ

बेशक मैं ये अकीदा रखता था के मुझे मेरा हिसाब मिलने वाला है। फिर वो खुशगवार ज़िन्दगी

رَاضِيَةٍ ۝ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۖ قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ۝

में होगा। ऊँची जन्नत में होगा। जिस के मेवे झुके हुए होंगे।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ

(कहा जाएगा) तुम्हें मुबारक हो, खाओ और पियो उन आमाल की वजह से जो तुम ने पिछले दिनों में

الْخَالِيَةِ ۝ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابُهُ بِشِمَالِهِ ۖ

पेहले किए। और जिस को उस का नामअे आमाल बाएं हाथ में दिया जाएगा,

فَيَقُولُ يَلِيَّتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَهُ ۖ وَلَمْ أَدْرِ	وہ کہے گا کہ کا ش مجھے میرا نام آئے آما مال نہ ملتا۔ اور میں نہ جانتا کہ
مَا حِسَابِيهِ ۖ يَلِيَّتَهَا كَانَتْ الْقَاضِيَةَ ۖ	میرا ہسب کبیا ہے؟ ۛ کا ش کے وہ مائت ہی آاتما کرنے والی ہوتی۔
مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيهِ ۖ هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيهِ ۖ	میرا مال میرے کبھ بھی کام نہیں آایا۔ میری سلطنت بھی مبل سے چلی गई۔
خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ۚ ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ۚ ثُمَّ	(کھا آاے گا کے) اس کو پکڑو اور اس کے گلے میں تائک ڈالو۔ فیر اس کو دؤڑخ میں داآیل کرو۔ فیر
فِي سُلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۚ	ۛسی جنجیر میں جکڑو، جس کی لمبائی سائر ہاتھ ہے۔
إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۚ وَلَا يَحْضُرْ	اس لیے کے یہ اجمت والے اللہ پر ایمان نہیں رکھتا آا۔ اور مسکین کو آانا
عَلَىٰ طَعَامِ الْبُسْكَينِ ۚ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هُنَا	دے کی ترگیب نہیں دےتا آا۔ تو آج اس کا یہاں کوئی دوست
حَمِيمٌ ۚ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ۚ لَا يَأْكُلُهُ	نہیں ہے۔ اور نہ آانا ہے سواے دؤڑخیوں کے لہو پیپ کے۔ سواے گنہگاروں کے
إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۚ فَلَا أَقْسَمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ۚ	ۛسے کوئی نہیں آاے گا۔ فیر میں کسم آاتا ہوں ان آیوں کی جو تم دے رہے ہو۔
وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ۚ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۖ وَمَا هُوَ	اور ان آیوں کی جو تم دے نہیں رہے۔ بے شک یہ اجمت والے فرشے کا کول ہے۔ اور یہ کسی
بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۖ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ۚ وَلَا بِقَوْلِ	شاڈر کا کلام نہیں ہے۔ بہوت کم تم لوگ ایمان لاتے ہو۔ اور کسی کاہن کا کلام بھی
كَاهِنٍ ۖ قَلِيلًا مَّا تَذْكُرُونَ ۚ تَنْزِيلُ	نہیں ہے۔ بہوت کم تم نسیहत ہاسیل کرتے ہو۔ (بلکے یہ کورآن تو)
مِّنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ	ربول آالمین کی طرف سے ٲتارا گیا ہے۔ اور اگر یہ نبی بھی ہمارے ٲپر کوئی بات

الْأَقَاوِيلِ ۱۰۷ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۱۰۸ लेते। तो हम उस को भी कूवत से पकड़ लेते।
ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۱۰۹ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ फिर हम उस की रगे जान काट डालते। फिर तुम में से कोई भी उसे
عَنْهُ حُجْرَيْنِ ۱۱۰ وَإِنَّهُ لَتَذِكْرَةٌ لِّلْبَاقِينَ ۱۱۱ बचा न सकता। और यकीनन ये नसीहत है मुत्तकियों के लिए।
وَ إِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِينَ ۱۱۲ وَإِنَّهُ और यकीनन हम जानते हैं के तुम में से कुछ झुठलाने वाले हैं। और बेशक ये कुरआन
لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ۱۱۳ وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۱۱४ काफिरों के लिए हसरत है। और ये कुरआन हक्कुल यकीन है।
فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۱۱५ फिर आप अपने अज़मत वाले रब के नाम की तस्बीह कीजिए।
۱۱۲ آیاتھا ۲۲ (۷۰) سُورَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ (۷۹) رُؤُوسُهَا ۲ और २ रूकूअ हैं सूरह मआरिज मक्का में नाज़िल हुई उस में ४४ आयतें हैं بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۱۱۶ لِّلْكَافِرِينَ لَيْسَ एक सवाल करने वाले ने सवाल किया ऐसे अज़ाब का जो काफिरों के लिए वाक़ेअ होने वाला है, जिसे
لَهُ دَافِعٌ ۱۱۷ مِّنْ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ۱۱۸ تَعْرُجُ कोई दफा नहीं कर सकता। अल्लाह की तरफ से, जो सीढ़ियों का मालिक है। फरिशते और
الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ रूह सीढ़ियों से चढ़ कर उस के पास जाते हैं, (अज़ाब वाक़ेअ होगा) ऐसे दिन में जिस की मिक़दार
خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۱۱۹ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ۱۲۰ पचास हज़ार बरस है। फिर आप अच्छी तरह सब्र कीजिए।
إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ۱۲۱ وَ نَرَاهُ قَرِيبًا ۱۲۲ يَوْمَ बेशक ये उस को दूर समझ रहे हैं। और हम उसे क़रीब देख रहे हैं। जिस दिन

تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْهَيْلِ ۖ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۖ	आसमान पिघले हुए ताँबे के मानिन्द हो जाएगा। और पहाड़ ऊन की तरह हो जाएंगे।
وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ۖ يَبْصُرُونَهُمْ ط يَوَدُّ	और कोई दोस्त किसी दोस्त को पूछेगा भी नहीं। हालांकि वो उन्हें दिखाए जाएंगे। मुजरिम
الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابٍ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ ۖ	चाहेगा के काश के वो उस दिन के अज़ाब से बचने के लिए फ़िदये में दे दे अपने बेटों को।
وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ۖ وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُتَوِيهُ ۖ	और अपनी बीवी को और अपने भाई को। और अपने उस कुम्बे को जिस में वो रहता था।
وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنْجِيهِ ۖ كَلَّا ط	और उन तमाम को जो ज़मीन में हैं सब को फिदये में दे दे, फिर वो अपने को बचा ले। हरगिज़ नहीं।
إِنَّمَا لَظَى ۖ نَزَّاعَةً لِّلشَّوْىِ ۖ تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ	यकीनन ये तो भड़कती हुई आग होगी। जो चमड़ी भी खींच लेगी। वो आग पुकारेगी उस को जिस ने पीठ फेरी
وَتَوَلَّى ۖ وَجَمَعَ فَأَوْعَى ۖ إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ	और पैराज़ किया। और जिस ने माल जमा किया, फिर उस ने हिफाज़त से रखा। यकीनन इन्सान कमहिम्मत पैदा
هَلُوعًا ۖ إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۖ وَإِذَا مَسَّهُ	किया गया है। जब उसे मुसीबत पहुँचती है, तो फरयादी बन जाता है। और जब उसे नेअमत पहुँचती है
الْخَيْرُ مَنُوعًا ۖ إِلَّا الْمَصْلِينَ ۖ الَّذِينَ هُمْ	तो रोकने वाला बन जाता है। मगर वो नमाज़ पढ़ने वाले। जो अपनी नमाज़ पर
عَلَى صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ۖ وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ	मुदावमत करते हैं। और जिन के मालों में मुकर्रर किया
مَعْلُومٌ ۖ لِّلسَّائِلِ وَالْهَرُومِ ۖ وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ	हुवा हक़ है। मांगने वाले के लिए और फकीर के लिए। और जो हिसाब के
بِیَوْمِ الدِّينِ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ	दिन को सच्चा बतलाते हैं। और जो अपने रब के अज़ाब से
مُشْفِقُونَ ۖ إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ۖ	डरते हैं। यकीनन उन के रब का अज़ाब बेखौफ़ रहने की चीज़ नहीं है।

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَفِظُونَ ۖ إِلَّا	और जो अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाले हैं। मगर
عَلَىٰ أَرْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ	अपनी बीवियों से या अपनी बांदियों से, इस लिए के उन पर उस में कोई
مَلُومِينَ ۖ فَمِنْ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ	मलामत नहीं। लेकिन जो उस के अलावा को तलब करेगा, तो यही लोग हद से आगे बढ़ने
الْعَادُونَ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ	वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने अहद को
رُعُونَ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ ۖ	निबाहते हैं। और जो अपनी गवाहियों पर काइम रहेते हैं।
وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۖ أُولَٰئِكَ	और जो अपनी नमाज़ की पाबन्दी करते हैं। उन को
فِي جَنَّتٍ مُّكْرَمُونَ ۖ فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا	जन्नतों में पैज़ाज़ दिया जाएगा। फिर काफिरों को क्या हो गया
قَبْلَكَ مُهْطِعِينَ ۖ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ	के आप की तरफ दौड़े चले आते हैं। दाईं तरफ से और बाईं तरफ से जमाअत दर जमाअत।
عَزِينَ ۖ أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَنْ يَدْخُلَ جَنَّةَ	क्या उन में से हर शख्स ये लालच रखता है के उसे जन्नते नईम में दाखिल किया
نَعِيمٍ ۖ كَلَّا ۖ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُونَ ۖ	जाएगा? हरगिज़ नहीं! यकीनन हम ने उन को पैदा किया है उस से जिस को ये जानते हैं।
فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ إِنَّا لَقَدِرُونَ ۖ	फिर मैं मशरिकों और मगरिबों के रब की कसम खाता हूँ के यकीनन हम इस पर कादिर हैं
عَلَىٰ أَنْ نُبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۖ وَمَا نَحْنُ بِسَبُّوقِينَ ۖ	के उन से बेहतर को बदले में ले आएंगे। और ये हम से भाग कर आगे नहीं जा सकते।
فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ	इस लिए आप उन को छोड़ दीजिए के वो लगे रहें और खेलें यहाँ तक के वो मिलें उन के उस दिन से

الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٢٢﴾ يَوْمَ يُخْرَجُونَ مِنَ الْجَدَاثِ

जिस से उन्हें डराया जा रहा है। जिस दिन वो कब्रों से निकल रहे होंगे

سَرَّاعًا كَانَتْهُمْ إِلَى نَصْبٍ يُؤْفَضُونَ ﴿٢٣﴾ خَاشِعَةً

तेजी से गोया के वो निशानों की तरफ तेज़ दौड़ रहे हैं। उन की नज़रें

أَبْصَارُهُمْ تَرَهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي

झुकी हुई होगी, उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी। ये वो दिन है जिस से

كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٢٤﴾

उन्हें डराया जा रहा है।

۸

رُؤُوسُهُمَا ۲

(۷۱) سُورَةُ نُوحٍ مَكِّيَّةٌ (۷۱)

آيَاتُهَا ۲۸

और २ रूकूअ हैं सूरह नूह मक्का में नाज़िल हुई उस में २८ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ

हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को उन की कौम की तरफ भेजा के आप अपनी कौम को डराइए

مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالَ يَقَوْمِ

इस से पेहले के उन के पास दर्दनाक अज़ाब आ जाए। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ मेरी

إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ

कौम! बेशक मैं तुम्हारे लिए साफ साफ डराने वाला हूँ। के अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो

وَاطِيعُونَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَ يُؤَخِّرْكُمْ

और मेरा केहना मानो। तो अल्लाह तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह बख्श देगा और तुम्हें एक वक़्ते मुक़र्ररा

إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَيَّ ۚ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ

तक मोहलत देगा। यकीनन अल्लाह की मुक़र्रर की हुई मुद्दत जब आ जाती है, तो फिर मुअख़्ख़र नहीं की जाती।

لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي

काश के तुम जानते। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ मेरे रब! यकीनन मैं ने मेरी कौम

لَيْلًا وَنَهَارًا ۚ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ۝

को रात और दिन बुलाया। तो वो मेरे बुलाने पर और ज़्यादा ही भागते रहे।

۸

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ

और जब भी मैं ने उन को बुलाया ताके आप उन की मग़फ़िरत करें, तो उन्होंने ने अपनी उंगलियाँ

فِي أَذَانِهِمْ وَأَسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصْرُوا وَاسْتَكْبَرُوا

अपने कानों में ठोंस लीं और अपने कपड़े ओढ़ लिए और उन्होंने ने ज़िद की और बहोत

اسْتِكْبَارًا ۚ ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۚ ثُمَّ إِنِّي

ज़्यादा तकबुर किया। फिर मैं ने उन को खुल्लम खुल्ला दावत दी। फिर मैं ने

أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۚ فَقُلْتُ

उन को अलानिया दावत दी, फिर मैं ने उन को चुपके चुपके दावत दी। फिर मैं ने कहा के

اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۙ يُرْسِلُ السَّمَاءَ

तुम अपने रब से मग़फ़िरत तलब करो। यकीनन वो बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला है। वो आसमान को तुम पर

عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ۚ وَيُمِدُّكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ

बरसता हुवा छोड़ेगा। और तुम्हारी इमदाद करेगा मालों और बेटों के ज़रिए

وَيَجْعَلُ لَكُمْ جَذٍ وَيَجْعَلُ لَكُمْ أَنْهَارًا ۚ مَا لَكُمْ

और तुम्हारे लिए बागात बनाएगा और तुम्हारे लिए नेहरें बनाएगा। तुम्हें क्या हुवा के

لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۚ وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۚ

तुम अल्लाह के लिए अज़मत का अकीदा नहीं रखते? हालांके उस ने तुम्हें तौर दर तौर पैदा किया है।

أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَوَاتٍ طِبَاقًا ۚ

क्या तुम ने देखा नहीं के कैसे अल्लाह ने ऊपर नीचे सात आसमान पैदा किए?

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا ۚ

और उन में चाँद को नूरानी बनाया और सूरज को रोशन बनाया।

وَاللَّهُ أَنْتَبَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ۚ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ

और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से उगाया। फिर वो तुम्हें ज़मीन में दोबारा

فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ۚ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ

लौटाएगा, फिर वो तुम्हें कब्रों से निकालेगा। और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को

الْأَرْضِ بَسَاطًا ۚ لِتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۚ

बिछौना बनाया। ताके तुम उस के कुशादा रास्तों में चलो।

قَالَ نُوحٌ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَنْ

नूह (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! उन्होंने ने मेरी नाफरमानी की और वो उन के पीछे चले जिन

لَمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدَهُ إِلَّا خَسَارًا ۝ وَمَكَرُوا

के माल और जिन की औलाद उन को ज़्यादा नहीं करती मगर खसारे में। और उन्होंने ने

مَكْرًا كُبَرَاءًا ۝ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ

बड़ा ज़बर्दस्त मकर किया। और उन्होंने ने कहा के तुम हरगिज़ मत छोड़ो अपने माबूदों को

وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ

और तुम हरगिज़ मत छोड़ो वदद और सुवाअ और यगूस और यऊक्

وَنَسْرًا ۝ وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۝ وَلَا تَزِدِ

और नसर को। और तहकीक के उन्होंने ने बहोत सों को गुमराह किया। और (या रब!) ज़ालिमों

الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَّالًا ۝ مِمَّا خَطِيئَتُهُمْ أُغْرِقُوا

की गुमराही और बढ़ाई। अपने गुनाहों की वजह से वो ग़र्क किए गए,

فَادْخُلُوا نَارًا ۝ فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ

फिर वो आग में दाखिल किए गए। फिर अपने लिए उन्होंने ने अल्लाह के सिवा कोई मददगार भी

اللَّهِ أَنْصَارًا ۝ وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْ

नहीं पाया। और नूह (अलैहिस्सलाम) ने कहा के ऐ मेरे रब! तू ज़मीन पर काफिरों का

عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ۝ إِنَّكَ

एक घर भी बसता हुवा मत छोड़। इस लिए के

إِنْ تَذَرَهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا

अगर तू उन को छोड़ेगा तो वो तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और वो नहीं जनेंगे मगर फाजिर

كَفَّارًا ۝ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ

काफिर ही को। ऐ मेरे रब! तू मेरी मग़फ़िरत कर दे और मेरे वालिदैन की और उस शख्स की जो मेरे

بَيْتِي مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۝ وَلَا تَزِدِ

घर में मोमिन बन कर आए और ईमान वाले मदों की और मोमिन औरतों की। और तू ज़ालिमों को मत

الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارَكَ ۝

बढ़ा मगर हलाकत में।

عَبَسَ

رُوعَانِهَا ٢

(٤٢) سُورَةُ الْجِنِّ كَثِيرًا (٢٠)

آيَاتُهَا ٢٨

और २ स्कूअ हैं सूरह जिन मक्का में नाज़िल हुई उस में २८ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا

आप फरमा दीजिए के मेरी तरफ ये वही किया गया है के चन्द जिन्नात ने कुरआन सुन लिया, तो वो केहने लगे

إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ۖ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ

के यकीनन हम ने एक अजीब कुरआन सुना है। जो नेकी की तरफ़ रहनुमाई करता है,

فَأَمَّا بِهِ ۖ وَلَن تُشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ۖ وَأَنَّهُ

तो हम उस पर ईमान ले आए। और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठेहराएंगे। और ये के

تَعْلَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ۖ

हमारे रब की ऊँची शान है, उस ने न कोई बीवी बनाई और न औलाद बनाई।

وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۖ

और हम में से बेवकूफ अल्लाह पर (किज़्ब में भी) बहोत दूर की केहते रहे।

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن تَقُولَ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ

और ये के हम ने गुमान किया के इन्सान और जिन अल्लाह पर हरगिज़ झूठ नहीं

كَذِبًا ۖ وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ

बोलेंगे। और ये के इन्सानों में से कुछ लोग पनाह तलब करते थे

بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۖ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا

मर्द जिन्नात की, तो उन्होंने ने उन जिन्नात का गुरुर और बढ़ा दिया। और ये के उन्होंने ने गुमान किया

كَمَا ظَنَنْتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ۖ وَأَنَّا لَمَسْنَا

जैसा के तुम ने गुमान किया के अल्लाह किसी को (ज़िन्दा कर के) हरगिज़ नहीं उठाएगा। और ये के हम ने आसमान

السَّمَاءِ فَوَجَدْنَاهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهُبًا ۖ

को टटोला, तो हम ने उस को भरा हुवा पाया मज़बूत चौकीदारों से और अंगारों से।

وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۖ فَمَن

और ये के हम वहाँ पर सुनने की जगहों पर बैठते थे। फिर अब जो कोई

يَسْتَمِعُ الْآنَ يَجِدُ لَهُ شَهَابًا رَّصَدًا ۝ وَأَنَا

कान लगाता है, तो अपने लिए एक ताकने वाला अंगारा पाता है। और हम नहीं

لَا نَذَرِي أَشْرًا أُرِيدَ بِمَنْ فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ

जानते के क्या बुराई मन्जूर है ज़मीन वालों के साथ या उन के रब ने उन के साथ

رَبِّهِمْ رَشَدًا ۝ وَأَنَا مِنَ الصَّالِحُونَ وَمِمَّا دُونَ

भलाई का इरादा किया है। और ये के हम में से कुछ अच्छे हैं और हम में से कुछ इस के

ذَلِكَ ۖ كُنَّا طَرَائِقَ قِدَدًا ۝ وَأَنَا ظَنَنَّا أَنْ

अलावा हैं। हम अलग अलग तरीकों पर थे। और ये के हम ने गुमान किया के हम

لَنْ نُعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَنْ نُعْجِزَهُ هَرَبًا ۝ وَأَنَا

अल्लाह को ज़मीन में हरगिज़ आज़िज़ नहीं कर सकेंगे और भाग कर भी हरगिज़ उस को आज़िज़ नहीं कर सकेंगे। और

لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ أَمَّا بِهِ ۖ فَمَنْ يُؤْمِنُ بِرَبِّهِ

जब हम ने उस हिदायत को सुना तो हम उस पर ईमान ले आए। तो जो भी अपने रब पर ईमान ले आएगा,

فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ۝ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمُونَ

फिर उसे न नुक़सान का खौफ होगा, न जुल्म का। और हम में से कुछ मुसलमान हैं

وَمِمَّا الْقَاسِطُونَ ۖ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا

और कुछ गुनहगार हैं। लेकिन जो इस्लाम लाएगा, तो उन्होंने ने हिदायत का

رَشَدًا ۝ وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝

क़स्द किया। और अलबत्ता जो ज़ालिम हैं, तो वो जहन्नम का ईंधन हैं।

وَأَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَهُمْ مَّاءً

और ये के अगर वो उस तरीके पर हमेशा चलते रहे तो हम उन्हें पीने को वाफिर पानी

عَذَقًا ۝ لَنُفْتِنَهُمْ فِيهِ ۖ وَمَنْ يُعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ

देते। ताके हम उन को इस में आज़माएं। और जो अपने रब की नसीहत से पैराज़ करेगा

يَسْلُكُهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝ وَأَنَّ الْمَسْجِدَ لِلَّهِ

तो वो उसे चढ़ते अज़ाब में दाखिल कर देगा। और ये के मस्जिदें तो अल्लाह ही की हैं,

فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۝ وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ

तो तुम अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो। और ये के जब अल्लाह का बन्दा खड़ा होता है

٦

يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۖ قُلْ إِنَّمَا

उसी को पुकारता है, तो करीब है के वो उन के खिलाफ़ जमा हो जाएं। आप फ़रमा दीजिए के मैं तो सिर्फ़

أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أَشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۚ قُلْ إِنِّي

अपने रब को पुकारता हूँ और मैं उस के साथ किसी को शरीक नहीं ठेहराता। आप फ़रमा दीजिए के मैं

لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۚ قُلْ إِنِّي

तुम्हारे लिए न ज़रर का इख़्तियार रखता हूँ और न हिदायत का। आप फ़रमा दीजिए के मुझे

لَنْ يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ ۚ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ

अल्लाह से हरगिज़ कोई नहीं बचा सकेगा। और उस को छोड़ कर मैं कोई पनाह लेने की जगह हरगिज़ नहीं

مُلْتَحَدًا ۚ إِلَّا بَلَاغًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَةً ۖ وَمَنْ

पाऊँगा। मगर अल्लाह की तरफ़ से पैग़ाम पहुँचाना और उस के पैग़ामात को ले कर आना (ये अज़ाब से जाए पनाह है)। और

يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا

जो अल्लाह और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करेगा, तो यकीनन उस के लिए जहन्नम की आग है जिस में वो

فِيهَا أَبَدًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ

हमेशा रहेंगे। यहाँ तक के जब वो देखेंगे उस (अज़ाब) को जिस से उन्हें डराया जा रहा है,

مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ۚ قُلْ

तो उस वक़्त जान लेंगे के किस के मददगार कमज़ोर और तादाद में कम हैं। आप फ़रमा दीजिए के मैं

إِنْ أَدْرِي أَقْرَبُ مَا تُوْعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ

नहीं जानता के क्या करीब है वो जिस से तुम्हें डराया जा रहा है या उस के लिए मेरा रब कोई

رَبِّي أَمَدًا ۚ عِلْمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ

मुद्दत मुक़रर करेगा। वो ग़ैब का जानने वाला है, फिर वो अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तलेअ नहीं

أَحَدًا ۚ إِلَّا مَن رَّزَقْنِي مِنْ رَّسُولٍ فَإِنَّهُ

करता। मगर जिस रसूल को वो पसन्द कर ले, तो वो

يَسْلُكُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ۚ

उस के आगे और उस के पीछे चौकीदार को चलाता है।

لَيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوا رِسَالَاتِ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ

ताके जान ले के उन्होंने ने अपने रब के पैग़ामात पहुँचा दिए और अल्लाह उन चीज़ों का इहाता

بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْطَى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۝

किए हुए है जो उन के आगे हैं और हर चीज़ की तादाद उस ने गिन रखी है।

رُكُوعُهَا ۲

(۷۳) سُورَةُ الْمُرْتَلِ كَبِيرًا (۲)

آيَاتُهَا ۲۰

और २ रूकूअ हैं

सूरह मुज्जम्मिल मक्का में नाज़िल हुई

उस में २० आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يَا أَيُّهَا الْمُرْمِلُ ۝ قُمْ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ تَصِفْهُ

ऐ चादर ओढ़ने वाले! आप रात में क़याम कीजिए मगर किसी रात। (क़याम करें)

أَوْ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا ۝ أَوْ نَزِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلْ

आधी रात या उस में से थोड़ी कम कर लीजिए। या उस पर थोड़ी ज़्यादा कर लीजिए और कुरआन

الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ۝ إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ۝

पाक को ठेहेर ठेहेर कर पढ़िए। अनक़रीब हम आप पर भारी कौल डालेंगे।

إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيلًا ۝

यकीनन रात की इबादत वो (दिल व ज़बान में) ज़्यादा मुवाफ़क़त वाली है और ज़्यादा सीधी बात केहलाने वाली है।

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ۝ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ

यकीनन आप के लिए दिन में लम्बा मशग़ला है। और आप अपने रब के नाम को याद कीजिए और सब से कट कर उसी

وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۝ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ

की तरफ मुक़तेअ हो जाइए। वो मशरिफ़ और मगरिब का रब है,

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۝ وَأَصْبِرْ عَلَىٰ

उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो उसी को कारसाज़ बनाइए। और आप सब्र कीजिए उन बातों पर जो

مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَبِيلًا ۝ وَذَرْنِي

वो केहते हैं और उन को अच्छी तरह छोड़ दीजिए। और आप मुझे और

وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعَةِ وَمَهْلُهُمْ قَلِيلًا ۝ إِنَّ لَدَيْنَا

खुशहाल झुठलाने वालों को छोड़ दीजिए और उन को थोड़ी मुहलत दीजिए। यकीनन हमारे पास

أَنْكَالًا وَجَحِيمًا ۝ وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ ۝ وَعَذَابًا

बेड़ियाँ हैं और दोज़ख है। और खाना है हलक़ में अटकने वाला और दर्दनाक

الْيَوْمَ تَرُجُّفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتْ

अज़ाब है। जिस दिन ज़मीन और पहाड़ लरज़ उठेंगे

الْجِبَالُ كَثِيرًا مَّهِيلًا ﴿١٣﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ

और पहाड़ फिसलती हुई रेत का तौदा बन जाएंगे। यकीनन हम ने तुम्हारी तरफ पैगम्बर

رَسُولَاهُ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ

भेजा जो तुम पर गवाह है जैसा के हम ने फिरऔन की तरफ रसूल

رَسُولًا ۝ فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخَذًا

भेजा। फिर फिरऔन ने उस रसूल की मुखालफ़त की, फिर हम ने मज़बूत गिरिफ़्त में उसे

وَبَيِّنَا ۖ فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا

पकड़ लिया। अगर तुम ने कुछ किया, तो फिर तुम कैसे बच सकोगे उस दिन

يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ﴿١٤﴾ السَّهَاءُ مُنْفَطِرٌ بِهِ ط

जो बच्चों को भी बड़ा कर देगा? आसमान उस दिन फट जाएगा।

كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ﴿١٨﴾ إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ

अल्लाह का वादा पूरा हो कर रहेगा। बेशक ये नसीहत है। फिर जो

شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿١٩﴾ إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ

चाहे वो अपने रब की तरफ रास्ता बना ले। यकीनन आप का रब खूब जानता है के आप

تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلَاثِي اللَّيْلِ وَ نِصْفَهُ وَ ثُلَاثُهُ

क्याम करते हैं रात में दो तिहाई के करीब और आधी रात और सलस रात

وَأَطِيعُوا مَنْ دُونَهُمْ مِنَ الَّذِينَ مَعَكُمْ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ الْآيِلَ

और उन लोगों में से एक जमाअत भी जो आप के साथ हैं। और अल्लाह दिन और रात की मिकदार मतअय्यन

وَالنَّهَارُ عَلِمَ أَنْ لَنْ تُحْصَوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ

करता है। उस ने जान लिया के तम हरगिज उस को निबाह नहीं सकोगे तो अल्लाह ने तुम्हारी तौबा कबूल की

فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ أَنْ سَيَكُونُ

तो तुम पढो करआन में से जो आसान हो। उस ने जान लिया के अनकरीब

مِنْكُمْ مَّرْضًى ۚ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ

तुम में से कुछ बीमार होंगे और दूसरे जमीन में सफर करेंगे

يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ ۖ وَآخَرُونَ يُقَاتِلُونَ अल्लाह का फज़ल तलब करने के लिए। और दूसरे क़िताल करेंगे
فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَأَقْرَأُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۖ وَأَقِيمُوا अल्लाह के रास्ते में। तो तुम कुरआन में से पढ़ो जो आसान हो और तुम नमाज़
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاقْرَأُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا काइम करो और ज़कात दो और अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दो।
وَمَا تَقْدِمُوا لِأَنْفُسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ और जो भलाई तुम अपनी जानों के लिए आगे भेजोगे, तो उस को अल्लाह के पास
اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۖ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۖ पाओगे, वो बेहतर है और अज़्र के एतेबार से बड़ा है। और तुम अल्लाह से मग़फ़िरत तलब करो,
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ यकीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।
وَأَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۖ (٤٢) سُورَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ (٢) رُؤُوسُهَا ٢ और २ स्कूअ हैं सूरह मुद्दसिर मक्का में नाज़िल हुई उस में ५६ आयतें हैं بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۖ قُمْ فَأَنْذِرْ ۖ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۖ ऐ चादर में लिपटने वाले! आप खड़े हो जाइए, फिर डराइए। और अपने रब की बड़ाई बयान कीजिए।
وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۖ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۖ وَلَا تَبْنُ और अपने कपड़े पाक रखिए। और गन्दगी से अलग रहिए। और आप एहसान इस लिए न कीजिए के आप
تَسْتَكْبِرُ ۖ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۖ فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ۖ ज़्यादा का मुतालबा करें। और अपने रब की वजह से सब्र कीजिए। फिर जब सूर फूँका जाएगा।
فَذَلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ۖ عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ तो ये दिन बड़ा सख़्त होगा। काफ़िरों पर कुछ आसान
يَسِيرٌ ۖ ذُرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ۖ وَجَعَلْتُ नहीं होगा। मुझे और उस को जिसे मैं ने पैदा किया, तन्हा छोड़ दीजिए। और मैं ने

لَهُ مَالًا حَمْدُودًا ۝ وَبَنِينَ شُهُودًا ۝ وَ مَهْدَتْ لَهُ

उस को अता किया बहोत सारा माल। और हाज़िर रेहने वाले बेटे बनाए। और मैं ने उस को हर चीज़ में

تَمْهِيدًا ۝ ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ۝ كَلَّا إِنَّهُ

वुस्अत दी। फिर वो लालच रखता है के मैं मज़ीद दूँ। हरगिज़ नहीं! यकीनन वो

كَانَ لِأَيَّتِنَا عَنِيْدًا ۝ سَاهِقُهُ صَعُوْدًا ۝ إِنَّهُ

हमारी आयतों के साथ दुश्मनी रखने वाला था। अनक़रीब मैं उसे कठिन चढ़ाई पर चढ़ने पर मजबूर करूँगा। उस ने

فَكَرَّ وَقَدَّرَ ۝ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ

सोचा और एक अन्दाज़ा लगाया। तो वो मारा जाए के कैसा उस ने अन्दाज़ा लगाया। फिर वो मारा जाए के कैसा उस ने

قَدَّرَ ۝ ثُمَّ نَظَرَ ۝ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۝ ثُمَّ أَدْبَرَ

अन्दाज़ा लगाया। फिर उस ने देखा। फिर उस ने मुंह बनाया और फिर उस ने मुंह बिगाड़ा। फिर उस ने पीठ

وَ اسْتَكْبَرَ ۝ فَقَالَ إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْتَرُ ۝

फेरी और फिर उस ने तकबुर किया। फिर उस ने कहा के ये तो नहीं है मगर जादू जो मन्कूल चला आ रहा है।

إِنْ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝ سَاصِلِيهِ سَقَرٌ ۝

ये तो एक इन्सान ही का कलाम है। अनक़रीब मैं उसे दोज़ख में दाखिल करूँगा।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرٌ ۝ لَا تُبْقَى وَلَا تُدْرِكُ ۝ لَوَّاحَةٌ

और आप को मालूम भी है के सकर क्या है? वो आग न बाकी रेहने देगी और न कोई चीज़ छोड़ेगी। वो तो शक्ले इन्सानी

لِلْبَشَرِ ۝ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۝ وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ

को बिगाड़ कर रख देगी। उस दोज़ख पर उन्नीस फ़रिशते हैं। और हम ने दोज़ख वालों को नहीं

النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۝ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ

बनाया मगर फ़रिशते। और हम ने उन की तादाद को काफ़िरों

إِلَّا فِتْنَةً ۝ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۝ لِيَسْتَيَقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا

के लिए सिर्फ़ फ़ितना बनाया ताके वो लोग यकीन करें जिन को किताब

الْكِتَابِ وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابَ

दी गई और ईमान वाले ईमान में और बढ़ें और शक न करें

الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ ۝ وَلَيَقُولَ الَّذِينَ

वो जिन को किताब दी गई और शक न करें ईमान वाले और ताके वो लोग कहें

فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ

जिन के दिलों में बीमारी है और काफिर कहें के अल्लाह ने उस के ज़रिए मिसाल बयान कर के किस चीज़ का इरादा किया है?

بِهَذَا مَثَلًا ۖ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ

इसी तरह अल्लाह गुमराह करते हैं जिसे चाहते हैं

وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۖ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ

और हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं। और तेरे रब के लश्कर सिर्फ

إِلَّا هُوَ ۚ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْبَشَرِ ۚ كَلَّا وَالْقَمَرِ ۚ

वही जानता है। और ये महज़ एक नसीहत है इन्सानों के लिए। हरगिज़ नहीं! चाँद की क़सम।

وَاللَّيْلِ إِذَا أَدْبَرَ ۚ وَالصُّبْحِ إِذَا أَصْفَرَ ۚ إِنَّهَا لَإِحْدَىٰ

और रात की क़सम, जब वो चली जाए। सुबह की क़सम, जब वो रोशन हो जाए। यकीनन ये बड़ी निशानियों में से

الْكُبْرَىٰ ۚ نَذِيرًا لِلْبَشَرِ ۚ لِمَن شَاءَ مِنْكُمْ

एक है। और ये इन्सानों को डराने वाली है। उस को जो तुम में से ये चाहे

أَن يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۚ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ۚ

के आगे बढ़े या पीछे हटे। हर शख्स रोका जाएगा उन आमाल की वजह से जो उस ने किए।

إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۚ فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءَلُونَ ۚ

सिवाए यमीन वालों के। जो जन्नतों में होंगे, एक दूसरे को पूछ रहे होंगे।

عَنِ الْمُجْرِمِينَ ۚ مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرٍ ۚ قَالُوا

मुजरिमों के मुतअल्लिक। (मुजरिमों से पूछेंगे) के तुम्हें दोज़ख में किस चीज़ ने दाखिल किया? तो वो कहेंगे के

لَمْ نَكُ مِنَ الْمَصْلِيِّينَ ۚ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمِ الْمَسْكِينِ ۚ

हम नमाज़ पढ़ने वालों में से नहीं थे। और हम मस्कीन को खाना नहीं देते थे।

وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ ۚ وَكُنَّا نُكَذِّبُ

और हम बातिल कलाम में लगने वालों के साथ लगे रहते थे। और हम हिसाब

بِیَوْمِ الدِّينِ ۚ حَتَّىٰ أَتَيْنَا الْيَقِينَ ۚ

के दिन को झुठलाते थे। यहाँ तक के हमारे पास यकीन (यानी मौत) आ गई।

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ ۚ فَمَا لَهُمْ عَنِ

फिर तो उन को सिफारिश करने वालों की सिफारिश नफा नहीं देगी। फिर उन को क्या हुवा के नसीहत

۱۳/۵

معانقه ۱۲ عند التخرین ۳

التَّذَكُّرَةِ مُعْرِضِينَ ۝ كَانَتْهُمْ حُمْرٌ مُسْتَنْفِرَةٌ ۝	तुम्हारे से अलग करने के लिए लाल गधे हैं।
فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۝ بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ	उससे भागे हों। बल्कि उन में से हर शख्स ये
مَنْهُمْ أَنْ يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُنْشَرَةً ۝ كَلَّا ۚ بَلْ	चाहता है उसे खुले हुए सहीफे दिए जाएं। हरगिज़ नहीं! बल्कि
لَا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ۝ كَلَّا إِنَّهُ تَذَكُّرٌ ۝ فَمَنْ	वो आखिरत से डरते नहीं हैं। हरगिज़ नहीं! यकीनन कुरआन तो नसीहत है। फिर जो
شَاءَ ذَكَرَهُ ۝ وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ	चाहे उस से नसीहत हासिल करे। और वो नसीहत हासिल नहीं कर सकते मगर ये के अल्लाह चाहे।
هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝	वो तक्वा का अहल है और बख्शाने का अहल है।
وَأَيُّهَا ٢٠ (٤٥) سُورَةُ الْقِيَمَةِ مَكِّيَّةٌ (٣١) رُكُوعُهَا ٢	उस में ४० आयतें हैं और २ रूकूअ हैं
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝	पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
لَا أَقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَمَةِ ۝ وَلَا أَقْسِمُ بِالنَّفْسِ	क़सम खाता हूँ क़यामत के दिन की। और क़सम खाता हूँ मलामत करने वाले
اللَّوَامَةِ ۝ أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ نَبْجَعَ عِظَامَهُ ۝	नफ्स की। क्या इन्सान ने ये समझ रखा है के हम उस की हड्डियाँ हरगिज़ जमा नहीं करेंगे?
بَلَىٰ قَدَرِينَ عَلَىٰ أَنْ تُسَوَّىٰ بَنَانُهُ ۝ بَلْ يُرِيدُ	क्यूं नहीं! हम इस पर कादिर हैं के उस के पोरे भी दुरुस्त कर दें। बल्कि इन्सान
الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۝ يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمِ الْقِيَمَةِ ۝	ये चाहता है के आगे भी वो बदकारी करता रहे। वो पूछता है के क़यामत का दिन कब है?
فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝ وَجُمَعَ الشَّمْسُ	फिर जब निगाहें फटी रेह जाएं। और चाँद बेनूर हो जाए। और चाँद और सूरज इकठे

وَالْقَمَرُ ٩ يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ١٠	भागूँ? के किधर के कहाँ? उस दिन इन्सान जाएँ। किए
كَلَّا لَا وَزَرَ ١١ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ١٢	हरगिज़ नहीं! कोई जाए पनाह नहीं। तेरे रब की तरफ़ उस दिन ठेहरना है।
يُنَبِّئُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ١٣	इन्सान को खबर दी जाएगी उस दिन उन आमाँल की जो उस ने आगे भेजे और पीछे छोड़े।
بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ١٤ وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ ١٥	बल्के इन्सान अपने खिलाफ़ खुद हुज्जत है। अगर्चे वो अपने बहाने पेश करे।
لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ١٦ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ	आप अपनी ज़बान कुरआन के साथ न हिलाएँ ताके उस में आप जल्दी करें। हमारे ज़िम्मे उस कुरआन का जमा करना
وَقُرْآنَهُ ١٧ فَإِذَا قُرَأْنُهُ فَاتَّعِ قُرْآنَهُ ١٨ ثُمَّ	और उस का पढ़वाना भी है। फिर जब हम उस को पढ़ लें, फिर बाद में आप पढ़िए। फिर
إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ١٩ كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ٢٠ وَتَذَرُونَ	यकीनन हमारे ज़िम्मे उस को बयान करना भी है। हरगिज़ नहीं! बल्के तुम दुनिया से महबूत रखते हो। और आखिरत
الْآخِرَةَ ٢١ وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ٢٢ إِلَىٰ رَبِّهَا	को छोड़ देते हो। कुछ चेहरे उस दिन तर व ताज़ा होंगे। अपने रब की तरफ़ देख रहे
نَاطِرَةٌ ٢٣ وَ وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ٢٤ تَظُنُّ	होंगे। और कुछ चेहरे उस दिन उदास होंगे। गुमान करते होंगे के उन
أَنْ يُفْعَلَٰ بِهَا فَاقْرَةٌ ٢٥ كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ٢٦	के साथ कमर तोड़ने वाले का मुआमला किया जाएगा। हरगिज़ नहीं! जब रूह हलक तक पहुँच जाए।
وَقِيلَ مَنْ رَاقٍ ٢٧ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ٢٨ وَالتَّتَفَتِ	और पूछा जाए के है कोई रख्या करने वाला। और वो गुमान करता है के ये तो जुदाई का वक्त है। और पिंडली
السَّاقُ بِالسَّاقِ ٢٩ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ٣٠	पिंडली के साथ लिपट जाए। तेरे रब ही की जानिब उस दिन चलना है।
فَلَا صَدَقَ وَلَا صَلَّىٰ ٣١ وَلَكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ٣٢	फिर उस ने न तस्दीक की और न नमाज़ पढ़ी। लेकिन उस ने झुठलाया और मुंह मोड़ा।

ثُمَّ ذَهَبَ إِلَى أَهْلِهِ يَمْطِي ۖ أُولَىٰ لَكَ فَأُولَىٰ ۖ ثُمَّ أُولَىٰ

फिर वो गया अपने घर वालों की तरफ अकड़ता हुआ। तेरे लिए हलाकत हो, फिर हलाकत हो। फिर तेरे

لَكَ فَأُولَىٰ ۖ أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُدًى ۖ

लिए हलाकत हो, फिर हलाकत हो। क्या इन्सान ने ये समझ रखा है के उसे बेकार छोड़ दिया जाएगा?

أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِنْ مَنِيٍّ يُنْفَىٰ ۖ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً

क्या वो मनी का एक नुत्फा नहीं था जो टपकाया जाता है? फिर जमा हुआ खून था, फिर अल्लाह ने

فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ۖ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ

बनाया, फिर दुरुस्त किया, फिर उस से जोड़ा बनाया एक मर्द

وَالْأُنثَىٰ ۖ أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ يُنْجِيَ الْهَوْتَىٰ ۖ

और एक औरत को। क्या वो अल्लाह इस पर कादिर नहीं है के मुर्दों को ज़िन्दा करे?

أَيَّاهَا ٣١ (٤٦) سُورَةُ الدَّهْرِ مَكِّيَّةٌ (٩٨) رُكُوعَاهَا ٢

और २ रूकूअ हैं सूरह दहर मदीना में नाज़िल हुई उस में ३१ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ

बेशक इन्सान पर ज़माने में एक वक़्त ऐसा भी आया है के वो काबिले ज़िक्र

شَيْئًا مَّذْكُورًا ۖ إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ

चीज़ नहीं था। यकीनन हम ने इन्सान को मखलूत नुत्फे से पैदा

أَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۖ إِنَّا هَدَيْنَاهُ

किया, के हम उस को आजमाएं, फिर हम ने उसे सुनने वाला, देखने वाला बनाया। बेशक हम ने उस को रास्ता

السَّبِيلَ ۖ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ۖ إِنَّا أَعْتَدْنَا

बतलाया, या शुक्र करने वाला हुआ या नाशुकरा। यकीनन हम ने काफिरों

لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلًا وَأَغْلَلَ وَسْعِيرًا ۖ إِنَّ الْأَبْرَارَ

के लिए ज़न्जीरों और तौक और आग तय्यार कर रखी हैं। यकीनन नेक लोग

يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۖ عَيْنًا

पिएंगे ऐसे जाम से जिस में काफूर की आमेज़िश होगी। एक चशमे से

يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۝ يُوفُونَ

जिस से अल्लाह के मखसूस बन्दे पिएंगे (और वो जहाँ चाहेंगे) उसे बहा ले जाएंगे। जो नज़र

بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۝

पूरी करते हैं और डरते हैं उस दिन से जिस की मुसीबत फैली हुई होगी।

وَ يُطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا

और जो खाना देते हैं उस की महबूत के बावजूद मस्कीन और यतीम

وَ أَسِيرًا ۝ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ

और कैदी को। के हम तुम्हें सिर्फ अल्लाह की रज़ा की खातिर खाना देते हैं, हम तुम से न बदला

جَزَاءٍ وَلَا شُكُورًا ۝ إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا

चाहते हैं और न शुक्रिया चाहते हैं। हम तो अपने रब से डरते हैं उस दिन से

عَبُوسًا قَمَطِرِيرًا ۝ فَوْقَهُمْ اللَّهُ شَرَّ ذَلِكَ الْيَوْمِ

जो उदासी वाला और सख्त दिन होगा। तो अल्लाह उन को उस दिन की मुसीबत से बचा लेंगे

وَلَقَهُمْ نَصْرَةٌ وَ سُرُورًا ۝ وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا

और उन को अल्लाह ताज़गी और खुशी अता करेंगे। और उन के सब्र के बदले उन को

جَنَّةً وَ حَرِيرًا ۝ مُتَكِينِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَْائِكِ ۝

जन्नत और रेशम इनायत फरमाएंगे। उस में वो टेक लगाए हुए होंगे तख्तों पर।

لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمَهْرِيرًا ۝ وَ دَانِيَةً

उस में न वो धूप देखेंगे और न सरदी। और फलदार शाखों के

عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَ ذُلِّلَتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ۝

साए उन के करीब होंगे और फलों के गुच्छे झुके हुए ताबेअ होंगे।

وَ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِانِيَةٍ مِّن فِضَّةٍ وَ أَكْوَابٍ

और उन पर चाँदी के बरतन घुमाए जाएंगे और प्याले

كَانَتْ قَوَارِيرًا ۝ قَوَارِيرًا مِّن فِضَّةٍ قَدَرُوهَا

जो शीशे के होंगे। चाँदी के शीशे से होंगे, जिन को भरने वाले ने एक मुअय्यन मिक्दार

تَقْدِيرًا ۝ وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا

से भरा होगा। और उन को उस में ऐसे जाम पिलाए जाएंगे जिन में सूँठ की आमोज़िश

زُنَجِبِيلًا ۞ عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّى سَلْسَبِيلًا ۞ होगी। जन्नत के एक चशमे से जिस का नाम सलसबील है।
وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۖ إِذَا رَأَيْتَهُمْ और उन पर लड़के चक्कर लगाएंगे जो लड़के ही रहेंगे। जब आप उन को देखोगे तो आप
حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا ۞ وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ उन्हें बिखरे हुए मोती गुमान करोगे। और जब आप उस जगह को देखोगे तो
نَعِيمًا ۖ وَ مُلْكًا كَبِيرًا ۞ عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٍ नेअमत वाली जगह और एक बड़ी सल्लनत देखोगे। उन पर बारीक और मोटे सब्ज़
خُضْرٍ ۖ وَاسْتَبْرَقٌ ۖ وَحُلُوعًا ۖ وَأَسَاوِرٌ مِنْ فِضَّةٍ ۖ وَسَقَمُ रेशम का लिबास होगा। और उन्हें चाँदी के कंगन पहनाए जाएंगे। और उन को
رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ۞ إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً उन का रब पाकीज़ा शराब पिलाएगा। ये तुम्हारा सवाब है
وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَشْكُورًا ۞ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ और तुम्हारी कोशिश की क़दर की गई है। हम ने आप पर ये कुरआन थोड़ा थोड़ा
الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ۞ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ नाज़िल किया है। इस लिए आप अपने रब के हुक्म की वजह से सब्र कीजिए और उन में से
مِنْهُمْ إِنَّمَا أَوْ كَفُورًا ۞ وَادْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً किसी गुनहगार या बहोत नाशुकरे का केहना न मानिए। और अपने रब के नाम का ज़िक्र कीजिए सुबह
وَ أَصِيلًا ۞ وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ और शाम। और रात के किसी वक्त में उस के सामने सज्दा कीजिए और लम्बी रात
لَيْلًا طَوِيلًا ۞ إِنَّ هَؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ में उस की तस्बीह कीजिए। यकीनन ये लोग दुनिया चाहते हैं
وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۞ نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ और अपने पीछे एक भारी दिन को छोड़ देते हैं। हमीं ने उन को पैदा किया
وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ ۖ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمْثَلَهُمْ और उन के बन्धन को मज़बूत किया है। और हम जब चाहें उन के जैसे बदले में

تَبْدِيلًا ۱۸	إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَاءَ	ले	आएं।	यकीनन	ये	नसीहत	है।	फिर	जो	चाहे				
اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۱۹	وَمَا تَشَاءُونَ	अपने	रब	की	तरफ़	रास्ता	बना	ले।	और	तुम	नहीं	चाहोगे		
إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۲۰		मगर	ये	के	अल्लाह	ही	चाहे।	यकीनन	अल्लाह	इल्म	वाला,	हिकमत	वाला	है।
يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ وَالظَّالِمِينَ		वो	अपनी	रहमत	में	जिसे	चाहे	दाखिल	करता	है।	और	ज़ालिमों		
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۲۱		के	लिए	उस	ने	दर्दनाक	अज़ाब	तय्यार	कर	रखा	है।			
۵۰ آيَاتُهَا	(۷۷) سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ مَكِّيَّةٌ (۳۳)	رُكُوعَاتُهَا ۲												
और २ स्कूअ हैं														
सूरह मुरसलात मक्का में नाज़िल हुई														
उस में ५० आयतें हैं														
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ														
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।														
وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ۱	فَالْعَصْفِ عَصْفًا ۲	उन हवाओं की क़सम जो नफे के लिए भेजी जाती हैं। फिर उन हवाओं की क़सम जो तेज़ चलने वाली हैं।												
وَالنَّشْرِ نَشْرًا ۳	فَالْفِرْقَتِ فِرْقًا ۴	उन हवाओं की क़सम जो बादलों को फैलाने वाली हैं। फिर उन हवाओं की क़सम जो बादलों को अलग अलग करने वाली												
فَالْمُلْقِيَةِ ذِكْرًا ۵	عُذْرًا أَوْ نَذْرًا ۶	हैं। फिर उन हवाओं की क़सम जो अल्लाह की याद दिल में डालने वाली हैं। उज़्र के लिए या डराने के लिए।												
إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعٌ ۷	فَإِذَا التَّجُومُ طُمِسَتْ ۸	तुम्हें जिस से डराया जा रहा है, वो अलबत्ता ज़ख़र वाक़ेअ होने वाला है। फिर जब सितारे बेनूर हो जाएंगे।												
وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ۹	وَإِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۱०	और जब आसमान फट जाएगा। और जब पहाड़ गुबार बना कर उड़ा दिए जाएंगे।												
وَإِذَا الرُّسُلُ أْقِيتَتْ ۱१	لَا يَوْمَ أُجِّلَتْ ۱२	और जब पैग़म्बर इकट्ठे किए जाएंगे। किस दिन के लिए उसे मुख़्बर किया गया?												

لِیَوْمِ الْفَصْلِ ۝ وَمَا آذْرُكَ مَا یَوْمُ الْفَصْلِ ۝

फैसले के दिन के लिए। और आप को मालूम है के फैसले का दिन क्या है?

وَيْلٌ یَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ۝ أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِیْنَ ۝

उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है। क्या हम ने हलाक नहीं किया अगले लोगों को?

ثُمَّ نَتَّبِعُهُمُ الْآخِرِیْنَ ۝ كَذَلِكَ نَفْعَلُ

फिर हम उन के पीछे चलता करेंगे पीछे आने वालों को। इसी तरह हम मुजरिमों

بِالْمُجْرِمِیْنَ ۝ وَیْلٌ یَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ۝

के साथ करते हैं। उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।

أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِّنْ مَّاءٍ مَّهِیْنٍ ۝ فَجَعَلْنَاهُ فِی قَرَارٍ

क्या हम ने तुम्हें पैदा नहीं किया एक ज़लील पानी से? फिर हम ने उस को महफूज़ ठेहरने की जगह में

مَّكِیْنٍ ۝ إِلَى قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝ فَقَدَرْنَا ۖ فَنَعْمَ

रखा। एक वक़्ते मुकर्ररा तक। फिर हम ने मिक्दार मुतअय्यन की। फिर हम कितनी अच्छी

الْقَدِرُونَ ۝ وَیْلٌ یَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ۝

मिक्दार मुतअय्यन करने वाले हैं। उस दिन हलाकत है झुठलाने वालों के लिए।

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۝ أَحْيَاءَ وَأَمْوَاتًا ۝

क्या हम ने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया? ज़िन्दों और मुर्दों को।

وَجَعَلْنَا فِیْهَا رَوَاسِیَ شَهِتٍ ۖ وَ أَسْقَيْنَاكُمْ مَّاءً

और हम ने उस में ऊँचे ऊँचे पहाड़ गाड़ दिए और हम ने तुम्हें मीठा पानी पीने

فَرَاتًا ۝ وَیْلٌ یَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ۝ اِنطَلِقُوا

को दिया। उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है। (कहा जाएगा)

إِلَىٰ مَا كُنْتُمْ بِهِ تَكْذِبُونَ ۝ اِنطَلِقُوا

के तुम चलो उस अज़ाब की तरफ़ जिस को तुम झुठलाते थे। तुम चलो

إِلَىٰ ظِلٍّ ذِی ثَلَاثِ شُعَبٍ ۝ لَا ظَلِیْلٌ وَلَا یُغْنِی

तीन शाखों वाले साए की तरफ़। जो न साया देने वाला है और न आग की तपिश

مِّنَ اللَّهَبِ ۝ إِنَّهَا تَرْمِی بِشَرِّی كَالْقَصْرِ ۝

के कुछ काम आ सकता है। यकीनन वो तो अंगारे फैंकती है महल जैसे।

كَانَ جِئْتُ صُفْرًا ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝	
गोया के वो पीले पीले ऊँट हैं। उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।	
هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ ۝ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۝	
ये वो दिन है के वो बोल नहीं सकेंगे। और उन को इजाज़त भी नहीं दी जाएगी के वो उज़्र पेश करें।	
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۝	
उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है। ये फैसले का दिन है।	
جَمَعْنَكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ۝ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ	
हम ने तुम्हें और अगले लोगों को जमा कर दिया। फिर अगर तुम्हारे पास कोई दाव है	
فَكِيدُوا ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝	۱
तो मुझ पर चला लो। उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।	२
إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلِّ وَعُيُونٍ ۝ وَفُؤَاكِهِ	
यकीनन मुत्तकी लोग सायों और चशमों, और मेवों में होंगे,	
مِمَّا يَشْتَهُونَ ۝ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ	
जिस किस्म के वो चाहेंगे। मुबारक हो, तुम खाओ और पियो उन आमाल के बदले में जो तुम	
تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝	
करते थे। इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देंगे।	
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ كُلُوا وَتَشَعُّوا	
उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है। तुम खाओ और थोड़ा मज़ा	
قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُّجْرِمُونَ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ	
ले लो, यकीनन तुम मुजरिम हो। उस दिन झुठलाने वालों के लिए	
لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ارْكَعُوا	
हलाकत है। और जब उन से कहा जाता है के तुम रुकूअ करो	
لَا يَرْكَعُونَ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝	
तो ये रुकूअ नहीं करते। उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।	
فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۝	३
फिर इस के बाद कौन सी बात पर वो ईमान लाएंगे।	४

رُؤُوسُهَا ٢

(٤٨) سُورَةُ النَّبَا مَكِّيَّةٌ (٨٠)

آيَاتُهَا ٢٠

और २ रूकूअ हैं सूरह नबा मक्का में नाज़िल हुई उस में ४० आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ۚ عَنِ النَّبَا الْعَظِيمِ ۚ الَّذِي هُمْ فِيهِ

किस चीज़ के मुतअल्लिक़ ये सवाल कर रहे हैं? एक बड़ी ख़बर के मुतअल्लिक़? जिस में वो इख़तिलाफ़

مُخْتَلِفُونَ ۚ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۚ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۚ أَلَمْ نَجْعَلِ

कर रहे हैं? हरगिज़ नहीं! अनक़रीब उन्हें पता चल जाएगा। फिर हरगिज़ नहीं! अनक़रीब उन्हें पता चल जाएगा। क्या

الْأَرْضَ مِهْدًا ۚ وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ۚ وَخَلَقْنَاهُ أَرْوَاجًا ۚ

हम ने ज़मीन को फ़र्श और पहाड़ों को मेखें नहीं बनाया? और हम ने तुम्हें जोड़े जोड़े बनाया।

وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُباتًا ۚ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا ۚ وَجَعَلْنَا

और हम ने तुम्हारी नीन्द को राहत का ज़रिया बनाया। और हम ने रात को परदा बनाया। और हम ने

النَّهَارَ مَعَاشًا ۚ وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۚ وَجَعَلْنَا

दिन को रोज़ी कमाने का वक़्त बनाया। और हम ने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए। और हम ने

سَرَاجًا وَهَّاجًا ۚ وَأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرِ مَاءً ثَجَّاجًا ۚ

चमकता हुआ चिराग़ बनाया। और हम ने बादलों से ज़ोर से बेहने वाला पानी उतारा।

لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ۚ وَجَدَّتِ الْفَأْفَأُ ۚ إِنَّ يَوْمَ الْفُصْلِ

ताके हम उस के ज़रिए निकालें अनाज और सब्ज़ा। और घने बागा़त। बेशक़ फैसले का दिन

كَانَ مِيقَاتًا ۚ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ۚ

मुक़र्ररा वक़्त है। जिस दिन सूर फूँका जाएगा, फिर तुम फ़ौज दर फ़ौज आओगे।

وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ۚ وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ

और आसमान खोले जाएंगे, फिर वो दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे। और पहाड़ चलाए जाएंगे, फिर वो

سَرَابًا ۚ إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۚ لِلطَّاغِينَ مَابًا ۚ

सराब की तरह हो जाएंगे। यकीनन जहन्नम घात में है। सरकशों का ठिकाना है।

لَيْشِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ۚ لَا يَذُقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ۚ

जिस में वो मुद्दतों पड़े रहेंगे। जिस में वो ठन्डी चीज़, पीने की चीज़ चख भी नहीं पाएंगे।

إِلَّا حَيًّا وَغَسَّاقًا ۖ جَزَاءٌ وَّفَاقًا ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ

सिवाए गर्म पानी और पीप के। जो बराबर की सज़ा के तौर पर होगा। इस लिए के वो हिसाब की उम्मीद नहीं

حَسَابًا ۖ وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَابًا ۖ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ

रखते थे। और हमारी आयतों को झुठलाते थे। और हर चीज़ को हम ने लिख कर (किताब में) महफूज़ कर

كِتَابًا ۖ فَذُوقُوا فَلَنْ نَزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ۖ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ

रखा है। फिर तुम चखो, फिर हम तुम्हारे लिए हरगिज़ ज़्यादा नहीं करेंगे मगर अज़ाब ही को। यकीनन मुत्तकियों के लिए

مَفَازًا ۖ حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ۖ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۖ وَكَأْسًا

कामयाबी है। बागात और अंगूर। और नौजवान हमउम्र औरतें हैं। और लबालब भरे जाम

دِهَاقًا ۖ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لُعَا ۖ وَلَا كِذْبًا ۖ جَزَاءٌ مِّن رَّبِّكَ عَطَاءٌ

हैं। उस में वो न कोई बेहूदा बात और न झूठ सुनेंगे। तेरे रब की तरफ़ से बदले के तौर पर, हृदये के तौर

حَسَابًا ۖ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَنُ لَا يَمْلِكُونَ

पर भी, हिसाब के तौर पर भी। जो आसमानों और ज़मीन और उन चीज़ों का रब है जो उन के दरमियान हैं, रहमान है, वो

مِنْهُ خُطَابًا ۖ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْبَلِكَةُ صَفًّا ۖ لَا يَتَكَلَّمُونَ

उस से बात करने की ताक़त भी नहीं रख सकेंगे। जिस दिन रूह और फ़रिशते सफ़ बाँध कर खड़े होंगे, बोल नहीं सकेंगे

إِلَّا مَن أِذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَقَالَ صَوَابًا ۖ ذَلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۖ فَمَن

मगर वही जिन को रहमान तआला इजाज़त दे और जो ठीक बात कहे। ये दिन हक़ है। फिर जो

شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ مَآبًا ۖ إِنَّا أَنْذَرْنَكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا ۖ يَوْمَ يَنْظُرُ

चाहे अपने रब के पास ठिकाना बना ले। यकीनन हम ने तुम्हें क़रीबी अज़ाब से डराया। जिस दिन इन्सान

الْهَرُّ مَا قَدَّمَتْ يَدَهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ لَيْتَنِي كُنْتُ تُرَابًا ۖ

देखेगा वो आमाल जो उस के हाथों ने आगे भेजे और काफ़िर कहेगा के ऐ काश के मैं मिट्टी होता।

إِنِّي أَنذَرْتُمْ عَذَابًا قَرِيبًا ۖ يَوْمَ يَنْظُرُ

और २ रूकूअ हैं

सूरह नाज़िआत मक्का में नाज़िल हुई

उस में ४६ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالنَّعْتِ غَرْقًا ۖ وَالتَّشْطِ نَشْطًا ۖ وَالسَّيْحَتِ

उन फ़रिशतों की कसम जो सख़ी से जान निकालने वाले हैं। और उन फ़रिशतों की कसम जो सहूलत से जान निकालने वाले हैं। और उन फ़रिशतों

وقف لا اقول

سَبَّحًا ۛ فَالَسَّيْقَتِ سَبَقًا ۛ فَالْمَدْبَرَتِ اَمْرًا ۛ يَوْمَ

की कसम जो तैर कर आने वाले हैं। फिर उन फ़रिशतों की कसम जो दौड़ कर आने वाले हैं। फिर उन फ़रिशतों की कसम जो उमूर की तदबीर करने वाले हैं।

تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۛ تَتَّبِعُهَا الرَّادِفَةُ ۛ قُلُوبٌ

जिस दिन ज़लज़ले वाली ज़लज़ला ले आएगी। जिस के पीछे आएगी पीछे आने वाली। दिल

وقف لا اقول

يَوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۛ ابْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۛ يَقُولُونَ

उस दिन धड़क रहे होंगे। उन की नज़रें झुकी हुई होंगी। वो केहते हैं

ءَاِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ۛ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا تَخْرُةً ۛ

के क्या हम पेहली हालत में लौटाए जाएंगे? क्या जब के हम खोखली हड्डियाँ हो जाएंगे?

وقف لا اقول

قَالُوا تِلْكَ اِذَا كَرَرْتَ خَاسِرَةً ۛ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ۛ

उन्हों ने कहा के तब तो ये लौटना खसारे वाला है। वो क़यामत तो सिर्फ़ एक ही डांट होगी।

وقف لا اقول

فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۛ هَلْ اَتَكَ حَدِيثُ مُوسَى ۛ

के एक दम वो सब मैदान में हाज़िर हो जाएंगे। क्या तुम्हारे पास मूसा (अलैहिस्सलाम) का किस्सा पहुँचा?

اِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۛ اِذْهَبْ

जब के उन के रब ने उन को मुक़द्दस वादिए तुवा में आवाज़ दी। के जाओ फिरऔन के पास,

اِلَى فِرْعَوْنَ اِنَّهُ طَغَى ۛ فَقُلْ هَلْ لَكَ اِلَى اَنْ تَرْكَبَ ۛ

इस लिए के उस ने सरकशी की है। और कहो के क्या तुझे रग़बत है के तू पाक साफ़ बन जाए?

وَاَهْدِيكَ اِلَى رَبِّكَ فَتَخْشَى ۛ فَاَرَاهُ الْكُتُبَى ۛ

और मैं तुझे रास्ता दिखाऊँ तेरे रब की तरफ़ के तुझे डर पैदा हो। तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फिरऔन को बड़ा मोअजिज़ा दिखाया।

فَكَذَّبَ وَعَصَى ۛ ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعَى ۛ فَحَشَرَ فَنَادَى ۛ

फिर उस ने झुठलाया और नाफरमानी की। फिर वो पीठ फेर कर भागा। फिर उस ने लोगों को इकट्ठा किया, फिर पुकारा।

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمْ الْاَعْلَى ۛ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ

और कहा के मैं ही तुम्हारा रब्बे आला हूँ। फिर अल्लाह ने उस को दुन्या और आखिरत के अज़ाब में

وقف لا اقول

وَالْاُولَى ۛ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَخْشَى ۛ

पकड़ लिया। यकीनन उस में अलबत्ता इबरत है उस शख्स के लिए जो डरे।

ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اِمِ السَّمٰٓءِۙ بَنٰهَا ۛ رَفَعَ سَمَكَهَا

क्या तुम्हारा पैदा करना मुश्किल है या आसमान का, जो अल्लाह ने बनाया? जिस की छत को उस ने बुलन्द किया,

فَسَوْفَهَا ۖ وَاعْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ۖ وَالْأَرْضَ بَعْدَ

फिर उस को ठीक बनाया। और उस की रात को तारीक बनाया और उस की धूप को निकाला। और उस के बाद

ذَلِكَ دَحَاهَا ۖ أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ۖ وَالْجِبَالَ

जमीन बिछाई। उस में से उस का पानी और उस की चरागाह (यानी चारे) को निकाला। और पहाड़ों

أَرْسَهَا ۖ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۖ فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ

को गाड़ दिया। तुम्हारे फ़ाइदे के लिए और चौपाओं के लिए। फिर जब सब से बड़ी मुसीबत

الْكُبْرَى ۖ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعَى ۖ وَبُرِّرَّتِ الْحُجُومُ

आ जाएगी। जिस दिन इन्सान अपने किए को याद करेगा। और जहन्नम खोल दी जाएगी

لِمَن يَرَى ۖ فَأَمَّا مَن طَغَى ۖ وَاتَّرَ الْحَيَوَةُ الدُّنْيَا ۖ

उस शख्स के लिए जो देखे। फिर जिस ने सरकशी की, और दुन्यवी ज़िन्दगी को तरजीह दी,

فَإِنَّ الْحُجُومَ هِيَ الْبَاوَى ۖ وَأَمَّا مَن خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى

तो जहन्नम ही उस का ठिकाना है। और जो डरा अपने रब के सामने खड़ा होने से और उस ने

النَّفْسَ عَنِ الْهَوَى ۖ فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْبَاوَى ۖ يَسْأَلُونَكَ

अपने नफ्स को ख्वाहिशात से रोका, तो यकीनन जन्नत ही उस का ठिकाना है। वो आप से

عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۖ فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرِهَا ۖ

क़यामत के मुतअल्लिक़ सवाल करते हैं के कब उसे वाक़ेअ होना है? उस के बताने में आप का क्या तअल्लुक़?

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَاهَا ۖ إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرُ مَنِ يَخْشَاهَا ۖ

आप के रब ही की तरफ़ उस के इल्म का मुन्तहा है। आप तो सिर्फ़ डराने वाले हैं उस शख्स को जो उस से डरे।

كَانَهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ۖ

जिस दिन वो क़यामत को देखेंगे गोया के वो (दुन्या में) सिर्फ़ एक शाम या एक सुबह ठेहरे हैं।

رُؤُوعَهَا ۖ

(८०) سُورَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ (२२)

آيَاتُهَا २२

और १ रूकूअ हैं

सूरह अबस मक्का में नाज़िल हुई

उस में ४२ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

عَبَسَ وَتَوَلَّى ۖ أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَى ۖ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُ

मुंह बिगाड़ा और पैराज़ किया। इस वजह से के आप के पास एक अन्धा आया। आप को क्या मालूम शायद वो

يَزْكِي ۚ أَوْ يَذْكُرْ فَتُفْعَلْ الذِّكْرَى ۚ أَمَّا مَنْ اسْتَعْجَلَ ۙ

संवर जाए। या नसीहत ले, फिर उसे नसीहत फ़ाइदा दे। हाँ जो बेपरवाही बरतता है,

فَأَنْتَ لَهُ تَصَدَّى ۚ وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزْكِي ۚ وَأَمَّا مَنْ جَاءَكَ

तो आप उस के पीछे पड़ते हो? हालांकि आप पर कुछ नहीं इस में के वो पाक नहीं होता। और हाँ जो आप

يَسْعَى ۙ وَهُوَ يَخْشَى ۙ فَأَنْتَ عَنْهُ تَلَهَّى ۚ كَلَّا ۚ إِنَّمَا

के पास आता है दौड़ कर और वो डरता भी है, तो आप उस से तगाफ़ुल बरतते हो? हरगिज़ नहीं! ये तो

تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهُ ۚ فِي صُحُفٍ مُّكْرَمَةٍ ۚ مَرْفُوعَةٍ

नसीहत है। फिर जो चाहे इस से नसीहत पकड़े। ये बाइज़्ज़त सहीफ़ों में है। जो बुलन्द हैं,

مُطَهَّرَةٍ ۚ بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۚ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۚ قَتَلَ الْإِنْسَانَ

साफ़ सुथरे हैं। ऐसे लिखने वाले फ़रिशतों के हाथों में है, जो बाइज़्ज़त फ़रमांबरदार हैं। इन्सान मारा जाए

مَا أَكْفَرَهُ ۚ مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۚ مِنْ نُّطْفَةٍ ۚ

के कितना वो नाशुकरा है। किस चीज़ से अल्लाह ने उस को पैदा किया? नुत्फ़े से उस को पैदा किया। फिर मुअय्यन

خَلَقَهُ فَقَدَرَهُ ۚ ثُمَّ السَّبِيلَ يَسْرَهُ ۚ ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۚ

मिक्दर के साथ उस को बनाया। फिर रास्ता उस के लिए आसान किया। फिर उस को मौत दी, फिर उस को क़ब्र में पहुँचाया।

ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنْشَرَهُ ۚ كَلَّا ۚ لَبَا يَقْضِ مَا أَمَرَهُ ۚ فَلْيَنْظُرِ

फिर जब वो अल्लाह चाहेगा तो उसे क़ब्र से उठाएगा। हरगिज़ नहीं! अब तक उस ने नहीं किया वो जिस का अल्लाह ने उस को हुक्म

الْإِنْسَانُ إِلَى طَعَامِهِ ۚ إِنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ۚ ثُمَّ شَقَقْنَا

दिया। फिर इन्सान को चाहिए के वो नज़र उठाए अपने खाने की तरफ। के हम ने पानी ऊपर से डाला। फिर हम ने

الْأَرْضَ شَقًّا ۚ فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ۚ وَعَيْنًا وَقَضْبًا ۚ

ज़मीन को फाड़ा। फिर हम ने उस में अनाज उगाया। और अंगूर और तरकारी।

وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ۚ وَحَدَائِقَ غُلْبًا ۚ وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ۚ

और जैतून और खजूर। और घने बाग़ात। और मेवा और चारा।

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۚ فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَةُ ۚ

तुम्हारे अपने और तुम्हारे चौपाओं के लिए फ़ाइदे के खातिर। फिर जब शोर वाली क़यामत आ जाएगी।

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۚ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ۚ وَصَاحِبَتِهِ

उस दिन हर शख्स भागेगा अपने भाई से। और अपनी माँ और अपने बाप से। और अपनी बीवी

وَبَنِيهِ ۖ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۖ

और अपने बेटों से। उन में से हर शख्स के लिए उस दिन एक फिक्र होगा जो उस को हर चीज़ से बेपरवाह कर देगा।

وَجُوهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفَرَةٌ ۖ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۖ

कुछ चेहरे उस दिन चमक रहे होंगे। हंसी खुशी।

وَوُجُوهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۖ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۖ

और कुछ चेहरे उस दिन (ऐसे होंगे के) उन पर गुबार होगा। उन पर सियाही (यानी ज़िल्लत) छाई होगी।

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرَةُ الْفَجَرَةُ ۖ

यही बदकार काफ़िर होंगे।

۱
ع ۵

رُوعَهَا ۱

(۸۱) سُورَةُ التَّكْوِينِ مَكِّيَّةٌ (۴)

آيَاتُهَا ۲۹

और १ सूकूअ है

सूरह तकवीर मक्का में नाज़िल हुई

उस में २६ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۖ وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۖ وَإِذَا الْجِبَالُ

जब सूरज लपेट लिया जाए। और जब सितारे बेनूर हो जाएं। और जब पहाड़

سِيرَتْ ۖ وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۖ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۖ

चलाए जाएं। और जब दस महीने की गाभन ऊँटनी खुली छोड़ दी जाए। और जब वहशी जानवर इकट्ठे किए जाएं।

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۖ وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۖ

और जब समन्दर आग बना दिए जाएं। और जब तमाम इन्सानों की एक एक किस्म को जमा किया जाए।

وَإِذَا الْمَوْءِدَةُ سُيِّلَتْ ۖ بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۖ وَإِذَا الصُّفُفُ

और जब ज़िन्दा दरगोर की हुई बच्ची से पूछा जाए, के किस गुनाह में उसे क़त्ल किया गया? और जब नामअे आमाल

نُشِرَتْ ۖ وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۖ وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۖ

खोले जाएं। और जब आसमान की खाल खींच ली जाए। और जब जहन्नम भड़काई जाए।

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُرْلِفَتْ ۖ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ۖ

और जब जन्नत करीब लाई जाए। तो हर शख्स जान लेगा जो कुछ वो ले कर आया है। फिर मैं क़सम

فَلَا أُقْسِمُ بِالْخَشِيرِ ۖ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۖ وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ۖ

खाता हूँ उन सितारों की जो पीछे हटने वाले, सीधे चलने वाले, छुपने वाले हैं। रात की क़सम जब वो तारीक हो जाए।

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۖ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۙ

सुबह की कसम जब वो सांस ले (आ जाए)। यकीनन ये कुरआन ऐसे भेजे हुए मुअज्जज़ फरिशते का कलाम है, जो कूव्वत

قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۖ مُطَاعٌ ثَمَّ أَمِينٌ ۚ

वाला, अर्श वाले के पास रहने वाला, मरतबे वाला है, फरिशतों का मुताअ, वहाँ अमानतदार भी है।

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِجُنُونٍ ۖ وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأَفْقِ الْمُبِينِ ۚ

और तुम्हारे साथी (नबी) मजनून नहीं हैं। बेशक उन्होंने ने उस फरिशते को देखा है साफ आसमान के किनारे में।

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۚ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ

और वो ग़ैब की चीज़ों (के बतलाने) में बखील नहीं है। और कुरआन शैतान मरदूद का कलाम

لَجِيمٍ ۚ فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ۚ إِنَّ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۚ

नहीं है। फिर तुम कहाँ जा रहे हो? ये कुरआन तो तमाम जहान वालों के लिए नसीहत है।

لَيْنَ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ ۚ وَمَا تَشَاءُونَ

उस शख्स के लिए जो तुम में से चाहे के वो सीधे रास्ते पर रहे। और अल्लाह रब्बुल आलमीन

إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۚ

६५

की मशीयत पर तुम्हारा इरादा मौकूफ है।

رُؤُوعَهَا ۙ

(८२) سُورَةُ الْإِنْشِقَارِ مَكِّيَّةٌ (८२)

آيَاتُهَا १९

और ९ रूकूअ है

सूरह इन्फितार मक्का में नाज़िल हुई

उस में १९ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ۖ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۖ وَإِذَا الْبِحَارُ

जब आसमान फट जाए। और जब तारे झड़ जाएं। और जब समन्दर बहा दिए

فُجِّرَتْ ۖ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۖ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ

जाएं। और जब कब्रें उखेड़ दी जाएं। तो हर शख्स जान लेगा जो उस ने आगे भेजा

وَأَخَّرَتْ ۚ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا عَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۚ

और पीछे छोड़ा। ऐ इन्सान! तुझे किस चीज़ ने धोके में डाल रखा है तेरे रब्बे करीम से?

الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ۖ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ

जिस ने तुझे पैदा किया, फिर तुझे दुरुस्त बनाया, फिर तुझे बराबर किया। जौनसी सूरत में उस ने चाहा

رَكَبَكَ ۙ كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالَّذِينَ ۙ وَإِنْ عَلَيْكُمْ

तुझे जोड़ दिया। हरगिज़ नहीं! बल्के तुम हिसाब को झुठलाते हो। और यकीनन तुम पर निगराँ फ़रिशते

لَحْفَظِينَ ۙ كِرَامًا كَاتِبِينَ ۙ يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۙ

मुतअय्यन हैं। किरामन कातिबीन। जानते हैं वो जो तुम करते हो।

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۙ وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۙ

बेशक नेक लोग नेअमतों में होंगे। और बदकार बेशक दोज़ख में होंगे।

يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۙ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۙ

वो उस में दाखिल होंगे हिसाब के दिन। और वो उस से गाइब नहीं होंगे।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۙ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۙ

और तुम क्या समझे के हिसाब का दिन क्या चीज़ है? फिर तुम क्या समझे के हिसाब का दिन क्या चीज़ है?

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا ۙ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ۙ

जिस दिन कोई शख्स किसी शख्स की नफारसानी पर क़ादिर नहीं होगा। और तमाम उमूर उस दिन अल्लाह तआला के पास होंगे।

ۙ

رُكُوعُهَا ۱

سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ مَكِّيَّةٌ (۸۳)

آيَاتُهَا ۳۶

और १ रूकूअ है

सूरह मुतफिफीन मक्का में नाज़िल हुई

उस में ३६ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ۙ الَّذِينَ إِذَا أَتَالُوا عَلَى النَّاسِ

हलाकत है कम देने वालों के लिए। जब वो लोगों से नाप कर लें

يَسْتَوْفُونَ ۙ وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوْ وَزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ۙ

तो पूरा लेते हैं। और जब उन को नाप कर दें या उन को वज़न कर के दें तो कम कर के देते हैं।

أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُمْ مَبْعُوثُونَ ۙ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۙ

क्या उन्हें ये गुमान नहीं के वो क़ब्रों से ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे? एक बड़े दिन में।

يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۙ كَلَّا إِنَّ كِتَابَ

जिस दिन तमाम इन्सान रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे। हरगिज़ नहीं! यकीनन बदकारों का

الْفُجَّارِ لَفِي سَجِينٍ ۙ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَجِينٌ ۙ كِتَابٌ

नामअे आमाल सिज्जीन में है। और तुम क्या समझे के सिज्जीन क्या है? एक लिखी

فَرَقُومٌ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ يَوْمَ

हुई किताब है। हलाकत है उस दिन उन झुठलाने वालों के लिए। जो हिसाब के दिन को झुठलाते

الَّذِينَ ۝ وَمَا يُكَذِّبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝ إِذَا تُتْلَىٰ

हैं। और उस को नहीं झुठलाता मगर हर हद से आगे बढ़ने वाला गुनहगर। जब उस पर हमारी आयतें

عَلَيْهِ ائْتَيْنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ كَلَّا بَلْ سَنُؤْتِي

तिलावत की जावें तो कहे के ये तो पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ हैं। हरगिज़ नहीं! बल्के उन

عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ

के दिलों पर उन के करतूत ने जंग चढ़ा दिया है। हरगिज़ नहीं! यकीनन ये लोग अपने रब से

يَوْمَئِذٍ لَّحَجُوبُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ۝

उस दिन हिजाब में होंगे। फिर वो दोज़ख में ज़रूर दाखिल होंगे।

ثُمَّ يُقَالُ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝ كَلَّا إِنَّ كِتَابَ

फिर कहा जाएगा के यही वो अज़ाब है जिस को तुम झुठलाते थे। हरगिज़ नहीं! बेशक नेक लोगों का

الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ۝ كِتَابُ

नामअे आमाल इल्लीयीन में है। और तुम क्या समझे हो के इल्लीयीन क्या है? एक लिखी हुई

فَرَقُومٌ ۝ يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ۝ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝

किताब है। जिस के पास मुक़रब फरिशते मौजूद रहते हैं। यकीनन नेक लोग नेअमतों में होंगे।

عَلَى الْأَرْآئِكِ يَنْظُرُونَ ۝ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ

तख्तों पर बैठ कर देख रहे होंगे। उन के चेहरों में आप नेअमत की ताज़गी मालूम कर

النَّعِيمِ ۝ يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَخْتُومٍ ۝ خَتَمُهُ مِسْكٌ

लोगे। उन्हें पिलाई जाएगी खालिस शराब, जिस पर मुहर लगी हुई होगी। जिस की मुहर मुस्क की होगी।

وَفِي ذَلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْتَنَافُسُونَ ۝ وَمَرْآةٌ مِنْ تَسْنِيمٍ ۝

और उसी में तनाफुस करने वालों को तनाफुस करना चाहिए। और उस शराब की आमेज़िश तसनीम से होगी।

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا

एक चशमे से जिस चशमे से मुक़रबीन पिएंगे। बेशक मुजरिम लोग ईमान

مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ۝ وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَرُونَ ۝

वालों पर हंसा करते थे। और जब उन पर वो गुज़रते तो आपस में आँखें मारते थे।

وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ﴿٨١﴾ وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا

और जब वो अपने घर वालों के पास पलटते थे, तो पलट कर भी मजे ले कर उन की बातें करते थे। और जब वो उन को देखते

إِنَّ هَؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ﴿٨٢﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَفِظِينَ ﴿٨٣﴾ فَالْيَوْمَ

थे तो केहते थे के ये लोग गुमराह लोग हैं। हालांकि वो उन पर मुहाफिज़ बना कर नहीं भेजे गए। फिर आज

الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ﴿٨٤﴾ عَلَى الْأَرَائِكِ ۖ

ईमान वाले काफिरों से हंसते हैं। तख्तों पर बैठे

يَنْظُرُونَ ﴿٨٥﴾ هَلْ ثَوْبَ الْكُفَّارِ مَا كَانَ يَفْعَلُونَ ﴿٨٦﴾

देख रहे हैं। के क्या अब कुम्फार को उन के किए का बदला मिल गया?

۱
۸۴

إِنَّا هِيَ ۲۵ ﴿٨٧﴾ سُوْرَةُ الْإِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ (۸۴) رُوْعُهَا ۱

और १ रूकूअ है सूरह इन्शिकाक मक्का में नाज़िल हुई उस में २५ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ ۖ وَأَذْنَتْ لِرَبِّهَا وَحَقَّتْ ۖ

जब आसमान फट जाए। और आसमान कान लगाए हुए है अपने रब के हुक्म के लिए और वो उसी के लाइक है।

وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ۖ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۖ وَأَذْنَتْ

और जब ज़मीन फैला दी जाए। और वो डाल दे उन चीज़ों को जो उस में हैं और खाली हो जाए। और ज़मीन भी कान लगाए

لِرَبِّهَا وَحَقَّتْ ۖ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ

हुए है अपने रब के हुक्म के लिए और वो उसी के लाइक है। ऐ इन्सान! यकीनन तेरे रब की तरफ़ पहुँचने के लिए

كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ۖ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۖ

तुझे खूब मेहनत करनी है, फिर तू उस से मिलने वाला है। तो जिस को उस का नामअे आमाल दाहने हाथ में दिया जाएगा,

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ۖ وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ

तो आगे उस से आसान हिसाब लिया जाएगा। और वो अपने घरवालों की तरफ खुश खुश

مَسْرُورًا ۖ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۖ فَسَوْفَ

वापस आएगा। और जिस का नामअे आमाल उस की पीठ पीछे से दिया जाएगा, तो वो

يَدْعُوا ثُبُورًا ۖ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۖ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ

मौत को पुकारेगा। और आग में दाखिल होगा। इस लिए के वो अपने घर वालों में

खुश रहता था। उस का गुमान था के वो हरगिज़ लौट कर आएगा नहीं। क्यूं नहीं! यकीनन उस का रब उस

को देख रहा था। फिर मैं शफक की कसम खाता हूँ। और रात की कसम खाता हूँ और उन चीज़ों की जिस को रात

ने जमा कर लिया है। चाँद की कसम जब वो पूरा रोशन हो जाए। तूम ज़ख़्ख़र एक हाल से दूसरे हाल पर चढ़ोगे।

फिर उन्हें क्या हुवा के वो ईमान नहीं लाते? और जब उन पर क्रूरआन पढा जाता है

तो सज्दा नहीं करते। बल्के काफिर लोग झूठलाते हैं। और अल्लाह

खुब जानता है उस को जो वो दिल में भरे रखते हैं। तो आप उन को दर्दनाक अजाब की बशारत सुना दीजिए।

मगर वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए ऐसा अज्र होगा जो खत्म नहीं होगा।

और १ स्कूअ है सूरह बुरुज मक्का में नाज़िल हुई उस में २२ आयतें हैं

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

बुरजों वाले आसमान की कसम! वादे वाले दिन की कसम! हाज़िर होने वाले

की कसम और हाजिरी के दिन की कसम! खन्दकों वाले मारे जाएं। ईंधन वाली

आग वाले। जब वो उस के ऊपर बैठे हुए थे। और वो देख रहे थे जो कूछ वो ईमान वालों

के साथ कर रहे थे। और वो ईमान वालों से सिर्फ इसी बात का इन्तिकाम ले रहे थे के वो ईमान

بِاللّٰهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۸ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ

लाए हैं काबिले तारीफ़ ज़बर्दस्त अल्लाह पर। उस अल्लाह पर जिस के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है।

وَاللّٰهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۙ ۹ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ

और अल्लाह हर चीज़ पर निगराँ है। बेशक जिन लोगों ने ईमान वाले मर्दों

وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوْا فَلَهُمْ عَذَابٌ جَهَنَّمُ وَلَهُمْ عَذَابٌ

और औरतों को ईज़ा दी, फिर उन्होंने ने तौबा नहीं की तो उन के लिए जहन्नम का अज़ाब है और उन के लिए जलने का

الْحَرِيْقُ ۙ ۱۰ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ

अज़ाब है। यकीनन वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए जन्नतें हैं

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ۙ ۱۱

जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी। ये बड़ी कामयाबी है।

اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ۙ ۱۲ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ۙ وَهُوَ

यकीनन तेरे रब की पकड़ बड़ी सख्त है। वही पेहली मरतबा पैदा करता है और वही दोबारा पैदा करेगा। और वो

الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ۙ ۱۳ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ۙ ۱۴ فَعَالٌ

बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, बहोत ज़्यादा महबूबत वाला, अर्श का मालिक बुजुर्ग है। करता है वही

لِّمَا يُرِيْدُ ۙ ۱۵ هَلْ اَتٰكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ۙ ۱۶ فِرْعَوْنُ وَثَمُوْدُ ۙ ۱۷

जिस का वो इरादा करता है। क्या आप के पास लश्करों का किस्सा पहोँचा? फिरऔन और समूद का।

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ۙ ۱۸ وَاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ

बल्के काफिर लोग झुठलाने में लगे हैं। और अल्लाह उन को हर तरफ से घेरे

مُّحِيْطٌ ۙ ۱۹ بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيْدٌ ۙ ۲۰ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۙ ۲१

हुए है। बल्के ये बुजुर्गी वाला कुरआन, लौहे महफूज़ में है।

۱۲ اَيَّاهَا ۱۳ سُوْرَةُ الطّٰرِقِ مَكِّيَّةٌ (۸۱) رُوْعَهَا ۱

और 9 स्कूअ है सूरह तारिक मक्का में नाज़िल हुई उस में 99 आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالسَّمَآءِ وَالطّٰرِقِ ۙ ۲۱ وَمَا اَدْرٰكَ مَا الطّٰرِقُ ۙ ۲۲ النّٰجِمُ

आसमान की क़सम और रात में आने वाले की क़सम! और तुम क्या समझे रात में आने वाला क्या है? चमकता हुवा

إِنْ تَفَعَّتِ الذِّكْرَى ۙ سَيَذَكَّرُ مَنْ يَخْشَى ۙ

इस लिए आप नसीहत कीजिए अगर नसीहत फाइदा दे। अनकरीब नसीहत हासिल करेगा वो शख्स जो डरेगा।

وَيَتَجَبَّهَهَا الْأَشْقَى ۙ الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَى ۙ

और उस से दूर रहेगा वो बदबख्त, जो बड़ी आग में दाखिल होगा।

ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ۙ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَى ۙ

फिर वो उस में न मरेगा, न जिएगा। यकीनन कामयाब है वो शख्स जिस ने तज़किया किया।

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصْلَى ۙ بَلْ تُؤَثِّرُونَ الْحَيَوَةَ الدُّنْيَا ۙ

और अपने रब का नाम लिया, फिर नमाज़ पढ़ी। बल्के तुम दुन्यवी ज़िन्दगी को तरजीह देते हो।

وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۙ إِنَّ هَذَا لَفِي الصُّحُفِ

हालांके आखिरत बेहतर है और ज़्यादा बाकी रहेने वाली है। यही बात पेहले सहीफों

الْأُولَى ۙ صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ۙ

में है। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और मूसा (अलैहिस्सलाम) के सहीफों में है।

۱
۱۶
۱۲

رُؤُوعَهَا ۱

(۸۸) سُورَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ (۶۸)

الْيَايُهَا ۲۱

और १ स्कूअ है सूरह गाशिया मक्का में नाज़िल हुई उस में २६ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ۙ وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۙ

क्या आप के पास ढांपने वाली (क़यामत) का किस्सा पहुँचा? उस दिन कुछ चेहरे ज़लील होंगे।

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۙ تَصْلَى نَارًا حَامِيَةً ۙ تُسْقَى

काम करने वाले, (बुरे काम की वजह से) थके हुए होंगे। वो गर्म आग में दाखिल होंगे। खौलते हुए चशमे से

مِنْ عَيْنٍ آيَةٍ ۙ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ ضَرِيعٍ ۙ لَا يُسْمِنُ

(पानी) उन्हें पीने को दिया जाएगा। उन के लिए कोई खाना नहीं होगा मगर झाड़ काँटों वाला। जो न मोटा करे

وَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ جُوعٌ ۙ وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۙ

और न भूक के कुछ काम आए। कुछ चेहरे उस दिन तर व ताज़ा होंगे।

لِسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۙ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ لَا تَسْمَعُ فِيهَا

अपने अमल से खुश होंगे। ऊँची जन्नत में होंगे। जिस में वो लग्न बात

وَقَفَّيْ

لَاغِيَةً ۝ فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝ فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ۝

न सुनेंगे। जिस में बेहते हुए चशमे होंगे। उस में ऊँचे ऊँचे तख्त होंगे।

وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ۝ وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ۝ وَزَوَارِبُ

और तरतीब से रखे हुए प्याले होंगे। और सफ ब सफ रखे हुए तकिए होंगे। और फैलाए हुए

مَبْنُوتَةٌ ۝ أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِلَهِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝

फर्श होंगे। क्या फिर वो देखते नहीं हैं ऊँटों की तरफ के कैसे वो पैदा किए गए?

وَالِى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝ وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ

और आसमान की तरफ के कैसे उसे ऊँचा किया गया? और पहाड़ों की तरफ के कैसे

نُصِبَتْ ۝ وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝ فَذَكِّرْ ۝ إِنَّمَا

उन्हें गाड़ा गया? और ज़मीन की तरफ के कैसे उसे बिछाया गया? फिर आप नसीहत कीजिए। आप तो सिर्फ

أَنْتَ مُذَكِّرٌ ۝ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُضَيِّطٍ ۝ إِلَّا مَنْ

नसीहत करने वाले हैं। आप उन पर मुसल्लत नहीं किए गए हैं। मगर वो जिस ने

تَوَلَّى وَكَفَرَ ۝ فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ۝

मुंह फेरा और कुफ्र किया। तो अल्लाह उसे बड़ा अज़ाब देगा।

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ۝ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ۝

यकीनन हमारी तरफ उन्हें लौटना है। फिर हमारे ज़िम्मे उन का हिसाब लेना है।

۝ يَا أَيُّهَا ۳۰ (۸۹) سُورَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ (۱۰) رُكُوعُهَا ۱

और ९ रूकूअ है सूरह फ़ज्र मक्का में नाज़िल हुई उस में ३० आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالْفَجْرِ ۝ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝ وَاللَّيْلِ

फजर की क़सम! दस रातों की क़सम! जुफ्त और ताक़ की क़सम! रात की

إِذَا يَسِرُّ ۝ هَلْ فِي ذَلِكَ قَسَمٌ لِذِي حَجْرِ ۝ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ

क़सम जब वो चल रही हो! क्या उस में अक़लमन्द के लिए क़सम है? क्या आप ने नहीं देखा के

فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝ إِرْمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝ الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ

आप के रब ने कौमे आद के साथ क्या किया? सुतूनों वाले इरम के साथ क्या किया? के उस जैसी कौम

مَثَلُهَا فِي الْبِلَادِ ۝۸ وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝۹

नहीं पैदा की गई शहरों में। और समूद के साथ क्या किया, जिस ने वादिए (कुरा) में चटानों को तराशा।

وَ فِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ۝۱۰ الَّذِينَ طَعَوْا فِي الْبِلَادِ ۝

और मेखों वाले फिरऔन के साथ क्या किया? जिन्होंने ने शहरों में सर उठाया था।

فَاكْثَرُوا فِيهَا الْفُسَادَ ۝۱۱ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ

फिर वहाँ बकस्रत फसाद फैलाया। तो उन पर तेरे रब ने अज़ाब का कोड़ा

عَذَابٍ ۝۱۲ إِنَّ رَبَّكَ لَبَالِهْرَصَادٍ ۝۱۳ فَأَمَّا الْإِنْسَانُ

फिटकारा। यकीनन तेरा रब अलबत्ता ताक में है। फिर इन्सान के जब उस का

إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ ۖ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ۝

रब उस का इम्तिहान लेता है, फिर उसे इज्जत देता है और नेअमतेँ देता है, तो वो केहता है के मुझे मेरे रब ने इज्जत दी।

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ ۖ فَيَقُولُ رَبِّي

और जब उसे आजमाता है, फिर उस पर उस की रोज़ी तंग करता है, तो वो केहता है के मेरे रब ने मेरी

أَهَانَنِ ۝۱۴ كَلَّا بَلْ لَا تَكْرُمُونَ الْيَتِيمَ ۝۱۵ وَلَا تَخْضَوْنَ

इहानत की। हरगिज़ नहीं! बल्के तुम ही यतीम की इज्जत नहीं करते। और मिसकीन को

عَلَى طَعَامِ الْيُسْكِينِ ۝۱۶ وَتَأْكُلُونَ الثَّرَاثَ أَكْلًا لَبًّا ۝

खाना देने की तरीगीब नहीं देते। और तुम मीरास सारा समेट कर हड़प कर जाते हो।

وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝۱۷ كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا

और तुम माल से महब्वत करते हो बहोत ही ज़्यादा महब्वत। हरगिज़ नहीं! जब ज़मीन कूट कूट कर

دَكًّا ۝۱۸ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝۱۹ وَجِئْتُ يَوْمَئِذٍ

नेस्त कर दी जाएगी। और तेरा रब और फरिशते सफ ब सफ आएंगे। और उस दिन

بِجَهَنَّمَ ۖ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّى لَهُ الذِّكْرَى ۝

जहन्नम लाई जाएगी। उस दिन इन्सान नसीहत लेगा, लेकिन अब नसीहत लेने का वक्त कहाँ?

يَقُولُ يَلَيَّتَنِي قَدَمْتُ لِحَيَاتِي ۝۲۰ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ

वो कहेगा के ऐ काश के मैं ने अपनी इस ज़िन्दगी के लिए (नेक अमल) आगे भेजे होते। उस दिन उस के

عَذَابُهُ أَحَدٌ ۝۲۱ وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ۝۲۲ يَا أَيَّتُهَا

अज़ाब जैसा कोई अज़ाब न देगा। और न उस की जकड़ की तरह किसी की जकड़ होगी। ऐ

النَّفْسَ الْبُطِينَةَ ۚ ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكَ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝

इत्मिनान वाली रूह! तू अपने रब की तरफ वापस चल, तू उस से राज़ी और वो तुझ से राज़ी।

فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۖ وَادْخُلِي جَنَّتِي ۝

तू मेरे बन्दों में शामिल हो जा। और मेरी जन्नत में दाखिल हो जा।

رُؤُوعَهَا ۱

(۹۰) سُورَةُ الْبَلَدِ الْمَكِّيَّةُ (۲۵)

آيَاتُهَا ۲۰

और १ रूकूअ है सूरह बलद मक्का में नाज़िल हुई उस में २० आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

لَا أُقْسِمُ بِهَذَا الْبَلَدِ ۚ وَأَنْتَ حِلٌّ بِهَذَا الْبَلَدِ ۝

मैं इस शहर (मक्का) की कसम खाता हूँ! और आप इस शहर में हलाल (न के मुहरिम) उतरने वाले हो।

وَوَالِدٍ وَمَا وَلَدٌ ۚ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ ۝

बाप की कसम और औलाद की कसम! यकीनन हम ने इन्सान को मश्क़त में पैदा किया है।

أَيَحْسَبُ أَنْ لَنْ يَقْدَرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ۚ يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا

क्या वो ये समझता है के उस पर किसी को कुदरत नहीं है? वो केहता है के मैं ने ढेरों माल

لُبَدًا ۚ أَيْحَسَبُ أَنْ لَمْ يَرَهُ أَحَدٌ ۚ أَلَمْ نَجْعَلْ لَهُ

लुटाया। क्या वो समझता है के उस को किसी ने देखा नहीं। क्या हम ने उस की दो आँखें

عَيْنَيْنِ ۚ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۚ وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ۝

नहीं बनाई? और ज़बान और दो होंट नहीं बनाए? और हम ने उसे दोनों रास्ते दिखा दिए।

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۚ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝

फिर वो घाटी पर से नहीं गुज़रा? और तुम क्या समझे के घाटी क्या है?

فَكَ رَقَبَةٍ ۚ أَوْ إِطْعَمٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۚ يَتِيمًا

गरदन को आज़ाद करना है। या भूक वाले दिन में यतीम

ذَا مَقْرَبَةٍ ۚ أَوْ مَسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۚ ثُمَّ كَانَ

रिश्तेदार को खिलाना। या ख़ाकनशीन मोहताज को खाना खिलाना। फिर जो ईमान वालों

مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝

में से हैं और जिन्होंने ने सब्र की एक दूसरे को फेहमाइश की और रहम करने की एक दूसरे को तलक़ीन की,

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمِمْنَةِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا

ये दाई जानिब वाले हैं। और जिन्होंने ने हमारी आयात के साथ कूफ़ किया

هُم أَصْحَابُ النَّشْءَةِ ۖ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّوَصَّدَةٌ ۖ

ये बाई जानिब वाले हैं। उन के ऊपर से आग बन्द कर दी गई है।

أَيَّاهَا ١٥ (٩١) سُورَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ (٢٧) رُؤُوعَهَا ١

और ९ रूकूअ है सूरह शम्स मक्का में नाज़िल हुई उस में १५ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ۖ وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَّهَا ۖ وَالنَّهَارِ

सूरज और उस के चढ़ने की कसम। चाँद की कसम जब वो उस के पीछे आए। दिन की कसम

إِذَا جَلَّهَا ۖ وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ۖ وَالسَّيِّ

जब वो सूरज को रोशन करे। रात की कसम जब वो उस को छुपा ले। आसमान की कसम और उस के बनाने

وَمَا بَنَاهَا ۖ وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَاهَا ۖ وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ۖ

वाले की कसम! ज़मीन की कसम और उस के बिछाने वाले की कसम! नफ्स की कसम और उस को दुरुस्त बनाने वाले की कसम।

فَالْهَمَّهَا فَجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ۖ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا ۖ

फिर उसी ने उस को उस की ढ़टाई और उस के तक्वे का इल्हाम किया। यकीनन वो शख्स कामयाब है जिस ने इस (नफ्स) का तज़किया

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا ۖ كَذَّبَتْ ثُبُودٌ بِطَغْوَاهَا ۖ

किया। और नाकाम है वो जिस ने उस को खराब किया। कौमे समूद ने अपनी सरकशी की वजह से झुठलाया।

إِذْ انْبَعَثَ أَشْقَاهَا ۖ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ

जब उन में से बड़ा बदबख्त इन्सान उठा। उन से अल्लाह के पैगम्बर (सालेह अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम अल्लाह की ऊँटनी से और उस

اللَّهُ وَ سُقْيَاهَا ۖ فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا ۖ فَدَمْدَمَ

के पीने की बारी से डरो। लेकिन उन्होंने ने (सालेह अलैहिस्सलाम) को झुठलाया, फिर उन्होंने ने ऊँटनी के पैर काट दिए। तो उन पर

عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذُنُوبِهِمْ فَسَوَّاهَا ۖ وَلَا يَخَافُ

उन के रब ने उन के गुनाह की वजह से अज़ाब भेज दिया, फिर उन को बराबर कर दिया, अल्लाह को उन के अन्जाम का

عُقْبَاهَا ۖ

डर नहीं था।

	رُؤُوعَهَا ۱ (۹۲) سُورَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ (۹) ۲۱ آيَاتُهَا और १ रूकूअ है सूरह लैल मक्का में नाज़िल हुई उस में २१ आयतें हैं بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।	
	وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ ۚ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ ۚ وَمَا خَلَقَ रात की कसम जब वो छा जाए! दिन की कसम जब के वो रोशन हो जाए! नर और मादा को पैदा करने	
	الدَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۚ إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ۚ فَاَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ वाले की कसम! बेशक तुम्हारी कोशिश अलबत्ता अलग अलग है। फिर जिस ने दिया	
	وَاتَّقَىٰ ۚ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ۚ فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَىٰ ۚ और तक्वा इखतियार किया, और अच्छी बात की तस्दीक की, तो हम उस के लिए आसानी वाला घर आसान कर देंगे।	
	وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ۚ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَىٰ ۚ فَسَنُيَسِّرُهُ और जिस ने न दिया और जो बेपरवाह रहा, और अच्छी बात को झुठलाया, तो हम आसानी से सख्ती के	
	لِلْعُسْرَىٰ ۚ وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّىٰ ۚ घर में उस को पहुँचा देंगे। और उस के कुछ काम नहीं आएगा उस का माल जब वो (गढ़े में) गिरेगा।	
	إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ۚ وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ۚ हमारे ज़िम्मे अलबत्ता रास्ता दिखा देना है। और हमारे ही हाथ आखिरत और दुनिया है।	
	فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ۚ لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَىٰ ۚ फिर मैं ने तुम्हें भड़कती हुई आग से डराया है। उस में वही बड़ा बदबख्त दाखिल होगा,	
	الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۚ وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَىٰ ۚ الَّذِي जिस ने झुठलाया और पैराज़ किया। और उस से दूर रखा जाएगा वो बड़ा मुत्तकी, जो	
	يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ۚ وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ तज़किए के लिए अपना माल देता है। और किसी का उस पर एहसान नहीं जिस का	
	مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزَىٰ ۚ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ۚ बदला उतारा जाए। मगर उस के बुलन्दतररीन रब की रज़ा तलब करने के लिए।	
۱ ۲ ۳ ۴ ۵ ۶ ۷ ۸ ۹ ۱० ۱१ ۱२	وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ۚ और बहोत जल्द वो राजी होगा।	

۱ رُؤُوعَهَا ۱	(۹۳) سُورَةُ الصُّبْحِيِّ (مَكِّيَّةٌ) (۱۱)	۱۱ آیَاتُهَا
اور ۹ رکوع ہے	سورہ صبحا مक्کا میں ناज़یل हुई	اس میں ۱۱ آیات ہیں
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ پڑھتا ہوں اَللّٰہ کا نام لے کر جو بڑا مہربان، نہایت رحم والا ہے۔		
وَالصُّحَىٰ ۝ وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ۝ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ۝ چاشت کے وقت کی کسم! رات کی کسم جب وہ تاریک ہو جائے! کہ آپ کے رب نے آپ کو نہ छोड़ा है और न आप से दुश्मनी की है।		
وَلَا الْخِزْيَ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ ۝ وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ اور اَلبالتا آخیرت پہلی والی (دُنیا) سے آپ کے لیے بہتر ہے۔ اور جَرر آپ کا رب آگے آپ کو دے گا،		
فَقَرَضَىٰ ۝ أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ۝ وَوَجَدَكَ ضَالًّا کہ آپ راجی ہو جاؤ گے۔ کیا آپ کو اس نے یتیم نہیں پایا کہ پھر ٹھکانا دیا؟ اور آپ کو بے خبر پایا،		
فَهَدَىٰ ۝ وَوَجَدَكَ عَالِيًّا فَاغْنَىٰ ۝ فَمَا الْيَتِيمَ پھر اس نے راہ دیکھاई۔ اور آپ کو مُفلیس پایا، پھر آپ کو گنی کر دیا۔ اس لیے آپ کسی یتیم پر		
فَلَا تَقْرَءُ ۝ وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرُ ۝ وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثُ ۝ سختی نہ کیجیے۔ اور کسی سوال کرنے والے کو نہ झड़کیے۔ اور اَلبالتا آپ اپنے رب کی نعمت کو بیان کیجیے۔		
۱ رُؤُوعَهَا ۱	(۹۴) سُورَةُ الْإِنْشِرَاحِ (مَكِّيَّةٌ) (۱۲)	۸ آیَاتُهَا
اور ۹ رکوع ہے	سورہ انشیراہ مक्کا میں ناज़یل हुई	اس میں ۸ آیات ہیں
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ پڑھتا ہوں اَللّٰہ کا نام لے کر جو بڑا مہربان، نہایت رحم والا ہے۔		
أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝ وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۝ کیا ہم نے آپ کے سینے کو کھول نہیں دیا؟ اور ہم نے آپ کے ऊپر سے آپ کا بوجھ اُتار دیا۔		
الَّذِي أَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝ جس نے آپ کی کمر توڑ رکھی تھی۔ اور ہم نے آپ کے خاتیر آپ کا ذکر بُلند کیا۔		
فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ پھر بے شک سختی کے ساتھ آسانی ہے۔ بے شک سختی کے ساتھ آسانی ہے۔		
فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝ وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝ پھر جب آپ فارغ ہوں، تو جَدا مہنت کیجیے۔ اور اپنے رب کی طرف رُبات کیجیے۔		

منزل

يَنْهَى ٩ عِبْدًا إِذَا صَلَّى ١٠ أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ

उस शख्स को जो रोकता है। बन्दे को जब वो नमाज़ पढ़ता है? क्या आप ने देखा के अगर वो

عَلَى الْهُدَى ١١ أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَى ١٢ أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّى ١٣

हिदायत पर है, या तक्वे का हुक्म देता है? क्या आप ने देखा अगर वो झुठलाता है और पैराज़ करता है?

أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرَى ١٤ كَلَّا لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ لَنَسْفَعًا

क्या वो नहीं जानता के यकीनन अल्लाह देख रहा है? कोई बात नहीं! अगर वो बाज़ नहीं आएगा, तो हम उसे पेशानी के

بِالنَّاصِيَةِ ١٥ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ١٦ فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ١٧

बाल पकड़ कर घसीटेंगे। खताकार झूठी पेशानी के बाल पकड़ कर घसीटेंगे। फिर उसे चाहिए के अपनी मजलिस वालों को पुकारे।

سَدْعُ الرِّبَانِيَةِ ١٨ كَلَّا لَا تَطْعُهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ١٩

हम भी ज़बानिया फरिशतों को बुला लेते हैं। हरगिज़ नहीं! आप उस का केहना न मानिए और सज्दा कीजिए और अल्लाह से करीब हो जाइए।

١٩
١٨
١٧

الْيَأْتِيهَا ٥ سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ (٩٤) رُؤُوعَهَا ١

और १ रूकूअ है

सूरह क़दर मक्का में नाज़िल हुई

उस में ५ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ١ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ٢

यकीनन हम ने इसे लैलतुल क़द्र में नाज़िल किया। और आप को मालूम भी है के लैलतुल क़द्र क्या है?

لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ ٣ تَنْزِيلُ الْمَلَكَةِ وَالرُّوحِ

लैलतुल क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। फरिशते और रूह उस में अपने रब की इजाज़त से हर चीज़

فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ٤ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ ٥ سَلَامٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطَلَعِ الْفَجْرِ ٦

के मुतअल्लिक हुक्म ले कर उतरते हैं। फज्र के तुलूअ होने तक सलामती रहती है।

٦
٥
٤
٣
٢
١

الْيَأْتِيهَا ٨ سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَكِّيَّةٌ (٩٨) رُؤُوعَهَا ١

और १ रूकूअ है

सूरह बय्यिना मदीना में नाज़िल हुई

उस में ८ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ مُنْفَكِّينَ

जो लोग एहले किताब में से काफिर हैं और मुशरिकीन वो बाज़ आने वाले नहीं थे यहाँ तक के

حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۖ رَسُولٌ مِّنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۚ

उन के पास रोशन दलील आ जाए। (यानी) अल्लाह के पैगम्बर जो पाक सहीफों की तिलावत करते हैं।

فِيهَا كُتِبَ قِيمَةٌ ۚ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ

जिन में मज़बूत किताबें हैं। और जिन को किताब दी गई वो अलग अलग फिरके नहीं हुए

إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَةُ ۚ وَمَا أُمِرُوا

मगर इस के बाद के उन के पास रोशन दलील आई। हालांकि उन को हुक्म नहीं था

إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ هُ حُفَاءٌ وَيُقِيمُوا

मगर यही के वो इबादत करें अल्लाह की, उसी के लिए इबादत को खालिस रखते हुए, सब तरफ से एक ही के हो कर

الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ وَذَلِكَ دِينُ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ

और नमाज़ काइम करें और ज़कात दें और यही सीधा दीन है। बेशक जो लोग

كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ

काफिर हुए एहले किताब में से और मुशरिकीन वो जहन्नम की आग में हमेशा

فِيهَا ۚ أُولَٰئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا

रहेंगे। यही लोग तमाम मखलूक में सब से बदतर हैं। यकीनन जो लोग ईमान लाए और नेक अमल

الصَّالِحَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۚ جَزَاءُ هُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ

करते रहे, यही तमाम मखलूक में सब से बेहतर हैं। उन का बदला उन के रब के पास

جَزَاءٌ عَدَنَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ

जन्नाते अद्न हैं, जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी जिन में वो हमेशा रहेंगे।

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَلِكَ لِمَنِ خَشِيَ رَبَّهُ ۝

अल्लाह उन से राज़ी हुवा और वो अल्लाह से राज़ी हुए। ये उस शख्स के लिए है जो अपने रब से डरे।

رُؤُوعَهَا ۙ

(११) سُورَةُ الزَّلْزَالِ مَكِّيَّةٌ (१३)

آيَاتُهَا ۘ

और १ रूकूअ है

सूरह ज़िलज़ाल मदीना में नाज़िल हुई

उस में ८ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۚ وَأُخْرِجَتِ الْأَرْضُ

जब ज़मीन सख्त ज़लज़ले से हिला दी जाएगी। और ज़मीन अपने बोझ

أَتَقَالَهَا ۚ وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ۚ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ

निकाल देगी। और इन्सान कहेगा के ज़मीन को क्या हुवा? उस दिन ज़मीन अपनी खबरें बयान

أَخْبَارَهَا ۚ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ۚ يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ

कर देगी। इस वजह से के तेरे रब ने उस को हुक्म दिया है। उस दिन इन्सान वापस लौटेंगे

أَشْتَاتًا ۚ لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ۚ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ

मुख्तलिफ़ जमाअतें बन कर ताके वो अपने अमल (के नताइज) देखें। फिर जो ज़रा भर भलाई करेगा

خَيْرًا يَرَهُ ۚ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۚ

तो उसे देखेगा। और जो ज़रा भर बुराई करेगा तो उसे देखेगा।

۱
۶۳

أَيُّهَا ۥ (۱۰۰) سُورَةُ الْعَزِيزِ مَكِّيَّةٌ (۱۴) رُكُوعُهَا ۱

और १ रूकूअ है सूरह आदियात मक्का में नाज़िल हुई उस में ११ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالْعَدِيَّتِ صَبَحًا ۚ فَالْمُورِيَّتِ قَدَحًا ۚ فَالْبُغْيَرِيَّتِ

हांपते हुए दौड़ने वाले घोड़ों की कसम! फिर उन घोड़ों की कसम जो टाप मार कर आग निकालने वाले हैं! फिर उन घोड़ों की

صَبَحًا ۚ فَاتَرْنَ بِهِ نَقْعًا ۚ فَوْسَطْنَ بِهِ جَمْعًا ۚ

कसम जो सुबह के वक्त (दुश्मन पर) हमला करने वाले हैं! फिर उस वक्त गुबार उड़ाने वाले हैं! फिर वो फौज में घुस जाते

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ۚ وَإِنَّهُ

है। बेशक इन्सान अपने रब का नाशुकरा है। और वो खुद

عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَّهِيدٌ ۚ وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ۚ

उस पर मुत्तलेअ है। और वो माल की महब्बत में अलबत्ता बड़ा सख्त है।

أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۚ وَحُصِّلَ

क्या वो नहीं जानता के जब उठाया जाएगा जो कब्रों में है। और ज़ाहिर कर दिया

مَا فِي الصُّدُورِ ۚ إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ

जाएगा जो कुछ सीनों में है। बेशक उन का रब उस दिन उन से

لَخَبِيرٌ ۚ

बाखबर है।

۱
۶۵

	رُؤُوعَهَا ۱	(۱۰۱) سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ (۳۰)	آيَاتُهَا ۱۱
	और १ स्कूअ है	सूरह कारिआ मक्का में नाज़िल हुई	उस में ११ आयतें हैं
	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ		
	पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।		
	الْقَارِعَةُ ۝ مَا الْقَارِعَةُ ۝ وَمَا أَذْرَكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝		
	खड़खड़ाने वाली। क्या है खड़खड़ाने वाली? और आप को मालूम भी है के खड़खड़ाने वाली क्या है?		
	يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ۝ وَتَكُونُ		
	जिस दिन इन्सान बिखरे हुए परवानों की तरह हो जाएंगे। और पहाड़		
	الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ۝ فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۝		
	धुने हुए रंगीन ऊन की तरह हो जाएंगे। फिर जिस के पलड़े भारी होंगे,		
	فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝ وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝		
	तो वो खुशगवार ज़िन्दगी में होगा। और जिस के पलड़े हलके होंगे,		
	فَأَمَّهُ هَٰوِيَةٌ ۝ وَمَا أَذْرَكَ مَا هِيَ ۝ نَارٌ حَامِيَةٌ ۝		
	तो उस का ठिकाना हाविया है। और आप को मालूम है के वो क्या है? देहेकती आग है।		
	رُؤُوعَهَا ۱	(۱۰۲) سُورَةُ التَّكْوِيْنِ مَكِّيَّةٌ (۱۶)	آيَاتُهَا ۸
	और १ स्कूअ है	सूरह तकासुर मक्का में नाज़िल हुई	उस में ११ आयतें हैं
	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ		
	पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।		
	الْهَلْكُمْ التَّكَثُّرُ ۝ حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝ كَلَّا سَوْفَ		
	एक दूसरे पर(दुनिया के ज़रिए) बाज़ी ले जाने की हिर्स ने तुम्हें गाफिल रखा। यहाँ तक के तुम कब्रस्तान पहुँच जाते हो। कोई बात नहीं!		
	تَعْلَمُونَ ۝ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ		
	आगे तुम्हें मालूम होगा। फिर कोई बात नहीं! आगे तुम्हें मालूम होगा। कोई बात नहीं! अगर तुम जानते इल्मुल यकीन		
	عِلْمَ الْيَقِينِ ۝ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ۝ ثُمَّ لَتَرَوْنها		
	के तौर पर (तो ऐसा न करते), तुम ज़रूर दोज़ख को देखोगे। फिर तुम ज़रूर उस को		
	عَيْنَ الْيَقِينِ ۝ ثُمَّ لَتَسْأَلَنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۝		
	यकीन की आँख के साथ देखोगे। फिर तुम से उस दिन नेअमतों के मुतअल्लिक ज़रूर सवाल होगा।		

آيَاتُهَا ۳ (۱۰۳) سُورَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ (۱۳) رُكُوعُهَا ۱
 उस में ३ आयतें हैं सूरह अस्र मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالْعَصْرِ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا
 ज़माने की कसम! बेशक इन्सान खसारे में है। मगर वो लोग जो ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ
 और नेक अमल करते रहे और हक की एक दूसरे को तलक़ीन की और एक दूसरे को सब्र की तलक़ीन की।

آيَاتُهَا ۹ (۱۰۴) سُورَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ (۳۲) رُكُوعُهَا ۱
 उस में ६ आयतें हैं सूरह हुमज़ह मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ يَحْسَبُ
 हलाकत है हर पीठ पीछे ऐब निकालने वाले के लिए, ताना देने वाले के लिए। जिस ने माल जमा किया और उस को गिन गिन कर

أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ كَلَّا لَيُنْبَذَنَّ فِي الْحُطْبَةِ
 रखा। वो समझता है के उस का माल उसे हमेशा जिन्दा रखेगा। हरगिज़ नहीं! ज़रूर उसे हुतमह में फेंक दिया जाएगा।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطْبَةُ نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ الَّتِي تَطْلُعُ
 और आप को मालूम भी है के हुतमह क्या है? अल्लाह की भड़काई हुई आग है। जो दिलों को

عَلَى الْأَفْئِدَةِ إِنَّمَا عَلَيْهِمْ مُّوَصَّدَةٌ فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ
 झांक लेती है। बेशक वो दोज़ख (हुतमह) उन को लम्बे सुतूनों में बांध कर ऊपर से बन्द कर दी जाएगी।

آيَاتُهَا ۵ (۱۰۵) سُورَةُ الْفِيلِ مَكِّيَّةٌ (۱۹) رُكُوعُهَا ۱
 उस में ५ आयतें हैं सूरह फील मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ أَلَمْ يَجْعَلْ
 क्या आप ने नहीं देखा के आप के रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया? क्या उन का

كَيْدُهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ۚ وَآرْسَلْ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۖ

मक्र नाकाम नहीं कर दिया? और उन पर झुन्ड के झुन्ड परिन्दे भेजे।

۱-
۲۶

تَرْمِيَهُمْ بِحِجَارَةٍ مِّن سِجِّيلٍ ۖ فَجَعَلَهُمْ كَعَصِفٍ أَلْوِلٍ ۝

जो उन पर कंकर की पथरियाँ फैंकते थे। फिर अल्लाह ने उन को खाए हुए भूसे की तरह बना दिया।

۱- ۲ (۱۰۶) سُورَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ (۲۹) رُؤُوعَهَا ۱

और १ रूकूअ है सूरह कुरैश मक्का में नाज़िल हुई उस में ४ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

إِذْ يَلِفَ قُرَيْشٌ ۖ الْفِهُم رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ۖ

कुरैश की उत्फत की वजह से। उन के गर्मी और सर्दी के सफर से उत्फत की वजह से।

فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ ۖ الَّذِي أَطْعَمَهُمْ

फिर उन्हें चाहिए के इस घर के मालिक की इबादत करें। जिस ने उन्हें भूक में

۱-
۳۶

مِّنْ جُوعٍ ۚ وَآمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۖ

खाना दिया और जिस ने उन्हें खौफ से अमन दिया।

۱- ۲ (۱۰۷) سُورَةُ الْمَاعُونِ مَكِّيَّةٌ (۱۴) رُؤُوعَهَا ۱

और १ रूकूअ है सूरह माऊन मक्का में नाज़िल हुई उस में ७ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالْإِيمَانِ ۖ فَذَلِكَ الَّذِي يَدْعُ

क्या आप ने देखा उस शख्स को जो इन्साफ होने को झुठलाता है? फिर ये वही है जो यतीम को धक्के

الْيَتِيمَ ۖ وَلَا يَحِصُّ عَلَى طَعَامِ الْمُسْكِينِ ۖ فَوَيْلٌ

देता है। और मस्कीन को खाना देने की तरगीब नहीं देता। फिर हलाकत है

لِّلْمُصَلِّينَ ۖ الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝

उन नमाज़ियों के लिए। जो अपनी नमाज़ को भूल जाते हैं।

۱-
۴۳

الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ۖ وَيَسْعَوْنَ الْبَاعُونَ ۖ

जो दिखावा करते हैं। और मामूली चीज़ को भी मना करते हैं।

۱ رُؤُوعَهَا ۱ (۱۰۸) سُورَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ (۱۵) ۲ آيَاتُهَا ۳

और १ सूकूअ हैं सूरह कौसर मक्का में नाज़िल हुई उस में ३ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

إِنَّا أَعْطَيْنَكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝

बेशक हम ने आप को कौसर अती की। इस लिए आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और कुरबानी कीजिए।

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝

यकीनन आप का दुश्मन वही दुम कटा है।

۱ رُؤُوعَهَا ۱ (۱۰۹) سُورَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ (۱۸) ۲ آيَاتُهَا ۴

और १ सूकूअ है सूरह काफिरून मक्का में नाज़िल हुई उस में ६ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا الْكَافِرُونَ ۝ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝

आप फरमा दीजिए ऐ काफिरो! मैं इबादत नहीं करता उस की जिस की तुम इबादत करते हो। और न तुम

وَلَا أَنْتُمْ عِبَادُونَ مَا أَعْبُدُ ۝ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَا عَبَدْتُمْ ۝

इबादत करते हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। और न मैं इबादत करने वाला हूँ उस की जिस की तुम इबादत करते हो। और न

وَلَا أَنْتُمْ عِبَادُونَ مَا أَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۝

तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है और मेरे लिए मेरा दीन है।

۱ رُؤُوعَهَا ۱ (۱۱۰) سُورَةُ النَّصْرِ مَدِينِيَّةٌ (۱۱۳) ۲ آيَاتُهَا ۳

और १ सूकूअ है सूरह नसर मदीना में नाज़िल हुई उस में ३ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ۝ وَرَأَيْتَ النَّاسَ

जब अल्लाह की नुसरत और फ़तह आ जाए। और आप इन्सानों को देखें के

يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ

अल्लाह के दीन में फौज दर फौज दाखिल हो रहे हैं। तो अपने रब की हम्द के साथ

رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرُهُ ۖ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ۝

तस्बीह कीजिए और उस से मग़फ़िरत तलब कीजिए। यकीनन वो तौबा क़बूल करने वाला है।

رُكُوعُهَا ۱

(۱۱۱) سُورَةُ الْهَبِ مَكِّيَّةٌ (۶)

آيَاتُهَا ۵

और १ रूकूअ है

सूरह लहब मक्का में नाज़िल हुई

उस में ५ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ۚ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ

अबू लहब के दोनों हाथ टूटें और वो मरो। न उस के काम आया उस का माल

وَمَا كَسَبَ ۖ سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۚ وَامْرَأَتُهُ

और न उस की कमाई। अनक़रीब वो शौले वाली आग में दाखिल होगा, वो भी और उस की बीवी भी।

حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۚ فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ۚ

जो लकड़ियाँ उठाने वाली है। उस की गर्दन में मज़बूत बटी हुई रस्सी होगी।

رُكُوعُهَا ۱

(۱۱२) سُورَةُ الْخَلَّاصِ مَكِّيَّةٌ (२२)

آيَاتُهَا २

और १ रूकूअ है

सूरह इख़लास मक्का में नाज़िल हुई

उस में ४ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْهُ

आप फरमा दीजिए के वो अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज़ है। न उस से कोई पैदा हुवा

وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

और न वो किसी से पैदा हुवा। और न उस के बराबर का कोई है।

رُكُوعُهَا १

(۱۱३) سُورَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ (२०)

آيَاتُهَا ५

और १ रूकूअ है

सूरह फलक़ मक्का में नाज़िल हुई

उस में ५ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَ

आप फरमा दीजिए मैं सुबह के मालिक की पनाह मांगता हूँ। उस की मखलूक के शर से। और

مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۖ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثِ

अन्धेरी रात के शर से जब वो आ जाए। और गिरहों में दम करने

فِي الْعُقَدِ ۖ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۖ

वालियों के शर से। और हसद करने वाले के शर से जब वो हसद करे।

رُوعَهَا ۖ

(۱۱۳) سُورَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ (۲۱)

آيَاتُهَا ۶

और १ रूकूअ है

सूरह नास मक्का में नाज़िल हुई

उस में ६ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ إِلَهِ

आप फ़रमा दीजिए मैं पनाह मांगता हूँ तमाम इन्सानों के रब की। तमाम इन्सानों के बादशाह की। तमाम इन्सानों

النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِي

के माबूद की। वसवसा डालने वाले, पीछे हटने वाले (शैतान) के शर से। जो

يُوسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

वसवसा डालता है लोगों के दिलों में। वो जिन्नात में से हो और इन्सानों में से हो।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

ऐ हमारे रब! तू हमारी तरफ से कबूल फरमा। यकीनन तू सुनने वाला, इल्म वाला है।

وَتُبَّ عَلَيْنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

और तू हमारी तौबा कबूल फरमा। यकीनन तू तौबा कबूल करने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

फहरिस्त

सूरत नम्बर	सूरत का नाम	पारा नम्बर	सफहा नम्बर	सूरत नम्बर	सूरत का नाम	पारा नम्बर	सफहा नम्बर
1	फातिहा	1	2	29	अन्कबूत	20,21	552
2	बकरह	1,2,3	3	30	रूम	21	562
3	आले इमरान	3,4	68	31	लुकमान	21	571
4	निसा	4,5,6	106	32	सज्दा	21	577
5	माइदा	6,7	147	33	अहज़ाब	21,22	581
6	अन्आम	7,8	177	34	सबा	22	595
7	आराफ	8,9	209	35	फातिर	22	603
8	अन्फाल	9,10	246	36	यासीन	22,23	611
9	तौबा	10,11	260	37	साफ़ात	23	618
10	यूनुस	11	288	38	सौद	23	628
11	हूद	11,12	308	39	जुमर	23,24	635
12	यूसुफ	12,13	328	40	मुअमिन	24	647
13	रअद	13	346	41	हा मीम सज्दा	24,25	659
14	इब्राहीम	13	355	42	शूरा	25	668
15	हिज़्र	13,14	364	43	जुखरूफ	25	677
16	नहल	14	372	44	दुखान	25	687
17	बनी इस्राईल	14	393	45	जासिया	25	691
18	कहफ	15,16	408	46	अहकाफ	26	697
19	मरयम	16	425	47	मुहम्मद	26	704
20	ताहा	16	435	48	फत्ह	26	710
21	अम्बिया	17	449	49	हुजुरात	26	716
22	हज	17	462	50	कौफ	26	721
23	मुअमिनून	18	477	51	ज़ारियात	26,27	725
24	नूर	18	487	52	तूर	27	729
25	फुरकान	18,19	501	53	नज्म	27	732
26	शुअरा	19	511	54	क़मर	27	736
27	नम्ल	19,20	525	55	रहमान	27	740
28	क़सस	20	537	56	वाकिआ	27	745

सूरत नम्बर	सूरत का नाम	पारा नम्बर	सफहा नम्बर	सूरत नम्बर	सूरत का नाम	पारा नम्बर	सफहा नम्बर
57	हदीद	27	750	87	अअला	30	831
58	मुजादला	28	757	88	गाशियह	30	832
59	हशर	28	761	89	फजर	30	833
60	मुमतहिनह	28	766	90	बलद	30	835
61	सफ	28	770	91	शम्स	30	836
62	जुमुअह	28	773	92	लैल	30	837
63	मुनाफिकून	28	775	93	जुहा	30	838
64	तगाबुन	28	777	94	इन्शिराह	30	838
65	तलाक	28	780	95	तीन	30	839
66	तहरीम	28	783	96	अलक	30	839
67	मुल्क	29	787	97	कद्र	30	840
68	कलम	29	790	98	बय्यिनह	30	840
69	हॉक्कह	29	794	99	ज़िलज़ाल	30	841
70	मआरिज	29	797	100	आदियात	30	842
71	नूह	29	800	101	कारिअह	30	843
72	जिन्न	29	803	102	तकासुर	30	843
73	मुज्ज़म्मिल	29	806	103	अस्र	30	844
74	मुद्दस्सिर	29	808	104	हुमज़ह	30	844
75	कियामह	29	811	105	फील	30	844
76	दहर	29	813	106	कुरैश	30	845
77	मुरसलात	29	816	107	माऊन	30	845
78	नबअ	30	819	108	कौसर	30	846
79	नाज़िआत	30	821	109	काफिरून	30	846
80	अबस	30	822	110	नस्र	30	846
81	तकवीर	30	824	111	लहब	30	847
82	इन्फितार	30	825	112	इख्लास	30	847
83	मुतफिफ़ीन	30	826	113	फलक	30	847
84	इन्शिकाक	30	828	114	नास	30	847
85	बुरूज	30	829				
86	तारिक	30	830				